बापूकी प्रेम-प्रसादी

भारतीय

घनश्यामदास बिड़ला

खण्ड १

गांधी-युग की
एक महत्वपूर्ण पत्रावली

विद्या भवन प्रकाशन

• प्रकाशक भारतीय विद्या भवन बम्बई • प्रथम संस्करण १९७७
• मूल्य दस रुपये • मुद्रक रूपक प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली ३२

लेखक बापू के साथ

उनकी ओर से महादेवभाई इत्यादि ने अंग्रेजी में पुस्तिका, तो उन सबको का हिन्दी में अनुवाद करके इसमें समावेश हुआ है। जब अंग्रेजी का प्रकाशन होगा तो उसी तरह सब हिन्दी पत्रों का भी अंग्रेजी में अनुवाद करके समावेश होगा।

इस प्रकाशन से बापू के मानस को प्रत्यक्ष जानने का जन समाज को एक अनुपम अवसर मिल जाता है। शिक्षा भी मिलती है, क्योंकि बापू के पत्रों में सब तरह का मसाला है। सब से महत्व की बात यह समझता हूँ कि इन सब में व्यक्तिगत आदेश, राजनैतिक और धार्मिक आदेश भी हैं वह-एक महात्मा होने के नाते एक साधु पुरुष और एक पुरुष के उद्गार हैं। जो आज जन समाज के जीवन में उपयोगी और शिक्षाप्रद है और अपने जीवन को अवतरण करने योग्य है।

प्रस्तावना

गाधीजी पत्र व्यवहार मे बहुत ही नियमित थे। पत्र-व्यवहार द्वारा ही वे असख्य लोगा से हार्दिक सम्बन्ध रख सकते थे और उन्हें जीवन के ऊचे आदश सिद्ध करने के लिए प्रेरित करते थे। जिसके साथ सम्बध आया उसके व्यक्तिगत जीवन मे हृदय से प्रवेश पाना, उसकी योग्यता उसकी खूबी और उसकी गहराई को समझकर उसके विकास मे मदद देना यह थी उनके पत्र-व्यवहार की विशेषता। गाधीजी का पत्र-साहित्य उनके लेखा और भाषणो के जितना ही महत्व का है। उनके व्यक्तित्व को समझने के लिए उनका यह पत्र साहित्य बहुत ही उपयोगी है। मैंने देखा है कि पत्रा म उनकी लेखन शैली भी अनोखी होती है। ससार मे शायद ही ऐसा कोई नता हुआ होगा, जिसने अपने पीछे गाधीजी के जितना पत्र-व्यवहार छोड रखा हो।

गाधीजी का पत्र व्यवहार पढते समय मुझे हमशा यही प्रतीत हुआ है, मानो मैं पवित्र गगाजी म स्नान और पान कर रहा हू। मुझे उसम हमेशा पवित्रता और प्रसन्नता का ही अनुभव हुआ है। उसक इद गिद का वायुमडल पावन, प्राणदायी और प्रशमकारी है।

इसीलिए जब श्री घनश्यामदास बिडला ने गाधीजी के साथ का अपना पत्र-व्यवहार मरे पास भेज दिया तो मुझे बडा आनन्द हुआ और उत्साह के साथ मैं उसे पढ़न लगा। जस-जैस पढता गया वसे वैस स्पष्ट होता गया कि यह केवल घनश्यामदासजी और गाधीजी के बीच का ही पत्र व्यवहार नही है। इसम तो गाधीजी के अभिन्न साथी स्व० महादवभाई दसाई और घनश्यामदासजी के बीच का पत्र-व्यवहार ही सबसे अधिक है। इसके अतिरिक्त गाधीजी के अन्य साथिया देश के कई नताओ और कामकर्ताओ, अग्रेज वाइसराया और कूटनीतिना के साथ का पत्र व्यवहार भी है और उनकी मुलाकाता का विवरण भी।

सक्षेप म—हमार युग का एक महत्व का इतिहास इसम भरा हुआ है।

यह देखकर मेरे मुह स उद्गार निकल पडा

काश ! यह सारी सामग्री पाच साल पहले मेरे हाथा म आती।

आज मेरी उम्र इक्यानवे वर्ष की है। विस्मरण ने अपनी हुकूमत मेरे दिमाग पर जोरों से चलाना शुरू कर दिया है। कई महत्व की बातें अब बड़ी रफ्तार के साथ भूलता जा रहा हूं। मुझे विषाद के साथ कबूल करना चाहिए कि पांच साल पहले यह सामग्री मेरे हाथ में आती तो जितनी गहराई में उतरकर मैं उसमें अवगाहन कर सकता उतना आज नहीं कर पाऊंगा। फिर भी मैं मानता हूं कि मूलभूत तत्वों के चिंतन की बैठक अब भी मुझमें साबूत है। उसी के सहारे मैं इस सागर में डुबकी लगाने का ढाढस कर रहा हूं।

सन १९१५ के पहले हमारे देशवासियों ने स्वराज्य प्राप्ति के तरह-तरह के प्रयोग आजमाकर देखे थे। हमने विद्रोह का प्रयोग करके देखा। प्रार्थना विनय का मार्ग भी आजमाया। औद्योगिक प्रगति में आगे बढ़ने के प्रयत्न किये। सामाजिक सुधार के आंदोलन चलाये। धर्म निष्ठा बढ़ाने की भी कोशिशें कीं। स्वदेशी और बहिष्कार के रास्ते से भी चले और बम पिस्तौल का मार्ग भी अपनाकर देखा। स्वराज्य के लिए जो-जो इलाज सूझे, या सुझाये गये सब लगन के साथ आजमा कर हम भारतवासियों ने देखे। फिर भी न तो स्वराज्य नजदीक आया, न आशा की कोई किरण दिखाई दी। हमारे चंद प्रयत्न तो अंग्रेजों का राज हटाने के बदले उसे मजबूत करने में ही मददगार हुए। देश बिलकुल घोर निराशा में पड़ा हुआ था जब सन १९१५ में गांधीजी दक्षिण आफ्रिका से भारत लौट आये।

दक्षिण आफ्रिका में जहां न हमारा राज था, न वायुमंडल वहां गांधीजी ने अनपढ़ करीब करीब असंस्कारी और दुर्दैवी भारतीयों की मदद से सत्याग्रह का एक तेजस्वी आंदोलन चलाकर उसमें सफलता पाई। दक्षिण आफ्रिका के इस अभिनव प्रयोग की और उसके नेता कर्मवीर गांधी की खबरें हमने यहां बड़े आदर के साथ पढ़ी थीं या सुनी थीं। भारत लौटते ही जब गांधीजी ने आसेतु हिमाचल यात्रा करके सत्याग्रह की अपनी जीवन दृष्टि को समझाना शुरू किया तब स्वराज्य की जिन्हें सचमुच भूख थी वे सब लोग उनकी ओर आकर्षित हुए। देखते ही देखते गांधीजी के हृदय का तार राष्ट्र हृदय के तार के साथ एकराग हो गया और सारा देश उनके पीछे निःसंकोच होकर चलने के लिए तैयार हुआ। गांधीजी भारतीय संस्कृति और भारतीय पुरुषार्थ के महान प्रतिनिधि बने। त्याग संयम और तेजस्विता की भाषा बोलने लगे जो भारतीय लोकहृदय की भाषा थी। उनकी असाधारण विनम्रता और लोकोत्तर आत्मविश्वास को देखकर देश को विश्वास हुआ कि अवश्य ही यह कुछ 'करके दिखानेवाले' हैं।

और जिस प्रकार सभी नदियां अपना सारा जल लेकर समुद्र को जा मिलती हैं उसी प्रकार स्वराज्य की लालसावाले हम भिन्न भिन्न संस्कारों पृष्ठभूमियों

और जीवन प्रणालियां के सभी लोग गांधीजी से जाकर मिले। प्रसन्नता के साथ हमने उनके नेतृत्व को स्वीकार किया और उनके दिखाये हुए कार्यों में अपना अपना हिस्सा अदा करने के लिए प्रवृत्त हुए।

उस समय उनके निकट संपर्क में आये हुए, उनके गिने चुने आत्मीय जनों में श्री घनश्यामदासजी बिड़ला का स्थान अनोखा है।

यह तो सभी जानते हैं कि घनश्यामदासजी देश के इने गिने धनिकों में से एक हैं। उनका मुख्य क्षेत्र तो औद्योगिक ही रहा है। लोग यह भी जानते हैं कि उन्होंने खूब कमाया है और अनेक सत्कार्यों में मुक्तहस्त से खूब खर्च भी किया है। गांधीजी को जब भी धन की जरूरत महसूस हुई उन्होंने बिना संकोच घनश्यामदासजी के सामने वह रखी और घनश्यामदासजी ने बिना विलंब के उसकी पूर्ति की है।

गांधीजी की अनेक शिक्षाओं में एक महत्व की शिक्षा थी कि 'धनिकों को अपने-आपको अपनी संपत्ति के धनी नहीं मानना चाहिए बल्कि ट्रस्टी बनकर समाज की भलाई के लिए उसका उपयोग करना चाहिए।' 'यह समाज की ही संपत्ति मेरे पास है मैं उसका धरोहर या विश्वस्त हूं' ऐसा समझकर ही उसका विनियोग करना चाहिए। घनश्यामदासजी को यह शिक्षा तत्वतः मान्य न होते हुए भी उन्होंने वह अच्छी तरह से हृदयंगम की है। देश में अनेक जगहों पर बिड़ला के नाम से जो शिक्षण संस्थाएं, धर्मशालाएं, अस्पताल आदि चल रहे हैं वे इसकी गवाही देते हैं। उनकी अपनी संस्थाओं के अलावा ऐसी अनेक संस्थाएं देश में हैं, जो प्रधानतया बिड़लों के दान से चल रही हैं। गांधीजी की करीब करीब सभी संस्थाएं घनश्यामदासजी के धन से लाभान्वित हुई हैं। स्व० जमनालालजी बजाज को छोड़कर शायद ही दूसरा कोई धनिक होगा जिसने घनश्यामदासजी के जितना गांधी कार्य का आर्थिक बोझ उठाया हो।

एक प्रसिद्ध किस्सा है

गांधीजी दिल्ली आये हुए थे। उन्हीं दिनों गुरुदेव रवीन्द्रनाथ भी अपनी 'विश्वभारती' के लिए धनसंग्रह करने हेतु दिल्ली पहुंचे। वे जगह जगह अपने नाट्य और नृत्य का कार्यक्रम रखते थे और बाद में लोगों से धन के लिए प्रार्थना करते थे। गांधीजी को यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ। इतना बड़ा पुरुष बुढ़ापे में धन इकट्ठा करने के लिए, सो भी केवल साठ हजार रुपयों के लिए इस प्रकार अपने नाट्य और नृत्य का प्रदर्शन करता फिरे यह गांधीजी को असह्य हुआ। उन्हें तुरन्त घनश्यामदासजी का ही स्मरण हुआ। महादेव भाई से उन्हें पत्र लिखवा लिया, 'आप अपने धनी मित्रों को लिखें और छह जने दस दस हजार की रकम गुरुदेव को भेजकर हिंदुस्तान को इस शर्म से बचा लें।

कहने की आवश्यकता नही कि स्वय घनश्यामदासजी न यह पूरी रकम गुरु देव का गुप्तदान क रूप म भेजकर उनको चितामुक्त कर दिया।

गाधीजी ने अपनी सस्थाओ के निए तो उनस रुपय लिये ही दूसरो को भी इस तरह िलाय। इस पत्र सग्रह मे ऐस कई प्रमाण मिलेंग जिनस यह मालूम होगा कि गाधीजी न किन किन लोगो को विडलाजी के द्वारा आर्थिक सहायता पहुचाइ थी और विडलाजी न किस हद तक अपनी सपत्ति गाधीजी के चरणो म अर्पित की थी।

सचमुच एक तरह स यह एक अद्वितीय सम्बध था।

लेकिन इस पर से कोई यह न मान बठे कि उदारता के साथ दान दना इतना ही केवल घनश्यामदासजी का गाधी काय के साथ सम्ब ध रहा है।

स्वराज्य की जो साधना गाधीजी न हमार सामने रखी उसके दो प्रमुख अग थे। एक था रचनात्मक और दूसरा राजनतिक।

गाधीजी न देखा कि सामाजिक प्रतिष्ठा का उच्च नीच भाव' और 'सास्कृतिक प्रणाली के लिए पसन्द किया हुआ आप पर भाव इन दो तत्वो की नीव पर हमने अपना समाज विनार तयार किया है। परिणाम स्वरूप शाति स्वास्थ्य और सहजीवन के तत्व हमारे समाज-जीवन म होत हुए भी हम राष्ट्रीय एकता और स्वतत्रता को सभालन म असमथ हुए हैं। भारतवष का पूरा इतिहास इस कमजोरी का प्रमाण दता है।

हमारी इस राष्ट्रीय कमजोरी को हटाकर भविष्य के प्राणवान सर्वोन्यी नव समाज का निर्माण करना गाधीजी के रचनात्मक कायक्रम का प्रमुख उद्देश्य था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उ होने हिदू मुस्लिम एकता अस्पृश्यता निवारण खादी ग्रामोद्योग राष्ट्रभाषा प्रचार जस अठारह बीस कायक्रम दश क सामने रख और कहा कि इस कायक्रम का पूरा अमल ही पूण स्वराज्य है।

गाधीजी का यह कायक्रम कवल दया धम-मूलक सवा-काय का कायक्रम नही था वल्कि बहुवशी बहुजाति बहुधर्मी बहुभाषी विशाल भारत को सघटित करन का एक दीघदर्शी प्रयास था। मानस-परिवतन क द्वारा जीवन-परिवतन और जीवन-परिवतन क द्वारा समाज परिवतन की सावभौम क्रान्ति का यह अभि क्रम था। इसम गाधीजी न पुरान मूल्यो को नया रूप दना प्रारम्भ किया था।

घनश्यामदासजी न इस कायक्रम की क्रातिकारी सभावनाओ को पहचानकर उसे हृदय स अपनाया। हिन्दू मुस्लिम एकता और अस्पृश्यता निवारण जस काय क्रमो म उनकी कितनी गहरी दिलचस्पी थी और उनको अमल म लान क लिए उन्होने क्या क्या किया इसका प्रमाण इस सग्रह क कई पत्र दत हैं। गाधीजी के

साथ उनका अगर कहीं मतभेद रहा हो तो वह कुछ अंश में खादी की अर्थनीति के बारे में रहा होगा। इस मामले में वे स्वतंत्र विचार रखते हैं। फिर भी ध्यान खींचनेवाली बात तो यह है कि स्वतंत्र विचार रखते हुए भी एक निष्ठावान सैनिक की भांति वे चरखा कातते रहे यहां तक कि उन्होंने खादी का व्रत भी लिया। उनके इस अनुशासन प्रिय स्वभाव पर गांधीजी मुग्ध थे। उन्होंने अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए घनश्यामदासजी को एक खास किस्म का चरखा भी भेंट में दिया था और उनके कातते हुए सूत की सराहना करके जिस पवित्र कार्य का आपने आरम्भ किया है उसको आप हरगिज न छोड़ें इस प्रकार की नसीहत भी दी थी।

गांधीजी की एक विशेषता थी। वे मनुष्य के सद्गुणों को तुरंत परख लेते थे और देश हित के लिए उसका पूर्ण उपयोग कर लेते थे। हमारा अपने ऊपर जितना विश्वास होता है, उससे कहीं अधिक विश्वास गांधीजी का हम पर था। हमको गलते समय वे 'हमारा कमजोर श्रद्धा को मजबूत बनाते थे' और अंत में हमारी सामान्य शक्ति से अधिक काम सहज ही हमसे करा लेते थे।

धनिक होते हुए भी धन की माया में अलिप्त रहने की घनश्यामदासजी की आकांक्षा को गांधीजी ने परख लिया था। उनकी व्यवहार कुशलता को भी परख लिया था। उनके विकास में मददगार होने के लिए गांधीजी ने जो उनका मार्ग दर्शन किया है, उसमें व्यापक मनुष्य-जीवन के अनेक छोटे मोटे पहलुओं पर एक क्रांतदर्शी शिक्षा शास्त्री का प्रकाश हमें देखने को मिलता है। गांधीजी के पत्रों की यह सबसे बड़ी विशेषता है।

इसमें भी विशेष बात तो यह है कि स्वयं घनश्यामदासजी के विनम्र और निर्मल जीवन का चित्र भी हम इस पत्र संग्रह में देखने को मिलता है।

घनश्यामदासजी गांधीजी के प्रति आकर्षित हुए गांधीजी की धर्म परायणता नेकनीयती और सत्य की खोज की उत्कटता को देखकर वह धीरे धीरे उनके परमभक्त बन गये। गांधीजी जो भी जिम्मेदारी उठाते थे उनका बोझ अपने सिर पर लेना घनश्यामदासजी ने अपना कर्तव्य माना और पूरे हृदय के साथ वह अदा किया।

मगर उन्होंने अपना पूरा हृदय उत्साह के साथ उंडेल दिया था गांधीजी के राजनैतिक कार्य में। गांधीजी और सरकार के बीच उन दिनों पर्दे की आड़ में जो कुछ चलता था उसका भीतरी इतिहास हम इस पुस्तक में पढ़ने को मिलता है। हमारे युग के वे दिन ही ऐसे थे कि प्रतिदिन कुछ-न कुछ नया इतिहास गांधीजी के आस-पास हुआ या बना करता था। घनश्यामदासजी का गांधी कार्य के इसी

जग मे विशेष और गहरी रुचि थी। हर छोटी बडी बात मे गहराइ के साथ ध्यान देते दत व धीरे धीरे उन गिने चुने व्यक्तिया मे मान जान लगे जो गाधीजी का राजनतिक मानस अच्छी तरह स समझते है। देखत ही-देखते व गाधीजी क राज नैतिक मानस क विश्वासी व्याख्याता के रूप म अग्रेज राजनीतिज्ञा के सामने आत्मविश्वास के साथ पश आन लग। गाधीजी किस दिशा म सोच रहे हैं इसका खयाल अग्रेज राजनीतिज्ञा को करा देना और अग्रेजा के मानस का खयाल गाधीजी को करा देना यह उ हाने अपनी जिम्मेदारी मानी। यह स्वेच्छा स्वीकृत जिम्मे दारी थी जा उ हाने असाधारण कुशलता और सफलता के साथ निभाई।

इस पुस्तक मे घनश्यामदासजी का जा चित्र विशेष रूप से नजर के सामने आता है वह ह एक कुशल राजनीतिज्ञ का, और वह कौरवा के दरबार म समझौते के लिए गये हुए श्रीकृष्ण का स्मरण हमे करा दता ह।

करीब बत्तीस साल तक चल हुए इस पत्र-व्यवहार को देखकर प्रथम मेर मन म आया कि मैं इसकी तीन स्वतत्र पुस्तकें बनाने की सलाह दू। एक म सिफ गाधीजी और घनश्यामदासजी के बीच का ही पत्र व्यवहार हो, जिसस हम इस बात का दशन हो सके कि कितने विविध विषया की गहराई मे उतरकर और प्रत्यक विषय का मम समझकर गाधीजी कस अपन माने हुए आत्मीय जना का मागदशन करते थे और किस प्रकार अपना वात्सल्य उन पर उडेलते थे।

दूसरी पुस्तक म सिफ महादेवभाई और घनश्यामदासजी के बीच का ही पत्र व्यवहार हा जिसस दो निकटतम स्नेहिया के विश्रब्ध वार्तालाप की खुशबू का हमे अनुभव मिले।

और तीसरी म बाकी की सभी सामग्री हो जा एतिहासिक दृष्टि स महत्व रखती है।

मगर सोचने पर मुझे लगा कि नही जो सामग्री यहा ह वह वसी ही एकत्र प्रकाशित की जानी चाहिए जसी वह क्रमश यहा दी गई है भले ही पुस्तक का आकार बढ जाय या उस दो जिल्दो मे प्रकाशित करना पडे। यह कोइ मनोरजन के लिए लिखी हुई पुस्तक नही ह। यह ता एक सागर है जो खूब एतिहासिक महत्व रखता है। आनवाली पीढिया जब हमारे जमाने को समझने की कोशिश करेंगी तब उन्हें यह सदभ-ग्रथ बहुत ही उपयागी और आवश्यक मालूम होगा। इतिहास के विद्यार्थिया के लिए इसम काफी महत्व की सामग्री भरी हुई मिलेगी। यह एक बहुत ही कीमती ऐतिहासिक दस्तावज है, जिसका पूरा महत्व भविष्य की पीढिया ही जानेंगी।

मरे जस गाधी भक्त को तो इसमे लोकोत्तर प्रेरणा मिली है।

इस उम्र म और तबीयत की एसी हालत म यह प्रस्तावना तैयार कर सका उसका बहुत बडा श्रेय मेरे तरुण साथी श्री रवीन्द्र केलेकर की मदद को है।

स्नेहाधीन,

अनुक्रमणिका

१९२४

बिना तारीख का पत्र

१९२५

बिना तारीख के पत्र

१९२६

बिना तारीख के पत्र

१९२७

१६२६

बिना तारीख का पत्र

१९३२

१९३३

बिना तारीख के पत्र

१६३४

बिना तारीख के पत्र

वापू की प्रेम-प्रसादी

१९२४ के पत्र

१

भाई श्री घनश्यामदासजी,

आपका पत्र कई दिनों के बाद मिला।

मेरा किसी पर अंध विश्वास नहीं है। परंतु मनुष्य मात्र का विश्वास रखना हमारा कर्तव्य है। हम भी तो दूसरे के विश्वास की आशा रखते हैं। जब दोनो पक्ष गलती करते हैं तब न्यूनाधिकता का प्रमाण खीचना बहोत मुश्केल हो जाता है। इसलीये मैंने तो एकहि मार्ग सोच लिया है—दुर्जन के साथ भी सज्जनता से वर्ताव रखना।

मेरा तो तीन दिन और दिल्ली मे ठहरना होगा, जो कुछ हो रहा है इससे व्यवहार दृष्टि से मुझे संतोष नहि है। पारमार्थिक दृष्टि से तो मेरे कर्तव्य पालन मे हि मेरा संतोष है।

आपका,
मोहनदास गांधी

माघ शु० ३, १९८०
(७ २ २४)

डॉ० अनसारी की बेगम बीमार होने के कारण मैं सुलतानसिंहजी के यहा रहता हु।

२

श्री हरि

साबरमती आश्रम
फा० शु० ११।
(१७ ३ २४)

प्रिय भाई घनश्यामदासजी

सुबे की प्रार्थना के बाद हि यह पत्र लिख रहा हु। आपके पत्र पूज्य बापूजी के नाम व महादेव भाई, हरिभाऊजी आदि मित्रा के पास आए। उने पढ़कर

आनन्द व सुख हुआ। परमात्मा से प्राथना है कि वह आपको बल दे व आपका उदाहरण समाज के लिय आदश बनावे। मुझे तो पहिले से ही विश्वास हो रहा है कि आपके जरिए से समाज (देश) कि बहुत सेवा होने वाली है। जिस प्रकार बापूजी के कारण भारतवष का गौरव (शिर ऊचा है) आपके कारण कम से कम मारवाडी समाज का शिर ऊचा हुवे बिना नहिं रहेगा। परमात्मा आपको दिर्घायु करे और आपकि काय पद्धति व कुटुम्बी जीवन मे जो कुछ फेर करना जरुरी हो तो वह शीघ्र करे।

कल मैंने भाई रामेश्वरदासजी को पत्र लिखा है। मेरी इच्छा है आप कुछ समय के लिए मेरे आश्रम म रहने आवें।

कमला का विवाह मेरे को तो धार्मिक विधि के सिवाय अन्य धामधूम करना नहिं है फिर ऊस समय भि आप तथा भाई रामेश्वरदासजी उपस्थित रहकर बालका को आशीर्वाद प्रदान करें तो क्या हज है।

मुझे विश्वास हाता है मेरे जाने स आपको भि सुख मिलगा व मुझे तथा बापू जी को आनन्द सन्तोप होवेगा।

आपका आना हा जावेगा तो सस्ता साहित्य मडल के भविष्य के काय का भि भली प्रकार विचार हो सकेगा।

आपका,
जमनालाल

पूज्य जाजूजी आदि मित्रा मे भी मीलना हो जावेगा।

३

भाई घनश्यामदासजी

आपके पत्र आ रहे हैं। आप अवश्य लीखते रहें। मैं हमेशा प्रत्युत्तर न लिख सकू तो समजना मुझे इतना भी वखत नहिं है।

उद्दण्डता और दम्ता करीब साथ-साथ रहत हैं। यदि हम सात्विक भावो को बढाने की कोशिश करत ता उद्दण्डता प्रति क्षण गौण स्थान लेती जायगी।

उद्दण्डता का दबाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम हमशा विरोध को उत्तर न देत रह ।

हिंदु औरता पर जो हमला हो रहा है उस बारम हमारा हि दोष मैं समजता हु । हिंदु ऐस नामद बन गये हैं कि हमारी बहना की रक्षा भी नहिं करते हैं । इस विषय म मैं खूब लिखुगा । इसका कोई सादा इलाज मेर नजदीक नहिं है । कई बात तो आपके सुनन म आई है उसमे अतिशयाक्ति का सभव है । परतु अति शयाक्ति काट देने क बाद जा शप रहता है हमको लज्जित करने के लिय काफी है ।

आपको 'यग इडिया और हिंदी नवजीवन' भेजन को मैंने मनेजर से कह दिया है उमीद है अब मिल गया होगा ।

मेरा एक खत जो मैंन गत सप्ताह मे लिखा आपको मिल गया होगा ।

आपका,

मोहनदास गाधी

व० कृ० २, १६८१
(२१ ४ २४)

[आपके भाई यदि माफी माग लवें तो भी यदि आप दृढ रह सकें तो माफा न मागना ही उत्तम है । भाई के मागने की घृणा भी हम न करें । मनुष्य मात्र यथा-शक्ति हि नीति का पालन कर सकता है ।]

माहनदास

४

जुहू वैं० शु० ६, १६८१
(१३-५ २४)

भाइ श्रीयुत घनश्यामदास,

आपका पत्र मुझका मिला है ।

मेरा दृढ विश्वास है कि यदि जाति-बाना के विराध का आप बरदास्त कर सकेंगे ता आखर म फल अच्छा हि होगा । हम सब मे दवी और आसुरी प्रकृति बाध कर रही है । इसलीय थाडी बहुत अशाति अवश्य रहगी । उसम डरन की

कुछ आवश्यकता नहिं है। प्रयत्न पूर्वक निग्रह करते रहने से आसुरी प्रकृति का नाश हो सकता है। परंतु दिल में पूरा विश्वास होना चाहिये कि दैवी प्रकृति को हि सहाय देना हमारा कर्त्तव्य है। मुझे फिकर आपके पिता और बंधु के लिये है। यदि वे आपके पक्ष का संगठन कर संग्राम चाहते हैं और आप उनको शांति के मार्ग की ओर न ला सकें तो आपके हि कुटुम्ब में दो विरोधी प्रवृत्ति होने का सम्भव है। ऐसे मौके पर धर्म संकट खड़ा होता है। मैं तो अवश्य उनसे भी प्रार्थना करूंगा कि आपके हि हाथ से ज्ञाति में दो गिरोह पैदा न हो।

जिस चीज को आपने अच्छी समझ कर की है और जिसकी योग्यता के लिए आज भी आप लोगों के दिल में शंका नहिं है उसके लिये माफी मांगना मैं हरगिज उचित नहिं समझुंगा।

आपकी तरफ से मुझे रु० ५००० मील गये है। यंग इंडिया, नवजीवन इ० के लीये आप उचित समझें इतना द्रव्य भेज दें। करीब ५० नकल मुफ्त देने की आवश्यकता है।

आपका,
मोहनदास गांधी

५

भाई घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला है।

कार्य सिद्ध हो या न हो तो भी हमारे अहिंसक हि रहना चाहिये। यह सिद्धांत को प्राकृत रूप से बताने का तरीका है। ठीक कहना यह है कि अहिंसा का फल शुभ ही है। ऐसा हमारा दृढ विश्वास है इसलीये फल आज मिला या वर्षों के बाद उससे हमें कुछ वास्ता नहीं है। २०० वर्ष के आगे जिनको जबरदस्ती से इस्लाम में लाये गये उससे इस्लाम को लाभ हो ही नहीं सकता क्योंकि इसमें बलात्कार की नीति को स्थान मिला है। इसी तरह यदि किसी को बलात्कार से या फरेब से हिंदु बनाया जाय तो उसमें हिंदु धर्म के नाश की जड़ है। सामान्यत तात्कालिक फल देखकर हम धोका खाते है। बडी समाज में दो सौ वर्ष कोई चीज नहिं है।

कानून के जरिये से किसी की बुरी आदत छुडाना इतने ही से पशुबल नहीं

कहा जाय—कानून से शराब का धंधा बंध करना और इसलिए शराबियों का शराब का छोटना बलात्कार नहिं है। यदि ऐसा कहा जाय कि शराब पीने वाला को बेत लगाये जायेंगे तो अवश्य पशुबल माना जाय। शराब बचने का इसका कर्त्तव्य नहीं हैं।

आपका,
मोहनदास

ज्य० कृ० ५, १९८१
२३ ५ २४

'यंग इंडिया' के बारे में स्वामी आनंद कहते है आपको बील भेजा गया है—

बिड़ला हाउस, पिलानी।

६

पिलाणी
ता० ११ जून, १९२४

परम पूज्य महात्माजी,

आपका अंतिम पत्र मुझे मिल गया है। आपके पत्र सदैव मुझे कुछ न कुछ नई शांति देते रहते हैं। दो गिरोह यद्यपि हो गये हैं तथापि कुछ बहुत ज्यादा अविवेक से काम नहीं हो रहा है। यद्यपि हम लोगों ने इस मामले में अब-तक थोडा कष्ट सहन कर एक छोटा-सा स्वार्थ-त्याग किया है किन्तु जो पवित्रता ऐसे कार्यों में होनी चाहिए वैसी हम लोग धारण नहीं कर सके हैं। कुछ धर्म संकट भी है, और कुछ कौटुंबिक दौर्बल्य भी है। आप 'नवजीवन' में सामाजिक विषयों पर कुछ-कुछ लिखें तो लोगों का अत्यंत उपकार भी हो सकता है। आपके ब्रह्मचर्य की व्याख्या एवं सत्याग्रही गालियों वाले लेख ने भावुक लोगों के हृदय पर अत्यंत प्रभाव डाला होगा।

आपको इस पत्र से ज्ञात होगा कि मैं राजपूताना में अपने घर आ गया हूं। यह तो आपको मालूम ही होगा कि खादी की पैदावार में यह प्रांत अन्य प्रांतों की अपेक्षा बहुत अच्छा है। यह कुछ असहयोग के जमाने से ऐसा नहीं हुआ किन्तु पुराने समय से ऐसा ही चला आ रहा है।

आर्य-समाजी एवं स्वराजी आपस बेतरह बिगडते जा रहे हैं। पूज्य मालवीय जी को जब असहयोगी लोग गालियां देते थे तब तो मुझे दु ख होता था किन्तु जब आपकी following (अनुयायियों की संख्या) कम होते देखता हूं तब तो मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं जानता था कि जो अत्याचार पंडितजी पर किया जाता था वह आपके नाम के बल पर होता था इसलिये यह आवश्यक था कि उस नाम का बल उन उद्दण्ड लोगों के हाथ से निकल जाता जो भले आदमियों को सताया करते थे। अब तो आपके कैम्प में पवित्र पुरुषों के लिये ही स्थान रह गया है और ऐसा होना उत्तम ही प्रतीत होता है। स्वराजियों ने सिराजगंज की कानफरेंस में हिंसा की घोषणा कर दी है और अपने अहिंसा के बुरके को उतार कर फेंक दिया है। अहिंसा का नाटक खेला जा रहा था उसका इस प्रकार अन्त हो गया। सम्भव है आप minority (अल्पसंख्यक) में हो जायं किन्तु जिस पवित्रता से आपका कार्य होगा उसकी ताकत कितनी चौगुनी बढी होगी इसकी तो कल्पना भी मेरे लिए असम्भव सी है।

आपने मुझे अहिंसा का उपदेश दिया और मैंने भी उसे बिना शंका के सुन लिया। किन्तु आपसे दूर होने के पश्चात मुझे फिर समय समय पर शंकाएं होती हैं। इसमें तो मुझे रत्ती भर भी शंका नहीं कि अहिंसा एक उत्तम ध्येय है। किन्तु आप जैसे द्वंद्वविमुक्त पुरुष संसार की भलाई के लिये किसी मनुष्य का यदि वध कर दें तो क्या इसको हिंसा कही जा सकती है। स्वयं में तो ऐसा आता है कि निष्काम भाव से किया हुआ कर्म एक प्रकार से अकर्म ही है। किन्तु साधारण श्रेणी के मनुष्य जो द्वंद्व से छूटे नहीं गये उनके हाथ से किया हुआ वध तो अवश्य हिंसा ही है। किन्तु क्या ऐसी हिंसा के लिये विधि नहीं है। आपने तो स्वयं ऐसा कहा है कि भाग जाने की अपेक्षा प्रहार करना कहीं अधिक अच्छा है। इस हालत में लोगों को अंतिम श्रेणी की शिक्षा देकर प्रहार करने से रोकना कहां तक फलदायक होगा। वह मेरी बुद्धि में नहीं आता। आप मुसलमानों की लाठियों को खाने का उपदेश भी देते हैं। इस अंतिम ध्येय को लोग प्राप्त कर सकते हैं या नहीं—इसमें मुझे पूरा शक है। इसलिये तलवार चलाने को क्यों न कहा जाय यह मेरी समझ में नहीं आता। मुझे तो ऐसा भय भी होता है कि कहीं ऐसा न हो कि लोग न तो उस उच्चतम अहिंसा को प्राप्त कर सकें और न अपनी बहू-बेटियों की रक्षा के लिये तलवार ही चलायें। हिंदू सभा एवं आर्य समाजी भाइयों ने जब से तलवार चलाने के लिये लोगों को उत्तेजित किया है तब से कुछ सयाने लोग भी वार करने में थोड़ा भय मानते हैं। मैं जानता हूं कि ऐसा होने में झगडा एक दफे बढ़ता ही है। किन्तु इसी संग्राम में झगडा तय न हो जायगा यह भी तो नहीं माना जा सकता।

लिखें कि यदि object (साध्य) हिंसात्मक प्रणाली से भी प्राप्त कर सकें तो क्या न किया जाय।

यह मैं फिर निवेदन कर देता हू कि हिंसात्मक नीति मुझे दिन दिन अप्रिय होती जाती है और यह पत्र हमने केवल अपनी शकाओ के समाधान के लिए ही लिखा है।

विनीत
घनश्यामदास

७

भाई श्रीयुत घनश्यामदास

ईश्वर ने मुझको नीति रक्षक दीये हैं। उन्ही मे से मैं आपको समझता हू। मेरे कई बालक भी ऐसे हैं कई बहिन भी हैं और आप, जमनालालजी जसे प्रोढ भी हैं जो मुझको सम्पूर्ण पुरुष बनाना चाहते हैं। ऐसा समझते हुए आपके पत्र से मुझे दु ख कैसे हो सकता है। मैं चाहता हु कि हर वखत आप ऐसे ही मुझे सावधान बनाते रहे।

आपकी तीन फरीयादें हैं। एक मेरा स्वराज दल का रुश्वत के आरोप से मुक्त रखना। दूसरा साहरावर्धी को प्रमाण पत्र देना। और तीसरा सरोजिनी देवी को सभापतित्व दिलाने की कोशिश करना।

प्रथम बात तो यह है कि मनुष्य का धर्म है कि साधना के पश्चात जो अपने को सत्य लगे उसी चीज को कहना भले जगत को वह भूल सा प्रतीत हो—इसके सिवा मनुष्य निर्भय नहिं बन सकता है। अपना मोक्ष के सिवा और किसी चीज का मैं पक्षपाती नहिं बन सकता हु। परंतु यदि मोक्ष भी सत्य और अहिंसा का प्रतीकुल हो तो मुझे मोक्ष भी त्याज्य है। उक्त तीनो बातो मे मैंने सत्य का हि सेवन किया है। आपने जो कुछ मुझे जुहु मे कहा था मुझे स्मरण मे रखते हुए जो कुछ भी कहा है वह कहा। जब मेरे नजदीक कुछ भी प्रमाण न हो तो मेरा धर्म है कि मैं स्वराज दल को आरोप से मुक्त समझु। यदि आप मुझको प्रमाण दे देंगे तो मैं अवश्य निरीक्षण करूंगा। और आप उसका उपयोग करने देंगे तो मैं जाहेर मे भी कह दुगा। वरना मेरे दिल मे समझकर मैं खामोश रहुगा।

सोहरावर्धी जी को मैंन प्रमाण पत्न उनकी हुशियारी का दिया है। मैं अब भी उनकी हुशियारी का अनुभव कर रहा हू।

सराजिनी देवी के लिय आप खामखा घबरात है। मरा दढ विश्वास है कि उन्होंने भारतवप की अच्छी सेवा की है और कर रही है। उनके सभापतित्व के लीय मैंन कुछ प्रयत्न इस समय नहि कीया है परतु मेरा विश्वास है कि वह उस पद के लीये योग्य है यदि दूसरे जो आज तक हा गय वे याग्य थ ता उसक उत्साह पर सब कोई मुग्ध ह। उसकी वीरता का मैं साक्षी हू। मैंन उनका चरित्न दोप नहि देखा है।

इन सब बाता रा आप यह अथ न करे कि उनके या किसी के सब कार्यों को मैं पसद करता हू।

जड चेतन गुण दापमय विश्व कीन्ह करतार।
सत हस गुण गहहिं पय परिहरि वारि विकार।।

आपका,
मोहनदास गाधी

श्रा० कृ० ७,
२० ७ २४

८

भाई श्रीयुत घनश्यामदास,

आपके दोनो पत्र मिले हैं। मैं जब दिल्ली जाउंगा तो आपका तार भेजुगा।

श्री सराजिनी नाइडु की प्रशसा म मेरे ख्याल से अतिशयोक्ति नहि है। मैं उनका आदश भारत महिला नहि मानता हू परन्तु हरिजन आश्रम के काय के लीय वह आदश एनची थी परतु इतना कहते हुए भी मैं कबूल कर लेना चाहता हू कि म लागा का गुण का दखता हू और दोपा को भूलना चाहता हू। ऐसा करने स न मुझे कुछ शाति हुई है न जनता को न उन व्यक्तियो को जिनकी मैंन प्रशसा की हो।

यदि मुझको मौलाना महम्मद अली जल्दी नहीं बुलायेंगे तो मैं सेप्टम्बर के पहेल दिल्ली नहिं पहोचुंगा।

आपका
मोहनदास गांधी

बिडला हाउस,
हरद्वार ७ ८ २४

६

भाई श्री घनश्यामदासजी

आपके सब पत्र मिल है। मुझको उनसे बहोत सहाय मीलती है।

सरोजीनी के विषय में जो मैं मानता हु उसको न लीखना भी कठिन है। क्या काय किनसे ले सकते है उसका निश्चय जनता को कर लेना हि चाहिये। एक व्यक्ति की एक काय में मैं प्रशंसा करु उससे कोई एसा क्या समझे कि वह सम्पूर्ण व्यक्ति है? मैं इतना लिखता हुआ भी चाहता हु कि आपके दिल में जो बात आये आप लीखते रहे।

मैं जानता हु कि हिंदु मुस्लिम प्रश्न मे मालवीजी मेरी राय पसंद नहिं करते हैं तथापि मेरा विश्वास है कि हमारे नजदिक दूसरा कोइ फेसला नहिं है या थोडे दिनों के लिये हम कृत्रिम एक्य पेदा कर सकें। उससे हमारी उन्नति नहिं हो सकती है।

सुंदरलालजी के विषय में मैं आपको कुछ सलाह नहिं दे सकता हु। हां इस बात को मैं जानता हु कि जमनालालजी ने जिस शर्त से उन्होंने सहाय मांगी, नहिं दी। मेरे मुकाबले में जमनालालजी उनको बहोत ज्यादा पहचानते हैं। आप जो कुछ करें इस बारे में जमनालालजी की राय ले लें।

आपने दो महीने का दान जमनालालजी के वहां भेज देने का लीखा इसलिये

आपका अनुग्रह मानता हु। उसीके आधार पर मैंने दक्षिण म हिंदी प्रचार के लीये और दूसरी दो सस्था के लिये कुछ प्रबध करने की बात जमनालालजी स की है। उस द्रव्य का व्यय उन्ही के हाथ से होता है।

आपका,
मोहनदास

आ० शु० १०,
१० अगस्त, १९२४

१०

भाई घनश्यामदासजी

आपके पत्र मिलते रहत ह। जबलपुर इ० के मामले स मैं घबराता नही हु—मैंने जो अल्प पायश्चित करने की मेरी शक्ति थी वह कर लीया। इसलिय मै शात रह सकता हु। फल का अधिकार हमको नहिं है या तो ईश्वर के हाथ म है—मेरा स्वास्थ्य ठीक होन से कई अग्रगण्य नेताओ को साथ लेकर दौरा करने का मेरा इरादा तो है हि। सबसे पहले मैं कोहाट जाना चाहता हु। सभव ह कि आठ दिन म तैयार हो जाऊगा।

समय आने पर आपकी सब भाति की सहाय मे भाग लूगा।

आपके लोगो से मुझे यहा खब सहाय मील रही है।

रुपये आप जमनालालजी को या तो आश्रम साबरमती भेजने की कृपा करें।

आपका,
मोहनदास गाधी

भा० कृ० २,
१५ सितम्बर, १९२४

११

भाई घनश्यामदासजी

प० सुदरलालजी मुझको यहा मीले हैं और आपके पत्र के बार म मुझको पूछते हैं। मैंने कहा आपका पत्र मुझको मीला था और मैंने उत्तर भी दे दिया

था। सुदरलालजी कहते हैं आपको हरद्वार जाने तक मेरा उत्तर नहिं मिला था और दूसरा चाहते हैं—मैं आपको सहाय के बार मे कुछ लिखना नही चाहता हु। सुदरलालजी को सहाय देना, न देना इस बारे मे यदि आप किसी की सलाह लेना चाहे तो जमनालालजी की सलाह ले लें। सुदरलालजी कहत हैं वह आपकी स्वतन्त्र सहाय चाहते है और मैं सिफ आपको उनके काय के बारे म लिखू। मैं अवश्य इतना कह सकता हु कि सुदरलालजी ईश प्रेमी है, असहयोगी है, उत्साही है और काय करने की शक्ति अच्छी रखते हैं। यूवक वग पर उनका प्रभाव है। स्वभाव म बहोत स्वतन्त्र है।

आपको मैंने अहमदाबाद छोडने के समय तार भेज दीया था। मैं आज आश्रम जाता हु। अब तक तो कुछ यहा नहिं हो सका है। दोना पक्ष मेरी सलाह पर विचार कर रहे हैं।

आपका,
मोहनदास गाधी

श्रा० कृ० ८,
२१ सितम्बर १७२४

१२

तार

दिल्ली
२६ सितम्बर, १६२४

घनश्यामदास बिडला
१३७ कनिंग स्ट्रीट
कलकत्ता

जानता था आप अनशन की धार्मिक अनिवायता पसन्द करेंगे। आशा है आप शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करेंगे। अभी आना अनावश्यक है। अच्छे होने पर आना ठीक रहेगा।

—गाधी

१३

शरीर को अच्छा रखो। तब तो मैं काफी काम ले लुगा और कुछ दुगा। कम से कम पदरह दिन दूध की आवश्यक्ता लगे तो अवश्य पीओ। फल खाओ रोटी नुकसान करेगी। दही अवश्य लेना।

उच्चार तो खराब है लेकिन उसका ख्याल मत करो। हमारी भाषा इग्रेजी नहि है। फ्रेंच के उच्चार बहोत खराब है उसकी काई इग्रेजी शिकायत नहि करता है।

था। सुदरलालजी कहते हैं आपको हरद्वार जाने तक मेरा उत्तर नहि मिला था और दूसरा चाहते हैं—मैं आपको सहाय के बारे मे कुछ लिखना नही चाहता हु। सुदरलालजी को सहाय देना, न देना इस बारे मे यदि आप किसी की सलाह लेना चाहें तो जमनालालजी की सलाह ले लें। सुदरलालजी कहते हैं, वह आपकी स्वतत्र सहाय चाहते हैं और मैं सिर्फ आपको उनके काय के बारे मे लिखू। मैं अवश्य इतना कह सकता हु कि सुदरलालजी ईश प्रेमी है असहयोगी हैं उत्साही हैं और काय करने की शक्ति अच्छी रखते हैं। युवक-वग पर उनका प्रभाव है। स्वभाव म बहोत स्वतत्र हैं।

आपको मैंने अहमदाबाद छोडने के समय तार भेज दीया था। मैं आज आश्रम जाता हु। अब तक तो कुछ यहा नहि हो सका है। दोनो पक्ष मेरी सलाह पर विचार कर रहे हैं।

आपका,
मोहनदास गाधी

श्रा० कृ० ८,
२१ सितम्बर, १७२४

१२

तार

दिल्ली
२६ सितम्बर, १९२४

घनश्यामदास बिडला
१३७ कनिंग स्ट्रीट
कलकत्ता

जानता था आप अनशन की धार्मिक अनिवायता पसन्द करेंगे। आशा है आप शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करेंगे। अभी आना अनावश्यक है। अच्छे होने पर आना ठीक रहेगा।

—गाधी

१३

शरीर को अच्छा रखो। तब तो मैं काफी काम ले लुंगा और कुछ दुंगा। कम से कम पंदरह दिन दूध की आवश्यकता लगे तो अवश्य पीओ। फल खाओ, रोटी नुकसान करेगी। दही अवश्य लेना।

उच्चार तो खराब है लेकिन उसका ख्याल मत करो। हमारी भाषा इंग्रेजी नहिं है। फ्रेंच के उच्चार बहोत खराब है उसकी कोई इंग्रेजी शिकायत नहिं करता है।

था। सुदरलालजी कहते हैं आपको हरद्वार जाने तक मेरा उत्तर नहिं मिला था और दूसरा चाहते है—मैं आपको सहाय के बारे मे कुछ लिखना नही चाहता हु। सुदरलालजी को सहाय देना, न देना इस बारे म यदि आप किसी की सलाह लेना चाह तो जमनालालजी की सलाह ले लें। सुदरलालजी कहते हैं वह आपकी स्वतत्र सहाय चाहत है और मैं सिफ आपको उनके काय के बारे म लिखू। मैं अवश्य इतना कह सकता हु कि सुदरलालजी ईश प्रेमी है, असहयोगी है, उत्साही हैं और काय करने की शक्ति अच्छी रखत हैं। यूवक वग पर उनका प्रभाव है। स्वभाव मे बहोत स्वतत्र हैं।

आपको मैंने अहमदाबाद छोडने के समय तार भेज दीया था। मैं आज आश्रम जाता हु। अब तक तो कुछ यहा नहिं हो सका है। दोनो पक्ष मेरी सलाह पर विचार कर रहे हैं।

आपका,
मोहनदास गाधी

श्रा० कृ० ८,
२१ सितम्बर १७२४

१२

तार

दिल्ली
२६ सितम्बर, १९२४

घनश्यामदास बिडला
१३७ कनिग स्ट्रीट
कलकत्ता

जानता था आप अनशन की धार्मिक अनिवायता पस द करेंगे। आशा है आप शीघ्र स्वास्थ्य लाभ करेंगे। अभी आना अनावश्यक है। अच्छे होने पर आना ठीक रहेगा।

—गाधी

१३

शरीर को अच्छा रखो। तब तो मैं काफी काम ले लुगा और कुछ दुगा। कम स कम पदरह दिन दूध की आवश्यकता लगे तो अवश्य पीओ। फल खाओ, रोटी नुकसान करेगी। दही अवश्य लेना।

उच्चार तो खराब है लेकिन उसका ख्याल मत करो। हमारी भाषा इग्रेजी नहि है। फ्रेंच के उच्चार बहोत खराब हैं उसकी कोई इग्रेजी शिकायत नहि करता है।

१९२५ के पत्र

१

चि० लक्ष्मीनिवास,[1]

तुमारा खत मिला। मुझे बहोत आनंद हुआ।

सच्च है कि सबको चखा चलाना चाहिये। जसे इस जगत का चक्र एक क्षण भी बंध नहीं होता है ऐसे ही चर्खा किसी रोज कोई भारतवर्ष के घर में बंध रहना न चाहिये। धनिका के लिये मैं चर्खा को ज्यादह समजता हूं। मेरी उमेद है कि सब चर्खा चलावेंगे और सूत मुझे भेजेंगे।

शुभेच्छक

मोहनदास गांधी का आशीर्वाद

पौ० शु० ११, १९८१

५ जनवरी, १९२५

१ मेरा ज्येष्ठ पुत्र —घ०

२

भाई श्रीयुत घनश्यामदासजी,

आपसे मैंने मुसलमानों के लीये कहा था। अलीगढ में राष्ट्रीय मुस्लीम युनिवर्सिटी चलती है। उसकी आर्थिक स्थिति बहोत ही कठिन है। मैंने उन भाइयों को कहा है मैं सहाय दिलाने का प्रयत्न करूंगा। वे लोग एक रकम इकट्ठी कर रहे हैं। मैंने कहा है कि उसमें रु० ८०००० की सहाय मांगने की कोशिश मैं करूंगा। आप इस बात को सोचीये और आपका दिल यदि इस सहाय पूरी या कुछ भी देना चाहता है तो मुझे लीखिये। हिंदु मुसलमीन प्रश्न का मैं खूब अभ्यास

कर रहा हू। मेरा विश्वास मेरे हि इलाज पर बढता जाता है। अगरच मुसीबते ज्यादह देखता हु तो भी मैं आजकल काठियावाड म घूम रहा हू। आज मरा प्रवास खतम होगा।

आपका,
मोहनदास गाधी

माघ कृ० १३, १९८१
वाकानेर, २२ १ २५

आश्रम मे १२ से २६ तारीख तक रहुगा। २८ तारीख को दिल्ली पहुचूगा।

३

भाई घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला है। मैं आपको अच्छा चरखा भजन की कोशिश कर रहा हु। चरखे के साथ-साथ रामनाम खूब चल सकता है। दो ऐसे विद्वान सधश है जिन्होने चरखे के साथ रामनाम जपा और दीवानपन मे से बचे। आखर म ता जसी जिसकी भावना वसा तिसको होय।'

आपका,
मोहनदास गाधी

दिल्ली,
माघ सु० ८ १९८१
१ फरवरी, १९२५

४

भाई रामेश्वरदासजी[1]

भाई जगजीवनदास मेहता मुझे कहते ह कि यदि मैं उनका अत्यजो के लिय मदिर बनाने का साहस को पसद करू तो आप उनको धन देन के लिय तयार हैं।

[1] मेरे स्व० ज्येष्ठ बधु —घ०

भाइ जगजावनदास को मैं जानता हू। वे सज्जन और परोपकारी कामो मे हिस्सा लते हैं। अत्यज मदीर की उनकी योजना मैंने देख ली है। दूसरे अत्यज सवका मे अभिप्राय लेने का भी मैंने उनको कहा था वह भी उन्हान लीया है। जिस प्रकार का मदिर वनाना चाहते है उसम रु० २५०० का खच बताते ह। मै भी मानता हू कि एसा मकान और वाद म कितना खच हागा यदि आप इतना दान दना चाहे ता यह काय अच्छा है।

आपका
मोहनदास करमचद गाधी

मा० कृ० १३,
वधा, (३ २ २५)

५

भाई रामश्वरदासजी,

आपका पत्न मिला। जमनालालजी आजकल यहा है—उन्हान मुझ खवर दी है कि रु० १०००० उनकी पेढी पर मील गये हैं उसका व्यय अत्यज सवा म करुगा।

आपका,
मोहनदास गाधी

सावरमती
११ २ १९२५

आपका स्वास्थ्य अच्छा है जानकर आनद हुआ।

श्रीयुत आर० बिडला
बिडला हाउस
राची

६

भाई श्री घनश्यामदासजी

आपका पत्र राची स मीला है। आश्रम से एक पेटी चर्खा आपको कलकत्त भेजा गया है और एक नयी किसम का दिल्ली से भेजा गया है। दोना आपके खत मीलने के पेश्तर भेजे गय। इसलीये कलकत्ते गये हैं।

आपकी धमपत्नी की तबीयत अच्छी नहि है सुनकर मुझे खेद होता है। सब हाल ठीक जानने के सिवा कुछ कहना मुश्केल है। हा, इतना तो सामान्य है कि दद के वखत खाना कम से कम और ज्यादेतर दूध ही और फल। हमारी आन्त कमरा बध करके सोने की है। दद के समय स्वच्छ हवा की ज्यादह आवश्यकता है। परतु मेरी सब बातें निकम्मी मानता हु। आपके वैद्य या दाकतर जो कुछ कहें वही समजा जाय।

मैं आज वाईकोम जा रहा हु। शायद इस महीने की आखर तक मद्रास इलाके मे रहना होगा। आश्रम म २६ २७ माच को पहोचूगा।

आपका,
मोहनदास गाधी

फा० शु० १०, १९८१
फरवरी, १९२५

७

भाई श्री घनश्यामदासजी,

आपके लिये जो खास चरखा बनवा रहा था बनकर आ गया है—देखन मे ता सुदर है हि है। मैंने और भाई महादेव न चलाकर भी दखा है। अच्छा चलता है। मैं नही जानता कोई आपके यहा उसको अच्छी तरह बिठा सकेंगे। मुझको लिखिये कैसे चलता है। एक चरखा और भी भेजने का मैंने चि० मगनलाल को

कहा था मैं नहिं जानता कि वह मिल गया है या नहिं। आपको मैंने एक पत्र इसके पश्तर लीखा था, मिला होगा। मैं वाइक्म जा रहा हु।

आपका,
मोहनदास गाधी

फा० शु० ६
२८ फरवरी, १६२५

श्रीयुत घनश्यामदास बिडला,
बिडला हाउस
कनिंग स्ट्रीट कलकत्ता।

८

भाई घनश्यामदासजी,

आपके दो पत्र मिले हैं।

मुस्लीम युनिवरसिटी के बारे म आपने मुझको निश्चित कर दीया है। मैं यह तो हरगीज नहिं चाहता हू कि आपके दान से आप भाइयो म कुछ भी विवाद हो। आपका नाम मैं प्रगट नहिं करूगा।

आपने जो जमीन छोटा नागपुर मे ली है उसको नौकरा के मृत्यु के कारण छोडने की सलाह मैं नहिं दुगा। धातुरूप और जमीन रूप द्रव्य म बडा फरक नही है—द्रव्य के कारण भगडा होना, खुन भी हाना अनिवाय है। आपके धम सकट का एक ही इलाज है मिलकीयत छाड देना। यह तो आप इस समय करना नहिं चाहते हैं। हा एक बात तो मैंने कही है। क्योंकि मिलकीयत फसादा का कारण बनती ह और हमार पास अकत्तव्य भी करवाती है। उसे छोड दना और जब तक उसको हम सम्पूणतया छाडन के लिय तयार नही हैं तब तक उसका व्यय पार मार्थिक भाव ग ट्रस्टी की हैसियत स करना और अपन भागो के लिय उसका कम म कम व्यय करना। एक बात की ओर सभावना है जा सज्जन झगडा करता है उसका मीलन की कुछ कोशिश हुई है? उसकी अशाति का कारण क्या है? क्या उसकी मूखता भल हो परन्तु उसकी जमीन पानी क दाम स तो नहिं मीली है? दुष्ट पुरुष भी अपनी मीलकत फेंक देना नहिं चाहता है। यह तो दूसरा

तात्विक प्रश्न मैंने छेड़ा है।

आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य कुछ ठीक है क्या ?

मैं मद्रास २४ तारीख को छोड़ूंगा।

आपका
मोहनदास गांधी

फा० कृ० १३
८ मार्च १९२५

९

भाई श्रीयुत घनश्यामदासजी

आपका पत्र मीला है। मेरे से अच्छे होने की बात मैंने तो विनोद नहिं समजी थी। मैं उसको सर्वथा उचित समझता हूं। हमारे बडील से मित्र से हम नैतिक बल में आगे बढ़ने की अवश्य कोशिष करें। मेरे बडील ने जो कुछ नैतिक धन मुझे दिया उसमें वृद्धि करने की चेष्टा करना मेरा धर्म है। मैं तो इश्वर से हमेशा चाहता हुं कि मेरे मित्रो को मुझसे अधिक बल दे। इस प्रार्थना का तात्पर्य तो यही हुआ कि मेरे दोषो से उनको बचावे। मैं अवश्य चाहता हूं कि आप मेरे से आत्मबल में बढ़ें। उसी में मेरा आपके साथ का सगकी सफलता है। ऐसे हि आप चाहें कि आपके बल से मुझे अधिक मीले यही एक पदार्थ है जिसके लीये स्पर्धा होते हुए द्वेष नहिं हो सकता है।

पुनर्लग्न को इशारा मैंने भविष्य में आप सुरक्षित रहें इसलीये कीया।

आपका,
मोहनदास

सोमवार मार्च १९२५

१०

आश्रम साबरमती
चैत्री पूर्णिमा

भाई घनश्यामदास

आपका पत्र मिला है। आपने जो चेक भेजा उसमें से अ० भा० देशबन्धु स्मारक फंड की जो रसीद जमनालालजी के वहां से आइ है, आपको दखन के

लिये भेज दिया हू। चेक पर जो इडियामण काट लेते है वह काटकर रसीद दी जाती है। उसका मुझको यह पहला अनुभव है। हिंदु मुस्लीम झगडो के लिये मैं और क्या लिखू? मैं भली भाति समझता हू कि हमारे लिये क्या उचित है, परन्तु आज मेरा कहना निरर्थक है वह भी जानता हू। नाक पर बैठी हुई माखी को कौन हटा सकता है? बत्ती के इर्द गिर्द घूमता हुआ परवाना की गति को कौन रोकता है?

मसुरी न जाने से मैं बहुत लाभ उठा रहा हू। आपका अभिप्राय यहा मिलने के बाद आपने क्यो दिल्ली से मसुरी जाने का तार भेजा? परन्तु जिसको ईश्वर बचाना चाहता है उसको कौन मिटा सकता है?

फिनलैंड के बारे में मैं नही जानता हू—मैं क्या करना चाहता हू। जाने न जाने का मेरे नजदीक बहुत से कारन हैं। और क्योंकि मैं निश्चय नही कर सका हू, इसलिये निमन्त्रण देनेवालो को मैंने मेरी शर्त सुना दी। शर्त के स्वीकार के साथ अगर वे लोग मेरी हाजरी चाहे तो मैं समझुंगा कि मेरा जाना आवश्यक है।

आल इंडिया काग्रेस कमिटी में क्या होगा, देखा जायगा।

चीनी विद्यार्थी के लिये मैं जुगलकिशोरजी की समति चाहता हू। क्योंकि ऐसी बातो का शोख उनको ज्यादह है और उन्होंने जो कहा था उसका स्मरण करके ही मैंने लिखा है। ऐसी बातें जो मेरे सामान्य क्षेत्र के बाहर की आ जाती हैं उसमें योग्य मित्रो की सहाय मिलती है तब ही कर देता हू। आपने मेरे कामो के लिये जो बोज उठा लिया है उसमें मैं अनावश्यक वृद्धि नहीं करना चाहता हू। जब तक आप भाइयो का न्यय प्रथक प्रथक रहता है तब तक मैं भी पृथक व्यवहार करने की चेष्टा करता हू। इसलिये आप मुझे लिखें जुगलकिशोरजी क्या चाहते हैं।

आपका
मोहनदास

११

सत्याग्रहाश्रम
साबरमती

भाई श्री रामश्वरदासजी,

आपका पत्र मीला है। २५००० रू० मिलन स आपकी इच्छानुसार अयज सवा म उसका व्यय करूगा। जमनालालजा क वहा स अब तक कुछ खत नहीं आया है। जमनालालजी आजकल खादी प्रचार क लिय राजपूताने म भ्रमण कर रह हैं।

आपका,
मोहनदास गाधी

चत्र शु० ६
११ अप्रल १९२५

श्रीयुत रामश्वरदास बिडला
बिडला हाउस, राची

१२

भाइ घनश्यामदासजी,

आपके दो पत्र मीले है। आपन तिथि या तारीख का देना छोड दिया है। देते रहीया क्योकि मर भ्रमण म पत्र मीलते हैं इस कौन सी तारीख के कौन पत्र हैं उसका पता बगर तारीख मुझे नहिं मिल सकता।

हकीमजी तो यूरोप गये हैं। मैंन ख्वाजा साहेब को पुछवाया ह कि द्रव्य मिल गया है या नहिं आपको कुछ पता मीले तो मुझको बताइये।

जमनालालजी की दुकान स मैंने जाच की तो पता मीला के उनको आपके तर्फ स रू० ३०००० अब तक मीले हैं। मुनीम ने पहोच तो दी थी एसा कहते हैं। मीलन की तिथि अनुक्रम स ३०००० की १ ११ २४ और २०००० की ५ १ २५ है।

यदि डाक्टर लोग आशा बताते है तो आपकी धर्म पत्नी के मृत्यु का भय क्यो रहता है ? विकारो का वश करना मेरे अनुभव म बहोत ही कठिन तो है हि परतु वही हमारा कर्त्तव्य है। इस कलीकाल म मैं रामनाम को बडी वस्तु समजता हु। मेरे अनुभव मे ऐसे मित्र हैं जिनको रामनाम स बडी शाति मिली है। रामनाम का अर्थ इश्वर नाम है। यह मत्र भी वही फल देता है। जिस नाम का अभ्यास हो उसका स्मरण करना चाहिये। विषयासक्त ससार म चित्तवृत्ति का निरोध कैसे हो ? ऐसा प्रश्न होता हि रहता है। आजकल जनन मर्यादा के पत्रो का पत्थर मैं दु खित होता हू। मैं देखता हु कि वड लेखक कहते हैं कि विषय भोग हमारा कर्त्तव्य है। इस वायु म मेरा सयम धर्म का समर्थन करना विचित्र सा मालुम होता है। तथापि मेरा अनुभव को मैं कैसे भूलू ? निर्विकार बनना शक्य है इसम मुझे कोई शक नहि प्रत्येक मनुष्य को इस चेष्टा को करना अपना कर्त्तव्य है। निर्विकार होने का साधन है। साधना म राजा रामनाम है। प्रात काल मे उठते ही रामनाम लेना और राम स कहना, 'मुझे निर्विकार कर" मनुष्य को अवश्य निर्विकार करता है। किसी को आज किसीको कल शर्त यह है कि यह प्रार्थना हार्दिक होनी चाहिये। बात यह है कि प्रतिक्षण हमारे स्मरण म हमारी आखो के सामने इश्वर की अमूर्त मूर्ति खडी होनी चाहिए। अभ्यास स इस बात का होना सहल है।

मैं बगाल म ये प्रथमा को पहोचगा—उसी रात कलकत्ता फरीदपुर के लिये छोडुगा।

मोहनदास के
व० मा०

१३ अप्रैल २५

१३

भाई घनश्यामदासजी,

यह है हकीम साहब का तार। क्या आप मुझको रु० ७१००० अब भेज सकते हो ? यदि भेजा जाय तो देल्ही म हकीम साहब क वहा भेजाय के मुझको मुबई म जमनालालजी के वहा भेजाय ? मुझे यदि क्रेडिट दल्ही म मील ता

कमीशन का शायद बचाव होगा। मैं १ ली एप्रील तक आश्रम में हुगा उसके बाद काठियावाड में दुबारा जाऊगा। मई दो तारीख को फरीदपुर पहोचना होगा।

आपकी धर्म पत्नी की सेहत अच्छी होगी।

गोरक्षा का काय में मेरे ही ढंग से उठाना चाहता हु या तो वहा मुझको उठाना पडेगा। इस काय में तो आप सब भाइयो की सहाय की मैं आशा रखुगा। बडे सकोच से मैंने इस काय को हस्तगत करने का स्वीकार किया है।

आपका,
माहनदास गाधी

चैत्र शु० २
मुबई २६ ४ १९२५

१४

भाइ श्री घनश्यामदासजी,

आपका खत मिला है।

आपका सूत अच्छा है जिस पवित्र काय का आपने आरभ किया है उसको आप हरगीज न छोडें। आपकी धर्म पत्नी के बारे में आप प्रतिज्ञा ले सकते हैं कि यदि उनका स्वगवास होय तो आप शुद्ध एक पत्नी व्रत का सवथा पालन करेंगे। यदि एसी प्रतिज्ञा लेन की इच्छा और शक्ति हो तो मेरी सलाह है कि आप आपकी धर्म पत्नी के समक्ष उस प्रतिज्ञा को लें।

२० हजार रुपये के लीये मैं जमनालालजी की दुकान से पूछुगा।

श्री रायचदजी से मेरा खूब सहवास था। मैं नहिं मानता हु कि सत्य और अहिंसा के पालन में वे मेरे से बढते थे। परन्तु मेरा विश्वास है कि शास्त्र ज्ञान में और स्मरण शक्ति में मेरे से बहोत बढते थे। बाल्यावस्था से उनको आत्मज्ञान और आत्मविश्वास था। मैं जानता हु कि वे जीवन मुक्त नहो थे। परन्तु उनकी गति उसी दिशा में बडे जोर से चल रही थी। बुद्ध देव इ० के बारे में उनके ख्यालो से मैं परिचित था। जब हम मिलेंगे तब उस बारे में बातें करेंगे। मेरा बगाल में प्रवास मे मास मा शुरू होता है।

अलीगढ के बारे में मैंने आप से रू० २५००० की मागनी की है। हकीमजी का तार भी आपको भेजा है।

आपका,
मोहनदास गांधी

चत्र शु० ६, १६८२
३० ४ २५

क्या मेरे दस्तखत पढ़ने में आपको कष्ट नहीं होता है?

१५

भाई श्री घनश्यामदासजी

महार लोक जो यहा रहते हैं वे मुझे कहते हैं कि आपने उन लोगो को रू० ३०००० मंदीर और वसति गृह बनाने के लीये देने का कहा है। यदि मैं उसमें सम्मत हु तो क्या आपने उन लोगो से ऐसा कुछ कहा है? उनके नेता का नाम श्री माखल है?

आपका,
मोहनदास गांधी

वै० व० ६
१४ मई १६२५

उत्तर साबरमती भेजियेगा मैं गुरूवार के रोज वहा पहोच जाऊगा।

१६

भाई श्रीयुत घनश्यामदासजी,

आपका खत मीला है। मैंने अत्यज मडल के नेता को लीख भेजा है कि आपने रू० ३०००० देने की प्रतिज्ञा नहिं की है।

जाति में जो फिरके हो गये है यह बात यदि बुरी है तो भी आपका फिरका दूसरे से विनययुक्त रहने से जरूर फलता फूल जावेगा—हा, यह तो है कि शाति

और झगड़ा दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते हैं। एक को ही ग्रहण करके उसीका सेवन करने से उसका फल मिलता है—झगड़े का फल हम यूरोप में देख रहे हैं। सच्ची महाव्रत है कि नहिं। शांति का प्रयोग समाजों में अब तक ठीक ढंग से हुआ नहिं है।

आपका,
मोहनदास गांधी

ज्य० शु० १
साबरमती। २३ मई १९२५

१७

भाई श्री घनश्यामदासजी

आपका खत मिला है। पिताजी की तबीयत अब अच्छी होगी। प० सुंदरलालजी के बारे जो कुछ मैं लिख सकता था मैंने लिखा। हिंदु मुसलमान झगड़े का काम दिन प्रति दिन कठिनतर होता जाता है। मेरी सूचना आप चाहते हैं उसीकी बुनियाद है। यदि दिल्ली के झगड़े की अच्छी तरह से तहकीकात हो सके तो उस पर से ज्यादा काम हो सकता है। मैं बिलकुल मानता हूं कि आखर में कई नेताओं को अपना शरीर का बलिदान देना पड़ेगा।

आपका,
मोहनदास

श्रा० शु० ११
१९ जुलाई १९२५

१३७, कनिंग स्ट्रीट
कलकत्ता

१८

भाई श्रीयुत घनश्यामदासजी

आपका पत्र फलाहार के विषय में मीला है। मैंने कई वर्षों तक केवल सूका और गीला मेवा हि खाया है। उससे मुझको कुछ भी हानि नहिं हुई। उसी समय

मैंने नीमक इ० का भी त्याग कीया था। आपको मैं इस प्रयोग करने की सलाह नहिं दे सकता हु। परतु आप यदि नीमक का और घी का कुछ अरसे तक त्याग करें तो विषयाग्नि को शात करने मे अवश्य सहाय मीलेगी। मसाला पान सोपारी इ० का तो त्याग होना हि चाहिये। केवल भोजन के सयम से मनुष्य कामादि को नहिं जीत सकता है परतु सयमी एक भी बाह्योपचार को छोड नहिं सकता है। विषयो का आत्यतिक क्षय पर के दशन से हि हो सकता है। यह गीता वाक्य है और सत्य है। आरोग्य दिग्दशन नाम का मेरा पुस्तक आप अवश्य पढ़ें यदि आपने न पढा हो तो उसका हिंदी अनुवाद वर्षो से छप चुका है।

आपका स्वास्थ्य अब बिलकुल अच्छा हो गया होगा। आपकी धम पत्नि की शाति चाहता हू।

आपका
मोहनदास गाधी

धा० छ० १३
१८ जुलाई १६२५

१६

आश्रम
साबरमती
ता० २० ७ २५

भाई घनश्यामदासजी,

आपके दो पत्र मिले हैं।

बारडोली के बारे मे कुछ नहिं भेजा है—उसमे हरज नहिं है—काफी धन मील रहा है। भीड होगी तब अवश्य तकलीफ दुगा—समझौता होने का अब कम सभव है—हुआ तो भी ठीक न हुआ तो भी ठीक—सत्याग्रह की बागडोर ईश्वर हीं के हाथो मे रहती है—वल्लभभाई आज यही हैं।

बहिष्कार के बारे मे मैं दुबारा नवजीवन' मे लीखुगा।

आपका

२०

भाई श्रीयुत घनश्यामदास,

आपका खत मिला है।

मैं तो खूब जानता हू कि श्री मालवीजी और श्रद्धानन्दजी के सिवाय हिंदु मुसलमान एक्य असभवित हि है। मैं ता केवल मार्गदर्शक हि रहना चाहता हू और छोटे छोटे झगडे हो जाय उसमे कुछ कर सकु तो करना चाहता हु—मेरा काय भगी का है—साफ करना और रखन की कोशिश करना—जब कुछ भी सुलहनामा बनाने का समय आवेगा तब तो अवश्य श्री मालवीजी इ० की सम्मति का पूरी आवश्यकता होवेगी।

आपका,
मोहनदास गाधी

श्रा० शु० ८
२८ जुलाई, १६२५

२१

भाई श्रीयुत घनश्यामदास,

आपका पत्र मिला है। पी० जायर के पत्र का कुछ असर मेरे पर नही पडा क्योकि हिंदु धम को बचाने का रास्ता हि मैं दुसरा समझता हु। अखबार निकालन से भी कुछ लाभ होगा एमा मैं नहि मानता हु। पजाब म आजतक हम लोगा ने मुसलमाना का मौका हि नहि दीया है। मी० दास दुसरा कर हि नहि सकत थ। उन्होने पक्ट बनाया। मौक पर वही क्स तोड सकते थे ? दिल्ली जात हुए मुझको कोई रोकत नहि हैं। सप्टेबर म तो एस भी मैं वहा पहोचन की उमीद रखता हु।

आप मुझे सब हाल लीखते रहे और कुछ पढने के लायक वस्तु हो भेजते रह।

आपका,
मोहनदास

श्रा० सु० ११, १६८२
३१ जुलाई, २५

मी० आयर का खत वापिस भेजता हु। आज मुझको रु० १००००)मील गय है। कल आपको एक खत हरिद्वार के ठिकाने पर भेजा गया।

२२

भाई श्रीयुत घनश्यामदासजी,

आपके पत्र का उत्तर मैंने जमनालालजी के माफ्त भेजा था वह मीला होगा। आपका लबा पत्र जब मुझे मीला था तब मैंने उसका स विस्तार उत्तर भेज दीया था और उसकी निज की रजिस्ट्री भी है। वह उत्तर सोलन मे भेजा गया था। कसे गुम हो गया, म नही समझ सक्ता हु।

उसम मैंने जो लिखा था उसकी तफसील यहा दता हु।

आपन एक लाख का दान अ० देशबधु स्मारक म कीया उसकी स्तुति की और उसका यथाशक्ति शीघ्रता से दन की चेष्टा करने की प्राथना की।

पू० मालवीयजी और पू० लालाजी का मैं साथ नहि दे सक्ता हू उसका कारण बताया और मर उनके लिय पूज्य भाव की प्रतिज्ञा की।

प० मोतीलाल जी और स्वराज दल का सहाय दता हु क्योकि उनके आदश कुछ न कुछ तो मर स मिलत है। उसम व्यक्तिगत सहाय की बात नहि है।

और बातें तो बहुत सी लिखी थी परतु इस समय वे सब मुझे याद भी नहि हैं।

आप दोनो का स्वास्थ्य अच्छा होगा।

मेरे उपवास की कथा आपने सुन ली होगी। मेरे इस खत लिखने से हि आप समझ सकते है कि मेरी शक्ति बढ रही है। उमीद है कि थोडे दिनो में मैं थोडा शारीरिक श्रम उठा सकूगा।

मैं ता० १० को वर्धा पहोचूगा। वहा कुछ दस दिन रहने को मिलेगा।

आपका,

मोहनदास गाधी

शुक्रवार,
अगस्त १९२५

२३

१ सितम्बर, १९२५

भाइ श्री घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मीला होगा। आपके मत्री का उत्तर भी मैंने पढ लीया है आपको अब कुछ ज्यादे करने का नही रहेता है। आपका स्वास्थ्य अच्छा है क्या? जमनालालजी आजकल यहीं हैं।

आपका

मोहनदास

श्री घनश्यामदासजी बिडला
पिलानी राजपुताना

२४

बिडला हाउस
हरद्वार

भाइ श्री घनश्यामदासजी

आपका पत्र मीला है।

अहिसा भाव से हिंसा भी हो सकती है ऐसा अब तक मेरी कल्पना मे नहिं आ सका है—मैंने खूब सोचा है—मेरा यह भी मन्तव्य है कि जब तक हम स्वय गुणवान न बन सकें हम इस वस्तु को पूर्णतया सोच भी नहिं सकते हैं।

स्वामी आनन्द ने आपको 'यंग इंडिया' के लिये बिल भेज दीया है।

मैं दिल्ली जाना चाहता हु परन्तु थोडी देर होगी। दिल तो चाहता है अभी चला जाउ। परंतु शारीरिक परिश्रम के लीये मैं तयार नहि हु।

आपका,
मोहनदास गांधी

अ० कृ० ८,
१० सितम्बर, १६२५

२५

भाई श्रीयुत घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मीला। लोहानी के बारे में आपको विशेष तकलीफ इस समय तो नहि दुंगा।

जमनालालजी मुझे कहते थे कि जो २५००० रुपये आपने मुस्लिम युनिवरसिटी को दीये वह जो ६०००० जुहु में देने की प्रतिज्ञा की थी, उसी में के थे। मेरी समझ ऐसी थी और मैंने ६०००० दूसरे कामों में खर्चने का इरादा रक्खा था। परंतु यदि आपकी समझ ऐसी न थी कि मुस्लिम आप ले लें। उसकी व्यवस्था आपहि करें तो मुझको प्रिय लगेगा। यदि न करें तो व्यवस्थापक मैं ढूंढ लूंगा। टनरी की अपनी हि जमीन कुछ बीघा है। मैंने देख ली है। श्री मधुसूदन दास ने इसमें अपने बहोत पैसे खर्च किये हैं।

तो सही बात है चखा संघ की आप इसमें साथ दे सकते हैं? आप अखिल भारत देशबंधु स्मारक में अच्छी रकम दें, ऐसा मांगता हु। युनिवरसिटी के रुपये अलग न माना जाय तो मुझे कुछ कहना नहि है।

दूसरी बात यह है। गोरक्षा के बारे में मेरे ख्याल आप जानते हैं। श्री मधुसूदन दास की एक टेनेरी कटक में है। उसकी उन्होंने कम्पनी बनाई है। उसमें ज्यादा शेर लेकर प्रजा के लीये गोरक्षा के कारण कब्जा लेने का दिल चाहता है। उस पर रू० १२०००० का कर्ज होगा। उस कर्ज में से उसकी मुक्ति आवश्यक है। टनरी में चमडे बकर मृत जानवरों के लीये जाते हैं परंतु पादलाघा को मरवाकर भी उसके चमडे लेते हैं। यदि टेनरी लें तो तीन शर्त होनी चाहिये।

१) मृत जानवर का हि चमडा खरीदा जाय।
२) पाटलघो को मरवाकर उसका चमडा लेने का काम वध किया जावे।
३) सूत लेने की बात हि छोड दी जावे यदि कुछ लाभ मीले तो टनेरी का विस्तार बढाने के ही लिये उसका उपयोग किया जावे।

मैं चाहता हु कि यदि इस शत से टॅनरी मिले तो इन तीनो बात क बार म आपसे जमनालालजी ज्यादा बात करेंगे। यदि आपका उनके साथ दिल्ली म मीलना हुआ तो।

आपकी धम पत्नी को कुछ आराम हुआ है क्या ?

म बिहार म १५ तारीख तक हुगा।

आपका
माहनदास गाधी

२७ सित० १९२५
पटना,
आ० शु० १०

२६

भाई घनश्यामदासजी

आपका पत्र मीला है।

मरे लेख के बार म मुझे विश्वास है कि मैंने 'बा' का अन्याय से बचा ली है। बा भी दिल म यही समजती है ऐसा मुझको प्रतीत हाता है। अन्यथा इतन प्रफुल्लित चित्त म मेरे साथ घूम न सकती। कई बखा दोषारोपण स बा का छगनलालादि का मैंने बचा लीये हैं। लोप के जाहिर स्वीकार का मीठा अनुभव मैंने जितना लिया है इतना शायद और किसी ने हमार समाज म लीया हो। मुझका आश्चय है कि यह बात आपने नहि पहचान ली।

मील वाला के पास से पसे लेन की चेप्टा अवश्य करें। उसमे किसी प्रकार की शत नहि होनी चाहीये। खादी को लाभ मीला या न मीला। मीलो का तो अनहद लाभ हो रहा है एसा वाडीया ने भी स्वीकार कीया है। मील मालेक और थोडा समझ जाय तो और भी लाभ उठा सक्ते हैं। काल जात समझेंग।

आपका,

नवम्बर १९२५ मोहनदास

२७

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मुझे मीला है। उसके पहले मैंने उपवास के बाद एक पत्र आपको दिल्ली के शीरनाम से भेजा, मीला होगा। मेरे उपवास का रहस्य आप खूब समय गये हैं।

मैं कल वर्धा आ गया हु। यहा मुझको बडी शाति मीलती है। आज कल ता हवा भी बहोत हि अच्छी है।

आपकी धमपत्नी शात चित्त रहती है जानकर मुझको आनन्द होता है— मृत्यु की भेंट जब आवे तब हम क्या खुशी से न करें।

आपका,

माहनदास गाधी

वर्धा
मा० कृ० १
१२ १२ २५

श्रीयुत घनश्यामदास बिडला,
महेन्द्र विला सोलन,
सिमला हिल्स।

२८

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला। अनायास ही मीला। क्योंकि जिस जहाज में मैं जाने वाला था वह रुक गया। अच्छा हुआ।

मारवाडी ब्याज प्रयोग से दुःख लगना नहीं चाहिये था। लगा तो मेरे जैसे को तो उसी समय कह देना चाहिये था। मैंने तो उस शब्द का प्रयोग केवल विनोद में ही कीया था। काठीयावाडी शब्द का प्रयोग मैं बुरे अर्थ में बहोत करता हूं। काठीयावाडी का अर्थ ग्वरपरी लुच्चा ऐसा होता है इसका अर्थ यह तो नहिं है की मैं भी ऐसा हूं। आपके प्रभाव-वश होकर मैं विनोद में भी आप यदि चाहें तो मारवाडी शब्द का बुरे अर्थ में प्रयोग नहीं करूंगा। परन्तु मैं चाहता हूं कि आप ऐसे शब्द प्रयोग से न डरें। When Greek meets Greek (जब ग्रीकवाला ग्रीकवाले से मिलता है) का प्रयोग प्रख्यात है इससे कोई ग्रीक-मात्र को दगाबाज नहिं समझेगा।

आपके जानने के लीये मैं लिखता हूं कि गुजरात में भी अयोग्य और निर्दय सूद लेने वाले बहोत हैं। मारवाडी अच्छे हों या बूरे आप तो शरीर में अच्छे बन जाय जैसे हृदय में हैं और मारवाडी की आहूती भारतवर्ष के यज्ञ में कर दें।

आपका

मोहनदास

मुंबई
रविवार, १६२५

२९

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला है। आपको दुःख हुआ है उसका कारण केवल अखबार वाले हैं। मेरी भाषा वे समझते नहिं हैं तदपि कुछ न कुछ लीख डालते हैं। जो वस्तु मैंने स्तुतिभाव से कहा उसीको निंदा के भाव में लीख दीया। मैं सभ्या की गोरक्षा

के विषय म स्तुति कर रहा था और बता रहा था कि जब तक मारवाडीया की पूरी सहाय मुझे नहि मिलेगी मैं कुछ नहि कर सकुगा। मुझे सहाय केवल उनके धन की नहि परतु उनकी बुद्धि की भी चाहिय। इस सिलसिले मे मैंने स्तुति रूप मे कहा की मैंने एक मारवाडी भाई को खजानची बनने का निमत्रण दीया था नहि धन के लीये परतु उनके पास से पूरी सेवा लेन के लीये। कसा भी हो मैंने आपके नकार का बुरा कभी नहि माना है, न उस सभा म मैंन बुरा मानकर कहा था। मैं ऐसी उमेद किसी मित्र से नहि रखता हु कि वह मेरी प्रत्यक प्राथना का स्वीकार करें। आपके अस्वीकार को मैं पूरा समझ सका था।

इसी तरह मैंने आपका देशबन्धु स्मारक के लीये निश्चय भी समझ लीया है उससे मुझको कुछ दु ख नहि हुआ है।

आखिल भारत स्मारक के बारे मे आपने जा प० जवाहरलाल को लीखा है उसका तात्विक भाव म समझ लुगा। जब हम मीलेंगे तब।

आपका स्वास्थ्य अब तक पूरा अच्छा नहि हुआ है ऐसा जुगलकिशारजी[1] कहते थ। आपके खुराक म कुछ फेरफार करने की आवश्यकता हो सकती है। आपकी धमपत्नी को अब तक आराम नहि हुआ है एसा भी वे कहत थे। ईश्वर उनका शाति दे।

आपका,

मोहनदास गाधी

मेरे दायने हाथ म दरद होन के कारण मैं बाये हाथ से लीखता हू।

[1] मेरे बड़े भाता -घ०

१९२६ के पत्र

१

सावरमती आश्रम
२०-१-२६

प्रिय घनश्यामदासजी

यह पत्र समय बचाने के लिए अंग्रेजी म लिख रहा हू। आपका पत्र उसके साथ भेजी मामग्री सहित मिल गया है। गाधीजी क कुछ अच्छे होते ही मैं लाड लिटन की स्पीच उनके सामने रख दूगा। आपने सुना ही होगा कि वह चारपाई पर हैं और पिछल दो तीन दिन स उन्हें जोर का बुखार चढ रहा है। आज तो ज्वर नही हुआ, पर आज मैं उन्ह व्यस्त नही करना चाहता।

दूसरी कटिंग मुहम्मद अली क अनुरूप ही है। उन्होंने 'कामरड' म कही अधिक चौंका देनेवाली बातें कही ह। मैं तो नही समझता इसे लेकर बापू को परशान करना ठीक हागा।

आपन मेरे उस नौजवान मित्र का काम म लगा दिया इसके लिए आभारी हू। कहता है आपने उसे १ली माच स कलकत्ते म काम शुरू करन को कह दिया है। मुझे आशा है, वह मन लगाकर अच्छी तरह काम करेगा। पुन धन्यवाद

आपका,
महादेव देसाइ

२

बिडला हाउस,
सब्जी मण्डी दिल्ली
२३ जनवरी, १९२६

प्रिय महादेवभाई

इस पत्र के साथ दो कटिंग भेज रहा हू—कृपा करके महात्माजी को द देना। इनम स एक उस स्पीच के बार म है जो मुहम्मद अली न दिसम्बर म दी थी और जिसकी रिपोट मैंने महात्माजी को भेजन का वचन दिया था।

दूसरी कटिंग लार्ड लिटन की स्पीच की है। मुझे विश्वास है, महात्माजी इसे बहुत पसंद करेंगे। स्पीच का विषय ऐसा है जिसका भारत में महात्माजी से बढ़कर कोई विशेषज्ञ नहीं है और मैं समझता हूं कि यदि महात्माजी लार्ड लिटन का ध्यान उनकी त्रुटियों की ओर आकर्षित करेंगे तो उनकी दिलचस्पी होगी। लार्ड लिटन ने जो कहा है उसके ग्रवधान में उन्होंने कोताही की है पर उन्होंने जो कुछ कहा है यदि वह उतने पर भी दृढ़ता से अमल करें तो उन्हें आर्डिनेंस के अन्तर्गत पकड़े गये बंदियों को जरूर छोड़ देना चाहिए। मैं लार्ड लिटन को एक भद्र पुरुष और एक अच्छा मसीही मानता हूं इसलिए यदि महात्माजी उनकी स्पीच पर कोई टिप्पणी करेंगे तो उसकी उनके मन पर अच्छी छाप पड़ेगी।

पत्र अंग्रेजी में लिख रहा हूं क्षमा करना। पर शार्ट हैंड टाइपिस्ट को बोलने में समय की बचत होती है और आजकल काम का बोझ बढ़ गया है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

३

भाई घनश्यामदासजी,

आपके तार और पत्र मीले। आप शांत चित्त हैं इससे मुझे आनंद होता है। अब मेरी उमेद है की आप दूसरे विवाह के प्रलोभन में कभी न पड़ेंगे।

दक्षिण आफरीका जाने का कुछ संभव मैं नहिं देखता हूं।

आपका
मोहनदास गांधी

साबरमती
गुरुवार
फरवरी, १९२६

४

आश्रम साबरमती
ता० २८ ३ २६

भाइ घनश्यामदास

आपका पत्र मिला। अभी जमनालालजी का तार आया है कि मैं अप्रिल १५ तारीख के बाद यहा से रवाना हो जाऊ तो काफी होगा। इस वास्त तो यहा की हवा वहुत ही अच्छी है। प्रात काल मे खूब ठण्डी रहती है और दिन भर म कुछ ज्यादह गरमी नही होती है।

आप अवश्य विश्वास करें कि अगर मैं दोना पक्ष[1] को एकदम मिला सकू ता पूरा प्रयत्न कर लू। परतु इस समय यह काय मेरी शक्ति से वहार मालुम होता है। स्वराज पक्ष के लिये तो हमारा मतभेद रहेगा ही। मौलाना महमद अली की भाषा मे व्यक्तियो को छोडकर जब दो नीड—सिद्धात—की तुलना करने का समय आता है तब कहना पडता है कि स्वराज दल का सिद्धात दूसर के मुकावले म अवश्य प्रशसनीय है भले दोना असहयोग के मुकाबले म कनिष्ट हो।

आपका,
मोहनदास

१ मालवीयजा और मोतीलालजा का दल।

५

आश्रम साबरमती
११ ४ २६ रवि

भाई घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला। जिमस बहुत सी बातें स्पष्ट हो जाती हैं। अखबारो स मैं झगडे का बयान पढ लेता था। मैंने दिल मे निश्चय कर लिया है कि दानो को लडने से कम स कम म तो रोक नही सकता हू। इसलिये अब कलकत्ते के झगडे का कोई असर मरे पर नहि हुआ। मैंने यह भी तो कब से कह दिया है कि यदि

हिंदु लडना ही चाहते हैं ता निदयता का दोष न समयें परन्तु गुण समझकर उसकी वद्धि करनी होगी। और यही बात कलकत्ते मे हा गई है, एसा प्रतीत हाता है। आपने दाना को निष्पक्षपात होकर बचायें और समस्त मारवाडियो ने तीन सौ करीब मुसलमानो की प्राण रक्षा की, यह बात हिंदु जाति के लिये गौरव की है।

आपन खद्दर का व्रत ले लिया इससे आपको और आग्रह करने वाना को धयवाद देता हू। इस व्रत का फल आपको तो मिलेगा ही। परन्तु जनता को भी इसका फल अवश्य मिलेगा। मैं मसुरी २२ तारीख को जाऊगा। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। सत्याग्रह सप्ताह होने के कारण मैं आजकल दो घटा कातता हू और आश्रम म पाच अखड चरखे चलते हैं। आपन टाइटल लेने का इनकार किया मुझको बहुत अच्छा लगा। इनकार करने के लिये न गवनमट को दुश्मन समझने की आवश्यकता है न टाइटल को बुरे समझने की है। अगरचे मैं तो टाईटल को अवश्य बुरा समझता हू हमारी इस हालत म।

आपका
मोहनदास

६

आश्रम साबरमती
१६ ४ २६ शुक्र

भाई श्री घनश्यामदास

आपका खत और २६ हजार रुपये का चेक मिला है। हिन्दु मुसलमान झगडे के बारे म आपने जो प्रश्न पूछे हैं उसका उत्तर मैं देता हू परन्तु अखबारो के लिय नहीं। मैंने आपसे कहा था कि आजकल हिन्दु जनता पर या तो हिंदु जनता के उस विभाग पर कि जो इन झगडो म दखल देता है मेरा कोई असर नहीं है। इसलिये मेरे कहन का अनथ हो जाता है। इसलिये मैं शात रहना वही मेरा कत्तव्य समझता हू।

१) जुलूस यदि सरकार न बन्द कर दिये हैं और कोई धार्मिक काय के लिये जुलूस की आवश्यकता हो तो सरकार की मनाई होते हुए भी जुलूस निकालना मैं धम समझूगा। परतु जुलूस निकालने के आगे मैं मुसलमानो से मनजोरी की

बात कर लूगा और इतने भी विनय करने पर न माने तो मैं जुलूस निकालुगा और वे मारपीट करें उसकी बरदास्त करूगा। यदि इतनी अहिंसा की मेरे म शक्ति न हो तो मैं लडाई का सामान साथ रखकर जुलूस निकालुगा।

२) मुसलमान सईस इ० नौकरो के बारे मे मैं किसी को केवल उसके मुसलमान होने के कारण नही निकालुगा परतु किसी मुसलमान को मैं नही रखूगा जो वफादारी से अपना काम नही करेगा, या तो मेरे मे उद्दड बनेगा। मेरा ऐसा अभिप्राय नही है कि मुसलमान अन्य कामो से ज्यादे कृतघ्न हैं। ज्यादह लडाकु हैं यही बात मैंने उनमे देखी। किसी मुसलमान का मुसलमान होने के कारण ही त्याग करना मुझको तो बहुत ही अयोग्य मालुम होता है।

३) जो हिंदु शांति मार्ग को नापसद करता है या तो उसके लिए तयार नही है उसको लडाई करने की शक्ति हासिल कर लेनी चाहिए।

४) यदि सरकार मुसलमानो का पक्षपात करती है तो हिंदुओ को बेफिकर रहना चाहिए। सरकार से बेपरवा रहे। खुशामद न करें परतु अपनी शक्ति पर निर्भर होकर स्वाश्रयी बनें। जब हिंदु इतना हिंमतवान बन जायगा तब सरकार अपने आप तटस्थ रह जायगी और मुसलमान सरकार का सहारा लेना छोड देगा। सरकार की मदद लेने मे न धर्म का पालन होता है न कुछ पुरुषार्थ बनता है। मेरी तो सलाह है कि आप इस चीज को तटस्थता से देखें और कार्य करें। इसी मे हिंदु जाति का भला है हिंदु धर्म की सेवा है। यह मेरा दीर्घकाल का—कम से कम ३५ वर्ष का अनुभव है। झगडा होने के समय जिस शांति से और वीरता से आपने काम किया वह मुझको बहुत ही प्रिय लगा। इसी शांति को कायम रखकर आप जो कुछ योग्य हो वह करें। यदि मेरे उत्तर मे कही भी स्पष्टता का अभाव है तो अवश्य दुबारा पूछियेगा।

जो लाख चरखा सघ को देने का आपने कहा है उसमे से कुछ हिस्सा बबई के माल पर लेने का इरादा है। बबई मे चरखा सघ के दो गोडाउन है। आप चाहें तो उसमे से आप एक का कबजा ले लवें और इसी मे लाख Cover (कवर) करने के लिये जितना माल चाहिए इतना रखा जाय, और उससे ज्यादा माल भी आप समत हो तो हम रखना चाहते हैं जिससे एक गोडाउन का किराया हम बचा सकें। और वह माल हम जब चाहे तब ले सकें ऐसा प्रबन्ध होना चाहिए। जो माल चरखा सघ Security (सिक्यूरिटी) के बहार रखे उसमे हमेशा वध घट होती होगी। इसलिये हमेशा उसमे प्रवेश करने का सुभीता मिलना चाहिए।

आपका
मोहनदास

७

आश्रम, साबरमती
२८ ४ २६ बुध

भाई जुगलकिशोरजी,

आपका पत्र आज मिला। अब मैं लडकी के लिए पैसे भेज दूगा। आज तो इस चीनी विद्यार्थी म सब शुभ गुण प्रतीत होते हैं। उसीके मागन से उसको हिंदुस्तानी नाम दिया गया है और हम उसको 'शाति' नाम स बुलाते हैं।

हिंदु मुसलमाना की आजकल की अशाति यद्यपि दु खद है तदपि उमीम स मैं शाति के किरण देख रहा हू। हम धम को न भूलें इतनी प्राथना ईश्वर स निरतर करता हू।

आपका
मोहनदास

८

आश्रम, साबरमती
२३ ५ २६, रवि

भाई घनश्यामदास,

आपका पत्र मिला था। खादी के विषय म जो दान आपन देन की प्रतिज्ञा की है इस बार म आपके खत की नक्कल जमनालालजी को भेज दी है।

साबरमती समझौते के बारे म तो स्तब्ध हो गया। अब तक मैं कुछ समझ सकता नहीं हू। हिंदु मुसलमान के बारे म मैं सब समझ सकता हू परतु लाचार बन गया हू क्योंकि मैं आत्मविश्वास को नहीं छोड सकता हू इसलिए निराश नहीं होता। इतना तो समझता हू कि जिस ढग स आज हिंदु धम की रक्षा करन की कोशिश होती है उस ढग स रक्षा नहीं हो सकती है। परतु मैं तो 'निबल के बल राम' वस्तु को सपूणतया मानता हू। इसलिए निश्चित हो बैठा हू।

आपका
मोहनदास

६

आश्रम साबरमती
८ ६-२६ मगल

भाई घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला। खादी प्रतिष्ठान को चरखा सघ की मार्फत आज तक कम से कम ७० हजार रुपये मिल हैं। मुझे जहा तक स्मरण है २५ हजार रुपये आश्रम को और ६ हजार प्रवतक सघ का आपन दिये थे। और भी छोटी छोटी रकम दी गई हैं। सब मिलाकर करीब १। लाख रुपये हुगे। और भी बगाल मे पैसे दिये जायेंगे। मैं जानता हू कि खादी प्रतिष्ठान की आवश्यकता बहुत बडी है। सतीशबाबू अपना काम बहुत ज्यादा बढाना चाहते हैं। मुझे यह बात प्रिय भी है। परतु चरखा सघ म आज तो पस बहुत ही कम हैं। इसलिये यद्यपि चरखा सघ की मार्फत जो कुछ हो सकता है वह किया जायगा, तो भी आप जितना दे सकें इतना सतीशबाबू का अवश्य दें।

काउन्सिल म जाने क बारे म मैं क्या लिख सकता हू? पूज्य मालवीयजी स इस बार म मेरा मौलिक मतभेद है। मैं केवल इतना ही कह सकता हू कि यदि आपका विश्वास है कि आपके काउन्सिला म जान स कुछ लोकहित होगा तो आपको उसम जाना चाहिए। स्वराज दल का विरोध और राजनैतिक शिक्षण का प्रलोभन य दोनो बातें नतिक दृष्टि स ख्याल करने मे अप्रस्तुत हैं। यदि आप ऐसा समझते हैं कि आपन काउन्सिल म न जान की प्रतिज्ञा मेरे सामन की है तो इस समझ को आप दूर करें। ऐसा कोई प्रतिबध आपन निश्चयपूर्वक स्वीकार नही किया है। ऐसे बधन स अपने आपको मुक्त समझकर केवल नतिक दृष्टि से आप काउन्सिल प्रवेश के बारे म अपना मत निश्चित करें।

आपका,
मोहनदास

१०

कलकत्ता
२१ जून १९२६

पूज्य महात्माजी,

मैंने खादी प्रतिष्ठान का बन्द बाजारवाला आफिस और गोदाम जाकर देखे और मैं वहा कोई पौन घण्टा रहा। वे लोग जिस सुव्यवस्थित ढग से उसे चला रहे है उससे मैं प्रभावित हुआ। सतीशबाबू और प्रफुल्लबाबू बिक्री बढाने म कामयाब हुए है। बिक्री हर महीने बढ़ती जा रही है। फिलहाल महीने पीछे कोई २४,०००) की बिक्री होती बताई गई। उनके कथनानुसार गोदाम मे लगभग ७५ ०००) की खादी मौजूद है।

मेरा वहा जाने का उद्देश्य यह पता लगाना था कि जिस ऋण का मुझे वचन दिया गया है उसका कुछ अश ये लोग काम म ला सकेंगे या नही। पर मुझे कुछ कठिनाइया गिनाई गइ जो इस प्रकार हैं

पहली कठिनाई तो यह है कि ये लोग जिस किस्म का कपडा बेच रहे हैं उसका दाम उसी किस्म के मिल मे तयार किये गये कपडे के दाम से कही अधिक ऊचा है। मिला म तयार हुई १० ताने और १२ बाने की खादी की कीमत बाजार मे ॥। =) पौंड है पर घटिया किस्म की शुद्ध खादी प्रतिष्ठानवाले १॥ =) पौंड के हिसाब से बेचते हैं। यह तो रही सादी खादी की बात। रगीन और बढिया किस्म के कपडे के दाम और भी ऊचे है। उदाहरण के लिए—बेल बूटे की कनी वाली साडी ये लोग ६) पौंड के हिसाब मे बेचते हैं जबकि मिलो म तयार की गई वसी ही साडी १) पौंड के हिसाब से मिलती है। सादी कनीवाली साधारण-सी साडी के दाम उन्होने ३) पौंड लगा रखे हैं जबकि मिला द्वारा तयार वैसी ही साडी का दाम वही १) पौंड है। इस प्रकार कुछ कपडो पर प्रतिष्ठान और मिला वाले कपडो म लगभग ६ गुना अन्तर है जबकि अधिकाश कपडो पर लगभग ढाई गुने का अन्तर है। यदि मूल्य कूतो म उदारता से काम लिया जाय तो उनके गोदाम म रखा स्टाक ७५०००) से अधिक नही है। यदि मैं स्वय कीमत लगाऊ तो ७० प्रतिशत ऋण देने को राजी होने पर, उन्हे केवल २१०००) रुपये दिये जा सकते हैं।

एक कठिनाई और भी है। सतीशबाबू का कहना है कि अदायगी की शर्त पर रुपया उधार लेने को उनका मन गवाही नही देता, भले ही यह भुगतान २ ३ बरस

बाद ही क्यों न किया जाय। उन्हें तो काम-काज बढ़ाने के लिए रुपया चाहिए। यदि उधार लिये गये रुपये के भुगतान की शर्त रखी गई, तो यह तब तक असम्भव होगा जब तक दान-अनुदान द्वारा रुपया एकत्र न किया जाय। किसी व्यापारी के लिए आपके इस साधन पर निर्भर करना असम्भव है। इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए मुझे लगता है कि कलकत्ते के लोग ऋण के रुपये का उपभोग करने में असमर्थ रहेंगे। मेरा अनुमान है कि अन्य खादी भण्डारों की भी यही स्थिति होगी। व्यापार के क्षेत्र में दान-अनुदान न रुपया देनेवालों को रुचिकर लगता है न लेनेवाले को। प्रतिष्ठान के मामले को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि ऋण लेनेवाले को ऋण देनेवाले की अपेक्षा अधिक परेशानी होगी क्योंकि अदायगी की जिम्मेदारी उसने अपने ऊपर ली है। वैसी स्थिति में वह माल का मूल्य इस प्रकार कूतेगा, जिससे ऋण के भुगतान के बारे में कोई दुविधा न रहे। एक बात और भी है ऋण की पूंजी से तभी सहायता मिल सकती है जब उसे स्थायी रूप से लगाये रखा जा सके। पर मैं ऐसी एक भी शर्त पर राजी नहीं हो सकता। मैं अधिक-से-अधिक इतना ही कर सकता हूं कि ऋण के भुगतान की अवधि एक वर्ष बीतने पर एक वर्ष और बढ़ा दूं। पर इसके लिए मैं वचनबद्ध नहीं हो सकता। ऐसी स्थिति में खादी प्रतिष्ठानवालों के लिए मेरे रुपये का स्थायी तौर पर उपभोग करना सम्भव नहीं होगा, फलतः मेरा ऋण उनकी विशेष सहायता नहीं कर पायगा। पर सतीशबाबू ने मुझे बताया कि उन्हें पूजा की बिक्री के लिए कुछ महीनों के लिए अधिक माल रखना पड़ता है। उन्होंने कहा कि इसके निमित्त वह ३०,०००) काम में ला सकेंगे और १ली फरवरी को रुपया वापस लौटा देंगे। मैंने उन्हें यह रकम देने का वचन दे दिया है। मैंने उन्हें खास तौर से बता दिया है कि इसका भुगतान होना ही चाहिए। लगता है कि उन्होंने अपने उत्तरदायित्व को समझ लिया है।

ये लोग अपने आफिस में काफी आदमियों को लगाये हुए हैं। इनके लक्ष्य आर्थिक और सामाजिक दोनों ही हैं इसलिए इनके लिए इतने आदमियों को रखना अनिवार्य-सा है। इसके अलावा, इन्होंने भांति भांति की खादी रख छोड़ी है, जिसके लिए कई प्रकार के कार्यकर्त्ताओं का रखना आवश्यक है। इसलिए उनकी संख्या ये घटा नहीं सकते हैं। इनके आफिस का मासिक व्यय लगभग ४०००) बैठता है जबकि मासिक बिक्री २४०००) है। यदि आप इसकी तुलना मिलों से करें तो देखेंगे कि जबकि वहां आफिस पर लगभग वही ४०००) मासिक आता है मासिक उत्पादन ४ लाख के मूल्य का होगा। इस प्रकार जबकि हमारी मिलों का व्यवस्था-खर्च १ प्रतिशत बैठता है, तब इनके यहां लगभग १६ प्रतिशत

बढ़ता है। ये लोग जिस परिस्थिति में हैं उसे ध्यान में रखते हुए इनके लिए कम खारियां में कमी करना सम्भव नहीं है। एक बात इन लोगों की प्रशंसा में कह दूं। ये लोग बड़ी लगन से काम कर रहे हैं और इन्हें अपने कार्यक्रम की सार्थकता में पूरी आस्था है।

आपका,
घनश्यामदास

११

१७ जुलाई १९२६

प्रिय महादेव भाई

मैंने पूज्य महात्माजी को कलकत्ते से एक लम्बी चिट्ठी लिखी थी, जिसमें मैंने उन्हें खादी प्रतिष्ठान को जाकर देखने की बाबत बताया था। उसमें कई ऐसी बातें हैं जिनके संबंध में पूज्य महात्माजी के उत्तर की आवश्यकता है। मुझे अभी तक उनका उत्तर नहीं मिला है। यह बताने की कृपा करोगे कि वह पत्र वहां पहुंचा या नहीं, और क्या उनके उत्तर की आशा करूं?

मैं यहां कोई एक पखवाड़े रहूंगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

१२

साबरमती आश्रम
जुलाई २० १९२६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका १७ तारीख का पत्र मिला। खादी प्रतिष्ठानवाला आपका पत्र यहां ठीक समय पर आ गया था, पर लगता है कि अभी तक बापू ने उसका उत्तर नहीं

दिया है। उनका ख्याल था कि उत्तर लिखवा दिया है, पर मेरा बाहर जानेवाले पत्रों का खाता कहता है कि आपके पास उत्तर नहीं गया है। वह कल तक उत्तर देने की आशा करते हैं।

आशा है, आप सकुशल होंगे।

आपका,
महादेव

१३

साबरमती आश्रम
२१-७ २६

भाई घनश्यामदासजी,

खादी प्रतिष्ठान के बारे में आपका जुन मास का पत्र मिला था। मेरा ख्याल रहा है कि मैंने आपको उसका उत्तर दे दिया था। आपने जो कुछ भी कीया है, उस बारे में मुझे कुछ भी कहना न था। जो कुछ भी सहाय खादी प्रतिष्ठान को आप दे सकें उसमें मेरी संमति ही हो सकती है। मेरा विश्वास है कि बंगाल में जो खादी प्रवृत्ति चल रही है वह चलानेवाले सात्विक भाव से और शुद्ध बुद्धि से और चतुराई से चलाते हैं। बंगाल में चरखा संघ के मारफत आज तक जो कुछ द्रव्य दिया गया है उसका हिसाब इसके साथ रखता हु। अखबारों से पता मीलता है हिंदु मुसलमान का झगडा वहां प्रतिदिन वढ रहा है तदपि अब मुझको बडा आघात नहिं होता है और मेरा विश्वास कायम है कि इसीमें से एक दिन और वो भी शीघ्रता से आयगा—इकट्ठे हो जायंगे। सबसे ज्यादे दंगा बंगाल में होता है उस का भेद आपने पाया है?

आपका,
मोहनदास

बैठता है। ये लोग जिस परिस्थिति में हैं उसे ध्यान में रखते हुए इनके लिए कम खर्च में कमी करना सम्भव नहीं है। एक बात इन लोगों की प्रशंसा में कह दूं। ये लोग बड़ी लगन से काम कर रहे हैं और इन्हें अपने कार्यक्रमों की सार्थकता में पूरी आस्था है।

आपका
घनश्यामदास

११

१७ जुलाई, १९२६

प्रिय महादेव भाई

मैंने पूज्य महात्माजी को कलकत्ते से एक लम्बी चिट्ठी लिखी थी जिसमें मैंने उन्हें खादी प्रतिष्ठान को जाकर देखने की बाबत बताया था। उसमें कई ऐसी बातें हैं जिनके संबंध में पूज्य महात्माजी के उत्तर की आवश्यकता है। मुझे अभी तक उनका उत्तर नहीं मिला है। यह बताने की कृपा करोगे कि वह पत्र वहां पहुंचा या नहीं, और क्या उनके उत्तर की आशा करूं?

मैं यहां कोई एक पखवाड़े रहूंगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

१२

साबरमती आश्रम
जुलाई २०, १९२६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका १७ तारीख का पत्र मिला। खादी प्रतिष्ठानवाला आपका पत्र यहां ठीक समय पर आ गया था, पर लगता है कि अभी तक बापू ने उसका उत्तर नहीं

दिया है। उनका ख्याल था कि उत्तर लिखवा दिया है, पर मेरा बाहर जानेवाले पत्रों का खाता कहता है कि आपके पास उत्तर नहीं गया है। वह कल तक उत्तर देने की आशा करते हैं।

आशा है, आप सकुशल होंगे।

आपका,
महादेव

१३

साबरमती आश्रम
२१ ७ २६

भाई घनश्यामदासजी,

खादी प्रतिष्ठान के बारे में आपका जुन मास का पत्र मिला था। मेरा ख्याल रहा है कि मैंने आपको उसका उत्तर दे दिया था। आपने जो कुछ भी कीया है, उस बारे मे मुझे कुछ भी कहना न था। जो कुछ भी सहाय खादी प्रतिष्ठान का आप दे सकें उसमे मेरी समति ही हो सकती है। मेरा विश्वास है कि बगाल मे जो खादी प्रवृत्ति चल रही है वह चलानेवाले सात्विक भाव से और शुद्ध बुद्धि से और चतुराई से चलाते हैं। बगाल म चरखा सघ के मारफत आज तक जो कुछ द्रव्य दिया गया है उसका हिसाब इसके साथ रखता हु। अखबारो से पता मीलता है हिंदु मुसलमान का झगडा वहा प्रतिदिन बढ रहा है तदपि अब मुझको बडा आघात नहिं होता है और मेरा विश्वास कायम है कि इसीम से एक दिन और वो भी शीघ्रता से आयगा—इक्टठे हो जायग। सबसे ज्यादे दगा बगाल मे होता है उस का भेद आपने पाया है ?

आपका,
मोहनदास

१४

साबरमती आश्रम
२५ ७ २६

प्रिय घनश्यामदासजी,

इस चिट्ठी के साथ वह ब्योरा भेज रहा हू जो उस दिन की चिट्ठी के साथ जाना चाहिए था।

खादी प्रतिष्ठान के बाबत आपकी पहली चिट्ठी के बारे म बापू का कहना है कि उसमे कोई ऐसी बात नही है जिसपर उनकी किसी खास टिप्पणी की आवश्यकता हो। वह इस मामले म आपसे सहमत हैं कि व्यापार और परोपकार को एक साथ नही मिलाना चाहिए। उनका कहना है कि आप उन लोगो की सहायता के लिए केवल इतना ही कर सकते थे कि उन्ह ३० ०००) उधार दे दें जिसका भुगतान वे अगले वर्ष जनवरी मे कर दें।

आपका
महादेव भाई

१५

निजी गोपनीय

सर्वाश्रम,
बनारस छावनी
२१ अगस्त १६२६

प्रिय श्रीमान बिडलाजी

नमस्कार। आशा है आप स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। विगत १ जून को आपने यहा पर आने की कृपा की थी। तब से अब तक निर्वाचन के बारे म यहा पर जो बातें हुई थी उनके सबध म मैं आपको कुछ लिख न सका इसका मुझे दुख है। इस भय से कि शायद आपको यह शका हो कि मैंने कुछ उपेक्षा की, मैं अपने कुटुम्ब पर जो इस बीच विपत्तिया पडी हैं उनको थोडे म हाल दे देना चाहता हू। मुझे पूरी आशा है कि स्थिति जानकर आप अवश्य क्षमा करेंगे।

पिताजी ने पडित मोतीलालजी को पत्र दूसरे या तीसरे ही दिन लिखा। उनका उत्तर आते-जाते मेरे बडे पितृव्य बाबू गोविन्ददासजी बहुत बीमार होकर वाल्टेयर से एकाएक काशी लौटे। तारीख १४ जून को वे आये। १६ जून को मुझे जोरो से बुखार आकर बडी शीतला निकली। २३ जून को बाबू गोविन्द दासजी का देहात हो गया। मैं तो किसी प्रकार अच्छा हुआ पर ३ जुलाई से पत्नी को और जोरो से शीतला निकल आयी। तीन सप्ताहो के भयकर कष्ट के बाद २३ जुलाई को ईश्वर ने उसे बुला लिया। यह विपत्ति मेरे लिए बडी ही भयकर हुई। अगस्त के पहले सप्ताह तक उसी के देहावसान सबधी कृत्यो मे लगा रहा। इसके बाद एक सप्ताह तक बच्चो को लेकर बाहर चला गया जिससे मातृहीन घर म उन्हे कुछ शान्ति मिल सके। इतनी आपत्तिया म भी बराबर पडित मोतीलालजी को लिखता रहा। पर कोई निश्चित उत्तर न मिलने के कारण आपको न लिख सका। अभी वे मसूरी से इलाहाबाद आये और मैं उनस फौरन मिला और इस मामले म फिर जोर दिया। उनकी अनुमति से मैं आपको लिख रहा हू कि यदि आप फजाबाद डिवीजन स खडे हो तो उस जगह कोई काग्रेस की तरफ स आपका विरोध नही करेगा। आपने यह कहा था और पडित मालवीय जी की भी यह इच्छा थी कि यदि बनारस गोरखपुर डिविजनो से मैं ही खडा किया जाऊ तो कोई दूसरा स्थान आपके लिए रहे वहा कोई काग्रेस की तरफ से न खडा किया जाय। आपने यह भी कहने की कृपा की थी कि यथासभव आपका और मेरा मुकाबिला न होने पाय।

मैं जानता हू कि सम्भवत यह सूचना आपके लिए बहुत देर बाद हो रही है पर उपर्युक्त घटनाओ से आप भली भाति अनुमान कर सकते हैं कि मैं विवश था और यथासम्भव शीघ्र ही मैं आपको सूचित कर रहा हू। विश्वास कीजिए कि मैं पहिले से ही कौंसिल आदि मे जाने की अभिलाषा नही रखता था, और पडित मोतीलालजी से बार-बार प्रार्थना भी की थी कि मैं छोड दिया जाऊ। जब से आपका नाम निकला तब से विरोध म अपने को खडा रखना मुझे बडा ही अखरता रहा और इस सबध म पडित मोतीलालजी को मैं बराबर लिखता भी रहा। पिताजी तो मेरे और आपके विरोध स इतने दु खी हैं कि उनस इस सबध म कोई बात ही मैं नही कर सकता। मैं स्वय अपने को इतना विवश पाता हू कि समय म नही आता क्या कहू या करू। खेद इसीका है कि एक बार किसी दल का सदस्य होकर ऐसी बाता म आदमी अपनी स्वतत्रता खो देता है। आजकल की राजनीति की बलिहारी है कि जो इसे बुरा समझते हैं वे भी इसम फस जाते हैं। अपनी कौटुम्बिक आपत्तियो के बाद तो हृदय ऐसा भग्न हो गया है कि किसी

तरफ काम की इच्छा नही है। चार छोटे छोटे बच्चो की रक्षा और शिक्षा के लिए ही २४ घटे कम हैं। मुझे खेद है कि हमारे दलवाले इसका भी लेहाज नही कर रहे हैं और मेरे हजार रोने पर भी मुझे छोड नही रहे हैं।

आगे आपका जो निश्चय हो कृपा कर एक सप्ताह के अन्दर ही यदि हो सके तो सूचित कर दीजिये जिससे मैं पडित मोतीलालजी को लिख दू। और वे समुचित प्रबध करें। मुझे बतलाया गया है कि आपकी तरफ से बहुत कुछ काम हो चुका है और हो रहा है। इस सबध मे जैसा आपका निर्णय होगा उसी के अनुसार पडित मोतीलालजी प्रबन्ध करेंगे। मैंने उनसे और सब मित्रो से स्पष्ट कह भी दिया है कि अपने घर की विपत्ति के कारण पिताजी के भावो के कारण और आपका विरोध करने मे स्वय सकोच करने के कारण मैं खुद बहुत काम नही कर सकता। पडित मोतीलालजी और उनके दल को ही करना पडेगा। यह कह देना उचित होगा कि आपके लिए जैसे फैजाबाद वैसे ही बनारस गोरखपुर। तथापि निर्णय करने का अधिकार तो आपको ही है।

इस लबे पत्र के लिए क्षमा प्रार्थी हू। यह पत्र निजी और गोपनीय समझा जाय।

भवदीय,
श्रीप्रकाश

सेवा मे
श्रीमान घनश्यामदास बिडला

१६

साबरमती
२९ ८ २६

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र २३ तारीख का मिला। मैंने अजमेर से आपको एक तार किया था सो मिला होगा। मैं परसो यहा आया हू।

सीकर के लिये आपने जो तीन नाम सूचित किये उनमे से श्री नानकरामजी झवर तथा श्री रमाकातजी मालवी इन दोनो का वहा रहना बन सके ऐसा सभव नही। एक तो उनका वेतन अधिक होगा दूसरे भी इसके सिवाय अन्य कई कारण

हैं। श्री हरविलासजी शारदा ने कराली रियासत के दिवान रायसाहब प० शकर नाथजी का नाम सूचित किया है तथा श्यामसुदरलालजी ने (१) रायसाहब पडित जगन्नाथजी भागव और (२) रघुवरदयालजी, बी० ए० एल एल० बी० जो अभी खेतडी म Judicial Member (जूडिशियल मम्बर) हैं इन दो सज्जनो के नाम सूचित किये है।

सीकर का मामला तै होने मे अभी कुछ समय लगेगा ऐसा मालूम होता है। जयपुर काउन्सिल के प्रेसिडेंट मि० रोलैंड उस तरफ जानेवाले है तब कुछ निश्चित निपटारा हो सकेगा ऐसी आशा है।

हरिभाऊजी इन्दौर म स्ट्राइक के मामले म पडे हैं। वहा से अवकाश मिलने पर पिलानी म आपसे मिलने जायगे।

लालाजी, मालवीयजी और मोतीलालजी का आपस म समझौता हो जाय इसलिये मुझ प्रयत्न करना चाहिये। ऐसा आपने लिखा सो ठीक है। परतु मैं अपने को इस काय योग्य नही समझता। समझौता मेरे प्रयत्ना से नही हो सकता।

लोन की रकम बबई दुकान पर जमा करवाने को आपसे कहा था सो अभी जमा न करायेंगे। पू० बापूजी की व कौसिल की ऐसी राय है कि जब हम ऐसा विश्वास हो जाय कि लोन की रकम यथासमय वापस दे सकेंगे तब ही लोन लेना ठीक होगा। व इस बात को सोच रहे हैं। जब कुछ निणय करेंगे तब आपको सूचना दी जायगी।

मेरा यहा स कुछ दिन म बबई जाने का विचार है और वहा से वर्धा। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

जमनालाल का वन्देमातरम

१७

२२ अक्टूबर, १९२६

भाई घनश्यामदासजी

आपका पत्र मीला है। आप कहते हैं एम आश्रम खोलने का यह समय नहि है। वायु बहोत गदा है। काय करन वाले न तेजस्वी हैं न चारित्रवान।

आपका,
मोहनदास गाधी

आ० शु० $\frac{१५}{८२}$

कारवाई का मैं नापसद करता हू तदपि सोसायटी के कमचारीओ के सदाचार को उनका दशाभिमान को उनकी त्यागवत्ति को मैं भूल नही सकता हु और इस कारण उनकी हस्ती को कायम रखना प्रत्येक स्वदशाभिमानी का कत्तव्य समझता हु। यदि आप भी यही अभिप्राय रखते हैं तो कुच्छ न कुच्छ भी सहाय भेज दें और दुसरे मित्रा को भी बन पड तो दन का कह।

आपका,
मोहनदास

२१

आश्रम साबरमती
श्रावण कृष्ण १४, रवि

भाई घनश्यामदासजी

आपका पत्र और कटिंग मिले हैं। मैं तो इस बात को भूल गया हू। इस समय राजनतिक आबोहवा मुझको बहुत ही दुगन्धित प्रतीत होती है।

आपका
मोहनदास

श्री घनश्यामदास बिडला,
पिलानी
(राजपूताना)

२२

भाई श्रीयुत घनश्यामदास

आपका खत मिला है। मैं तो खूब जानता हू कि श्री मालवीजी और श्रद्धानदजी के सिवाय हिंदु मुसलमान ऐक्य असभवित हि है। मैं तो केवल माग दर्शक हि रहना चाहता हु और छोटे छोटे झगडे हो जाय उसमे कुछ कर सकू तो करना

की कासील मे जाना कम से कम आपका काय नहि है। परतु यदि आपको आत्म विश्वास है और पू० मालवीजी चाहते है तो आप जा सकते हैं। आरभ कीया हुआ काय को सहज म नहि छोड सकते हैं। अब तो मेरी राय यह है की आपके मित्रो को आप कुछ भी कहने से रोक दें और यदि आपको बहुमति मीले तो आप चले जाय। बीच मे से नीकल जाना ठीक नहि लगता है आखर मे तो आप नीकल ही जायग। हा, यदि आपके स्वास्थ्य के ख्याल मे पू० मालवीजी आपको मुक्ति दें ता बडा कल्याण होगा। स्वास्थ्य के ख्याल से भी आपका एसेंबली या तो काउनमिल मे जाना मैं अनुचित समझता हु।

आपने जो मुकाबला कीया है उसस मैं सम्मत नहि हु।

जमनालालजी यही है।

आपका
मोहनदास

मा० कृ० १२
रवीवार

२५

भाई धनश्यामदासजी

आपका खत मीला है। खत पढने से मुझको कोई बाधा नही आती है। यदि यूरोप न जाने म किसी प्रतिज्ञा का भग नही है तो मेरा विश्वास है कि यह समय आपका वहा जाने का नहि है।

आपके विजय के बारे म ता मैं कुछ लीखना नहि चाहता। कई युद्ध ऐसे भी रहत हैं जिसमे हारना विजय है। मैं नहि जानता इस समय जो हुआ है आपक लीय कलयाणकर है या नहि। मेरी सलाह यह है कि तटस्थता स एसेंबली मे सब चीज को देखते रहें।

मैं तो जानता हू कि मेरे मौन से मैंने देश की सेवा की है परतु मुझ आत्म विश्वास नहि है कि मैं अनेक दलाको एकत्रित कर सकता हु। मरा दिलतो गौहती (गौहाटी) जाने से हटता है। मैंने श्रीनिवास आयगार और मोतीलालजी को लीखा भी है कि मुझको छूट दे दें। मुझको आत्म विश्वास आने से मैं अपने आप मदान म आ जाऊगा।

देश को लाभ नहिं परतु हानी हि होगी। परतु आपको एसेंबली म से नीकल जाने की सलाह में नहिं दे सकता हु। तटस्थ रहने का अथ यह है कि एक भी वोट आप ऐसा न दें जिसम किमी का दबाव हो जसे प्राय हमेशह बनता है।

आपने जो विश्वास मुझे दिलाया है वह अनावश्यक था। क्योंकि मुझे आपके शुभ प्रयत्ना मे श्रद्धा है तदपि आपका विश्वास मुझे प्रिय है।

मैं कलकत्ते २३ तारीख को पहोचुगा और उसी रोज गौहती जाऊगा। ठहरने का भाई खडेवाल के यहा है। जब मैं कलकत्ते म था तब आया जाया करते थे। दुबारा कलकत्ते जाने के समय यदि कोई राजकारण नहिं होगा तो उनके यहा ठहरूगा ऐसा मैंने कहा था। उस पर वह जार देते हैं। इसलीये वही ठहरना होगा। आप गौहती आनेवाले है क्या ?

आपका,
मोहनदास

सोमवार

१

दौरे पर
गुलबर्गा
२२ २ २७

प्रिय सर पुरुषोत्तमदास,

आपको अग्रेजी म पत्र-व्यवहार करन म ज्यादा सुविधा होती है इसलिए मैं यह पत्र अग्रेजो म ही लिख रहा हू।

यद्यपि मैंने अभी तक मुद्रा-सबधी प्रश्ना पर कुछ नहीं लिखा है फिर भी आपको शायद पता है कि मैं अपने लगातार दौरो के बावजूद तत्सम्बन्धी आन्दोलन का ध्यानपूवक अध्ययन करता रहा हू और मदन और वाडिया जैसे मुद्रा विशेषज्ञा के साथ सक्रिय पत्र-व्यवहार भी करता रहा हू। वाडिया ने एक बिल का मसौदा भेजा है जिसे उन्हान सम्भवत असेम्बली के सदस्या मे वितरित कर दिया है। क्या कृपा करके बतायेंगे कि वह बिल आपको पसन्द है ?

यदि विशुद्ध सोने का मानदण्ड स्थापित कर दिया जाय स्वतत्र टकसालें खोलने पर पाबन्दी न रहे और एक रिजव बैंक स्थापित कर दिया जाय तो क्या मुद्रा विनिमय की दरवाला प्रश्न स्वत ही समाप्त नही हा जाता है ? तब क्या सब *कुछ खुद ही ठीक नही हो जायेगा? यदि मुद्रा विनिमय की दर १ पौंड = १५ रुपये* पर निश्चित कर दी जायेगी और सुवण मुद्रा, टकसालो और रिजव बक के प्रश्ना पर निणय स्थगित कर दिया जायेगा, या उनका निणय कमीशन की सिफारिशा के अनुसार किया जायेगा, तो क्या अवस्था और भी खराब नही हो जायगी ?

भवदीय
मो० क० गाधी

सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास,
बम्बई

२

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिल गया है। पैसे मिल जाने पर चर्खा-काय को मदद होगी। पू० मालवीजी चर्खा की ओर ज्यादह आ रहे है इससे मुझको बडा आनद होता है। चर्खे के लिये मुझको बहोत रुपये चाहीयेंगे। उनकी मदद मिलने पर अधिक धन इक्ट्ठा हो सकता है।

भाईजी न और रामेश्वरजी न अत्यजो के लिये जलाशयो के निमित्त रूपये देन का निश्चय किया है उसका व्यय उनके लिखने के अनुसार होगा।

परसराम फटे हुए कागजो को इक्ट्ठा करता था उसका मुझे कुछ पता नहि था। उसको मैंने इस दोप का दशन कराया है वह आपको लिखेगा। उसका हेतु मलीन न था। वह पागल सा है। मुझको काम दे सकता है। पू० मालवीजी और रविंद्रनाथ के साथ कुछ दिना तक रहना चाहता है। मैंने कह दीया है वह स्वतत्र चेष्टा उनकी सेवा म रहने की करे।

यूरोप मे आरोग्य अच्छा रखने के लिये इतने नियमो का पालन अवश्य समझता हू।

१) अपरिचित खाराक न लेना।
२) वे लोग छे सात बार खाते है। हम तीन बार से ज्यादा न खाय—बीच म चोकलेट इ० खाने की बुरी टेव न रखे।
३) रात्रि को १ बजे तक भी खा लेते हैं। हम रात्रि को ८ बजे क बाद न खाय। किसी जगह पर जाने पर चाह इ० लेने के लिये हम मजबूर होते है ऐसा माना जाता है एसा कुछ नहि है।
४) नित्य कम से कम ६ मईल पदल घूमने का अभ्यास रखना अत्यावश्यक है। प्रात काल म और रात्रि को दोना समय घूमना चाहीये।
५) हद्द के बाहर कपडे पहनने की आवश्यक्ता न मानी जाय, रहस्य यही है कि शरीर को ठडी न लगे, घूमने से ठडी चली जाती है।
६) इग्रेजी कपडे पहनने की कोई आवश्यकता नहि है।
७) यूरोप के गरीब लोगो का परीचय करने की कोशिश की जाय—इस परीचय के लीये बहोत काम पदल करना आवश्यक है—जब समय है, तब पदल ही जाना अच्छा है।
८) यूरोप मे गये तो कुछ न कुछ करना ही है एसा कभी न सोचा जाय।

स्वच्छ प्रयत्ना से और निश्चिन्तता से जो बन पडे वह कीया जाय।

९) मेरे ख्याल से तो आपके जाने का एक परिणाम अवश्य आ सकता है —शरीर बज्र समय बनाया जाय। यह बात बन सक्ती है।

१०) ईश्वर आपका मानसिक व्यभिचार से बचा ले—बहोत कम हिंदी इस दोष से बचते हैं। वहा का रहन-सहन यद्यपि उन लोगो के लिये स्वाभाविक है, हमारे लीये मद्यपान सा बन जाता है।

११) गीताजी और रामायण का अभ्यास हो तो हरगीज न छोडा जाय—यदि नहीं है तो अब रखा जाय।

आपने इतनी सूक्ष्म सूचना की तो आशा नहिं रखी होगी। मैंने दी है क्योकि आप सब भाइयो की सज्जनता पर मेरा विश्वास है। आप जैसे जो थोडे धनिको म धन के साथ नम्रता और सज्जनता है उनकी नम्रता और सज्जनता म मैं बहोत वद्धि चाहता हू। और उस वस्तु का देश-काय के लिये उपयोग करना चाहता हू। शठ प्रति शाठ्यम' का सिद्धात को मैं मानता नहिं हु इसलिये जिस जगह मृदुता, सत्य अहिंसा इ० का थोडा-सा भी दशन करता हू तो सूम जस धन का सग्रह करता है ठीक इसी तरह मैं ऐसे गुणो का सग्रह करने की चेष्टा कर आनदित होता हू।

और पूछना है तो पूछोगे। इस पत्र की पहोच भेजीयो।

२३ २४ मुबई
२५ २६ कोलापुर
२७ ४ अप्रल, बेलगाव
५ १२ मद्रास

आपका
मोहनदास

सामवार १६ ३ २७

३

सत्याग्रहाश्रम
साबरमती

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला है। यूरोप जाने के बार म अब तक कुछ निश्चय नहि कर सका हु जाने का दिल नहि है। रोमे राला को मीलने की इच्छा है सही परतु इस बारे म उनके पत्र की मैं प्रतीक्षा करता हु। एक पत्र आया है उसस जान का निश्चय नहि होता है। यदि जाने का हुआ भी तो मेई म हागा और अक्टोबर मे वापिस आ जाउगा। थाडे दिन भी यदि मैं आपके साथ मसूरी म रह सकता हु ता प्रयत्न करूगा। एप्रिल १३ तारीख तक तो यही रहना चाहता हू।

विदेशी कपडो के वहिष्कार के बारे म मीला के सहकर के बार म मैंने जा कुछ लीखा है उस पर मुचे आपका अभिप्राय भेजे।

स्वास्थ्य के पूरे हाल मुझे दे दें अब कुछ खा सकते हो।

आपका,
मोहनदास

रामनवमी
माच १९२७

४

गगाधरराव दशपाण्डे
बेलगाव।

कृपया महात्माजी स कहिय कि मैं सारी गर्मी भर उनके पूण विश्राम पर जोर देता हू। प्रकृति की चतावनी का पालन आवश्यक है। कोइ जाखिम नही उठानी चाहिए हम सबका यही चिन्ता है। उन्ह दश के हिताथ पूण विश्राम लना ही चाहिए।

घनश्यामदास बिडला

१३७, कनिंग स्ट्रीट, कलकत्ता
५ ४ २७

५

नदीदुग
बैं० कृ० ५
२१-४ २७

भाई घनश्यामदासजी

दो दिन स जमनालालजी यहा आ गये हैं। उन्होंने आपका सदेशा दिया है। जा कुछ मैंने आपसे लिखा है उमसे ज्यादह लिखने का कोई ख्याल नही आता। वादशाह की मुलाकात के वारे म मेरा अभिप्राय यह है कि उस मुलाकात की आप कोशिश न करें। यदि हिंदी प्रधान या तो मुख्य प्रधान मुलाकात कराने के लिय चाहे तो उस वात का इनकार भी न करें। जब तक मुझे ज्ञान है मेरा ऐसा मतव्य है कि वादशाह के पास कुछ राज्यप्रकरण की बातें नही की जा सकती हैं। केवल क्षेम कुशल की हि बात होती है। प्रधाना को अवश्य मिलें। और उनके साथ जो कुछ भी दिल चाहे वह बात कर सकते हो। वहा की जेला का सूक्ष्म निरीक्षण करें, और लडन के गरीव प्रदेश म किसी जानकार मनुष्य के साथ खूब भ्रमण करें और गरीवा की स्थिति का अवलोकन करें। शनि भर की रात्रि को एक या दो बार गरीव और धनिक प्रदश के शरावखाने के नजदीक खडे रहकर वहा की भी चेष्टा देखें।

मेरा स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन अच्छा होता जाता है।

पूज्य मालवीयजी को मैंन बहुत दिनो के पहले खत लिखा। उसके उत्तर की आशा नही रखता हू। क्योंकि पत्रो का उत्तर दना उनका स्वभाव नही है। तारा का उत्तर भार से अवश्य देत हैं। मैं तो दुवारा भी लिखन वाला हू। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

आपका,
मोहनदास

६

नन्दी दुर्ग
५ मई, १९२७

घनश्यामदास बिड़ला,
बिड़ला हाउस,
गिरगाव
बम्बई

अपने पिछले पत्र के अनुरूप आपकी सफलता की कामना करता हू। रक्तचाप रोज बढ जाता था, अब रविवार से स्वाभाविक है। चिन्ता की कोई बात नही है। भगवान आपका मगल करे।

गाधी

७

कुमार पार्क,
बगलोर
९ जून, १९२७

भाई घनश्यामदासजी,

आपके बम्बई से रवाना होने के बाद से मेरा यह चौथा पत्र है। जमनालालजी ने आपका समुद्री तार भेजा है। अत यह पत्र अग्रेजी मे भेजता हू। मुझे अभी पत्र खुद नही लिखना है, इसलिए अपनी शक्ति को सचित रखने के लिए मैं अधिकाश पत्र अग्रेजी, हिन्दी अथवा गुजराती बोलकर लिखाता हू।

मालवीयजी आज यही हैं। स्वास्थ्य सुधार के लिए ऊटी जा रहे है। आज सुबह वे पहुचे थे और सध्या को जानेवाले थे पर मेरे यह सुझाने पर कि परसो चूकि मैसूर महाराजा का जन्म दिन है इसलिए ऊटी जाने से पहले मैसूर जाकर उन्हे आशीर्वाद देना चाहिए। उन्होने दीवान को तार दिया है। उनकी यात्रा कल तक के लिए स्थगित हो गई है। अब वह सम्भवत मैसूर को रवाना हो जायेंगे। मैं उनके साथ बराबर पत्र व्यवहार करता आ रहा हू और वह तार से

उत्तर दत रहे है। बहुत दुबले हो गये है, पर सदा की भाति हर बात म आशान्वित हैं। उनका शरीर तो ठीक ही है, पर दिन रात काम म जुटे रहने के कारण कमजोर हो गय हैं। उन्होने एक महीना ऊटी म विश्राम लेने का वचन दिया है। डा० मगलसिंह उनके साथ हैं। रसोइया तो है ही। गोविन्द उनके साथ बम्बई तक आये थे, पर उन्ह उस 'कौएवाले मामल की परवी के लिए इलाहाबाद जाना था क्योंकि मामला मुल्तवी नही हो सका।

याद नही, मैंने आपसे सुश्री म्युरियल लेस्टर से मिलन का कहा था या नही। वह लन्दन की गरीब बस्तियो म काम करती है। पिछले वप भारत आई थी। बडा उत्साह रखती हैं, और काय-दक्ष तो हैं ही। वह पूण मद्य निषेध के लिए प्रयत्नशील हैं और इसके लिए लोकमत जाग्रत कर रही हैं। उनका ठिकाना है सुश्री म्युरियल लेस्टर, किंग्सले हाल पौविस रोड, बी ई ३।

आशा है, आपके स्वास्थ्य मे सुधार हुआ होगा, और लालाजी के स्वास्थ्य म भी।

मैं नन्दी दुग पहाडी स कल रविवार को उतरा स्वास्थ्य म सुधार हुआ है। यहा के डाक्टरो का कहना है कि मैं अगले महीने तक मामूली तौर से दौरा करने लायक हो जाऊगा।

आपका,
मोहनदास

८

सावरमती आश्रम
१७ जालाई, १९२७

प्रिय घनश्यामदासजी,

बापू ने श्री कृष्णदास को पत्र लिखकर उनस नम शूद्रो म काम करने के सम्ब ध म सुझाव मागा था। अब उनका उत्तर आ गया है। इस पत्र के साथ उसको भेजता हू। मैं डा० इन्द्रनारायण और भूपेन दोना को व्यक्तिगत रूप स जानता हू। यदि आप नम शूद्रा म काम करने के हेतु इन्द्रनारायण की सेवाए प्राप्त कर सकें तो यह नम शूद्रो का सौभाग्य होगा।

आपका,
महादव देसाई

६

६ अक्टूबर, १९२७

भाई घनश्यामदासजी

आपका खत मिला है।

जमनालालजी के खत स पता चलता है कि आप यूरोप से स्वास्थ्य बिगाड क आये हैं। अब कहीं आराम पाकर स्वास्थ्य दुरस्त करना आवश्यक समझता हु। भोजन की पसदगी करने म मैं कुछ सहाय अवश्य दे सकता हु परतु उसके लिय तो कुछ दिनो तक मेरे साथ रहना चाहीय।

आपने अपनी राय विविध विषय म भेजी है यह ठीक कीया।

असहयोग के कारण दो दल हो गय है एसा कुछ नहिं है। दो दल तो थे ही जो कुछ हुआ है वह प्रकाशत ही है। मेरा विश्वास कायम है असहयोग के सिवा हमारी शक्ति बढ ही नहिं सकती है। लोग उसका चमत्कार समज गये हैं परतु उसको करने की शक्ति अब तक नही आई है। हिंदु मुस्लिम झगडा उसम और भी बाधा डाल रहा है। कौसीलो की सहाय की चेष्टा म नहिं कर सकता हु परतु मेम्बर चाहे तो खादी और मद्यपान के विषय म मदद दे सकते है। परतु मेम्बर लोग स्वार्थ अज्ञान और आलस्य के लिय कुछ कर नहिं सकते है। खादी इ० काय मद और तेज चल रहा है। मद इस कारण की हम परिणाम नही देख पाते। तेज इस कारण की जितना हो रहा है स्वच्छ है और स्वच्छ होने से उसका शुभ परिणाम अवश्य होने वाला है।

धन की भूख तो मुझे हमेशा रहती है। खादी अछूत और शिक्षा का काय करने म ही मुझे कम से कम दो लाख रुपये आवश्यक रहत है। दुग्धालय का जो प्रयोग चल रहा है उसम आज रू० ५० ००० दरकार है। आश्रम का खच तो है ही। कोई काम रुक नहीं जाता परतु ईश्वर सबको धन देता है मुझे उसस सतोष है। जिस काम मे आपका विश्वास है और जितना उसके लिय दे सकें दें।

मेरा भ्रमण इस वर्ष के अत तक तो चलता ही रहेगा। जानवारी मास मे आश्रम पहोचने की आशा करता हु।

हिंदु मुस्लिम प्रश्न के बारे मे पू० मालवीजी का एक पत्र लीखा है। इस बार म कुछ न कुछ काय योग्य रास्ते से बनना चाहिय। आज जो चल रहा है उसम मैं धर्म नहि देखता हु।

आपका,
मोहनदास

१०

बिडला हाउस,
काशी
११ अक्टोबर, १९२७

परम पूज्य महात्माजी के चरणो मे प्रणाम।

मैं यहा पर २० रोज तक न केवल विश्राम ही लेता रहूगा यहा पर मेरे विश्वस्त वैद्य त्र्यम्बक शास्त्रीजी हैं उनकी औषधि मैं खा रहा हू। जिस तरह वैद्यो की शरण मे जाकर मैं प्राय स्वस्थ बन जाता हू उसी तरह से मुझे अब तक प्राकृतिक इलाज करनेवाला कोई वैद्य नही मिला कि जिसे मैं अपना शरीर सौंप कर निश्चित हो जाऊ।

पूज्य मालवीयजी यहा नही हैं। मैं रु० १० ०००) और १ ००,०००) के बीच मे सभवत आगामी साल के लिये दे सकूगा।

मुझे खादी के सबध मे बार-बार यह डर रहता है कि आपके बाद यह आन्दोलन कब तक निभेगा। मैंने तो आपके सतोप के लिये खादी पहन रखी है और खादी और चरखा एक उत्तम योजना है यह समझकर और ईश्वर मे विश्वास करके सहायता भी देता रहता हू। किन्तु खादी प्रचार के लिये मेरी स्कीम तो बिलकुल भिन्न है। यदि आपके जितना मेरा बल हो तो आप जो उद्योग करते हैं उसके साथ-साथ मैं यह भी उद्योग करू कि मेनचेस्टर पर ५० फी सदी जकात लगाकर मिलो के मोटे सूत के कपडे पर २० टका Production Tax (उत्पादन-कर) लगा दी जाय। तब तो खादी का प्रचार अति शीघ्र हो जाय। किन्तु आपका तो Assembly (असेम्बली) मे विश्वास नही और मेरे पास बल नही, इसलिये मैं तो इतने से ही सतोप कर लूगा कि जो धन मैं आगामी साल के लिए आपको भेजू वह आप स्वराज्य प्राप्ति के लिये आपकी इच्छानुसार खर्चें। जितने काय आप कर रहे हैं वे सभी अच्छे है इसलिये मैं अपना विवेक करने मे असमर्थ हू।

धन के अभाव मे कही काम रुकता हो तो आप बिना सकोच के मुझे लिख दिया करें। वैसे भी कुछ कुछ भेजता ही रहूगा। मैं आपको अधिक धन भी दे

सकता हू किन्तु मैं भी अपनी कुछ व्यापारी स्कीमा के पीछे लगा हू और उनको पूरा कर देना देशहित के लिय आवश्यक समझता हू। इसीसे कुछ कजूसी कर रहा हू।

विनीत
घनश्यामदास

११

बिडला हाउस,
पिलानी
८ दिसम्बर १९२७

पूज्य महात्माजी

कमजोरी के कारण मैं अभी स्वय लम्बा पत्र लिखने म अशक्त हू। अब भूख तो लगने लगी है पर यहा आते ही दुर्भाग्य से नजले के कारण हल्का बुखार रहने लगा। यह सिलसिला कोइ एक पखवाडे रहा। अत बहुत कमजोर हो गया हू। पर अब पहले से अच्छा हू और स्वास्थ्य धीरे धीरे सुधर रहा है। काम-काज म सक्रिय रूप से भाग लेने म शायद तीन चार महीने लग जाय। पर असम्बली का आगामी सत्र दिमाग का बोझ बन रहा है। मित्रो का आग्रह है कि उसमे अवश्य भाग लू स्वय मैं भी नागा करना नही चाहता हू। पर तब तक मैं पूरी तरह स्वस्थ नही हो पाऊगा। कृपा करके बताइये किसकी अवमानना करू—असेम्बली की या स्वास्थ्य की? यदि आपको लग कि मुझे अभी कुछ महीने आराम ही करना चाहिए तो कृपा कर मालवीयजी से जब आप मद्रास म मिलें, तो उनसे कह दीजिय कि वह असम्बली के अधिवेशन म मेर उपस्थित रहने का आग्रह न करें।

इस पत्र के लिखने का एकमात्र उद्देश्य शाही कमीशन की चर्चा करना है। आपको जनता के सभी वर्गों म एकता की नई भावना दिखाई देने स अवश्य प्रसन्नता हुई होगी। क्या यह समय आपके मदान म कूदने के लिए उपयुक्त नही है? यदि आप इस वातावरण मे हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के लिए प्रयत्न करें तो सफल मनोरथ होना कठिन नही है। मुझे तो कलकत्तेवाले प्रस्ताव अच्छे लग पर पडित मालवीयजी की राय भिन्न है। उनका कहना है कि वह दिल्ली की एकता

परिपन्न म पास हुए प्रस्तावा से आगे बढने को तैयार नहीं हैं। मेरा अपना विचार तो यह है कि हिन्दू मुस्लिम ऐक्य का आधार धार्मिक स्वतत्रता और सहिष्णुता होना चाहिए। इसका अथ यह होगा कि मुसलमान अपने घरो की चहारदीवारी के भीतर और दूसरा की भावनाओ को ध्यान मे रखते हुए कुरबानी करने को, तथा हिन्दू मस्जिदा के आग किसी भी समय बाजा बजाने को स्वतत्र रहेंगे। यदि हम इस पर सहमत हो जाय तो असेम्बली मे एक बिल पास किया जा सकता है, जिसके अतगत १८ वप से कम की आयु के किसी स्त्री और पुरुप का धम परिवतन गैर कानूनी घोपित हो जायेगा।

१८ वप मे अधिक की आयुवाले स्त्री पुरुप को मजिस्ट्रेट के सामने हलफनामा दाखिल करना होगा। साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व का भी विभिन्न समुदाया के लिए सीटें निश्चित करने के बाद अत हो जायगा। प्राता का पुनगठन वैज्ञानिक ढग स होगा। मैं समझता हू ऐक्य के लिए य मुद्दे जरूरी है और आपके विचाराथ प्रस्तुत हैं।

रही बायकाट की बात सो प्रभावशाली प्रदशना के बगर बायकाट निरथक सिद्ध होगा। कमीशन के आने पर हर जगह हडतालें की जायें और इसके बाद कमीशन जिस शहर म जाय, वहा पूण हडताल रहे, और एक विशाल सावजनिक सभा हो।

आपने पडित मालवीयजी के लेख पढे ही होगे। मुझे विश्वास है कि उन्होने वतमान स्थिति पर जो दृढ विचार व्यक्त किये हैं उनसे आपको प्रसन्नता हुई होगी। मुझे यकीन है कि जब वह मद्रास पहुचेंगे तो आप उनके साथ चर्चा करेंगे ही। वह पुरानी असहयोगवाली भावना एक बार फिर जोर पकड जाए तो क्या कहने हैं। पर मैं यह सोचकर घबरा उठता हू कि यदि इस अस्थायी उबाल का ठीक-ठीक नतृत्व नही हुआ तो फिर यह शान्त हो जायेगा। मेरी निगाह ऐसे किसी भी आदमी पर नही जमती है जो सबका एकसमान विश्वासभाजन हो। क्या आपकी यह धारणा नही है कि जिस घडी की आप अब तक बाट जोह रहे थे, वह आ पहुची है? आशा है, आप इस पर गम्भीरतापूवक विचार कर रहे होंगे।

मरे विनम्र प्रणाम।

आपका स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

१२

भाई घनश्यामदास,

आपके दो पत्र मीले हैं। आपके वचन पर मेरा विश्वास है इसलीये आपके पुर्नविचार करने का मुझे कोई डर नहि है। एसेंबली के बारे म भी आप पर मेरा विश्वास है। परतु *वहा का वायु ऐसा है कि सम्पूर्णतया स्वतत्र रहना कठिन है।*

सगठन के बारे म मेरा विचार वही है जो मैंने बताये हैं। जो केस की हकीकत आपने भेजी है उसका इलाज सगठन तो है हि नहि। उसका इलाज या तो तपश्चर्या है या तो व्यक्तिगत हिम्मत है। जब तक हम भागते रहेगे तब तक हमारी स्त्रीयो को विषयी लोग पकड लें उसम कौन-सा आश्चय है। एसे हिंदु राज्य को मैंने जाना है जिसके राज्य म एक भी युवती निभय न थी और पति और पिता लाचार बैठ रहते थे परतु यह तो गूढ विषय हुआ। यदि आप गुरुकुल म जा सकें तो अवश्य आइये। मैं तो उसको पनदरह दिन साथ रखना चाहता हू, ऐसी बातें हम एक दिन म खतम नहि कर सकते। इस दरम्यान आपका अतरनाद आपको कहे वही कीजीये भले मेरी राय कसी भी हो।

आपके पुत्र और पुत्रवधू को मेरा आशीर्वाद।

आपका,
मोहनदास

१३

नदी दुग
जेठ कृ० २

भाई घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला। *यह खत लिखाते हुए महादेव मुझसे याद दिलाते हैं कि* आपने जमनालालजी से सूचना दी थी कि मैं आपको अंग्रेजी मे खत लिखू। परतु ऐसी कोई बात म लिखना ही नही चाहता हू जो किसी को बतान की आवश्यकता रहे। इसलिये इस पत्र को मैं हिंदी म हि लिखवाता हू।

आपका खत स्टीमर पर से लिखा हुआ मिला है। मैंने दो खत इसके पहले लिखे हैं—जिनीवा के पते से। वह मिल गये होंगे। मेरा स्वास्थ्य सुधरता जाता है। पू० मालवीयजी स मैं खत लिखता रहता हू। मैंन लिखा था वसे ही उनका इम हफ्ते म लबा तार आ गया। उसम बताते हैं कि स्वास्थ्य है तो अच्छा लेकिन अशक्ति है। आजकल बबई म हैं। मेरा तो यह ख्याल है कि मेर लिय यह कहना कि मैं स्वास्थ्य की दरकार नही करता हू वह ठीक नही है। जितना मैं आवश्यक समजता हू उतना प्रयत्न स्वास्थ्य रक्षा के लिए ठीक-ठीक कर लेता हू। पू० मालवीयजी ऐसा नही करत हैं ऐसा मने बहुत दफे लिखा है और उन्होंने आराम लेन की प्रतिज्ञा करन के बाद भी आराम न लिया। वे वद्या क उपचार पर बहुत विश्वास करते हैं और मान लेते हैं कि उनकी गोलिया और भस्मादि की पुडी को लेकर अच्छा रहत हैं। रह सकत हैं और उनका आत्मविश्वास इतना जबरदस्त है कि दुबल होते हुए भी, बीमार होते हुए भी, कम से कम ७५ वष तक जीन का निश्चय कर लिया है। इधर उस निश्चय को सफल करें उनको ज्यादह कौन कह सकता है ? मैंने तो विनय के साथ जितनी सख्ती हो सकती है उतनी विनोद करके लिखी है। वस्तु तो यह है कि प्रत्येक मनुष्य की बुद्धि कर्मानुसारिणी रहती है। ऐसी बाता म पुरुषाथ के लिये बहुत ही कम जगह है। प्रयत्न करना कत्तव्य है ही और करना चाहिये परतु प्रत्यक मनुष्य के लिय एक समय ता आता ही है जब सब प्रयत्न व्यथ बनता है और सदभाग्य से और पुरुषाथ की रक्षा के कारण इश्वर ने इस आखरी समय का पता किसी को नही दिया है। तब इस अनिवाय होनारत के लिय हम क्या चिन्ता करें ? राष्ट्र का कारोबार न मालवीयजी पर निभर न लालाजी पर न मुझ पर। सब निमित्त-मात्र रहत हैं और मेरा ता यह भी विश्वास है कि सत्पुरुष का काय का सच्चा आरभ उसके देहान्त के बाद ही होता है। शेक्सपीयर का यह कथन कि मनुष्य का भला काय प्राय उसी के साथ चला जाता और बुरा काय उसके पश्चात रह जाता है ठीक नही है। बुराई का भी इतना आयु नही रहता है। राम जिन्दा है और उसके नाम से हम पवित्र होत हैं। रावण चला गया और अपनी बुराइयो को अपन साथ ल चला। कोई दुष्ट मनुष्य भी रावण नाम का स्मरण नही करते हैं। राम के युग म न जाने राम कसा था। कवि ने इतना तो बता दिया है कि अपने युग म राम पर भी आक्षेप रहा करत थे। परतु अब राम की सब अपूणता राम के शरीर के साथ भस्म हो गई और उसको अवतारी समझकर हम पूजत ह। और राम का राज्य आज जितना व्यापक है उतना हरगीज राम के शरीरस्थ रहते हुए नही था। यह बात मैं बडी तत्वज्ञान की नही लिख रहा हू न हमारे लिय योगि रखने के कारण परतु मैं यह

दढता से कहना ही चाहता हू कि जिसको हम सत पुरुष मानते हैं उनके देहान्त का कुछ भी दु ख नही मानना चाहिये। और इतना दृढ विश्वास रखना चाहिये कि सत पुरुष का काय का सच्चा आरभ या कहो सच्चा फल उसके देहान्त के बाद ही होता है। अपने युग मे जो उसके बड-बडे काय मान जात हैं वह भविष्य म होने के परिणाम के साथ केवल यत्किंचित है। हा, हमारा इतना कत्तव्य है सही कि हम हमारे ही युग मे जिनको हम सत पुरुष मानें उनकी सब साधुता का यथाशक्ति अनुकरण करें।

आपके स्वास्थ्य के लिये मेरी यह सूचना है कि यदि आपका विश्वास एलोपैथी पर नही है—और न होना चाहिये—तो आप जमनी म लुई कुहे और जुस्टकी सस्था है उसे देखें, वहा खुली हवा और पानी के उपचार होते हैं और उसम स सैंकडा लोगो ने लाभ उठाया है। लडन और मन्चेस्टर दोना जगह पर वैजीटेरिअन सोसाइटी है उसका भी परिचय करें। उस समाज म हमेशा थोडे अच्छे गम्भीर, विनयी और मध्यवर्ती मनुष्य रहते हैं। मूख लोक भी और मताधि तो देखन मे आयेंगे ही। आपने स्टीमर पर दूध नही मिलने का लिखा है। दुबारा अपने साथ होर्लिक्स माल्टेड मिल्क रखें। यह शुद्ध दूध की भूकी है। दूध के पानी की वाफ बनाकर जो शेप सूखा भाग रह जाते हैं उसम दूध का सब सत्व रहता है ऐसा रसायन शास्त्री लोग कहते है। इसका प्रयोग करके देख लीजिये।

आपका
मोहनदास

१४

भाई श्रीयुत घनश्यामदासजी

आपका तार मीला है। कहते हुए मुझ खेद होता है कि मेरा अगला पत्र आपको पू० मालवीजी के पते पर भेजा गया था। उसमे इतना था मेरी राय आपके इस कारण युरोप जाने के विरोध में है। यदि जाना आवश्यक है तो स्वतत्र

जाना चाहिये। ऐसे खतो की नक्ल नहिं रहती है परतु मतलव यही था। यदि आपने जाने का वायदा कीया था तो बात बदल जाती है और जाने का आपका धम हो जाता है।

आपका,
मोहनदास गाधी

का० कृ० ६/८३

१५

बेतीया,
पो० कृ० ६ सोमवार

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मीला है।

८०००) रू० जमनालालजी को भेजे हैं वह चर्खा सघ के लिये समजता हू।

शुद्धि के बार मे खब विचार कर रहा हु। जिस ढग से आज शुद्धि की जाती है वह धार्मिक नहिं है। जो वलात्कार से या अनजानपन मे विधर्मी हो जाते हैं उनकी शुद्धि क्या करना थी ? वे तो शुद्ध हि हैं। केवल हिंदु धर्म की उदारता का प्रश्न है। हमारा आदोलन खीस्ती, इस्लामी शुद्धी के विरोध मे होना चाहिये। इसम विचार परिवतन की हि आवश्यकता है। यदि हम मानें कि शुद्धि की प्रणाली दोषित है तो हम क्या उसकी नकल करें ? हम पर आक्रमण हो जाय उसको दूर करने के लिये शुद्ध इलाज ढूढकर हमारे उसको ही उपयोग मे लाना चाहीय। शुद्धि के आदोलन से हम गदगी की वद्धि करते हैं और हिंदु धर्मियो म जो सुधारणा होनी चाहिय उसको रोकते हैं। आजकल के आदोलन म मैं विचार का अत्यनाभाव देख रहा हु। जब आपको कुछ स्थिरता मीले तब इस बार म हम शांति से विचार कर सकते हैं। मैं यह नहिं चाहता कि मेरे हि कहने

से एक भी कार्य रोक दिया जावे। उसमे हमको फायदा नहि हो सकता है। जो मैं साच रहा हु वह स्वतत्रतया यथाथ है एसा प्रतात हो जाय तब हि और उतना हि परिवतन हाना उचित है। इसलीय मैं धय और खामाशी धारण कर रहा हु। मेरी सलाह है कि जब आपको धारासभा म स फुरसत मीले तब मेरे भ्रमण म मेरे साथ चद दिना क लिय हो जाय। फेब्रुवारी पहली तारीख को मैं गोदिया जाते हुए कलकत्ते म हुगा।

आपका
मोहनदास

१९२८ के पत्र

१

सत्याग्रहाश्रम

साबरमती

५ १ १९२८

भाई घनश्यामदासजी,

मैंने एक पत्र जमनालालजी के मार्फत भेजा था मीला होगा। एक तार भी भजा था कि स्वास्थ्य ठीक न हो जाय तब तक एसेंबली मे हरगीज न जाय। पू० मालवीजी से कहना था परतु इतनी बाता मे हम रुक गये थे। मुझे आपका स्मरण न रहा। अब इस बारे म उनको लिखने की आवश्यकता नहीं समझता हु। रूपये जमनालालजी के यहा ही भेजे होंगे। मैंने अब तक सुना नही है।

पू० मालवीजी के व्याख्यान का जादुई असर हुआ और वे इस बारे मे खूब प्रयत्न करने को कहते थे। देखें क्या होता है।

माच की आखर तक मैं आश्रम म हि हुगा। ११ तारीख को पाच रोज के लीये काठीयावाड जाना होगा।

आपका

मोहनदास

२

आश्रम

५-१-२८

प्रिय घनश्यामदासजी

पू० बापूजी का स्वास्थ्य अच्छा है। डाक्टरो ने कुछ ज्यादह घबडा दिया था, ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि मद्रास म सब डाक्टरा ने कहा कि कुछ खतरा नही है, न कोई चिता की बात है। आराम की अवश्य जरूरत है। लेकिन उनको आराम जगत् म कही नही मिल सकता है। उनकी प्रकृति म आराम ऐसी वस्तु नहीं है। क्या करें ? आज कल केवल शाति के लिये सुबह ६ बजे से ३ बजे तक

मौन रखते हैं। लेकिन उस वक्त मे लिखते ही रहते हैं और बाकी बक्त म लोगो का हल्ला रहता है। लेकिन यह सब आपको क्या लिखें ? आप भी तो अब बापू, मालवीयजी की कक्षा मे बठ गये। आप भी कहा स्वास्थ्य की रक्षा करते है ?

आपका विनीत,
महादेव

३

बिडला हाउस
पिलानी
१० जनवरी, १९२८

प्रिय महादेव भाई

जमनालालजी ने मुझसे पूछा है कि मैंने हाल मे ७५,०००) रु० का जो दान दिया है उस रकम को किन किन कामो म खच किया जाए। मैं इसका सारा निणय महात्माजी पर ही छोडता हू। यदि उन्हें पसे का कुछ विशेष अभाव न हो, तो मेरा सुझाव है कि जिन योजनाओ स हम स्वराज्य के लक्ष्य तक जल्दी से जल्दी पहुच सकें उन्ही पर यह रकम खच की जाए। स्वराज्य के हित म मेरी समझ मे आज हिन्दू मुस्लिम ऐक्य और अस्पश्यता निवारण, यही दो अत्यावश्यक काम हैं।

तुम्हारा
घनश्यामदास

४

१४-१-२८

भाई श्रीयुत घनश्यामदासजी,

तार मिला था। पत्र भी मीला है। लालाजी स्मारक के लीये मैं इस मास क अत मे सिंध जा रहा हु। कलकत्ते मे आपने कुछ इकटठा कीया ?

दुग्धालय के बारे म एक मद्रासी का नाम मैंन दीया था उसका पत्र लीया था ? यदि वह अनुकूल न लग ता दूसर नाम मैं दे सकता हु।

खादी भण्डार क बारे म जो उसका उद्देश्य है उसका मत भूलीयेगा केवल वणिक वत्ति स न चलना चाहीये। भण्डार को परमार्थिक दष्टि से चलानी है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। आजकल मेरा खोराक १५ तोला बादाम का दूध, १४ तोला रोटी (भीगी) सब्जी टमाटा कच्चा अलसी का तल ४ तोला २ ताला आट की रबडी प्रात काल म। यहा फल छोड दिय हैं। एक हफ्ते म १॥ रतल वजन बढा है। शक्ति ठीक है।

आपका,
मोहनदास

५

आश्रम
ता० ७ २ २८

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र न मिलने से चिंता तो अवश्य होती है। दवा से तो थकान लगना हि चाहिय। मेरी दीष्टि म प्रथम उपाय तो सपूण उपवास हि है। मुझको इसका कोई डर नही है। उपवास स नुकसान हो ही नही सकता है और उपवास एक दो दिन का नहा किंतु १० १५ दिन का होना चाहिय। यदि उपवास करना हि है तो आपको यहा रहना चाहिये। उपवास का शास्त्र जानन वाले एक दो सज्जन हैं उनको बुला सकते हैं। रहने का प्रबन्ध तो है हि है। आजकल यहा की आबोहवा अच्छी है। अगर उपवास शाम्प्रन को पिलानी म बुलाना चाहते हैं तो भी प्रबंध हो सकता है।

मेरा तो दृढ विश्वास है कि आपको दिल्ली हरगीज जाना नही चाहिये। पूज्य मालवीयजी और लालाजी का मैं आज ही लिख भेजता हू। हकीमजी अजमलखा के बारे म जो स्मारक के लिये मैंने 'यग इंडिया और 'नवजीवन म प्रार्थना निकाली है उसके लिये मैं आपसे और आपके मित्रा से द्रव्य चाहता हु। यदि आप अधिक न देना चाहें और आप अगर समति दे दें तो आपन ७५०००) दिया है उसीमें से बडी रकम निकाल दू। आपका नाम दना न दना आप पर छोड दू।

यदि उसम से कुछ देने का दिल न चाहे तो बगैर सकोच मुझको लिख भेजें।

मेरे स्वास्थ्य के लिये अखबारा म कुछ पढने से आप न डरें। ऐसी कोई बात चिंताजनक नही है। डाक्टर लोग अवश्य डराते है। परतु उसका कुछ प्रभाव मेरे पर नही पडता है।

आपका
मोहनदास

६

सत्याग्रहाश्रम,
साबरमती
८ २ १९२८

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला। हजम हानेवाले म कुछ तेल के पदाथ बन सकते हैं। परन्तु दूर बठकर यह प्रयोग नहीं हो सकता है। आज तो केवल उपवास ही आपके लिये अत्यावश्यक और अति उत्तम उपाय है। इस बार मे मुझको कुछ सदेह नही है।

आपका,
मोहनदास

७

साबरमती आश्रम
६ ३ १९२८

प्रिय घनश्यामदासजी,

मुझे यह जानकर ताज्जुब हुआ कि आपके पिलानीवाले पत्र के उत्तर म मैंने जो लम्बा पत्र भेजा था, वह आपको नही मिला। अब तक पिलानी से रिडायरेक्ट होकर वह शायद पहुच गया हो। फिर भी मैं उसमे कही बातें दुहराए देता हू।

बापू के स्वास्थ्य मे सुधार हो रहा है। उन्होंने यह खुद ही देख लिया था कि दूध लेने से इन्कार करते रहने से काम नही चलेगा। उन्होने यह भी देखा कि उनकी जजरप्राय काया का पुनगठन दुग्ध विहीन प्रयोगो द्वारा सम्भव नही है और वह यह भी देख चुके हैं कि केवल मेवा और फलो पर रहने मे क्या खतरा है। एक ऐसी भी स्थिति आयी जब उन्हे विश्वास हो गया कि यदि उनका यह प्रयोग जारी रहा तो उन्हें बिलकुल वैसी ही कठिनाइयो का सामना करना पडेगा जो उनके दूध छोडने के फलस्वरूप उठ खडी हुई थी। अब उन्होने पिछले एक हफ्ते स दूध लेना शुरू कर दिया है, जिसके फलस्वरूप उनके शरीर म शक्ति आने लगी है। उन्हे बहुत अधिक आराम की जरूरत है और यदि कोई एसा प्रबन्ध कर सके तो मैं उसका आभारी होऊगा। पर आपके इस सुझाव के बारे म कि वह गर्मिया किसी पहाड पर बिताए उनका कहना है कि उन्हें खाली विश्रामवाली बात नही जची काम और आराम दोनो साथ साथ रहें तो ठीक होगा। वह इसी लक्ष्य को ध्यान म रखकर सिगापुर और जावा जाने को राजी हो गये थे क्योकि वहा खादी के काम के लिए दो एक लाख रुपये एकत्र कर पाने की आशा थी। पर अब उनका सिगापुर जाना नही हो सकेगा क्योकि जो मित्र उनकी इस यात्रा का आयोजन कर रहे थे उन्होने लिखा है कि रबड की कीमतो म भारी गिरावट आने के कारण वहा के भारतीय व्यापारियो की दशा बहुत खराब हो गई है इसलिए यह यात्रा भविष्य म अधिक अनुकूल समय आने तक स्थगित रखी जाए। अब वह बर्मा जाने की सोच रहे है। मैं वहा के कुछ मित्रो से टोह ले रहा हू कि वहा कुछ अच्छी-सी धनराशि का इकट्ठा होना सम्भव है या नही? यदि उनका उत्तर 'हा' मे मिला, और वे बापू को बुलाने को उत्सुक दिखाइ दिये, तो—बापू का कहना है कि बर्मा प्रवास के दौरान वह 'कालो नामक बर्मा की एक पहाडी पर जाकर वहा एक पखवाडा विश्राम लेना पसन्द करेंगे। यूरोप के दो निमत्रणो पर भी विचार कर रहे हैं। उनम से एक तो वियेना के युद्ध विरोधी अतर्राष्ट्रीय सघ की ओर से आया है दूसरा हालैण्ड की युवा परिषद का है। श्री एण्ड्रूज इस यात्रा के पक्ष मे हैं। यदि यह यात्रा सम्भव हुई तो बापू को जाते-आते किसी प्रकार की असुविधा का सामना नही करना पडेगा, साथ ही उनके कार्य-कलाप मे भी परिवतन हो जायेगा। इस प्रकार का काम-काज सबधी परिवतन रक्तचाप मे उपयोगी माना गया है।

अब आपके अपने स्वास्थ्य के सबध म। बापू ने इसम लिखवाया था कि आपके आने से उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। यहा काफी नर्मी है वह तो सिर्फ निगरानी रखेंगे। पर उनका निमत्रण यह समझकर भेजा गया था कि आप

यदि उसमे से कुछ देने का दिल न चाहे तो बगर सकोच मुझको लिख भेजें।

मेरे स्वास्थ्य के लिय अखबारा मे कुछ पढने से आप न डरें। ऐसी कोई बात चिताजनक नही है। डाक्टर लाग अवश्य डराते है। परतु उसका कुछ प्रभाव मेरे पर नही पडता है।

आपका
मोहनदास

६

सत्याग्रहाश्रम,
साबरमती
८ २ १९२८

भाई घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला। हजम होनेवाले म कुछ तेल के पदाथ बन सकते हैं। पर तु दूर बठकर यह प्रयोग नही हो सकता है। आज तो केवल उपवास ही आपके लिये अत्यावश्यक और अति उत्तम उपाय है। इस बार मे मुझको कुछ सदेह नही है।

आपका,
मोहनदास

७

साबरमती आश्रम
९ ३ १९२८

प्रिय घनश्यामदासजी,

मुझे यह जानकर ताज्जुब हुआ कि आपके पिलानीवाले पत्र के उत्तर मे मैंने जो लम्बा पत्र भेजा था, वह आपको नही मिला। अब तक पिलानी से रिडायरेक्ट होकर वह शायद पहुच गया हो। फिर भी मैं उसम कही बातें दुहराए देता हू।

बापू के स्वास्थ्य मे सुधार हो रहा है। उन्होने यह खुद ही देख लिया था कि दूध लेन से इन्कार करते रहने से काम नही चलेगा। उन्होने यह भी देखा कि उनकी जजरप्राय काया का पुनगठन दुग्ध विहीन प्रयोगो द्वारा सम्भव नही है, और वह यह भी देख चुके हैं कि केवल मेवो और फलो पर रहने मे क्या खतरा है। एक ऐमी भी स्थिति आयी जब उन्हे विश्वास हो गया कि यदि उनका यह प्रयोग जारी रहा, तो उन्हे बिलकुल वसी ही कठिनाइयो का सामना करना पडेगा, जो उनके दूध छोडने के फलस्वरूप उठ खडी हुई थी। अब उन्होने पिछले एक हफ्ते से दूध लना शुरू कर दिया है, जिसके फलस्वरूप उनके शरीर म शक्ति आने लगी है। उन्हे बहुत अधिक आराम की जरूरत है और यदि कोई एसा प्रबन्ध कर सके तो मै उसका आभारी होऊगा। पर आपके इस सुझाव के बारे मे कि वह गर्मिया किसी पहाड पर बिताए उनका कहना है कि उन्हे खाली विश्रामवाली बात नही जची, काम और आराम दोनो साथ साथ रहे तो ठीक होगा। वह इसी लक्ष्य को ध्यान म रखकर सिंगापुर और जावा जाने को राजी हो गये थे क्योकि वहा खादी के काम के लिए दो एक लाख रुपये एकत्र कर पाने की आशा थी। पर अब उनका सिंगापुर जाना नही हो सकेगा क्योकि जो मित्र उनकी इस यात्रा का आयोजन कर रहे थे उन्होने लिखा है कि रबड की कीमतो मे भारी गिरावट आने के कारण वहा के भारतीय व्यापारियो की दशा बहुत खराब हो गई है इसलिए यह यात्रा भविष्य म अधिक अनुकूल समय आने तक स्थगित रखी जाए। अब वह बर्मा जाने की सोच रहे है। मैं वहा के कुछ मित्रो से टोह ले रहा हू कि वहा कुछ अच्छी-सी धनराशि का इक्टठा होना सम्भव है या नही? यदि उनका उत्तर 'हा' म मिला, और वे बापू को बुलाने को उत्सुक दिखाई दिये, तो—बापू का कहना है कि बर्मा प्रवास के दौरान वह कालो' नामक बर्मा की एक पहाडी पर जाकर वहा एक पखवाडा विश्राम लेना पसन्द करेंगे। यूरोप के दो निमत्रणो पर भी विचार कर रहे हैं। उनमे से एक तो वियेना के युद्ध विरोधी अतर्राष्ट्रीय सघ की ओर से आया है, दूसरा हालण्ड की युवा परिषद का है। श्री एण्ड्रूज इस यात्रा के पक्ष मे हैं। यदि यह यात्रा सम्भव हुई तो बापू को जाते-आते किसी प्रकार की असुविधा का सामना नही करना पडेगा, साथ ही उनके काय-कलाप म भी परिवतन हो जायेगा। इस प्रकार का काम-काज सबधी परिवतन रक्तचाप मे उपयोगी माना गया है।

अब आपके अपने स्वास्थ्य के सबध मे। बापू ने इसम लिखवाया था कि आपके आने से उन्हे कोई परेशानी नही होगी। यहा काफी नर्से हैं, वह तो 'सफ निगरानी रखेंगे। पर उनका निमत्रण यह समझकर भेजा गया था कि आप

उपवास चिकित्सा के लिए राजी होगे। अब तो आप काफी दूर तक घूम फिर लेते हैं, पर्याप्त मात्रा मे पौष्टिक पदाथ ले रहे है और आपकी कब्ज की शिकायत दूर होती जा रही है तो उपवास की जरूरत नही रही है। बापू का एक सुझाव यह भी था कि आप हजीरा नामक स्थान पर, जहा सूरत से कोई ८ मील दूर नाव पर जाना होता है ठहरें। यह स्थल पाचक जल के लिए प्रसिद्ध है। ताप्ती नदी के मुहाने पर यह छोटा सा स्थान है जहा दो एक बहुत बढिया कूए हैं। जिनका जल पाचन शक्ति बढाने म लाभदायक सिद्ध हुआ है। वहा से काफी लोग आरोग्य लाभ करके लौटे है और अब वे कब्ज की शिकायत नही करते हैं। बडा सुदर विश्राम स्थल है। वहा आपके ठहरने की व्यवस्था करन म कोई कठिनाई नही होगी। क्या आप इस सुझाव पर विचार करेंगे ?

आपको जामिया मिलियावाली बात रुची यह जानकर बापू बडे खुश हुए। आप कितना देंगे यह उन्हान आप ही पर छोड दिया है। वह जो रकम उनके पास है उसीसे काम लेंगे, उन्हे और अधिक नही चाहिए। उन्होने अभी यह तय नही किया है कि इस निधि मे से कितना निकालें और जो कुछ निकालें वह आपके नाम से दें अथवा नही। इस सम्बन्ध म कोई निणय करते ही वह आपको लिखेंगे उन्हे इस विचार से बडी तसल्ली मिलती है कि वह हमेशा आप पर निभर रह सकते है और आपकी उनमे जो आस्था है उसका पात्र सिद्ध होने का वह बराबर प्रयत्न करेंगे।

मैंने अपनी हिन्दी की उस चिटठी म यही सब लिखा था।

बापू के लेख की अग्रेज मित्रा न जो आलोचना की उससे उनका मनोरजन ही हुआ। अभी वह समय दूर है जब स्वय उनके ही देशवासी उन्हे पूरी तरह समझ पायेंगे अग्रेज और यूरोपीय मित्रा की तो बात ही जुदा है।

आपका,
महादव देसाई

८

विडला हाउस
दिल्ली
१७ माच १९२८

प्रिय महादेव भाई,

मुझे तुम्हारा वह पत्र, जो तुमने पिलानी के पते पर भेजा था अभी तक नही मिला। पता नहीं उसका क्या हुआ।

मुझे बापू के स्वास्थ्य के सम्बन्ध म बेचन कर देनेवाली खबरें अब भी मिल रही हैं। आशा है, वे सब अतिशयोक्तिपूण है। मैंने तीन दिन पहले मालवीयजी से बात की थी। इस बारे म हम दोनो एकमत हैं कि बापू को विदेश यात्रा नहीं करनी चाहिए। पहली बात तो यह है कि यदि उन्होंने काम काज को आराम के साथ जोड दिया तो उन्हें उससे कोई लाभ नही होगा। इसके अलावा हम दोनो की धारणा है कि यदि बापू ने विदेश भ्रमण म काम काज के मिशन को भी हाथ म लिया तो उन्ह विश्राम करने का अवकाश नही मिलेगा। उन देशो मे उनके जाने से वहा के निवासियो मे कौतूहल पदा होना अनिवाय है। इससे उनके पास आनेवाले लोगो का ताता बध जाएगा, जिसका असर उनके स्वास्थ्य पर पडेगा और स्वास्थ्य को भारी क्षति होगी। उन्ह व्याख्यान देने पडेंगे और खास खास आदमियो से मुलाकात करनी पडेगी। वह इग्लैण्ड जाने की बात भी सोच सकते हैं। इन सारी बातो से उनके स्वास्थ्य का मगल होने से रहा। और, ईश्वर न करे यदि उन्ह वहा कुछ हो गया तो यहा लोग बेहद बेचन हो जायेंगे। इस लिए मैं यह जोर देकर कहता हू कि उन्हें दूर देशो की यात्रा नही करनी चाहिए। हा, बर्मा की बात दूसरी है। पर मेरी अपनी राय तो यही है कि अभी उन्हें काम को हाथ नही लगाना चाहिए और दो-तीन महीने पूरे तौर से आराम लेना ही चाहिए। कह नही सकता मेरी बात का बापू पर, खास तौर पर उनके स्वास्थ्य के मामले म, कोई असर पडेगा या नही, पर मुझे तो जो कहना था वह मैंने उनके सामने रख दिया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के बारे म जमनालालजी से बात हुई थी इस सस्था का दफ्तर भी गया था। उसकी मेरे मन पर जो छाप पडी वह मैंने जमनालालजी को बता दी, और मुझे आशा है कि वह उसे महात्माजी के सामने रख

देंगे। अपने वतमान रूप मे इस सस्था को राष्ट्रीय बताना ठीक नही होगा। इस सस्था की सहायता करने के केवल दो उद्देश्य हो सकते हैं पहला यह कि वह राष्ट्रीय हो अथवा साम्प्रदायिक, मुसलमानो का सौहाद प्राप्त करने के लिए हमे उसकी सहायता करनी ही चाहिए। दूसरा उद्देश्य यह हो सकता है कि उसे राष्ट्रीय रूप देने के हेतु से उसकी सहायता करनी चाहिए। यदि हमारा उद्देश्य पहले ढग का हो तब तो उसके गठन के बारे म माथा पच्ची करना अनावश्यक है। पर यदि दूसरा उद्देश्य हो तो इस सस्था को राष्ट्रीय रूप रेखा देने की दिशा मे हम बहुत कुछ करना होगा। इस समय यह जसी कुछ है, इसे साम्प्रदायिक ही समझना चाहिए राष्ट्रीय नही। मुझे यह देखकर निराशा हुई कि उसके छात्रावास म एक भी हिन्दू नेता का चित्र नही है जबकि अनवर पाशा और कमाल पाशा के चित्र लटके हुए हैं। पुस्तकालय अरबी पुस्तको स भरा पडा है। सस्था का नाम तक अरबी है। जिधर दष्टि डालिए, मुस्लिम सस्कृति की ही गध आती है। यदि शिक्षण देशी भाषाओ म दिया जाए, तो मुझ कोई आपत्ति नही पर इसका अथ यह तो कदापि नही है कि सस्कृत और हिन्दी के मुकाबले म अरबी और फारसी को अधिक उत्तेजन दिया जाए। वहा के मौजूदा वातावरण म कोई भी हिन्दू लडका पढने के लिए आना पसद नही करगा। पर इन सारी बातो पर तभी विचार हो सकता है जब गाधीजी इस सस्था को राष्ट्रीय रूप देना चाहते हो। पर यदि वह उसके साम्प्रदायिक दष्टिकोण के बावजूद उसकी सहायता करना चाहते है तो इस विचार मे भी बुद्धि विवेक सम्भव है। मैं यह सब महात्माजी को प्रभावित करने के लिए नही कह रहा हू पर मैंने समझा कि शायद वह मेरी धारणा जानना पसद करें। वह जितनी भी रकम सारी बातो को ध्यान म रखकर देना उचित समझें दे दें।

महात्माजी की तबीयत के बारे म समय-समय पर लिखते रहा करो।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

६

बिड़ला हाउस,
बनारस
११ अप्रैल, १९२८

पूज्य महात्माजी,

मैंने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के विषय में पूज्य मालवीयजी से भी बात की, और मोतीलालजी नेहरू से भी। बातचीत में सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास और सर मनमोहनदास रामजी ने भी कुछ हद तक भाग लिया। बहिष्कार में कितनी सफलता सम्भव है, इस बारे में हममें मतभेद हो सकता है, पर इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं कि वर्तमान परिस्थिति में यही एक ऐसा अस्त्र है, जिसका उपयोग सफलता के साथ कर सकते हैं। कमीशन का बहिष्कार तब तक निरर्थक रहेगा, जब तक हम उसके साथ और भी कुछ वैसे ही कदम न उठाएं। बहिष्कार को सफल बनाने की अनेक योजनाएं पेश की जा सकती हैं, पर वे सभी या उनमें से अधिकतर कष्टदायक सिद्ध हो सकती हैं। केवल यही ऐसी योजना है, जिसे लागू करने में कोई खतरा नहीं है और जो किसी हद तक प्रभाव डाल सकती है। अतएव यदि हमें आंशिक सफलता ही मिले, तो भी इसे अपनाना चाहिए। यदि रुपये में सोलह आने सफलता न मिली, आठ आने या चार आने ही मिली, तो भी मिलेगी तो। पर मैं अपना प्रोग्राम मिलों के सहयोग की योजना की बुनियाद पर नहीं रखूंगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मिलों का सक्रिय सहयोग हमारी योजना का एक अंग रहेगा, पर जैसी परिस्थिति है, उसे ध्यान में रखते हुए ऐसा सहयोग व्यावहारिक सिद्ध नहीं होगा। नेताओं में उतनी सामर्थ्य नहीं है। वे यह गारण्टी नहीं दे सकते कि यदि मिल मालिक एक निर्धारित कोटि के ताने-बाने का वस्त्र ही तैयार करेंगे, तो सारा माल उचित मुनाफे के साथ खप जायगा। यदि एक मिल मालिक की हैसियत से मुझे अपनी पूंजी पर ५ प्रतिशत मशीनों की घिसाई और ५ प्रतिशत डिविडेंड मिल जाए, तो मैं संतुष्ट हो जाऊंगा। मैं इसकी चिन्ता नहीं करूंगा कि मैं १० काउन्ट मोटा सूत कातता हूं या ५० काउन्ट। परन्तु नेताओं की गारण्टी के अभाव में—और वैसी गारण्टी प्राप्त होने पर भी उस पर अमल होना सम्भव नहीं है—मिल-मालिकों से इस बात की आशा रखना कि वे अपने मुनाफे या उत्पादन का नियमन करेंगे, व्यर्थ है। यदि मिल-मालिक देश भक्ति की भावना से ओत प्रोत हों और मैं ऐसे कई मिल-मालिकों को जानता हूं,

तो भी उनके लिए किसी ऐसे दल के साथ गम्भीरतापूवक समझौता करना असभव है जो स्वय उस पर लागू होनेवाल अपने अश का पूरा करने की स्थिति म नही है। इसके अलावा सभी मिले तो भारतीय हैं नही। अतएव मेरी समझ मे फिलहाल मिलो की सहयोगवाली बात को अलग रखना चाहिए। हमे उनसे आर्थिक सहायता अवश्य लेनी चाहिए, पर यह सहायता बगैर शत की होनी चाहिए। देश भक्त मिल मालिक स्वराज्य फड म धन दने को तयार हो जायेगा पर वह एसे किसी समझौते के व धन म नही पडेगा, जिसके पालन मे वह दूसरी पार्टी को अशक्त पाता है। यदि कुछ मिल मालिक कह कि व कीमता और मुनाफे का नियत्रण करनेवाले समझौते को स्वीकार करने के लिए तयार हैं, तो मैं उनकी इस बात पर विश्वास नही करूगा। यदि आपके हाथ म स्वराज्य शासन होता तो बात दूसरी होती। पर आज दिन तो वे आपकी कमजोरी को जानत हैं, इसलिए व ईमानदारी के साथ एस किसी भी समझौत का स्वीकार नही करेंगे।

विदेशी वस्त्र बहिष्कार को कस सफल बनाया जाय इसका सुझाव दना मेरे बूते के बाहर की बात है। पर मेरी राय म महज उपदश स काम बनने स रहा। इसके लिए धरना देना आवश्यक होगा। इसस पहले धरना से वातावरण मे खिचाव पदा हो गया था इसलिए कुछ लाग इस पसद करन मे हिचकिचाए पर जहा तक मेरा सम्बन्ध है मैं धरना देने म काई अनौचित्य नही दखता हू। इसकी एक विशेषता यह है कि इससे जनता का शिक्षण मिलता है। धरना के दायरे म विदेशी वस्त्र को लादने उतारनवाले मजदूरा के काय को भी शामिल करना चाहिए। यदि आपको मिला का सहयोग प्राप्त करन योग्य कोई योजना जचे तो उसकी एक नकल मेरे पास भी भजने की कृपा करें मैं उस पर अपनी टिप्पणी भेजूगा। यह कहना अनावश्यक है कि यदि इस मामले मे आपका प्रत्यक्ष नतृत्व मिलते ही मैं अपन हिस्से का आर्थिक सहयोग आपको भेंट करन को तैयार हो जाऊगा—पर एक मिल मालिक की हैसियत से नही।

मैं एक बात और कहना चाहता हू। आपन ५ अप्रल के यग इडिया म कहा है कि लोगो न मिला द्वारा तयार खादी अधिकतर इस भ्रम म खरीदी है कि वह असली खादी है और उस पर काग्रेस की छाप लगी है।" ऐसा आपने पहली बार नही कहा है न यह बात कहनेवाल आप पहले व्यक्ति हैं। पर क्या आप खादी प्रचार-काय के प्रभाव का कम चलाकर वणन नही कर रहे हैं ? इसम सन्देह नही कि आपके प्रचार के फलस्वरूप निम्न और उच्चतर वर्गों के लोगा की रुचि मे क्रान्ति-सी हो गई है और वे मोट से-मोटा कपडा पहनने म भी लज्जा या हीनता का अनुभव नही करत हैं। पर मरी धारणा है कि लोग मिला द्वारा तयार खादी

को इस भ्रम के वशीभूत होकर कभी नही खरीदते हैं कि वह शुद्ध खादी है। यदि आप फेरी लगानेवाले वस्त्र विक्रेताओ को मिलो की खादी और शुद्ध खादी लेकर गावो मे भेजें, और वे ग्रामीणो को दोनो की क्वालिटी और दोनो की कीमतो का अतर समझाकर बतायें तो मुझे इसमे तनिक भी सन्देह नही कि उनमे से ८० प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक सस्ता और अधिक टिकाऊ कपडा ही पसद करेंगे। लोग-बाग मिलो द्वारा तयार खादी उसके अधिक सस्ते और टिकाऊ होने के कारण ही खरीदते हैं और यह समझकर खरीदते हैं कि यह कपडा स्वदेश मे तैयार हुआ है।

मैं स्वदेशी आन्दोलन के प्रभाव को तथा उसके द्वारा मिलो की समृद्धि को घटाकर बताना नही चाहता हू पर मेरा अनुरोध है कि आप उसके प्रभाव की बात कृपया इतनी बढा चढाकर न कहे। इस बात से इकार नही किया जा सकता कि मिल मालिको ने अपने उद्योग को सफल बनाने के मामले मे ठोस काम किया है। यदि वे सस्ता कपडा तयार करने मे सफल नही होते तो स्वदेशी-सम्बन्धी सारे उपदेश उदबोधन व्यर्थ सिद्ध होते। कोई भी आदमी ऊची कीमतवाला कपडा केवल इसीलिए खरीदते रहने को तैयार नही पाया जाता कि वह भारत मे बना हुआ है। जो लोग मिलो द्वारा तयार खादी के मुकाबले ऊची दर पर शुद्ध खादी खरीदते हैं, वे मुट्ठी भर होगे। थोडे से शिक्षित और देशभक्ति की भावना से अनुप्राणित व्यक्तियो की बात छोड दीजिये, आम जनता तो स्वदेशी को उसके सस्ते पन के कारण पसन्द करती है। इस समय ४० गज के स्वदेशी लटठे के थान की कीमत बाहर से आये लटठे के मुकाबले कही कम है साथ ही स्वदेशी लटठा अधिक टिकाऊ भी पाया गया है। मिलो की सफलता का यही रहस्य है, और यदि वे अपनी वतमान स्थिति की उपलब्धियो मे अपने प्रयत्नो का दावा पेश करें, तो यह कोई बेजा नही है। मिल मालिको पर यह आरोप भी लगाया गया है कि असहयोग के दिनो मे उन्होने अपने माल के मनमाने दाम वसूल किये। मेरी समझ मे वास्तविक स्थिति का ठीक ठीक अध्ययन करने के बाद यह आरोप भी निराधार सिद्ध होता है। मिलें अपने उत्पादन को ऊची से ऊची कीमत पर बेचने मे जो सफल हुइ इसका कारण उतना स्वदेशी आन्दोलन नहीं था जितना युद्ध के बाद की विश्वव्यापी आसूदगी था। उन दिनो विदेशी कपडा भी मनमाने दामो पर बिका। यदि मिलें अपना माल सस्ते दामो पर बचती और धन का सचय न करती तो इस घोर मन्दी के काल मे उनकी कौन सहायता करता ? इसके अतिरिक्त हम यह भी नही भूलना चाहिए कि यह उस तेजी का ही प्रताप है जो मिलें अपना इतना विस्तार करने मे समर्थ हुई हैं जिसके फलस्वरूप ग्राहक कीमतें कम करने की होड

से लाभ उठा रहा है और मिलें प्राय लागत मूल्य पर माल वेच रही हैं। मैं यह सब जो लिख रहा हू, सो इसलिए कि हमम मिलो के खिलाफ पक्षपात की भावना ने घर कर लिया है। पर इससे यह न समझा जाय कि मैं मिलो का पक्ष ले रहा हू। यदि मुझे कभी ऐसा लगा कि देश के यत्न म मिलो की आहुति आवश्यक है, तो मैं ऐसा करने म एक क्षण के लिए भी नही हिचकिचाऊगा। मैं तो आपके सामने वस्तु स्थिति रखना चाहता था, बस मेरा कत्तव्य पूरा हो गया।

आपका स्नेह भाजन
घनश्यामदास

१०

२७ ४ २८

भाई घनश्यामदासजी

आपके दोनो पत्र मीले हैं। पत्र उत्तर देने का आज भी पूरा समय तो है हि नही।

मगनलाल के बारे म मैं क्या लीखू। मेरे लिये इस मृत्यु को बरदास जहर प्याले पीने स कठिन प्रतीत हुई है परतु ईश्वर न मुझ पर बडा कृपा की है शात हु।

बहिष्कार के बारे म शिक्षित वग जब तक तैयार नही होगा तब तक क्या कीया जाय? मीलो की आशा व्यथ है ऐसा अब तो साफ-साफ मालुम हो गया है।

आपका स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है, सुनकर मुझ बडा हष होता है। इसमे स्वाथ भी तो है। क्या करू ?

आपका
मोहनदास

११

१२ ५ २८

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मीला है। जमनालालजी यहा आये हैं। मैं उनसे व्यायाम के बारे मे बातें करूगा। उनको व्यायाम की आवश्यक्ता है।

आप कौन-से आसन करते है ? मेरा स्वास्थ्य ठीक कहा जाय।

सतीश बाबू को जो सहाय देना शक्य है, दी जाय तो अच्छा है। बडे त्यागी और निर्मल है।

आपका,
मोहनदास

१२

१८ मई, १९२८

प्रिय महादेव भाई,

दो कटिंग तुम्हारे अवलोकनार्थ भेजता हू। पता नही तुमने बामनगाछी गोली काण्ड के बारे मे कुछ सुना है या नही। पुलिस ने हडतालियो पर गोली चलाई जिससे दो या तीन आदमियो की मृत्यु हो गई। यूनियन के सेक्रेटरी ने पुलिस अधिकारियो पर मामला दायर कर दिया। वे सब रिहा तो हो गये पर हावडा के जिला मजिस्ट्रेट श्री जी० बी० दत्त ने अपने फैसले मे कुछ यूरोपीय अफसरो के रवये की कडी आलोचना की है। इससे ऐंग्लो इडियन पत्र बौखला उठे हैं। ये कटिंग इन लोगो की मनोवृत्ति के नमूने हैं। पुलिस अपना दबदबा बठाने के लिए जनता को आतकित करती है और जब कोई भारतीय अधिकारी पुलिस की आलोचना करता है तो एंग्लो इडियन पत्र उसकी बुरी तरह खबर लेते हैं। यूरोपीय पुलिस अधिकारियो के विरुद्ध श्री दत्त की टिप्पणी से बडी सनसनी पैदा हो गई है। लार्ड बर्कनहेड ने पूरी तफसील तलब की है, और यूरोपीय समाज मे यह माग जोर पकड रही है कि श्री दत्त को इस दुस्साहस के लिए बर्खास्त कर दिया जाए। मैं

श्री दत्त को व्यक्तिगत रूप से जानता हू। चूकि वह एक भारतीय मजिस्ट्रेट हैं, शायद उनके मातहत अफसर उन पर अपना सिक्का बठाना चाहते थे, इसलिए जब उन्हाने सीमा का अतिक्रमण करते पाया, जैसा कि इस गोली काण्ड म हुआ, तो वह सम्भवत उसे सहन नही कर सके और उनकी अच्छी तरह खबर ली। श्री दत्त पर क्सी बीतगी कहा नहीं जा सकता पर इस समय तो वह सभी राष्ट्र वादिया के समथन के अधिकारी हैं। मैं नही कह सकता कि गाधीजी उनके सम्बन्ध म यग इडिया म दो एक शब्द कहना चाहगे या नही। जो भी हो, तुम्हें ये कटिंग बडी रोचक लगेंगी। इनसे तुम्ह यहा के गैर सरकारी अग्रेजा की मनोवृत्ति की झलक पाने का अवसर मिलेगा।

आशा है तुम अपनी लडाइ पूरी आशाआ के साथ जारी रखागे।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

साथ म—
'इग्लिशमन —१५ मई
स्टेटसमन —१५ और १६ मई

१३

२३ मई, १९२८

प्रिय महादेव भाइ

गाविन्द भवनवाली घटना क बाद से स्थानीय हिन्दी पत्र पत्रिकाआ म गन्दा साहित्य प्रकाशित हो रहा है। लडके लडकिया के हाथा म एस हिन्दी पत्र देत हिचकिचाहट होती है। वतमान अवस्था म लाभ उठाकर कुछ पत्रिकाओ ने लोगा स रुपया ऐंठने का धधा भी शुरू कर दिया है। उदाहरण क लिए व किसी प्रतिष्ठित परिवार को कहला भजत हैं कि वे पत्रा म यह छापेंगे कि उनके नेता गोविन्द भवन के कीतन म भाग लिया करते थ। यदि किसी न एसी धमकिया को सुना-अनसुना कर दिया, ता कुछ पत्रिकाआ म उनके बारे म मनगढन्त कहानिया छपने लगती हैं। मैं हिन्दू-पच नामक पत्रिका भेजता हू। इसके १३ स १६ पृष्ठो को पढकर तुम देखोगे कि इस पत्रिका ने किस प्रकार एक बालिका विद्यालय

को बदनाम करने की चेष्टा की है। इस विद्यालय का सचालन यहा हमम से कुछ लोग कर रहे हैं। जो कुछ इसमे छपा है वह अक्षरश मिथ्या है। सम्पादक का एकमात्र उद्देश्य इस सस्था को क्षति पहुचाना है। मैंने प्रेस के द्वारा लोगो से अपील की है कि वे ऐसे साहित्य का प्रोत्साहन न दें। अच्छा हो यदि गाधीजी कभी 'नव जीवन म एक-दो शब्द इस विषय पर लिख दें। मैं समझता हू, अपने नवयुवको म इस प्रकार की मनोवृत्ति का पनपन से रोकना जरूरी है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

१४

६-६ २८

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मीला है। आसना से फायदा है, ऐसा मैं भी मानता हु। आसना की पसन्गी म ज्ञान की आवश्यकता है ऐसा मैंने देखा है।

अगस्ट मास म मैं आश्रम मे ही हुगा, ऐसा अब तो लगता है। अवश्य आइय।

आपका,
मोहनदास

श्रीयुत घनश्यामदास बिडला,
बिडला पार्क

१५

बरेली
१३ ६ २८

भाई घनश्यामदासजी,

हरभाई दक्षिणामूर्ति भवन मे नानाभाई के साथी हैं। नानाभाई बीमार हो गये हैं। वर्धा म इस विद्यालय के बारे म हमारे बीच मे बात हुई थी। इस पर स मैं उनको आपके पास भेजता हु। इस सस्था को क्या मदद देना वह आप ही सोचन

वाले थे—आज तो मैंने नानाभाई को अभयवचन भेज दीया है वह आप ही के दान के आधार से है। अब आप हरभाई से सब बात सुन लेंगे। संस्था का हिसाब देखेंगे और उचित करेंगे।

आपका,
मोहनदास

१६

आश्रम
१८.६.२८

भाई घनश्यामदासजी,

इस पत्र के साथ दो पत्र आस्टीया के मित्रो का भेजता हू। दोनो बहोत अच्छे हैं। उनको हिंदुस्थान मे बुलाना और हिंदुस्तान का परिचय दिलाना आवश्यक समझता हू। ऐसी बातो मे आपके दान का उपयोग मैं नहीं करना चाहता हू। इस कार्य मे भाई जुगलकिशोरजी रस लेते हैं। यदि आप उचित समझें तो उनको सब पत्र भेज दें। उनके लिये २०० पाउंड भेजना चाहीये। यदि वे यह दान देना चाहते हैं तो शीघ्रता से पैसे भेजने होंगे।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। आश्रम नियमावली ध्यान से पढ़ें और कुछ सूचना देना उचित समझें तो अवश्य भेजें।

आपका,
मोहनदास

१७

स्टीरिया (आस्ट्रिया)
ग्राज
२१ मई १९२८

प्रिय परम पूजनीय महात्माजी,

आपका २८ अप्रैल का पत्र हमने बड़े हर्ष और हार्दिक धन्यवाद के साथ पढ़ा। प्रिय महात्माजी, हम यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपका स्वास्थ्य अच्छा है। यह पढ़कर भी बड़ा आनन्द मिला कि आप अगले वर्ष मे यूरोप देखने

आ रहे हैं। यूरोप का सौभाग्य। क्योंकि आपकी ही वाक्शक्ति में यह सामर्थ्य है कि वह यूरोप को अंधकारपूर्ण मार्ग से हटाकर, जिस पर वह अब जा रहा है, ठीक रास्ते पर ले जाए। 'यंग इंडिया' मिलते ही उसमें आपने जो लेख लिखा है उसे हम ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे। उसमें आपने अपने यूरोप भ्रमण की चर्चा की है।

आपने हमें भारत आकर हम अपने नेत्रों से देखने की जो कृपापूर्ण अनुमति दी है उसके लिए हार्दिक धन्यवाद! प्रिय महात्माजी, आपके दर्शन करके और आपके सुन्दर देश और उसके मिलनसार लोगों को देखकर हमें जो प्रसन्नता होगी उसे मैं शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं कर सकती। जैसा कि फ्रेड स्टैंडनेथ ने अपने कल के पत्र में जो मैं साथ भेजती हूं पूरे तौर से बताया है हम लोग केवल विश्वविद्यालय की लम्बी छुट्टियों में ही आ सकते हैं और साथ ही अध्ययन काल का एक मास (नवम्बर) भी दे सकते हैं। हमें दुःख है कि वापसी टिकट इतने अधिक महंगे हैं क्योंकि डेक पर यात्रा करने का निषेध है।

वियेना के अंग्रेज वाइस कांसुलेट ने पासपोर्टों के विजा की जो मांग की है, उसका प्रबन्ध आप कर देंगे, इस आश्वासन के लिए धन्यवाद! हम आशा है कि सितम्बर के महीने में बम्बई पहुंचना बाद के महीनों की अपेक्षा अधिक असमयोचित नहीं होगा। फ्रेडरिक (फ्रेड) के मुख्य प्रोफेसर की रुग्णावस्था के कारण हम शीतकाल में आने में असमर्थ रहेंगे, पर मौसम चाहे जितना गरम हो, हम आपके तथा प्यारे भारत के दर्शनों की खातिर सब सहन कर लेंगे। हम गर्मी का रस लेना चाहते हैं। हमारे शीत प्रधान देश में मई से मध्य तक प्रातःकालीन तापमान हिमांक के लगभग होता है।

हम यह पत्र लिख ही रहे थे कि हमें 'यंग इंडिया' के मई मास के चार अंक मिले। आपके प्रिय साथी और सच्चे सहकर्मी (मगनलाल) के निधन के समाचार से हमें गहरा शोक हुआ। मैं भगवान् से हार्दिक प्रार्थना करती हूं कि वह आपको इस भारी क्षति को सहने की क्षमता प्रदान करें। आपका अपने यूरोपीय मित्रों के प्रति शीर्षक लेख हमने बड़े मनोयोग और रुचि के साथ पढ़ा। पर पूजनीय महात्माजी, यह आपकी विनयशीलता मात्र है जो आप कहते हैं कि आप यूरोप केवल श्री रोमां रोलां और अन्य मित्रों से मिलने आ रहे हैं। यद्यपि इस अत्यंत कुशल यूरोपीय लेखक का मेरी दृष्टि में बड़ा मान है तो भी मैं यह कहे बिना नहीं रह सकती कि आपकी यूरोप यात्रा का मुख्य उद्देश्य यूरोप को अपना प्रेम और सत्य का संदेश देना ही है। यद्यपि भगवान् की अनुकम्पा से इने गिने क्षेत्रों में मुझे आपकी महती विनयशीलता का न्यूनतम भान हो जाता है, यद्यपि मैं जानती हूं कि आप संसार के महानतम एवं परम विनयशील पुरुष हैं,

तथापि मेरी धारणा है कि आपकी यात्रा का मुख्य उद्देश्य ससार को अपना उच्च सदश देना है। य कोई श द मात्र न होकर मेरी दढ धारणा व्यक्त करते हैं।

यदि भगवान ने मुझे भारत यात्रा की अनुमति दी तो, पूज्य महात्माजी, मैं थोडे से शब्दो मे आपको बताऊगी कि मुझे सत्य की उपासना के दण्डस्वरूप पिछले कुछ महीनो से ये विचित्र लोग क्या क्या कष्ट दे रहे है।

भगवान् आपको और भी अधिक स्वस्थ करें आपके और आपके भद्र सह कर्मिया के लिए मेरी यही प्राथना है। परम प्रिय और परम पूजनीय महात्माजी, मैं एक बार फिर अनेकानेक धन्यवाद देती हू और हार्दिक सौहाद का सदेश भेजती हू।

आपकी सच्ची भक्ति म रत
मैं हू
आपकी कृतन,
फ्रैंसिशिया स्टेण्डेनेथ
ग्राज (स्टीरिया)

फ्रातम सडाफग्राज न० १ आस्ट्रिया

१८

ग्राज, २६ मई, १९२८

परम पूजनीय महात्माजी

आपक २५ अप्रल १९२८ के प्रिय पत्र तथा अपने प्रिय भारत को आने की अनुमति के लिए अनक धन्यवाद।

दुर्भाग्य से हमारे लिए शीत ऋतु म आना सम्भव नही होगा। मैं विश्व-विद्यालय म शिक्षक और सहायक हू। मेरे प्रधान प्राफेसर एच० पीफर फेफडो की बीमारी से पीडित हैं और मुझे लक्चर दने और प्रयोगशाला का काम जारी रखने के लिए सदव उनका स्थान लने को प्रस्तुत रहना होता है।

अतएव मैं स्कूल म अध्यापन-काय करने के एक महीने या छह सप्ताह के साथ लम्बी छुट्टियो म ही आ सकता हू। साथ ही स्कूल के अध्यापन-काय से अवकाश ग्रहण करन के लिए मुझे किसी एवजी को भी ढूढना है। उसका पारिश्रमिक मुझे देना होगा जबकि अपनी छुट्टिया मैं यात्रा म बिताऊगा। प्रयोगशाला में जो एवजी दूगा उसे मुझे केवल एक महीने का पारिश्रमिक लगभग ५ पौंड अर्थात् अपने मासिक वतन का लगभग आधा देना होगा। लेक्चरा के लिए एवजी प्राप्य

नही है। क्योकि ये विभाग आस्ट्रिया के केवल विश्वविद्यालय म हैं। पर नवम्बर मास के लिए मेरे प्रोफेसर, जो आपके भारी प्रशसक हैं, मेरे लेक्चरो के बगैर भी काम चला लेंगे, यद्यपि उनका स्वास्थ्य ठीक नही रहता है और इतने दिनो कोई लेक्चर नही होगे। हमारी इस्टीटयूट के दूसरी श्रेणी के सहायक ने अभी वैज्ञानिक कार्यों का आरम्भ ही किया है।

गर्मियो में जहाज भाडा भी सस्ता रहेगा इसलिए हमारी भारत-यात्रा पर कम खर्च होगा। हमारे देश म हमेशा सर्दी रहती है ग्रीष्म ऋतु म भी। हमे गर्मी का बडा चाव है और सितम्बर से नवम्बर तक हम यहा का तापमान अवश्य सहन कर सकेंगे।

परमप्रिय महात्माजी आपकी बडी कृपा है जो आपने हमे भारत आने की अनुमति दी है। हम त्रियस्त से ३१ अगस्त को रवाना होकर बम्बई १७ सितम्बर को पहुच सकते हैं, अथवा जेनोआ से सवार होकर बम्बई ३ सितम्बर को पहुच सकते हैं।

मुझे दिसम्बर के आरम्भ तक ग्राज वापस लौटना है, क्योकि तब मेरे अस्वस्थ प्रधान स्वास्थ्य सुधारने के लिए छुट्टी पर जायेंगे।

पासपोर्टों को लेकर कोई कठिनाई सामने नही आयेगी। दो जनो का जहाज का दूसरे दर्जे का बम्बई जाने-आने का वापसी टिकट १७४ पौंड म आयेगा। यह भाडा ३१ अगस्त 'मौसम' मे आरम्भ होकर मौसम बीतने तक रहता है।

हमे जहाज-कम्पनी से मालूम हुआ कि रुपया भेजने का सबसे सुगम मार्ग बम्बई के लायडस बैंक अथवा बम्बई के ही 'कम्पतोयर' नेशनल द एसकोम्प दे पारी म फिलियाल ग्राज आस्ट्रिया के वीनर बैंक बेरीन के खाते म जमा करा देना है।

तीन महीने का रहने का खर्च आदि पासपोर्ट का विज़ा शुल्क, स्वेज़ नहर को पार करने की चुगी आदि ऊपर के खर्च के लिए मेरा वेतन यथेष्ट होगा। मैं दो मास का अग्रिम वेतन ले लूगा और हम दोनो पिछले महीनो म जो बचा पाये हैं वह भी काम आयेगा।

आपके स्थायी स्वास्थ्य की हार्दिक कामना करता हुआ तथा धन्यवाद देता हुआ।

मैं हू
आपका कृतज्ञ भक्त और
आज्ञाकारी सेवक,
फेर स्टेण्डेनेथ

१९

तार

अल्मोडा
२२ जन, १९२८

घनश्यामदास,
रायल एक्सचेज प्लेस,
कलकत्ता।

क्या आप किसी प्रतिनिधि का करीमगज आसाम मे बाढ से हुई क्षति की जानकारी प्राप्त करने के लिए भेज सकते हैं ?

—गाधी

२०

२७२८

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र और रु० २७०० की हुडी मीले है। मैं चीन के साथ सबध तो रखता ही हु परतु उन लोगो को तार भेजने को दिल नही चाहता उसमे कुछ अभिमान का अश आता है यदि आयु है तो चीन जान का इरादा अवश्य है। कुछ शांति होने के बाद वह लोग मुझको बुलाना चाहते हैं।

आप सब भाइयो के पास से आर्थिक मदद मागन म मुझको हमेशा सकोच रहता है क्याकि जा कुछ मागता हु आप मुझे दे देते हैं। दक्षिणामूर्ति के बारे मे मैं ममजा हु। बात यह है कि मुलक म अच्छे काम तो बहोत हैं परतु दान देनवाले कुछ कम हैं। अच्छा काम रुकता नहि है परतु नये दनेवाले उत्पन्न नहि होते हैं। नये काम तो हमेशा बढते जाते हैं।

ठीक कहत हो नियमावली की किमत केवल नियमो के पालन करनेवालो पर निभर है। रूपय आस्ट्रीया के मित्रा को भेज दीये हैं।

आपका,
मोहनदास

२१

भाई घनश्यामदासजी,

आपका प्रेमल पत्र मीला है। बात तो यह है कि उस पत्र की भाषा भिक्षा-पात्र सामने रखने से मुझको और रोकेगी। परंतु भिक्षार्थी को मान कहा से, इस लिये जब मैं विवश हो जाउगा तब द्वार पर खड़ा हो जाउगा।

बारडोली का समझौता हो जायगा ऐसा कुछ अब प्रतीत होता है।

आपका,
मोहनदास

१६ ७ २८

२२

आश्रम,
साबरमती
ता० २० ७ २८

भाई घनश्यामदासजी

आपके दो पत्र मीले हैं।

बारडोली के बारे म कुछ नही भेजा है उसम हरज नहिं है। काफी धन मील रहा है। भीड होगी तब अवश्य तकलीफ दुगा। समझौता होने का अब कम सभव है। हुआ तो भी ठीक है न हुआ तो भी ठीक। सत्याग्रह की बागडोर ईश्वर के हाथो म रहती है। वल्लभभाई आज यही हैं।

बहिष्कार के बारे म मैं दुबारा 'नवजीवन मे लिखुगा।

आपका,
मोहनदास

२३

८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता
ता० २५ ७ २८

परम पूज्य महात्माजी के चरणो मे सप्रेम प्रणाम।

बारडोली के सग्राम के सम्बन्ध म एक कटिंग स्टेटसमन' से भेज रहा हू। स्टेटसमैन शुरू स ही बारडोली के पक्ष मे है और इसीलिए इसके अग्रलेख का थोडा सा महत्त्व है। गवनर की स्पीच से यह ध्वनि निकलती है माना सबसे बडा झगडा इसी बात का है कि मालगुजारी पहिले जमा करा दी जाय या जाच के बाद जमा हो। 'स्टेटसमन का भी यही विश्वास है कि समझौता इसी बात पर अड गया है कि मालगुजारी पहिले चुकती नही की जा सकती। मैं तो समझता हू कि मतभेद के बडे कारण दूसरे है। किन्तु यदि मालगुजारी चुकाने न चुकाने के सवाल पर ही समझौता अड गया हो तो यह वाछनीय मालम होता है कि अपनी आर से कोई स्वतन्त्र शख्स मालगुजारी चुकाये। ऐसा करने से सरकार और वल्लभभाई दोना निर्लिप्त रह सकेंगे। किन्तु जहा तक मैंने आपके लेख पढे हैं उसस यही ध्वनि निकलती है कि मतभेद के दूसरे बडे कारण है जसे कि नीलाम की हुई जमीन को लौटा देना, किसाना को हरजाना देना इत्यादि २।

सरकार की ओर स कुछ उग्रता होगी ऐसा तो अब स्पष्ट दिखाई देने लगा है। पज्य मालवीयजी भी वल्लभभाई के बुलाने पर बारडोली जाने को तैयार है ऐसा उन्होंने अपने व्याख्यान म कहा है। लक्षण तो सब शुभ मालूम होते हैं। मालूम होता है कि आपको यह युद्ध अनायास मिल गया है। साइमन कमीशन के काम मे इस युद्ध से बडी सहायता पहुचेगी ऐसा मालूम होता है किन्तु तो भी इस युद्ध का राज्य प्रकरण से निर्लिप्त रखना ही अच्छा है और इसलिए यदि न्याययुक्त समझौता हो और थोडा सा अडचन का कारण रह गया हो तो तीसरी पारटी का बीच मे पड जाने म तो ठीक समझता हू।

आशा है, आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। मेरे योग्य सेवा लिखें।

विनीत
घनश्यामदास

सेवा म
परम पूज्य महात्मा गाधीजी,
अहमदाबाद।

२४

सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती
२६-८-१९२८

प्रिय घनश्यामदासजी,

एक रोचक पत्र भेजता हूं। आपने 'यंग इंडिया' में बापू का यूरोप जाने का तो, 'सावधान' शीर्षक लेख पढ़ा ही होगा। अपने लेख में बापू ने जिस दम्पति का जिक्र किया था, वे ही हैं जिनकी भारत-यात्रा के निमित्त बापू ने जुगलकिशोरजी से रुपया भेजने का अनुरोध किया था। पहले तो बापू ने उनके पत्र की नकल जुगलकिशोरजी को ही भेजने को कहा था, पर बाद को कुछ सोचकर बोले कि आप भी इन भद्र मित्रों के बारे में जानकारी हासिल करें तो अच्छा है।

स्टेंडेनथ दम्पति १७ सितम्बर को बम्बई पहुंच रहे हैं।

आपका,
महादेव देसाई

२५

कलकत्ता
२७ अक्टूबर, १९२८

प्रिय महादेव भाई,

मुझे भारत-सरकार के शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग और भूमि विभाग से पता चला है कि राइट ऑनरेबल श्रीनिवास शास्त्री ने सुझाव दिया है कि हम इस वर्ष दक्षिण आफ्रिका के कतिपय पत्रकारों को न्योतना चाहिये। इस निमंत्रण का उद्देश्य उन्हें भारत की प्राचीन संस्कृति से परिचित तथा यहां की अन्य स्थितियों से अवगत कराना है, जिससे उनके देश में हमारे कार्य को सहायता मिले। ३६,०००) के खर्च का अनुमान है। यदि उन्हें बुलाना है तो आगामी शीत ऋतु में ही बुलाना ठीक समझा जा रहा है। भारत-सरकार ने इस बारे में मेरी सम्मति जाननी चाही है। पता नहीं, गांधीजी को इस सुझाव का पता है या नहीं।

यदि उन्हें पता न हो, तो यह मामला उनके सामने रख देना और मुझे बताना कि उनका क्या विचार है। विषय बहुत आवश्यक है, इसलिए यदि सम्भव हो तो उत्तर तार द्वारा देना।

मैंने तुम्हें एक पत्र सिमला से और एक पत्र गांधीजी को कलकत्ता से लिखा था। आशा है दोनों पहुंच गये होंगे।

गांधीजी वर्धा आकर ठहरेंगे तो मैं भी आने की आशा करता हूं। आशा है, गांधीजी का और तुम्हारा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक होगा।

हार्दिक सद्भावनाओं के साथ

तुम्हारा
घनश्यामदास

२६

तार

अहमदाबाद
३० अक्टूबर १९२८

घनश्यामदास बिड़ला
बिड़ला पार्क
कलकत्ता

महादेव बारडोली है। आम तौर से दक्षिण आफ्रिका के पत्रकारों का आमंत्रित करना ठीक ही है।

—गांधी

२७

तार

महात्मा गांधी
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती

कृपया लिखिये वर्धा कब जा रहे हैं?

—घनश्यामदास

बिड़ला ब्रदर्स
६-११-२८

२८

तार

अहमदाबाद
१२ नवम्बर, १९२८

घनश्यामदास बिड़ला
बिड़ला पार्क
कलकत्ता

वर्धा कल सुबह जा रहा हूं। आपके और मालवीयजी के उत्तर की अब वर्धा में प्रतीक्षा करूंगा। इस दुर्भाग्य[1] को ध्यान में रखते हुए यदि वर्धा आना सम्भव हो तो आने में जल्दी करना।

—गांधी

१ लाला लाजपतराय का निधन

२९

कलकत्ता
८ दिसम्बर, १९२८

पूज्य महात्माजी,

आप जानते ही हैं कि रेवरेण्ड हर्बर्ट एण्डरसन अखिल भारत मद्यपान निषेध संघ के अवैतनिक महासचिव हैं। मैं कुछ समय से उनके साथ पत्र व्यवहार करता आ रहा हूं। वह भारत छोड़नेवाले हैं। वे अपने यहां रहते अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करना चाहते हैं जिससे वह काम का भार उसे अपने हाथों से सौंप सकें। सुझाव दिया गया है कि इस स्थान के लिए सबसे अधिक उपयुक्त श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी हैं और यह समझा जा रहा है कि यदि उन्हें यह दायित्व उठाने को राजी किया जा सके तो इससे मद्यपान-निषेध आन्दोलन को बहुत बल मिलेगा। यह आन्दोलन हर प्रकार की सहायता का अधिकारी है। क्या मैं आशा करूं कि आप श्री राजगोपालाचारी को इस संघ के महासचिव का पद स्वीकारने के लिए राजी कर सकेंगे?

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

३०

वर्धा
१० १२ २८

प्रिय महोदय

निम्नलिखित पडित मालवीयजी के उस तार की नकल है जो उन्होंने बापू को भेजा था

६ १२ २८

मैं समझता हू कि सारे दलो को मिलकर पाच लाख का एक ही लालाजी स्मारक फण्ड खोलना चाहिए। यदि यह घोषणा कर दी जाय कि निधि का प्रथम उपयोग लालाजी द्वारा स्थापित लोक-सेवक सघ और अस्पताल को दृढ नीव पर रखने म और द्वितीयत स्वराज्य सम्बन्धी प्रचार काय मे किया जायेगा। सहमत हो तो अवश्य कारवाई कीजियेगा।

—*मदनमोहन मालवीय*

मेरी धारणा यह है कि मैंने इस तार की नकल आपको बहुत पहले भेज दी थी। फिर मुझे अपनी स्मरण शक्ति पर सदेह होने लगा और अब मैं एहतियात के बतौर यह नकल भेज रहा हू। बापू इस तार के सम्बन्ध मे आपकी राय जानना चाहते हैं।

बापू के साथ आपकी बातचीत के दौरान मैंने आपको बताया था कि मैं लालाजी स्मारक कोष के धन दाताओ की सूची की प्रतीक्षा म हू। मैंने यहा सेठ जमनालालजी के दफ्तर मे तथा अपने आश्रम म और 'यग इडिया' के दफ्तर म भी कहला भेजा था कि वे कोष के निमित्त रकम उनके दाताओ की सूची के साथ आपके पास भेज दें। कृपा करके एक सयुक्त सूची अपने दफ्तर म तैयार करा लीजिये और उसे यहा भेज दीजिये, जिससे उसे यग इडिया' म प्रकाशित किया जा सके।

बापू इधर कई दिनो से फल और बादाम ले रहे हैं। दो ही दिनो मे उनका एक पौंड वजन बढा है।

आशा है आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

सदभावनाओ के साथ

आपका,
ए० सुब्बया

३१

११-१२ २८

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र राजगोपालाचारी के बारे म मिला है। सूचना मुझको प्रिय है। राजाजी का शरीर इस काम को पहुच सकेगा या नहीं यह कहना मुश्किल है। मै लिखता तो हू।

अब स्वास्थ्य कसा है ?

आपका,
मोहनदास

मगलवार
वधा

श्रीयुत घनश्यामदास बिडला
८, रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता।

३२

भाई घनश्यामदासजी

लालाजी के बारे म खत मीला है—खादी का काम चल रहा है जानकर मुझको आनन्द होता है इस बार म सतीश बाबु का खत आया है। आपको पढ़ने के लिये भेजता हू। वापिस भेजने की आवश्यकता नहि है।

आपका
मोहनदास

गुरुवार
१९२८

३३

खादी प्रतिष्ठान
मोदपुर (कलकत्ते के निकट)
१० दिसम्बर, १९२८

बापू

आपका ६ तारीख का पत्र मिला। प्रदशनी क अधिकारियो ने मुझे कोई पत्र नही लिया है और मैं उसकी कमेटी म अगस्त म आपसे मिलन स पहले ही इस्तीफा दे चुका था। कमेटी एक स्थायी खद्दर प्रदशनी का आयोजन कर रही थी और यदि आप अथवा अखिल भारतीय चरखा सघ उसस अलग रह तो इसके लिए भी तैयार थी। उसके एजेंटो ने देश का दौरा किया और बगाल बिहार, आध्र आदि अचलो से सघ से असम्पक्त खद्दर इकट्ठा किया। कमेटी न कताई की प्रदशनी का भी इसी ढग म आयोजन किया। अब चरखा सघ भी प्रदशनी म भाग ले रहा है पर उसका यह अतिरिक्त आयोजन होगा और पुराने प्रबध का उस पर कोई प्रभाव नही पडेगा।

कल आपका पत्र यहा पहुचने के पहले मैं महावीरप्रसादजी से मिला था। उन्ही स दुकान की बाबत पता चला। खद्दर-समुच्चय के सम्बन्ध म मैं अपने विचार प्रकट करता हू

१ मूल्य घटाने के लिए खद्दर समुच्चय

यदि अन्यप्रातो के खद्दर के मूल्य म कमी करना अभीष्ट हो तो बाहर के खद्दर का स्थानीय खद्दर के साथ मिलाने से इसकी सिद्धि हो सकती है। परन्तु समुच्चय करनेवाले को इस बात की गारण्टी देनी होगी कि जिस प्रान्त म वह यह कार बार करेगा वहा के सारे खद्दर की बिक्री की जाय। यदि ऐसा न हुआ और केवल समुच्चय करनेवाले की दुकान पर स्थानीय खादी ही सस्ते दामो पर बेची गई जबकि अन्य दुकानो पर स्थानीय खादी ऊचे दामो पर बिकी तो इसका बाजार पर बुरा प्रभाव पडेगा और खद्दर के प्रचार-काय म विघ्न पडेगा। पर आरम्भ म यह समुच्चय छोटे पैमाने पर ही होगा। समुच्चय करनेवाला जिस प्रान्त म इसका प्रारभ करेगा उसमे कीमतें गिराने का अभीष्ट सिद्ध नही होगा।

२ स्थानीय और बाहर के खद्दर के जमा हुए स्टाक को निकालने के लिए समुच्चय

इस मामले म खद्दर या समुच्चय करनेवाला अधिक-से अधिक माल निकालने की चेष्टा करेगा पर स्थानीय बाजार के ऊपर इसका कोई प्रभाव नही पडेगा। ऐसी अवस्था म स्थानीय दर को ही स्टेण्ड दर माना जायेगा, और स्थानीय तथा बाहर की खादी कम या अधिक मूल्य पर खरीदने के बाद उसे स्थानीय खादी के साथ मिलाकर उसी निश्चित दर पर बेचा जायेगा। उदाहरण के लिए यदि समुच्चय करनेवाला स्थानीय खद्दर को निकालने के काम मे सहायता देना चाहेगा और साथ ही अन्य प्रान्ता मे इकट्ठा किया हुआ खद्दर भी बेचना चाहेगा तो वह उडीसा का महगा खद्दर और विहार या अजमेर या तमिलनाड का सस्ता खद्दर एक जगह इकट्ठा करके बगाल के खद्दर के साथ स्टेण्डड दर पर बेचेगा।

३ किसी केन्द्रीय दुकान द्वारा हानिकर समुच्चय-काय

किसी खद्दर तयार करनेवाले प्रान्त म वहा की सारी खादी को खपान का उत्तरदायित्व लिये बिना सब प्रान्ता का खद्दर समुच्चय करना हानिकर सिद्ध हो सकता है। उदाहरण के लिए यदि जेराजानी सारे भारत की बढिया-से-बढिया खादी खरीदकर बम्बई म स्टेण्डड दर पर बेचना शुरू करगा तो उसका हानिकर प्रभाव नही पडेगा क्याकि वहा स्थानीय खादी का अभाव है पर यदि उसने वैसा ही धधा कलकत्ते मे भी शुरू किया तो इसका यहा की खादी प्रस्तुत करनवाली सस्थाआ पर अवश्य हानिकर प्रभाव पडेगा क्योकि यहा कवल स्थानीय खादी की ही खपत होनी है और इस प्रकार स्थानीय उद्योग को बढावा मिलने की बजाय उसका विकास रुक जायेगा।

मरी राय मे कलकत्ते म खादी भण्डार खालने के मामले म ऊपर लिखी दूसरी श्रेणी की नीति ही एकमात्र ऐसी नीति है जिसे आपकी और बिडलाजी की सहायता मिलनी चाहिए।

काय दुरूह है। कुछ एक भण्डारा म इस समय अच्छी और बढिया खादी तथा घटिया किस्म की खादी सारे भारत से बटारन की जो प्रवत्ति है उसका प्रतिरोध करना कठिन है। बढिया खादी क उत्पादन स अधिक माग के फलस्वरूप आध्र और विहार के कारणी अचल म नकली खादी प्रस्तुत की जा रही है।

लक्त्ते म भी बढिया खादी की माग के उत्तेजन का परिणाम भी बुरा ही होगा।
डलाजी इस प्रवृत्ति के निराकरण के लिए एक समिति का गठन करें तो वडी
ात हो।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप २३ तारीख को पधारेंगे और जमना
ालजी के यहा ठहरेंगे।

मेरे प्रणाम,
सतीश

१९२९ के पत्र

कलकत्ता
२-१ २६

प्रिय घनश्यामदासजी,

डा० भास्कर पटेल एम० डी० (जमनी) मेरे प्रगाढ मित्र है। मैं उन्हे आपसे खुद मिलाना चाहता था पर मेरे पास समय नही था, और वह आखिरी क्षण तक झिझकते रहे। देखता हू कि उन्हे अब आपके पास स्वय लाने के लिए मेरे पास समय नही है।

आप जो सनेटोरियम खोलने की सोच रहे है यह आपसे उसी की बाबत बात करना चाहते हैं। मैं इस विषय से बिलकुल अनभिज्ञ हू पर यदि आपको किसी क्षेत्र के लिए एक सुयोग्य और सुदक्ष चिकित्सक की आवश्यकता हो तो आपको इनसे अच्छा आदमी नही मिलेगा।

इन्होने जमनी के कई अस्पतालो का अनुभव प्राप्त किया है। यह हम्बग के ट्रापिकल मेडिकल अस्पताल के हाउस सजन रह चुके है और ब्लक फारेस्ट की सीमा पर स्थित सेंट ब्लेसियन के सेनेटोरियम म भी सहकारी चिकित्सक रह चुके हैं।

हमारी मित्रता दस वप पुरानी है। जहा तक चरित्रबल और दक्षता के प्रमाण पत्रो का सम्बन्ध है, यह स्वत ही सबसे बडी सिफारिश है।

आपका,
महादेव

२

तार

महात्मा गाधीजी
सत्याग्रह आश्रम, साबरमती
अहमदाबाद

मालवीयजी को लालाजी स्मारक फण्ड का मसविदा पसद है। असारी यहा नही हैं—मैं सहमत हू।

—घनश्यामदास

बिडला ब्रदस,
कलकत्ता
५ १ २९

३

कलकत्ता
७ जनवरी १९२९

पूज्य गाधीजी,

जगन्नाथजी ने एक वक्तव्य भेजा है जिसे मैं आपके पास भेजता हू। मालवीयजी इसकी विषय-वस्तु स सहमत हैं पर उन्हे यह पसद नही है कि पुरुषोत्तमदासजी को सोसाइटी म जाने को राजी किया जाए। उन्हे उनके परिवार की बडी चिन्ता है और वह यह नही चाहते कि टण्डनजी और अधिक बलिदान करें। पर इसका इस अपील से कोई वास्ता नही है, इसलिए आपने जो मसौदा तैयार किया है उसे ज्या का त्यो प्रकाशनाथ दे दिया जाए। डा० असारी यहा नही थे इसलिए उनकी सलाह नही ली जा सकी।

खादी की माग जोरों पर है रोज ३००)रु० की बिक्री होती है अडचन सप्लाई की है। यदि ग्राहक किसी खास किस्म की खादी चाहे तो उन्ह किसी अन्य किस्म की खादी से सतोष नही होता। पर महावीरप्रसादजी स जितना कुछ करते बनता है उतना कर रहे हैं। वह मेरे साथ बराबर सम्पक बनाए हुए हैं, यद्यपि मैं तफसील म तो नही जाता, पर वसे देखभाल करता रहता हू।

मैं खादी भण्डार के भविष्य के बारे म बहुत ही आशान्वित हू। मुझे अचरज नही होगा, यदि एक दो साल बाद हम कलकत्ते मे २ ३ लाख रुपये की खादी बेचने लगें।

रही डेयरी फाम की बात, सो इस दिशा मे प्रगति ठप्प है। सबसे बडी अडचन उपयुक्त जगह की है, पर दो एक महीने मे हम कोई अच्छी जगह खरीद लेंगे, और काम बखूबी चलने लगेगा। ये दोनो काम अगले कुछ महीना तक शायद कुछ मद गति से चलें क्योकि मैं असेम्बली के अधिवेशन म भाग लेने जा रहा हू। पर मुझे आशा है कि इससे बाजार म कोई रुकावट नही आयेगी।

मैं आपके बादाम क दूधवाले प्रयोग के परिणाम की बडी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहा हू। आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक है।

विनम्र प्रणामो के साथ,

आपका स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

४

सीतानगरम
८ मई, १९२९

भाई घनश्यामदासजी,

क्या आप बगाल प्रातीय काग्रेस कमटी के खाता-पत्रा का आडिट करने के लिए किसी प्रसिद्ध प्रमाणित आडिटर की व्यवस्था कर सकते हैं ?

इस पत्र के साथ पडित जवाहरलाल नेहरू की चिट्ठी भेज रहा हू।

आपका,
मो० क० गाधी

सलग्न—१

श्री घनश्यामदास बिडला,
८, रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता

५

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
५२, हीवेट रोड,
इलाहाबाद
५ अप्रल, १६२६

महात्मा गाधी
मार्फत आंध्र प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी,
७ थम्भु चेटटी स्ट्रीट
जी० टी० मद्रास

प्रिय महोदय

मैं आपको याद दिलाऊ कि आपने उत्कल आध्र और तमिलनाड की प्रान्तीय कमेटियो का निरीक्षण करन का वचन देने की कृपा की थी। मैंने अखिल भारतीय चरखा सघ के आडिटर द्वारा आध्र और तमिलनाड का हिसाब किताब आडिट करने का प्रवध कर लिया है, पर अभी उत्कल के लिए कोई ऐसा प्रबन्ध नही हो सका है। मुझे बडी प्रसन्नता होगी यदि आप उस प्रान्त की कमेटी के आडिट का भी प्रवध करा दें।

क्या मैं यह भी याद दिला सकता हू कि बगाल प्रान्तीय काग्रस कमेटी के हिसाब किताब का भी आडिट होना है? आपने यह आश्वासन देने की कृपा की थी कि आप इसका प्रबन्ध कर देंगे।

भवदीय,
ज० नेहरू
मत्री

६

कलकत्ता
१० मई, १९२९

पूज्य महात्माजी,

आपका पत्र मिला। एस० आर० बाटलीबॉय एंड कम्पनी, और बाटली बाय एंड पुरोहित नाम की दो प्रतिष्ठित आडिट कम्पनियां है। मैं इनमें से किसी से भी आडिटिंग का काम करा सकता हूं, और निःशुल्क भी करा सकता हूं—पर अच्छा यही रहेगा कि उन्हें इस काम को गम्भीरतापूर्वक करने के लिए फीस दी जाय, चाहे वह नाम मात्र ही हो। आपके आदेश की प्रतीक्षा करूंगा।

आपका स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

७

११-५-२९

भाई घनश्यामदासजी,

लालाजी स्मारक के बारे में आपके तरफ से पत्र आया है। लाला जसवंत-राय के पसे हाल के ही लीये होंगे। इस बारे मे जितने पत्र आये हैं सोसायटी को भेजना उचित समझता हु और तो इस बार मे लीखने का नहि है।

इस वखत मैं खोराक का एक प्रयोग कर रहा हु। इसको तीन दो दिन हुए हैं इसलीये कुछ कह नही सकता। परंतु एक सज्जन मीला है जिसने कहा है यह प्रयोग बहात सफल होता है। इसका रहस्य तो यह है कि सब खोराक वगर पकाया हुआ खाना चाहिये।

सीतारामजी का खत मुझे मिला था उत्तर दीया है।

आपका,
मोहनदास

८

२८-५-२६

भाई घनश्यामदासजी,

'फारवड ने क्या लिखा था इमके साथ मेरे लेख का कोई सबध न था। फारवड को जो सजा दी गई है वह निदय, राक्षसी है उसमे कोई सदेह नहि है। 'फारवड' ने वहादुरी बताई है इसम कुछ शक मुझको नहि है।

कच्चे अनाज का प्रयोग चल रहा है। ११ जुन को साबरमती छोडूगा।

आपका,
मोहनदास

९

साबरमती,
उद्योग मदिर
२ ६-२६

भाई घनश्यामदासजी,

'फारवड के बारे मे मैं समझा। जाहरी जीवन मे आक्रमण तो होता ही रहेगा, परन्तु हमारे तो न्याय ही तुलना है। सुभाष की हिम्मत स्तुति योग्य है।

आपका,
मोहनदास

१०

३ ६-२९

भाई घनश्यामदासजी

आपका खत मीला है। मैं दुवल हो गया हु यह वात सच्च है। परतु शरीर का कुछ नुक्सान देखने मे र्नाह आता है। मैं सावधानी से प्रयाग कर रहा हु। आप चिता न की जाय। ऐसे प्रयोग मेरे जीवन का एक हिस्सा है मरी आत्मशाति आलोकीत के लिये आवश्यक है। अपनी मर्यादा म रहकर जिदा रहने की कोशीप करता हु। परतु मुझे यह भी विश्वास है कि जीवन और मरण हमारे हाथ मे र्नाह है।

केशु के वारे म आपका अभिप्राय सुनकर मुझे अच्छा लगता है। उसके पिता ने उस पर खूब परिश्रम उठाया था और उसके पास से हम सव खूब सेवा की आशा रखत हैं। उसकी स्वतन्नता मे कुछ भी रुकावट मे र्नाह डालना चाहता हु। आपके पास उसके होने से मैं निश्चित हु।

आपका,
मोहनदास

११

दुबारा पढ़ नहीं सका हु

आश्रम
३० ६ २९

भाई श्री घनश्यामदासजी,

आपके तीन पत्र मेरे सामने हैं। इस सृष्टि सौंदय से भरे हुए प्रदेश म एकात स्थल मे वरफ से ढके हुए पहाडो के सानिध्य मे रहन का मुझे कोई अधिकार न था यदि मुझको कोई खास काम न रहता तो। खास काम था। गीता के अनुवाद की सुधारणा जो वर्षं म अधुरी रही थी मैं उसे एकात मे ही पूरी कर सकता था। इस निमित्त को लेकर मैं यहा बैठ गया। इसलीये जब तक यह काय पूरा न हो जाय दूसरा काय जितना मुल्तवी रख सकता था मुल्तवी कर दीया। इसलीये

आपको उत्तर इसके पहले न द सका। गीता का काम समाप्त हो गया है।

अब केशु के बारे मे। उसके पिता की और मेरी आशा तो यह है की केशु अत म आश्रम-जीवन ही पसद करेगा और खादी काय को अपना जीवन अर्पित करेगा। परतु उस पर किसी प्रकार का दबाव डालना मैं नहि चाहता हु। अब तो उसको *आपके सिपुर्द कर दीया है जिससे उसका भला हो और जिसम वह सम्मत होवे।* ऐस सब काम उसके पास से आप लें और उसको तयार करें। आपका ही लडका है ऐसा समझकर उसको तयार करें।

आपन बहोत नवयुवको को तैंयार कीये हैं और बिरला पेढी के बहोत से कामो की बुनियाद आप ही के हाथ से हुई है ऐसा मैंन सुना था और मैंने माना है।

खादी के बार मे क्या कहु जब खादी बिक्री मे आपकी बुद्धि का उपयोग करन का मौका मिला तो खादी ही बिक गई फिर भी भरावा तो होनेवाला है ही। तब आपकी शक्ति का उपयोग कर लुगा। आज तो दूकान चले ऐसी चलने दो। 'बेमार्गी' खादी का यह तो अथ नहि है ना कि मैंने बेइज्जत भेजी ? अब प्रश्न पदाइश का है यह सच्च है और इसमे मुझको आपका उपयोग बहोत नहि मील सकता है। उसकी कोशिश हर तरह हो रही है।

दुग्धालय का क्या हुआ ?

मैंने उपवास नही किया है। मत्यु को जब से मैं परम मित्र समझने लगा हु तब से मैंन मत्यु के कारण उपवास बद कर दीया है। मगनलाल और रसिक की मत्यु के समय भी उपवास नही कीया था। मत्यु को अब चोट लगती ही नहि है या कहो बहोत कम।

कच्चा खाने का प्रयोग चल रहा है।

Faddist का अथ गूजराती मे धुनी हो सकता है। सनकी शब्द से मैं अपरिचित हू। चक्रम तो हरगीज नहि चल सकता है।

हिंदी नवजीवन म आजकल मैं प्रति सप्ताह कुछ लीखने का प्रयत्न करता हु। यदि देखते नही हैं तो देखीयो और पसद और भाषा के बारे म कुछ सूचना दन जसा लगे तो दीजिय।

आपका,
मोहनदास

मैं ५ जुलाई को दिल्ली पहोचुगा।

१२

तार

१७ ८-२६

गाधीजी के सेक्रेटरी,
साबरमती
अहमदाबाद

गाधीजी के स्वास्थ्य के बारे मे बडी चिता है। पूरे विवरण का तार दीजिए। उन्हें कुछ दिना के लिए केवल दूध पर रहने के लिए राजी कीजिए जिससे उनका वजन उतना ही हो जाए।

—घनश्यामदास बिड़ला

८, रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता

१३

८ रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता
१७ अगस्त, १९२६

प्रिय महादेव भाइ,

आज सुबह के पत्रो मे गाधीजी के स्वास्थ्य-सम्बन्धी समाचार से मैं बहुत व्याकुल हो रहा हू। मै खतरे की आशका बहुत दिनो से कर रहा था और मैंने आरम्भ म ही चेतावनी दी थी। पर तुम जानते ही हो वह कितने हठी हैं और उनम पण आना कभी कभी कितना मुश्किल हो जाता है। मुझे अनपके अन्न के विरुद्ध कुछ नहीं कहना है पर मैंने कहा था कि इस प्रकार के अव्यावहारिक प्रयोग के लिए गाधीजी का शरीर कितना अनुपयुक्त है। हर्ष की बात है कि उन्होंने अपने प्रयोग का अत कर दिया है। अब मैं उनसे साग्रह अनुरोध करूगा कि वह अभी कम-से-कम दो-तीन महीने दूध और फलो पर ही रहें। इधर मेरा वजन भी कम हो रहा था—इसलिये मैंने मैकफडेन की प्रणाली अपनाकर दो महीने केवल दूध ही

लिया। मैं ६ सेर दूध पी लेता था। फलस्वरूप मेरा वजन दो महीने मे १४ पौंड बढा। मेरे कुछ मित्रो ने भी यह प्रणाली आजमाइ है और नतीजा बहुत ही बढिया हुआ है। इसलिए मैं तुमसे आग्रहपूर्वक कहूगा कि गाधीजी का कुछ हफ्ते दूध पर रहने को राजी करो। उनके स्वास्थ्य की बाबत मुझे बराबर लिखते रहना। आशा है, अब उनका स्वास्थ्य सुधर रहा है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेव भाई देसाई,
साबरमती आश्रम,
अहमदाबाद।

१४

तार

अहमदाबाद
१७ अगस्त, १९२९

घनश्यामदास बिडला,
८ रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता।

तार मिला सग्रहणी का साधारण दौरा था कमजोरी बहुत है पर कुशल डाक्टर की देखरेख म हू—चिता अकारण है—अनिवार्य होने पर बकरी का दूध पिऊगा—बहस्पतिवार से कच्चा अन्न लेना बन्द कर दिया है।

—गाधी

१५

तार

सावरमती

१६ अगस्त, १६२६

घनश्यामदास बिडला,
८, रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता।

कल से दही लेना शुरू किया है—चिंता की कोई बात नही।

—गांधी

१६

२३ ८ २६

भाई घनश्यामदास,

आपका खत मीला है। आप मेरी चिंता छोडें। खाते हुए भी तो आदमी बीमार होता है तो मैं यदि सत्य की खोज में बीमार भी हो जाऊं तो क्या हुआ? आज तो काफी दही लेता हुं इतना आपको कह दुं की दूध दही भी एक हद तक ही चलते हैं। दूध दही मनुष्य का स्वाभाविक खोराक कभी नहिं है। जो दलील दूध के लिये आप देते हैं, वही बीफ टी के लीये और शराब के लीये सुना है। क्योंकि सबम कुछ न कुछ शारीरिक लाभ मुद्दत के लिये मिलते हैं। परन्तु शारीरिक लाभ सबस्व कच्चे अनाज से विषय शान्ती का जो अनुभव इतने लोगो को हुआ है, वह दूध का अनुभव नहिं था। जब मैं फल पर चार बरस तक रहा था तब रोज ४० माइल तक चलता था और तब भी मुझको यही शाती का अनुभव था। परंतु इस चीज को ज्यादा दोहराना नहिं चाहता हु, मेरे प्रयोग में केवल शारीरिक दृष्टि नहिं है। मैं जल्दी से कच्चे अनाज पर नहिं जाऊंगा जल्दी मे दूध नही छोडूंगा। अब तो बहोत डाक्तर इस प्रयोग मे रस ले रहे हैं बहोतो ने साहित्य भेजा है। मैं प्रयोग करूंगा तो हरिभाई डाक्तर के निरीक्षण के नीचे होगा।

आपका,
मोहनदास

१७

भाई घनश्यामदासजी,

बगाल कागरस कमिटी आडिट का क्या किया ?

आपका,
मोहनदास

२६ ८ २९

श्रीयुत घनश्यामदास बिड़ला,
बिड़ला काटन स्पि० वि० मिल्स लि०,
सब्जीमण्डी,
दिल्ली।

१८

स्नोव्यू शिमला
७ सितम्बर १९२९

पूज्य महात्माजी

आपका २६ तारीख का पोस्टकाड रिडायरेक्ट होकर यहा आया। मैं एसेंबली मे भाग लेने के लिए शिमला कल प्रात काल पहुचा। आपने अपने पोस्टकाड म बगाल काग्रेस कमेटी के आडिट का जो उल्लेख किया है मो कुछ भ्रान्ति हुई है। मुझे याद है कि आपने मुझे आडिट के बारे म कोई निश्चित निर्देश नही दिया था। आपसे इस बारे म चर्चा अवश्य हुई थी और मेरा खयाल है कि मैंने आपस कहा था कि मैं आडिट का काम अपने एक आडिटर से नि शुल्क करा दूगा पर मुझे याद नही पडता कि आपने मुझ ऐसा करने का निश्चित आदश दिया हो। मुझे जो निर्देश मिलते हैं उनका पालन करने के मामले मे मैं बहुत सतक रहता हू और

यदि मुझे यह पता चले कि इस बार मैं चूक गया तो मुझे बडा आश्चर्य हो। जो हो, कृपया लिखिये कि क्या इस काम को अभी हाथ मे लेना है, जिससे मैं आडिटर को तुरत लिख सकू। कृपया यह भी बताइए कि इसके लिए आडिटर किससे मिले।

आपका
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधी
साबरमती।

१६

आगरा
१२ ६ १६२६

भाई घनश्यामदासजी,

आपका २ सप्टेम्बर का पत्र मुझको मिल गया था। मेरा तो ऐसा ख्याल है कि आन्ध्र के दौरे के समय आपको लिखा था बगाल काग्रेस कमिटी के आडिट करवा देने के बारे म मेरी आशा तो ऐसी है कि आपके आडीटर वगरह की निरीक्षण का काम कर दगा। बगाल प्रातीय काग्रेस कमिटी के मत्री को लिखे। मैं मत्री को आज ही लिखता हू।

आगरा म मुझको काफी आराम मिला। स्वास्थ्य अच्छा है। बकरी का दूध, दही और फल पर रहता हू। रोटी खा सकता हू परन्तु खाने की कोशिश नही की है। आपको और मुझको शाति मे बैठने का कुछ समय मिले, जैसा वर्धा मे मिल गया था तो खान पानादि के विषय मे आपकी विचारश्रेणी जानना चाहता हू। दुबलता या अयोग्यता के कारण आदश खान पानादि न करे यह एक बात है। और आदश को समझ लेना दूसरी बात है। ऋषि लोगो ने खान पानादि के आदश विचार को काफी सिद्ध किया है परन्तु खान पानादि वस्तुओं का ऐसा कोई तीनो काल स अबाधित निणय कर लिया है ऐसा मेरी बुद्धि स्वीकार नही करती है। परतु मैं अपनी प्रयोग म इस समय तो हार गया हू इसलिए यह विषय तात्कालिक उपयोग का नहि रहा है।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। महादेवलालजी ने मुझको जुलाई मास मे एक

खत लिखा था उसमे आपके ऊपर आक्षेप थे। मैंने उनको उनकी पत्र की अयोग्यता बतलाई और उस पत्र को आपको भेजने की सम्मति मागी। अयोग्यता यह थी उस पत्र के विषय मे महादेवलालजी न पहले आपसे चर्चा न की। उत्तर म उन्होने आपको पत्र भेजने की सम्मति दी थी। पीछे मैं दौरे म रहा या तो कुछ और कारण से पत्र रह गया। इतने म महादेवलाल आश्रम म आ गये। अब तो जमनालालजी के साथ घूम रहे है। वह नि स्वार्थ प्रतीत होते है। अब मैं उनका पत्र आपके पास भेज देता हू। अवकाश मिलने से उसको पढें और अवकाश मिलने से ही उत्तर भेजें। उत्तर भेजने के समय महादेवलाल के पत्र को भेज दें।

आपका,
मोहनदास

२०

आजमगज
३ १० १९२९

चि० बसन्तकुमार,[1]

तुम्हारा खत और सुत पाकर मुझे बहोत आनन्द हुआ। तुमारे लीये सुत अच्छा माना जाय। अब मेरा सदेश यह है क्याकि कातने का आरम्भ कर दीया है उस यज्ञ समझकर चलाते रहना और नित्य दरिद्रनारायण अर्थात हमारे कगाल भाई-बहनो का चिंतन भी करना।

मोहनदास के आशीर्वाद

१ मेरा कनिष्ठ पुत्र —घ०

२१

श्री हरि

अक्टूबर १६२६

परम पूज्य महात्माजी,

चरणो मे सप्रेम प्रणाम। महादेवलाल का पत्र आपने भेजा वह पहुच गया है। मुझे उनके ऐसे विचारो का पता था। मैंने नादान इसलिये कहा था कि उसने मुझसे न केवल इन बातो का जिक्र ही न किया किन्तु मेरे सामने उसने अपना भक्तिभाव भी प्रकट किया और मदरास के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के नाम मुझसे सिफारिशी पत्र भी ले गया था, जहा कि वह नौकरी करना चाहता था। मैंने सिफारिशी पत्र भी दे दिया, यद्यपि मैं जानता था कि वह लोगो के सामने मेरी निंदा करता था और मेरे सामने आदर दिखाता था। किन्तु मैंने अब तक उसे सहायता ही की है। मिल को उसने ग्लानि के मारे नही छोडा। मुझे उसने लिखा भी और कहा भी कि मैं Chemist (केमिस्ट) हू मुझे Chemist (केमिस्ट) का काम मिल मे दे दो। एक (laboratory) प्रयोगशाला बनवा दो। किन्तु मैंने कहा ऐसा काम मैं नही दे सकता, इसलिये उसने मिल छोडी या तो कम से कम मुझसे उसने ऐसा कहा। irresponsible (गैर जिम्मेदार) इसलिए कहा था कि अखबार मे उसने शुद्ध हेतु से किसी के कहने से एक विधुर विवाह करने वाले के खिलाफ एक लेख लिखा था जिसमे कितनीक बातें झूठ थी। मैं नही समझता वह मुझसे माफी क्यो मागे ? उसने मेरा कोई बुरा नही किया। मैं उसे नादान अब भी मानता हू और जिम्मेवारी कम पाता हू। और इससे मुझे निराशा भी हुई।

मिल के बारे मे उसके पत्र मे काफी सच्चाई है किन्तु निर्णय गलत है। मैंने जाल बिछा रखा है या धोखा देता हू यह असत्य है। धोखा देने की आदत तो मुझमे नही ही है ऐसा मैंने तो समझ रखा है आप अपना निर्णय स्वय करें। मेरे पास ४ मिलें हैं। २ मे मुझे सचालक ऐसे मिले जो मेरी प्रवृत्ति को समझकर काम करते हैं जैसे ग्वालियर और दिल्ली। ग्वालियर तो जमनालालजी भी हो आये हैं और मैंने लोगो से यही सुना है कि उन्हे मजदूरों की हालत मकान इत्यादि देखकर सतोष हुआ। ग्वालियर, दिल्ली की हालत हरिभाऊजी भी जानते है। Jute mills (जूट मिल्स) मे जो मारवाडी मनेजर है उदार है, खादी पहिनता है सरल है किन्तु कुछ सनकी भी है। विचारो का वचित्र्य है। ज्यादे काम करने की बात वर्धा मे आपके सामने चली थी। मैं कई बार वध भी कर चुका किन्तु मनेजर के असहयोग

के कारण मेरी जान-अनजान दोनो म बीच-बीच मे ज्यादे काम होता रहा है। यह भी कारण था कि जहा कम काम करना शुरू किया मजदूर ज्यादे काम करने के लिये आग्रह करन लगते थे और मजदूरो की कमी भी हाने लगती थी। अब तो मैंने एक मास पहले मजदूरा की सभा करके उनसे राय ल के ६० घटे तय कर दिया है। मजदूरी ८ प्रतिशत तक बढा दी है इतनी बढा दी है कि जितनी कल कत्ते की किसी मिल म नही है। मजदूरो के घर शुरू से ही बनवाने मे मैंने आना कानी की और कारण यह था कि मेरी एसी समझ थी कि Barrack life (बैरक लाइफ) की अपक्षा ग्राम्य जीवन म उन्ह अधिक सुख रहेगा। जब मिल छोटी थी तब यह था भी ठीक। किन्तु अब मिल बडी हो गई इसलिये मेरा विचार भी बदला और ७०० नये घर १२/९ का कमरा एक एक बरामदा, अलग अलग रसोईघर प्राय बन चुके हैं। बडा Saptic tank (सेप्टिक टक) बन चुका है। अलग अलग घरा के लिय अलग अलग टटिटयो की तजवीज भी की जा रही है जो शायद ३ मास मे समाप्त हो जायेंगी। पानी के लिय ५ Tube wells (नल कूप) खुदवा चुके सबम नमकीन पानी निकला। इसलिए तालाब के पानी का उपयोग होता है। पानी अच्छा है किन्तु इससे अच्छा प्रबध हो जाय तो ठीक, एसी मेरी राय है और बडे filter (फिल्टर) की तजवीज हो रही है। काम करने वाले अफसर या मजदूर मुझको कैसा चाहते हैं, यह आप सभा करके पूछें। बच्चे Factory Act (फैक्टरी ऐक्ट) के खिलाफ काम मे लगाये जात है यह सच नही है। यह तो मैंने आपकी जसी स्थिति है, वह लिख दी है किन्तु मैं नही समझता कि मैं अपने आपको किसी भी मिल म उदार मिल मालिक साबित कर चुका हू। करना चाहता तो हू और प्रयत्न भी है। केवल मजदूरो के घर इत्यादि के लिये ५ लाख Jute mills (जूट मिल्स) मे इस साल खर्च होंगे। किन्तु यह आपकी जानकारी के लिय लिखता हू न कि अपने बचाव के लिए। क्योकि बचाव करके क्या करूगा। क्यो बचाव करू। बचाव करने स महादेवलाल को सतोष हो भी गया हो उसस क्या। किन्तु एक बात लिख दता हू गल्ती से या मूखता से या धोखे म आके मजदूरो का हित चाहे न सोचू किन्तु जानबूझ के मजदूरो का बुरा कर सकता हू ऐसा मैं अपने आपको नही पाता। आपको इस बारे म निश्चित करने की मैं आवश्यकता नही समझता। किन्तु अबकी बेर आप कलकत्ते आयेंगे तब मैं आपको अपनी मिल म ले चलूगा। महादेवलाल का इतना लिखना स्वाभाविक भी था क्योकि वे मुझे जानते भी नही हैं। और कुछ पूछना हो तो लिखियेगा।

काग्रेस कमिटी के आडिट के लिये लिख दिया है। महादेवलाल का पता मुझे

मालूम नही है। आप यह पत्र उन्हे चाहे तो भेज दें। मैं बम्बई ४ अक्टूबर को पहुचूगा। दिसम्बर मे फिर जाता हू। आप आश्रम म होगे तो कुछ दिन आपके पास रहूगा। गत वर्ष महादेव भाई ने आपको मेरी तारीफें लिखी थी तब मैंने कहा था कि वे धोखा खा गये। अब की दफे दूसरे महादेवलालजी ने काफी गालिया दी। वे भी धोखा खा गये। किन्तु मैं तो अपने आपको काफी जानता ही हू। इसलिये लोगो के अनुमान पर सिवाय हसने के और क्या कर सकता हू। तो भी महादेव भाइ के पत्र की अपेक्षा महादेवलालजी का पत्र ज्यादे हितकर है क्योकि मुझे उससे सचेत होने का मौका मिल जाता है।

विनीत,
घनश्यामदास

२२

श्री हरि

पिलानी ११ नवम्बर, २९

परम पूज्य महात्माजी

के चरणो म सप्रेम प्रणाम। मैं यहा पिलानी आया हू ५ ७ दिन के बाद जाऊगा। Lords (लार्डस) और Commons (कामन्स) की डिबेट तो आपने पढ़ ही ली होगी। मेरी राय मे तो परिस्थिति को देखते हुए बेन की स्पीच अच्छी थी। यदि हम उनकी इमानदारी म सदेह न करें तो कहना होगा कि उनकी कठिनाइयो को देखते हुए इससे ज्यादे वे नही कह सकते थे। बेन ने Spirit (मनोभाव) मे परिवर्तन हुआ है ऐसा तो स्पष्ट ही कहा है। मेरी राय म लीडरो के वक्तव्य का प्रतिवाद नही किया यह भी शुभ चिह्न है। Lloyed George (लायड जार्ज) के बार बार पूछने पर भी बेन ने कमी बेशी कहने से इन्कार किया और इस प्रकार स मौनम सम्मति लक्षणम् के न्याय से हमारी धारणा को पोषण भी किया। वाइसराय एव बेन नेकनियती के साथ हम सहायता देना चाहते है किन्तु मैं नही मानता कि हम पूर्ण Dominion Status (औपनिवेशिक दर्जा) मिलनेवाला है। यह मै जरूर मानता हू कि आप वहा पहुच गये तो अधिक स

अधिक लाभ हमे हो सकेगा। वहा की सरकार आपको असतुष्ट कर दे, वापिस नही जाने देगी ऐसा मेरा पक्का विश्वास है। शायद फौज के Reservation (सरक्षण) के साथ हम सब कुछ द दें। इसके विपरीत आप लोगो के न जान से परिस्थिति मुझे बिगडती दिखाई देती है। इसी चिता से प्रेरित होकर ही यह पत्र लिख रहा हू और आपको बिना पूछे परामश देना चाहता हू कि आप सम्मान पूवक परिस्थिति को अवश्य सभाल लें। मैं जानता हू कि आपका सुख भी यही है किन्तु फिर भी लिख दना मैंन उचित समझा है। मैं राजनतिक मामला म आपको कभी सलाह नही देता हू किन्तु परिस्थिति को दखते मैंने ऐसा करना आवश्यक समझा है। देश की शक्ति क साथ साथ इसकी कमजोरी का आपस अधिक मुझको नान नही ही किन्तु इसके कारण मैं कभी कभी वहुत निराश हो जाता हू और इसलिय यही सूझता है कि यदि आपके तप का—हमारी शक्तिया का नही—फल हम मिलना चाहता हा तो हम उसे ले लेन का प्रवन्ध कर लेना चाहिये। यदि पूरा Dominion Status (*औपनिवेशिक दर्जा*) मिल तब तो आप झटपट यह ले लेंगे। यह मैं जानता हू किन्तु मुझे ऐसी आशा नही है। वहुत स बहुत और सो भी आपके सहयाग से फौज छोडकर अन्य सब चीजें हम सम्मानपूवक इस समय मिल सकती हैं। तो इतनी ही मुझे ता आशा है। किन्तु इस अतिम बात का वे अभी तो कानफ्रेंस पर हा छोड दग। न ता व यही कहना चाहते ह कि Dominion Status (औपनिवशिक दर्जा) की पूणता म अभी देर है न यही कहना चाहते हैं कि शीघ्र ही पूण Dominion Status (औपनिवेशिक दर्जा) स्थापन हो सकेगा। किन्तु मेरी समझ यह है कि पूण डोमिनियन स्टेटस हम अभी नही मिलेगा। तो भी हम वहुत कुछ सम्पादन कर सकते हैं और बचा खुचा भी ५ १० साल तक ल सकते हैं। आज की परिस्थिति म हम इसस अधिक आशा भी कसे कर सकते हैं। मेरी राय का निचोड यह है कि आपका British Cabinet (ब्रिटिश मन्त्रिमडल) स मिल लेना हमारे लिए वहुत हितकर है और इस मौके को हमे छोडना नही चाहिय। यदि कानफ्रेंस फेल भी हो जाय तो भी हमारा लाभ ही है क्योकि इससे गरमदल वाला का प्रभाव बढेगा। हमारे तो दोना हाथ लडडू दीखते हैं। मैंने मेरी राय लिख दी है बाकी तो आप सोच ही लेंगे। आप शायद इतना स्वीकार न करें और कानफ्रेंस म जाने स मुह मोड लें इस भय स चिंतित था और पत्र लिखने का भी यही प्रयाजन आपके जान के बाद वाइसराय स मैं Dinner पर मिल गया था। उनकी बाता स इतनी बातें मुझ पर स्पष्ट हो गइ।

१) कदी छोडने म आना काना करेगा किन्तु उन्ह छोड देगा।

२) कानफ्रेंस का सगठन आप लोगो की राय और मशवरे स होगा।

३) शायद १९३० की जुलाई तक मैं कानफ्रेंस कर लेंगे।
४) पूर्ण Dominion Status (औपनिवेशिक दर्जा) देना कठिन है।

विनीत
घनश्यामदास

२३

अमारू, १२ ११-२९

भाई घनश्यामदासजी,

आपको लीखते हुए शरम आती है क्योंकि इतने दिना तक मैं कुछ न लीख सका। आपके पत्र तो आये हि थे—

अब तो वर्धे मे मिलेंगे इसीलिए ज्यादा लीखना नहिं चाहता हु।

दक्षिण अफ्रिका के वतमान करो के बार मे तो मैंन तार भेज दिया था।

बछडे और बन्दर के प्रकरण ने मुझको तकलीफ तो दी परन्तु जब स्वभाव समझने का और क्रोध रोकने का मुझको अच्छा अवसर मिला।

आपकी वहात मी बातें महादेव ने सुनाई और सुनकर दिल खुश हुआ। ऐसे तो मैं बहोत कुछ जानता हि था।

वधा ता० २४ को पहोचने का इरादा है।

बाकी मिलने से।

आपका
मोहनदास

जमनालाल आज मुबई जाते हैं। महादेव आजकल बारडाली म रहता है, तीन दिन के लिये यहा आया है।

२४

कलकत्ता
११ दिसम्बर, १६२६

पूज्य महात्माजी,

सतीशबाबू ने यहा खादी भण्डार खोलने के सम्बन्ध म आपको जो पत्र लिखा है उसकी नकल उन्हान मेरे पास भेजी है। मुझे याद पडता है कि मैंने आपको वर्धा म ही बता दिया था कि विभिन्न केन्द्रो मे खादी-समुच्चय के प्रति सतीशबाबू का क्या रवया होगा। जब आप यहा आयेंगे तो मैं इस विषय मे और अधिक विचार विमश करूगा। पर आपने खादी-समुच्चय सम्बन्धी जो योजना बनाई है, वह विशेष वनानिक नही जचती। मैं इस बारे म आपस मोलह आने सहमत हू कि सभी केन्द्रो म एक ही दर रहे, पर इसके लिए खादी-समुच्चय कुछ बहुत अच्छा ढग नही जचा। मेरा सुझाव है कि हम टरिफ बोड के ढग की एक समिनि का गठन करें। इस समिति का काम यही होगा कि जिन क्षेत्रा म खादी उत्पादन की लागत अपेक्षाकृत ऊची है उन क्षेत्रा के खादी उत्पादका को सरक्षण दिया जाए, जिसस वे खादी-उत्पादन की लागत म कमी करन के फलस्वरूप उठाई गई क्षति की पूर्ति उस अनुदान से कर सकें। इस प्रकार किसी उत्पादक केन्द्र का आवेदन पत्र मिलन पर समिति खादी उत्पादन की लागत का अध्ययन करेगी और इसके बाद चरखा सघ से सिफारिश करेगी कि उक्त केन्द्र को एक निश्चित अवधि के लिए आर्थिक सहायता दी जाए। इस सिफारिश क बाद चरखा सघ यह सहायता अलग अलग क्वालिटी की खादी पर प्रतिगज या वजन के हिसाब स द। ऐसी सहायता पानवालेअपना अपना उत्पादन स्टेण्डड दर पर बेच सकेंगे। फिलहाल तो खादी को एकरूपता प्रदान करने का यही एक वनानिक तरीका दिखाई पडता है। जब आप कलकत्ता आयेंग तो इस बीच कोई अन्य उपाय भी ध्यान म आया तो आपके सामन रखूगा।

सतीशबाबू की भावनाओ का मैं आदर करता हू। किसी नये केन्द्र के खोले जान से स्थानीय केन्द्रा को लाभ ही पहुचेगा हानि नही। पर उनकी आवश्यकताए तो खादी समुच्चय की प्रणाली का अपनाने स ही पूरी हो सकती हैं और किसी प्रकार स नहीं। यदि हमने सहायतावाली बात अपनाई तो पसे का सवाल उठेगा। पर इसकी व्यवस्था की जा सकती है। जो भी हो मैं एक नया केन्द्र खोलने की

योजना को साकार बनाने में लगा हुआ हूं। मैं यह नहीं चाहता कि किसी विक्रय केन्द्र की कार्यशीलता को ऐसा कोई आदेश पगु कर दे, जिसके पालन में वह अमुक ढग की खादी ही और अमुक मूल्य पर बेचे। इससे तो कोई भी धधा ठप्प हो जायेगा।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

२५

८, रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता
१८ दिसम्बर, १९२९

पूज्य महात्माजी

आपके आदेशानुसार बगाल प्रातीय काग्रेस कमेटी का आडिट किया हिसाब किताब आपके पास भेज रहा हूं। आडिटरो ने अपनी रिपोर्ट के साथवाले पत्र में जो टिप्पणी की है, उससे प्रबन्धको की प्रशसा नहीं होती है। पर रकम बहुत बडी नहीं है और इस लापरवाही का कारण प्रबन्धको का हिसाब किताब सम्बन्धी अज्ञान हो सकता है। कृपया लिखिये कि मुझे इस बारे में और क्या करना है?

मैंने किन्शी ऋणो के बारे में एक पत्र श्री शाह को, और दूसरा श्री सूबेदार को लिखा था। श्री शाह ने अपना नोट भेजने का वचन दिया है पर साथ ही कहा है कि मैं उनकी 'भारतीय वित्तीय प्रणाली के साठ वर्ष' पुस्तक पढू जिसमें इस प्रश्न की चर्चा है। मैंने पुस्तक के उन परिच्छेदो पर निगाह डाली, तो कुछ फल नहीं निकला। पुस्तक में ऐसी कोई बात नहीं है, जो मुझे पहले से ही मालूम न रही हो। पर मैं उनका पत्र आपके अवलोकन के लिए भेज रहा हूं। मेरा पक्का विश्वास है कि मेरा तर्क बिलकुल सही है पर आपके आदेश का पालन करने के लिए मैं उस पर विस्तार के साथ लिखूगा।

सन १९०० में देश की राष्ट्रीय निधि में कोई वृद्धि नहीं हुई है यह साबित करने के लिए विश्वसनीय प्रमाण जुटाना सम्भव नहीं लगता है। मैं अधिक-से अधिक यही कर सकता हूं कि वास्तविक राष्ट्रीय समृद्धि और वास्तविक आय के

आकड़े दे दू पर इनके द्वारा समद्धि मे वद्धि के दशन नही होते हैं, क्याकि मूल्या के स्तर मे बहुत चढाव हुआ। इसके लिए विदेशी ऋण कहा तक उत्तरदायी है, यह प्रमाणित करना एक कठिन समस्या है। इसका दोप हमारी सरकार की शासन प्रणाली को दिया जा सकता है पर यह बिलकुल दूसरा ही प्रसग हो जायेगा। आपसे विदा लेने के बाद मैं 'यग इडिया' म कुमारप्पा के दोना लेख पढ गया पर मैं विशेप प्रभावित नही हुआ क्योकि उनम अ य पुस्तको से लिये गये प्रश्नो का सक्लन मात्र है।

मैं बिलकुल स्वस्थ हू और आशा करता हू कि आप भी स्वस्थ होगे।

आपका,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधी

१९३० के पत्र

१

आश्रम,
साबरमती
ता० ६-२ ३०

भाई श्री घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला है। केशु के लिए आप सबकी तरफ से प्रेम धारा बह रही है, एसा देवदास लिखता हूँ और राधाबहिन भी लिख रही है। इस बारे मे तो क्या कहू ? उपचार भी करीब करीब मैं चाहता था वसे ही हो रहे हैं। बस इस बारे म और कुछ लिखना अविनय समझता हू। मैं निश्चित हू।

लाहौर के बारे म जो कुछ प्रस्ताव हुए है वह मुझको बहुत प्रिय लगते हैं। और अब जो हो रहा ह उससे मेरा अभिप्राय दढतर होता जा रहा है। 'यग इडिया' म मैंने जो लिखा ह उसे पढ़ें और कुछ लिखने का उचित समझें तो लिखें। आपको अभिप्राय और सलाह देने का सम्पूर्ण अधिकार ह।

आपका,
मोहनदास

२

१६ १-३०

भाई घनश्यामदासजी,

आपके दोनो पत्र मिले हैं। आजकल मैं इतना काम मे पडा हू कुछ समय ही पत्रोत्तर देने का नही रहता हूँ। व्याख्यान पढकर अभिप्राय पीछे भेजूगा। मालवीजी महाराज स मेरी भी बात हो गई थी। यदि वे दूसरे दलवालो को सहिष्णुता सीखा सकेंग तो बहोत काम सुधर सकता है। इस बारे म जो प्रयत्न कर सकत हैं, कीजिय।

आपकी प्रवत्ति के बारे म मिलने से बातें करेंगे।

केशु के बारे में मैं कुछ भी चिंता नहीं करता हू।

आपका,
मोहनदास

३

भाई घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला है। आपके व्याख्यान का मैंने काफी उपयोग कर लीया है। जो कीया वह सब अच्छा हि हुआ है। अब तो मैंने अपने 'देन का ठीक अभ्यास कर लीया है। देखता हु कि इसका उत्तर तो इन लोगो के पास मे है हि नहिं। केवल हमारे अज्ञान और भीरुता का लाभ उठाते हैं।

एसेंबली जितनी शीघ्रता से छूटे इतना अच्छा है। मार्च की आखर तक जेल बाहर रहने की मैं बहोत कम आशा करता हु।

एक प्रश्न पूछ लु। केशु और उसकी माताजी वहा थी। राधाबहिन भी थी, देवदास था। उन लोगो का अनुभव मुझे दे दीजीये—बीमारी में केशु का वर्तावं कैसे रहा?

आपका
मोहनदास

२८-२ ३०

४

दांडी
१० ४ ३०

भाई घनश्यामदासजी,

आप लोगो के स्तीफा[१] से मुझको बडा हर्ष हुआ है। यह पत्र रात्री को दो बजे लिखवा रहा हु। क्योंकि साथी लोक खबर लाए हैं कि आज ही मुझको उठा ले जायेंगे।

जमनालाल तो जेल मे विराजमान हैं। निमक के युद्ध मे मद्यपान निषेध मे और विदेशी वस्त्र के बहिष्कार मे जो कुछ भी हो सकता है करोगे, यह मेरा विश्वास है।

पूज्य मालवीजी इस बारे में दृढ रहेंगे तो बहोत सहारा मिल जायगा।

१ मैंने असेम्बली से इस्तीफा दे दिया था यहां उसी की ओर सकेत है। —घ०

गुजरात की जागति इस वक्त तो अवर्णनीय है। दैव जाने आगे क्या होगा।

इस पकडा पकडी का परिणाम मैं बहुत ही देख रहा हू। और जसा हम लोग सोचते थे वसा ही हो रहा है।

और क्या लिखू ?

आपका
मोहनदास

५

भाई रामेश्वरदासजी,

आपका खत मीला है। आपका खादी का प्रेम मुझे मालुम है। इसलिये आपकी योजना की टीका करने मे सकोच होता है। तदपि इतना कह दु कि योजना चलनेवाली नहि है। क्योंकि मिल मालिक स्वार्थ नहि छोडेंगे।

सलतनत की मदद बहोत चीजो म आवश्यक ह जा बहिष्कार के लिये कभी नहि मीलेगी।

यदि मिल मालेका के उद्याग से बहिष्कार सफल हो सकता है तो बहिष्कार म खादी को कुछ स्थान नहि होना चाहिये।

परतु मेरा विश्वास है कि खादी से हि बहिष्कार सिद्ध हो सकता है।

इसका मतलब यह नही है कि मिल को स्थान हि नहि ह। खादी भावना से ही मिल को अपना योग्य स्थान मिल जाता है।

इन सब कारणो से मिलाकर क्षेम और बहिष्कार की सफलता खादी भावना पदा करने से और खादी उत्पन्न करने से हि हो सकती है।

सुनेपु कि बहुना ?

मेरे अक्षर पढने म कष्ट नहि होगा।

आपका,
मोहनदास

पो० जलालपुर,
२८ ४-३०

जमनालाल का कष्ट कालातर से दूर हो जावेगा, थोडे दु ख का भले अनुभव कर लें।

६

कलकत्ता
२८ ४ १६३०

परम पूज्य महात्माजी,

चरणो मे सप्रेम प्रणाम।

बहुत सी बातें इस पत्र के द्वारा लिख भेजता हु। एसा मालूम हाता है कि निकट मे आपके दशन नही हों। किन्तु यदि आप जेल म न चले गये तो मई क अन्त म अवश्य दशन करूगा। कलकत्ते की हालत हरिभाऊजी आपको बता दगे। पुलिस लोगा पर पशु की तरह से आक्रमण करती है। निर्दोष व्यक्ति गलिया मे पीटे जाते हैं। ऐसा मालूम होता है कि यह मारन की नीति सारे देश के लिये स्थिर की गयी है। क्योंकि सभी जगह से जो समाचार आते हैं व प्राय एक-से हैं। इस मार के कारण मैंने सुना है कि यहा पर उत्साह मे कोई शिथिलता नही है। लोगो म काफी उत्साह है और यह प्रसन्नता की बात है।

पूज्य मालवीयजी यहा आ गये हैं। उनका शरीर बिलकुल जर जर हा गया है। इसलिये अधिक काम कर सकेंगे, ऐसी मुझे तो आशा नही है। जितना वे कर रहे है उसीका मुझे तो आश्चय है। विदेशी बायकाट के सम्बध मे उनके और मेरे विचारो के सम्ब ध म हरिभाऊजी आपको सब बातें बता देंगे।

आपकी सारी दलीलें यद्यपि मैं स्वीकार नही करता, तो भी निणय मे कोई मतभेद नही है और इसलिये पडितजी का यही सलाह मैंने दी है कि वे विदेशी बायकाट और खादी के ऊपर विशेष जोर दें। मिल का कपडा तो अपने आप मिल ही जायगा। किन्तु यदि आपने यह समझ रखा हो कि इस हलचल के कारण मिल के कपडे की अधिक सहायता नही मिलेगी, तो यह अनुमान आपका गलत है। मिल का कपडा ही अधिक बिकेगा। खादी की प्रवृत्ति भी बढेगी, किन्तु इमस कही अधिक मिल की प्रगति बढेगी। मिल का कपडा विलायती कपडे को हटाने म समथ है, यह मैं मानता हू। यद्यपि मैं जानता हू कि आप इसे नही मानत।

हैंड-लूमो की उत्पत्ति को छोड दें ता ३६०० मिलियन गज की सारी हमारा खपत है। मिलें २७०० मिलियन गज तयार कर सकती हैं। जो कि बहुत-सी मिलें बन्द हैं इसलिये २४०० से ज्यादा इस समय तयार नही हो रहा है। डबल शिफ्ट से काम करने स उत्पादन शक्ति और भी बढाई जा सकती है। बाहर की आमद १६०० मिलियन गज है और नयी जकात और प्रचार के कारण यदि २०००

मिलियन गज हम कम कर सकेंगे तो समझना चाहिये कि हमें सफलता मिली। किन्तु ऐसी हालत में २७०० मिलों की और ६०० मिलायती कुल मिला के ३६०० मिलियन गज कपड़ा बच जाता है जिसमें ज्यादा की खपत नहीं है। यदि हम चाहें तो डबल शिफ्ट द्वारा मिलों की उत्पादन शक्ति और भी बढ़ाई जा सकती है।

मेरे लिखने का तात्पर्य यह है कि देश में कपड़ा काफी है और उत्पादन शक्ति अधिक बढ़ सकती है। तकलीफ तो इस समय यह है कि कपड़ा लेनेवाले काफी नहीं हैं। सब मिलों में स्टाक काफी है। यह मैं इसलिये लिख रहा हूं कि जिन लोगों को यह भय हो कि स्वदेशी की चलवल के कारण मिलों के कपड़े का दाम अधिक बढ़ जायगा, तो वह गलत है। कपड़े का दाम बढ़ेगा अवश्य और बढ़ना भी चाहिए क्योंकि आज की हालत में तो मिलें घाटा दे रही हैं। किन्तु ५ परसेंट डेप्रिसियेशन और ८ परसेंट लागत रकम पर के मुनाफे से अधिक मुनाफा मिलें कमा सकेंगी, मुझे ऐसी निकट भविष्य में आशा नहीं है। जो हो, यह तो आपकी दलीलों से कहां मतभेद है यह दिखाने के लिये लिख रहा हूं। बाकी निर्णय में तो आपके साथ हूं।

मिल के कपड़े के बारे में मैं चाहता हूं कि एक स्वतंत्र बोर्ड के हाथ में सारा प्रबन्ध सौंप दिया जाय और मिल मालिकों की निगरानी में ही वह बोर्ड काम करे। उसकी स्कीम भी आपको भेजूंगा। मुनाफा और नियंत्रण का भी कोई तरीका उसमें रखेंगे। लूमों के ऊपर उपकर बैठाने का भी विचार है। किंतु यह बात अम्बालाल भाई वगैरह से मिलने के बाद तय होगी और जो कुछ मिल के कपड़े के संबंध में काम होगा वह तो सारा मिल मालिकों द्वारा ही होगा।

मालवीयजी से तो मैंने यही तय किया है कि वे खादी के ऊपर ही अधिक जोर लगावें। और उसके लिये मैंने यह भी विचार किया है कि एक केन्द्र अपना निज का इसलिये खोल दूं कि जिसमें मुझे व्यापारिक दृष्टि से खादी के बारे में ज्ञान हो जाय। हरिभाऊजी से मैंने कुछ आदमी मांगे हैं। पहिला केंद्र पिलानी में खोलना चाहता हूं। उसके बाद जो कुछ वृद्धि कर सकूंगा सो करूंगा।

पिकेटिंग के बारे में मेरी राय आपसे मिलती है। किन्तु इसमें भी कुछ विवेक करना चाहता हूं कि जिन स्थानों में पिकेटिंग सफल नहीं हो सकता वहां व्यापारियों से कुछ समझौता हो जाय तो वह अच्छा है। अभी तक जो कुछ हो रहा है वह ज्यादा अखबारी घुड़दौड़ है। किन्तु व्यापारी जिस तरह से प्रतिज्ञा करते जा रहे हैं उस पर कायम रहें तो तीन महीने में उसका अवश्य असर होगा।

राजनैतिक बातों के सम्बन्ध में तो मुझे कुछ नहीं लिखना है। आपकी विजय हो यह सभी चाहते हैं। मैंने आपको एक पत्र और लिखा था, समय हो और

उचित समझें तो चाहे उत्तर भेज दें।

मेरा शरीर ठीक है। और आपका शरीर स्वस्थ होगा। मैं आजकल काफी चिंता में रहता हूं। आप तो श्रद्धा के मारे आनंद में डूबे रहते हैं। मेरे जैसे हिसाबी किताबी आदमी को कभी-कभी असफलता की आशंका व्यथित कर देती है। जो हो, आपका तप अवश्य फलेगा इतनी श्रद्धा तो है ही।

विनीत,
घनश्यामदास

७

कराडी
१ ५ ३०

प्रिय भाई घनश्यामदासजी,

सस्नेह वन्दे। कल पू० बापूजी से मिला। शरीर उनका अच्छा है और बहुत प्रसन्न हैं। आपके लिये कहा है कि चिंतित रहने की आवश्यकता नहीं है। उनकी शुभकामना तो आपके लिए है ही।

इससे पहले भेजा आपका पत्र उन्हें मिल गया था। उनकी राय है कि थोड़े लोगों की सही से क्यों न हो पर जोरदार पत्र यदि आप लोगों की ओर से वाइसराय को जायगा तो अधिक उपयोगी होगा। बहुत लोगों के हस्ताक्षर से ढीला ढाला पत्र भेजने के पक्ष में वे नहीं हैं।

सहयोग की कीमत के विषय में उनका कहना है कि ११ मुद्दों का औचित्य सरकार को मान लेना चाहिये। जब तक सरकार की तरफ से यह नहीं कहा जायगा कि ११ मांगें वाजिबी हैं और मानी जाने योग्य हैं तब तक कोई समझौते की अर्थात भंग बन्द करने की बातचीत नहीं हो सकती। हां इनमें कुछ बातें ऐसी हैं जो तुरंत मंजूर हो जानी चाहिये क्योंकि उन पर बहस हो चुकी है और लोगों ने अपनी राय उन पर दे दी है। जैसे १) नमक कर २) कोस्टल रिजर्वेशन बिल ३) रेश्यो, ४) शराबबन्दी, ५) प्रोटेक्टिव टेरिफ, ६) राजनैतिक कैदियों का छुटकारा आदि। १—लैंड रेविन्यू २—मिलिटरी खर्च की कमी, ३—C I D का उठ जाना आदि मांगें जिन पर अभी विचार नहीं हो पाया है पूर्ति के लिये एक कमिटी के विचाराधीन रखी जा सकती हैं। वह कमिटी उनकी पूर्ति के

रास्त सुझावेगी। बापूजी के ये विचार आपकी जानकारी और सन्तोष के लिये हैं, क्योंकि उनका ख्याल है कि बिना काफी बल और कष्ट-सहन का परिचय दिये इन मागो के औचित्य का स्वीकार होना कठिन है।

पू० बापूजी का यह कहना है कि पू० मालवीयजी का जो आपने यह सलाह दी है कि वे विदेशी बायकाट और खादी के ऊपर विशेष जोर दें यह बिलकुल ठीक है। पडितजी को जब तक यह निश्चय न हो जाय कि विदेशी वस्त्र का बहिष्कार सच्चे अर्थ में खादी के ही द्वारा हो सकता है तब तक बहिष्कार और खादी के पक्ष में उनकी सम्मति मात्र से भी बहुत सहायता मिल सकती है। उनके स्वास्थ्य को देखते हुए बापूजी का मत है कि उन्हें अवश्य विश्रान्ति लेनी चाहिये।

पिकेटिंग तथा बहिष्कार आदि के बारे मे पू० बापूजी से मेरी जो कुछ बातें हुई तथा उनके जिन विचारो से मैं परिचित हू उनको तथा पू० मालवीयजी के तत्सबधी विचारो और भावो को देखते हुए मुझे एक कठिनाई अनुभव हो रही है और मैं देखता हू कि देश मे सब कार्यकर्ताओ में भी कुछ उलझनें पैदा हो रही है। मेरा दृढ मत है कि इसके सबध मे कोई एक निर्णय आपस में हो जाना चाहिये। यदि बहिष्कार और पिकेटिंग के सबध मे महात्माजी एक बात कहे, मोतीलालजी दूसरी कहे और मालवीयजी तीसरी तो कार्यकर्ताओ और लोगो मे कितना गोलमाल हो सकता है और हो रहा है यह सहज ही देखा जा सकता है। महात्माजी ने पिकेटिंग आदि के सबध में अपने स्पष्ट विचार 'यग इडिया' तथा 'नवजीवन' में दिये हैं। पिकेटिंग के बारे में उनका कहना है कि पिकेटिंग प्रचार का एक अग बन गया है और उसके बिना विदेशी वस्त्र के बहिष्कार का वातावरण नही पैदा हो सकता, न कायम रह सकता है। पिकेटिंग न करने के मानी हैं बहिष्कार को स्थगित करना। हा पिकेटिंग में किसी प्रकार की कटुता और हिंसा न होनी चाहिये— इसलिए स्त्रियो की योजना विशेष रूप से की गई है। जहा कटुता और हिंसा होती है, वहा पिकेटिंग उठाया जा सकता है। बापूजी के और मालवीयजी के मतभेद के सबध में उनका (बापूजी का) कहना है कि घनश्यामदासजी सब ठीक कर सकेंगे।

बापूजी भी यही मानते हैं कि खादी प्रचार का और विदेशी बहिष्कार का आन्दोलन करने से स्वदेशी कपडा अपने आप बिकेगा। आपका जो यह ख्याल है कि खादी की अपेक्षा स्वदेशी मिल के कपडे से बहिष्कार जल्दी सफल हो सकता है उसके सबध में उनका यह कहना है कि जब घनश्यामदासजी स्वय खादी-केन्द्र का सगठन और सचालन कर लेंगे, तब उन्हें अपने आप मालूम हो जायगा कि दो में से कौन अधिक सरल और शीघ्र फलदायी है।

आपकी बहिष्कार योजना की वे राह देख रहे हैं। अबालाल भाई की योजना पर उन्होंने अपनी सूचनायें अबालाल भाई को भेज दी हैं और रामेश्वरदासजी की योजना भी उन्हें मिल गई है।

दाम बढाने के बारे मे उनका मत है कि दाम स्थिर हो जाना चाहिये और चरखा सघ की तरह यदि स्वदेशी मिलवाले जगह-जगह अपनी या अपना प्रमाण पत्र दी हुई एजेंसिया खोलें तो फुटकर बेचनवाला की ओर से दाम ज्यादा लेन का भय दूर हो सकता है।

मुसलमानो की दुकानो पर पिकेटिंग करने के बारे मे उन्होंने कहा कि जब तक मुसलमान स्त्रिया सेविकाओ म न हो, तब तक उनकी दुकानें छोड देनी चाहिये। हिन्दू दुकानो के पिकेटिंग स उत्पन्न वातावरण क प्रभाव से मुसलमानो की बिक्री पर जरूर असर होगा और यो भी विदेशी कपडे के व्यापारियो म मुसलमानो की सख्या थोडी है। स्वयसेविकाओ पर अत्याचार होने की आशका बापूजी को नही है या बहुत कम है।

आप अपनी ओर स स्वतत्र खादी-केन्द्र खोलें यह बात बापूजी को बहुत पसद है। शकरलाल भाई भी यही आ गये हैं और वे कुछ दिनो के लिये आपको एक दो आदमी दे सकेंगे। उनसे आप अपन आदमी तयार करा लीजियेगा। मेरी राय म तो यदि आप महावीरप्रसादजी को अथवा किसी दूसरे खादी प्रेमी को शकरलाल भाई के पास आपके केन्द्र के बार म बातचीत करने क लिये भेज दें तो अच्छा होगा। आपका आना इस तरफ जल्दी हो तो अच्छा है। मिलें इस समय बहिष्कार मे देश का साथ किस तरह दे सकती है इसक विषय मे बापूजी के और रणछोडलाल भाई के बीच अच्छी बातें तय हो रही है। आप इस मौके पर इस तरफ आ जाय तो बहुत सी बातें जल्दी तय हो सकेंगी। ऐसी बातें चल रही है कि कुछ मिल मालिक इस बात पर राजी हो जाय कि भाव और कपडे की किस्मे तय कर लें अपना हिसाब किताब जचवाने के लिये तयार हो जाय, और बतौर ट्रस्टी क देश हित के उद्देश्य से ही मिलो का सचालन करें, अर्थात मिलो के राष्ट्रीकरण की प्रथम सीढी पर अपना कदम जमाने के लिये तयार हो जाय। मैं हृदय से चाहता हू कि आप इस मामले मे रणछोडलाल भाई से पीछे न रहें। सब नही तो कम से कम फिलहाल किसी एक मिल के लिये आप रजामद हो तो बडी बात होगी।

दूसरा पत्र पू० मालवीयजी के लिये है। आप देख लीजियेगा।

यहा का वातावरण शात प्रसन्न, उत्साहपूर्ण और नमक डिपो पर चढाई करने की उत्सुकता से परिपूर्ण है।

नमक फैक्ट्री खोलने के बारे में पूज्य बापूजी की राय वैसी ही है जैसी कि आपने दी थी।

अब मैं इस आशा से अजमेर जा रहा हूं कि स्वराज्य में सरकारी जेल से वापस लौटूं। कलकत्ते से चलते समय आप अपने जेलखाने में थे इसलिए अंतिम प्रणाम अब इस पत्र द्वारा ही कर लेता हूं।

विनीत,
हरिभाऊ

यह पत्र पढ़कर बापूजी को सुना दिया गया है।

ह० उ०

८

पूना जेल से

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मीला है। अब तो करीब-करीब सब पत्र दे देते हैं। तो भी इंग्रेजी में लिखा वही अच्छा किया। पुने नहिं आये वह तो अच्छा हि हुआ क्योंकि किसी को मिलने का होता हि नहिं है। जिस शरत से मुलाकात करने देते हैं मुझे कबूल नहीं है, इसलिये एक हि मुलाकात आज तक हुई है दूसरी होने का सम्भव नहिं है। वस्तुतः कही को कुछ शक तो है हि नहिं, कहे एक प्रकार का भाव मृत्यु है और कह का यही अर्थ हो सकता है। स्वप्न का बयान पढ़कर मैं खूब हंसा यह स्वप्ना प्रेम की निशानी है। अपरिचित लोगों के लिये हमको स्वप्न नहिं आते हैं।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है यहां का पानी हि ऐसा है जिससे कुछ बधकोष्ठ-सा रहता है परन्तु उससे कोई उपाधि नहिं है।

जब तकली कोई कोई वखत चलाते हैं तो नियमबद्ध क्या न चलाई जाय? मैंने अनुभव किया है कि जो चीज हम अनियमित करते हैं उसी को यदि नियमबद्ध कर दी जाय तो उसकी किम्मत सौ गुनी तो अवश्य बढ़ जाती है। सारा जगत

नियम के वश मे है। ऐसे अनुभवो से अव्यवस्थित चित्तानाम प्रसादोपि भयकर, जैसे वचन की उत्पत्ति हुई है।

खादी प्रवृति का बयान सुनकर हर्ष हुआ। आपके पुत्र को अब तो बिलकुल आराम होगा।

आपका स्वास्थ्य कैसा रहता है? क्या खाते हैं? मेरा खोराक दूध, दहि, मनक्का खजूर और खट्टे लिंबू है लिंबू का रस सोडा के साथ पी जाता हु अथवा गरम पानी और नमक के साथ।

भाई मनमोहन गाधी से कहना उनका पुस्तक मिल गया है और खत भी। पुस्तक पढने का समय वहोत कम रहता है, जितनी शक्ति है करीब सबकी-सब कातन धुनने मे दे देता हु।

आपका,
मोहनदास

२६ ७ ३०

६

जेल से

भाई घनश्यामदासजी,

आपका खत मिला है। मिराबहन ने भी थोड़ा लिखा था। दोष मुक्त तो इस जगत मे कोई नहि है। मुक्ति पाने की कोशीष करना हम सबका कर्त्तव्य है और वही पुरुषार्थ है। जब तक निजी प्रयत्न से हम साक्षी बन सकें निराशा को कोई स्थान नहि है। दुनिया के कई व्यापार मे जितनी साहस की आवश्यकता है उससे कोटि गुणा साहस की आवश्यकता आध्यात्मिक व्यापार मे है। आत्म-श्रद्धा कभी न छोडी जाय श्रद्धा के नजदीक सब कुछ शक्य है।

मुझे भी विश्वास है कि पू० मालवीजी कभी बीमार नहि होंगे। मेरा तो विश्वास है कि जेल से उनको सच्चा आराम और सच्ची शान्ति मिलेंगे दोनो की उनके लिए बरसो से बड़ी आवश्यकता थी—भगवान ने ऐसे हि अब दोनो दे दिए हैं।

अब के पत्र म शरीर के हाल दे दा।

खादी ज्यादा हा जाने से डरोग नहि, ऐसी आशा करता हु। गाशाला का प्रयाग कुछ करत हा क्या ?

आपका
मोहनदास

यरवडा मदिर
१५ १० ३०

१०

जेल से

भाई घनश्यामदास

आपकी आध्यात्मिक अशाति मुझको एक तरह से अच्छी लगती ह। इसीमे से सच्ची शाति पदा हागी। खादी का काय भल भाई महावीरप्रसाद हि करते रहें और आप उसकी फिकर न करें परतु मेरा विश्वास ह कि कुछ एक पारमार्थिक काम मे केवल पसे हि नहि परतु दिल भी लगाने से कुछ शाति मिलगी। धदा की देखभाल करने म ज्यादा समय जायगा। मैं समज सकता हु सारा समय उसी की चिन्ता मे रहने से धदा अच्छा बनता है, न उससे शाति मिल सकती ह। यन के बारे मे इसी सप्ताह मे जो कुछ मैंने लिख भेजा है ध्यान से पढें कैसा भी हो, मेरा विश्वास है कि आपका प्रयत्न इतना दृढ है और आपका दिल ऐसा साफ प्रतीत होता ह कि आपको शाति अवश्य मिलेगी और सच्चा रास्ता भी दिखाई पडेगा।

आपका,
मोहनदास

२८ १० ३०

जिस बहन को मैं मसुरी म मिला था वह कहा ह, कसे है ? उनको मेरे आशीर्वाद।

११

जेल स
२ १२ ३०

भाई घनश्यामदासजी

यह खत भाई जयप्रकाश नारायण के लिये ह। वह बिहार के प्रतिष्ठित कुल के हैं और बिहार के बडे सेवक व्रजकिशोर बाबु के दामात हैं। अब तक तो प० जवाहरलाल क साथ काग्रेस के दफ्तर म थे। अमरिका म सात वष तक अभ्यास किया ह। अब माता का देहात होने के कारण कुछ धनोपाजन करन की आवश्यकता उनको प्रतीत हुई ह। उनकी हाजत रू० ३०० माहवार ह। मेरा अभिप्राय ह कि भाई जयप्रकाश गुणवान नवयुवक ह। यदि सभव ह तो उनको कही भी रख लो और जो हाजत ह इतना माहवार दे दो—भाई जयप्रकाश हि के पास स उनका और इतिहास सुनोगे। बाबु व्रजकिशोर की लडकी को तो मैं खूब जानता हू आश्रम मे काफी रह चकी ह। ऐसी कत्तव्यशील और दृढ लडकी मैंने बहोत कम देखी ह।

आपका
मोहनदास

१२

भाई घनश्यामदासजी,

आपका खत मिला है। मुझे डर है कि मैं राजी हो जाऊ तो भी मिलन की रजा नहि मिलेगी। इसलिए पत्र स हि जितना हो सके उससे अब तो सतोष मानना होगा। बीमा से मेरा मतलब यह नहि कि भविष्य के लिये सौदा हि न किया जाय बीमा का अथ जुगार बाजार बढ जायगी ऐसी आशा स म २००० गासडी रूई खरीदता हु। मुझे रूई की आवश्यकता नहि है मैं रूई मेरी गुदाम म भी नहि रखता केवल सौदा चिट्ठी ही करवाइ है। अब मैं दाम बढने की प्रतीक्षा कर रहा हु बहुत-से बेच डालता हु—इसको मैं जुगार समझता हु। इस प्रकार के लेन देन से मुलक को या

कहो जगत का बहोत ही हानि हुई है—मेरे खत म तो यही अथ था। हा, मैं चाहता हु इससे ज्यादा परतु आज एसा करने की आपम शक्ति नहिं हागी। भविष्य की बाजार पर निभर हि न रहना परतु जो दाम हम लग वही दाम पर कुछ वद्धि करके माल बचना इसका मैं शुद्ध व्यापार समजता हु। आज भले ऐसा व्यापार करने म कठिनाई हा अत म एसा व्यापार फलदायी हो सकता है। आपका याद हागा कि खद्दर के लिय मरी यही कल्पना है, परतु मैं जानता हु कि यह बडी बात है। यदि बीमा को आप सब भाई छाड सकें तो मुझे बडा आनद और सतोष होगा। कसे भी हा, जितना आपकी बुद्धि स्वीकार करे और शक्ति के प्रमाण मे हावे इतना हि किया जाय। मैं यह कभी नहिं चाहता हु कि क्योंकि यह मेरी सूचना है और वह भी जेल से, इसलिये उसका अमल किया जाय। जिसम बुद्धि का प्रयोग हो सकता है उसम श्रद्धा को स्थान न देना चाहिये।

जयप्रकाश मुझे लिखता है कि आप आज नये आदमियो की भरती नहिं करते हैं तथापि मेरा खत लेकर वह आया, इसलिय उसको कुछ न कुछ जगा दीन जायगी—मरा अभिप्राय अवश्य है कि जयप्रकाश अच्छा नवयुवक है पर मैं नहिं चाहता हु कि उसके लिये स्थान आज न होवे, तो पैदा किया जाय।

पू० मालवीजी के बारे म अखबारो मे बुखार का पढा था इसलिय कुछ चिंता हाती थी—अब शाति हुई। मेरी उमेद है कि जेल म से अच्छा शरीर बनाकर नीकलेंगे। आपके स्वास्थ्य के बार म सुनकर भी आनद होता है। मैं फिर दूध छोडने का प्रयाग कर रहा हु इस वखत वधकोष निमित्त मिटा। अब तो बाजरी जुवार की रोटी जो कन्या के लिए पकती है भाजी तीन तोला बादाम और खजूर इतनी चीज लता हु—खजूर छोडने की चेष्टा कर रहा हु—वधकोष तो मिटा है—यदि शक्ति कम हा जायगी ता फिर दूध पर आ जाऊगा। दूध छोडने का अब प्राय एक मास हुआ।

आपका
मोहनदास

१६ १२ ३०

१३

भाई घनश्यामदासजी,

आपका आपर का तार का उत्तर मने नही दिया। दूर वठा हुआ मैं सूचना क्या दू। आपकी तरफ से जतन म तो कुछ भी न्यूनता हा हि नही सकती है। केशु तो आश्वासन चाहिये इतना म जानता हू। इसलिये देवदास को भेज रहा हू। दवाइया मे मेरा विश्वास कम है। लेकिन मेरे स जो दूर रहते हैं उनकी मावजत मे मैं कुछ दखल नही देना। इसलिय तार के उत्तर म कोई सूचना दने की जरूरत नही थी। मरा उपचार तो जाहिर है—उपवास या तो फलो का रस, और सूय स्नान। रात को भी खुले कमरे मे सोना। पखाना न आवे तो इनीमा। इतने उपचार से केशव के जसे बहुत केस साफ हुए। परतु दूर बठा हुआ इस पाडित्य को मै चलाना नहा चाहता आपका दिल चाहे वसे करें। केशव अपन आप दवाई का आग्रह न करे न ऐसा आग्रह न किया जाय। मेरी उम्मीद तो यह है कि इस पत्र के पहुचने पहले केशव भयमुक्त हुआ होगा।

आपका,
मोहनदास

१४

सत्याग्रहाश्रम
साबरमती

भाइ श्री रामेश्वरदासजी

आपका पत्र मीला है। रु० ५००० मीलन स आपकी इच्छानुसार अत्यज सेवा मे उसका व्यय करूगा। जमनालालजी के वहा से अब तक कुछ खत नही

आया है। जमनालालजी आजकल खादी प्रचार के लिये राजपुताने म भ्रमण कर रहे हैं।

आपका,
मोहनदास गांधी

चैत्र शुक्ल ६

श्रीयुत रामेश्वरदास बिड़ला
बिड़ला हाउस
रांची।

१९३१ के पत्र

जेल से

भाई घनश्यामदास,

आपके दो पत्र मीले हैं। विजयराघवाचारीजी का पत्र लिखा है उसका नकल भेजता हु।

हिंदु मुस्लीम के बारे मे क्या लिखु ? नवाब साहेब भोपाल काम कर रहे हैं जब मौका मिले तो कोइ भी मुसलमान मिले उसकी सेवा करना। सेवा का मतलब आर्थिक सहाय नहिं है—योग्य गरीब मुसलमान मिल जाव उसे आर्थिक सहाय देना वह तो है हि और हिंदु मे जो गुंडाबाजी पैदा हुई है उसका दूर करने की चेष्टा करना भी कर्तव्य है—जो अत्याचार कानपुर मे और काशी मे हिंदु से हुए उससे हिंदु धर्म को लाभ नहिं हुआ है हानि अवश्य हुई है।

मेरा विलायत जाना होगा या नहिं कुछ पता अब तक तो नहिं है। यहा का मामला गभीर सा है—

आप अमरिका अवश्य जाइये—जाने से कुछ लाभ हि होगा।

विदेशी वस्त्र बहिष्कार के बारे मे जो कुछ शक्य हो करो।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

बापु

२८ ४ ३१
बोरमद

२

बोरसद
२६ अप्रैल, १६३१

प्रिय मित्र

घनश्यामदास बिडला ने मुझसे आपको पत्र लिखने को कहा है चाहे कुछ ही पंक्तियां क्यों न हों। मैं अब तक पत्र लिखने मे असफल रहा क्योंकि पिछले सप्ताह

तब मैंने प्रतिदिन आनेवाले ढेर सारे पत्रों को हाथ नही लगाया था। प्यारेलाल और महादेव ही पत्रों को अपनी इच्छानुसार निबटाते रहे और मैं समझता हू कि काम के दबाव के दौरान आप मुझसे किसी तरह के पत्र की आशा नही करते होगे। अब पत्र लिखने के लिए थोडा समय मिला है तो मैं सोचता हू आपको क्या लिखू। आप यह क्यो समझते हैं कि आपके तारो और पत्रो की पहुच नही मिली, इसलिए उन पर विचार नही हुआ। उन पर विचार हुआ था पर कठिनाई यह थी कि आपके सुझाव मुझे स्वीकार नही लगे। जो दण्ड दिये गए है उनकी वैधता की बाबत सर तेजबहादुर सप्रू जसे कानून विशारदो और वाइसराय के बीच विस्तृत विचार विमर्श हुआ था और आपको मालूम ही है कि सर तेजबहादुर का वाइसराय पर कितना प्रभाव है। पर वह सब व्यर्थ सिद्ध हुआ। फलत काग्रेस के लिए केवल एक ही मार्ग था। इसका आप कुछ खयाल मत कीजिए। आपको यह बात ध्यान मे रखनी चाहिए कि हमारे मध्य स्त्री पुरुषो की एक नयी पीढी मौजूद है जो काग्रेस पर दखल किये हुए है। यह कानूनी खानापूरी मे विश्वास नही रखती। इसने देख लिया है कि स्वतत्रता प्राप्ति के क्षेत्र मे यह कानूनी खानापूरी कितनी अशक्त सिद्ध हुई है। इसने इस बात का भी कटु अनुभव किया है कि स्वतत्रता को कुचलने मे यह कानूनी खानापूरी कितनी शक्तिशाली सिद्ध हुई है। इसलिए आप इन नवयुवको और नवयुवतियो को अपना आशीर्वाद देकर ही क्या नही सन्तुष्ट हो जाते और यह क्यो नही समझ लेते कि कुल मिलाकर इस युवा-समाज ने सही मार्ग ही अपनाया है ? इसका अर्थ यह नही है कि आप काग्रेस को और विशेषकर मुझे अपनी सलाह से लाभान्वित न करें। पर आपको यह सलाह इस आशा के साथ नही देनी चाहिए कि उसे सदैव ग्रहण कर लिया जायेगा। मुझे आशा है कि अपनी बढती हुई वृद्धावस्था के बावजूद आप यह देख रहे हैं कि देश मे सब कुछ कितना बदल रहा है।

आपका

मो० क० गाधी

श्रीयुत सी० विजयराघवाचार्य
दि अरामा
सेलम।

३

भाई घनश्यामदास,

आपका पत्र महादेव पर देखा। आपने पोलक को बिलकुल यथाथ उत्तर दिया ह—करीब ऐसा ही उत्तर उन भाइओ के तार का मैंने भेजा था। मुझे अब भी विश्वास ह कि मेरा बिना हिन्दु मुस्लिम प्रश्न हल होते जाना व्यथ ह—हा, ऐसे प्रधान मण्डल इ० को मिलने क लिय जाना दूसरी बात है —

सुबाष बाबु फिर मिल गय बातें तो काफी हुई। लेकिन कुछ पता नहि चलता क्या ह। सेनगुप्ता का अखबारी खत कल पन्ा। देख अब ९ तारीख को क्या होता ह। सुबाप बाबु को भी आने को कहा ह।

आपका
मोहनदास

बारडोली,
३० ५ ३१

४

भाई घनश्यामदास,

यह नकल सर डारसी लिंडस के खत की ह। उसका उत्तर आकडो के साथ भेजो। मैंने य भेजा ह परतु उससे अधिक ज्ञानमय उत्तर की आवश्यकता ह।

बगाल के झगडे के बारे म तार मिला। मैंने सन गुप्ता को तार दिया ह पच कबूल कर लें बगैर शरत।

बापु

बारडोली
८ ६ ३१

मैं ९ ११ तक मुबई हुगा।

५

भाई घनश्यामदास,

इस खत पढीयो— मेरा कुछ ख्याल रहा ह कि मैं इस बारे म आपको लिख चुका हु—कैसे भी हो, यदि रघुमल ट्रस्ट म से इस सस्था को मदद मिल सके ता देने के लायक ह ऐसा मैंने माना है।

बगाल के झगडे के बारे मे पच के माफत समझौता हो सक तो करवाने का तार आज दीया है—वर्किंग कमिटी के पास यह मामला नहि आना चाहिये।

मैं मुबई म ६ ११ तक हुगा।

मोहनदास

५ ६-३१

६

श्रद्धानद बाजार
दिल्ली
२ ६ १६३१

पूज्य महात्माजी

नमस्ते।

सभव है आपको काय की अधिक्ता के काग्ण रघुमल ट्रस्ट की सभा को सहायता दन के सबध मे श्री बाबू घनश्यामदासजी बिडला तथा बा० देवीप्रसादजी खेतान को लिखना स्मरण न रहा हो। जून की १६ या १७ तारीख को इस मास रघुमल ट्रस्ट की मीटिंग होनवाली ह। आप कृपापूवक, यदि न लिखा हो तो लिखने की कृपा करें और मुझे सूचना दकर कृताथ करें।

भवदीय कृपाभिलाषी,
रामप्रसाद सन्यासी

सवा म पूज्य महात्माजी,
बारडोली, गुजरात।

परिश्रम कठोर और स्पष्ट आत्मचिंतन के अनुरूप होना चाहिए। साथ ही यदि मनुष्य का शरीर जजर हो जाए तो कठोर और स्पष्ट आत्मचिंतन असम्भव बनकर रह जायगा। 'स्वस्थ शरीर मे स्वस्थ मस्तिष्क का वास' करनेवाली कहावत बिलकुल सही ह।

दुबारा नही पढा हूँ।

सप्रेम,
बापू

श्रीयुत सतीशचद्र दासगुप्त,
१५ कालेज स्क्वायर कलकत्ता।

८

भाई घनश्यामदास

तुमार बहोत खत आय परतु उत्तर लिखने का समय हि नहि मिला। महादेव और दवदास का कुछ न कुछ लिखने का कह दिया था।

यहा के हाल कुछ नहि—कुछ समझौता हुआ भी मुझे सताप नहि हागा। महासभावाला पर विश्वास नहि रहा ह। हर जगह पर महासभावाला पर मुकद्दमे चल रहे ह। यहा मुझको कहा तक आश्वासन द सकत है? विलायत जाना भी चाहिये और जाने का दिल नहि होता। अच्छा ह इन सब बाता कि मैं चिंता नहि करता हु। प्रतिक्षण सहज प्राप्त धम आता है उसका पालन करन के प्रयत्न म हि जीवन साफल्य मानता हु।

यहा के वायुमडल देखता हुआ यदि तुमको निमत्रण न मिले तो मुझको आश्चय नहि होगा। न मिला तो भी २५ अगस्ट का अमेरिका जाने के लिए निकलना ह ?

१०

लंदन
३१ अक्तूबर, १९३१

प्रिय सर तेजबहादुर सप्रू

जब मैंने संघ विधायक समिति (Federal Structure Committee) की रिपोर्ट की १८वीं, १९वीं और २०वीं धाराओं का आपकी सम्मति से भिन्न अर्थ निकाला तो आपको तथा श्री जयकर को मेरा ऐसा करना बड़ा ही मूर्खतापूर्ण लगा होगा। पर मेरा उद्देश्य अपनी आशंकाओं को व्यक्त करना था और यदि मैं उन आशंकाओं से अनावश्यक रूप में प्रभावित हो गया होऊं तो मैं समझता हूं कि अतीत को देखते हुए मेरा ऐसा करना अनुचित भी नहीं था। यदि मेरी व्याख्या निराधार हो तो अच्छा ही है। पर जो हो, आर्थिक नियंत्रण सम्बंधी जो वचन हमें मिला है यदि उसमें किसी प्रकार का व्यवधान पैदा करने की कौशलपूर्ण चेष्टा की गई है तो मेरा यह पत्र आपको सचेत करने में सहायक होगा। हमें आर्थिक नियंत्रण तो प्राप्त होना ही चाहिए, उसमें किसी प्रकार के प्रतिबंध की गुंजाइश न रहे।

मैं मानता हूं कि अर्थविभाग के नियंत्रण का मापदंड यह होना चाहिए कि अर्थ पर हमारा कितना वास्तविक नियंत्रण है। फर्ज कीजिए हमें एक प्रतिशत नियंत्रण का अधिकार मिले और बाकी ९९ प्रतिशत सुरक्षित माना जाय, तो मैं एक व्यावहारिक व्यापारी के नाते कहूंगा कि हमारा नियंत्रण केवल एक प्रतिशत है। यदि हमें शत प्रतिशत नियंत्रण का अधिकार मिले और उसमें से ५० प्रतिशत सुरक्षित रख लिया जाय तो मैं कहूंगा कि हमें केवल ५० प्रतिशत नियंत्रण का अधिकार मिला है। अब इस आधार को सामने रखकर हमें देखना चाहिए कि हमें अर्थविभाग में किस हद तक नियंत्रण का अधिकार मिला है।

यदि आप १९वीं धारा के पूर्वांश का अवलोकन करेंगे तो ऐसा प्रतीत होगा कि कुछ परिसीमाएं लगाकर हमें शत प्रतिशत नियंत्रण का अधिकार दिया गया है। अब हमें देखना चाहिए कि वे परिसीमाएं क्या हैं। मेरी राय में १८, १९ और २०वीं धाराओं में निम्नलिखित परिसीमाएं लगाई गई हैं

१ रिजर्व बैंक की स्थापना।

२ पत्र मुद्रा या टकण सबधी विधान म सशोधन करने के पूर्व गवर्नर जनरल की स्वीकृति।

३ स्थायी रलवे बोर्ड की स्थापना।

४ ऋण व्यय, ऋण व्यय के लिए शोधन कोष, वेतन और पेंशन और सैनिक विभाग के लिए धन की व्यवस्था करन के लिए सघनित कोष (Consolidated Fund Charges) भार का सगठन।

५ जब गवर्नर जनरल को लगे कि जो ढग अपनाये जा रहे हैं उनके कारण भारत की साख को गहरा धक्का लगेगा तो उसे बजट-सम्बन्धी और ऋण सबधी व्यवस्था मे हस्तक्षेप करन का अधिकार।

मेरी राय म इन अधिकारो के अन्तर्गत समूचा आर्थिक क्षेत्र आ जाता है। इसलिए मेरी धारणा है कि इन धाराओ के तहत हमे कोई उत्तरदायित्व नही मिल पाएगा। मैं यहा अर्थविभाग का सक्षिप्त ढाचा देता हू जिससे आप अनुमान कर सकेंगे कि मैं ठीक बात कहता हू या गलत। रेलवे बजट का मिलाकर अर्थ विभाग की आय और व्यय लगभग एक अरब तीस करोड है। इसके अलावा अर्थ-विभाग के अन्तर्गत भारतीय मुद्रा और विनिमय की भी देखभाल आती है। मैं यह मानकर चलता हू (और यदि मैं अविश्वास लेकर चलू तो इन धाराओ के बुरे-से-बुरे अर्थ भी लगा सकता हू) कि रिजर्व बैंक का सृजन हम नही करेंगे और व्यवस्थापिका सभा का उस पर कोई अधिकार नही रहेगा। मैं स्वय नही चाहता कि रिजर्व बैंक के दैनिक कार्यक्रम पर किसी प्रकार का राजनतिक प्रभाव पडे, पर रिजर्व बैंक की नीति निर्धारित करने के मामले मे अतिम अधिकार व्यवस्थापिका सभा को रहे और मैं समझता हू, पत्र मुद्रा विधान म सशोधन के लिए गवर्नर जनरल की स्वीकृति प्राप्त करन की शर्त लगाकर हमसे अधिकार छीन लिये गए हैं। स्थायी रेलवे बोर्ड की स्थापना म भी हमारा हाथ बिलकुल नही रहेगा। न उस पर कोई नियत्रण रह पायेगा। इस तरह हमसे और भी चालीस करोड रुपये ले लेने की व्यवस्था की गई है। अब हमारे पास रह गये ९० करोड। इनम से ४५ करोड सेना के लिए चाहिए १५ करोड ऋण व्यय के लिए और १५ करोड रुपये पेंशन और अन्य मदो के लिए चाहिए। इस प्रकार ७५ करोड रुपये सघनित कोष भार के लिए चाहिए और इस मद का आय पर प्राथमिक अधिकार रहेगा। इस प्रकार हमारे पास १३० करोड म से केवल १५ करोड बचे। जिस किसी को भी १३० करोड की आय मे से ११५ करोड व्यय करने का प्राथमिक अधिकार प्राप्त होगा वह हमारी बजट-सम्बन्धी और उधार लेने की

व्यवस्था म पग पग पर हस्तक्षेप करना चाहेगा, और यही कारण है कि गवनर जनरल का हस्तक्षेप करन का अधिकार दिया गया है। अनिश्चित भारतीय ऋतु म ५ स १० करोड तक उतार चढाव अवश्यभावी है। इस तरह कदम-कदम पर गवनर जनरल द्वारा अथ-सदस्य पर नियत्रण का खतरा बना रहगा। और अथ सदस्य का गवनर जनरल के हाथ की कठपुतली बनन को बाध्य होना पडेगा। अत मरी राय म इन तीन धाराओ के अतगत लोकप्रिय अथ मत्री को किसी प्रकार का नियत्रण-सम्बधी अधिकार नही मिला है। मरा कहना है कि य धाराए रिजव बैंक तक ही सीमित नही हैं जैसा कि आप मानते हैं, बल्कि समूचे क्षेत्र पर व्याप्त है।

आप पूछ सकते हैं तो फिर उपाय क्या है ? मैंने कल कहा था कि ये धाराए सघनित काप भार क सगठन का स्वाभाविक परिणाम हैं। इसके दो विकल्प हो सकते हैं या तो सघनित काप भार के लिए सुझाई गई राशि को अत्यधिक सकुचित कर दिया जाय, या फिर गवनर जनरल को हमारी चूक होने तक हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार न रहे। मेरी राय म तो हम इन दोनो विकल्पो की माग करनी चाहिए। सेना के लिए निर्धारित रकम म कमी करके तथा ऋण अदायगी म कुछ छूट लेकर सघनित कोप को सकुचित किया जा सकता है। केंयल न मुझ बताया है कि इस प्रकार की सहायता की माग की जा सकती है। उनका कहना है कि अपने ऋणा म से कुछ के रद्द किये जाने की माग करन के बजाय, जैसा कि कांग्रेस कर रही है हम ब्रिटेन से उन ऋणो को पूजी का रूप देने की माग कर सकत है। जो हो, यदि हमे भारत के लोकोपयोगी विभागा के लिए रुपय की व्यवस्था करनी है तो हम ठोस सहायता के लिए अवश्य झगडना चाहिए। यदि सैनिक व्यय घटाकर ३५ करोड कर दिया जाय और ब्रिटेन से सहायता मिलने के बाद ऋण व्यय और अन्य मदो पर निर्धारित व्यय २० करोड रह जाय तो कुल सघनित कोप भार ५५ करोड स अधिक नही रहेगा। यदि रिजव बक और स्थायी रेलवे बोड की स्थापना सोलह आने हमारे हाथ की बात है और उस पर आम नीति के मामल म व्यवस्थापिका सभा का पूरा नियत्रण रहे तो मैं समझता हू अथ सदस्य को काफी स्वतत्रता रहेगी। वैसी अवस्था म यह उचित तक पेश किया जा सकता है कि कुल १३० करोड की आय म गवनर जनरल का सवप्रथम व्यय केवल ५५ करोड है। इसलिए उसे बजट-सम्बधी और आतरिक उधार सम्बधी व्यवस्था मे दखल देने का अधिकार नही होना चाहिए।

मैं समझता हू मैंने अपने मुद्दे को अच्छी तरह स स्पष्ट कर दिया है। मुझे इसमे तनिक भी सदेह नही है कि मेरी आशका दुरुस्त और वाजिब है। मैंने इन तीन

धाराओ का जो अथ निकाला है मेरी राय म उनका यही अथ हो सकता है। अग्रेज भी इन धाराओ का दूसरा अथ नही निकालेंग पर यदि आपका अब भी यही विश्वास हो कि ये धाराए रिजव बक की स्थापना तक ही सीमित हैं तो मरा सुझाव है कि उनके वाक्य वियास म परिवतन कराके आप इस बात का साफ करा लीजिए। मैंन इनका दूसरा अथ निकाला है। इसीलिए तो मैंने कहा था कि उनका स्थान प्रस्तावित अथ परिषद नही ले सकती है। यदि प्रस्तावित अथ परिषद का गठन हमार ऊपर छोड दिया जाय तब तो वह बिलकुल निर्दोष वस्तु सिद्ध होगी, जबकि इन तीनो धाराओ क द्वारा गवनर जनरल को हमारे समूचे आर्थिक ढाचे पर पूरा अधिकार दे दिया गया है। वास्तव म आर्थिक विभाग के तथाकथित नियत्रण को शूय कर दिया गया है।

आशा है आप मर नोट पर ध्यानपूवक विचार करेंगे।

भवदीय
घ० दा० बिडला

पुनश्च

मैंने इतन विस्तार के साथ कवल इसलिए लिखा है, कि आपको अपना यह मतव्य स्पष्ट कर दू कि यदि फारमूले को उसी रूप म स्वीकार कर लिया गया, जिस रूप म हम लोगा ने १८वें पैरे के आधार पर कल विचार किया था तो जब तक सनिक-व्यय और ऋण-व्यय की मदो म भारी कमी करन की व्यवस्था नही की जाएगी तब तक बजट-सम्बधी व्यवस्था म गवनर जनरल द्वारा हस्तक्षेप बराबर होता रहेगा। यदि उपयुक्त सुझाव के अनुसार इन दोनो मदा म कमी कर दी गई तो ब्रिटिश सरकार और व्यापारिक हितो को यह माग करने का अधिकार नही रहेगा कि गवनर जनरल बजट-सम्बधी व्यवस्था मे दखल दें। मैं यह 'पुनश्च सारी बात थोडे शब्दो म बतान के लिए द रहा हू।

घ० दा० बिडला

११

लदन
२ दिसम्बर, १६३१

प्रिय डाक्टर जयकर

कल किंग स्ट्रीट मे बातचीत के दौरान आपने गोलमेज परिषद म दी गई मेरी स्पीच को नापसन्द किया था। मैं आपकी सम्मति का आदर करता हू, इसलिए मुझे बडा दुख हुआ कि आप मेरे विचारो से असहमत है। पर मैं इतना अवश्य कहूगा कि मैंने कोई बात अचानक ही नही कह दी है। मैंने गत ३१ अक्तूबर को सर तेजबहादुर सप्रू को जो पत्र लिखा था उसकी एक प्रति आपके पास भी भेज दी थी और उसके बाद मुझे यह समझाने के लिए कि मैं गलती पर हू न तो आपने मुझसे बात की न सर तेज ने ही। इसलिए मैं इसी नतीजे पर पहुचा हू कि १४ १८ और २१ धाराओ का मैंने जो अथ निकाला है उससे आप सन्तुष्ट है। आपने तो मेरे पत्र की पहुच तक स्वीकार नही की। पर मुझे जिस बात से निराशा हुई वह यह थी कि सघ विधायक समिति म सर तेज न मेरी आशकाओ को दूर करने के बजाय और भी आगे बढकर १४ १८ और २१वें परा का उनके मूल रूप म समथन करने के बाद अभिरक्षणा के सम्ब ध म सर सेम्युअल होर क वक्तव्य का भी समथन किया है। आर्थिक अभिरक्षणो पर सघ विधायक-समिति की जो अन्तिम रिपोट निकली है, उसम एक प्रकार से सर सेम्युअल होर के वक्तव्य को ही नये परिच्छेदो म रख दिया गया है। सर पुरुषोत्तमदास न तो सघ विधायक समिति म दोष दिखाने की चेष्टा भी की थी पर उन्ह आपकी ओर से कोई सहायता नही मिली।

अब स्थिति यह है कि १४ १८ और २१वें परा म अभिरक्षणा को जिस रूप मे पेश किया गया है उसकी पुष्टि हो गई है। साथ ही यह भी सुझाया गया है कि फिलहाल इन अभिरक्षणो की विस्तृत व्याख्या करना जरूरी नही है। मेरी राय म तो अब इसमे तनिक भी सदेह नही रहना चाहिए कि अभिरक्षणा का क्या मम है। उनकी उपलक्षणाए अब मेरे लिए बिलकुल स्पष्ट हैं और मैंने ३१ अक्तूबर को सर तेज के नाम लिखी अपनी चिट्ठी म जो विचार व्यक्त किये थे, अब उनकी पुष्टि हो गई है।

मुझे यह कहते हुए बडा खेद है कि जब सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास ने सघ विधायक समिति म स्थायी रेलवे बोड का प्रश्न उठाया, तब भी उनको वही

अनुभव हुआ। प्रशासनीय मामला म पक्षपात बरतने के प्रश्न पर भी सर तज बहादुर सप्रू न इस विचार का समथन किया कि इसका निणय सुप्रीम कोट के द्वारा कराया जाय। इस मामले म भी सर पुरुषोत्तमदास पर वही गुजरी। मेरी राय म इस प्रकार बहुत ही खतरनाक सिद्धात का जन्म देने की बात सोची जा रही है। यह सचमुच बडे दुभाग्य की बात है कि जिन मामला म हम अन्तरग ज्ञान रखन का दावा कर सकते हैं उनम भी हम आपका और सर तज का समथन प्राप्त नही हो सका।

मैं आपसे इस विषय म सहमत नही हू कि १४ १८ और २१वें परा को दुहराने के प्रश्न पर अब भी विचार विमश की गुजाइश है। पर मुझे यह देखकर दुःख होता है कि हम उन्हें यहा दुहराने का अवसर मिलने पर भी ऐसा नही कर सके। आपन कहा महात्माजी से कहा था कि प्रधान मत्री के भाषण के द्वारा अब सारे प्रश्न पर दुबारा विचार करन की गुजाइश पैदा हो गई है। मुझे ताज्जुब है कि आपन इस वक्तव्य का यह अथ कस निकाला है। भावी ढाचे का निर्माण उन रिपोर्टों के आधार पर ही किया जा सकता है जो मैंने पश की हैं और जिन पर आप अभी तक दढ हैं और जिनके द्वारा जहा तक अथविभाग का सम्बध है हम रत्ती बराबर भी नियत्रण नही मिलता है सेना और विदेश विभागा की तो बात ही जुदा है।

जो कुछ किया जा चुका है जो कुछ तय हो चुका है गोलमेज-परिषद की कायकारिणी समिति उसमे कोई परिवतन नही कर सकती है। वह तो केवल उन्ही मामला को आगे बढा सकती है जिन पर निश्चय किया जा चुका है पर अभी न उसकी काय सीमा ही निर्धारित की गई है, न यही तय किया गया है कि उसके जिम्म क्या-कुछ सौंपा गया है।

मैं आपको आश्वासन देता हू कि मैं बात समझने के लिए तयार हू और यदि मेरा समझ म आ जाय कि मैं ही गलती पर हू तो मेरी चिन्ता दूर हो जाएगी पर मुझे कहना पडता है कि आपने हमे यह बताये बिना कि हमारी आशकाए निमूल हैं कुछ विशेष निष्कष स्वीकार कर इस दिशा म मेरी सहायता नही की। जो हो यह तो म व्यक्तिगत विचार-प्रवतन करने के लिए लिख रहा हू। मुझे आशा रखनी चाहिए कि आप ठीक माग पर होंगे। क्या मैं व्यवस्थापिका सभा की पुरानी नेशनलिस्ट पार्टी के एक पुराने सहयोगी के नाते यह सुझाव रख सकता हू कि आप यह स्पष्ट कर दें कि गोलमेज परिषद् म बहुमत से जो आर्थिक अभिरक्षण पास किय हैं वे आपको स्वीकार नही है और आप इस प्रश्न पर और

ऊपर कहे अन्य प्रश्नों पर दुबारा विचार किए जाने की माग करेंगे ? मुझे हृदय से विश्वास है कि आप अब भी ऐसा करने में समर्थ होंगे।

भवदीय,
घ० दा० बिड़ला

१०

एक ऐसी रहस्यमयी शक्ति है जो परिभाषा से परे है पर जो हरएक पदार्थ पर छाई रहती है। मुझे इस शक्ति की अनुभूति तो होती है पर उसे देख नही सकता। यह शक्ति देखी नही जा सकती पर जिसकी प्रतीति हम सबको है। यह प्रमाण की परिधि से बाहर है क्योंकि यह उन सभी पदार्थों से भिन्न है जिन्हें हम पचेन्द्रिया द्वारा जान सकते हैं। साथ ही भगवान का अस्तित्व सीमित मात्रा मे तक विवेक द्वारा सिद्ध करना सम्भव है। अपने रोजमर्रा के कार्य-कलाप म हम देखते हैं कि लोग-बाग यह नही जानते कि उन पर कौन शासन करता है कैसे करता है और क्या करता है। पिछले साल मैंने मैसूर का दौरा किया तो मैं ऐसे अनेक गरीब ग्रामीणों के सम्पर्क म आया जो पूछने पर यह नही बता सके कि मसूर का शासक कौन है। उन्होंने सिर्फ यही कहा कि मसूर का शासन कोई देवता करता है। इसलिए यदि इन बेचारों को अपने राजा के विषय मे इतनी कम जानकारी है तो मैं तो भगवान की तुलना म उनकी अपने शासक के मुका बले नगण्यता से कही अधिक नगण्य हूं, यदि म राजाओं के राजा भगवान के अस्तित्व की ओर से बेखबर रहूं तो इसम आश्चर्य की कौन-सी बात है? तिस पर भी जिस प्रकार मसूर के ग्रामीणों की अनुभूति के समान मुझे भी अनुभूति होती है कि ब्रह्माण्ड का सचालन सुव्यवस्था के साथ हो रहा है। प्रत्यक पदार्थ और प्राणि मात्र एक अपरिवर्तनशील विधान द्वारा सचालित होते ह। यह विधान अंधा नहीं है, क्योंकि कोई भी जड विधान सजीव व्यक्तियों को सचालित नही कर सकता और अब तो सर जगदीशचद्र बसु की अदभुत खोज न यह सिद्ध कर दिया है कि स्थूल पदार्थ म भी प्राण है। अतएव वही विधान जो प्राणि मात्र को नियत्रण म रखता है साक्षात भगवान है। विधान और विधान की रचना करने वाला दोनों एक है। मैं विधान या विधान के रचयिता के अस्तित्व से इन्कार नही कर सकता क्योंकि इस मामले म मेरा ज्ञान नही के बराबर है। ठीक जिस प्रकार एक पार्थिव शक्ति के अस्तित्व को अस्वीकार करने अथवा उसके विषय म अन जान बने रहने से वस्तुस्थिति म कोई अन्तर नही पडता, ठीक उसी प्रकार

१
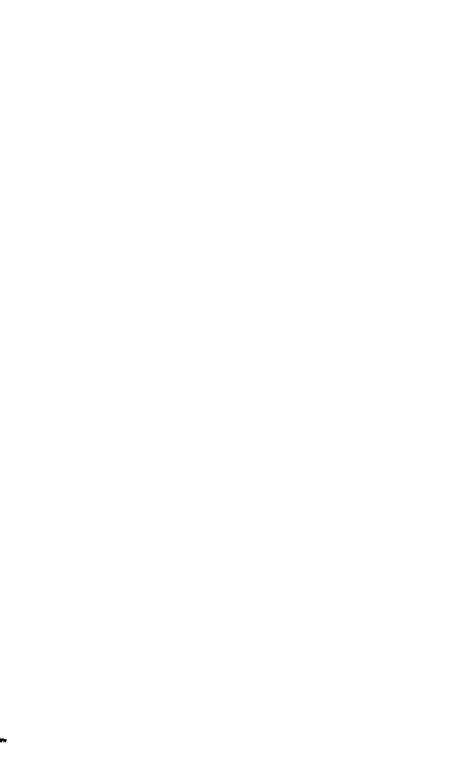
४ जनवरी १९३२

पूज्य बापू

हिन्दी पत्र जल्दी ही निकलेगा। पर अंग्रेजी संस्करण निकालने में हमें कुछ देर लगेगी।

मैं यही सोच रहा हूं कि अंग्रेजी पत्र का क्या नाम रखा जाय पर अभी तक कोई अच्छा सा नाम ध्यान में नहीं आया है। उसका नाम 'प्रायश्चित्त' रखा जाय, तो कैसा रहे? इस नाम से हमारे उद्देश्य का भी पता चलता है इसलिए मैंने सोचा शायद आपको यह नाम पसन्द आये।

कृपा करके, यदि सम्भव हो तो तार द्वारा सूचित कीजिए कि आपको यह नाम पसन्द है या नहीं। यदि नहीं तो कोई और नाम सुझाइएगा।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गांधी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार,
पूना।

२

निजी

इंडिया आफिस,
व्हाइट हाल
२७ जनवरी १९३२

प्रिय श्री बिडला

मैंने आपको वचन दिया था कि मैं आपके इस सुझाव के बारे में कि वित्तीय संरक्षणों के प्रश्न पर विचार करने का काम एक ऐसी विशेष समिति[1] के सुपुर्द

[1] मैंने अनुरोध नहीं किया था और इस बारे में मुझे कोई दलील नहीं देनी थी। —घ

किया जाए जो वित्तीय मामला से अभिज्ञ हो, पर जो गोल मेज कार्फेंस की परामशदायिनी समिति के सदस्य न हो, अपना म तव्य दूगा। कुल मिलाकर मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि गोल मेज कार्फेंस द्वारा जिस आम नीति का निर्देश हुआ है उसका कार्यान्वित करन के लिए हमन एक परामशदायिनी समिति बनाई है। अब उसके ऊपर सभी उप-समितियो की व्यवस्था नादें जो गोल मेज कार्फेंस के सदस्य न हो, तो यह एक गलत कदम होगा। मरी धारणा है कि ऐसी व्यवस्था से ता अस्तव्यस्त करनेवाली शाखाए फूट निकलेंगी। मैं समझता हू, सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास परामशदायिनी समिति म भाग लेने म असमथ है। आप उक्त समिति म स्थान पान की माग कर सकते हैं और यदि आप ऐसा करेंगे तो निस्सदेह उसके सदस्य नामजद हो ही जायेंगे।

भवदीय,
सेम्युअल होर

श्री घ० दा० बिडला

२

बिडला हाउस
अल्बूकक रोड नई दिल्ली
१४ फरवरी, १९३२

प्रिय सर सेम्युअल,

आपके २७ जनवरी के पत्र के लिए मैं अत्यन्त आभारी हू। मुझे खेद है कि मेरा यह सुझाव कि सारे आर्थिक मामलो पर विचार करन के लिए एक पथक उप-समिति बनाई जाये, आपका पसद नही आया। मैं आपस इस सुझाव पर पुनर्विचार करन का अनुरोध करता हू, क्योकि वित्तीय समस्याओ पर बुद्धिसगत विचार इस विषय के जानकार लागो की अनुपस्थिति मे सम्भव नही है।

आपने यह सुझाव दन की जो कृपा की है कि यदि मैं समिति म आना चाहू तो मुझे नामजद कर दिया जायगा, उसके लिए आभारी हू पर मै समझता हू कि मरे लिए एसा रुख अपनाना उचित नही हागा। ऐसी दशा म मैं फेडरेशन के प्रति गैर-वफादारी का सबूत दूगा और इस प्रकार किसी भी अच्छे काम म हाथ

वटान के अयोग्य समझा जाऊंगा। मैं अपन दश की तथा सहयोग के हितो की सबसे उत्तम सवा यही कर सकता हू कि फेडरशन को अपना सहयाग प्रदान करने को राजी करू। कायकारिणी समिति क काय क्लाप मे भाग लेने के मामले म मेरे और सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास के विचार एक जस हैं। इसके अलावा भारतीय व्यापारी वग के प्रतिनिधि की हैसियत के लिहाज से वह मुझसे अधिक अच्छे हैं। वह अधिक काय कुशल हैं अधिक अनुभव रखत है और अधिक योग्य हैं। यदि हम दोना फेडरशन को अपना रवैया बदलने को राजी कर सकें, तो मुझ इसम तनिक भी सदेह नही कि वह भारतीय व्यापारी वग का प्रतिनिधित्व करने के लिए सबस अधिक उपयुक्त सिद्ध होग।

फेडरशन न अपनी बठक इसी प्रश्न पर पुनर्विचार करने के लिए बुलाई है। उसके बाद मैं आपको फिर लिखूगा। मैं ता यह भी चाहूगा कि मेर और आपके बीच जो बातें हुई है उनस वाइसराय महोदय को भी अवगत करा दिया जाये ताकि आवश्यकता पडने पर वह और मैं विचार विमश कर सकें और आपको कष्ट न दें।

मैं दिल्ली फेडरेशन के शीपस्थ सदस्यो से इस मामले पर बातचीत करन आया था अब कल कलकत्ता लौट रहा हू। वहा मैं मि० बेंथल और अ य लोगो से व्यवसाय और वाणिज्य म दिलचस्पी रखनेवाले दोना वर्गों के निकटतर सहयोग के प्रश्न पर चर्चा करूगा।

भवदीय
घ० दा० बिडला

सर सेम्युअल होर

४

भाई घनश्यामदास

तुमार पत्र की मैं प्रतीक्षा कर रहा था। हा मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। और सरदार का भी। प्रात काल म ८ ३० बजे मध गरम पाणी और आधा लिंबु पीता हू। ७ बजे २॥ ताला भुजी हुई बादाम पीसकर ३० खजूर हमारे रमेश ग। १२

बजे फिर मध निंबु गरम पाणी, ४ बजे कुछ भाजी हमारा १५ खजूर और १ तोला बादाम। भाजी दो दिन से हि शुरू की है। उससे पहले ३० खजूर लेता था। कोई रोज ४ बजे पपीता लेता रहा। अब नहिं ले सकता हु क्योंकि भाजी पाचवी चीज होती है। पपीते की कोई आवश्यकता नहिं है। इस तरह करीब २५ रोज से चल रहा है। इसके पहले आधी रतल दूध फजर मे और आधा रतल दही शाम को लेता रहा। परंतु दूध कुछ भारी-सा लगा और कुछ भी बहाने से छूट जाय तो मुझे आनंद होना है इसलिए अब तो दूध छूट गया है—कहां तक छूट रहेगा, मैं नहिं जानता। मेरा वजन कायम रहा है। २०६ रतल है। खजुर भेजो। मेरे पास तो अच्छी खजुर है। जेराजाणी ने भेजी है नई है अच्छी है।

मुझको मिलने के लिए तो दिल्ली या मुंबई लिखना होगा। केवल मित्र भाव से हि मिलने का प्रयोजन बनाने से इजाजत मिले तो मिलें यहां से कुछ नहिं हो सकता।

करसी के बारे मे थोडे पुस्तक तो इकट्ठे किये हैं। हां, अवश्य जो चाहे सो भेजो मैं इस शास्त्र का यथासम्भव यथाशक्ति अभ्यास तो कर लेना चाहता हु। कुछ लिखकर भी भेजोगे तो मैं पढ लुगा।

अमेरिका का अनुभव लिखो शरीर कैसा रहा कहां कहां घूमे बटलकीक मे क्या देखा ? होम्स से मिले थे ?

बापु के आशीर्वाद

२२ ७ ३२

५

इंडिया आफिस
व्हाइट हाल
२८ फरवरी १९३२

प्रिय श्री बिडला,

आपके १४ फरवरी के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि आप और पुरुषोत्तमदास शासन विधान सम्बन्धी विचार विमर्श के प्रति अपने रवैये में परिवर्तन करने के लिए फेडरेशन को राजी करने

की चेष्टा कर रहे हैं मैं इस काय म आपकी सफलता की कामना करता हू। फेड-रशन की बैठक की समाप्ति के बाद पुन आपका पत्र पान म मेरी दिलचस्पी रहेगी। मुझे यह जानकर भी खुशी हुई कि आप श्री बेंथल के साथ विचार विमश कर रहे हैं जिससे व्यवसाय और वाणिज्य के मामले मे निकटतर सहयोग की भावना उत्पन्न हो सके।

एक और अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है, जिसकी ओर आपका और सर पुरुषोत्तमदास का ध्यान दिलाना आवश्यक है। वह विषय ओटावा कान्फ्रेंस का है, जो आप जानते ही होंगे आगामी ग्रीष्म ऋतु म होनेवाली है। जहा तक भारत का सम्बन्ध है चुगी के प्रश्न पर साम्राज्य के विभिन्न उपनिवेशो के पारस्परिक सम्बन्धो के इतिहास से मैं अवगत हू, पर आपने तो देखा ही होगा कि सम्राट की नयी सरकार ने एक नयी नीति अपनायी है जिसके अन्तगत भावुकता और राजनीति का गौण और आर्थिक हितो को प्राधान्य दिया जायगा। यदि भारत ने उक्त कान्फ्रेंस म इस भावना के साथ भाग नही लिया जिसके फलस्वरूप दोनो देशो के व्यापार-व्यवसाय के पारस्परिक हित-साधन के निमित्त आपस म बातचीत सम्भव हो सकती है, तो मुझे बडी निराशा होगी।

भवदीय
सेम्युल होर

६

१ मार्च, १९३२

पूज्य बापू

आपके पत्र के आधार पर मैंने आपकी खुराक की तालिका तैयार की है जिससे पता लग सके कि आप दिन म जितना खाते हैं उसकी कितनी कैलोरी बनती हैं। आपने यह नही लिखा कि शहद कितना लेते हैं, सो मैंने प्रत्येक बार के भोजन के लिए १ औंस शहद मान लिया है। आप जो खाते हैं, उसमे प्रोटीन

और चर्बी यथष्ट नही है, पर विटामिन काफी है और लोहा और चूना भी खूब है। लवण की बहुतायत है, सो भी अच्छा ही है। आप जितना कुछ खा रहे है यदि उसके साथ बीस औस दूध भी ले लें तो बहुत बढिया सतुलन हो जाए। आप इस समय अपने आपको प्रोटीन से इतना वचित रख रहे हैं कि आप जितना खा रहे हैं उसके साथ आप प्रतिदिन बीस औस दूध नही पचा सकें इसका मैं कोई कारण नही देखता हू। इससे मुझे कुछ चिंता हो गई है। जो तालिका जा रही है उसमे खाद्य पदार्थो की सख्या ६ तक पहुचती है, फलत आपके पत्र को ठीक ठीक समझन म मैंने कुछ गलती की है। यदि आप दूध लेना शुरू कर दें तो टमाटर छोड सकते हैं सब्जी को तो रखना ही होगा। जो भी हो इस तालिका को आप कुछ रोचक पायेंगे। जबसे मैंने सतुलित भोजन का विज्ञान समझा है, मेरा वजन बढा है और स्वास्थ्य अच्छा रहा है। मैं बटल क्रीक मे एक सप्ताह ठहरा और वहा मैंने एकमात्र उपयोगी वस्तु खुराक के बारे मे ही सीखा। मैंने देखा कि मैं प्रोटीन बहुत ज्यादा ले रहा हू और कार्बोहाइड्रेट कम। अब मैंने अपनी खुराक को सतुलित कर लिया है, दूध कम कर दिया है और उसका स्थान शहद किशमिश और खजूर को दे दिया है। म जो खाता हू उसमे १५० कलोरी प्रोटीन है ५०० कलोरी चर्बी ह और १४०० कैलोरी कार्बोहाइड्रेट है। यह सब मैं २० औस दूध १० औस खजूर (जो सख्या म ४८ बठती हैं), २७ औस फलो के रस, ३ औंस गहू के आटे तथा प्रचुर मात्रा म सब्जी से प्राप्त करता हू। आलू भी लेता हू पर नमक बहुत ही कम। मुझे वहा डाक्टर न बताया कि मेरे उदर म खट्टेपन की बहुतायत हैं, इसलिए मुझे बिलकुल सादा भोजन करना चाहिए जिसस अतडियो म तिक्त द्रव्य न बनने पाये। फलत मैंने सारे खट्टे पदार्थ छोड दिये। डाक्टरो न मेरी दो दिन लगातार परीक्षा की और अत मे व इस नतीजे पर पहुचे कि मरे शरीर मे कोई दोष नही है। एकमात्र दोष गुदा म है जो बवासीर के मस्सो के कारण मल के जमाव स उत्पन्न हुआ है। इसके लिए उन्होने आपरेशन बताया। उन्होन बवासीर के लिए गुदा म कई इजक्शन भी दिये जिनसे बडा लाभ हुआ। उन्होने बताया कि मेरे निम्न रक्तचाप का कारण कार्बोहाइड्रेट का अभाव है। जबस मैंने अपनी खुराक म हेर फेर किया है रक्तचाप कुछ ऊपर गया है पर वजन बहुत सतोषजनक है तथा स्नायु मडल पहले से अधिक सयत दिखाई पडता है क्योकि मैं पहले से अधिक प्रसन्न रहता हू।

अलग पासल से खजूर के दो टीन भेज रहा हू। केलिफोर्निया से कलकत्ते को तीन टीन भेजे थ, पर मेरे भाई को पता नही था कि वे आपके लिए हैं इसलिए

मेरे यहा पहुचते पहुचते एक टीन खाली हो गया। ये खजूर अपने यहा की खजूरो से बडी हैं। पर इनमें ४० प्रतिशत गन्ने का रस रहता है जबकि हमारी मामूली खजूरो म केवल १० प्रतिशत गन्ने का रस और शेष खजूर का रस रहता है। गन्ने की चीनी को जल्दी नही पचाया जा सकता, इसलिए मैं आपको दोनो प्रकार की खजूर एक साथ इस्तेमाल करने की सलाह दूगा। मैं जानता हू कि आप गुड भी खाते हैं, पर मेरी सलाह है कि आप गन्ने की शक्कर से यथासम्भव दूर ही रहें। आप भुने हुए बादाम ले रहे हैं। मेरी राय म बादाम को भूनने से उसकी चर्बी और विटामिन की मात्रा घट जाती है। कच्चे बादाम ही लेना अच्छा है।

अमरिका की आर्थिक अवस्था तो इग्लैंड की जैसी आर्थिक अवस्था थी, उससे भी गई-बीती है। इसका एकमात्र कारण यही है कि वहा इग्लैंड के मुकाबले गरीब और अमीर म अधिक अतर है। इग्लैंड मे उदर पूर्ति के लिए सरकार से जो मिलता है वह नैतिक दृष्टि से भले ही ठीक न लगे, पर उसके द्वारा अमीर को गरीब के स्तर पर लाने की दिशा म प्रगति अवश्य हुई है। इसके विपरीत अमेरिका म सारा रुपया सोने मे बदल दिया गया है जबकि फसलें पडी सड रही हैं उनका कोई खरीदार नही है। आप वहा नही गये, अच्छा ही हुआ। वहा लोग 'डालर' के नशे म मतवाले हो गये हैं। वहा न अध्यात्मवाद है, न कोई ऐतिहासिक परपरा। सस्कृति के मामले म वे लोग इग्लैंडवालो से कहीं अधिक पिछडे हुए हैं। मुझ तो वह देश बिलकुल अच्छा नही लगा। नैतिक आचरण और चरित्र बल के मामले में उनकी विचारधारा विचित्र है। मैं वहा पर्यटन के लिए नही गया था। मेरा लक्ष्य विशुद्ध व्यावसायिक था, पर साथ ही साथ मैंने वहा के लोगो का अध्ययन भी कर लिया। वहा की जिस चीज से मैं विशेष रूप से प्रभावित हुआ, वह थी वहा की नीग्रो जनता की खुशहाली। वहा दक्षिण के प्रदेशो म उन्हें श्वेत जनता यदा कदा सताती हैं प्राण तक ले डालती हैं, पर आर्थिक दृष्टि से उनकी दशा भारत के मध्यम वर्ग से कहीं अधिक अच्छी है और शिक्षा के क्षेत्र म भी कोई शिकायत नही की जा सकती। इस प्रकार वहा की नीग्रो जनता को श्वेत जनता के समान ही अधिकार प्राप्त हैं।

मैं न्यूयार्क म अधिक नही ठहरा। मैं न्यूयार्क राज्य से लास एन्जेल्स गया और रास्ते में टैक्सास और अन्य दक्षिणी राज्यो म से होकर गुजरा और वापसी म उत्तरी राज्यो के मार्ग से आया। मेरे कथन का साराश यह है कि मुझे अमरिका

अधिक नही रुचा। लास एंजेल्स म मुझे अपनी स्पीच ब्राडकास्ट करने का निमत्रण मिला था। जनता आपके बारे मे जानन का बहुत उत्सुक थी पर भारत के बारे मे उसे कोई विशेष दिलचस्पी नही थी।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा गाधी
यरवडा जेल,
पूना।

७

भाई घनश्यामदास,

कितना परिश्रम? मेरे खुराक के फेरफार स घबराहट का कोई कारण नहि ह। कैलारि पर मेरा विश्वास नहि ह या कम ह। उन लोगो का प्रमाण सब उन्ही लोगो के लिए हैं हम उनका मुकाबला कस कर सकते हैं? प्रत्येक धदा को भी कैलोरि का प्रमाण निकालने म देखना चाहिय। अब मैं चार औंस रोटी का टोस्ट भी लेता हु। खजुर मिल गई ह। मेरी दष्टि मे अरबस्तान स जो अच्छी खजुर आती ह वह इससे अच्छी ह। मेरे पास जो खजुर आती हैं वह अच्छी हि हैं। दूध की आवश्यकता सिद्ध होने से शीघ्र लूगा। चिंता न करें।

अमेरिका के हाल पढकर मुझे कुछ आश्चय नहि हुआ। परतु वहा सज्जन भी काफी पडे हैं।

वहा की जलवायु तुमार लिये अनुकूल था क्या? तुमको खुराक का प्रमाण मिल गया है जानकर आनद हुआ। मालवीजी महाराज कस है? सरदार कहते हैं रामेश्वरदास बीमार थे, मुझे पता नही था अब कमे हैं?

बापु के आशीर्वाद

७-३ ३२

८

बिड़ला हाउस,
नई दिल्ली
१४ मार्च १९३२

प्रिय सर सम्मुखम

आपके २५ फरवरी के पत्र के लिए धन्यवाद। हमारी समिति की बैठक हो गई। इस पत्र के साथ पास किए गए प्रस्ताव की एक प्रति भेजता हूं। जैसा कि आप स्वयं देखेंगे प्रस्ताव के द्वारा समस्या का तुरन्त हल तो उतना नहीं होता है पर उसके द्वारा सहयोग की नीति अपनाने की बात निश्चित रूप से तय कर दी गई है। प्रस्ताव के पहले भाग में हमने सरकार से दमन की वर्तमान नीति में परिवर्तन करने का अनुरोध किया है दूसरे भाग में हमने उस अर्थ का खंडन किया है जो सर जार्ज रेनी ने हमारे पहले प्रस्ताव का लगाया था और तीसरे भाग में हम उस समिति को अपना सहयोग निश्चित रूप से प्रदान करते हैं जिसकी नियुक्ति हमारे सुझाव के अनुरूप सारे आर्थिक मामलों पर विचार करने और उनका सर्व सम्मत हल खोज निकालने के लिए होनी चाहिए। हमने इस मामले पर विशद रूप से विचार विमर्श किया और बैठक में स्पष्ट रूप से यह तय कर लिया गया कि यदि सरकार ने हमारे सुझाव को अपना लिया और हमारे अनुरोध के अनुसार एक समिति नियुक्त कर दी तो संघ उस नयी समिति में भाग लेने को तो तैयार होगा ही, साथ ही वह परामर्शदायिनी समिति में भी भाग लेगा।

इससे आगे बढ़ना सम्भव नहीं था। संघ की सदस्य संस्थाओं से जो सम्मतियां प्राप्त हुई वे अत्यधिक बहुमत से भाग न लेने के पक्ष में थीं। पर समिति ने इस मामले में पथप्रदर्शन करने का जिम्मा अपने ऊपर लेकर इन अनेक मण्डलों के दृष्टिकोण के बावजूद सहयोग प्रदान करने का निश्चय किया—हां, कुछ शर्तों के साथ। वार्षिक अधिवेशन २६ और २७ मार्च को होगा। उस समय इस प्रस्ताव की पुष्टि करानी होगी। यह पुष्टि आवश्यक है, क्योंकि हमने अपने मण्डलों की आम राय के खिलाफ आचरण किया है। पर समिति ने एकमत से इस प्रस्ताव पर अपने अस्तित्व की बाजी लगा दी है, और यदि यह प्रस्ताव पास नहीं हुआ तो सबने मिलकर इस्तीफा देने का निश्चय कर लिया है। उन्होंने सब प्रकार से भारी साहस का परिचय दिया है और मुझे आशा है कि प्रस्ताव अपने वर्तमान

रूप म पास हा जाएगा। ऐसी अवस्था म, मैं समझता हू, मुझे अपने मूल सुझाव को स्वीकार कर लिये जाने के लिए आप पर जोर डालना चाहिए क्योंकि अब यह सुझाव सघ न वतमान प्रस्ताव के रूप मे अपना लिया है।

आपको पिछली बार लिखने के बाद मैंन लाड लोदियन और सर जाज शुस्टर से बात की और उ हें बताया कि जो लोग आर्थिक मामला का समझते ही नहीं हैं, उनसे आर्थिक अभिरक्षणो की चर्चा करना व्यथ समय नष्ट करना है। मैंने उ हें यह बात सुझाई कि ऐस मामला का व्यावहारिक हल तलाश करन का एकमात्र माग यही है कि दोनो पक्षा के अनुभवी व्यापारी एक साथ बैठें और सब सम्मत हल ढूढ निकालें। लाड लोदियन और सर जाज शुस्टर दोनो को मेरा सुझाव बहुत ही पसद आया और उ्होने आपको पत्र लिखने का वचन दिया। आशा है उन्होंन लिखा होगा। मैं दो एक दिन मे शुस्टर से मिलूगा और १७ तारीख को वाइसराय से भी मिल रहा हू पर मरा आपसे यही अनुरोध है कि आप अपन रख पर दुबारा विचार करें। यदि आप एसी समिति नियुक्त कर सकें चाह वह परामशदायिनी समिति के तत्वावधान म ही क्यो न हो जिसमे एक ओर लाड रीडिंग और सर बमिल ब्लक्ट जस आदमी हा और दूसरी ओर हमारे पक्ष के भी उतन ही व्यक्ति हा और सब मिलकर सारे आर्थिक मामलो पर चर्चा करें, तो मुझे यकीन है कि उसका फल बहुत अच्छा निकलेगा।

शायद क्राति की ओर उ्मुख भारत और एक अत्य त अनुदार पार्लमिंट मे इस समय समझौता सम्भव न हो, पर मेरा निवेदन यह है कि वतमान पार्लमिंट और काग्रेस से असम्बद्ध प्रगतिशील भारतीय लोकमत के बीच समझौता अवश्य सम्भव है। बस, मैं इसी दिशा मे आपकी सहायता और पथप्रदशन चाहता हू। मैं चाहता हू कि आप यह बात समझें कि यदि विधान को काग्रेस की तो बात ही क्या प्रगतिशील वग तक की सहमति के बगर अमल मे लाया जायगा तो उसके निष्कटक रूप स चलने की बात निश्चित रूप स नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत, यदि आप हमे ऐसा शासन विधान प्रदान करेंग जो प्रगतिशील वग को रुचिकर होगा, तो उसे गाधीजी का आशीर्वाद प्राप्त हो जाएगा। मैं गाधीजी और काग्रेस म हमेशा से भेद करता आया हू और मेरा आपस यही कहना है कि आपके लिए हम ऐसा विधान प्रदान करना सम्भव है, जो काग्रेस को ग्राह्य न होते हुए भी गाधीजी द्वारा नामजूर न किया जाय और जिसका भविष्य मे निष्कटक रूप म अमल मे आना सम्भव हो। यदि विधान के जारी किये जान के दूसरे ही दिन उसका विध्वस करन के लिए कोई आ दोलन खडा हो जाय तो शान्ति असम्भव हो जाएगी और मैं चाहता हू दोना देशो म स्थायी शान्ति।

अतएव हमने जो प्रस्ताव पास किया है मेरा अनुरोध है कि आप उस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें और यह देखें कि हम जो प्रगतिशील लोकमत को अपने नजदीक लाना चाहते हैं उसके निमित्त हमारी सेवाओं को काम में लाना आपके लिए सम्भव होगा या नहीं। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप हमें शांति के निमित्त काम करने का अवसर दें। मेरी आपसे अनुनय है कि आप हमारे सुझाव पर विचार करें।

रही दोनों वर्गों के निकट सहयोग की बात तो मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि मुझे श्री बेंथल से विशेष प्रोत्साहन नहीं मिला। लंदन में हमने प्रगाढ़ मैत्री का आचरण किया और एक दूसरे के दृष्टिकोण को सुनने और समझने की चेष्टा की और मुझे आशा थी कि यह सिलसिला भारत में भी जारी रहेगा। पर अब तो वह बिलकुल बदले गये दिखाई देते हैं और उनके एक भाषण की रिपोर्ट ने तो मुझे सचमुच अचम्भे में डाल दिया है। उस भाषण की एक प्रति इस पत्र के साथ भेजता हूं। मेरी तो समझ में नहीं आता कि लंदन में अत्यंत मैत्रीपूर्ण सहयोग के बाद वह हम लोगों को कभी न मनाये जा सकनेवाले कैसे कह बैठे और गांधीजी की खिल्ली कैसे उड़ा सके! इससे खुद उनकी भी बड़ाई नहीं होती। भारतीय व्यापारी वर्ग के मन पर इसका बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा है। इतने पर भी जहां तक मेरा सम्बन्ध है हम लोग अपने मण्डलों को गलत मार्ग पर नहीं ले जाना चाहते इसलिए मेरा ठीक दिशा में शुरू किया गया प्रयत्न जारी रहेगा।

किंतु रचनात्मक कार्य के लिए विश्वास और मैत्री के वातावरण की दरकार है और फिलहाल दुर्भाग्यवश भारत में इसका अभाव है। वास्तव में इस क्षोभकारी स्थिति में आपके पत्रों से चैन मिलता है। यह स्पष्ट ही है कि आप सहज ही विश्वास कर लेते हैं अतएव मेरी जिम्मेदारी भी बढ़ गई है। मैं चाहूंगा कि मैं जैसा कुछ हूं, आप मुझे जान जायं। मेरे लिए यह कहना अनावश्यक है कि मैं गांधीजी का बहुत बड़ा प्रशंसक हूं। वास्तव में यदि मैं यह कहूं कि मैं उनका एक लाडला बालक हूं तो अनुचित न होगा। मैंने उनके खादी और अस्पृश्यता निवारण-सम्बन्धी कार्यकलाप में दिल खोलकर साथ दिया है। मेरा यह भी दृढ़ विश्वास है कि भारतीय जनता के लिए अतिरिक्त धंधे के रूप में खादी अच्छा काम है। मैंने न तो कभी सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया है और न उसमें कभी रुपया ही दिया है। पर मैं सरकार की आर्थिक नीति का कड़ा आलोचक रहा हूं इसलिए मैं अधिकारी-वर्ग को कभी अच्छा नहीं लगा हूं। इस समय भी मैं सरकारी नीति से सहमत नहीं हूं। काश, मैं अधिकारियों को यह विश्वास

दिला सकता कि गाधीजी और उनके जैसे व्यक्ति केवल भारत के ही नही, ब्रिटेन के भी मित्र हैं, और साथ ही गाधीजी शान्ति और व्यवस्था म विश्वास रखन वाले पक्ष के सबसे बडे समथक हैं। अकेले वही भारत के वामपथियो को काबू म रखे हुए है। अतएव मेरी राय म उनके हाथ मजबूत करना दोना देशा की मत्री के बधन को मजबूत करना है। पर मुझे आशका है कि वतमान वातावरण म गाधीजी के सम्बध म समझाना एक कठिन काय है। शायद इस मिशन म सफलता प्राप्त करन का सबसे अच्छा माग है, जहा तक सम्भव हो, आपको सहयाग प्रदान करना और मरी त्रुटिया के बावजूद यदि आप समझते है कि मैं दोनो दशा म मैत्रीपूण सम्पक स्थापित करान मे उपयोगी सिद्ध हो सकता हू ता आप मरी तुच्छ सवाआ पर हमेशा निभर रह सकत है।

ओटावा-परिषद के सम्बध म मरा यही कहना है कि यदि आपकी यह अभिलाषा है कि उसम भारतीय व्यवसाय और वाणिज्य का भी प्रतिनिधित्व रहे, जसा कि मैं आपके पत्र रा समझा हू तो जब कभी सर पुरुषात्तमदास को निमत्रण दिया जायगा, वह खुशी खुशी उसे स्वीकार कर लेगे। मैं यह उनकी पूरी रजा म दी से लिख रहा हू। सघ की समिति इस योजना के खिलाफ नही होगी। हम लोग इस परिषद की महत्ता को समझते हैं और आप निश्चिन्त रहिए सही दिशा म हमारा समथन मिलता रहेगा।

क्या मैं इस सम्बध मे एक और सुझाव दे सकता हू ? ओटावा म जा कुछ भी निणय हो, उसकी उस समय तक व्यवस्थापिका द्वारा अभिपुष्टि न हो, जब तक नया विधान अमल म न आ जाय, और मेरी विनम्र सम्मति म समझौता उस समय तक अमल मे न आये जब तक उसका नयी सरकार अभिसमथन न कर दे। हम सब आर्थिक मामलो म अन्योन्य व्यवहार के कायल हैं। हा यह अवश्य है कि व्यवस्था ऐसी हो कि वह लोकमत के अनुकूल हो। पर ऐसी योजना कोई कठिन काय नही है।

मुझे आपकी यह बात बडी अच्छी लगी कि आप इतिहास की बाता की ओर स उदासीन नही हैं। जहा तक हमारा सम्बध है, आप हम भावुकता और राजनीति को छोडकर आर्थिक हितो के लिए काम करने को सदव तत्पर पायेंगे।

मैं यहा एक पखवाडे रहूगा और उसके बाद कलकत्ता वापस चला जाऊगा।

भवदीय

घ० दा० बिडला

६

बिडला हाउस
नई दिल्ली
२८ मार्च १९३२

प्रिय सर सेम्युअल

फैडरेशन का वार्षिक अधिवेशन कल समाप्त हुआ। उसमे बडी गरमा गरम बहस के बाद वह प्रस्ताव पारित हो गया। प्रस्ताव की नकल भेज रहा हू। जैसा कि आप स्वय देखेंगे मूल प्रस्ताव के तीसरे परे की भाषा मे कुछ सशोधन हुआ है पर भाव वही है। कई अशो मे यह प्रस्ताव समिति द्वारा पारित प्रस्ताव से अच्छा है, क्योकि यह अस्पष्ट न होकर कुछ शर्तो के साथ निश्चयात्मक रूप से सहयोग का वचन देता है।

मुझे अपने अतिम पत्र के बाद और कुछ नही कहना है। मुझे सतोष है कि मैंने लदन मे आपके साथ हुई वार्ता के दौरान अपना जो विचार बिन्दु पेश किया था उसे स्वीकार करने को मैं फैडरेशन को राजी न कर सका। इस बात को ध्यान मे रखते हुए आपको जब कभी ऐसा लगे कि हम भारत मे शाति और प्रगति के कार्य मे उपयोगी सिद्ध होगे हम सहर्ष सहायता देंगे। मैं चाहूगा कि आप दूरदर्शिता का रुख अपनायें। यह मैं इसलिए कह रहा हू कि भारत का अधिकारी-वर्ग दिन प्रतिदिन की नीति बरत रहा है, और अपने पथ प्रदर्शन के लिए अनिश्चित और अज्ञात बातो पर निर्भर करता है। यह नीति राजनेताओ की कदापि नही कही जा सकती। भारतीय स्थिति के इस पहलू पर मैं और कोई टिप्पणी नही करना चाहता हू पर यह मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि सरकार दोनो देशो के बीच अस्थायी और कामचलाऊ शाति स्थापित करने की बजाय स्थायी शाति के लिए सचेष्ट हो। मेरी धारणा है कि वर्तमान अनुदार पार्लामेंट के बावजूद इस उद्देश्य की सिद्धि सम्भव है।

आपका समय आये दिन लेता रहता हू क्षमा करिएगा।

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

सर सेम्युल होर
भारत मत्री
लदन।

१०

इडिया आफिस
ह्वाइट हाल
८ अप्रल १९३२

प्रिय श्री बिडला

आपके इस दूसर रोचक पत्र के लिए मैं आपका आभारी हू। पत्र अभी पहुचा है इसलिए आपने उसम जो महत्वपूर्ण मुद्दे उठाये हैं उनके तुरत विस्तारपूवक उत्तर की तो आप प्रतीक्षा न करते हूगे। अभी तो मैं इतना ही कहूगा कि मैं उन सारे मुद्दा पर सावधानी स विचार कर रहा हू उनकी बाबत बाद म लिखूगा।

भवदीय,
सेम्युअल हार

श्री घ० दा० बिडला

११

३० अप्रैल १९३२

प्रिय श्री क्राफट,

आज जब मैंने भारत मत्री की स्पीच पढी तो मुझे लगा कि उसम कही गई कुछ बाता की अयथार्थता की ओर आपका ध्यान आकर्षित करू। मालूम पडता है कि उह वस्तु स्थिति का पूरा ज्ञान नही है अ यथा वह भारत की आर्थिक अवस्था के प्रति इतना आशावादितापूर्ण रवया न अपनाते। उनकी स्पीच का एक अश मैं नीचे देता हू

> आर्थिक अवस्था की चर्चा करते हुए सर सेम्युअल न कहा कि यदि ब्रिटेन और भारत के बीच युद्ध की स्थिति होती, तो हम एक अतिशय गम्भीर अवस्था का सामना करना पडता। जबकि वस्तु स्थिति यह है कि भारत की आर्थिक अवस्था छह महीने पहले से कही अच्छी है।
>
> कीमतें ऊची उठ रही हैं कर की अदायगी सतोषजनक है तथा लगान अदा

किया जा रहा है। जाहिर है कि भारत आर्थिक दृष्टि से गत सितम्बर की अपक्षा अधिक समथ है।

गत पतझड मे ऋण निषेधात्मक दरा पर ही पाना सम्भव था, जबकि इस सप्ताह के ऋण की धनराशि माग से भी अधिक इकट्ठी हो गई है और ऋण-राशि म रुपया लगाने के लिए अधिक कीमत चुकानी पडती है।

यह कहना अधिक ठीक होगा कि कीमतें अब फिर गिरने लगी हैं। स्टर्लिंग के मूल्य म गिरावट के फलस्वरूप पिछले नवम्बर दिसम्बर म कइ वस्तुआ के दाम अवश्य कुछ बने थ, पर इस समय तो स्टर्लिंग क मूल्य म और फलत रुपय के मूल्य म गिरावट के बावजूद अधिकाश चीजें छह मास पहले की अपेक्षा अधिक सस्ती है। इसका अथ यह हुआ कि यदि रुपया और स्टर्लिंग मूल्य म समकक्ष रहते तो कीमतें अपन वतमान स्तर की अपेक्षा ३३ प्रतिशत और भी गिर जाती। मैं यहा कुछ ऐसी वस्तुआ के दाम देता हू जिन्हें भारत उत्पन्न करता है

सितम्बर के अत म

चपडा ३०)था, नवम्बर म ३३) तक पहुचा, अब २०) रु० है।

पाट का बारदाना ८॥)प्रति १०० गज था, नवम्बर म १०)हुआ, अब ७॥) रु० है।

पाट कच्चा ३७), नवम्बर म ४५) था, अब ३०) है।

चाय ।≡) पौंड अब ।−) पौंड है।

चावल २२५), माच म २८०) रु० था, अब २२५) है।

मिल का कपडा ॥≡) पौंड, माच म ॥।) तक उठा इस समय फिर ॥≡) है।

कच्ची रुई १५५), माच म २४०) थी, अब १८० है।

गहू १॥।) मन, जनवरी म २। =) था, अब २ =) ह।

मूगफली ३१), अब ४०) रु० ह(इसका कारण खराब फसल है।)

अलसी ४≡), अब ३॥।) है।

अरडी के बीज ११ १८ पौंड प्रति टन, फरवरी मे १५ ६ पौंड अब फिर ११ १८ पौंड है।

मूल्य सूचकाक गत सितम्बर मास म ९१ था दिसम्बर म ९८ था माच म ९६ था अब और भी नीचे हैं। रुपय के मूल्य की गिरावट यदि कुछ

प्रभावोत्पादक सिद्ध होती है तो चीजो की कीमतें ३३ प्रतिशत ऊची उठती, पर वे अब स छह महीने की कीमतो के मुकाबले म नीचे गिरी हैं। इसका अथ यह हुआ कि यदि रुपये का मूल्य बराबर बराबर रहता, तो कीमतें और भी गिरती। इस प्रकार रुपये की गिरावट के साथ साथ वस्तुओ की कीमतें भी गिरी हैं, इतना ही नही अवस्था इससे भी ज्यादा खराब है। इस प्रकार उत्पादक की दशा सितबर १९३१ की दशा के मुकाबले म भी अधिक खराब है। जो भी हो यह तो कदापि नही कहा जा सकता कि कीमतें ऊपर जाने लगी हैं। वास्तव म वे फिर गिरने लगी हैं। भारतीय ऋण लदन म निसदेह खूब सफल रहा पर मेरी सम्मति म इसके तीन कारण है। पहला कारण तो यही है कि हमने सोना भारी मात्रा म निर्यात किया है। दूसरा कारण यह है कि लदन की अवस्था अपेक्षाकृत अधिक उल्लासदायिनी है। तीसरा कारण यह है कि इस समय लदन मे अनुदार दल पदासीन है। पर भारत म ऋण उठाना उतना सहज सिद्ध नही होगा।

अपने काम-काज के सिलसिले म मुझे हाल ही म अनेक गावो का दौरा करना पडा था। मैंने देखा कि यहा आर्थिक दुरवस्था के बावजूद किसानो ने अपने रहन सहन के स्तर म गिरावट नही आने दी है। इसका कारण यही है कि वे लगान अदा नही कर रहे है, भारत मत्री चाहे जो कहे। भारत भर म जमीदारो को यह बात अच्छी तरह मालूम है। छोटा नागपुर मे मै भी एक छोटा मोटा जमीदार हू, और मैं लगान का ५ प्रतिशत भी वसूल नहीं कर पाया हू। पर मैं लगान की अदायगी पर नही अडता हू इसलिए मुझे जमीदारो की अवस्था का ठीक ठीक अभिसूचक नही माना जा सकता। पर मै यह तो जानता ही हू कि अधिकाश जमीदार अपने लगान की ५० प्रतिशत उगाही भी नहीं कर पाते। किसानो के रहन-सहन म गिरावट न आने का मुख्य कारण यही है। पर दूसरे कारण भी है। उदाहरण के लिए सोने की बिक्री और महाजनो स लिये गए ऋण पर सूद न देना। प्रश्न यही है कि यदि कीमतें ऊपर नही उठी, तो वे अपना वतमान स्तर कब तक बनाये रख सकेंगे। मैं तो नही समझता कि उनके पास अब बहुत अधिक सोना बचा है। अगले वष दो बातो म स एक बात अवश्य होगी, या तो किसानो के वतमान रहन सहन के स्तर म गिरावट आएगी, जो कि असम्भव-सी बात है क्योंकि इस समय भी उनका स्तर काफी नीचा है या फिर वे लगान और सूद अदा करने स इकार कर देंगे। यदि कीमतें नही चढी तो इस दूसरी बात की अधिक सम्भावना है। मुझे आशका है कि कीमतें उठनेवाली नही हैं।

स्पीच के राजनतिक अश के बारे म मुझे कोई टिप्पणी नही करनी है क्योंकि मेरा क्षेत्र राजनीति नही है पर मुझे आशका है कि कई ऐसे वक्तव्य हैं जिन्हें यहा

चुनौती दी जाएगी। मैं सर सम्युअल होर का बडा सम्मान करता हू,इसलिए यदि उनके वक्तव्यो को चुनौती दी गई तो मुझे दु ख होगा। दुर्भाग्यवश ऐसा देखा जा रहा है कि उन्ह वस्तुस्थिति से ठीक ठीक अवगत नही किया जाता है। यह सब मत्रीपूर्ण आलोचना है। मुझे इसम तनिक भी सदेह नही है कि इसके गलत अर्थ नही लगाये जाएगे।

भवदीय,
घ० दा० बिडला

१२

यरवदा मंदिर
अप्रैल ३२

भाई घनश्यामदास,

आपका पत्र मिला। इस पत्र के अक्षर से ही जानोगे कि महादेव यहां आ गया है। सबके खोराक का अभ्यास कर रहे हैं यह मुझको अच्छा लगता है। हमारे मध्यम-वर्ग के खाने म समतोलता नहि है और बहुत चीज निकम्मी खाकर शरीर बिगाडते हैं। उसमे कोई सदेह नही है। और डाक्तर, और वैद्य लोग पैसे कमाने म इस विषय का ख्याल तक भी नही करते हैं। इसलिये तुम्हारे प्रयोगो की उपयोगिता मैं समज सकता हू और मेरी आशा है कि रामेश्वरजी और लक्ष्मी निवास को लाभ हुआ होगा। कुछ भी नई शोध करें मुझको बताते रहें।

मेरे बारे म गेरसमज रहती है उसका मुझे पूरा ख्याल है। परन्तु मैं निश्चित रहता हू। अनुभव से देखा है कि धीरज रखने स बहुत-सी गलतफहमिया दूर हो जाती हैं। रात्रि कितनी भी लबी हो, उसका अत है ही।

अब तक मेरा खुराक वही चलता है और अच्छा ही लगता है। [illegible] को मिलते हैं क्या ? उनकी तबियत कैसी है ?

बापु के आशीर्वाद

कलकत्ता
४ मई, १९३२

प्रिय लाड लोदियन

समाचार पत्रों मे निकला है कि आपका मिशन पूरा हो गया है और अब आप ११ तारीख को इग्लड हवाई जहाज से वापस लौट रहे है। आपके कमीशन की रिपोट शीघ्र ही प्रकाशित होगी और अब तक मेरे सुनने म जो आया है वह यही है कि रिपोट सतोषप्रद सिद्ध होगी। आप भारत म अपने प्रति सदभाव उत्पन्न कर सके, यह भी एक अच्छी उपलब्धि है। भगवान स प्राथना ह कि भारत के साथ आपके सपक से दोनो देशो के सबध मधुर हो।

मैं वतमान अवस्था की बाबत आपको अभी कुछ नही लिखना चाहता। आप म स्थिति का बारीकी के साथ अध्ययन करने की क्षमता ह साथ ही आप म मत्री की भावना है, इसलिए आप स्थिति को एक भारतवासी की तरह ही समझने लगे हैं। मेरा आपको यह पत्र लिखने का कारण यह ह कि मुझे लगा कि इस नाजुक मौके पर, जबकि अनेक महत्वपूण निणय लिये जानेवाले है मैं वतमान तथाकथित दुहरी नीति की सफलता के सबध मे अपना सदेह व्यक्त कर दू। जब हम कलकत्ता क्लब म इस विषय की चर्चा कर रहे थे, तो मुझे आपकी यह बात बहुत जची कि भारत की सहायता करने का सबस अच्छा उपाय यही है कि सुधार शीघ्रातिशीघ्र अमल मे लाये जाए। मैंने शका व्यक्त की थी कि यदि राष्ट्रवादियो न हिस्सा नही लिया तो सुधारो का लागू करन स क्या लाभ होगा। यह शका मेरे दिमाग म बार-बार उठ रही ह। मैं यह बात लगभग पूरे निश्चय के साथ कह सकता हू कि जब तक प्रगतिशील लोकमत का समथन नही मिलेगा तब तक कोई भी सुधार सफल नही होगा। मैं यह स्वीकार करता हू कि फिलहाल अतिवादियो और एक प्रतिक्रियावादी पार्लामेंट के बीच किसी प्रकार की सुलह सम्भव नही है, पर मामले पर और अधिक विचार करने के पश्चात मैं इस नतीजे पर पहुचता हू कि एक ऐसा शासन विधान लागू करना कोई ऐसी असम्भव कल्पना नही ह, जिसे गाधीजी और उनके अनुयायियो की मूक सहमति प्राप्त हो। वसा करने से भारत मे शान्ति तो रहेगी और मैं यह मानने को तैयार नही हू कि कम-स कम इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए आवश्यक उपाय का खोज निकालना सम्भव नही ह।

इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए दो उपाय अपनाये जा सकते हैं एक तो यह ह

कि गाधीजी का या तो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त किया जाए। इस समय गाधीजी और सर सम्युअल होर म जो पत्र व्यवहार चल रहा है उससे मुझे अधिक आशापूर्ण धारणा कायम करन म प्रोत्साहन मिला है। १६३० म असुविधा यह थी कि तब गाधीजी और शासक-वग के बीच किसी प्रकार का सम्पक नही था। अब वह असुविधा नही रही है। फलत यदि दोना पक्षा म सद्भाव रहा तो कोई-न-कोई माग निकल ही आयगा।

अब हम दोना विकल्पा का विश्लेषण करना चाहिए। सबसे पहला प्रश्न तो यह है कि क्या गाधीजी का प्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करना सम्भव है ? मैं तो इसे इतना कठिन नही मानता। फज कीजिए, आर्डिनेसा को नये सिरे से जारी नही किया गया तो वैसी अवस्था म गाधीजी की क्या स्थिति होगी। कायकारिणी का अतिम प्रस्ताव यह था कि यदि आर्डिनसा क मामले म ठास राहत न मिले तो सविनय अवज्ञा की नीति अपनायी जाय। यदि आर्डिनेस पुन जारी नही किये गए तो अवस्था म आमूल परिवतन हो जायगा। उसके बाद जो विचारणीय प्रश्न रहता है, वह है सीमाप्रात और बगाल की समस्याओ का हल तलाश करना। सयुक्त प्रात की अवस्था की बाबत, जहा तक मुझे मालूम है, जवाहरलालजी ने लगान मे जितनी छूट की माग की थी उससे भी अधिक छूट दे दी गई है। अतएव यदि आर्डिनेसा को जारी नही रखा गया और गाधीजी को रिहा कर दिया गया वाइसराय क साथ उनकी मुलाकात हुई तथा बगाल और सीमाप्रात म जारी आर्डिनेन्सा के विषय मे वार्तालाप हुआ और इन दोना प्राता की समस्याओ का हल ढूढ निकाला गया तो विधान रचना-काय म सहयोग और राजनतिक बदियो की रिहाई तो आनन फानन हो जायगी। इस दिशा म एकमात्र कठिनाई जो मैं देखता हू वह यह है कि भारत म इस समय का वातावरण गत माच की अपेक्षा कही अधिक कडवा है। सम्भवत केवल आर्डिनेसा को पुन जारी न किये जान के आधार पर कांग्रेस का सहयोग करने को तैयार करना गाधीजी के लिए कठिन हो। कांग्रेसी यह प्रश्न कर सकते है भारत को मिला ही क्या, जो हम सरकार क साथ सहयोग की बात करने लगे हैं ?" एसी अवस्था म भी गाधीजी कांग्रेस को अपने साथ रखने म अवश्य समथ होगे, हा उन्हे इसके लिए कठोर प्रयास करना होगा।

दूसरा विकल्प अपेक्षाकृत ज्यादा आसान है। फज कीजिए आर्डिनेसो की मियाद नही बढाई गई, तो वसी अवस्था म गाधीजी के मत्रीपूण मागदशन के अनुसार काम करनेवाला व्यक्ति शासन विधान की रचना म भाग क्या न ले ? फलस्वरूप जो समझौता होगा, उसे गाधीजी का अप्रत्यक्ष आशीर्वाद तो प्राप्त होगा

ही। गाधीजी को यह तरीका कितना रुचेगा, कह नही सकता, पर इसकी व्यावहारिकता की सम्भावनाओ को खोजा जा सकता है। गाधीजी का एकमात्र उद्देश्य एक अच्छा शासन विधान प्राप्त करना है, अतएव यदि ऐसा शासन विधान प्राप्त हो सके जो गाधीजी को नापसद न हो, तो उसे बगैर किसी अडचन के अमल म लाना सम्भव है।

मैं यह सब आपके विचाराथ लिख रहा हू क्योकि यह मेरी प्रबल धारणा है कि यदि सरकार ने मुसलमानो, अस्पृश्यो और भारतीय नरेशो के सहयोग के भरोसे कोई ऐसा शासन विधान लागू किया, जो राष्ट्रवादी भारत को पसद न हो, तो वह बहुत बडी गलती करगी। वसी अवस्था मे सघष जारी रहेगा और भारत को बहुत समय तक शाति नही मिलेगी। सरकार काग्रेस को तभी छोड सकती ह जब उसका इरादा किसी प्रकार की ठोस प्रगति करने का नही हो। और मुझे कहना पडता है कि जन-साधारण इस दुहरी नीति को जो सन्देह की दृष्टि से देखता ह, सो स्वाभाविक ही ह। उसका यह पूछना स्वाभाविक है कि काग्रेस के सहयोग को ठुकराने म सरकार का और क्या कारण हो सकता है? कलकत्ते म जो धारणा फली हुई है उसके आधार पर मैं कह सकता हू कि गैर-सरकारी यूरोपीय तक यह प्रश्न उठा रहे हैं कि सुधारो को अमल म कौन लायेगा। परसो के 'इग्लिशमन' के अग्रलेख म भी यही भावना व्यक्त की गई है। इसलिए मेरी अभिलाषा ह कि सरकार ऐसी कोई भूल न करके काग्रेस का सहयोग प्राप्त करन के सभी उपायो को खोज निकाले।

आपकी सकुशल समुद्र यात्रा की कामना करता हू। आपकी रिपोट प्रकाशित होते ही बधाई का सदेश भेजूगा।

आगामी १० तारीख को सर जान एडसन स मिलूगा। उन्हे भी बताऊगा कि मैंने आपको क्या लिखा ह।

भवदीय
घ० दा० बिडला

लाड लोदियन
शिमला।

१४

इंडियन फ्रेंचाइज़ कमेटी

मुकाम भारत
८ मई, १६३२

प्रिय श्री बिड़ला

आपके ४ मई के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। आप खुद ही समझ सकते हैं कि आपने जिन मुद्दों को अपने पत्र में उठाया है उनपर मैंने गम्भीरता से विचार किया है। स्वदेश वापस लौटने पर भारत मंत्रीके साथ इन पर तथा आपके सुझावों पर निश्चय ही विचार विमर्श करूंगा। एक बात के बारे में मेरा यह मत बिलकुल स्पष्ट है कि नये शासन विधान के द्वारा उसके सभी भागीदारों को एक-समान अधिकार मिलें जबकि अल्प संख्यक वर्गों के हितों के संरक्षण की पूरी व्यवस्था हो साथ ही बहु संख्यक वर्गों के अधिकार भी सुरक्षित रहें। क्या इस ग्रीष्म ऋतु में लंदन में आपसे भेंट होगी ?

भवदीय
लोदियन

श्री घ० दा० बिड़ला

१५

१४ मई, १६३२

प्रिय लार्ड लोदियन

आपके १८ तारीख के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। आशा है आपकी यात्रा बड़ी सुखद और आनंददायक सिद्ध हुई होगी। क्या आपको यह यात्रा समुद्र-यात्रा की अपेक्षा अधिक अच्छी लगी। कम-से-कम मुझे तो हवाई जहाज से यात्रा करना अच्छा नहीं लगता।

पाग्रेरा के आत्मत्याग के सम्बन्ध में आपने जो कुछ कहा, बड़ा ही सुंदर रहा। ऐसे उद्गारों का जो अच्छा प्रभाव पड़ता है उसका ठीक-ठीक अनुमान लगाना सम्भव नहीं है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मैंने अपने पत्रमे जिन बातो को उठाया था उनकी चर्चा आप भारत मत्री के साथ करेंगे। मुझे ऐसा लगता है कि यहा रग ढग मे परिवर्तन होनेवाला है पर सम्भव है, यह मेरा खयाली पुलाव मात्र हो। मैंने अपने पिछले पत्र म जो कुछ कहा है उसकी पुष्टि म मुझे इतना और कहना है कि नेताओ की रिहाई के बगैर साम्प्रदायिक प्रश्न तक के निबटारे की सभावना नही है। यह प्रसन्नता की बात है कि अभी तक सरकार ने हस्तक्षेप नही किया है, और मेरी समझ म श्री जयकर डा० मुजे या पण्डित मालवीय-जैसे हिन्दू सभाई नेताओ के लिए मुसलमानो की मागो के स्वीकार किये जाने के लिए आवश्यक बुनियादी तैयारी करना सम्भव नही है। यह अकेले गाधीजी के बूते की बात है और जब तक गाधीजी और अधिकाश नेता जेल म बन्द हैं तब तक सरकार द्वारा भारतीयो को इस मामले म निबटारा करने म असमर्थ रहने का दोष देना बेकार है। आप पूछ सकते है कि गाधीजी के लदन रवाना होने से पहले ही भारत मे इस प्रश्न का निबटारा क्यो नही कर लिया गया ? मैं इस अभियोग को आशिक रूप मे स्वीकार करता हू पर मेरा कहना है कि भारतीयो ने साप्रदायिक फूट को दूर करने की आवश्यकता को जितना अब समझा है उतना पहले कभी नही समझा था। मेरी समझ मे यदि नेताओ को रिहा कर दिया जाय और सारे महत्वपूर्ण मामलो पर शात भाव से विचार करने योग्य वातावरण तैयार कर दिया जाय तो साम्प्रदायिक समझौते की सम्भावना बहुत बढ जायगी और साम्प्रदायिक मामले के निबटारे के बाद यदि सर सम्युअल होर गाधीजी को आगामी सितम्बर मास मे लदन बुला लें और उनसे इर्विन की रीति के अनुरूप बरताव करें तो मैं समझता हू कि हम लोग बहुत कुछ प्रगति कर सकेंगे।

एक और ऐसी समस्या है, जिसकी ओर गम्भीर रूप से ध्यान देना आवश्यक है। वह है आर्थिक मन्दी। मुझे आशका है कि इग्लैंड मे इस बात को अच्छी तरह नही समझा जा रहा है कि भारत म कैसी नाजुक अवस्था उत्पन्न हो गई है। यदि मूल्यो का स्तर प्रभावशाली ढग से ऊचा नही उठा तो मुझे भय है कि अगले वर्ष परले दर्जे की अव्यवस्था खडी हो जायगी। मैंने इसकी चर्चा सर जान एडरसन से भी की थी और मैं समझता हू उन्होने स्थिति की गम्भीरता को समझा भी।

ओटावा परिषद तो आरम्भ म ही दफना दी गई लगती है। सरकार की अपने ही ढग से काम करने की आदत है। १९३० म रुई की चुगी के मामले म ग्रेट ब्रिटेन को तरजीह देना चाहते थे, यद्यपि भारत का समूचा व्यापारी समुदाय इसके खिलाफ था। परिणाम जो हुआ हम सब जानते ही हैं। इस बार भी ओटावा परिषद म भारतीय व्यापारी-वर्ग के मनोभावो के विपरीत कुछ करने

की बात सोची जा रही है, और इसका परिणाम यह हुआ है कि ओटावा-परिषद के खिलाफ लोकमत इतना प्रबल हो उठा है कि सम्बद्ध विषयो पर उन्ही के गुण-दोषो के अनुरूप शातभाव से विचार करना असम्भव हो गया है। मैत्रीपूर्ण समझौते के द्वारा बहुत कुछ प्राप्त करना सम्भव था, इसका अदाजा तो मचेस्टर मे अभिमान के पक्ष मे गाधीजी के उदगारो से ही लग सकता था, पर भारत मे सरकार समुचित मनोवृत्ति के साथ काम करना तो चाहती ही नही। वह तो चीज लादना चाहती है। यह सब मैं आपको यह बताने के लिए लिख रहा हू कि किस प्रकार भारत मे यदाकदा व्यवहार-कुशलता के अभाव के कारण उपद्रव हुआ करते हैं।

मुझे आपके इन मनोभावो से बडा ही आह्लाद हुआ कि नवीन विधान के द्वारा विधान के मुख्य अगो को समान रूप से अधिकार मिलने चाहिए।

आपने पूछा है कि क्या मेरा इन गर्मियो मे लदन मे आपसे मिलना सम्भव है? यही प्रश्न तो मैं आपसे करना चाहता हू। आप गाधीजी को बुलाइए, हम सब भी साथ हो लेंगे।

आशा है, आप सानन्द हैं।

भवदीय,
घ० दा० बिडला

१६

यरवडा मदिर
१५ ८ ३२

भाई घनश्यामदास,

आपका पत्र मुझे कल मिला। ग्वालियर से लिखा हुआ पत्र का उत्तर मैंने शीघ्र ही भेजा था। पता ग्वालियर दिया था इस सबब से शायद न मिला हो। मेरे थोडे पत्र गुम हुए हैं सही। मालवीजी का उत्साह और उनका आशावाद नाना अनुकरणीय हैं। हम सब मजे मे हैं। मेरा खुराक अब तक तो वही है और वजन भी करीब-करीब कायम है। रामेश्वरदास अच्छे होंगे।

बापु के आशीर्वाद

१७

इडिया आफिस
व्हाइट हॉल
१७ मई, १९३२

प्रिय श्री बिडला

मैं आपके ३० अप्रल के पत्र के लिए अत्य त आभारी हू। मैंने वह पत्र सर सम्युअल होर को दिखा दिया है। दुर्भाग्य म यह सच है जसा कि आपकी दी हुई तालिका से प्रकट है कि वस्तुआ के दामोम फिर गिरावट आईहै। तथापि मैं कहूगा कि औसत पहले से फिर भी ऊचा है। रही भारत की आम आर्थिक अवस्था की बात सो मैं तो यही कहूगा कि यहा लोग अब स १२ महीन पहले की अवस्था के साथ तुलना करन के बाद यह निष्कष निकाल रहे है कि काफी प्रगति हुई है। यदि अ य अधिकाश देशो की अवस्था को ध्यान म रखा जाय तो यह कहना होगा कि तुलनात्मक दष्टि से खासी प्रगति हुई है। भारत की आर्थिक अवस्था खराब हो सकती है पर यह नही कहा जा सकता कि अ य देशा की अवस्था और भी खराब नही ह। हमारा यह आशा करना बुद्धिसगत होगा कि जब वतमान अवस्था म आम सुधार होगा तो भारत उससे लाभ उठान योग्य अच्छी स्थिति म होगा।

आजकल हमार हाथ मे काफी काम ह, लगता ह कि यह काय भार निकट भविष्य मे और भी बढेगा।

भवदीय
डब्ल्यू० डी० श्रॉफ्ट

१८

यरवडा मदिर
७ ६ ३२

भाई घनश्यामदास

आपका पत्र मिला। मेरा शरीर भी अच्छा ही लगता ह। वजन खासा ह। आज एक सौ सात ६ रतल हुआ। डाक्टर लोग बताते हैं जैसा टनिस खेलने वाला को कई हफ्ता बहुत खेलने से कहोनी मे दद हाता ह और उसका इलाज

एक आराम ही है, ठीक उसी तरह मुझको तार खेंच खेंचकर वरसा के बाद कहानी म दद प्रतीत होता ह । इसी कारण कहोनी को तीन चार हफ्ते तक पूण आराम देना चाहिये । इसीलिय मैं मगन चर्खा चलाने का शुरू कर दिया । उसके पहले बाए हाथ से तार खीचने के बदल चक्र को घुमाता था । इतन से डाक्टरो को सतोप न हुआ । तब मैंने परो से चक्र चलाना का रक्खा । उसस व लोग राजी हुए । लेकिन अब लकडी की पटटी मे काहोनी का बाध ली हैं जिससे कि वह बिलकुल हिल न सके । अब देखा जायगा कि डाक्टर लोगो का अनुमान सही था नही । इसम फिकर का काई कारण नही हैं क्योकि हिलाने सीवा कुछ दद प्रतीत होता ही नही ह ।

बहनजी स हाथ के सूत की खादी अवश्य भेजें । मेरे सामने उत्तर लिखने के वख्त पत्र न रहा इसलिय खादी के बारे म लिखना रह गया । यहा से निकलने के पहले अथ शास्त्र का अभ्यास जहा तक सम्भावित ह कर लेने का इरादा कर लिया हैं । ऐसी उम्मीद से कि यहा से जल्दी छूटना नही ह । मैंने और पुस्तक पढने का शुरू कर दिया लेकिन अब शीघ्रता से अथ शास्त्र का अभ्यास शुरू कर दूगा ।

मील २४ घण्टे चलाने के बार म मैं समजा । आपकी मिला का सूक्ष्मता से निरीक्षण करने का इरादा बहुत दफा किया लेकिन मैं सफल नही हो सका । मेरी आखो से मैं देख लेना चाहता हु कि मजदूर लोगो की हालत कसी हैं । हम सब कुशल हैं ।

बापु

१९

भाई घनश्यामदास

आपका पत्र मिला । शुस्टर पर खत भी मिला । उस पढ लूगा । समय तो बारीक है हि और बारीक होता जायगा । यदि हम पारमार्थिक दृष्टि स काम लेंगे तो इसम से भी परिणाम अच्छा आ सकता है ।

सनगुप्ता न पचक बनाने की बात मान ली है । अब इलेक्शन मारफत करन की बात छोड दी है । अब तो मैं कल हि मुंबई पहाच जाउगा । उमेद है दोना आ जायगे ।

बापु

८ ६ ३२

य० मंदिर
५ ७ ३२

भाई घनश्यामदास

आपका २७ जून का खत आज मिला। मैंने २६ जून को आपको खत लिखा है उसमे खादी मिल जाने का लिखा है और आपके पुस्तक पढ़ने पर जिन पुस्तकों की आवश्यकता प्रतीत हुई वे भी मगवाये है। जो साहित्य मैं पढ़ रहा हू उस पर से प्रश्न तो काफी उठते हैं परतु जो अभ्यास मैं कर रहा हु यह कहने के बाद ही पूछने का कुछ बाकी रहे तो इरादा रक्खा है। अब तो हमेशा कुछ-न-कुछ पढ़ ही लेता हू इसलिये मेरी समज मे थोडी सी भी वृद्धि अवश्य होती है। अब भी शाह का पुस्तक चलता है इसके बाद आयर की Foreign Exchange (फारेन एक्सचेन्ज) पर जो पुस्तक है जो उसने मुझे भेजी है शुरू करूगा।

खादी के साथ साथ आज तो मिल चलती ही है और कई अरसे तक तो अवश्य चलेगी। अत मे तो दोनो के बीच म विरोध है ही क्योकि हमारा आदर्श तो यह है कि हरेक देहात म खद्दर पैदा हो और जब इस तरह हरेक देहात म होगा तब हिंदुस्थान के लिये मील की आवश्यकता नही रहेगी। लेकिन आज आप कैसे दोनो बात साथ-साथ अवश्य कर सकते है। और सत्य प्रदर्शित करने के लिये आदर्श को भी लोगो के सामने रखा जाय। टीका करनेवाले टीका करते ही रहेगे। उसके लिये तो कोई चारा ही नही है।

गुड के बारे म मुझको पूरा ज्ञान नही है परतु मेरा ख्याल कुछ ऐसा रहा है सही कि खाड बनाने के लिये मिल की आवश्यकता हमेशा रहेगी। देहातो मे खाड आसानी से नही बन सकती है। न ऊख हर देहात म पैदा हो सकती है। इस कारण गुड बनाने का धधा सर्वव्यापक नही हो सकता है। सभव है कि इसमे मेरी कुछ गलती है। कैसे भी हो अगर मिल और खादी की बात एक ही मनुष्य कर सकता है तो गुड और मील की बात तो अवश्य कर सकता है।

पैसा शास्त्र (?) का जितना अभ्यास मैं करता हू उतना मेरा विश्वास दृढ होता चला कि लोगो की कगाली अब दूर करने के लिये इन किताबो मे जो कुछ लिखा है वह उपाय हरगीज नही है। वह उपाय उत्पन्न और व्यय अपने आप साथ-साथ चले ऐसी योजना करने मे ही है और वह योजना घरेलू धधो का

पुनरुद्धार ही है।

यहा के मुखी के आग्रह से मैंने दूध लेना शुरू कर दिया है साथ म चपाती और भाजी। भाजी एक वक्त और चपाती दो वक्त। जो शरीर शुद्धि रोटी और बादाम और भाजी म थी वह आज नही है ऐसा तो मैं देख रहा हू। परतु अब दूध शुरू कर दिया है उसे शीघ्रता से नही छोड़ूगा, देखूगा क्या परिणाम आता है। आजकल कराची की द्राक्ष कृपालानीजी के बहनोई भेज रहे हैं वह भी साथ साथ लेता हू।

बापु के आशीर्वाद

२३

निजी

सीमोर हाउस,
१७, वाटरलू प्लेस, एम० डब्ल्यू० १
१६ जुलाई, १९३२

प्रिय श्री बिडला,

आपके ६ तारीख क पत्र का उत्तर देने म बडा विलम्ब हुआ ह, पर जब से लौटा हू कायभार स दबा जा रहा हू। मैं जानता हू कि आपको इस बात स प्रसन्नता हुई है कि कबिनेट न एक ही बिल के द्वारा मामल का निबटारा करने का निर्णय लिया है। यह एक बहुत बडा प्रगतिशील कदम ह, जिसके महत्व का अभी भारत म शायद समझा नही जा रहा ह। आप स्वय सोच सकते हैं कि हमारे साथ लिबरल दल के अस्थायी सहयोग की आशका के ठीक निकलने पर मुझे कितना दु ख हुआ होगा। मैं समझता हू कि यह अधिकाश म गलतफहमी का परिणाम ह। यदि कुछ नेता लोग यहा होते तो गुत्थी सुलझ गई होती। मुझे इस बात का यकीन है कि जो नया तरीका अपनाया गया है उसके द्वारा सफलता अधिक शीघ्रता स मिलनी। इस समय जिस बात की जरूरत है वह यह है कि भारत और पार्लमेट क प्रतिनिधियो के बीच विचार विमश हो, क्योकि पार्लमेट ही सर्वसर्वा ह और यह कि यह विचार विमश आम सिद्धातो तक सीमित न रहकर विशिष्ट सुझावो को लेकर हो। मामल को निबटाने का यही एक व्यावहारिक तरीका है। मुझ आशा है कि शीघ्र ही गलतफहमी दूर हो जायगी।

आपको यह जानकर अवश्य प्रसन्नता हुई होगी कि लार्ड इर्विन भी केबिनेट म आ गये है। अब दूसरी अडचन साम्प्रदायिक समस्या की ह। आशा ह, अगले महीने तक इस बारे म समझौता हो जायगा। इस बीच यदि आप मुझे भारत की अवस्था, विशेषकर उसकी आर्थिक अवस्था से अवगत कराते रहेंगे, तो मैं आपका बहुत कृतज्ञ होऊगा।

भवदीय
लोदियन

श्री घ० दा० बिडला
बिडला ब्रदस लि०,
८, रायल एक्सचे ज प्लेस
कलकत्ता।

२४

१९ जुलाई, १९३२

प्रिय सर तेज

आपकी विविध मुलाकातो के समाचार अखबारो म पढता रहता हू। मुझे यह देखकर बडी प्रसन्नता हुई है कि आपने लिबरल दल को सही नतृत्व प्रदान किया ह। इस बात को लेकर कि सीतलवाड घोषणापत्र पर फेडरेशन ने हस्ताक्षर क्यो नही किय, काफी गलतफहमी फल गई ह। अब तक आप हमार रवय को अच्छी तरह जान गय होग इसलिए इस विषय पर मेरा लिखना अनावश्यक ह। उक्त घोषणा पत्र पर मरे हस्ताक्षरा का प्रश्न ही नही उठता ह क्योकि गोल मजवालो की मत्रणा म भाग लने का सर चिमनलाल सीतलवाड न मुझे कभी आमत्रित किया ही नही। फेडरशन अपना गत माचवाला प्रस्ताव पास कर ही चुकी थी और उसकी निगाह म केवल मत्रणा करन का तरीका उस पसद नहा था इसलिए उस वक्तव्य पर हमम स किसी न हस्ताक्षर नही किये क्योकि हम सबके विचार मे उसम अपक्षाकृत अधिक सीमित मामला की चर्चा थी। इस पत्र के साथ मैं फेडरेशन के प्रस्ताव की नकल भेजता हू जिसस आपको पता चलेगा कि हमारा रुख वास्तव म क्या ह। मैंने आपके साथ दिल्ली म हुई अपनी भेंट के दौरान भी

सारी बात बता दी थी। इस समय भी हमारा वही रुख है। वस्तुत यदि सरकार समिति का गठन करने की हमारी माग को स्वीकार कर ले, तो भी फेडरेशन के सदस्यो को यह विश्वास दिलाने के लिए कि सरकार भारत के प्रगतिशील तत्वो के साथ समझौता करने को सचमुच इच्छुक है, हमे भगीरथ प्रयत्न करना पडेगा।

ऐसा प्रतीत होता ह कि आपकी यह धारणा सी बन गई है कि हम व्यापारी लोग आर्थिक सरक्षण की बाबत राजनीतिज्ञो के बगैर ही सरकार से विचार-विमर्श म सहयोग करने को तयार हैं। जहा तक मुझे ज्ञात है, हममे से किसी ने भी भारत मत्री से ऐसी बात नही कही ह और न यह फेडरेशन का ही रवैया है। फेडरेशन भारतीय व्यापारी-समाज की प्रतिनिधि सस्था है। सम्भव है, कुछ ऐसे व्यापारी भी हो, जो भारत के व्यापारियो का प्रतिनिधित्व करने का दावा करते हो, पर उनके विषय मे मैं कुछ नही जानता।

यह सब आपको केवल यह बताने के लिए ह कि भारतीय व्यापारी-समाज किस दिशा म काम कर रहा है, और मुझे आशा है कि सर पुरुषोत्तमदास की और मेरी भेंट के द्वारा आपको यह भली भाति विदित हो गया होगा।

भवदीय,
घ० दा० बिडला

सर तेजबहादुर सप्रू
इलाहाबाद।

२५

सर जॉन एडसन के साथ १९ जुलाई, १९३२ को हुई मुलाकात

उन्होंने कहा कि उन्होने वाइसराय स दो बार बातें की। वाइसराय को आपत्ति नही है। सर जान लिखेंगे। कायदे के अनुसार मुझे प्रार्थना पत्र देना होगा। मैंने बताया कि गाधीजी तब तक राजनीति की चर्चा नही करेंगे जब तक उन्हें इसकी अनुमति न मिल जायगी। सर जॉन एडसन न कहा कि मैं गाधीजी का अपना (प्रार्थना) पत्र[1] दिखा सकता हू कि मैं अपन पथ प्रदशन के लिए

[1] यह प्रार्थना पत्र गांधीजी से जल में मुलाकात करने की अनुमति के बारे म था। —घ०

मुलाकात करना चाहता हू। यह बात स्पष्ट कर दी जायेगी। उन्होंने कहा कि मैं भाषण द रहा हू। मैंने उन्ह स्मरण दिलाया कि यह मुलाकात है। उन्होंने मरी स्थिति को समझा। मैंन यह स्पष्ट कर दिया कि वार्तालाप म मेरा भाग लेना गाधीजी क ऊपर निभर है, हम लोग कोई कौल करार नही कर सकत। मैंने सुझाव दिया कि आर्डिनेंसो के बावजूद गाधीजी को निमत्रण दिया जा सकता है। उन्होंने उत्तर दिया कि अनुदार दलवाले अडगा लगा रहे हैं। मैंन कहा कि इसका अत किस प्रकार हो सकता है। वह सहमत हुए। आर्थिक चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि आबकारी चुगी के बारे म विचार विमश जारी है।

—घ०

२६

२२ जुलाई, १६३२

पूज्य बापू

आपका ६ तारीख का पत्र मुझे १६ को मिला। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि वह पूना स १६ तारीख की डाक स रवाना हुआ था। आपका २६ जन का वह पत्र मुझे अभी तक नही मिला है जिसमे आपने मुझसे कुछ साहित्य भेजने का कहा था। आशा है, आप जिन जिन चीजो की दरकार हो उनकी बाबत मुझे फिर लिखेंगे जिसस कि मैं व भेज मकू।

आपने आर्थिक दुरवस्था का बिलकुल ठीक निदान किया। मै इस विषय पर आपस सहमत हू कि जहा तक सम्भव हो उत्पादन उपभोक्ताओ की कुटिया म ही हो पर यदि अपन इस दृष्टिकोण का प्रतिपादन आप उन पुस्तको मे न पायें जो आपन पढी ह ता निराश होने का कोई कारण नही है क्योंकि व पुस्तकें इस दृष्टिकोण स नही लिखी गई है। इसके अलावा झोपडी म उत्पादन का विचार ससार भर क अधिकाश अथशास्त्रियो को ग्राह्य नही हो सकता क्योंकि यह दृष्टिकोण बडे बडे कल कारखानो के निहित हितो के विरुद्ध जाने के कारण उन्हे ग्राह्य नही होगा। फलत अथ शास्त्रीगण सब व्यापी दुरवस्था के लक्षणो के उपचार मे लगे हुए हैं और यही एकमात्र न्यूनतर अच्छा तरीका है। कीमतें चढाने और ऋणो को रद्द करनेवाले सुझावो की चर्चा विश्व भर म हो रही है और इसका एकमात्र

लक्ष्य गरीब लोगा का भार हल्का करना ही है। अथशास्त्री इसस आगे बढना सम्भव नही समझते।

मैंने अपनी पुस्तिका मे कीमता को एक ऊचे स्तर पर स्थायी रूप दन की उपादेयता की बात कही थी। कीमतो का चढाकर उन्हे स्थायी रूप दन स किसानो का बोझ हल्का होगा क्योकि उसे बधा लगान दना पडता है और महाजन का सूद अदा करना पडता है सो जुदा, पर केवल इतने ही मे समस्या हल नही हो जाती। मैंने समस्या के केवल एक पहलू पर विचार किया है और मुझे आपको यह बताते प्रसन्नता होती है कि वह पुस्तिका लिखने के बाद से विश्व की सम्मति मेरे सुझाव की ओर झुक रही है। इडिया आफिस मे जो विचार विमश हुआ उसम स्टैकोश ने मेरे दष्टिकोण को सराहा और अब वह निश्चित रूप स उसके पक्ष म हो गये हैं। पर समस्या के अधिक व्यापक पहलू से निबटने क लिए उत्पादन काय फैक्टरिया से हटाकर कुटियो म भेजना आवश्यक हागा। दूसरे शब्दा म आपको उत्पादन का विकेन्द्रीकरण करना होगा। इस दिशा म हम तब तक असफल रहेगे जब तक हमे कानून की सहायता नही मिलेगी।

मेरा दिमाग कुछ इस प्रकार काम कर रहा है। चुगी, उन्नत यन्त्र, लिमिटेड लाइबिलिटी कपनिया और मुद्रा व्यवस्था का जी भरकर दुरुपयोग किया गया है उन पर कुछ नियत्रण की जरूरत है। उदाहरण के लिए चुगी का ससार भर म देश भक्ति के नाम पर दुरुपयोग किया गया है। इसे अधा धुध लागू नही करना चाहिए। चुगी स छूट केवल उन्ही पदार्थों को मिलनी चाहिए जो देश मे सहज ही कृत्रिम रूप स नही, तयार किय जा सकें। साथ ही उसका लक्ष्य यह होना चाहिए कि उत्पादन काय कल-कारखाना से हटकर झोपडिया म पहुचे। उदाहरण के लिए यदि हम सरक्षण प्रदान करनेवाली चुगी को विवेक सगत ढग स लागू करें तो वतमान परिस्थितिया को देखत हुए उसका उपयोग भारत म मोटर कारें तयार करने म नही कर सकते जबकि दश म कारा की माग इतनी सीमित है। हा टाइप राइटरा और सिगर सोइग मशीना के पक्ष म कुछ कहा जा सकता है। फिर उत्पादन का झापडिया म ले जाने के लक्ष्य को सम्मुख रखते हुए कल-कारखाना के उत्पादन काय को प्रतिबन्धित करने के उपाय ढूढन होगे। उदाहरण के लिए सूती मिला और शुगर फक्टरिया के मुकाबले खद्दर और गुड को सरक्षण मिलना चाहिए और मिला और शुगर फक्टरिया पर कर लगाना चाहिए। इसी प्रकार रेलो के मुकाबले बसा को सरक्षण मिलना चाहिए। ये केवल दृष्टात मात्र हैं। उद्देश्य यही है कि उनधधा का विकेन्द्रीकरण हो जो कुटीरो म सम्भव हैं। इस्पात उत्पादन-जैसे उद्योग कोइस परिधि के बाहर रखना होगा क्योकि यह झोपडिया म

मुलाकात करना चाहता हू। यह बात स्पष्ट कर दी जायेगी। उन्होंने कहा कि मैं भाषण द रहा हू। मैंने उन्हें स्मरण दिलाया कि यह मुलाकात है। उन्होंने मरी स्थिति को समझा। मैंन यह स्पष्ट कर दिया कि वार्तालाप म मेरा भाग लेना गाधीजी के ऊपर निभर है, हम लोग कोई कौल करार नही कर सकन। मैंन सुझाव दिया कि आर्डिनेंसा के बावजूद गाधीजी का निमत्रण दिया जा सकता है। उन्होंने उत्तर दिया कि अनुदार दलवाले अडगा लगा रहे हैं। मैंने कहा कि इसका अत किस प्रकार हो सकता है। वह सहमत हुए। आर्थिक चर्चा हुई। उन्होंने कहा कि आबकारी चुगी के बारे म विचार विमश जारी है।

—घ०

२६

२२ जुलाई, १९३२

पूज्य बापू,

आपका ६ तारीख का पत्र मुझे १६ को मिला। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि वह पूना स १६ तारीख की डाक से रवाना हुआ था। आपका २६ जन का वह पत्र मुझे अभी तक नही मिला है जिसमे आपने मुझसे कुछ साहित्य भेजने का कहा था। आशा है, आप जिन जिन चीजा की दरकार हो उनकी बाबत मुझे फिर लिखेंगे जिसस कि मैं वे भज सकू।

आपने आर्थिक दुरवस्था का बिल्कुल ठीक निदान किया। मैं इस विषय पर आपसे सहमत हू कि जहा तक सम्भव हो उत्पादन उपभोक्ताओं की कुटिया म ही हो पर यदि अपने इस दृष्टिकोण का प्रतिपादन आप उन पुस्तकों म न पायें जो आपने पढी हैं तो निराश होन का कोई कारण नही है क्योंकि वे पुस्तकें इस दृष्टिकोण स नही लिखी गई है। इसके अलावा झोपडी म उत्पादन का विचार ससार भर के अधिकाश अथशास्त्रियों को ग्राह्य नही हो सकता क्योंकि यह दृष्टिकोण बडे-बडे मल कारखाना के निहित हिता के विरुद्ध जाने के कारण उन्ह ग्राह्य नही होगा। फलत अथ शास्त्रीगण सव यापी दुरवस्था के लक्षणा के उपचार म लगे हुए हैं और यही एकमात्र न्यूनतर अच्छा तरीका है। कीमतें चढाने और ऋणा को रद्द करनेवाले सुझावा की चर्चा विश्व भर म हो रही है और इसका एकमात्र

तयार नही हो सकता। इसी प्रकार बहदकाय लिमिटेड कपनिया को लघु उद्योगा का गला घोटने को स्वतत नही छोडा जा सकता। बहदकाय बैंक छोटे बैंका और साहूकारो के सहायक बनें, उनका स्थान न छीनें। यदि हमारी मुद्रा सोने पर अवस्थित न होकर कच्चे माल पर अवस्थित हो तो बीमा कपनियो मे जो अतुल धनराशि बेकार पडी ह उसका अधिक सतोपजनक उपयोग हो सकता ह। उपज मुद्रा की योजना के अतगत खेती की उपज पर रुपया दना गिल्ड एज्ड सिक्योरिटियो पर दिय गए रुपय की अपक्षा अधिक सुरक्षित सिद्ध होगा। मैं य विचार आपके सम्मुख अस्पष्ट रूप म रख रहा हू। आप देखेंगे कि जहा तक लक्ष्य का सबध है, हम दोना के दष्टिकोण म कोई अतर नही ह।

मरा विश्वास ह कि मिल मालिका को सरकार के अतिम लक्ष्य से अच्छी तरह अवगत करा दिया जाए तथा उन्ह बाहरी तत्वा से हो सकनेवाले आक्रमण से सरक्षण मिले ता व कर देने म आनाकानी नही करेंग। उदाहरण के लिए यदि आप कपडे और चीनी के आयात पर सरक्षण चुगी लागू करें और साथ ही कपडा मिलो और शुगर फक्टरियो पर आबकारी चुगी लगायें जो आरभ म २० प्रतिशत हो और अगले २० वर्षों म बढकर ५० प्रतिशत तक जा पहुचे तो मिलें उसका विराध नही करेंगी—क्योंकि उन्हे स्वय का सरकार की नीति के अनुरूप ढालने का काफी समय मिलगा। य विचार अस्पष्ट म है पर यदि उन्ह व्यवहार मे लान के लिए यथेष्ट विधान मौजूद रहे तो इन्हे प्रकृत रूप दना बिलकुल सम्भव ह।

रही गुड उत्पादन की बात सा मैं आपकी सूचना क लिए यह कहना चाहता हू कि इस समय भारत म चीनी उत्पादन का प्रश्न बडे महत्व का बन गया ह और सभी प्रात अपना-अपना गन्ना अपन आप बोन काटने की चेष्टा म रत ह। बगाल, विहार सयुक्त प्रात पजाब मद्रास और दक्षिण भारत—एक तरह से सभी प्रात अपना गन्ना स्वय उपजान म सक्षम हैं। इसलिए यदि सरक्षण शुगर फक्टरिया को न मिलकर गुड और खाड तयार करनेवाले कुटीर उद्योगो को मिल तो मैं समझता हू कि ५००० से १० ०००) मात्र की लागत की मशीनरी स बढिया किस्म की चीनी तक तयार की जा सकती है।

अपनी खुराक के विषय म आपको क्या कहना है सो मैं जानना चाहता हू। म स्वय दूध का स्थान बादाम को देना चाहता हू, पर केवल प्रयाग के बतौर। आपने अपन हाथ के दद के बारे मे कुछ नही लिखा। आशा है अब उससे त्राण मिल गया होगा।

यह चिट्ठी बहुत लम्बी हो गई थी, इसलिए मैंने इसे टाइप कराना ठीक समझा जिससे आपको पढ़ने में सुविधा रहे।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

२७

भाइ घनश्यामदास,

आपका पत्र मिला है। मैं जानता हूं कि विलायत जा सकु तो अच्छा है। लेकिन उसके लिये यहा भी वायुमंडल अनूकूल होना चाहिये। इस वक्त तो बहोत हि प्रतिकुल है। मैंने एक खत अल्टीमेटम सा सरकार को लिखा हैं। उसके उत्तर की इतजारी में हु। समयाभाव के कारण ज्यादा नहिं लिख सकता लेकिन मुबई शीघ्र आ सकें तो आ जाना। मैं वहा चार अगस्त को पहोचुगा। यदि मेरा जाना हुआ तो तुमारे विलायत में रहना या नहिं पीछे से सोच लेंगे।

बापु

बारडोली
२६ ७ ३२

मगल को बोरसद हुगा।

२८

यरवडा मंदिर
ता० ३० ७ ३२

भाई घनश्यामदास

आपका २२ जुलै का पत्र मिला है। द्रव्यशास्त्र के मेरे पास जितनी पुस्तक थी मैं पढ़ चुका हू। इसका यह अर्थ नही कि सब अच्छी तरह समज चुका हू। परतु समज शक्ति में कुछ न कुछ वृद्धि हुई है। मेरी उम्मीद थी कि आगर की

पुस्तक पढ लुगा उसके पहले आपकी तरफ से दूसरी पुस्तक मिल जायगी। लेकिन वह खत ही आपको न मिला। यह दूसरा खत ह जो नही मिला। मुझे चाहिये फाउलर कमिटी चवरलेन कमिटी वेलिगटन स्मिथ और हिल्टन यग कमिटी की रिपोट और उसके साथ विरोधी रिपोट भी। दादा चानजी की Currency or Exchange नामक पुस्तक और Findlay Shirras ने आजकल लिखी है वह।

मुझको कुछ डर ह कि आपको बादाम अनुकूल नही होगी। क्योकि मैं बरसो तक बादाम मोर्यासिग इ० तेली बीजा पर रहा हू मैं उन्हे बरदास्त कर लेता हू। आपके लिये तो दूध दही ही मुख्य खुराक रहेगा। स्टाच कम होनी चाहिये और दाल की प्रोटेडि बिलकुल नही। गेहू दूध सेलड भाजी और स्टाच रहित फल जसे कि अगूर अनार नारगी सेव, अननस, पपनस यही खुराक आवश्यक और अनुकूल आप ऐसा के लिये है। यह मेरा अनुभव ह। बादाम दूध की जगह तब ही ले सकती है जब वनस्पति मे स कोई एसी मिल जाय जो दूध की जगह ले सके। रसायन शास्त्र के प्रयोग मे तो दूध और बादाम मे एक ही तत्व ह लेकिन दूध मे जो कुछ सूक्ष्म वस्तु ह वह बादाम म नही ह और जो *animal protein* मे ही मिलती ह। मेरा पूण विश्वास ह कि लाखो वनस्पतिया म ऐसी वनस्पति अवश्य ह जिसम भी वह सूक्ष्म वस्तु है। परतु हमारे वद्यो ने अपने आलस्य के कारण इसकी आज तक शोध नही की ह। और इसीलिये जितना काम दूध देता है वह सबका सब बादाम नही दे सकती है।

मरा हाथ ज्या का त्या ह। लेकिन काम करन म कोई बाधा नही आती है। इसलिये कुछ चिता का कारण ही नही ह।

हम तीनो अच्छे हैं। आपको जानकर खुशी होगी कि सरदार न सस्कृत का आरभ कर लिया है और बहुत तज गति से चल रह हैं।

बापु के आशीर्वाद

२६

१६, एलवर्ट रोड,
इलाहाबाद
३१ जुलाई, १६३२

प्रिय श्री बिडलाजी,

आपके १६ जुलाई के पत्र की पहुच भेजने मे देर हुई इसके लिए क्षमा प्रार्थी हू। पत्र यहा से रिडाइरेक्ट होकर हैदराबाद गया, जहा मैं अपने पशे स सम्बद्ध काम काज के सिलसिले मे गया हुआ था। उसके हैदराबाद पहुचते पहुचते मैं बम्बई के लिए चल पडा। यह पत्र अब तीन दिन पहले ही मिला था। वापसी मे कुछ अस्वस्थ हो गया था, नही तो वापस लौटते ही तुरत आपको लिखता।

आपने १८ जुलाई का प्रेसवाला से जो मुलाकात की थी, उसका विवरण पत्रा म पढा। यह स्पष्ट है कि आपको कार्फ्रेसवाला तरीका पसन्द नही है। मरी इस धारणा की पुष्टि आपके इस पत्र से हो गई।

बम्बई की उस मत्रणा का आयोजन करने म मरा कोइ हाथ नही था। मैं उस समय असल मे बीमार था। मैं अच्छी तरह समझता हू कि अपनी वतमान स्थिति म आपके लिए बम्बईवाले वक्तव्य पर सही करना सम्भव नही था। साथ ही, मैं यह भी कह दू कि आपने जो विचार व्यक्त किय है उनसे मैं सहमत नही हू। आपका कहना है कि "मरी यह धारणा-सी बन गइ है कि कुछ व्यापारी लाग आर्थिक सरक्षणो की बाबत राजनीतिना के बगैर ही विचार विमश म सहयोग करने का तयार हैं।' मैं यह स्वीकार करता हू कि मरी ऐसी ही धारणा थी। एसी ही धारणा यहा तथा अन्यत्र दूसरे लागो न भी बना ली थी। सर सेम्युअल हार के वक्तव्य से इस धारणा की पुष्टि होती थी। पर मुझे आपसे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भारत मत्री को किसी ने भी ऐसा सुझाव नही दिया है तथा फेडरेशन का, जा भारतीय व्यापारी-समाज की प्रतिनिधि सस्था ह यह रवया नही है।

मैं अभी-अभी बम्बई के अखबार पढ रहा था। उनम व्यापारिया की बम्बई की हाल की बठक की कारवाई प्रकाशित हुई ह। इन व्यापारिया ने भी यह बात स्पष्ट कर दी है कि आर्थिक सरक्षणा पर विचार विमश स वे राजनीतिना को अलग नही रखना चाहते।

आपने हमारे दिल्ली के वार्तालाप का उल्लेख किया है। मुझे याद पड़ता है कि आपने परामर्शदायिनी समिति के साथ इस शर्त पर सहयोग करने की तत्परता प्रकट की थी कि मैं आपके इस सुझाव का समर्थन करूं कि अर्थ और व्यापार संबंधी प्रश्नों को एक ऐसी छोटी सी समिति को सौंप दिया जाए जिसमें अर्थ और व्यापार के क्षेत्र में दोनों देशों के प्रतिनिधि रहें, और यह छोटी समिति लंदन में बैठे। मुझे आर्थिक मामलों में तकनीकी पहलू पर अर्थशास्त्र के विशेषज्ञों के आपसी विचार विमर्श पर कोई आपत्ति न होती तब राजनीतिज्ञ विशारदों को वर्ग चाहे वह कितना ही आपत्तिजनक क्यों न हो, ऐसे मामलों में अपने आपको अलग थलग नहीं रख सकता जिनका शासन विधान संबंधी पहलू भारत और इंग्लैंड के आर्थिक क्षेत्र के प्रतिनिधियों के समझौते का एक अंग हो।

रही आपके बम्बईवाली कान्फ्रेंस के विरुद्ध आपके आक्रमण के अन्य कारणों की बात सो ये कारण दलगत राजनीति के क्षेत्र में आते हैं। आप अपने विचार व्यक्त करने को स्वतंत्र हैं पर यदि आप यह बात ध्यान में रखें तो अच्छा होगा कि दुर्भाग्यवश इस समय भारत में एक से अधिक दल हैं। यद्यपि उनमें से कुछ दलों का भौतिक दृष्टि से अधिक शक्तिशाली होना सम्भव हो सकता है। मैंने न तो कभी यह मांग ही की है और न यह सुझाव ही दिया है कि अन्य किसी दल को अपने विचार व्यक्त करने अथवा शासन विधान के निर्माण में भाग लेने के अधिकार से वंचित रखा जाए अतएव मेरी ऐसे किसी भी दृष्टिकोण के साथ सहानुभूति नहीं हो सकती, कि शासन विधान का निर्माण कार्य केवल एक ही दल के हाथों में रहे, और अन्य दलवाले उससे अलग रखे जायं।

भवदीय,

तें० ब० सप्रू

श्री घ० दा० बिड़ला,
८, रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता

३०

निजी और गोपनीय

कलकत्ता
२ अगस्त, १६३२

प्रिय सर तेज,

आपके ३१ जुलाई के पत्र के लिए धन्यवाद।

मुझे यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि आप अस्वस्थ थे। आशा है, अब आप बिलकुल ठीक हो गये होंगे।

मुझे कहना पड़ता है कि आपके साथ मेरी भेंट और मेरे पत्र का आपने यह अर्थ निकाला कि मैं कान्फ्रेंसवाले तरीके के खिलाफ हूं। कान्फ्रेंस करने के मामले में मैं किसी से भी पीछे नहीं हूं, पर ऐसी कान्फ्रेंस सचमुच की होनी चाहिए, नहीं तो हम कोई अधिक प्रगति नहीं कर पायेंगे। शासन विधान की रचना के तौर तरीका की बात जाने दीजिए, *स्वयं शासन विधान ही ऐसा होना चाहिए कि उसे* राष्ट्रवादी भारत अंगीकार करने से इन्कार न कर सके। मेरी विनम्र सम्मति में जब तक हमें गांधीजी का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग नहीं मिलेगा और जब तक शासन विधान ऐसा न बने, जो कांग्रेस की मांगों की पूर्ति न करते हुए भी कांग्रेस द्वारा रद्द न किया जा सके, तब तक इस बात की कोई गारण्टी नहीं है कि लागू करने मात्र से ही शासन विधान देश में शांति स्थापित कर देगा। अप्रत्यक्ष सहयोग से मेरा यह आशय था कि गांधीजी प्रत्यक्ष रूप से यह मांग न भी करें, तो भी वह आप-जैसे राजनीतिज्ञों का पथ प्रदर्शन करने को तैयार हो जायें, जो शासन विधान की रचना में सहयोग दे रहे हैं। इससे पता लगेगा कि उन्हें फिलहाल क्या कुछ स्वीकार हो सकता है। कम-से-कम इतने से ही शासन विधान को अमल में लाने में तथा शांति स्थापित करने के लिए आवश्यक समय पाना सम्भव होगा। पहली गोल मेज कान्फ्रेंस से वापसी के बाद आपने इस स्थिति को मान्य किया था, क्योंकि तब आपने गांधीजी का सहयोग प्राप्त करने के लिए भगीरथ प्रयत्न किया था। कलकत्ते का यूरोपीय समाज भी समझने लगा है कि कांग्रेस के सहयोग के बिना नवीन शासन विधान व्यवहार्य सिद्ध नहीं होगा, पर वह अपनी अनुदार प्रकृति के अनुरूप शासन विधान लागू होने से पहले कांग्रेस को वचनबद्ध करना चाहता है कि उस पर अमल किया जायगा। पर फिर भी मेरा यही कहना है कि किसी-न-किसी रूप में कांग्रेस का सहयोग वांछनीय है, क्योंकि उसके बगैर कोई भी शासन

विधान व्यवहार्य सिद्ध नही होगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अब आपकी दिलजमई हो गई है कि भारत के व्यापारी समाज ने ऐसा कोई आचरण नही किया है जिससे यह ध्वनि निकले कि वह स्वतन्त्र रूपसे सहयोग प्रदान करेगा, और मैं आपको आश्वासन देता हू कि ऐसा कोई भी व्यापारी नही है जिसकी शासन विधान की रचना-जसे दुरूह काय को अकेले निभा ले जाने की आकाक्षा रही हो। व्यापारी लोग इस काम के लिए सवथा अनुपयुक्त हैं और उनका ऐसा कोई स्वप्न देखना उपहासास्पद होगा।

जब मैं दिल्ली मे आपसे फेडरेशन का प्रस्ताव लेकर मिला था, तो मैंने यह कभी नही कहा कि फेडरेशन परामशदायिनी समिति के साथ इस शत पर सहयोग करने को तैयार हो जायेगा कि उसके इस सुझाव का समथन करें कि आर्थिक और व्यावसायिक प्रश्न एक ऐसी छोटी समिति को सौप दिये जाय जिसमे भारत और ब्रिटेन के आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्र के प्रतिनिधि रहे और इस समिति की बठक लदन मे हो। वस्तुत मेरी तो यह धारणा थी कि आप स्वय ऐसे सुझाव के पक्ष मे हैं। इस प्रकार प्रश्न आपके समथन का नही बल्कि ब्रिटिश सरकार द्वारा ऐसी समिति के गठन के लिए तत्परता दिखाने का था। फेडरेशन के सदस्यो की यह आम धारणा थी कि ऐसी समिति बनाने के बारे मे तत्परता दिखाकर सरकार भारत के प्रगतिशील वग का सहयोग प्राप्त करने की इच्छुक है। फलत ऐसा सहयोग वाछनीय है क्योकि वसा लक्षण मिलने के बाद हमारे लिए सरकार को इस बात के लिए राज़ी करना कठिन सिद्ध नही होगा कि फेडरेशन गाधीजी के सलाह मशवरे के साथ आर्थिक सरक्षणवाले प्रश्न को हाथ मे ले।

मैं आपको इतने विस्तार के साथ इसलिए लिख रहा हू कि मैं आपका बडा आदर करता हू और आपके मन पर यह छाप नही छोडना चाहता कि मैं दलगत राजनीति से काम ले रहा हू। मेरा किसी भी राजनतिक दल से सबध नही है। मैंने जो कुछ कहा है एक व्यापारी की हैसियत से कहा है, ऐसे व्यापारी की हैसियत से जो अपनी सीमाओ के प्रति सचेत है और जो ऐसा कोई काम हाथ मे नही लेगा जिसके लिए वह अनुपयुक्त है।

भवदीय
घ० दा० बिडला

सर तेजबहादुर सप्रू
इलाहाबाद।

३१

१६, एलबट रोड,
इलाहाबाद
४ अगस्त १६३२

प्रिय श्री बिडलाजी

आपके २ अगस्त के पत्र के लिए मैं बहुत आभारी हू।

मैं आपके साथ वाग्विवाद मे नही उतरना चाहता, पर कम-से-कम एक मामले म मैं यह अवश्य कहूगा कि मेरी स्मरण शक्ति मुझे दूसरी ही बात बताती है। मुझे यह अच्छी तरह याद है कि जब आप मुझसे दिल्ली म मिले थे, तब आपने सुझाव दिया था कि आर्थिक और व्यावसायिक प्रश्नो का निबटारा एक ऐसी छोटी समिति को सौंप दिया जाए जिसम ब्रिटेन और भारत के आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्र के प्रतिनिधि रहें और इस समिति की बठक लदन मे हो। मैं अपने पहले पत्र म कह चुका हू कि मुझे आर्थिक मामले के तकनीकी पहलू पर अर्थशास्त्र विशारदो द्वारा विचार विनिमय पर कोई आपत्ति नही होती, पर आर्थिक मामले पर ब्रिटिश और भारतीय प्रतिनिधियो के बीच हुए किसी भी करार क शासन विधान सबधी पहलू की चर्चा से राजनीतिज्ञो को अलग थलग नही रखा जा सकता। एसी समिति की नियुक्ति की चर्चा हुई थी, आप स्वय भी यह स्वीकार करते हैं पर मैं देखता हू आपकी आपत्ति मेरे इस सुझाव के प्रति है कि आप मेरा समर्थन चाहते थे। हा, यह बात आप ठीक ही कहते है—जसा कि आपने अपने पत्र म कहा है—कि सवाल मेरे समर्थन का नहीं, बल्कि ऐसी समिति की नियुक्ति के लिए ब्रिटिश-सरकार की तत्परता का था।

मुझे यह भी अच्छी तरह याद है कि आपने कहा था कि यदि आर्थिक और व्यावसायिक मामले के सबध म आपकी इच्छा की पूर्ति हो जाए तो आप परामर्श-दायिनी समिति के साथ सहयोग करने को तैयार हो जायेंगे। मैं इस बात का रिकार्ड पर यह दिखाने के लिए रख रहा हू कि दिल्ली म आपके साथ मेरी जो चर्चा हुई थी उसकी बाबत मेरी स्मृति आपकी स्मृति से भिन्न है।

रही आपके २ अगस्त के पत्र के इस कथन की बात कि यदि कांग्रेस वास्तविक

विधान व्यवहार्य सिद्ध नहीं होगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अब आपकी दिलजमई हो गई है कि भारत के व्यापारी समाज ने ऐसा कोई आचरण नहीं किया है जिससे यह ध्वनि निकले कि वह स्वतन्त्र रूपसे सहयोग प्रदान करेगा और मैं आपको आश्वासन देता हूं कि ऐसा कोई भी व्यापारी नहीं है, जिसकी शासन विधान की रचना जैसे दुरूह कार्य को अकेले निभा ले जाने की आकांक्षा रही हो। व्यापारी लोग इस काम के लिए सर्वथा अनुपयुक्त हैं और उनका ऐसा कोई स्वप्न देखना उपहासास्पद होगा।

जब मैं दिल्ली में आपसे फेडरेशन का प्रस्ताव लेकर मिला था तो मैंने यह कभी नहीं कहा कि फेडरेशन परामर्शदायिनी समिति के साथ इस शर्त पर सहयोग करने को तैयार हो जायेगा कि उसके इस सुझाव का समर्थन करें कि आर्थिक और व्यावसायिक प्रश्न एक ऐसी छोटी समिति को सौंप दिये जायं जिसमें भारत और ब्रिटेन के आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्र के प्रतिनिधि रहें और इस समिति की बैठक लंदन में हो। वस्तुतः मेरी तो यह धारणा थी कि आप स्वयं ऐसे सुझाव के पक्ष में हैं। इस प्रकार प्रश्न आपके समर्थन का नहीं बल्कि ब्रिटिश सरकार द्वारा ऐसी समिति के गठन के लिए तत्परता दिखाने का था। फेडरेशन के सदस्यों की यह आम धारणा थी कि ऐसी समिति बनाने के बारे में तत्परता दिखाकर सरकार भारत के प्रगतिशील वर्ग का सहयोग प्राप्त करने की इच्छुक है। फलतः ऐसा सहयोग वांछनीय है क्योंकि वैसा लक्षण मिलने के बाद हमारे लिए सरकार को इस बात के लिए राजी करना कठिन सिद्ध नहीं होगा कि फेडरेशन गांधीजी के सलाह मशवरे के साथ आर्थिक संरक्षणोंवाले प्रश्न को हाथ में ले।

मैं आपको इतने विस्तार के साथ इसलिए लिख रहा हूं कि मैं आपका बड़ा आदर करता हूं और आपके मन पर यह छाप नहीं छोड़ना चाहता कि मैं दलगत राजनीति से काम ले रहा हूं। मेरा किसी भी राजनैतिक दल से संबंध नहीं है। मैंने जो कुछ कहा है एक व्यापारी की हैसियत से कहा है ऐसे व्यापारी की हैसियत से जो अपनी सीमाओं के प्रति सचेत है और जो ऐसा कोई काम हाथ में नहीं लेगा जिसके लिए वह अनुपयुक्त है।

भवदीय,
घ० दा० बिड़ला

सर तेजबहादुर सप्रू
इलाहाबाद।

३१

१६, एलबट रोड,
इलाहाबाद
४ अगस्त, १९३२

प्रिय श्री बिडलाजी

आपके २ अगस्त के पत्र के लिए मैं बहुत आभारी हू।

मैं आपके साथ वाद विवाद मे नही उतरना चाहता, पर कम से-कम एक मामले म मैं यह अवश्य कहूगा कि मेरी स्मरण शक्ति मुझे दूसरी ही बात बताती है। मुझे यह अच्छी तरह याद है कि जब आप मुझसे दिल्ली मे मिले थे, तब आपने सुझाव दिया था कि आर्थिक और व्यावसायिक प्रश्नो का निबटारा एक ऐसी छोटी समिति को सौंप दिया जाए जिसमे ब्रिटेन और भारत के आर्थिक और व्यावसायिक क्षेत्र के प्रतिनिधि रहें और इस समिति की बैठक लदन मे हो। मै अपने पहले पत्र म कह चुका हू कि मुझे आर्थिक मामले के तकनीकी पहलू पर अर्थशास्त्र विशारदो द्वारा विचार विनिमय पर कोई आपत्ति नही होती पर आर्थिक मामले पर ब्रिटिश और भारतीय प्रतिनिधियो के बीच हुए किसी भी करार के शासन विधान सबधी पहलू की चर्चा स राजनीतिज्ञो को अलग थलग नही रखा जा सकता। ऐसी समिति की नियुक्ति की चर्चा हुई थी, आप स्वय भी यह स्वीकार करते हैं, पर मै देखता हू आपकी आपत्ति मेरे इस सुझाव के प्रति है कि आप मेरा समर्थन चाहते थ। हा यह बात आप ठीक ही कहते हैं—जसा कि आपने अपने पत्र म कहा है—कि सवाल मेरे समर्थन का नही, बल्कि एसी समिति की नियुक्ति के लिए ब्रिटिश-सरकार की तत्परता का था।

मुझे यह भी अच्छी तरह याद है कि आपने कहा था कि यदि आर्थिक और व्यावसायिक मामल क सबध म आपकी इच्छा की पूर्ति हो जाए तो आप परामर्श दायिनी समिति के साथ सहयोग करने को तयार हो जायेंगे। मैं इस बात को रिकाड पर यह दिखाने के लिए रख रहा हू कि दिल्ली मे आपके साथ मेरी जो चर्चा हुई थी, उसकी बाबत मेरी स्मति आपकी स्मति स भिन्न है।

रही आपके २ अगस्त के पत्र के इस कथन की बात कि यदि कार्मेस वास्तविक

कांफ्रेंस न हुई तो उसमे अधिक प्रगति नही होगी। मैं यह नही जानता कि 'वास्तविक कांफ्रेंस मे आपका क्या अभिप्राय है। राष्ट्रवादी भारत' के कोई निश्चित अथ नही हैं। मेरा विश्वास है कि काग्रेसवादी हुए बिना भी किसी के लिए अच्छा खासा राष्ट्रवादी होना सम्भव है।

आप कहते हैं कि यदि शासन विधान काग्रेस की मागो को पूरा न करते हुए भी ऐसा न हो जिसे काग्रेस रद्द न कर दे, तो उसके द्वारा शाति स्थापित नही होगी। मैं यह कहने म असमथ हू कि काग्रेस क्या रद्द करेगी या क्या रद्द नहा करगी। यह तो काग्रेस ही बतायेगी।

रही महात्मा गाधी के सहयोग की बात सो उनके सहयाग का मुझस अधिक काई स्वागत नही करेगा। पहली गोल मेज कान्फ्रेंस म लौटन के बाद मैंने ऐसा सहयाग पाने के लिए प्रयत्न किया था और यदि उनका सहयोग अब प्राप्त हो सके तो अब भी मुझे प्रसन्नता होगी—हा यह अवश्य कहूगा कि कुछ मामला म मेरे विचार उनके विचारो स अधिक मेल नही खाते और मैंने यह बात महात्माजी से भी नही छिपाई थी। मैंने महात्माजी स भी कहा था कि मैं किसी चीज के गुण दोषो का निणय करने के मामले म स्वतंत्र रहना चाहता हू यदि कुछ मामलो म मेरा उनसे मतभेद हो तो यह मेरा दुर्भाग्य है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कलकत्ते का यूरोपीय समाज भी समझने लगा है कि काग्रेस के सहयाग के बिना नवीन शासन विधान व्यवहार्य सिद्ध नहा होगा पर वह अपनी अनुदार प्रकृति के अनुरूप शासन विधान लागू होने से पहले काग्रेस का वचनबद्ध करना चाहता है कि उस पर अमल किया जायेगा।'

मैं अभी-अभी लदन के स्पेक्टटर' के पिछले अक म छपा श्री विलियर का लेख पढ रहा था। कलकत्ते के यूरोपीय समाज को उक्त लेख के द्वारा जाचने के बाद तथा उस समाज के कुछ पत्रो मे जो निकलता रहता है उसके आधार पर मेरे लिए यह मान्य करना कठिन है कि वह समाज समझने लगा है कि काग्रेस के सहयाग के बिना शासन विधान अव्यवहार्य सिद्ध होगा। पर आप वहा पर मौजूद है इसलिए आप अधिक जानते होंगे। यदि आप किसी न किसी रूप म काग्रेस के सहयोग का आश्वासन दे सकें तो मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता होगी। सम्भवत इस उद्देश्य की सफलता के लिए हमम से किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा आप सबसे अधिक उपयुक्त है। पर मैं यह कहने को बाध्य हू कि मैं इस बात म आपसे सहमत नही हू *कि यदि काग्रेस अलग रही तो कान्फ्रेंस से कोई लाभ नही होगा।* जब मैंने अपने पहले पत्र म दलगत राजनीति का उल्लेख किया था तो आपके द्वारा व्यक्त

क्यिे गए विचार स ही था। यही विचार अन्य क्षेत्र मे भी व्यक्त किया जा रहा है।

सद्भावनाओ के साथ

आपका
ते० ब० सप्रू

श्री घ० दा० विडला,
कलकत्ता।

३२

कलकत्ता
४ अगस्त १९३२

प्रिय लार्ड लोदियन,

आपके १९ जुलाई के पत्र के लिए धन्यवाद।

आपको पिछली बार लिखने के बाद से यहा की राजनतिक आबोहवा और भी बिगड गई है। सर सम्युअल हार को लार्ड इर्विन के काल के वातावरण म, तब हर कोई सहयोग प्रदान करता था। वतमान अवस्था की, जब सभी असहयोग पर उतारू हैं तुलना करके पता लग गया होगा कि इस समय भारतीय मानस कितना क्षुब्ध है हालाकि उन्हें यहा की स्थिति के बारे मे ठीक ठीक खबर कभी नही मिली।

आपसे यह जानकर सतोष हुआ कि इस समय जिस चीज की आवश्कता ह वह है भारत के तथा पार्लमेंट के प्रतिनिधियो तथा सरकार के बीच एक वास्तविक कार्फेंस का होना।' पर मैं यह नहा जानता कि आप 'वास्तविक भारत को किस प्रकार ढूढ पायेंगे। यदि आपको लिबरल दलवालो का सहयोग मिल भी गया, जो कि काय-कलाप की प्रणाली म थोडा-बहुत हर फेर करन के बाद बिलकुल सम्भव है—ता भी 'वास्तविक भारत का सहयोग अप्राप्य रहगा। अतएव मैं अपनी इस बात को जो मैं अपन पिछले पत्रा म कहता आ रहा हू फिर दुहराता हू कि इस समय काय-कलाप की प्रणाली तो क्या स्वय नया शासन विधान उतना मानी नही रखता जितना ऐस शासन विधान का लागू होना जिस काग्रेसकी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष मान्यता प्राप्त हो क्योकि उसके बिना शासन विधान को सुचारु रूप

से अमल म लाना बिलकुल सम्भव नही है। काग्रेस ने प्रनिबधों और सरक्षणा के थोडे-म समय के लिए बने रहन की अनिवायता स्वीकार कर ली है, इमलिए काग्रेस के साथ समझौता असम्भव क्या समझा जाए यह मेरी समझ के बाहर है। मैंन यही बात बगाल के गवनर से भी कही थी और उसस वे बहुत प्रभावित हुए दिखाइ पड । मैं आपस अनुनय करूगा कि आप इस लक्ष्य की मिद्धि के लिए प्रयत्न करते रहे। आप इस भ्रामक धारणा को अपने दिमाग से निकाल दें, जा हमारी कलकत्ता कलववाली बातचीत के दौरान भी दिखाई पडी थी कि शासन विधान के लागू होते ही राष्ट्रवादी भारत उस अमली जामा पहनाने लगगा और वतमान सघष का कुछ हद तक अन्त हो जायेगा।

मुझ यह जानकर प्रसन्नता हुई कि लाड इर्विन कबिनेट मे आ गये हैं। भारत की उनके प्रति सदभावना है और वह गाधीजी क प्रगाढ मित्र है, इसलिए उनके कबिनट म आने स मुझे हष हुआ है। मैं जिस बात की दलील पेश कर रहा हू क्या आप उसके बारे म उनका भी समथन प्राप्त करने का प्रयत्न नही करेंगे। मैं उन्ह स्वय भी लिखता, पर मेरा खयाल है कि मैं उन्ह अच्छा नही लगा, इसनिए मैं उन्ह नही लिखूगा।

आर्थिक अवस्था इस प्रकार है आपको पत्र लिखन के बाद स धारणा अच्छी हुइ है। इसका श्रेय सस्ती मुद्रा को दिया जा सकता है। सोने के भारी मात्रा म निर्यात स उत्साह ग्रहण करके सरकार ने ट्रेजरी बिना पर रुपया उधार लेना बद कर दिया है जिसक फलस्वरूप बक से उधार लने की दर ३) सैकडा तक गिर सकती है। इस समय दर ४) सकडा है। इसका यह अथ मत लगाइए कि सोने का निर्यात हमारे लिए विशुद्ध आशीर्वाद सिद्ध हुआ है। यदि सरकार कागजी मुद्रा कोप म अमानत के रूप म सचित स्वण राशि म देहात से आनेवाले साने को खरीदकर वद्धि करती है तो भी यही फल निकलता। हम सबको इस बात का साच है कि जहा बक आफ इग्लड अपनी सचित स्वण राशि म वद्धि करने म लगा हुआ है हम अपने यहा उपलब्ध होनेवाले साने से वचित किये जा रहे हैं। विमाना द्वारा बेचे गए सोने को सरकार खरीदे अथवा उसे देश के बाहर भेजा जाए, परिणाम रुपय क बाजार म एकसमान होगा। यह परिणाम अन्न कीमतों के कुछ ऊचे उठने म दिखाई पड रहा है। पर यह बडे शहरा तक ही सीमित है और यह आश्वासन मान लेने का कोइ कारण नहीं है कि यह आशावाद वास्तविक उन्नति के रूप मे फलित हागा। वास्तव मे देहाता की दशा और भी बिगडी है और गैर सरकारी सूत्रा म मिली खबरो के आधार पर कहा जा सकता है कि सरकार को पस की तगी सताने लगी है। रेलवे बजट म काफी घाटा होगा—१० करोड के

३३

कलकत्ता
८ अगस्त १९३२

प्रिय सर तेज,

आपके ४ अगस्त के पत्र के लिए धन्यवाद।

मैं जो विचार सार्वजनिक रूप से तथा आपको लिखे पत्रों के द्वारा व्यक्त करता आ रहा हूं वे किसी दलबन्दी की भावना से प्रेरित होकर कर रहा हूं, यदि आपकी इस भ्रांति का निवारण मैं कर सकता तो बड़ी अच्छी बात होती पर फिलहाल इसमें मुझे सफलता नहीं मिलेगी, ऐसा दिखाई पड़ता है। तब तक के लिए मैं आपको यह बताये रखना चाहता हूं कि हमारी दिल्लीवाली बातचीत की हम दोनों की याददाश्त प्रायः एक जैसी है जब आप कहते हैं कि आप सहयोग करने को प्रस्तुत हो जायेंगे तो आपका अभिप्राय फेडरेशन अथवा उसके प्रतिनिधियों के सहयोग से रहा होगा। मेरे व्यक्तिगत सहयोग का तो प्रश्न ही नहीं है।

मुझे अपने पिछले पत्र के द्वारा कुछ भ्रांति का निवारण करना था क्योंकि आपके पत्र से यह ध्वनि निकलती थी कि सहयोग मेरे सुझाव के लिए आपके समर्थन पर निर्भर करता है। मेरा सुझाव आपको अच्छा लगा ही था। आपने प्रस्तुत पत्र में आप शब्द का प्रयोग किया है मैं उसे फेडरेशन के प्रतिनिधियों के लिए लागू समझता हूं। इसके बाद मेरी और आपकी याददाश्त में कोई अन्तर नहीं रह जाता है।

फेडरेशन ने एक कसौटी निश्चित कर ली थी और फेडरेशन की यह व्यापक धारणा थी कि यदि सरकार उस कसौटी पर ठीक उतरेगी तो फेडरेशन सहयोग देगा।

भवदीय
घ० दा० बिड़ला

सर तेजबहादुर सप्रू,
इलाहाबाद।

३४

तार

लार्ड लोदियन,
सीमोर हाउस
१७, वाटरलू प्लेस,
लदन, एम० डब्ल्यू० १

अतिशय चिंतित हू। पर सरकार सहयोग करे तो अवस्था म सुधार सभव। दलित वर्गों के साथ सयुक्त निर्वाचन पर समझौता सम्भव पर सरकार की मा यता आवश्यक। सफलता के लिए गाधीजी की जेल से मुक्ति अनिवार्य। पूर्ण विश्वास है, इससे अन्य महत्वपूर्ण हल निकलने सम्भव होगे। पर गाधीजी के पथ प्रदर्शन के बिना कुछ सम्भव नही। अत गाधीजी तथा अन्य महत्वपूर्ण नेताओ की अविलम्ब रिहाई के लिए प्रयत्नशील रहिए। आशा है इस बात का अच्छी तरह समझ लिया गया होगा कि गाधीजी का निधन न सिर्फ भारत के लिए बल्कि पूरे साम्राज्य के लिए दुर्भाग्यपूर्ण होगा। कृपया यह समुद्री तार लार्ड इर्विन को दिखा दीजिए। उनसे सहायता मिलने की आशा करता हू।

घनश्यामदास बिडला

रायल एक्सचेंज प्लेस,
१३ ९ ३२

३५

एक्सप्रेस तार

सर तेजबहादुर सप्रू
इलाहाबाद

अनुरोध है गाधीजी की रिहाई की चेष्टा कीजिए। दलित वर्ग के साथ समझौता करने से विपत्ति टल सकती है, पर यह गाधीजी के व्यक्तिगत प्रभाव से

ही सम्भव है। इसके अतिरिक्त उनकी रिहाई के अन्य महत्वपूर्ण फल निकलना सम्भव है। अतएव आशा है, आप सारी आवश्यक कारवाई करेंगे।

घनश्यामदास बिडला

८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता।
१३ ६ ३२

३६

तार

सर सेम्युअल होर
इंडिया आफिस,
लंदन

गम्भीर संकट। समुद्री तार भेजना कर्तव्य समझा। मेरी विनम्र सम्मति में सरकार सहायता करे तो संकट टल सकता है। सबसे पहले गांधीजी तथा अन्य महत्वपूर्ण नेताओं की अविलम्ब रिहाई आवश्यक। बाहर रहकर गांधीजी दलितों के साथ समझौते में बडे सहायक सिद्ध होंगे। बाद में सरकार समझौते को मान्यता दे। इससे अन्य महत्वपूर्ण शासन संबंधी हल निकालना सम्भव हो जायेगा। अतएव अनुनय है कि गांधीजी की रिहाई में देर न हो। कहना अनावश्यक है कि गांधीजी का निधन भारत तथा पूरे साम्राज्य के लिए दुर्भाग्यपूर्ण होगा। मुझे व्यक्तिगत ज्ञान है और आप भी जानते हैं कि वह ब्रिटेन के भी उतने ही मित्र हैं जितने भारत के।

घनश्यामदास बिडला

८ रायल एक्सचेंज प्लेस,
१३ ६ ३२

३७

इंडिया आफिस,
व्हाइट हॉल
१४ सितम्बर, १९३२

प्रिय श्री बिड़ला,

मैं यह बताने के लिए लिख रहा हूं कि सर सैम्युअल होर के नाम आपका तार पहुंचा है। सर सैम्युअल होर इस समय बाल्मोरल कैसिल गये हुए हैं। मैं आपका तार उनके पास वहीं भेज रहा हूं।

भवदीय
डब्ल्यू० डी० क्राफ्ट

श्री घ० दा० बिड़ला

३८

इंडिया आफिस
व्हाइट हाल
१४ सितम्बर, १९३२

प्रिय श्री बिड़ला,

लार्ड लोदियन ने मुझसे श्री गांधी के अनशन करने के इरादे के सम्बन्ध में आपके तार की पहुंच भेजने को कहा है। उन्होंने आपके तार की नकल लार्ड इर्विन के पास भेज दी है।

एच० ए० पी० रमबोल्ड

श्री घ० दा० बिड़ला

३६

यरवडा केन्द्रीय कारागार
१५ सितम्बर, १९३२

प्रिय डाक्टर विधान

आपका पत्र पढकर मैं अवाक रह गया। उसे पढने के तुरत बाद ही मैंने आपको तार भेजा। मैंने समझा था कि हम दोनो एक दूसरे के इतने निकट हैं कि आप मेरे मत्रीपूर्ण पत्र का कभी गलत अर्थ नही लगायेंगे। पर अब देखता हू कि मने भारी भूल की। मुझे वह पत्र नही लिखना चाहिए था अत मैंने उसे बिना किसी शर्त के और बगर किसी सकोच के वापस ले लिया है। उस पत्र के वापस लिये जाने के बाद आपका उनमे से कोई भी कदम नही उठाना है जिनका मैंने उस पत्र म उल्लेख किया था। कृपया आप बोर्ड का काम यह समझकर बदस्तूर करते रहिए माना मैंने आपको वह पत्र लिखा ही न हो। मैंने आपको जो मानसिक चोट पहुचाई है उसके लिए आप मुझ उदारतापूर्वक क्षमा कीजिए। मने वह पत्र आपको लिखा उसके लिए म अपने आपको आसानी से क्षमा नही कर सकूगा। याद नही पडता कि किसने मुझसे कहा था कि आप मेरे पत्र का गलत अर्थ निकालेगे पर मैंने मूर्खतावश कहा कि म आपको कुछ भी लिखू आप उसके गलत मानी कभी नही लगायेंगे। विनाश का पूर्वाभास गर्व से पतन का पूर्वाभास मिथ्या गर्व से होता है। इस क्षमा याचना के बाद मैं तो नही समझता कि इस पत्र व्यवहार को प्रकाशित करने की आवश्यकता रह जाती है। पर जिस काय को हमने अपने हाथ म लिया है यदि आप समझते हो कि इसके प्रकाशन स उसम सहायता मिलेगी तो जहा तक प्रकाशित करना आवश्यक हो आपको मेरी अनुमति है।

कृपया बताइए कमला और डा० आलम कैसे है? कमला स कहिए कि वह मुझे पत्र लिखे।

भवदीय,
मो० क० गाधी

डा० विधान राय
३६ वलिंगटन स्ट्रीट
कलकत्ता।

४०

१६ सितम्बर १९३२

प्रिय लार्ड लोदियन,

मैंने आपको गांधीजी की रिहाई के बारे में एक समुद्री तार भेजा था और मैं समझता हूं कि अनेक लोगों ने भी ऐसा ही किया होगा। मैंने इसी विषय का एक तार सर सेम्युअल होर को भी भेजा था। आज सुबह के पत्रों से पता चलता है कि सरकार ने उन्हें २० तारीख का अनशन आरम्भ होने के बाद ही, कुछ प्रतिबन्धों के साथ रिहा करने का निश्चय किया है। किसी हद तक यह अच्छा ही हुआ, पर मैं तो कहूंगा कि सरकार के इस आचरण में भी शालीनता का अभाव रहा। यदि सरकार उन्हें तुरंत और बगैर किसी प्रकार के प्रतिबंध के रिहा कर देती तो उसका कुछ नहीं बिगड़ता। यदि सरकार उनके कुछ महत्वपूर्ण साथियों को भी साथ-ही-साथ रिहा कर देती, तो और भी अच्छा होता। क्योंकि इस नाजुक मौके पर हर किसी की सहायता की आवश्यकता होगी। प्रधान मंत्री की तर्क-बुद्धि समझ में नहीं आती। वह सर्वसम्मत समझौता चाहते हैं पर बम्बई बन्दरगाह पर पैर रखते ही इस बुड्ढे आदमी को जेल में डाल देते हैं और जब वह मृत्यु के निकट आ पहुंचता है तब उसे रिहा करते हैं। मेरे जैसे साधारण प्राणी की समझ में नहीं आता कि ऐसी अवस्था में सर्वसम्मत समझौते की कैसे आशा की जा सकती है। इस आवेश के लिए क्षमा कीजिए पर हमारे दिलों पर जो बीत रही है उसका अन्दाज लगाइए। इस नाजुक दौर में सरकार ने शालीनता से काम न लेकर उल्टे मामले को और जटिल बना दिया।

आप हमें जितनी सहायता दे सकते हैं दीजिए और साथ ही अपना बहुमूल्य परामर्श भी। मैं कुछ दिनों तक गांधीजी के पास रहूंगा। मेरा बम्बई का ठिकाना यह है : बिड़ला हाउस, मलाबार हिल, बम्बई। यद्यपि आप भी एक मंत्री हैं, पर आप इस मौके पर सरकारी बन्धनों को एक ओर रखकर हमारी सहायता करेंगे, ऐसी मुझे आशा है।

भवदीय,
घ० दा० बिड़ला

लार्ड लोदियन,
इंडिया आफिस
बम्बई।

४१

आपने ऐन्टी अनटचेबिलिटी लीग के स्थान पर जो नाम सुझाया है वह मुझे अच्छा नही लगा। अन्त्यज सवक मडल अच्छा-खासा नाम ह, पर इसका अथ होगा अत्यजा क अस्तित्व को स्थायी मान्यता देना। भारत सेवक मडल या भील-सवक मन्डल या ईश्वर सवक मडल य सभी नाम ठीक हैं, क्योकि भारत तो रहेगा ही और भील एक नस्ल का नाम है जिसम नीचपन की भावना का समावेश नही है और ईश्वर तो है ही और रहेगा ही पर यदि हमारा अभीष्ट अस्पश्यता निवारण अथवा दासता निवारण है तो अत्यज सवक मडल या दास सवक मडल जस नाम ठीक नही रहेंगे। फज कीजिए यदि दासता विरोधी अमरीकी कोई लीग बनायें जिसका नाम वे दास सवक मडल रखें तो उसस उनका उद्देश्य प्रकट नही होता। हा दासता-उच्छेदन अथवा अस्पश्यता निवारण का काय सम्पन्न होते ही इन नामोवाले मडलो का अत करना सम्भव है। पर यह तक कसौटी पर ठीक नही उतरता क्योकि अभीष्ट है मानव के अविलम्ब हृदय परिवतन का। आपको कहना चाहिए था तथाकथित अत्यज-सेवक मन्डल'। पर एक तो यह नाम लम्बा हो जाता और दूसरे उसम भी वही आपत्तिजनक बात मौजूद रहती। मुझे अस्पश्यता निवारण लीग (या मडल) नाम अधिक रुचिकर लगता है। वास्तव म अस्पश्यता विरोधी मडल नाम मुझे नहा जचा। नाम हद दर्जे का बबरतापूण है। अस्पश्यता निवारक मडल इस समय हिन्दी गुजराती और अन्य प्रचलित नामो की भाति ही एक और नाम होता। इस नाम पर भी कोई आपत्ति नही होती। अभीष्ट वास्तव म दासत्व के दर्जे का निवारण है और निवारण शब्द से इस उद्देश्य पर जोर पडता ठीक जिस प्रकार आजकल निषेध शब्द मद्यपान और मादक द्रव्य सवन के साथ ग्रथित किया जाता है। यदि हम विचार करें तो किसी वग की सेवा मात्र उद्देश्य या लक्ष्य नही है। उद्देश्य है दूषण का मूलोच्छेद। एसे विचारो के लोग भी है जो पाथक्य को अक्षुण्ण रखना चाहत हैं पर जो हमस कहग कि दलित समाज को अधिक आराम और सुख स रखो पर रखो अलग थलग। पर हम तो इतन स ही सतुष्ट नही हो जायेंगे।

अस्पश्यता का अथ किसी व्यक्ति का किसी अन्य व्यक्ति के स्पश अथवा दशन मात्र स अपवित्र हो जाना है। पर चूकि लोगो की अस्पश्यो म गणना करने की पद्धति विभिन्न प्रातो म अलग अलग है अस्पश्य-सेवक मडल न अन्य दूषणो को दूर करन के लिए सचेष्ट रहने के अतिरिक्त निम्नलिखित उद्देश्यो की सिद्ध

करने का निश्चय किया है, जिससे इन लोगों को भी हिन्दू समाज में वही दर्जा मिले जो अन्य हिंदुओं को उपलब्ध है सावजनिक मंदिरों में प्रवेश करने तथा सावजनिक कुओं, जनपथों, पाठशालाओं उद्यानों चिकित्सा केंद्रों अस्पतालों, श्मशान घाटों आदि के उपयोग की स्वतंत्रता।

पर यह छूट अंतर्जातीय सहभोजों के अथवा अंतर्जातीय ब्याह शादियों के लिए नहीं होगी।"

१ श्री राजगोपालाचारी के १२ अक्तूबर १९३२ के पत्र का सारांश। —घ०

४२

विड़ला हाउस,
नई दिल्ली
२ नवम्बर १९३२

प्रिय सर सेम्युअल,

आज मुझे बंगाल के गवनर का तार मिला है जिसके द्वारा उन्होंने मुझे आर्थिक और व्यापारिक सरक्षणों पर विचार करने के लिए नियुक्त की जानेवाली विशेष उपसमिति में भाग लेने के लिए आपकी ओर से निमंत्रण दिया है। निमंत्रण के लिए मैं आभारी हूं। मैं इस चर्चा में सहर्ष भाग लेता, पर मुझे विवश होकर कहना पड़ता है कि कुछ ऐसी परिस्थितियां हैं जो ऐसा करने से रोकती हैं। मुझे यकीन है कि आपको गलतफहमी नहीं होगी। वे परिस्थितियां क्या हैं, यह मैं विस्तार के साथ बताना चाहता हूं।

जब गत मार्च मास में मैंने फेडरेशन को एक विशेष रुख अपनाने को राजी करने में अपने प्रभाव का उपयोग किया था तो वह एक विशेष उद्देश्य को लेकर किया था। सम्भवतः उसका उद्देश्य कुछ हद तक स्वार्थपूर्ण रहा हो, परन्तु था जरूर। मैंने सोचा था कि सहयोग के लिए तत्परता प्रकट करके मैं आपका यह विश्वास दिला दूंगा कि हम दोनों सच्चे मित्र हैं, और दोनों देशों के बीच स्थायी मैत्री का सम्बन्ध स्थापित करने को अत्यन्त उत्सुक हैं, और मुझे यह आशा थी कि एक बार आपका विश्वास और भरोसा प्राप्त करने के बाद हमारे लिए अपने परामर्श की विवेकशीलता का आपको यकीन दिलाना कठिन नहीं होगा। मेरी धारणा है कि मैं इस उद्देश्य सिद्धि में बिलकुल असफल रहा हूं।

मेरे २८ मार्च के पत्र के उत्तर में आपने अपने ८ अप्रैल के पत्र में लिखा था

कि आप मुझे फिर लिखेंगे। पर उसके बाद आपका कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ है। ओटावा कान्फ्रेंस और उसमें इंग्लैंड के भाग लेने की बाबत आपने मेरी सलाह ली थी और मैंने सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास को वहां जाने को राजी भी कर लिया था। पर पत्र-व्यवहार का जिस प्रकार अचानक अंत हुआ और भारत में सरकार ने जैसा रुख दिखाया उससे मेरी स्पष्ट धारणा हो गई कि सरकार हमें मित्र के रूप में स्वीकार करने को तैयार नहीं है। ओटावा के मामले में फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स की सरकार ने पूरी उपेक्षा की। जब आपने शासन-विधान पर ताजा विचार-विमर्श के सम्बन्ध में अपना वक्तव्य दिया और कहा कि आर्थिक संरक्षणों की चर्चा विशेषज्ञों की एक समिति करेगी तो मुझे इसका आभास तक नहीं था कि आप कौन-सी प्रणाली अपनायेंगे। यहां इस विषय उपसमिति के गठन तथा उसके द्वारा विचारणीय प्रश्नों के संबंध में अभी तो कुछ भी पता नहीं। और अब ठीक मौके पर मुझसे कहा जा रहा है कि मैं लंदन जाऊं, जबकि मुझे वस्तुस्थिति के संबंध में कोई जानकारी नहीं है और भारतीय व्यापारी-समाज की बिलकुल उपेक्षा कर दी गई है जिससे वह खीझा हुआ है। मैंने अपने निर्वाचन क्षेत्र में एक प्रस्ताव का प्रतिपादन किया और उसके पक्ष में उससे वचन ले लिया। अब मेरा स्वतंत्र रूप से आचरण करना तब तक ईमानदारी का काम नहीं लगेगा जब तक मुझे यह विश्वास न हो जाए कि ऐसा करने से मैं उस प्रस्ताव के भाव के विरुद्ध आचरण तो नहीं कर रहा हूं। यदि मैं प्रस्ताव की आत्मा के साथ अत्याचार करूं तो मैं स्वयं अपनी ही दृष्टि में गिर जाऊंगा। मैं आशा करता हूं कि इस बात को सबसे पहले आप सराहेंगे।

मैं आपको आश्वासन देना चाहता हूं कि मैं किसी प्रकार की शिकायत नहीं कर रहा हूं। यह तो मैं एक क्षण के लिए भी नहीं सोच सकता कि भारत मंत्री मुझे भेद की सारी बातें बता दें। शायद आपको बताया गया होगा कि भारत मंत्री मेरे जैसे एक साधारण व्यक्ति के साथ निजी पत्र-व्यवहार नहीं कर सकता और सम्भवतः इसी कारण मेरे आपके पत्र-व्यवहार का अंत हो गया। मैं खुद भी आपको सीधे पत्र लिखने का साहस न करता यदि आप लंदन में यह कहकर मेरी झिझक दूर न कर देते कि जब कभी कोई काम की बात कहनी हो तो मैं आपको पत्र लिख सकता हूं। मैं किसी प्रकार की शिकायत नहीं कर रहा हूं। मैं तो केवल यह बताना चाहता हूं कि किसी आदमी के लिए कोई उपयोगी काम करना कितना कठिन हो जाता है जब दूसरी ओर से किसी प्रकार का संकेत तक न मिले। इसलिए जब तक मुझे और सर पुरुषोत्तमदास को मित्र के रूप में अंगीकार न किया जाए तब तक मेरा या उनका लंदन जाना निरर्थक सिद्ध

होगा। जब तक हमे वास्तविक शाति स्थापन-सम्ब धी कायशीलता के क्षेत्र म थाडी-बहुत छूट न मिले, तब तक हम कैसे उपयोगी सिद्ध हो सकते है ?

मैं बता दू कि हम छूट दिय जान से मेरा अभिप्राय क्या है। मैं आपका ध्यान फेडरेशन की प्रस्ताव सख्या ३ के प्रारम्भिक पर की ओर दिलाना चाहता हू जो इन शब्दा के साथ शुरु होता है वास्तविक इच्छा है।' इन शब्दो का मैंने हमेशा अपना निजी अथ निकाला है। मुझे लगा है कि हम व्यापारिया का प्रभाव सीमित सा है, पर यदि उसका ठीक ठीक उपयोग किया जाए तो उसस बडी मदद मिल सकती है। मने 'वास्तविक इच्छा का यह अथ लगाया है कि जब सरकार हमार प्रभाव का ठीक ठीक उपयाग करन का निणय करगी तो इसका यह मतलब हागा कि वह भारत के प्रगतिशील वग के माथ समझौता करना चाहती है। मेरा यह निवेदन है कि आर्थिक मामला के विचार विमश मे भाग लेन मात्र से हमारे प्रभाव का ठीक ठीक उपयोग नही होता। यदि हम समथन न मिल तो मैं *या सर पुरुषोत्तमदास लदन जाकर वहा क्या कर सकेंगे ? भारतीय व्यापारी* समाज हमारा समथन करेगा नही—वास्तव म सर पुरुषोत्तमदास की आलोचना शुरु हो गइ ह—और चूकि हम लोग राजनीतिज्ञ नही है इसलिए राष्ट्रवादी वग के समथन की माग नही कर सकत। अत यदि हम लदन जाकर चद सरक्षणा का स्वाकार कर भी लें तो जहा तक भारतीय लाकमत का सबध है हम किसी को भी वचनबद्ध नही कर सकते। वैसा करके ता हम स्थिति को और भी जटिल बनायेंगे क्योकि हम किसी का समथन प्राप्त नही है। जबकि उचित समथन मिलन पर हम बडे उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, उसके अभाव में हम बिलकुल निकम्म साबित हाग। हमार उपयोगी सिद्ध होन का एकमात्र उपाय यही है कि इन सरक्षणा की चर्चा म भाग लेन से पहले हम अपना प्रभाव शासन विधान के निर्माण काय म गाधीजी का सहयोग प्राप्त करने की चेष्टा करन की छूट रहनी चाहिए। वह छूट ऐसी हा जो कम से-कम हम सतुष्ट कर सकें। मरा निवदन ह कि एसा वातावरण बनान म हमारी सेवाआ का यथष्ट उपयोग किया जा सकता है। मैं यह मानता हू कि केबिनेट के लिए गाधीजी की मागा को पूणतया स्वीकार करना शायद सम्भव न हा, पर मैं आपके सामन अपने पहले पत्र म कही गई बात को फिर दुहराता हू कि वतमान अनुदार पालामट के लिए भी भारत को ऐसा शासन विधान प्रदान करना सम्भव है जिसे काग्रेस भल ही पूरी तरह स्वीकार न कर, पर जिसे कम-स-कम गाधीजी रद्द न करें। मुझे आशा है कि आप इस कठिनाई को समझेंगे कि कोई ऐसा शासन विधान लागू करना कितना कठिन है जिसे जनता का सद्भाव या सहयाग प्राप्त न हो। हाल ही म कह गये श्री चर्चिल के

शब्दों में केवल जनता ही राजनतिक भावनाओं को उत्तेजित या शान्त कर सकती हैं।' मैं यह कुछ आत्म विश्वास के साथ लिख रहा हू क्योंकि मैं बराबर देखता आया हू कि गाधीजी समझौते म विश्वास रखत हैं। आप उनके प्रगाढ मित्र हैं। इसलिए आप उनके मानस को समझने म समर्थ हैं।

गाधीजी के अनशन आरम्भ करने से पहले मैं वतमान अवस्था की चर्चा करने के लिए उनस भेंट करना चाहता था और इस दिशा म हिज एक्सेलेन्सी सर जॉन एण्डरसन भी प्रयत्नशील रहते पर सरकार ने अनुमति नही दी। उसके बाद उनके अनशन आरम्भ करने क कुछ ही पहले मुझे उनस भट करने का मौका मिला, पर तब तक अ य मामले अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूण हो चुके थे इसलिए मैंने इस विषय को न छेडना ही उचित समझा। अनशन के दौरान वह बहुत दुबल हो गये थे इसलिए मैने उनकी सामथ्य पर भार डालना उचित नही समझा। अनशन के बाद सारी भेंट मुलाकातें ब द कर दी गइ पर मुझे अस्पश्यता निवारण-काय के सिलसिल म उनसे भट करन की इजाजत रही। मैंने उनके साथ पूरे चार घण्ट बात की पर मैं किसी भी प्रकार की राजनतिक चर्चा म उनकी रुचि जाग्रत न कर सका क्योंकि उन्होंने मुझे बताया और ठीक ही बताया कि ऐस मामलो की चर्चा वर्जित है। पर उन्होंने स्पष्ट रूप स इगित कर दिया कि वह स्वय शाति स्थापन के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने वचन दिया कि यदि मैं ऐस मामलो की चर्चा करने की अनुमति लेकर आऊगा तो वह मुझे कुछ लिखकर देंगे। इस पर मैं एक बार फिर सर जान एण्डरसन स मिला और उन्होंने शिमला को लिखने का वचन दिया। उन्होंने अवश्य लिखा होगा पर कोइ ठोस नतीजा नही निकला है। इस समय स्थिति यह है कि अस्पश्यता निवारण काय के लिए भी मुलाकातो और पत्र व्यवहार पर पाबदी है। आशा है यह पाबदी उठा ली जायेगी।

अस्पश्यता निवारण सम्बन्धी महत्वपूण प्रश्नो के सम्ब ध म मेरा एक पत्र यरवडा म एक पखवाडे से बिना किसी उत्तर के पडा है। शायद आपको पता होगा कि मुझे अखिल भारतीय अस्पश्यता निवारक सघ का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है और हम देश के कोने कोने से अत्यन्त उत्साहवद्धक उत्तर मिल रहे हैं। पर इस विशुद्ध सामाजिक काय म भी सरकार हमारे साथ अस्पश्यो जसा व्यवहार कर रही है। ऐसे वातावरण मे आप सरीखा व्यावहारिक व्यक्ति यह उम्मीद कसे कर सकता है कि सुधारो को लागू करना मात्र ही यथेष्ट होगा? शासन विधान लागू किये जाने के इस समय जिस चीज की सबसे अधिक जरूरत है वह है विश्वास और भरोसे का वातावरण।

मैंने यह पत्र कुछ विस्तार के साथ लिखा है और ऐसा करने का प्रोत्साहन मुझे अपनी इस धारणा से मिला कि मार्ग का रोड़ा व्हाइट हाल नही शिमला है। मैं आपकी कठिनाइयो को खूब समझता हू पर मेरा कहना है कि पारस्परिक सहयोग के द्वारा इन कठिनाइयो का निवारण हो जायेगा। यह जाहिर है कि आप ठोस काम होते देखना चाहते हैं अन्यथा आप अधिक सरक्षणा के निमित्त यह समिति नियुक्त न करते। पर मैं एक ऐसे व्यक्ति की हैसियत से जो आपका बडा आदर करता है, यह परामर्श देना चाहता हू कि किसी भी प्रकार के सुधार लागू करने से पहले आप गाधीजी की रजामन्दी हासिल कर। इस दिशा मे मैं पूरी लगन के साथ काम करूगा और बाद मे आर्थिक सरक्षणावाले मामले मे भी सहायता करूगा। यदि मुझे अनुमति मिली तो मैं गाधीजी से सारी बातो की चर्चा इस ढग मे करूगा कि अटकलबाजी करने का अथवा बातचीत के प्रकाश मे आने की कोई सम्भावना न रहे। मैं तो उनका सहयोग प्राप्त करने के हेतु से लदन यात्रा करने और उनके सहयोग के लिए रास्ता ढूढ निकालने के लिए भी तैयार हू। पर मुझमे मामला का निबटारा करने की क्षमता नही है और मै ढोग रचने मे विश्वास नही रखता।

आशा है मैं स्थिति को आपके सामने ज्यो-का-त्यो रखने मे समर्थ हुआ हू और मुझे विश्वास है कि मैंने यह पत्र जिस भावना से प्रेरित होकर लिखा है इसे आप उसी भावना के साथ ग्रहण करेंगे।

मैंने आपके निमत्रण को गुप्त रखा है। यह पत्र भी गोपनीय रहेगा।

फेडरेशन का प्रस्ताव तात्कालिक हवाले के लिए साथ मे नत्थी कर दिया है।

भवदीय
घ० दा० बिडला

सर सम्युअल हीर
लदन।

४३

यरवडा मदिर
११ ११ ३२

भाई घनश्यामदास

आपका खत मिल गया। मने लिखा हुआ खत मिला होगा। हम थाडे ही दिना म मिलनवाल हैं इसलिए यहा ज्यादह नही लिखना चाहता हू। कुछ सूचना शीघ्र दने जसा नही ह। समिति की याजना मिल गई है। कुछ कहना हागा वह हम मिलग तब कहूगा। भाइ अबालाल का मने लिखा है समिति म आ जाने का आग्रह किया है। प्रचार और रचना दाना हमार साथ-साथ करना हागा। मैं कर रहा हू ऐसा समजकर प्रचार काय समिति नही छाड सकती है। मैं जो करता हू वह भिन्न वस्तु है लेकिन इस बारे म भी मिलन पर काफी चचा कर लेंग। सहभाज का काम समिति से न हो सकता है—इसम मर दिल म कोई सदह नही है। करेला के उत्तर की एक बहन की सहाय चाहते है। राजाजी की सम्मती लेकर मैंने उर्मीलादेवी को तार भेजा है वह जायगी। उनका खच समिति की मार्फत देना चाहिये एसा मेरा अभिप्राय है। आज तो मरे पास यहा कुछ पसे आ गय हैं उसम स मैंने भेज दिय वही पसे म समिति का दे देना चाहता था। अगर समिति उर्मीलादवी को भेजन की बात पसद करेगी तो बाकी पसे समिति देगी। अगर समिति के कायक्रम म एसी बात नहा आ सकती है एसा निश्चय होगा तो दखा जायगा।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है। वजह भी ठीक हा गया ह। असल शक्ति म थाडी कसर है सही लकिन वह आ जायगी ऐसी प्रतीति है। तुम्हारे शरीर का अच्छा कर लेना चाहिय। सोडा के बार म जा कुछ लिखा था वह ठीक नही लगता है। एक डाक्टर मित्र का मुझे कहना था कि सोडा का सेवन नित्य करन स सधिवात से मनुष्य बच जाता है। और दूसरी तरह स भी अच्छा है। मैंने कुछ नुकसान का अनुभव नही किया और या तो थोडा बहुत साडा पानी म रहता ही है।

प्रतिना पत्र पढ गया। उस पर बहुत ख्याल तो नहा किया। लेकिन निर्दोष सा लगता है।

बापु के आशीर्वाद

४४

यरवडा मंदिर
१६-११-३२

भाई घनश्यामदास,

यरवडा संधि की टीका के बारे में जब मिलेंगे तब। अब इसमें समय बरबाद न करे। ठक्कर बापा ने पटना के बारे में जो कुछ लिखा है ऐसा बहुत जगह पर है। इस बारे में स्थानिक लोगों को लिखना चाहिये। म्युनिसीपालटी क्या यह काम न करे? प्रति पक्ष या प्रति सप्ताह समिति के तरफ से एक विवरण कहो पत्रिका कहो अखबार कहो, जो कुछ निकलना चाहिये जिसमें ऐसी सब भयानक बातें बताई जाय। हम कैसे भी गरीब हैं तो भी कोई म्युनिसिपालीटी उतनी गरीब नहीं हो जो ऐसी एबों को दुरस्त न कर सकें। मथुरादास को मैंने लिखा। अंबालाल को भी।

बापु के आशीर्वाद

४५

यरवडा मंदिर
२८-११-३२

भाई घनश्यामदास

शिंदेजी की बडी शिकायत है कि हमने उनकी संस्था का नाम चुरा लिया। यह शिकायत ठीक मालूम होती है। हमको काम के साथ काम है नाम के साथ नहीं। इसलिये मेरी सूचना है कि हम 'अखिल भारत हरिजन सेवा संघ' नाम रखें और अंग्रेजी और देशी भाषा में यही नाम रखें। तुम आ तो रहे हो लेकिन शायद यह तुम्हें वक्त पर मिल जायगा।

बापु के आशीर्वाद

श्रीयुत घनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस,
अलबूकर्क रोड,
नई दिल्ली।

४६

यरवडा केन्द्रीय कारागार
७ दिसम्बर १९३२

प्रिय डाक्टर विधान

बगाल के लिए अस्पृश्यता विरोधी बोर्ड के गठन के बारे में मैंने श्री घनश्याम दास बिडला तथा सतीश बाबू से दर तक बात की। मेरे पास बगाल से कई पत्र भी आये हैं जिनमें बोर्ड के गठन की बाबत शिकायतें हैं। बोर्ड के गठन से पहले घनश्यामदास ने मुझे बताया था कि वह आपसे बोर्ड बनाने को कहेंगे, और मैंने इस सुझाव का बिना सोचे विचारे समर्थन कर दिया। पर अब देखता हूँ कि यह विचार बगाल में विशेषकर सतीश बाबू और डा० सुरेश को पसद नहीं आया। उनका खयाल है कि बोर्ड पर पार्टी की छाप रहेगी। मैं कह नहीं सकता कि उनकी यह आशका कहा तक न्यायोचित है पर मैं इतना जानता हूँ कि अस्पृश्यता निवारण कार्य मे दलबन्दी का पुट बिलकुल नहीं होना चाहिए। हम यह चाहते हैं कि जो भी संस्था बने उसमें वे सभी लोग अबाध रूप से शामिल हो जो सुधार चाहते हैं। इसलिए मेरा सुझाव है कि आप विभिन्न दलों के सभी कार्यकर्त्ताओं को एक जगह इकट्ठा करके अपने आपको उनके निर्णय पर छोड़ दें कि वे किसे अध्यक्ष बनाना चाहते हैं और ऐसे किसी भी अध्यक्ष को या बोर्ड को अपना हार्दिक सहयोग प्रदान करें। मैं जानता हूँ कि इसके लिए आत्मत्याग की आवश्यकता है। मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ इसलिए यह कह सकता हूँ कि ऐसा करना आपके लिए बिलकुल सम्भव है। पर यदि आप समझें कि जो शिकायतें की गई हैं उनमें कोई तथ्य नहीं है, आप तमाम कठिनाइयों पर काबू पा जायेंगे और सारे दलों को एक जगह लाने में समर्थ होंगे तो मुझे कुछ नहीं कहना है। मैंने जो सुझाव दिया है वह इस कारण दिया है कि मैंने समझा कि इस समय बोर्ड जैसा कुछ है इसके लिए सभी दलों का सहयोग प्राप्त करना सम्भव होगा। मैंने सारी स्थिति आपके सामने रख दी अब आप इस कार्य के हित में जो ठीक समझें वैसा करें।

श्री खेतान ने मुझे बासतीदेवी के बारे में आपका सदेश दे दिया है। मैंने उनसे कह दिया है कि वह अपना कार्यक्षेत्र स्वय चुन लें पर मैं तो यह चाहूगा कि वह अस्पृश्यता निवारण कार्य में जी जान से जुट जाए। वह किसी संस्था में कोई पद ग्रहण करें या न करें, इस संबंध में मुझे कुछ नहीं कहना है। जब मैं वहा

दशबन्धु-स्मारक निधि के लिए रुपया इकट्ठा करने गया था, तो मैं और वह, दोनों इस नतीजे पर पहुंचे थे कि वहां किसी संस्था का संचालन नहीं करना है केवल अपने खाली समय मे इच्छा होने पर सेवा-कार्य करना चाहती हैं।

डा० आलम के बारे में सारी बातें बताइये।

आपका,
मो० क० गांधी

डा० विधान राय
वलिंगटन स्ट्रीट,
कलकत्ता।

४७

३६ वलिंगटन स्ट्रीट
कलकत्ता
१२ दिसम्बर १९३२

प्रिय महात्माजी

आपका पत्र कल पहुंचा। अस्पृश्यता विरोधी बोर्ड के बारे में आपकी श्री खेतान से जो बातचीत हुई उसका विवरण उन्होंने मुझे दिया है। आपने उनसे कहा था कि आप मुझे पत्र लिखेंगे। श्री खेतान से बात होने के बाद मैं आपके ऐसे पत्र के लिए तैयार था। इस विषय पर कुछ और अधिक कहने से पहले मैं यह बता देना चाहता हूं कि बंगाल बोर्ड के अध्यक्ष पद के लिए मैं लालायित नहीं था। इस बार में श्री बिड़ला ने आपके साथ विचार विमर्श के बाद ही आपकी सहमति से मुझे चुना था। जब मुझे आह्वान मिला तो अपनी अपूर्णताओं और अन्य मुख्य कार्यों के बावजूद मैं राजी हो गया। मैं यह भी नहीं भूला हूं कि सारी योजना आपके और पूना में एकत्रित मित्रों द्वारा आरम्भ की गई थी। अतः जब इन मित्रों ने मुझसे आग्रह किया तो मैंने यह उत्तरदायित्व ले लिया। उस समय आपने मुझसे अध्यक्ष बनने को इसलिए कहा था कि आपको विश्वास था कि मैं कार्यभार संभाल सकूंगा। अब जब आपकी ऐसी धारणा नहीं रही है और आप चाहते हैं कि मैं हट जाऊं तो मैं सहर्ष हट रहा हूं। मैं आज ही श्री बिड़ला को लिखकर त्यागपत्र दे रहा हूं। आत्मत्याग का प्रश्न ही नहीं उठता है क्योंकि

अपने जीवन काल म मैंने ऐसा कोई भी सावजनिक पद या स्थान एक क्षण के लिए भी ग्रहण नही किया है, जिसे उसके देनेवाले मुझसे लेना चाहते हो।

आपने अपने पत्र म सुझाया है कि मैं सभी दलो का प्रतिनिधित्व करनेवाले कार्यकर्त्ताओ को एक जगह इकट्ठा करू और यह उन्ही पर छोड दू कि वे किसे अपना अध्यक्ष चुनते है। मैं आपका ध्यान लीग के विधान की ओर आकर्षित करना चाहता हू जिसके अनुसार केन्द्रीय बोर्ड का अध्यक्ष प्रान्तीय बोर्डो के अध्यक्षो को नामजद करता है और वे प्रान्तीय बोर्डो के सदस्यो को नामजद करते हैं। बगाल म जो बोर्ड गठित हुआ है उसे भग करने का मुझे कोई अधिकार नही है इसलिए इच्छा रहते हुए भी आपके निर्देश के अनुरूप काय करने म मैं असमर्थ हू। पर मैं सारा मामला श्री बिडला के सुपुर्द कर रहा हू। वह अखिल भारतीय बोर्ड के अध्यक्ष है। इसलिए वे जैसा चाहे कर सकते है।

आपने अपने पत्र म लिखा है कि बगाल म इस विचार को समर्थन प्राप्त नही हुआ। म आपको यह बताना अपना कर्त्तव्य समझता हू कि बगाल म उन दलो के अलावा जिनका नेतृत्व श्री सतीशचद्र दासगुप्त तथा डा० सुरेश बनर्जी करते हैं अनेक दल है, जो अस्पृश्यता निवारण काय म दिलचस्पी रखते है और जो इस समय महत्वपूर्ण काय कर रहे है। हमने बगाल बोर्ड का गठन बडी सतर्कता के साथ किया था और जैसा कि श्री देवीप्रसाद खेतान ने आपको बताया ही होगा बोर्ड म विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व है। अनेक जिला सस्थाओ ने हमे लिखा है कि वे बोर्ड के साथ सहयोग करना चाहती है। इनमे से श्री दासगुप्त और श्री बनर्जी को छोडकर और किसी ने भी सहयोग करने से इन्कार नहीं किया। इन दोनो ने भी अलग अलग कारणो से इन्कार किया। पर चूकि आपकी यह धारणा प्रतीत होती है कि बगाल म कोई भी बोर्ड तब तक काय करने म सक्षम नही हो सकता जब तक उसे श्री दासगुप्त और डा० बनर्जी का सहयोग प्राप्त न हो, और उन्होने यह सहयोग देने से इन्कार कर ही दिया है। अत बोर्ड को भग करने के सिवा और कोई चारा नही है।

बगाल म लीग ने अपना काम आरम्भ कर दिया है इसलिए जब तक आप मुझे इस पत्र को और अपने पत्र के पहले परे को प्रकाशनार्थ भेजने की अनुमति न दें तब तक मुझे तथा बोर्ड के अन्य सदस्यो को अपनी स्थिति स्पष्ट करना कठिन हो जायगा। आशा है आपको इसम कोई आपत्ति नहीं होगी।

आपका,
विधानचद्र राय

४८

यरवडा केन्द्रीय कारागार
१५ दिसम्बर, १९३२

प्रिय घनश्यामदास,

आज मैंने आपको लीग के नामकरण की बाबत एक तार भेजा है और कल बगाल प्रातीय बोर्ड की बाबत एक दूसरा तार भेजूगा।

सबसे पहले नामकरण की बाबत इस पत्र के साथ राजाजी का पत्र भेजता हू। मैं समझता हू कि उनका तर्क अकाट्य है। इसलिए उनका सुझाव मानना जरा भी सम्भव जचे तो आप नाम बदल दीजिये। मैं सेवा भावना के इतना अधिक वशीभूत हो गया था कि जिस मर्म की ओर राजाजी ने मेरा ध्यान खासतौर से आकृष्ट किया है, उसकी सभावना तक मैंने नही की थी।

अब बगाल प्रातीय बोर्ड के गठन की बात। देखता हू कि इस दिशा मे मैं एक भयकर भूल कर बैठा हू। मैंने डा० विधान पर अपने प्रभाव को आवश्यकता से अधिक आका। मुझे दुख है कि मैंने उन्हें व्यथा पहुचाई और मुझे दुख है कि मैंने आपको भी अटपटी स्थिति मे डाल दिया। वह व्यथा से त्राण पा जायेंगे आप अपनी स्थिति से छुटकारा पा जायेंगे पर मै अपनी मूर्खता को इतनी आसानी से नही भूलूगा। मैंने डा० विधान को निम्नलिखित तार भेजा है

> 'आपका बिना हस्ताक्षर का पत्र आज मिला। पत्र-व्यवहार प्रकाशनार्थ नहीं। आपको मैंने स्पष्टतया बता दिया कि यदि आरम्भ हुए कामको चलाते रहने का भरोसा हो तो काम जारी रखिये। अपने हस्तक्षेप का अब अनुचित समझ रहा हू क्षमा करें। मैंने उसे मैत्रीपूर्ण सुझाव समझा था। कृपया मेरे पत्र को वापस लिया गया समझिये।
>
> —गाधी'

इससे अधिक कुछ कहना अनावश्यक होगा। यह घटना आपकी चिंता का कारण बनी। आशा है इस घटना को समाप्त हुआ समझा जायेगा। डा० विधान के उत्तर की नकल भी भेजता हू।

आपका १२ दिसम्बर का पत्र मिला है। श्री ठक्कर ने आपके पास जो परिभाषा भेजी थी उसमे मैंने कुछ और सशोधन किया है। परिभाषा की नकल भेजता हू। श्री ठक्कर ने जो परिभाषा आपके पास भेजी थी वह पडित कुजरू ने मेरे पास भेजी है। मैंने सशोधन करने के बाद सशोधित प्रतिलिपि उनके पास भेज दी है। देखता हू कि जब श्री ठक्कर आपको पत्र लिख रहे थे उस समय तक उन्हे सशोधित प्रतिलिपि नही मिली थी।

आज डा० अम्बेडकर के कोई ७ मित्र और अनुयायी मिलने आये। उन्होने शिकायत की या कहा (क्योकि उनका कहना था कि वे शिकायत नही कर रहे हैं केवल वक्तव्य दे रहे है) कि डा० अम्बेडकर ने श्री ठक्कर को स्टीमर से जो पत्र लिखा था उसमे उल्लिखित सुझावो की चर्चा बोर्ड की पूनावाली बैठक मे नही की गई। मैंने उन्हे बताया कि डा० अम्बेडकर के पत्र की चर्चा नही हुई यह मैं नही जानता पर उस पत्र की उपेक्षा नही की गई होगी, उस पर बोर्ड ने विचार किया होगा। अब आप उन्हे या मुझे लिखकर बतायें कि उस पत्र के बारे में क्या कारवाई की गई।

इन मित्रो ने यह भी कहा कि हमारी सस्थाओ ने हरिजनो मे फूट डालने का सिलसिला जारी रखा है और जहा कही सम्भव होता है वह रावबहादुर राजा के दल का पक्ष लेती हैं। मैंने उन्हे बताया कि आपका ऐसा इरादा कभी नही रहा होगा और कहा कि बोर्ड पार्टीबन्दी से अलग रहने का भरसक प्रयत्न करता है। बोर्ड और उसकी शाखाओ के सारे प्रयत्न दोनो दलो की खाई को पाटने की दिशा मे होते हैं और अब जबकि प्रश्न के राजनैतिक पहलू का निबटारा हो गया है तो दो पार्टियो की कोई आवश्यकता नही है।

यद्यपि श्री छगनलाल जोशी के आने तथा दक्ष स्टेनो मेरे लिए सहायक साबित हुए हैं तथापि मुझे आराम नही मिलता है। इस सहायता की बडी आवश्यकता थी। अब चलते हुए काम का निपटाना कुछ सहज हो गया है। मुलाकातो मे काफी वक्त निकल जाता है पर ये मुलाकाते आवश्यक हैं इसलिए मुझे कोई शिकायत नही है।

आशा है आप स्वस्थ होगे। आपको कोई ऐसा काम करना चाहिए जिससे आपको गहरी नीद आये। यह दवाओ के जरिये सम्भव नही है। इसके लिए तो भोजन-सबधी सावधानी और प्राकृतिक साधनो का ही आश्रय लेना होगा। आलू बुखारे उस ढग से लेना शुरू किया है या नही जो ढग मैंने बताया था। कई-एक

सहज आसन, दीघ नि श्वास—जो स्वास्थ्य के लिए किये गय प्राणायाम का दूसरा नाम है—आपकी पाचन शक्ति भी बढायगा और अच्छी नीद लाने म भी सहायक होगा।

सस्नेह
बापू

पुनश्च

उपर्युक्त पत्र बोलकर लिखाने के बाद ही डा० विधान का निम्नलिखित तार मिला है

'तार के लिए धन्यवाद। सादर निवदन ह कि आपका भरोसे' से क्या अभिप्राय है समझ मे नही आया। पत्र म बता चुका हू कि बगाल के वत मान उत्साह को देखते हुए कोई भी अध्यक्ष या बोर्ड अस्पृश्यता निवारण का काम चला सकता है। यदि 'भरोस' स आपका अभिप्राय उन लोगो का सहयोग प्राप्त करन मे ह, जो सहयोग दने को तयार नही ह, तो यह किसी के लिए सम्भव नही है। सफलता का मानदण्ड प्राप्य धन और उसका सदुपयोग ही होगा। कृपया तार दीजिए कि यदि हम लोग अपना काय जारी रख, तो आपका पूरा सहयोग मिलता रहेगा।

इसका मैंने निम्नलिखित उत्तर दिया है

आपके तार के लिए धन्यवाद। भरोसे से मेरा अभिप्राय आत्म विश्वास स है। जितनी सहायता देन की मुझमे सामथ्य है आप उस पर निश्चय ही निभर कर सकते है।"

४६

यरवडा केन्द्रीय कारागार
२० दिसम्बर १९३२

प्रिय घनश्यामदास,

आपका १४ तारीख का पत्र मिला। आशा है, मैंने अपनी अनधिकार चेष्टा के लिए पर्याप्त क्षमा-याचना कर ली है और अब कही किसी प्रकार की मम-वेदना शेष नही रही है। यदि आप समझें कि मेरे लिए अब भी कुछ करना बाकी है,

तो मुझे बताने से मत चूकिए। मैं आशा करता हूं कि भविष्य में ऐसी मूर्खता कभी नहीं होगी।

सस्नेह
बापू

श्री घनश्यामदास बिड़ला
अल्बूकर्क रोड
नई दिल्ली।

५०

२१ दिसम्बर १९३२

पूज्य बापू

आपका टाइप किया हुआ पत्र और उसके साथ भेजे कागज मिले। डा० राय ने आपको जो चिट्ठी लिखी है उसकी नकल उन्होंने पहले ही मेरे पास भेज दी थी। उसका आपने जो उत्तर दिया है उसकी नकल भी मुझे मिल गई है। इस प्रकार अब मेरे पास पूरा पत्र-व्यवहार मौजूद है। मैं इस मामले को लेकर आपका और अधिक समय नष्ट नहीं करना चाहता, पर साथ ही आपको यह लिखने का लोभ भी संवरण नहीं कर सकता कि आपने अपनी भूल को जिस ढंग से समझा, वास्तव में वह उससे कुछ अलग ढंग की है। मुझे असमंजस में डालने का प्रश्न ही नहीं उठता। आप मुझे इससे कहीं अधिक असमंजस की स्थिति में डालना चाहें तो खुशी से डाल सकते हैं, पर तु मैं इस बात में अब भी आपसे सहमत नहीं हूं कि आपकी भूल डा० राय के ऊपर अपने प्रभाव का गलत अन्दाज लगाने तक ही सीमित थी। यदि डा० राय के साथ न्याय किया जाय तो कहना होगा कि उनका बुरा मानना स्वाभाविक था। मेरी समझ में भूल इस बात में हुई कि आपने सुरेशबाबू और सतीशबाबू का, जो आपके इतने निकट हैं, सहयोग प्राप्त करने में डा० राय की सहायता करने के बजाय डा० राय से केवल इस कारण इस्तीफा देने को कहा कि सुरेशबाबू और सतीशबाबू ने उन्हें सहयोग प्रदान नहीं किया। मैं मानता हूं कि सुरेशबाबू और सतीशबाबू ने उन्हें जो सहयोग प्रदान नहीं किया उसका कारण था, पर तो भी आपको बलिदान के लिए डा० राय को नहीं चुनना चाहिए था। मेरी राय में आपने यही भूल की। जब मैंने डा० राय के नाम आपका पहला पत्र

देखा तो मुझे आश्चय हुआ क्योंकि इस प्रकार की भूलें करना आपके लिए असम्भव-सा है। हम आपके देवोपम व्यक्तित्व से इतने चकाचौंध हैं कि हमने अपना आत्म विश्वास खो-सा दिया है। इसके परिणामस्वरूप मुझे जब कभी किसी बात मे शका होती है तो मैं यह कहकर अपने आपको समझा लेता हू कि दोष मरी बुद्धि का है, जो मैं आपके निश्चय के मम को नही समझ सका। इस मामले म भी यही हुआ। मरी जब भी यही धारणा है कि आपका अपने अन्तिम पत्र मे डा० विधान को आपके पत्र के गलत अथ निकालने के लिए डाटना नही चाहिए था। आशा है मैं आपका समय नष्ट नही कर रहा हू। यह सब मैं आत्म सतोष के लिए लिख रहा हू। यदि आप लिखने की आवश्यकता समझें तो जरूर लिखें।

परिभाषा के सम्बन्ध मे मेरा कहना यही है कि आप जानते ही हैं मैं ऐसी बातो को लेकर बहुत ही कम माथापच्ची करता हू। पर आपकी ताजी परिभाषा उन सारी परिभाषाओ से अच्छी रही, जिन पर चर्चा हो चुकी है।

डा० अम्बेडकर के मित्रो की इस शिकायत के सम्बन्ध मे कि हमने डा० के पत्र पर अच्छी तरह विचार नही किया, मेरा कहना यही है कि उन्हे कुछ गलत फहमी हो गई है। डा० अम्बेडकर के सुझावो के अलावा और भी अनेक सुझाव थे जिन पर विचार करना था और जिन्हे नीली पुस्तिका मे शामिल कर लेना था। पर हमने इतनी बडी बठक मे इस पुस्तिका की चर्चा न उठाना ही ठीक समझा। अतएव हमने एक छोटी सी समिति का गठन किया, जिसके जिम्मे डा० अम्बेडकर के सुझावो के अलावा प्रान्तीय बोर्डों से आये सुझावो को भी ध्यान मे रखकर 'नीली पुस्तिका' की पुनरचना का काम सौंपा है। परन्तु मुझे कहना पडता है कि हमारे कमचारी उतने दक्ष नही हैं। बेचारे वद्ध ठक्कर बापा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहते हैं और उनकी अनुपस्थिति मे आफिस म किसी योग्य सेक्रेटरी का रहना आवश्यक है। इस सघ का श्रीगणेश होने से पहले देवदास ने मुझे सहायता देने का वचन दिया था, परन्तु वह और कामो म लगे हुए हैं। कल जब व मिले तो मैंने उनसे इसकी शिकायत भी की थी। उन्होने एक अच्छा-सा आदमी देने का वादा किया है। मैंने उनसे कह दिया है कि अन्यथा काम का हज होगा। मुझे अच्छा आदमी मिल सकता है पर मेरा अच्छा आदमी पाने का अथ होगा अधिक पैसा देना। मुझे तो अच्छा आदमी बाजार भाव पर ही मिलेगा। इस ढग की सस्थाओ म तो ऐसा आदमी चाहिए, जो स्वाथ-त्याग करना चाहे। पता नही आप इस मामले म मेरी सहायता कर सकेंगे या नही। यदि देवदास इस काम को अपने हाथ म ले लें तो बडा काम हो जाय, पर दुर्भाग्य म वह आने को तयार नही हैं।

हम पत्र जनवरी के आरम्भ म निकाल रहे है। आपके लख की बाट जोह रहा हू। मुझे लेख अभी अभी मिला है। वियोगी हरि को हिन्दी के पत्र का सम्पादन करने के लिए नियुक्त किया गया है। अग्रेजी पत्र का कामकाज सभालने के लिए फिलहाल मरे पास कोई आदमी नही है इसलिए मै अपने आफिस के आदमियो से ही काम ले रहा हू। पर जसा कि आप स्वय जानते हैं इसके लिए एक अच्छे सेक्रेटरी की जरूरत है और मुझे ऐसा आदमी रखना ही होगा।

सघ का नाम तीसरी बार बदलना उपहासास्पद होगा। राजाजी के पत्र का आपके ऊपर इतना गहरा प्रभाव पडा पर मरे ऊपर तो नही पडा। इसका कारण यह भी हो सकता है कि ऐसी बातो की ओर स मैं उदासीन-सा रहता हू।

आशा है आप बिलकुल स्वस्थ है। कृपया मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता मत कीजिए। मैं बिलकुल ठीक हू। अभी मैंने आलूबुखारा का उपयोग नही किया है पर करूगा।

विनीत

घनश्यामदास

५१

दिल्ली

२८ दिसम्बर १६३२

पूज्य बापू

यह पत्र आप तक पहुचते पहुचते मत सग्रह का फल निकल चुकेगा। जो रिपोर्टें मिली हैं उनस लगता है कि वह हमारे ही पक्ष मे होगा। अब आपका उपवास केवल कानूनी कारवाई के द्वारा ही टल सकता है और यह कठिनाई २ जनवरी स पहल दूर नही होगी। मुझे यह आशा थी कि वाइसराय महोदय मद्रास कौंसिल म बिल को पेश करने की स्वीकृति २ जनवरी से पहले पहले दे देंगे। और तब हम आपको यह विश्वास दिला सकेंगे कि यदि जमोरिन सहायता करें तो भी २ जनवरी से पहले कानूनी कठिनाइयो पर काबू पाना सम्भव नही है। इसलिए आप उपवास स्थगित कर दीजिए। पर ऐसा प्रतीत होता है कि वाइसराय की स्वीकृति २ जनवरी से पहले नही मिलेगी। क्या इसका यह अथ

नही है कि पूर्व स्थिति मे आप अपना उपवास सरकार का रवैया स्पष्ट होने तक स्थगित कर दें ? सरकार का रवैया यह है कि वह सारे प्रांतो से जाच पडताल करने के बाद ही अपना निर्णय देगी इससे पहले नही। आशा है, उसका निर्णय १५ जनवरी तक घोषित हो जायेगा। अब यदि आप सरकार की घोषणा से पहले ही उपवास आरम्भ कर देंगे, तो क्या आप नही समझते कि वैसा करने मे सरकार परेशान होगी, जबकि आप उसे टाल सकते हैं।

मेरा अनुरोध है कि इस बात पर सावधानी से विचार करें कि सरकारी घोषणा तक उपवास स्थगित रखना अच्छा रहेगा या नही। आप चाहे तो इस विषय पर सरकार से सीधे लिखा-पढी कर सकते हैं। मेरी अपनी धारणा यह है कि सरकारी घोषणा होने से पहले आप अपना उपवास आरभ नही कर सकते।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी,
यरवडा केंद्रीय कारागार, पूना

५२

२७ दिसम्बर, १९३२

पूज्य बापू

आपके दोनो लेख मिल गये हैं। दुर्भाग्य से पहला अक प्रकाशित होने मे कुछ अडचन पैदा हो गई है क्योकि अभी सरकार की अनुमति प्राप्त नही हुई है। कुछ औपचारिक कार्यवाही आवश्यक है। अधिकारी लोग जाच पडताल कर रहे हैं। आशा है एक सप्ताह से अधिक विलम्ब नही होगा।

आपके उपवास की बाबत मुझे आशा है कि आप सरकार की ओर से निश्चित सूचना मिलने तक उसे स्थगित रखेंगे। मुझे इसमे तनिक भी सदेह नही है कि सरकार अपनी अनुमति को वापस नही लेगी। पर यह कहना कठिन है कि सरकारी एलान २ जनवरी से पहले होगा या बाद मे। किन्तु आप सीधे सपर्क करें तो वह बता सकेगी। एक बार सरकार बिल पेश करने की स्वीकृति दे दे फिर तो सारे काम आसान हो जायेंगे। अभी बिल की नकल मेरी नजर से नही गुजरी

है। आशा है आपने उसे देखा होगा और आपको वह पसंद आया होगा। यदि बिल मात्र अनुमति तक ही सीमित रहा तो यह यथेष्ट नहीं होगा। क्योंकि वैसी अवस्था में सब कुछ एक बार फिर जमोरिन की इच्छा पर निर्भर करेगा। इसलिए अनुमति-मात्र से कुछ अधिक की जरूरत है।

मैंने राजाजी से मित्रों सहित आपसे मिलने को कहा है। सम्भवतः वे शीघ्र ही आपसे मिलेंगे।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गांधीजी
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

५३

यरवडा केन्द्रीय कारागार
२८ दिसम्बर, १९३२

प्रिय घनश्यामदास,

लंदन स्थित फ्रेंड्स आफ इंडिया सोसाइटी की सेक्रेटरी लिखती हैं कि उन्होंने आपके पास ४२ पौंड ३ पेंस का एक चेक या ड्राफ्ट भेजा है। यह प्रथम सप्ताह में इकट्ठा हुआ था। कृपा करके बतायें कि यह रकम आपको मिली या नहीं?

आपका,
मो० क० गांधी

५४

यरवडा केन्द्रीय कारागार
२७/२९ दिसम्बर १९३२

प्रिय घनश्यामदास,

आपका पत्र मिला। मेरी उपस्थिति की चौंध आप-जैसे मित्रो की अपेक्षा मुझे कही अधिक परेशान करती है। मैं चाहता हू कि हम सब बराबरी के दर्जे पर रह-कर काम करें, और एक दूसरे से बातचीत करते रहें। मुझे यह बिलकुल अच्छा नही लगता कि मेरे कथन को अन्य व्यक्तियो के वैसे ही कथन से अधिक महत्व दिया जाय। इस भूमिका के बाद मैं यह कहना चाहूगा कि मैं आपके निदान से बिलकुल सहमत नही हू। मसलन यदि मैं वैसा ही पत्र आपको लिखता, तो आप कदापि बुरा न मानते। दूसरे शब्दो मे, मैं आपके ऊपर अपने प्रभाव को बढा चढाकर नही आकता। सुरेश बाबू और सतीश बाबू का सहयोग प्राप्त करने मे कैसे सफल हो सकता था, जबकि मैं जानता था कि यह सम्भव नही है। यदि मैं उन पर दबाव डालकर उनका यान्त्रिक या कृत्रिम सहयोग प्राप्त कर लेता, तो बात दूसरी थी। पर मैं तो सुरेश बाबू और सतीश बाबू के बीच भी ऐसे सहयोग की कल्पना नही कर सकता। आश्रम तक मे, जहा सब पर मेरा एकसमान प्रभाव माना जाता है, कुछ ऐसे गैर मिलनसार मानस के लोग हैं, जिनसे मैं सहयोग की अपेक्षा नहीं करता। उन पर सहयोग लादने की बात तो दूर रही। मेरा विश्वास है कि सुरेश बाबू और सतीश बाबू काम मे जुटे रहनेवाले लोग हैं, इसलिए वे अधिक उपयोगी सिद्ध होंगे। मैंने इसी विश्वास से प्रेरित होकर उनके हाथो मे काम सौंपने की बात सोची थी, और मेरी धारणा थी कि डा० राय मेरे सुझाव को सराहेंगे। यदि कार्य भार एक के कधे से हटाकर किसी ऐसे कधे पर रख दिया जाय जो कार्य करने मे अधिक सक्षम हो, तो इसमे मर्माहत होने की क्या बात है? मैंने समझा था कि डा० राय मेरे पत्र के गलत मानी नही लगायेंगे, उसे अच्छे रूप मे ग्रहण करेंगे और इस विश्वास को चुनौती देंगे, पर पत्र का बुरा कदापि न मानेंगे। अब देखता हू कि मेरी यह धारणा गलत थी, और आप यह क्यो कहते हैं कि मैंने डा० राय को अपने दूसरे पत्र मे झिडका था। मैं समझता हू कि मैंने स्थिति को ठीक ठीक पेश किया है। पर यदि अब भी आप न समझ पाये हो तो इस विषय पर और अधिक चर्चा की जा सकती है। मैं चाहूगा कि आप मेरे दूसरे पत्र मे निहित उद्देश्य को समझें।

मैं देखूगा यदि आपके लायक कोई अच्छा-सा सेक्रेटरी ध्यान म आया जो रुचिपूर्वक काम कर सके, तो बताऊगा।

आपको एक बात की ओर से सतर्क करना चाहता हू। जब तक अग्रेजी सस्करण का गेट-अप अच्छा न हो और उसकी अग्रेजी पढ़ने लायक न हो और उसम दिया गया अनुवाद ठीक न हो तब तक अग्रेजी सस्करण न निकालें। एक साधारण कोटि का अग्रेजी सस्करण निकालने की बजाय फिलहाल हिन्दी सस्करण से ही सतुष्ट रहना ठीक होगा।

पक्षपात का कोई प्रश्न ही नही है यह मैं मानता हू। पर हम जो कुछ कर रहे ह उस डा० अम्बेडकर के आदमी किस दृष्टि स देख रहे हैं यह ध्यान म रखना आवश्यक है।

सस्नेह,
बापू

आज २९ तारीख को डा० विधान का जो खत आया है उसकी नकल भेजता हू। उन्होंने तो तुम्हारा अर्थ नही निकाला है। उपवास मुल्तवी रहेगा। राजाजी इत्यादि आ गये हैं।

बापू

५५

३६ वलिंगटन स्ट्रीट
कलकत्ता
बडा दिन, १९३२

प्रिय महात्माजी

आपके पत्र ने मुझे बडा खिन्न और व्यथित कर दिया। अपने प्रति आपकी ऊची आशाओ को झुठलाने और यह प्रदर्शित करन मे कि आपने मुझ पर जो भरोसा किया था मैं उसके कितना अयोग्य निकला। मेरे मिथ्या गर्व ने मुझे अपनी त्रुटियो और दुर्बलताओ की ओर से अधा नही कर दिया है और मैं इस

पवित्र दिन पर भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे क्षमा कर दे और मेरे अपराधों के बावजूद मुझे आशीर्वाद दे। मैं अपने अपराधों के लिए आपसे भी क्षमा-याचना करता हूं। क्या आप क्षमा नहीं करेंगे ?

आपके पत्रों को मैंने कई बार पढ़ा। मैं तो नहीं समझता कि आपने वह पत्र लिखकर भूल की। आपने वह पत्र इसलिए लिखा कि आपको विश्वास हो गया था कि हरिजन कार्य के लिए ऐसा करना आवश्यक है। कार्य व्यक्ति की अपेक्षा बड़ा है। मैं यह कभी विश्वास नहीं करूंगा कि मैंने आपके पत्र के मर्म और उद्देश्य को नहीं समझा। आप कहते हैं "हम दोनों एक दूसरे के इतना निकट आ गये थे कि आदि।" मैं आपके इस कथन में संशोधन करना चाहूंगा "हम दोनों एक-दूसरे के निकट हैं' और मैं आपसे अलग होने से कतई इन्कार करता हूं।

मैं आपसे यह नहीं छिपाऊंगा कि आपका पहला पत्र पढ़कर मुझे व्यथा हुई, क्योंकि उसमें आपने मुझे "प्राप्त शिकायतों के आधार पर कुछ कदम उठाने को कहा था। आपने यह नहीं बताया कि वे शिकायतें क्या थीं न आपने मुझसे कैफियत तलब की। यदि शिकायत केवल यही हो कि मैं सभी दलों के साथ रहकर काम करने में असमर्थ हूं तो मैं अपने आपको दोषी मानता हूं। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि मैंने प्रयत्न किया और आगे भी करूंगा। यदि मैं फिर भी असफल रहा तो इसका दोष मेरी अनिच्छा को नहीं दिया जा सकेगा। मुझमें अस्पृश्यता निवारण आंदोलन के नेता के आदेश का पालन करने लायक काफी अनुशासन है। मैं तो इस आंदोलन का एक साधारण कार्यकर्त्ता मात्र हूं। मुझे चिन्ता बोर्ड के सदस्यों की थी। उनमें से अधिकांश सार्वजनिक कार्य-क्षेत्र में मेरे सहकर्मी तक नहीं थे, उन्हें मैंने इसलिए चुना था कि उन्हें अस्पृश्यता निवारण कार्य से प्रेम था। मैंने उन्हें आपके पत्र की बाबत कुछ नहीं बताया है, और उसके विषय में वे अनभिज्ञ ही रहेंगे। मैं तो आपके पत्र के केवल उस विषय से सम्बद्ध अंश को प्रकाशित करने की अनुमति चाहता था, क्योंकि नये बोर्ड के गठन के समय उन्हें पुराने बोर्ड से हटना होता।

कमला पहले से स्वस्थ है और गाड़ी में बैठकर कुछ दूर तक हवाखोरी भी कर लेती है। मुझे यह कहते प्रसन्नता होती है कि उनकी पूरी परीक्षा करने के बाद उनका हृदय दोष रहित पाया गया है। मैं उन्हें यहां कुछ सप्ताह और रखूंगा। (देशबन्धु की कन्या) बेबी मुखर्जी ने कमला को अपने फ्लैट में ठहराने की कृपा की है—बड़े बाप की बड़ी बेटी।

मुझे यह कहते हर्ष होता है कि डा० आलम भी पहले से अच्छे हैं। उनका वजन ८ पौंड बढ़ा है। उनकी अवस्था में इतना सुधार हुआ है कि डाक्टर लोग

कहने लगे हैं कि उन्हें ऑपरेशन की जरूरत नहीं होगी। इस समय उनकी चिकित्सा एक्स रे और डाइथेरामी से हो रही है। मेरे सभी डाक्टर मित्र बड़ी सहृदयता के साथ रोगी के लिए जो कुछ करना आवश्यक है, वह सब कर रहे हैं। डा० आलम मेरे भाई के पास ठहरे हुए हैं, क्योंकि वह स्थान शांत है और उनके आराम में किसी प्रकार का विघ्न नहीं पड़ने दिया जाता है। वासंतीदेवी परिवार में निरंतर बीमारी बने रहने से बड़ी चिंतित रहती है।

आपको मेरा नमस्कार।

आपका,
विधान

१९३३ के पत्र

१

यरवडा केन्द्रीय कारागार

पूना

१ जनवरी १९३३

प्रिय घनश्यामदास

तुम्हारा पिछले महीने की २७ तारीख का पत्र मिला है। मैंने बिल देख लिया था। तुमने उसे जिन अर्थों में अनुमति देनेवाला समझ रखा था उन अर्थों में वह वैसा नहीं है। वह तो अनुमति देनेवाला केवल इसी हद तक है कि इसके द्वारा सभी मंदिरों को सबके लिए खुला रखने की घोषणा नहीं करता है। पर बिल के द्वारा उन मन्दिरों में प्रवेश की अनुमति उनके बहु संख्यक उपासकों की मतगणना पर निर्भर रहेगी, उनके ट्रस्टियों की इच्छा पर नहीं।

मुझे आशा है कि बिल के पेश किये जाने की स्वीकृति तुम्हारे भरोसे के अनुरूप ही मिल जायगी।

राजाजी यहां तीन दिन रहे। उनसे बिल के संबंध में तथा गुरुवायूर की स्थिति के संबंध में भी हम दोनों ने विस्तार से बातचीत की।

आशा है पत्र के प्रकाशन के सम्बन्ध में औपचारिक कारवाई अब तक पूरी हो चुकी होगी।

बापू

२

२ जनवरी, १९३३

पूज्य बापू

आपके २७ और २८ तारीख के दोनों पत्र एक ही लिफाफे में मिले। मुझे कहना पड़ता है कि आपकी बात मेरी समझ में नहीं आई। पर उसमें कुछ जोर है यह मैं मानता हूं। मैं आपका समय नष्ट नहीं करना चाहता। दर्शन करूंगा तभी बातें होंगी। वास्तव में और भी कई ऐसी बातें थीं जिन पर मैं पिछली बार पूना

यात्रा क दौरान आपसे स्वय अपनी दिलजमई के लिए विचार विनिमय करना चाहता था, पर आपको इतना अधिक व्यस्त देखा तो जान बूझकर उनकी चर्चा नही की। आपने अपने पत्र म डा० राय क पत्र की नकल साथ रखने की बात कही है पर वह मुझे नही मिली।

आपने पत्र के अग्रेजी सस्करण की बाबत जो बात कही है उसे ध्यान मे रखूगा और उसे जिस आदमी के सुपुर्द करूगा उसका चनाव करने के मामले म सतर्कता बरतूगा।

आपने उपवास स्थगित कर दिया है यह जानकर एक चिन्ता से छुटकारा मिला। पर इसका यह अर्थ नही है कि हम अपने प्रयत्नो को शिथिल कर दें। मुझे इसम तनिक भी सन्देह नही कि वाइसराय की स्वीकृति कम स कम १५ तारीख से पहले पहले अवश्य मिल जायेगी और मुझे आशा है कि जो बिल पेश किया जानेवाला है उनके मसौदे स आप सतुष्ट है। जसा कि मैंने पूना यात्रा के दौरान आपसे पूछा था यदि अब काशी के विश्वनाथ मदिर क प्रश्न को भी हाथ मे लिया जाए तो कसा रहेगा ? मन्दिर के द्वार निकट भविष्य म खुल जायेंगे, ऐसी तो सम्भावना नही है पर कम-से कम प्रचार काय तो आरम्भ हो जाना चाहिए। आशा है आपको यह विचार रुचेगा।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधी
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

३

यरवडा केन्द्रीय कारागार
३ जनवरी १९३३

प्रिय घनश्यामदास

यह पत्र अपनी बात स्वय कहेगा। देखो इस मामले मे क्या कुछ कर सकते हो।

तुम्हारी सूचना और पथ प्रदशन के लिए एक और पत्र भजता हू। पत्र म जो प्रसग उठाया गया है उसकी जाच पडताल होनी चाहिए। इस तरह की सारी शिकायतो की तुम खुद छानबीन करो, यह सम्भव नही ह, पर कोई आदमी एसा अवश्य होना चाहिए जो यदि शिकायत करनवाल लोग स्थानीय हो, तो उनस मिले और असलियत का पता लगाकर उन्हें यथासम्भव सतुष्ट कर।

तुम्ह कष्ट से बचाने क लिए मैं जानना चाहूगा कि क्या तुम्हारे ध्यान म ऐसा कोई आदमी है जिससे मैं उससे खुद लिखा-पढी कर सकू तो करूगा। उसके बाद यदि वह आवश्यक समझेगा तो तुम्हारी निगाह म लायगा।

सस्नेह,
बापू

४

६ जनवरी १९३३

पूज्य बापू

कस्तूरभाई ने ५०००) भेजे हैं। मैंने चिनूभाई को भी इतनी ही रकम दन को लिखा है। अभी धन-सम्बन्धी कोई कठिनाई उपस्थित नही हुई है। हम प्रान्तीय शाखाओ को तभी रुपया भेजते हैं जब वे अपने हिस्से का पूरा पसा इकट्ठा कर लेती हैं। यदि प्रान्तीय शाखाए धन-सग्रह करन म ढील दिखाती है तो हमारी ओर से भी रकम स्वत कम हो जाती है। पर इसका यह अथ नही है कि काम-काज ठप हो जाता है या उसम ढील आ जाती है। वास्तव म आपकी प्रेरणा न देश के कोने कोने म विलक्षण जागति उत्पन्न कर दी ह। हम विशेष कुछ नही करना पडता, काय स्वत ही सम्पन्न हो रहा ह। मुझे तो यही आत्म-सन्तोष है कि इस काय के साथ मेरा भी सम्बन्ध है।

स्नह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधी,
यरवदा केन्द्रीय कारागार

५

दिल्ली
७ जनवरी, १९३३

पूज्य बापू

आपका ३ तारीख का पत्र तथा उसके साथ भेजी दो चिट्ठियां मिलीं। दूसरी चिट्ठी में कही बात की बाबत पूरी जांच पड़ताल करने के बाद मैं आपको लिखूंगा। पर इतना तो कह ही दूं कि इस समय दिल्ली में पार्टीबन्दी का बाजार गरम है, इसी कारण यह सब गड़बड़ी हो रही है।

इनमें से एक को ही लीजिए। यह बात सही है कि रघुमल दातव्य निधि ने इस व्यक्ति की संस्था को मासिक सहायता देना बन्द कर दिया है। यह सहायता वैसे भी बन्द होती क्योंकि पिछले १८ महीने से लगातार दी जा रही थी (जहां तक मुझे याद पड़ता है)। पर यदि सहायता बन्द न की जाती तो भी इस व्यक्ति की संस्था जिस ढंग से चलाई जाती रही है उसकी छान बीन करना आवश्यक हो गया था।

दिल्ली में आर्यसमाजियों के दो दल हैं और दोनों ही एक दूसरे से बड़े भद्दे ढंग से लड़ते-झगड़ते रहते हैं। जिस व्यक्ति ने यह चिट्ठी भेजी है उसकी संस्था पर एक दल ने कब्जा कर लिया है और एक-दूसरे पर कीचड़ उछालने में काफी पैसा खर्च किया जा रहा है। ऐसी परिस्थिति में मैं इन संस्थाओं को पैसा देने के मामले में सतर्कता बरतना ठीक समझता हूं। जब यह व्यक्ति जेल से रिहा होगा तो मैं उससे बात करूंगा। इस आदमी के बारे में ऐसी अफवाह फैली हुई है जिनका मैं पत्र में उल्लेख करना नहीं चाहता। पर जो कुछ कहा जा रहा है वह काफी संगीन है।

जब मैंने यहां हरिजन सेवक संघ का बोर्ड बनाया था तो लाला श्रीराम, देशबन्धु गुप्ता और पंडित इन्द्र से सलाह-मशविरा कर लिया था। बोर्ड में आने के लिए दलित-वर्ग के लोगों में जो होड़ हुई वह देखने ही बनती थी। दलित-वर्ग के नाना दलों में से चार लोग बोर्ड में लिए गए, पर इतने पर भी एक दल असंतुष्ट ही रहा। यहां तक बात बढ़ी कि बोर्ड से इस्तीफा देने की धमकियां भी हमें मिलीं। पर जहां तक मुझे मालूम है ये इस्तीफे वापस ले लिए गए। उधर सवर्ण हिंदुओं की ओर से भी वैसी ही आतुरता दिखाई दी। फलतः इस समय बोर्ड में कोई

५० सदस्य हैं। आर्यसमाज की भांति दलित-वर्ग भी दलबन्दी के रोग से पीड़ित है। दिल्ली में राजा पार्टी या अम्बेडकर पार्टी जैसी कोई चीज नहीं है। आपस के राग द्वेष के परिणामस्वरूप जब किसी दल का जन्म होता है उसके बाद ही नेता चुना जाता है। अतः सतोषजनक व्यवस्था असम्भव-सी हो गई है। फिर भी मैं पंडित इन्द्र से अनुरोध कर रहा हूं कि वह आपको स्थिति से अवगत करा दें क्योंकि यहा की अवस्था की उन्हें विशेष रूप से जानकारी है।

हाल मे यहा जूते बनाने के उद्योग की सहायतार्थ एक को-आपरेटिव सोसाइटी का गठन किया गया है। उसमे सरकारी अधिकारी भी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। मुझे इस कार्य-कलाप में सच्ची लगन दिखाई दी इसलिए मैंने को-आपरेटिव बैंक को मामूली से ब्याज पर ५०००) रु० ऋण देने का वचन दे दिया। पर अब देखता हूं कि यह बैंक भी एक ही दल तक सीमित है। दूसरे दल को इससे सतोष नही है, और वह एक नया बैंक खोलने का विचार कर रहा है। बस, सारा काम काज ऐसे ही गंदे वातावरण मे हो रहा है।

पर, जैसा कि मैं कह चुका हू, पंडित इन्द्र इस विषय से सम्बन्ध रखनेवाली सारी बातो के बारे में विस्तार से आपको लिखेंगे।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

६

यरवडा केन्द्रीय कारागार
८ जनवरी, १९३३

प्रिय घनश्यामदास

तुम्हारे ४ तारीख के पत्र के उत्तर में मैंने तुम्हें कल एक तार भेजा था। मैंने पत्र के अंग्रेजी संस्करण के पूना से प्रकाशित करने की बाबत अपना विचार बदल दिया है, और अब उसे हिन्दी संस्करण के साथ-साथ प्रकाशित न करके शुक्रवार

को निकाला जा सकता है बशर्ते हिन्दी संस्करण सोमवार को निकले। अंग्रेजी संस्करण मेरी देख रेख में निकलेगा और उसमें हिन्दी संस्करण से जितनी सामग्री आवश्यक होगी, ली जायगी। आंकड़े वृत्त और रिपोर्ट तथा अन्य सामग्री हिन्दी संस्करण से ली जाएगी, साथ ही उसमें मौलिक सामग्री भी रहेगी। वैसी अवस्था में आपको वहां से किसी आदमी को भेजने की जरूरत नहीं है। यदि वहां कोई आदमी उपलब्ध न हो तो मैं यहीं से दो एक आदमियों को लेकर काम चला लूंगा।

कल मैंने ठक्कर बापा से इस बारे में बातचीत की तो उन्हें मेरा विचार अच्छा लगा। मैंने उनसे कहा कि वह इसकी चर्चा तुमसे करें, पर उन्होंने कहा कि इसमें और भी देर लगेगी अच्छा तो यही होगा कि मैं तुम्हें चिट्ठी लिखकर अपना विचार बता दूं और यदि तुम पूर्णतया सहमत हो, तो मामले को आगे बढ़ाओ तथा और अधिक विस्तार के साथ बात करना जरूरी समझो तो यहां आ जाओ। पर *हिन्दी संस्करण निकलने में देर न हो। अंग्रेजी संस्करण दो एक सप्ताह देर से निकले तो भी कोई हर्ज नहीं।*

बापु

७

१० जनवरी, १९३३

पूज्य बापू

इस पत्र से आपको पता लग ही जायेगा कि मैं यहां ग्वालियर काम-काज के सिलसिले में आया हुआ हूं। कोई एक पखवाड़े यहां ठहरने का विचार है। यहां के लिए रवाना होने से पहले मैंने पंडित इन्द्र को सन्देशा भेज दिया था कि वह आपको अमुक व्यक्ति के बारे में विस्तार के साथ लिखें। लगता है कि इस तरह की शिकायतों का आपके पास अंबार लग जायगा। इसका कारण यह है कि विशेषकर पढ़े लिखे हरिजनों में ऐसी आकांक्षाएं जाग्रत की गई हैं, जिनकी पूर्ति वर्तमान परिस्थितियों में असम्भवप्राय है। अनेक शिक्षित हरिजनों की धारणा बन गई है कि हमारा यह सोसाइटी उनके लिए आकाश के तारे तोड़ लायेगी। कोई बेकार है तो उसे नौकरी चाहिए। किसी सौदागर को पैसे की तंगी है तो

वह आर्थिक सहायता की अपेक्षा करता है। जब मैं पूना में था तो कुछ हरिजन विद्यार्थी मुझसे मिलने आए थे। मैंने उनसे कह दिया कि उन्हें हम लोगों से बहुत अधिक की आशा नहीं रखनी चाहिए। यदि हम छह लाख रुपया इकट्ठा करने में सफल भी हुए और सबका सब खर्च करने को तैयार हो गये, तो प्रति हरिजन के हिस्से में रुपये में एक आना मात्र आयगा। मैंने उन्हें बताया कि हमारे साधन सीमित-से ही हैं, इस बात का उन्हें ध्यान में रखना चाहिए। दुर्भाग्य से उनके ध्यान में यह बात नहीं समा पाई है जिसके फलस्वरूप उनमें काफी कुढ़न दिखाई दे रही है। इसलिए इस प्रकार की शिकायतों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होना अनिवार्य है।

पर जहां तक हृदय-परिवर्तन का सवाल है, हमने तेजी से प्रगति की है और आपकी प्रेरणा की बदौलत ही वातावरण में इतनी स्फूर्ति देखने में आ रही है।

पत्र के अंग्रेजी संस्करण की बाबत मेरा कहना यह है कि यदि उसका प्रकाशन भी दिल्ली से ही हुआ, तो दोनों संस्करणों का एक ही नाम रखने से प्रबंध-कार्य में अड़चन पैदा होगी। यदि उसका प्रकाशन पूना से हुआ, तो वैसी कोई कठिनाई नहीं होगी। अंग्रेजी संस्करण के सम्पादन के लिए मुझे अभी तक कोई उपयुक्त आदमी नहीं मिल पाया है। पर यदि आप उसका प्रबन्ध पूना में कर लें तो मुझे अपनी जिम्मेदारी से छुटकारा मिल जायगा। पर यह मैं कदापि नहीं चाहूंगा कि यह नया भार भी आपके ऊपर आ पड़े। हां, यदि आप समझें कि पत्र का पूना से निकालना अपेक्षाकृत अधिक उत्तम रहेगा तो कम-से-कम मुझे कोई आपत्ति नहीं है। इसका निर्णय आप ही करेंगे। पर यदि आप समझें कि पूना में मेरी सहायता की जरूरत है तो मेरी सेवाओं का पूरी तरह से उपयोग कीजिए।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गांधी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार,
पूना।

८

यरवडा केंद्रीय कारागार,
११ जनवरी १९३३

प्रिय घनश्यामदास

तुम्हारा ६ तारीख का पत्र मिला है। कन्हैयालाल ने तुम्हें चिट्ठी लिखी, यह जानकर आश्चर्य हुआ। मैं उससे पत्र व्यवहार द्वारा भली भांति परिचित नहीं हूं। उस आश्रम में सोनीरामजी ने भेजा था। वह मेरे पास तरह-तरह की समस्याएं हल करने के लिए भेजता रहता है। उसे मुझ या कम-से कम नारणदास को बताए बगैर तुम्हें पत्र नहीं लिखना चाहिए था। उससे सम्बंधित विचार मात्र को दिमाग से निकाल दो।

तुम्हारा,
बापू

९

यरवडा केंद्रीय कारागार
११ जनवरी १९३३

प्रिय घनश्यामदास

तुम्हारा ७ जनवरी का उदासी भरा पत्र मिला। पर तुम्हें न तो हताश होना चाहिए न भग्नोत्साह ही। तुमने जो कुछ कहा है वह अधिकांश संस्थाओं को झेलना पडता है। जब किसी आदमी के जिम्मे ऐसी संस्थाओं को संभालने का काम होता है तभी उसके खरे खोटे की परख होती है। वह कसौटी पर खरा तभी उतरता है जब वह यथासम्भव अनासक्तभाव से काम में जुटा रहता है।

तुम्हारा,
बापू

१०

दिल्ली
१४ जनवरी, १९३३

पूज्य बापू,

'हरिजन' के अंग्रेजी सस्करण की बाबत मैं आपको लिख ही चुका हू, इस सबध म मुझे और अधिक कुछ नही कहना है। आशा है आप उसे पूना से निकालने के लिए आवश्यक प्रबध करने मे लग गय होगे। यदि आप चाहे तो हम यहा से श्यामलाल को वहा भेज सकते हैं। अन्यथा उनका यही उपयोग किया जा सकता है।

आपके और लाला श्यामलाल के बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ है उसके सबध म मेरा कहना है कि उन लोगा क आपको चिट्ठी लिखने स पहले ही ठाकुरदास भागव मरे पास हमारी सोसाइटी से धन मागन आ चुके थे। मैंने उन्हे बताया कि हमारा काय क्षत्र अस्पश्यता तक ही सीमित नही है इसलिए म सोसाइटी के लिए एकत्र हुए धन म से कुछ देने मे असमथ हू। पर मैंने उन्हे अपने पास से ११००)रु० दे दिये। साथ ही, मैंने उनसे यह भी कह दिया था कि यदि उनका अभीष्ट केवल हरिजना के हित के लिए कुछ काय करना हो, तो उन्हें प्रान्तीय बोड से कहना चाहिए तब हम प्रान्तीय बोड को हरिजनो के निमित्त काय करने के लिए कुछ दे देंगे। मैं तो समझता हू कि उन लोगा का काय मुख्यत हरिजनो क हिताथ नही है। वास्तव म 'हरिजन' शब्द का अनावश्यक रूप स प्रयोग किया जा रहा है यह माना कि उद्देश्य अच्छा है। पर सदुद्देश्य के बावजूद सीमा का उल्लघन करना ठीक नही है। अत आपका उत्तर बिलकुल ठीक रहा।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधी

११

१७ जनवरी, १९३३

पूज्य बापू

इधर कुछ दिनों से बंगाल में कुछ हितबद्ध लोगों ने पूना पैक्ट के खिलाफ आन्दोलन खड़ा कर रखा है। मुझे खुद इस बात का पूरा विश्वास है कि यह वर्ग बंगाल के सवर्ण हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। अधिकांश कांग्रेसी इस आंदोलन से अलग हैं। आपको याद होगा कि आपके उपवास आरम्भ करने से कुछ ही पहले डा० मुंजे ने एक प्रेस मुलाकात में कहा था कि यदि जरूरत हुई तो सवर्ण हिन्दू दलित वर्ग की खातिर शत प्रतिशत सीटें स्वेच्छा से छोड़ देंगे। यह मुलाकात मेरे अनुरोध के फलस्वरूप हुई थी पर यह तभी हुई जब श्री रामानन्द चटर्जी से सलाह मशवरा कर लिया गया। इसलिए यह कहना गलत है कि इस मामले में किसी महत्त्वपूर्ण बंगाली की सलाह नहीं ली गई। अब देख रहा हूं कि रामानन्द चटर्जी ने पूना पैक्ट के खिलाफ आवाज उठाई है। इस पर पंडितजी (मदनमोहन मालवीय) ने बंगाल के सभी सम्भ्रान्त बंगालियों को निमंत्रण दिया, पर उन्हें आने की फुरसत नहीं मिली।

मेरी समझ में मेरे लिए इस वाद विवाद में पड़ना ठीक नहीं रहेगा। मामला नाजुक है, और किसी गैर बंगाली का इसमें टांग न अड़ाना ही उचित होगा। पर आप डा० (विधान) राय और श्री जे० सी० गुप्त को लिखें तो कैसा रहेगा? क्या आप चाहते हैं कि मैं भी इस मामले के बारे में सार्वजनिक रूप से कुछ कहूं? मैंने डा० राय को तो लिखा ही है।

आपका ११ जनवरी का पत्र मुझे अभी अभी मिला है। उसमें आपने नीली पुस्तिका के सम्बन्ध में जमनालालजी के विचारों का उल्लेख किया है। जो हो, प्रस्ताव सम्पूर्ण नहीं है। इस ओर मेरा ध्यान सबसे पहले देवदास ने दिलाया था। वास्तव में वह विशिष्ट अंश स्वयं मैंने लिखा था और मैंने श्री ठक्कर से उसे सम्बद्ध प्रस्ताव में सम्मिलित करने को कह दिया था। उन्होंने उसे प्रस्ताव में शामिल नहीं किया सो गलत काम हुआ पर मैं भी निर्दोष नहीं हूं। इस प्रसंग में मुझे हमारे दफ्तर की अक्षमता की बात को एक बार फिर स्वीकार करना पड़ता है। किसी हद तक यह गलती स्वाभाविक भी थी, क्योंकि अधिकांश समाचार पत्रों में प्रस्ताव के इस अंश को नहीं लिया गया है। इस बारे में पूना में मैंने देवदास के साथ बातचीत की थी और हम दोनों ही यह देखकर हैरान हुए कि

बम्बई के बाहर के पत्रो म से किसी ने भी प्रस्ताव के इस अश को प्रकाशित नही किया। यह सब मेरे लिए रहस्य का विषय बना रहा। पर फिर यह तय हुआ कि पुस्तिका को सशोधित करत समय इस भूल को सुधार लिया जायेगा।

जमनालालजी ने जो अन्य प्रश्न उठाये हैं उन पर कुछ अधिक विस्तार के साथ विचार करना आवश्यक है। 'नीली पुस्तिका' की पुनरावत्ति के अवसर पर उन प्रश्नो को ध्यान म रखा जायेगा। उनका यह कहना ठीक ही है कि जिस प्रस्ताव म लीग को अपना नाम बदलने का अधिकार दिया गया है, उसमे कोई सृजनात्मक बात नही है। पर मैं यह नही समझ पा रहा हू कि इस मामूली सी तकनीकी बात का इतना तूल क्या दिया जा रहा है। प्रस्ताव पर्याप्त सर्वांगपूण नहीं था। हमने अनेक अधिकार स्वत ही लिये थे, जिनकी प्रस्ताव अनुमति नही देता था, पर जो वतमान परिस्थिति मे अत्यावश्यक थे। हम सस्था की रजिस्ट्री तो करायेंगे ही।

कोषाध्यक्ष का काम चलाने के लिए मैंन अपनी मिल के सक्रेटरी को नियुक्त किया है। कार्यालय मेरी मिल म है और मेरी अनुपस्थिति म चेकों स रुपया निकालने के लिए यही ठीक जचा।

जमनालालजी ने पडित तावेकर के बारे म जो सुझाव दिया है उसकी बाबत मेरा कहना यह है कि जब वह हिन्दू विश्वविद्यालय म अच्छा वेतन पा रहे हैं तो शायद हमारी सोसाइटी म आना पसन्द न करें। एक अच्छे-से दफ्तर का अभाव मुझे भी बेतरह खल रहा है। इस विषय पर मैं आपको लिख ही चुका हू। यदि आप कोई उपयुक्त आदमी पाने मे असमथ रहग तो मैं अपनी पसन्द का कोई आदमी छाट लूगा। आप जानते ही होंगे कि मैं इस ओर पूरा ध्यान नही दे पा रहा हू। वतमान स्थिति म यह स्वाभाविक भी है क्योंकि मुझे अपना काम-काज भी देखना है। मेरा अधिकाश समय इसी म चला जाता है। आजकल यह आवश्यक हो गया है क्योंकि मिल मे कपडे का बहुत स्टाक जमा हो गया है। जब व लोग पैसा कमा रहे थे, तो मैं अधिक समय नही देता था। इस समय घाटा हो रहा है तो उन्हें पर्याप्त समय देना जरूरी हो गया है। यह सब मैं आपको वस्तुस्थिति से अवगत कराने के लिए लिख रहा हू। पर वैसे भी एक निपुण सेक्रेटरी की जरूरत तो है ही। मैं सोसाइटी के काम म अधिक समय लगाना चाहूगा, पर फिलहाल मेरे लिए वसा करना सम्भव नही है। अपने काम-काज की ओर ध्यान देने के बाद मैं सोसाइटी के काम म यथेष्ट रुचि ले रहा हू।

विभिन्न प्रान्तो म कितने मदिरो के द्वार खुले, कितने कूओ पर अन्त्यजो

का चढन दिया गया इसका पूरा ब्यौरा प्रान्तीय बोर्डों से प्राप्त नही हो रहा है। पर सारे प्रान्तो से पाक्षिक रिपोर्टें आती रहती हैं और मैं समझता हू कि हम जितनी जानकारी की जरूरत है वह उनसे मिलती रहती है।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

१२

यरवडा केन्द्रीय कारागार
१७ जनवरी, १६३३

प्रिय घनश्यामदास,

तुम्हारा १० तारीख का ग्वालियर से लिखा पत्र मिला। कल (बुधवार) को श्री देवधर और श्री वझे 'हरिजनसेवक' के अग्रेजी सस्करण के बारे मे मुझसे मिलने आ रहे हैं। तुम्हारा पत्र मिलने के बाद मैं वझे से प्रारम्भिक विचार विमर्श कर भी चुका हू। मालूम पडता है कि पत्र को यहा से प्रकाशित करने मे कोई कठिनाई नही होगी। पर मैं जल्दबाजी मे काम नही लेना चाहता। कार्य आरम्भ करने से पहले आपके पास सारी सूचना भेजूगा।

बगाल मे यरवडा पैक्ट के खिलाफ यह सब क्या हो रहा है ? मैं डा० विधान को भी पूछताछ करने को लिख रहा हू।

आलूबुखारे लेने से शरीर पर क्या प्रभाव पडता है, इस बाबत तुम्हारा मत जाना। तुमने आलूबुखारे कभी खाए भी हैं ?

सस्नेह
बापू

१३

यरवडा केंद्रीय कारागार
१९ जनवरी १९३३

प्रिय घनश्यामदास,

तुम्हारा १४ तारीख का पत्र मिला। कल मैंने श्री दवधर और श्री वझे से अंग्रेजी सस्करण की बाबत विस्तार के साथ बात की, और इसके फलस्वरूप मैंने अमृतलाल ठक्कर का तार भेजकर उनसे अनुरोध किया है कि यदि शास्त्री के बगैर वे काम चला सकें तो उन्हें यहा भेज दें। वझे का कहना है कि सम्पादकत्व के लिए शास्त्री सबसे योग्य व्यक्ति सिद्ध होंगे। वझे भी हाथ बटाते रहेंगे पर पत्र के साथ तादात्म्य स्थापित करना उनके लिए सम्भव नहीं है। मैं उनकी कठिनाई को समझता हू। पर देवधर और वझे दोनों ने यह बात कही कि यद्यपि शास्त्री ने सोसाइटी में लिये जाने का आवेदन पत्र दिया है तथापि यदि वह सम्पादन का भार सभालें तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी। यदि महादव को और मुझे समय रहेगा तो हम दोनों तो पत्र के कालम भरेंगे ही और शास्त्री निर्देश के अनुसार काम करेंगे, और आगे चलकर मौलिक लेख भी लिखेंगे।

हिन्दी सस्करण कब तक निकल पायेगा ?

तुम्हारा
बापू

१४

यरवडा केन्द्रीय कारागार
२१ जनवरी, १९३३

प्रिय घनश्यामदास

तुम्हारा पत्र मिला। मै यह नही चाहता कि तुम बगाल की समस्या पर कोई सार्वजनिक वक्तव्य दो। तुमने देखा ही है कि मैंने भी कोई वक्तव्य नही दिया है। मैंने तो डा० विधान और रामानद बाबू को लिखकर तुम्हारा अनुकरण मात्र किया है। मैं श्री ज० सी० गुप्त को पत्र नही लिख रहा हू लिखना आवश्यक भी नही समझता। मैं उनसे मिला होऊगा पर उनसे मेरा परिचय है भी या नही, यह मैं नही कह सकता।

तुम सशोधन के लिए पुस्तिका की सारी प्रतिया खत्म होने तक मत रुको। वसे तुम एक काम कर सकते हो या तो तुम पुस्तिका का सशोधित सस्करण प्रकाशित करो और पुरानी प्रतियो को दबा दो या फिर पुरानी प्रतिया के अपूर्ण प्रस्ताव पर पूरा प्रस्ताव चिपका दो और एक सकलर द्वारा यह बता दो कि पुस्तिका म गलती से अधूरा प्रस्ताव छप गया था और साथ ही पूरा प्रस्ताव भी दे दो।

तुम्हारे लिए इस समय अपने कामकाज की ओर अधिक ध्यान देना आवश्यक हो गया है यह म अच्छी तरह समझता हू।

हरिजनसेवक निकालने म अब क्या अडचन है ?

तुम्हारे स्वास्थ्य की खबर ने चिता पैदा कर दी है। यदि कोई विश्वसनीय डाक्टर आपरेशन कराने की सलाह देता है तो करा क्यो नही लेते ? मैंने अनुभव से सीखा है कि नपे-तुले भोजन और उपवास का भी सीमित सा ही उपयोग है। वे सदव ही फलप्रद सिद्ध नही होते और जितने विश्राम की आवश्यकता हो उतना तुम्हे लेना चाहिए। ऐसे मामलो म ढील देना पाप है।

सस्नेह,
बापू

पुनश्च

कल मालवीयजी का वक्तव्य देखकर बापूजी ने उनको एक पत्र लिखवाया था। उसकी नकल भेज रहा हू। सार्वजनिक वक्तव्य देने से उन्होने इकार किया।

—महादेव

१५

यरवडा केन्द्रीय कारागार
२० जनवरी १९३३

आपने सनातन धर्मावलम्बियों की परिषद का आयोजन करने के अवसर पर जो वक्तव्य दिया था उसे मैंने देखा है। मैंने मन्दिर प्रवेश के प्रश्न पर आपको जान बूझकर परेशान नहीं किया। आपकी अमूल्य सहायता की नितान्त आवश्यकता होने पर भी मैं जानता था कि आप सर्वाधिक महत्व के काम में पहले से ही जुटे हुए हैं। मुझे लगा कि मैं कम से कम इतना तो कर ही सकता हूँ और अधिक से अधिक इतना तो सम्भव था ही, कि मैं अपने आपको आपकी सहायता से वंचित रखूँ। केरल के मित्रों ने आग्रह किया कि मैं आपसे कहूँ कि आप वहाँ जाकर उन्हें त्राण दिलाएं। मैंने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और उनसे भी कह दिया कि आपको परेशान न करें। पर अब देखता हूँ कि आपने खुद ही पहल की है और इस प्रकार एक भारी जिम्मेदारी ले ली है। मुझे आशा है और मेरी कामना है कि इस परिषद का फल अत्यन्त मंगलदायक होगा।

अच्छा होता कि परिषद का श्रीगणेश होने से पहले हम दोनों मिल लेते, अथवा मंदिर प्रवेश के प्रश्न पर अपने सुझाव देने से पहले आप मेरे साथ विचार विनिमय कर लेते। पर अब मैं इस विषय पर अपनी स्थिति को आपके सामने रखना उचित समझता हूँ।

उपवास आरम्भ होने के तुरंत बाद तथा उसके दौरान बम्बई में हुई वह बैठक जिसने प्रस्ताव पास किया था जो यदि हिन्दू भारत का प्रतिनिधित्व करती थी, तो हिन्दू मात्र को उस प्रस्ताव का अक्षरशः पालन करना चाहिए। आप जानते ही हैं कि उस प्रस्ताव में मन्दिर प्रवेश का स्पष्ट उल्लेख है। उसमें कोई शर्त नहीं लगाई गई है। समूचे प्रस्ताव में इस बात पर बल दिया गया है कि मन्दिर प्रवेश और सार्वजनिक संस्थाओं के उपयोग के मामले में हिन्दू मात्र द्वारा अबाध उपयोग, चाहे वे सवर्ण हिन्दू हों या हरिजन एक ऐसा ऋण है जिसकी सवर्ण हिन्दुओं द्वारा अदायगी अभी तक नहीं हुई है। इस मामले में हरिजनों पर नयी शर्तें लगाना यदि स्पष्ट विश्वासघात न हो तो अनर्थ अवश्य है। हाँ हरिजनों से भी उन नियमों का पालन करने की अवश्य अपेक्षा की जायेगी, जिनका पालन अन्य सभी हिन्दू करते हैं और जो हिन्दुत्व के प्रतीक हैं। मन्दिरों में प्रवेश

करन के लिए इन नियमो का पालन करना हिन्दू मात्र के लिए अनिवाय है। पर यह बिलकुल भिन्न बात है। इसका हरिजना पर प्रायश्चित्त करने की शत लादने से कोइ सरोकार नही है। आपन जा सुझाव दिये हैं उनमे से अधिकाश को भिन्न प्रकार से और अधिक निर्दोष रूप म पश किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यह कहा जा सकता है कि हरिजनो को मदिरो म उन सारी बाता का पालन करत हुए जिनका अन्य हिन्दू पालन करते है, प्रवश करन का समान अधिकार रहेगा चाहे वे किसी भी जाति के हा तथा समाज म उनका चाहे जो दर्जा हो। (इनम नित्य स्नान करना द्वादश तथा अन्य मत्रा का पाठ, मुर्दा पशु का मास तथा गोमास भक्षण से परहेज आदि शामिल हैं। यदि स्मृतियो और पुराणो के द्वारा मान्य क्रिया स परहेज रखन की बात का प्रतिपादन किया जा सके, तो वह भी किया जा सकता है।)

मैंने इस विषय पर अनेक शास्त्रियो से विचार विमश किया है। उनम से कुछ इस आदोलन के पक्ष म थे, कुछ विपक्ष म। इस विचार विमश के फलस्वरूप मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि जिस रूप म अस्पश्यता इस समय हमारे समाज म मौजूद है उसका कही भी प्रतिपादन नही किया गया है। जिन श्लोको के द्वारा अस्पश्यता का प्रतिपादन किया जाता है व जनगणना की पुस्तका म किस किस पर लागू होत है इस दिशा म हद दर्जे की भ्रामकता है। जन्मजात अस्पश्यता के तो अस्तित्व मात्र का अभाव प्रतीत होता है। जिन वर्गो का अस्पश्य करार दिया गया है उनम स किसी एक को भी ब्राह्मण स्त्री और शुद्र पुरुष की सतान प्रमाणित करना सम्भव नही है। इसलिए आपसे मेरी प्राथना है कि आप सिद्धात क मामले म आत्मसमपण कदापि न करें। समाज सुधारक लोग इस प्रकार का अशोभनीय आत्मसमपण करें इससे अच्छा तो यही होगा कि वे अकेले ही अपने काय म लगे रह।

मेर आपसी समझौते के सुझाव म ही आदश आत्मसमपण निहित है। उस सुझाव म अल्प मख्यक वर्गों की कोमल भावनाओ का चाहे वे सख्या मे इने गिने ही हो पूरा ध्यान रखा गया है। पर इतने पर भी मेरी आलोचना हुई, यद्यपि उस आलोचना से मैं जरा भी प्रभावित नही हुआ हू, क्योकि मरी राय म वह सुझाव सबके लिए एकसमान सम्मानप्रद है और उन सब धमभीरु लोगो को सतुष्ट करता है जो नेकनीयती से काम ले रहे हा चाहे वे सुधारक हा या विपक्षी।

यदि मैं कही अपनी बात स्पष्ट न कर पाया हाऊ तो मुझे आशा है कि आप निसकोच तार देने का कष्ट करेंगे।

भगवान् हिन्दुत्व के परिष्कार-काय म आपको अपना साधन बनायें और साथ ही हरिजना को दिये गय वचन का पालन भी हो, यही मेरी हार्दिक कामना है।

पंडित मालवीयजी को लिख गए गांधीजी के निजी पत्र की नकल।

१६

२४ जनवरी १६३३

पूज्य बापू

सरकार के निणय पर मुझे अवश्य घोर आश्चय होता है, पर विभिन्न समाचार एजेंसिया द्वारा दी गई पेशीनगोइया न मुझे इसके लिए पूरी तरह तयार कर दिया था। मुझे सरकार के निणय मे न तक दिखाई देता है, न औचित्य ही। इस सारी स्थिति के प्रति आप क्या रुख अपनाते हैं अब मैं यही जानने की बाट जोह रहा हू।

व्यवस्थापिका सभा अपने वतमान रूप मे अनेक उत्तम चीजें रद्द करने तथा निकृष्ट चीजें पास करने मे समथ है। अव्वल तो सरकार ने जो टालने की नीति अपनाई है, उस देखते हुए मैं तो नही समझता कि मामला व्यवस्थापिका सभा के सामने आयगा और यदि आ भी गया, तो पास भी होगा या नही, मुझे इसम भी सदेह है। इसलिए हम श्री रगा अय्यर के बिल स कुछ विशेष आशा नही रखनी चाहिए। हमारे लिए तो अपन निजी प्रयत्ना पर ही निभर रहना अधिक अच्छा रहेगा। पर गुरवायूर मदिर के मामले मे निजी प्रयत्न अधिक कारगर सिद्ध नहीं होंगे। इसलिए मैं यह जानना चाहूगा कि आप हम लोगो से क्या कराना चाहते हैं।

यदि आपको श्री रगा अय्यर का बिल पसद आय तो मैं कहूगा कि उसम रद्दोबदल जरूरी है। अपने वतमान रूप म वह स्थिति से निबटने म यथेष्ट सिद्ध नही होगा। मसौद की भाषा बिलकुल अस्पष्ट है और कानूनी दष्टि से भी मसौदा अच्छा नही है। यदि आप इसके पेश किये जान के पक्ष म हो तो मैं इस म आपकी सलाह से परिवतन परिवद्धन करना चाहूगा। इस निमित्त मैंने आपको

एक तार किया है। आपका उत्तर कल तक आ जायगा ऐसी आशा है। यदि आप पूना में मेरी उपस्थिति चाहें तो मैं पूना के लिए सवेरे पत्र दूंगा अन्यथा मैं परसों दिल्ली के लिए रवाना हो रहा हूं।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गांधी,
यरवड़ा केन्द्रीय कारागार
पूना।

१७

यरवडा केन्द्रीय कारागार
२८ जनवरी १९३३

प्रिय घनश्यामदास

हरिजनसेवक के अंग्रेजी संस्करण के खर्च का अनुमान यह रहा। तुम खुद ही देखोगे कि रकम मामूली सी है। दफ्तर के काम पर भी खर्च आयगा। साथ ही शास्त्री को भी पारिश्रमिक देना होगा। वह पत्र का सम्पादन करने को राजी हो गये हैं।

आरम्भ में १०,००० प्रतियां छापने का विचार है। फिर यदि लगा कि इतनी प्रतियां नहीं खपेंगी तो संख्या में कमी की जा सकती है। तुम जानते ही हो कि मैं पत्र को स्वावलंबी बनाने के हेतु ही उसे हाथ में लूंगा। यदि पत्र अपना भार स्वयं नहीं उठा सका तो मैं समझूंगा कि या तो प्रबंध का दोष है या सम्पादन ठीक-ठीक नहीं हो रहा है अथवा जनता में ऐसे पत्र की मांग नहीं है। जैसा भी हो, यदि दोष का निवारण नहीं हो सकेगा तो पत्र को बन्द करना जरूरी हो जायगा। मैं तीन महीने आजमाइश करके देखूंगा। बस, इसी अवधि में पत्र को स्वावलंबी हो जाना चाहिए।

अतएव मैं चाहूगा कि तुम ठक्कर बापा या उन अन्य लोगो से सलाह मशवरा करके, जिनसे परामर्श करना तुम जरूरी समझो मुझे तार द्वारा सूचित कर दो कि तुम अधिक-से-अधिक कितना भार उठाने को तयार हो जाओगे। जितने खच का अनुमान लगाया गया है, उसके अतिरिक्त २०० रुपये ऊपर के खच के लिए और रख लेने चाहिए। डाक तार का खच अलग। शास्त्री से मिलने के बाद तुम्हे अधिक निश्चित आकडे भेज सकूगा। यदि तुम बजट पास करो तो हिन्दी संस्करण के प्रकाशन तक न रुककर मैं अग्रेजी संस्करण के प्रकाशन मे हाथ लगा दू न ? मुझे बताया गया है कि यहा से अग्रेजी संस्करण के प्रकाशन मे कोई कठिनाई उपस्थित न होगी।

तुमने अस्पश्यता सबधी बिलो की बाबत ग्वालियर से जो तार भेजा था वह मिल गया था। तुम्हे उसका उत्तर भी मिल गया होगा। आशा है तुमने प्रेस म प्रकाशनाथ मेरा सर्वांगपूर्ण वक्तव्य भी देख लिया होगा। मुझे उस वक्तव्य से अधिक कुछ कहना नही है, क्योकि और कुछ कहने को बाकी नही रह गया है।

सरकार से आर्थिक सहायता की याचना करने अथवा वसी सहायता ग्रहण करने के सबध मे मैंने हृदयजी[1] को जो पत्र लिखा है, उसकी नकल भेज रहा हू। इस सबध म भी मुझे अधिक कुछ नही कहना है। पत्र मे सारी बात खुलासा कर दी गई है।

आशा है, तुम स्वस्थ होगे। तुम्हे अपने स्वास्थ्य की ओर अपने अन्य सारे व्यापारी काम काज की भाति ही ध्यान देना चाहिए। लापरवाही बरतना ठीक नही है।

तुम्हारा,
बापू

[1] प० हृदयनाथ कजरू

१८

यरवडा केन्द्रीय कारागार
२५ जनवरी, १९३३

प्रिय हरिजी

आपके १९ तारीख के पत्र तथा उसके साथ भेजी सामग्री के लिए धन्यवाद। मुझे पूरी आशा है कि आप धन सग्रह करने के अपने प्रयत्न म सफल होगे।

आपने सरकार से सहायता की माग करने की बात का जो उल्लेख किया है उसकी बाबत असहयोग सबधी अपने दृष्टिकोण की बात को अलग रखते हुए मेरा कहना यह है कि यदि मैं आपको या आपके बोड को प्रभावित कर पाता, तो आपको सरकार से सहायता की माग कदापि नही करने देता। मेरे विचार म विशुद्ध धार्मिक मामला म सरकारी सहायता की माग नही करनी चाहिए। अस्पश्यता निवारण काय केवल हिन्दुओ को करना चाहिए। यह एक बहुद सुधार काय है और यदि सरकार विशुद्ध राष्ट्रीय सरकार हो तो भी मुझे उससे आर्थिक सहायता की माग करने म सकोच होगा और यदि सहायता मिले तो उसका वितरण सभी धम-सम्प्रदाया म समान भाव से करने की योजना के अन्तगत होना चाहिए।

आशा है आप मेरे कथन को समझगे भले ही आप उसस सहमत न हो।

यह जानकर प्रसन्नता हुई की सरूप ने आपको अपनी सेवाए अर्पित की है।

भवदीय
मो० क० गाधी

१९

३६ वलिंगटन स्ट्रीट
कलकत्ता
२७ जनवरी, १९३३

प्रिय श्री बिडला

आपके दोना पत्र मिले। उत्तर देने म देर हुई कृपया क्षमा कीजियेगा। मैं एक के बाद दूसरे काम म बेतरह उलझा हुआ था।

इस पत्र के साथ गाधीजी को लिखे पत्र की नकल भेज रहा हू। उसम पूना पक्ट के प्रति वगाल के तथाकथित सवण हि दुओ के रवय को स्पष्ट कर दिया गया है। यहा इस विपय का लेकर जो चर्चा हो रही है मैंन उससे अपन आपको अलग थलग रखा है। क्याकि इससे मैं बाद म अपन ढग से काम करने के लिए स्वतत्र रहूगा। सवण हि दू दलित वग के साथ समझौता करन को उत्सुक हैं। यह समझौता हाने के बाद यदि पूना पक्ट मे हेर फेर करना सम्भव हुआ तो उसके लिए आग्रह किया जायेगा। दलित वग इसके लिए तैयार हैं या नही, यह कहना कठिन है। यदि वे पैक्ट म हेर फेर करने को राजी नही पाय गए, तो मेरी समझ मे उसकी पुनरावृत्ति का प्रश्न ही नही उठेगा। घटनाए जसा रूप धारण करेंगी, मैं आपको उनसे अवगत करा दूगा।

भवदीय
बि० च० राय

श्री घ० दा० बिडला,
बिडला मिलस
दिल्ली

सलग्न—१

२०

यरवडा केन्द्रीय कारागार
१ फरवरी १९३३

प्रिय महोदय,

मैंने गत ३० दिसम्बर का आपको डा० सुब्बारायन के मन्दिर प्रवेश सवधी बिल के प्रश्न की बाबत हिज़ एक्सिलेंसी क सामने पश करन क निमित्त एक तार भेजा था। उसकी न तो और न किसी अ य प्रकार की पहुच ही मिली। तो भी श्री रगा अय्यर के औपचारिक बिलो से सम्बधित निणय की हाल की घोपणा के सबध म मैं अपना निवेदन हिज़ एक्सिलेंसी के सम्मुख रखना अपना कत्त य समझता हू।

यद्यपि मेरी धारणा है कि यदि डा० सुब्बारायन के बिल को पेश किये जाने

की अनुमति दे दी जाती है ता समय की वचत होती, तथापि श्री रगा अय्यर के विला के पश किये जान की अनुमति के लिए मैं कृतन हू। इनमे स एक बिल डा० सुब्बारायन के बिल की अस्वीकृति के वाद तयार किया गया था।

मेरे इम आवदन का उद्देश्य हिज एक्सिलेंसी का ध्यान कुछ ऐसे तथ्या की ओर दिलाना है जिनका व्यवस्थापिका सभा म विला के अविलम्ब पेश किये जाने से सवध है। इस दिशा म भारत सरकार द्वारा सहायतापूण कायवाही वाछनीय है क्याकि इन विला का विषय अपना एक निजी महत्व रखता है।

मैं व्यवस्थापिका सभा की काय विधि से अनभिज्ञ हू फनत मैंने श्री एम० आर० जयकर स सहायता और पथ प्रदशन की माग की जो उन्हाने कल प्रदान करने की कृपा की। उन्हाने मुझे वताया कि यदि सरकार चाहे तो कम-स कम एक बिल ता व्यवस्थापिका सभा के अगामी सत्र म ही पास हो सकता है।

यदि ऐसी बात है तो मैं कहूगा कि सरकार इन बिला पर अविलम्ब विचार करने के विषय म आवश्यक सहायता देन का नतिक दष्टि से बाध्य है। सरकार ने यरवडा पक्ट को मान्यता प्रदान की है। इस पक्ट म दलित-वग के, जिसे अब 'हरिजना के नाम स अभिहित किया जाता है व्यवस्थापिका सभाआ म प्रतिनिधित्व की बात है। फलत सरकार सवण हिन्दुआ का व सारी सुविधाए दने को नतिक दष्टि से बाध्य है जि हें देना उसकी सामथ्य म है और जिनके द्वारा सवण हिन्दुओ के लिए पक्ट की अन्य सारी बाता को साथक बनाना सम्भव होगा। य बातें सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र से सवध रखती हैं। सम्राट का सरकार ने पैक्ट के विधानवाल अग को स्वीकार करके कान्फ्रेंस की प्रतिनिधित्व सवधी क्षमता का भी स्वीकृति प्रदान कर दी। इस कान्फ्रेंस ने विभिन्न प्रस्ताव पास किये थ जिनम स एक इस प्रकार है

यह कान्फ्रेस यह निश्चय करती है कि अब आग से हिन्दू समाज म किसी को उसके जन्म के कारण अस्पृश्य नही समझा जायगा और जब तक जिन्हे ऐसा समझा जाता रहा है उन्हे अन्य हिन्दुआ की भाति ही सावजनिक कूआ सावजनिक पाठशालाआ जनपथा तथा अन्य सावजनिक सस्थाआ का उपयाग करन का अधिकार रहेगा। इस अधिकार को जल्दी से-जल्दी कानूनी रूप दिया जायगा और यदि यह कानून अभी पास नही हुआ तो स्वराज्य की लोक-सभा जा कानून सवस पहल पास करगी, उनमे एक यह भी होगा।

'यह भी निणय किया जाता है कि सभी हिन्दू नेताओ का यह कत्तव्य हागा कि वे सारे वध और शान्तिपूण उपाया से उन सारे भेदभावपूण रीति

रिवाजो का जल्दी स जल्दी मूलोच्छेद करन मे सचेष्ट रहेंगे जो अब तक तथाकथित अस्पश्यो पर लादे जाते रहे हैं, इनम मन्दिर प्रवेश सबधी भेद भाव भी सम्मिलित है।"

हरिजनो को दिये गये वचन के पालन के लिए ही य बिल तयार किये गय हैं। इन बिला की जरूरत इस कारण से है कि जाति सबधी अग्रेजी विधान हरिजना के मदिर प्रवेश के माग मे बाधक सिद्ध हो रहा है। मुझे बताया गया है कि अग्रेजी अदालतो ने जो निणय दिय हैं, उनके अन्तगत किसी ट्रस्टी द्वारा मदिर प्रवेश की अनुमति दिया जाना परिपाटी का उल्लघन माना जायगा जो उसके ट्रस्टी बनने के समय तक चलती आ रही थी। इन निणयो के परिणामस्वरूप मदिरा के ट्रस्टियो तथा मदिरा म जानेवाल सवण हिन्दुओ का इच्छा रहते हुए भी, प्रचलित परिपाटी के खिलाफ मदिरा के द्वार हरिजनो के लिए खोल दन की स्वतत्रता नही है। यदि य निणय अग्रेजी विधान के आधार पर नही दिय जाते तो हिन्दू पडिता तथा जनसाधारण के लिए परिपाटी म हेर फेर करन तथा इस दिशा म सुधार करन म कठिनाई न होती।

इन बिलो का उद्देश्य प्रगति के माग मे से इस रोडे को हटाना मात्र है जिसस इन निणयो से पहले की अवस्था को पुन वापस लाया जा सके। शायद हिज एक्सिलेंसी का पता नही है कि कई ऐसे मामले हुए हैं, जिनमे हरिजना को मदिरा म प्रवेश करन के फलस्वरूप जुर्माना देना पडा। यद्यपि वे नेकनीयती के साथ कवल उपासना करन के लिए गये थे। हिन्दू धम म एसे दण्ड की व्यवस्था नही है। हिन्दू रीति रिवाजा म मूर्ति और मदिर की शुद्धि तथा सवण हिन्दुआ के लिए स्नान की व्यवस्था अवश्य है पर अपराध करनेवाला के लिए दण्ड की कोई व्यवस्था नही है।

इसलिए जब तक य बिल पास नही होगे अथवा सरकार कोई और उपाय नही ढूढ निकालेगी, हिन्दू-समाज द्वारा दिय गये वचन के इस अत्यत महत्वपूण अश का पालन नहीं हो पायगा। व्यक्तिगत रूप म मैं स्वय अपने आपको इस वचन का समयोचित पालन न होने तक बधन स जकडा हुआ पाता हू, और जब तक यह अडचन मौजूद रहेगी मरी मनोव्यथा का अत न होगा। एक कैदी की हैसियत से भी मुझ सरकार से सक्रिय सहायता की माग करन का अधिकार है।

मैं धार्मिक मामला म राज्य के हस्तक्षेप की माग नही कर रहा हू। वास्तव म मैं इसके विरुद्ध हू। इस मामले म मैं तो राज्य के वतमान हस्तक्षेप का अन्त करन की माग कर रहा हू।

बिना के पश किये जाने तथा पारित होने की दिशा म सरकार किस रूप म सहायक सिद्ध हो सकती है इस दिशा मे इगित करने मे मुझे सकोच होता है। वास्तव मे वसा करना ढिठाई का काम होगा। मुझे तो केवल इतना ही कहना है कि यह एक ऐसा मामला है जिसम भारत सरकार का बिलो के पश किय जान और उसे कानून का रूप देने के लिए सारी वध सुविधाए प्रदान करनी चाहिए। आशा है मैं अपने विचार को यथेष्ट स्पष्ट कर पाया हू।

मैंने यह पत्र कुछ मित्रों को अवश्य दिखाया है पर इसे प्रकाशनाथ नही भेजा है।

मो० क० गाधी

प्राइवट सक्रटरी
हिज एक्सिलसी वाइसराय
नई दिल्ली।

२१

मलाबार हिल
बम्बई
२ फरवरी १६३३

पूज्य बापू

आपने देखा ही होगा कि दामादरलालजी[1] ने नायक लडकियो के लिए छात्रा वासयुक्त विद्यालय के निमित्त १० ०००) दिय हैं। यदि वह अस्पश्यता निवारण काय क निमित्त कुछ दे तो क्या आपको कोई आपत्ति होगी ? मैं तो इसम कोई आपत्तिजनक बात नही देखता क्योकि इस काय क निमित्त सभी का देने का

[1] नाथद्वारा के गोस्वामी

अधिकार है। पर इसके लिए मुझे उनसे आग्रह करना होगा। मैं स्वय इस मामले म कोई निणय नही कर पाया हू, इसीलिए आपस पूछा है।

मैं यहा से कल रवाना हो रहा हू। दो दिन ग्वालियर म ठहरने के बाद ६ तारीख की शाम को दिल्ली पहुचूगा।

स्नेह भाजन
धनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार,
पूना।

२२

यरवडा केन्द्रीय कारागार
४ फरवरी, १९३३

प्रिय घनश्यामदास,

तुम्हारा पत्र मिला। यदि दामोदरलालजी रुपया भेजें, तो अवश्य ले ला, यह मानकर कि वह अन्य लोगो की भाति उन्होंने भी भेजा। पर मेरी राय म उनके पास रुपये के लिए पहुचना ठीक नही होगा। यदि वह रुपया बगर माग और स्वेच्छा से न भेजें, तो उनकी आर्थिक सहायता के बिना भी हमारा काम चल जायगा।

तुम्हारा,
बापू

श्री घनश्यामदास बिडला,
बिडला हाउस,
अल्बूकर्क रोड,
नई दिल्ली

२३

६ फरवरी, १६३३

पूज्य बापू

हम लोगो ने स्थिति को भली भाति समझ लिया है। मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि यदि सरकार सहायता करे तो बिल इसी अधिवेशन म पेश हो सकता है। और उसके विचाराथ सलेक्ट कमेटी नियुक्त की जा सकती है तथा शिमला के अधिवेशन म वह पास भी हो सकता है। पर यदि सरकार रोडे अटकायगी तो बिल इस अधिवेशन म भी पेश होने से रहा। किंतु मेरी धारणा है कि सरकार बिल के पेश किए जाने म तो सहायता देगी पर इससे अधिक कुछ करने को तयार नही होगी। सरकार बिल के वितरण पर हठ पकडेगी और यदि सरकार चाहे तो बिल का वितरण होने के बाद भी उसे शिमला के अधिवेशन म पारित किया जा सकता है पर ऐसा तभी सम्भव है जब सरकार सारी सुविधाए देने को तयार हो। सरकार की सहायता के बगर बिल का व्यवस्थापिका सभा से निकलना तक सम्भव नही है वह खटाई मे पडा रहेगा।

मैं जब से यहा आया हू हम लोगो ने कई बठकें की हैं। इनम सबसे अधिक महत्व की बैठक कल सध्या समय हुई उसम यह निश्चय हुआ कि व्यवस्थापिका सभा के प्र तिष्ठित सदस्य सरकार से बिल पर चर्चा करने के लिए आवश्यक सुविधाओ की माग करें। उसी अवसर पर एक पत्र तयार किया गया जिस पर अनेक प्रमुख सदस्यो ने हस्ताक्षर किये। आज कुछ और हस्ताक्षर सग्रह किय जानेवाले थे, और मैं समझता हू कि पत्र अब तक लीडर आफ द हाउस के हाथो म पहुच गया होगा। पर मैं सरकार द्वारा विशेष सुविधाए प्रदान किय जाने के बारे में अधिक आशान्वित नही हू। सदस्यो को भी यह बात पसद नही आई कि बिल का वतमान अधिवशन म ही पेश किया जाय। उनम से अधिकाश इस बात पर सहमत हैं कि बिल के वितरण की आवश्यकता नही है। पर साथ ही व यह भी नही चाहते कि बिल पास कराने के मामले म जल्दबाजी की जाय। वे केवल यही चाहते हैं कि बिल का इसी अधिवेशन म पेश किया जाय और इसे सलेक्ट कमेटी के सुपुर्द किया जाय तथा शिमला के अधिवशन म उसे पास किया जाय। मैं आपको सारी औपचारिक कारवाई से अवगत कराना आवश्यक नही समझता क्योकि मुझे विश्वास है कि आप उससे भली भाति परिचित होगे। पर मैं यह बताना चाहता हू कि यदि सरकार चाहे तो बिल को गजट म छाप दे तो उस औपचारिक रूप म

पेश किय जान की झझट मिट जायगी। इस प्रकार यदि सरकार सहायता कर ता इस अडग से छुटकारा पाया जा सकता है, पर मुझे आशका है कि सरकार हमारी इस हद तक सहायता करन को तैयार नही होगी।

आज रात को फिर प्रमुख सदस्यो की बैठक होगी जिसम हम उनम से कुछ का बहस के लिए अपने नाम से दिये गए बिला को वापस लेने के लिए तयार करने की चेष्टा करेंगे, जिससे श्री रगा अय्यर के बिल को पेश करने का माग साफ हो जाय। मुझे विश्वास है कि उनमे से अधिकाश इस मामले म हमारी सहायता करेंग। पर मुझे आशका है कि उनमे से दो एक सहायतापूण रुख नही अपनायेंग, और बिल के २७ फरवरी को पेश किये जाने के अवसर पर वे बाधा डालेंगे ऐसा मैं नही समझता। हा, यदि सरकार इससे पहलें बिल को गजट म प्रकाशित कर द और विशेष सुविधाए दे तो उसके बाकायदा पश किये जान की आवश्यकता नही रहेगी।

एक बात और कहनी है। व्यवस्थापिका की एक परिपाटी यह चली आती है कि पेश किये जाने के बाद उसी दिन उस पर विचार नही किया जाता है। इसका अथ यह हुआ कि यदि बिल २७ फरवरी को पश हो भी गया, तो भी उस पर उसी दिन विचार नही होगा। इस परिपाटी को सभा के अध्यक्ष सभा के सदस्या तथा सरकार की सहमति से शिथिल भी किया जा सकता है। पर इस विषय पर सभा की तीना पार्टिया एकमत हो जायेंगी, यह मुझे सम्भव नही दिखाई देता है। कुछ बाता म सभा अपनी परिपाटियो को अक्षत रखने की दिशा मे बडी अनुदार सिद्ध हुई है। मैं स्वय पिछले चार वष सदस्य रह चुका हू और मेरी सहानुभूति उनके साथ है।

यदि मुझे लगा कि यहा कुछ अधिक करना सम्भव नही है, तो मैं कलकत्ते के लिए रवाना हो जाऊगा। वहा मैं अपनी नाक दिखाऊगा, क्योकि दिल्ली म नाक का आपरेशन करनेवाला कोई विशेषज्ञ नही है।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार,
पूना।

२४

आपने और घनश्यामदास ने जनता के नाम जो अपील निकाली है वह मैंने पढ़ी है। आप लोगों ने उपवास और उसकी सम्भावना की चर्चा तक क्यों की ? यदि उपवास करना ही पड़ा और उसे आध्यात्मिक रूप देना पड़ा तो आप इस प्रकार उसकी आध्यात्मिकता नष्ट कर रहे हैं। यदि मन्दिर प्रवेश-सम्बन्धी बिल व्यवस्थापिका सभा के वर्तमान अधिवेशन में या कभी भी, पास न हुए तो भी मैं स्वयं नहीं कह सकता कि उपवास निश्चित है। मैं नहीं जानता वह कब आयगा। आप लोगों को उसे अपने दिमाग से बिलकुल निकाल देना चाहिए और जनता को स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की छूट दे देनी चाहिए। जब उपवास आयगा और उसका रूप आध्यात्मिक होगा तो उसका प्रभाव स्वतः ही पड़ेगा। यदि वह उपवास रुग्ण अथवा अहमन्य मस्तिष्क की उपज होगा तो उसकी खबर सुननेवाले को या तो तरस आयेगा या घृणा होगी—जिसकी जैसी मनोवृत्ति हो। इसलिए एक विशेषज्ञ की सलाह मानकर उसीके अनुरूप पूरी तरह आचरण करिए।

साथ ही आपको मालवीयजी के रुख पर भी गम्भीरतापूर्वक ध्यान देना है। वह बिलों के बिलकुल खिलाफ हैं विशेषकर जबकि वे सबकी राय के लिए प्रसारित न किये गए हों। यह ठीक है कि मैं उनके मत से सहमत नहीं हूं। मैं उनको लिख रहा हूं। पर यदि आपको थोड़ा अवकाश हो तो उनसे अवश्य मिलिए या फिर देवदास को ही भेज दीजिए। लेकिन मैं इस बारे में कोई निश्चित राय नहीं दे सकता। जो कुछ आपको बिलकुल ठीक जंचे वही करिए। बाहर के वातावरण से तो आप लोग अच्छी तरह परिचित हैं। मैं तो जो कुछ जानता हूं, सुनी-सुनाई, इसलिए उसका मूल्य नहीं के बराबर है।

डा० अं०[1] के साथ मुलाकात हुई। मुलाकात को अत्यन्त असंतोषजनक कहना ठीक होगा। उनके साथ मेल होना सम्भव नहीं है। एक प्रकार से मुलाकात सफल भी रही। मैं उन्हें अब पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह जानने लगा हूं।

कृपया यह पत्र घनश्यामदास और ठक्कर बापा को भी दिखा दीजिए।

बापू

(चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के नाम महात्मा गांधी के १३.२.३३ के पत्र की प्रतिलिपि)

१ डा० अम्बेडकर

२५

१४ फरवरी १९३३

पूज्य बापू

हमारी सारी चेष्टाओ के बावजूद गतिरोध बना हुआ है। बिल के २७ फरवरी को पेश होने का ससदीय उल्लेख हुआ है और यदि कोई नयी अडचन पैदा नही हुई, तो श्री गयाप्रसाद सिंह अथवा श्री एस० सी० मित्र उसे उसी दिन पेश कर देंगे। पर वह पेश होगा भी या नही इस विषय मे मुझे काफी सदेह है। सबसे पहली बात तो यह है कि कुछ अन्य बिलो पर चर्चा काफी आगे तक हो चुकी है। यदि उन सबको वापस ले लिया जाय तो भी हाजी वजीउद्दीन शारदा एक्ट को रद्द करनेवाला अपना बिल वापस लेने को कदापि तैयार नही होगे और इसी मे सारा दिन बीत जायगा। इस प्रकार बिल २७ तारीख को पेश नही भी हो सकता है और जैसा कि आप खुद जानते हैं उसके पेश किये जाने मात्र से कोई उद्देश्य सिद्ध नही होगा। अन्य बिलो के बावजूद इस बिल को तभी पेश किया जा सकता है जब सरकार उसको पेश करने की विशेष सुविधाए दे।

जैसा कि मैं अपने पिछले पत्र मे लिख चुका हू यदि सरकार बिल को गजट मे छाप देती, तो उसे बाकायदा पेश किया गया समझा जाता। इस सबध मे श्री रगा अय्यर सरकार को लिख चुके है, पर उन्हे कोई उत्तर नही मिला है। मेरे सुनने मे जितना कुछ आया है उससे तो यही लगता है कि कोई विशेष सुविधाए नही दी जायेंगी। सदस्यो के हस्ताक्षरोवाला जो पत्र सरकार को भेजा जानेवाला था वह भेज दिया गया है। अब तक केवल १२ हस्ताक्षर ही उपलब्ध हो पाये हैं।

नेशनलिस्ट पार्टी मे फूट पड गई है। साथ ही नेशनलिस्ट पार्टी और इडिपेंडेंट पार्टी मे होड का दौर-दौरा है। वैसा ही एक पत्र इडिपेंडेंट पार्टी से भिजवाने की चेष्टाए हो रही हैं।

पर बिल की मथर गति के कारण होनेवाली निराशा के अतिरिक्त अन्य दिशाओ मे स्थिति काफी सतोषजनक है और देश बडी तेजी से प्रगति कर रहा है। जनता अस्पृश्यता निवारण कार्य मे उत्तरोत्तर अधिक दिलचस्पी ले रही है और मैं परिणाम से काफी सतुष्ट हू।

पडितजी बिल पेश किये जाने के विरोध मे एक निहायत बुरा वक्तव्य देने वाले थे, पर कह-सुनकर फिलहाल वैसा न करने को उन्हें राजी कर लिया गया है।

हिंदी 'हरिजन' का मामला अभी तक खटाई मे पडा है। सी० आई० डी०

गुप्तजी के बारे मे, जिनका नाम मुद्रक और प्रकाशक की हैसियत से दिया गया है, पूछताछ कर रही है। उसने नागपुर पुलिस से गुप्तेजी के बार म पूरी कफियत तलब की है। पूरी चेष्टा करन के बावजूद हम इस काम को जल्दी स पूरा करन म असमथ रह है। श्री ठक्कर डिप्टी कमिश्नर से दो बार मिल चुके हैं पर मामला जहा का-तहा अटका हुआ है।

आशा है आपकी तबीयत ठीक रहती हागी।

स्नहभाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधी
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना

२६

यरवडा केन्द्रीय कारागार
१८ फरवरी १९३३

प्रिय घनश्यामदास,

कही भूल न जाओ इसलिए तुम्हे याद दिला रहा हू कि आज म बाबू भगवानदास द्वारा 'क्रोन पत्र' क रूप म विद्वाना की सम्मतिया प्रकाशित करने की बात थी और उसक निमित्त तुम्हे कुछ भेजना था। यदि कुछ भज दिया हा तब ता ठीक ही है, नही ता अब भेज दना।

तुम्हारा,
बापू

२७

१८ फरवरी, १९३३

पूज्य बापू,

फिलहाल कोई जरूरी बात कहने के लिए नहीं है। दोनों ही ओर से प्रचार हो रहा है और पुराणपंथी भी हमारी ही तरह प्रचार-कार्य में लगे हुए हैं। जब हम कुछ सदस्यों से सरकार से विशेष सुविधाएं देने का अनुरोध करने को कहते हैं तो दूसरी ओर से भी कुछ सदस्यों से इस पर आपत्ति करने को कहा जाता है। अब हमने यह फैसला किया है कि यदि हम अधिकाधिक सदस्यों का समर्थन प्राप्त करना है तो हम जल्दबाजी से काम न लेकर बिल के वितरण के लिए राजी हो जाना चाहिए। आप इस तरीके से सहमत नहीं हैं सो मैं जानता हूं, पर मेरा कहना यह है कि व्यावहारिक दृष्टि से बिल के सलेक्ट कमेटी के सुपुर्द किये जाने और सदस्यों में उसके वितरण करने में कोई भेद नहीं है। यदि सलेक्ट कमेटी की नियुक्ति हो भी गई, तो भी शिमला अधिवेशन के पहले कुछ होना-जाना नहीं है और यदि बिल को वितरित किया गया और सम्मतियों के लिए अवधि निश्चित कर दी गई तो शिमला-अधिवेशन में सलेक्ट कमेटी की नियुक्ति हो जायेगी और फिर बिल को विचारार्थ ले लिया जायेगा। इस प्रकार बिल के वितरण के लिए राजी होने से हम उतना ही समय नष्ट करेंगे जितना अन्य प्रकार से करते। साथ ही, हम सदस्यों के द्वारा सरकार से विशेष सुविधाएं देने का अनुरोध कर सकते हैं जिससे बिल इसी अधिवेशन में वितरित हो जाय और जनमत संग्रह के लिए एक तारीख निश्चित कर दी जाय, जिससे बिल शिमला-अधिवेशन में लिया जा सके। आशा है आपको इस पर कोई विशेष आपत्ति नहीं होगी।

मैंने सुना है कि पुराणपंथियों ने एक बड़ी-सी रकम इकट्ठी की है। रुपया दक्षिण से भी आ रहा है, और कलकत्ता और बम्बई के मारवाड़ियों से भी। कश्मीर के महाराज ने काफी रुपया दिया है, ऐसा सुनने में आया है। इसमें कितनी सचाई है, सो मैं नहीं जानता, पर थोड़ी-बहुत सचाई तो है ही।

मुझे खेद है कि हम दोनों को—राजाजी और मुझे—खुल्लमखुल्ला आपको डांटना पड़ा। अब हम आपस में झगड़ रहे हैं कि उस विशिष्ट अंश के लिए कौन उत्तरदायी है। पर मुझे अच्छी तरह याद है कि मैंने राजाजी से स्पष्ट रूप से कह दिया था कि वह उपवासवाली बात की चर्चा न करें, हां, वैसा मैंने अन्य कारणों से अवश्य कहा था। प्रेस मुलाकात का मसौदा स्वयं राजाजी ने तैयार किया था

और उसम आपके उपवास की चर्चा तक न थी। मूल वाक्य मे हमारे द्वारा यह वचन दिये जान का उल्लेख था कि हम इसी अधिवेशन म बिल को पास कराने की दूनी चेष्टा करेंगे, या लगभग वसी ही कोई बात था। मैंन बताया कि मैं उस मसौदे पर हस्ताक्षर नही करूगा क्योकि न तो मैंने एसा काई वचन ही दिया था न मैं अपने आपको वसा वचन देने म सक्षम समझता था। साथ ही, मैंने यह भी कहा था कि यह कहना गलत होगा कि मैं दूनी चेष्टा करूगा। इस पर यह सुझाव दिया गया कि मेरे दिमाग म बिलवाली बात न कितनी गहरी जगह बना ली है इसका कुछ आभास जन साधारण को भी मिलना चाहिए। बस उपवासवाला अश इसी सुझाव की उपज था पर मैं आपकी बात को समझ रहा हू और देखता हू कि हम उसकी चर्चा नही करनी चाहिए थी।

आशा है आप बिलकुल स्वस्थ होगे।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

२८

२३ फरवरी १९३३

पूज्य बापू

कल हमने यहा वेस्टन हास्टल म एक चाय पार्टी की। जिसम व्यवस्थापिका सभा के लगभग ३५ सदस्या न भाग लिया। उनकी प्रतिक्रिया हमारी आशा से भी अधिक सतोषजनक रही। उनमे कुछ सदस्य बिल के विरोधी होने के बावजूद इस बात के पक्ष म थ कि उसे पेश किया जाए और जनमत निर्धारण के लिए उसका वितरण किया जाए। हमारी माग तो साधारण सी ही थी इसलिए हम पहल स भी अधिक समथन मिल रहा है। अब ऐसा लगता है कि श्री रगा अय्यर का पहला बिल २७ फरवरी को पश हो जायेगा और २४ माच को उसका वितरण हो जायेगा। कई सदस्या ने वचन दिया कि अस्पृश्यता निवारक बिल के पेश किये जाने के माग म अय बिल अधिक समय लेकर बाधक न बन पायें इसका ध

ध्यान रखेंगे। रही दूसरे बिल—अर्थात मन्दिर प्रवेशवाले बिल—की बात, सो वह २७ फरवरी को सदन के सम्मुख आनेवाली सामग्री मे सम्मिलित नही है इसलिए वह शायद उस दिन पेश नही होगा। कल मैंने इस बारे मे सर ब्रजेन्द्रमित्र से देर तक बात की। मैंने उन्हे याद दिलाया कि शारदा बिल पेश किये जाने के अवसर पर भी विशेष सुविधाए दी गई थी। पर उन्होने कहा कि जब तक सरकार को यह विश्वास न हो जाय कि विशेष सुविधाए दिये बगर बिल सदन के सम्मुख नही आ पायेगा, तब तक वह वैसा करने की बात सोच तक नही सकती।

सरकारी क्षेत्र मे यह भ्रान्त धारणा फैली हुई है कि यह अस्पृश्यता सबधी झमेला एक राजनतिक पतरा मात्र है। यह बडे परिताप का विषय है पर मुझे आशका है कि सच्ची बात पर विश्वास करने म अभी समय लगगा। मालवीयजी के रवये से एक बात तो स्पष्ट हो गई है और वह यह कि अस्पृश्यता निवारण काय को हाथ मे लेकर आप अपने कई गहरे राजनतिक मित्रो की मित्रता से वचित हो गये हैं।

कल राजाजी द्वारा चाय पार्टी के अवसर पर दी गई स्पीच बडी ही प्रभावोत्पादक रही अनेक सदस्यो को तो डाह हुई। इतने दिनो बाद पुराने मित्रो मे मिलने का अवसर मिला, इससे मन बडा प्रसन्न हुआ। इस प्रकार पार्टी बहुत ही सफल रही।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधी
यरवडा केन्द्रीय कारागार,
पूना।

२६

बिडला हाउस,
अल्बूकर्क रोड नई दिल्ली
२५ फरवरी, १९३३

प्रिय श्री मेहता

आपके पत्र के लिए धन्यवाद। आप कलकत्ता नही आ रहे हैं इससे मुझे निराशा ही हुई। पर शायद श्रीमती मेहता का ऑपरेशन श्रीनगर म कराने म अधिक सुविधा होगी। आशा है, चिन्ता का कोई कारण उपस्थित नही होगा।

मन्दिर प्रवेश बिल के बारे मे आपने जो लिखा है उसमे मेरी बहुत दिलचस्पी है। मैं आपसे इस बात पर बिलकुल सहमत हू कि मालवीयजी इस मामले म गलती पर हैं। वर्तमान परिस्थितियो म हरिजनो का मन्दिर प्रवेश कानून की अवहेलना किये बगैर सम्भव नही है और इसीलिए यह नया कानून बनाने की आवश्यकता हुई, जिससे पुराना कानून व्यर्थ हो जाय।

आपके पत्र का निम्नलिखित अश बडा रोचक है। क्या इसे 'हरिजन' म दिया जा सकता है? आपका नाम नही दिया जायगा। मैं इस अश को कुछ इस रूप मे देना चाहता हू

एक प्रमुख आई० सी० एस० मित्र जिनका शासन-न्याय म दीर्घकालीन अनुभव है लिखते हैं मुझे पूरी आशा है कि मन्दिर प्रवेश-सम्बन्धी बिल सफल सिद्ध होगा। एक मजिस्ट्रेट की हैसियत स मैं गाधीजी को इस विषय म ठीक और मालवीयजी को गलत मार्ग का अनुसरण करते हुए पाता हू। फर्ज कीजिए बनारस के एक मन्दिर का पुजारी यह अर्जी देता है कि परिपाटी के अनुसार अत्यजो को मन्दिर के एक विशिष्ट भाग म प्रवेश करने का अधिकार नही है। अब यदि अत्यज लोग अपने अधिकार का दावा करते हैं तो शाति भग होने की सम्भावना है। तब मैं एक मजिस्ट्रेट की हैसियत स दण्ड विधान की १४५ १४७ धाराओ के अतर्गत अत्यजो को मन्दिर प्रवेश के उनके तथाकथित अधिकार का दावा करने स रोकता हू। कानून के द्वारा सरक्षण मिल रहा है। अत बिल का उद्देश्य वास्तव म ऐसे ही अन्यायपूर्ण कानूनी सरक्षण का अत करना है। जो लोग मन्दिर म जाने को लालायित है पर जिन्हे मन्दिर के गर्भगृह म प्रवेश करने का अधिकार नही है और वे हिन्दू भी है तो उन्हे हम उनके अधिकार स कैसे वचित कर सकते है?

यह अश इतना सुन्दर है कि मैं इसे 'हरिजन' म उद्धृत करने का लोभ सवरण नही कर पा रहा हू। पर म ऐसा तभी कर सकता हू जब आपकी अनुमति मिले। इसके नीचे मैं आपका नाम नही देना चाहता।

भवदीय,
घनश्यामदास बिडला

श्री विनायक एन० महता आई० सी० एस०
श्रीनगर (कश्मीर)

यदि आप उपर्युक्त अश को 'हरिजन' म दिये जाने के लिए तैयार न हो तो कृपया तार द्वारा सूचित कर दीजिएगा।

घनश्यामदास बिडला

३०

यरवडा केन्द्रीय कारागार
२ मार्च १९३३

प्रिय घनश्यामदास,

श्री एम०आई० डेविड ने २,५००) रु०भेजे हैं। जहां तक मैं जानता हूं उनकी योजना के आधार पर जो अपील निकाली गई थी उसका यह पहला उत्तर है। श्री डेविड अपना नाम नहीं देना चाहते। मैं यह रुपया तुम्हारे पास रजिस्ट्री बीमे से भेज रहा हूं। फिलहाल तुम इस रकम का डेविड योजना के खाते में जमा कर रखना। यदि इस पर ब्याज अभी से लगना शुरू हो जाय तो अच्छा होगा। हम इस सारी रकम को एक बार में ही खर्च करने की जरूरत नहीं है। मैं उनके पत्र की बाट जोह रहा हूं। उन्होंने पत्र भेजने का वचन दिया है।

मेरे विचार में हमें कुछ छात्र वृत्तियों की घोषणा करनी चाहिए। इस योजना को तुमने सराहा, बम्बई के बोर्ड ने सराहा, तिस पर भी एकमात्र यही रकम आई है और सो भी योजना के जन्मदाता के पास से। कितने खेद की बात है! लाला श्रीराम तथा अन्य लोगों को थोड़ी बहुत रकम देने को राजी करो जिससे मैं उनके नामों की घोषणा कर सकूं।

मैं हिन्दी 'हरिजन' के बारे में क्या कुछ चाहता हूं सो तुम्हें वियोगी हरि और अमृतलाल ठक्कर ने बताया ही होगा। उसमें अभी बहुत-कुछ सुधार की आवश्यकता है। तुम इस ओर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देनेवाले थे।

आशा है तुम्हारी तबीयत ठीक चल रही होगी। क्या नाक तकलीफ दे रही है? तकलीफ दे रही हो या न दे रही हो, उसका तुरंत इलाज होना चाहिए।

तुम्हारा,
बापू

पुनश्च

मैंने जिस सलेक्शन बोर्ड या समिति का सुझाव दिया था उसका गठन जितनी जल्दी हो सके, उतना ही अच्छा होगा।

३१

बनारस
५ माच १६३३

पूज्य बापू

मैं दिल्ली से यहा आ गया हू। कोई ५ ६ दिन ठहरन का विचार है। उसके वाद कलक्त्ते जाऊगा। पहले मरा विचार था कि इस बार कलक्त्ते म ही आपरेशन करा लू पर अब देखता हू कि मुझे २० तारीख तक दिल्ली वापस लौटना है। बिल २४ तारीख को आ रहा है और मुझे लगा कि यद्यपि अब विशेष कुछ नही करना है तथापि मेरा वहा मौजूद रहना ठीक होगा। मैं कलक्त्ते म एक सप्ताह स भी कम रह पाऊगा इस प्रकार आपरेशन इस बार फिर स्थगित हो जायेगा।

पडित (मालवीय) जी के साथ विस्तारपूवक बातचीत हुई। मुझे पता चला कि मथुरादास उनस पहले ही मिल चुके हैं। वसे अतिम लक्ष्य के बारे म आप दोना म कोई मतभेद न हो पर व्यवहार मे आप दोना म पूव पश्चिम का अन्तर है। पडितजी का दष्टिकाण बिलकुल भिन है। वह धीरे धीरे आग बढ़ना चाहत हैं साथ ही वह किसी को नाराज भी नही करना चाहते। वह ऐसी काय प्रणाली अपनाते है जो आपको रुचिकर नही है।

बातचीत के दौरान पडितजी ने स्वीकार किया कि कानूनी बाधाए है पर वह यह मानने का तयार नही थे कि इन बाधाओ पर नये कानून के द्वारा ही काबू पाया जा सकता है। उन्होने तो यहा तक कहा कि यदि उ ह लगा कि सचमुच कानूनी बाधाए है तो वह उ ह दूर करन के लिए या तो व्यवस्थापिका सभा का उपयोग करेंगे या अदालत म जाकर परीक्षा के तौर पर मामला लडेंगे। जब मने सुझाया कि वसा मामला काशी विश्वनाथ के मदिर का लकर लडा जा सकता है, तो उन्होन कहा कि एसा करना दूरदर्शितापूण नही होगा। पडितजी की धारणा है कि आपने जो प्रणाली अपनायी है उससे तो अस्पश्यो के मन्दिर प्रवेश म उलटे और दर लगगी। वस्तुस्थिति यह है कि वह पुराणपथियो स लडाई मोल लेना नही चाहते।

इलाहाबादवाले प्रस्ताव का मैंने जो अथ लगाया था अन्त म उसकी पुष्टि उनके कथन से ही हो गई। उस प्रस्ताव के अनुसार अस्पश्य विश्वनाथ मदिर म प्रवेश नही कर सकते।

दिल्ली स रवाना होने से पहल मैंने सरकारी हल्का मे यह जानकारी हासिल करने की चेष्टा की कि २४ तारीख को बिल पश होने की कितनी सम्भावना है। मुझे आश्वासन दिया गया कि उन्हें किसी अडचन की आशका नही है। इस प्रकार हम २४ माच का पहला मोर्चा जीत लेंगे। पर उसके बाद की प्रगति के बारे म मैं विशेष आशान्वित नही हू। मैं यह मानने को तैयार नही हू कि बिल के वितरण से समय विशेष रूप से नष्ट होगा, पर और भी अनेक कठिनाइया हैं, जिनसे आप स्वय भली भाति अवगत हैं।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

३२

बिडला हाउस
बनारस
८ माच १९३३

पूज्य बापू,

आपका २ माच का पत्र देखा। श्री डेविड की योजना के सम्बन्ध मे बात यह है कि अभी तक हमे रघुमल चरिटी ट्रस्ट से सिफ छात्रवत्तिया के लिए १०००) रुपये मासिक का वचन मिला है। यह रकम केवल बारह महीने तक मिलेगी, पर मुझे आशा है कि साल भर के बाद इसे फिर जारी करा लिया जायगा। यह रकम श्री डेविड की योजनावाले काम मे आसानी से लाई जा सकती है।

इस काय के लिए अधिक रुपया सग्रह करन के बार मे मेरी राय यह है कि अब और अधिक वचन मिलना तो कठिन-सा हो रहा है क्योकि जिन्हे दना था वे हमार सघ के विभिन्न बोर्डों म से एक न एक बोड को पहले ही दे चुके है। अभी हमने अधिक रुपया खच नही किया है, और यदि आप सहमत हो तो मेरा सुझाव तो यह है कि फिलहाल केन्द्रीय बोड इस निमित्त कुछ रुपया निकाल दे। वास्तव म हम शिक्षण-काय म कुछ रुपया खच करने की बात पहले स ही सोच रहे है और हमने प्रान्तीय बोर्डों स भी कह दिया है कि वे अपने हिस्से का भार वहन करने को तयार

हागे तो केन्द्रीय बोड भी अपने हिस्से का भार वहन करगा। परन्तु मुझे प्रान्तीय वार्डों से कोई सतोषजनक उत्तर मिलने की आशा नही है इसलिए फिलहाल केन्द्रीय बोड से ही खच करना सबसे अच्छा रहेगा। फज कीजिए, हम केन्द्रीय बोड स २००००) रुपय खच करें और १९३३ के लिए १२०००)रुपये का वचन रघुमल चरिटी ट्रस्ट स मिल ही गया है तो कुल मिलाकर ३२०००)रुपये हुए। आप यदि कुछ निजी पत्र अम्बालाल-जसे मित्रा और कुछ अन्य मित्रा का २५००) रुपया प्रत्यक्ष को देने को लिखें तो वे अवश्य देंगे। मैं भी इतनी ही रकम दे दूगा। इस प्रकार अच्छा-खासा श्रीगणेश हो जायेगा। कृपया मुझे कलकत्ते के पते पर लिखिए कि मेरे प्रस्ताव के सम्बन्ध म आपकी क्या राय है।

हमने हरिजन काय के लिए अब तक प्रान्तो द्वारा सग्रह किय गए रुपय को मिलाकर दो लाख से कुछ ऊपर इकट्ठा कर लिया है। दाताओ को इससे सरोकार नही है कि हम उनके पास श्री डेविड की योजना के सिलसिले म जाते हैं या केन्द्रीय या प्रान्तीय वार्डों के लिए सग्रह के सिलसिले म। उनसे रुपया हरिजन काय के लिए मागा गया था और उन्होंने दे दिया। इसलिए मैं तो यह उचित नही समझता कि उनके पास श्री डेविड की योजना के सिलसिले म खासतौर म पहुचा जाय। हा, यदि आप चाहेंगे तो मैं दिल्ली पहुचने पर लाला श्रीराम से जरूर मिलूगा। आप भी उन्हें अपनी ओर स लिख दीजिए।

हिन्दी 'हरिजन' के मामले म मैं स्वय दिलचस्पी ले रहा हू। आपने देखा होगा कि मैं उसम अपने लेख दे रहा हू। आपने जिन दोषा की ओर इगित किया है उनकी ओर मैंने हरिजी का ध्यान पहले से ही दिला दिया है। आपकी आलोचना सम्भवत पत्र के कवल प्रथम अक के सम्बन्ध महै। मरी राय म दूसरा अक पहले की अपेक्षा निश्चय ही अच्छा है। पर इसम सन्देह नही कि पत्र को अभी और भी आकषक बनाना है। हम आशा है कि हम भविष्य म आपको अधिक सतुष्ट कर सकेंगे। परन्तु यदि कोई आलोचना योग्य बात दिखाई पडे तो कृपया मुझे लिखते रहिएगा।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा ही चल रहा है और नाक भी कोई विशेष कष्ट नही दे रही है। फिर भी उसकी ओर ध्यान तो देना ही है। अभी इसम देर लगेगी क्योंकि उसके लिए एक पखवाडे के विश्राम की जरूरत पडेगी और यह माच २४ से पहले सम्भव नही है।

अपने पत्र के अन्त म आपने पुनश्च के रूप म जो नोट दिया है उसम निर्वाचक बोड की चर्चा है। सम्भवत उसका तात्पय श्री डेविड की योजना से है, पर मुझे आपका सुझाव ठीक-ठीक याद नहीं है। कम-स-कम दिल्ली पहुचने से पहले

मैं इस मामले को उठाने म असमथ रहूगा। मैं १६ की सुबह दिल्ली पहुचूगा और ठक्करजी से पुन बात करूगा। इस बीच आपके उत्तर की प्रतीक्षा कलकत्ते म करूगा।

विनीत
घनश्यामदास

३३

यरवडा केन्द्रीय कारागार
६ माच, १६३३

प्रिय मित्रगण,

आपके गत मास की २३ तारीख के पत्र के लिए तथा उसके साथ भेजी पूना पक्ट-सम्बन्धी ब्रिटिश इडिया एसोसिएशन के स्मरण पत्र के लिए धन्यवाद। मैं बगाल का लोकमत जानने के हेतु इस मामले म मित्रा म निजी पत्र-व्यवहार करता रहा हू। मेरी अपनी स्थिति बिलकुल स्पष्ट है। अस्पश्यो अथवा दलित-वग के लिए कितनी सीटें सुरक्षित रखी जाए इस प्रश्न की ओर से मैं बिलकुल उदासीन रहा हू। एक बार सीटें सुरक्षित रखने की बात सिद्धात के रूप म स्वीकार करने के बाद मेरी स्थिति यहा रही है कि वे जितनी अधिक सुरक्षित सीटें पाए उतना ही उनके, तथा हिन्दू धम के और इस प्रकार समूचे भारत के लिए सभी प्रकार स अच्छा रहेगा। यदि अस्पश्य हमार अग है तो इससे अधिक अच्छी बात और क्या होगी कि हम उनके लिए सीटें नि सकोच भाव स सुरक्षित रखें। मरे मन को भेद भावना का अन्त करने का यही सबसे अच्छा उपाय जचा। मैं इस विचार से रच मात्र भी सहमत नहा हू कि यरवडा पक्ट म पथक्ता के सिद्धान्त को अक्षुण्ण रखा गया है। इसके विपरीत जहा तक उसक राजनातिक पहलू का सम्बन्ध है, यरवडा पक्ट की मुख्य विशेपता सयुक्त निर्वाचन के सिद्धान्त का प्रतिपादन है। सयुक्त निर्वाचना के लिए उम्मीन्वार आरम्भ म हरिजन निवाचक छाटे इसम क्या दोष है बशर्ते कि हम अपन म विश्वास हा और उनके प्रति हमार अदर आदर या भाव हा ? और यदि इस प्रकार चुने जानेवाने चारो उम्मीदवार हिन्दू विरोधी प्रतिक्रियावादी निक्ल, ता मैं ता इस इस बात का प्रमाण मानूगा कि हम समय रहत उनके स्नेह भाजन सिद्ध होने मे असफल रहे थे और यदि हम

प्रतिक्रियावादी उम्मीदवारो मे से चुनाव करेंगे तो यह हमारे लिए बडाई की बात होगी। मैं आपकी इस आशका को मान लेने को तैयार नही हू कि दलित वर्ग के सदस्य हिन्दुओ के अथवा राष्ट्रीयता के खिलाफ जायेंगे। न मुझे इस बात की ही आशका है कि वे जनता के प्रतिनिधि की हैसियत से अपने कर्त्तव्य का ठीक ठीक पालन करने मे असमर्थ सिद्ध होगे। यदि इससे अन्यथा सिद्ध हुआ तो इसका अर्थ यही होगा कि हम स्वराज्य के योग्य नही हैं।

अतएव सारी बातो पर विचार करने के बाद मैं यह कहने को बाध्य हू कि मैं पूना पक्ट के सशोधन मे भाग नही लूगा। इसके अलावा अन्य पार्टियो की भाति मैं भी एक पार्टी मात्र हू और यदि ब्रिटिश इडिया एसोसिएशन द्वारा इगित दिशा मे अन्य पार्टियो ने पक्ट मे सशोधन की माग की तो मेरे अकेले की राय की कोई कीमत नही होगी।

मैं आपकी पोजीशन को किसी प्रकार जोखिम मे नही डालना चाहता इसलिए मैंने आपकी पोजीशन की सार्वजनिक चर्चा से अपने आपको अलग रखा है और जब तक आप नही कहेंगे मैं ऐसी चर्चा से अलग ही रहूगा। मैं समझता हू डा० विधान राय ही पहले व्यक्ति थे जिन्हें मैंने लिखा और उन्होने कहा कि वह उन सारी पार्टियो से मिलेंगे और इस मामले मे मुझे लिखेंगे। अब मैं आपके ही हाथो मे हू।

भवदीय
मो० क० गाधी

सयुक्त अवैतनिक मन्त्रिगण
ब्रिटिश इडिया एसोसिएशन
१८, ब्रिटिश इडियन स्ट्रीट
कलकत्ता।

३४

यरवडा केन्द्रीय कारागार
६ मार्च, १६३३

प्रिय घनश्यामदास

हरिजन का अग्रेजी सस्करण तो स्वावलम्बी हो ही चुका है। केन्द्रीय बोर्ड द्वारा जो १०८४) रुपये की मदद दी गई थी उसका उपयोग किये बिना ही

बाजार म फुटकर बेचनेवाला तथा वार्षिक ग्राहका से जा शुल्क अब तक मिला है उसम स सारा खच निकालकर कुछ बच ही रहा है। इसलिए अब हम उक्त रकम वापस कर देनी चाहिए। अब तुम मुझे यह बताओ कि उक्त रकम तुम्ह किस तरह भेजी जाये ? मैं समझता हू कि तुम्ह महाराष्ट्र बाड को भी कुछ देना है। मैं यह सिफ इसलिए पूछ रहा हू कि मनीआडर, ड्राफ्ट या चेक से रुपया लौटान म जा कमीशन देना पडता है, मैं उसे बचाना चाहता हू।

गुजराती 'हरिजन' निकालने का बन्दोबस्त भी हो गया है। यह पूना से निकलेगा। यदि घाटा हुआ तो बम्बई बोड ने तीन महीन तक व्यय भार उठाने का जिम्मा लिया है, पर मुझे घाटे की काई आशका नही है।

तुम्हारा
बापू

पुनश्च

तुम्हारा बम्बई से लिखा पत्र मिल गया। आपरेशन बार बार मुल्तवी हा जाता है, यह मुझे अच्छा नही लगता।

३५

कलकत्ता
१६ माच, १६३३

पूज्य बापू,

मैं कल यहा म दिल्ली जा रहा हू। देखता हू कि नाक का आपरेशन स्थगित करने स आप मुझ पर नाराज हो गए हैं। पर क्या करू, लाचार हू। दिल्ली म कोई अच्छा डाक्टर नही है और मैं कलकत्ता मे रुक नही सकता। परन्तु मैंन डाक्टर राय और एक नाक विशेषज्ञ से अपनी परीक्षा करा ली है। नाक विशेषज्ञ ने आपरेशन कराने की सलाह दी है। उनकी राय है कि नाक की भीतरी नली की दिशा फेरने के बजाय नली को स्थायी रूप से एसा बनाना होगा कि फिर बहाव म कोई बाधा उत्पन्न न हो। वास्तव म कई विशेषज्ञा न मुझे इन दोना प्रकार के आपरेशना की सलाह दी है। डा० राय एक-आध महीने बाह्य उपचार कराने की सलाह देते हैं। हर हालत मे ऑपरेशन दिल्ली से वापसी के बाद ही होगा।

जहा तक रचनात्मक कायक्रम का सम्बन्ध है, खास कलकत्ता नगर म काम सतोपजनक ढग से हो रहा है। प्राय बीस पाठशालाए चल रही हैं, हा, सबका सचालन कुछ मारवाडी कार्यकर्त्ता ही कर रह हैं। पर सतीशबाबू बडा परिश्रम कर रहे हैं। मुझे कहना पडता है कि प्रान्तीय बोड का काम प्राय नहा के बराबर है। रुपया इकट्ठा किया जा रहा ह पर मो भी खेतान औरअन्य कई मित्रो के द्वारा ही। मैंने डा० राय स कलकत्त की बस्तिया की बाबत बात की थी। आज तीसरे पहर मैं उन्ह कुछ एक स्थान दिखाने ले जा रहा हू। आशा ह भविष्य म व अधिक हाथ बटायेंग। यह सुझाय जाने पर कि सतीशबाबू को प्रातीय बोड म ले लिया जाएगा तो काय अधिक सफलतापूवक हो सकेगा मैंने डा० राय को इशारा किया और अब सारा मामला उन्ही पर छोड दिया है।

मैंने कुछ मित्रा स श्री डेविड की योजना के लिए ६००) रुपय वार्षिक देने को कहा है। बाजार की हालत इतनी खराब है कि रुपया मागने म सकोच हाता है। पर आशा है कि कुछ लोग दगे। हर हालत म जसा कि मैं कह चुका हू जो रुपया हमारे पास मौजूद है उससे काम मजे म शुरू किया जा सकता है।

यह जानकर प्रस नता हुई कि अग्रेजी 'हरिजन स्वावलवी हो गया है। आप जब तक अग्रेजी 'हरिजन की तरह अपने कुछ लेखो के द्वारा विशेष आशीर्वाद हिन्दी 'हरिजन को नही देंगे तब तक हि दी हरिजन अग्रेजी की बराबरी नही कर सकेगा। पत्र की माग बढ रही है। इस सम्बन्ध म विस्तार स दिल्ली पहुचने पर लिखूगा।

जी हा हम महाराष्ट्र बाड का रुपया देना होगा बशर्ते कि अपने बजट का एक तिहाई वे लोग खुद इकट्ठा करें। सम्भवत वे अभी तक कुछ इकट्ठा नही कर सके हैं। केन्द्रीय बोड को रुपया भेजने का सुगम उपाय यह है कि रुपया बम्बई म मेरी फम को भज दिया जाय। वहा से दिल्ली आ जायगा। इस तरह कमीशन भी बच जायगा।

आपने अखबारो म पढा ही होगा कि बगाल कौन्सिल ने पूना-पक्ट की निन्दा की है। भारी हार नही हुई पर मुझे कौन्सिल का रवया बिलकुल पसन्द नही आया। मने इस मामले के बार मे समाचार पत्रो म प्रकाशनाथ तो कुछ नही कहा जसा कि उचित भी था पर साथ ही मेरा विश्वास है कि पूना पक्ट के विरुद्ध जो प्रचार काय हो रहा है उसका निराकरण करने के लिए कुछ न-कुछ करना आवश्यक है। मैं इस चिट्ठी के साथ 'एडवास और लिबर्टी पत्रो की कटिंग भेजता हू जिनसे आपको सम्पादकीय रवये का अदाज होगा। पर सतीशबाबू का कहना है कि आम जनता पैक्ट के खिलाफ बिलकुल नही है। यह कहना अतिशयोक्तिपूण

नही होगा कि बगाल मे जनमत विभाजित है। स्वय विधानबाबू पैक्ट के पक्ष म नही है इसलिए अब तक एक भी प्रमुख नेता ने पैक्ट के पक्ष मे जवान नही खोली है। आज सुबह मैंने सतीशबाबू स बात की और उन्हे सर पी० सी० राय और डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पास जाने की सलाह दी। यदि वे सहमत हो गये तो प्रस्ताव पास किया जा सकता है। आज तीसरे पहर मैं डा० राय स भी बात करूगा। यह सब सूचनार्थ है।

विनीत
घनश्यामदास

अछूता के हित के लिए हम जो काम कर रहे थे उसके निमित्त चन्दा इकट्ठा करने मे कठिनाई हो रही थी।

३६

अखिल भारतवर्षीय दलितोद्धार सभा,
श्रद्धानन्द बाजार,
दिल्ली १६ ३ १९३३

श्री पूज्य महात्माजी,

सादर नमस्ते।

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ। मैंने श्री अमृतलालजी स बातचीत की है। वह श्री सेठ बिडलाजी के देहली आने पर सब काम का निश्चय करेंगे। मेरा श्रीयुत ठक्करजी के साथ पूर्ण सहयोग रहेगा।

मर चरित्र पर जो कलक की बात आपका विन्ति हुई है उसके सबध म इस समय क्या कह सकता हू ? समय सत्य का आप ही निणय कर देगा, और मैं भी उचित अवसर पर निवेदन कर दूगा।

आपका कृपाभिलाषी,
रामानन्द सन्यासी

३७

यरवडा केन्द्रीय कारागार
१६ मार्च, १६३३

प्रिय घनश्यामदास

तुम्हारा ८ माच का पत्र मैं आज ही देख पाया हू।

सलक्शन बोड की बाबत मेरा अभिप्राय यह था कि तुम एक छोटी-सी और कायदल समिति बनाओ जिसम थडानी जैसा आदमी तथा सेंट स्टीफेन कालेज का एक व्यक्ति, और सेक्रेटरी का काम करने के लिए एक अन्य व्यक्ति रहे। उनम तुम और ठक्कर बापा भी पदाधिकारियो की हैसियत से रहो। यह समिति डेविड योजना के अन्तगत छात्र वत्तिया के लिए आवेदन पत्र मागे। उन आवेदन पत्रो की जाच पडताल करके वह बोड स उनकी सिफारिश करे। यदि बोड इन सिफारिशो को अगीकार करे तो छात्र वत्तियो की इस समिति के जिम्म एक ऐसी योजना तयार करने का काम भी होगा जिसके अतगत प्राथियो की अपेक्षित योग्यता का विवरण रहेगा। प्राथना पत्र इन्ही शर्तों को सम्मुख रखकर मागे जायेंगे। मेरा सुझाव यह भी है कि यह समिति श्री डविड के साथ सम्पक बनाये रखेगी और जहा तक उनक लिए पथ प्रदशन और सलाह-मशवरा देना सम्भव होगा वह देंगे। बस सलक्शन कमटी से मेरा यही अभिप्राय था।

दान के सम्बन्ध मे तुमने जो कुछ कहा है उसस मुझे सतोष नही हुआ। मुझे आशका थी कि ऐसे दान के लिए की गई अपील का यथोचित उत्तर शायद न मिले। मैंने श्री डेविड स भी यही कहा था और उन्ह बताया था कि मैं उनकी

योजना को प्रकाश्य रूप मे समथन देने म क्या हिचकिचाता हू, यद्यपि उनकी योजना मुझे अच्छी लगी थी। मैंने इसीलिए उन्ह तुमस तथा बम्बई के बोड से मशवरा करने की सलाह दी। तुम दानो ने ही उनकी योजना का हार्दिक स्वागत किया। तुमने ता उसका सविधान के मसौदे तक म जिक्र किया। काफी प्रतीक्षा के बाद मैंने 'हरिजन म उस योजना को सराहा। मेरी धारणा यह है कि साधारण धन सग्रह के अलावा निर्दिष्ट दान की व्यवस्था करना भी ठीक रहेगा। मुझे सामान्य सग्रह मे से रकम निकालकर उसका इस मद म उपयाग करना ठीक नही जचता। यदि हो सके तो हमे दाताओ म से कुछ सनातन धर्मावलम्बियो को छाटना चाहिए। कम से-कम मेरा, जमनालालजी का, सरदार वल्लभभाई का तथा हम सभी का यही विचार है। मैंने जानकीदेवी से योजना के निमित्त २५००) देने को कहा ही है औरो को भी लिखूगा। दाताओ मे आपका भी नाम देकर सूची को प्रकाशित करने का विचार कर रहा हू।

'हरिजन' मे कुछ लिखने से पहले तुम्हारे सोच विचारकर दिय गये उत्तर की प्रतीक्षा करुगा।

तुम्हारा,
बापू

३८

नई दिल्ली
२१ माच, १९३३

पूज्य बापू

मैं यहा परसा पहुच गया था। यहा कुछ दिन ठहरूगा। फेडरेशन की वार्षिक बठक अप्रल के मध्य म होगी तब तक यही ठहरने का विचार है।

मैं जब कलकत्ते म था, तो डा० विधान को अस्पश्यो की कई बस्तिया दिखाने ले गया था। कुल मिलाकर ६०० बस्तिया है उनम से कोई २०० का पिछले कुछ वर्षों मे सुधार हुआ है। ये सुधरी हुई बस्तिया कहलाती हैं। इनम बिजली पानी और नालियो की व्यवस्था है इसलिए इनम स कुछ म शौचालय बनाना सम्भव है। पर कोई ४०० एसी बस्तिया हैं, जिनकी दशा भयावह है। इनमे से कुछ बस्तिया ता नहर के उस पार हैं, और इनमे नाली आदि की कोई व्यवस्था नही

है। ये बस्तियां सडक की सतह से नीची हैं, इसलिए जो जल व्यवहार में आता है, उसकी एक एक बूंद इनमें इकट्ठी हो जाती है। जल इकट्ठा न हो इसलिए नल नहीं बढाये जाते है। टट्टियों की दशा भयंकर है क्योंकि नालियों का अभाव है। लोग-बाग गलियों में टट्टी-पेशाब करते है। झोंपडियों तक पहुंचने के लिए इन्हीं गलियों से गुजरना पडता है। गर्मियों में दुर्गन्ध असहनीय हो जाती है। बरसात मे पानी घुटनों तक आ जाता है क्योंकि उसके निकास का कोई मार्ग नहीं है। अब इन बस्तियों की समस्या हल करने के दो ही रास्ते है—या तो उन्हें तोड दिया जाए या इनमें नालियां बढाई जाए। मुझे बताया गया कि सारे इलाके में नालियां बनाने में कोई ८० लाख रुपया लगेगा जो कि सम्भव नहीं है। एक उपाय यह भी है कि कुछ स्थलों पर पम्प लगा दिये जाए जो इकट्ठे हुए पानी को बाहर फेंकते रहें। इस दुरवस्था का हल आसान नहीं है पर कुछ न कुछ तो करना ही है। डा० राय ने बताया कि वह अपनी ही नौकरशाही के तथा पार्षदों के हाथों में असहाय बनकर रह गये हैं। अधिकांश पार्षदों का इन बस्तियों मे अपना निहित हित है। पर जब इनके सुधार का प्रश्न उठता है तो वे विरोध में उठ खडे होते हैं। मैंने डा० राय में कुछ न कुछ करने की हार्दिक अभिलाषा देखी है। वास्तव में जिन बस्तियों मे सुधार की गुंजाइश थी उनमें सुधार किया जा चुका है। उन्होंने अन्य बस्तियों के सुधार कार्य को भी हाथ में लेने का वचन दिया है। यह सब आपकी सूचनार्थ है।

पाखाना ढोने की प्रणाली में सुधार करने के संबंध में 'हरिजन' में आपका लेख आज देखा। वास्तव में मैं इस प्रश्न पर डा० राय से कलकत्ते मे ही विचार विमर्श कर चुका था। उन्होंने मुझे बताया कि जब मैंने इस प्रणाली में सुधार करने की बात उठाई तो मेहतरों ने डटकर विरोध किया। इसका कारण यह था कि यदि पाखाना गाडियों में ढोया जाने लगेगा तो उतने भंगियों की जरूरत नहीं रहेगी। इसीलिए जब उन्होंने ऐसे सुधार की बात सुनी तो वे विरोध में उठ खडे हुए। कुछ पार्षद अपने आपको मेहतरों का नेता कहते है। उन्होंने भी मेहतरों को उकसाया। आप कहेंगे कि मेहतरों की संख्या में कमी किये बिना भी पाखाना गाडियों में ढोया जा सकता है पर आपको यह तो मानना ही होगा कि आवश्यकता न रहने पर भी नौकरियों को बरकरार रखना नगरनिगम के साथ अन्याय करना होगा।

हिंदी 'हरिजन' की बाबत मैं दो एक दिन बाद आपको और अधिक लिखूंगा। मैं उसमें पूरी दिलचस्पी ले रहा हूं। मैंने तो उसमें अपने लेख भी दिये पर अब लिखना बन्द कर दिया है क्योंकि मुझे पता नहीं कि आपको वे अच्छे लगे या

नही। कलकत्ते मे था, तो मुझे बताया गया कि मेरे लेखो को मारवाडियो ने बडे ध्यान स पढा। हिन्दी के पत्रो न उन सबको उद्धत किया। आपके लेखो के अनुवाद मुझे बिलकुल अच्छे नही लगे। रामदास का अनुवाद तो बहुत ही भद्दा रहा। इसलिए आप अपन लेख सीधे उनके पास मत भेजिए, हा यदि अनुवाद आपको पसन्द का हो तो बात दूसरी है। मैं पत्र के बारे म आपसे और अधिक आलोचना चाहता हू।

मुझे यह जानकर खेद हुआ कि श्री डेविड की योजना को कार्यान्वित करन की दिशा म अब तक जो कुछ हो सका है उससे आप सतुष्ट नही हैं। मैं जानता हू कि मैंन योजना का हार्दिक स्वागत किया था पर मुझे स्वीकार करना पडता है कि धन सग्रह के मामल म जितन की आशा मैं करता था उतना नही हुआ जिससे मुझे बडा निराशा हुई है। मैंन समझ रखा था कि लाग कम स कम वे लोग जिनके पास पसा है खुशी खुशी देंग। पर कलकत्ते म सतत प्रयत्नो के बावजूद सिफ ५०,०००) एकत्र हो पाये। दिल्ली म तो म डयोढी डयोढी फिरा पर केवल १५००) इकट्ठे कर पाया। इसम काफी चेष्टा के बाद श्रीरामजी से प्राप्त १०००) भी शामिल हैं। एक बडा ठेकदार, जो बडा भारी सुधारक बनता है और अपने आपको काग्रेसी कहता है, दने का वचन देने के बाद मुकर गया। मैं अपन कानपुर के कुछ मित्रो से सम्पक बनाये हुए हू। वे बडे सुन्दर पत्र लिखते हैं पर देते दिलाते कुछ नही। अहमदाबाद स भी निराशा ही परल बधी। बम्बई की चार मारवाडी फर्मों न दने का वचन दिया था पर अभी तक उनके पास स कुछ भी नही आया है। लोगो को यह काम अच्छा न लगता हो एसी बात नही है पर सब पसा देने से जहा तक हो सके बचना चाहते हैं। यदि आपकी यह धारणा बन गइ कि पहले तो मैंन इस काम को सरगर्मी स हाथ म ले लिया पर मैं बाद म पैसा इकट्ठा नही कर सका तो मुझे हद दर्जे का दुख होगा। मुझसे तो आप जितना देने को कहेंगे, मैं दे सकता हू, पर मैं दूसरो से लेन म असमथ हू। आपको लिखन के बाद मैंन तीन स्थानो से २५००) इकट्ठे किय। इसका आप श्री डेविड की योजना म उपयोग कर सकत है। मैंने कलकत्ते म कुछ मित्रो को सुझाया है कि वे चाह तो किस्तो मे दे सकत हैं पर कोई आशाजनक उत्तर नही मिला। उस ताजा धन-सग्रह के मामले म यही स्थिति है। पर मैं आपस इस बात मे सहमत नही हू कि केन्द्रीय कोष स रुपया न लिया जाए। जब रुपया मौजूद है तो उसका उपयोग क्या न किया जाए? यदि वह काम मे नही लाया जायेगा, तो धीर धीर सबका सब प्रान्तीय बोर्डों मे तथा वैसी ही अन्य अनावश्यक मदो मे खच हो जायगा। कई प्रान्तीय बोड किसी रचनात्मक काय म एक पैसा तक खच नही कर

सके हैं। मैंने तथा ठक्कर बापा ने दिल्ली के बोर्ड को आड़े हाथों लिया, और मैंने सारे प्रांतीय बोर्डों से कैफियत तलब की है कि उन्होंने दफ्तर पर कितना खर्च किया और रचनात्मक काम में कितना। इसलिए मैं तो फिर भी यही कहूंगा कि आप श्री डेविड की योजना को मूर्त रूप देने में केन्द्रीय कोष के २०,०००) का तथा ६,०००) रघुमल चैरिटी ट्रस्ट का उपयोग करें। रघुमल चैरिटी ट्रस्ट ने १२,०००) का वचन अवश्य दिया है पर उसका आधा बंगाल में ही छात्र वृत्तियों के रूप में काम आयेगा। डा० राय छोटी छोटी छात्र वृत्तियों के पक्ष में हैं, इसलिए बंगालवाले रुपये का उपयोग श्री डेविड की योजना में नहीं हो सकता। इस प्रकार आपके उपयोग के लिए २०,०००) केन्द्रीय कोष के ६,०००) रघुमल ट्रस्ट के २५००) मेरे २५००) जानकीदेवी के तथा २५००) हाल में एकत्र किये—कुल मिलाकर ३३,५००) हैं। हम लोग कुछ और अधिक पैसा एकत्र कर सकेंगे। पर यदि हम ४०,०००) से काम आरम्भ करें तो यह रकम अच्छी खासी है। आपके निर्णय के बाद मैं सलेक्शन बोर्ड की बाबत श्री ठक्कर से बात करूंगा। मेरे सुझाव पर अच्छी तरह विचार करने के बाद अपना अभिप्राय लिखने की कृपा कीजियेगा।

आपकी चिट्ठी मिलने के बाद मैं लाला श्रीराम से फिर मिला, पर उन्होंने और कुछ देने से इन्कार कर दिया। हां पूरे शिष्टता सौजन्य के साथ। मैं कलकत्ते में कुछ सनातन धर्मावलम्बी मित्रों से भी मिला था। उन्होंने चिकनी चुपड़ी बातें तो कीं, पर दिया दिलाया कुछ नहीं।

आशा है, आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। सरदार महादेव भाई तथा जमनालालजी को मेरा नमस्कार।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गांधी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

३६

यरवडा केन्द्रीय कारागार
२३ मार्च १६३३

प्रिय घनश्यामदास,

तुम्हारा पत्र और कटिंग मिले। जब तक तुम आपरेशन के लिए समय नहीं निकालोगे तब तक तुम्हें समय नहीं मिलेगा। काम काजी आदमियों के साथ ऐसा ही होता है। इसलिए स्वास्थ्य को भी काम-काज का एक अंग मानना आवश्यक है। मैं यह कोई दार्शनिक तथ्य की बात नहीं कर रहा हूं, बल्कि ऐसे व्यावहारिक सत्य की बात कह रहा हूं जिसे स्वयं मैंने अपने जीवन में तथा दूसरों के जीवन में लागू किया है। इसलिए मुझे आशा है कि चिकित्सा के निमित्त पूरा एक महीना अलग निकाल लोगे और डाक्टरों से पहले से ही मशवरा करके समय निर्धारित कर लोगे और उसकी पाबन्दी करोगे।

कलकत्ते के कार्य-कलाप के सम्बन्ध में तुमने जो कहा, सो समझ लिया।

श्री डेविड की योजना के बारे में तुमसे और अधिक वृत्त पाने की बाट जोह रहा हूं।

मैं हिन्दी 'हरिजन' के सम्बन्ध में अंग्रेजी संस्करण में अवश्य लिखूंगा, उसकी हिन्दी का स्तर उठने की देर भर है। इस बारे में मैं ठक्कर बापा को विस्तार के साथ लिख चुका हूं वियोगी हरि को भी लिखा है। उन्हें जो कुछ लिखा है उसे दुहराना अनावश्यक समझता हूं। हिन्दी 'हरिजन' के लिए जितना समय दे सको दो और उस निर्देशों और सूचनाओं से इतना भर टालो कि कार्यकर्त्ताओं के लिए उनके बिना काम चलाना असम्भव प्रतीत हो।

तुमने सुझाव दिया है कि केन्द्रीय बोर्ड को दी जानेवाली रकम तुम्हारी बम्बई की फर्म को भेज दूं। ऐसा करने से मैं कमीशन की बचत कैसे कर पाऊंगा? हां, यदि कोई बम्बई जा रहा हो, और मैं नोट उसके हाथ भेज दूं तो बात अलग है। यदि मैं ऐसा करता हूं तो रुपये के खो जाने की जोखिम मोल लेता हूं। मुझमें इतना साहस नहीं है।

रही बंगाल कौंसिल द्वारा यरवडा पैक्ट के धिक्कार जाने की बात, सो मैं इससे कुछ विशेष परेशान नहीं हुआ हूं और न मैं यही आवश्यक समझता हूं कि इस समय बंगाल में प्रचार किया जाए। जब तक पैक्ट में भाग लेनेवाली सारी पार्टियां उसके संशोधन के लिए तैयार न हों तब तक उसमें किसी प्रकार का संशोधन

सकता है। इस प्रकार रिहाई और फिर गिरफ्तारी के यथाकारी अभिनय की आवश्यकता नही रहेगी।

४१

गोपनीय

हेग द्वारा वाइसराय की केबिनेट क सदस्यों को वितरित किये गए प्रथम सरकारी नोट के ढांचे पर

अब हम ऐसी स्टेज पर पहुच गये है जब हम एक ब दी की हैसियत से मिस्टर गाधी की पोजीशन का तथा उनके साथ जो मुलाकातें हो रही है और बाहर के लोगो का जो पत्र-व्यवहार जारी है उस पर रोक लगाने के इराद का जायजा लें। यह स्पष्ट है कि इस समय हम (१) गाधीजी को रिहा करने, अथवा (२) उन्हें सावजनिक चचा मे भाग लेने के लिए आवश्यक सारी सुविधाए देन को राजी करने की सब प्रकार की कोशिश की जा रही हैं। यदि उन्हें ये सुविधाए मिली तो उन्हे एक ब दी की हैसियत स निष्क्रिय रखना बहुत कठिन हो जायेगा।

२ मुलाकातें तथा पत्र व्यवहार करने की सुविधाए तीन आधारा पर मागी जायेंगी, यथा

(अ) अस्पृश्यता निवारण काय यदा-कदा यह कहा जाता है कि गाधीजी क लिए पूना पक्ट का कार्यान्वित करने के निमित्त कदम उठाना आवश्यक है। भारत मत्री के तार म यही सुझाव दिया गया है। पर वास्तव म एसी बात नही ह। पूना पक्ट क मुख्य मुख्य मुद्दा को सम्राट की सरकार ने मा यता प्रदान कर दी ह और वे मुद्दे समय आने पर शासन विधान म स्थान पायेग। मिस्टर गाधी अस्पृश्यता निवारण सबधी प्रचार-काय म जुटे रहने का दावा करत हैं। हमने भारत मत्री का सूचित कर दिया है कि हम एसी स्थिति की कल्पना नही कर सकते जिसम मिस्टर गाधी का जेल म रहते हुए बाकायदा प्रचार-काय करन को स्वतत्र छाड दिया जाये। साथ ही हम यह भी नही चाहत कि इस समस्या के किसी खास पहलू म उनकी दिलचस्पी म हम अनुचित रूप स बाधक बनें। हमने बम्बई की सरकार का भी हिदायत कर दी है कि दलित-वग सबधी मुलाकाता के मामले म

मिस्टर गाधी को औचित्य की सीमा के भीतर ढील दे दी गई है। हम वेलप्पन के उपवास से सम्बन्ध रखनेवाले तार भेजने को भी राजी हो गये ह क्योकि इसम मिस्टर गाधी की तभी से व्यक्तिगत और निश्चित दिलचस्पी है जब पत्र व्यवहार पर कोई बदिश नही थी।

(आ) हिन्दू मुस्लिम तथा अन्य साम्प्रदायिक मामले इस समय इन मामलो पर विशेष रूप से ध्यान दिया जा रहा है जिसका एकमात्र उद्देश्य मिस्टर गाधी को भारतीय राजनीति के क्षत्र म आगे रखना तथा जिसके फलस्वरूप उन्ह बन्दी गह म रखने का काय असम्भव बनाना है। शौकतअली ने जो कदम उठाया है उसका मैं यही अथ लगाता हू। मिस्टर गाधी डा० अन्सारी के साथ भी पत्र-व्यवहार कर रहे हैं। हमने अभी-अभी बम्बई सरकार को ताकीद की है कि वह हिन्दू मुस्लिम सिख मिलन वार्ता के विषय को लेकर डा० अन्सारी के नाम भेजे गए सक्षिप्त तार को जाने से रोक दे। मरा सुझाव है कि हमे आम तौर से मिस्टर गाधी को एसे विषयो पर चर्चा करने की सुविधाए नही देनी चाहिए खासतौर से जबकि इस समय ऐसे विषयो का कोई प्रकृत महत्व नही है। पर हम इस मामल मे सतकता बरतनी होगी जिससे हम पर यह लाछन न लगाया जा सके कि हम साम्प्रदायिक शाति स्थापना के काय म बाधा डाल रहे हैं। इस ढग के आरोपो का सबस अच्छा उत्तर यह है कि यदि मिस्टर गाधी साम्प्रदायिक शाति वाता म भाग लेन को उत्सुक है तो उन्ह अपनी रिहाई के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए।

(ई) सविनय अवज्ञा का अत करने के लिए सरकार स बातचीत इस मामले म भी हम सतक रहना होगा। हम मिस्टर गाधी से सौदेबाजी करन को कदापि तयार नही होग। उधर जहा तक मैंने स्थिति का अध्ययन किया है मिस्टर गाधी सविनय अवज्ञा आदोलन बिना शत बद करन को तयार नही हैं। यदि वह ऐसा करेग तो उनका प्रभाव बहुत बडी मात्रा म नष्ट हो जायेगा। वसा करना अपनी पराजय का स्वीकार करना होगा, जबकि उनका प्रभाव विशेषकर सरकार स सफलता पूवक लोहा लने पर आधारित है। साथ ही उन्हें अपने अनुयायियो के साथ विश्वासघात करन का दोषी ठहराया जायेगा क्योकि यदि मिस्टर गाधी सविनय अवज्ञा आदोलन का परित्याग कर दें तो भी जवाहरलाल और अब्दुल गफ्फार जैस काग्रस के उग्रदलीय नेता

उसका परित्याग करने को तयार नही होगा। यदि मेरे इस कथन को स्थिति का सही मूल्यांकन माना जाए तो कहना होगा कि आंदोलन का अंत कराने के निमित्त मिस्टर गाधी के साथ मुलाकात निष्फल होगी। फिर भी इस प्रकार की मुलाकातें की जाने के पक्ष म अनेक लोग होगे। उनम से कुछ लोग नेकनीयती से काम ले रहे होगे, पर अधिकांश कांग्रेस के हित साधन के लिए वसा चाहते होंगे और कांग्रेस और सरकार के बीच तथाकथित सम्मानपूर्ण समझौते का मार्ग तयार करने म लगे होगे। भारत मंत्री ने इस प्रकार की मुलाकातों के बारे म ढिलाईबरतने का सुझाव दिया है और कहा है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उनसे मिलने देना ठीक रहेगा, जिससे वह उन्हे सविनय अवज्ञा आन्दोलन की निरर्थकता का विश्वास दिला सकें। मि० बिडला-जसे कुछ लोग हैं, जो मिस्टर गाधी से मिलकर विचार विमर्श करने की अनुमति चाहते हैं जिससे उभय पक्षों म एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने योग्य वातावरण तयार हो सके। उपवास से पहले जो परिस्थिति थी उस तक वापस जाना कठिन है। यह मैं जानता हूँ कि उस अवसर पर हमने मिस्टर गाधी के साथ इस श्रेणी के मुलाकात करनेवाले मध्यस्थों को अनुमति देने से साफ इन्कार कर दिया था और मुझे पूरा यकीन है कि अनेक लोग नेकनीयती के साथ यह विश्वास करते रहे हैं कि परिस्थिति म परिवर्तन के कारण मिस्टर गाधी अब वह काम कर सकेंगे, जो वह उपवास से पहले नही कर सकते थे और परिणामस्वरूप आन्दोलन का अंत कर सकते हैं। मेरी समझ म ऐसी स्थिति उत्पन्न नही हुई है पर अन्य अनेक लोगों की यही धारणा है और हम यह नही चाहते कि लोग यह समझने लगें कि हम ऐसी स्थिति उत्पन्न नही होने देना चाहते।

साथ ही यह बात भी है कि यदि वार्तालाप आरम्भ हुआ और उसमें कुछ प्रगति हुई तो हमें एक कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा, (अ) मिस्टर गाधी ऐसी मागें पेश करेंगे, जो अविवेकपूर्ण नही लगेंगी उदाहरण के लिए वह अपने सहयोगियों से सलाह मशवरा करना चाहेंगे। क्या हम ऐसी मागों को पूरा करने से इन्कार कर देंगे? यदि हम ऐसी मागों को स्वीकार करते हैं तो हमारी पोजीशन बहुत ही कमजोर हो जायगी और हमारे सकल्प के प्रति अविश्वास की धारणा एक बार फिर सारे देश में फल जायेगी। हम

१९३० की सप्रू-जयकर-वार्ता का अनुभव है कि इस प्रकार की स्थिति किस रूप म विकसित होती है। (आ) सम्भव है, मिस्टर गाधी समझौते की नम शर्तें रखें। इसका परिणाम यह होगा कि हमारे ऊपर दबाव पडेगा, न केवल भारत म बल्कि स्वदश म भी। जब हमने एक बार ऐसे दबाव म न आने का निश्चय कर लिया है तो स्वत ही अपने आपको वस दबाव म आने के लिए पश करना क्या बुद्धिमत्ता का काम होगा ? वास्तव म हमारे लिए सम्राट की मरकार के साथ भी कठिनाई उत्पन हा सकती ह। (इ) इस सारे वार्तालाप का परिणाम यह होगा कि मिस्टर गाधी प्रकाश मे रहग और वह यही चाहते भी हैं, जबकि हम उन्हें उसी अपक्षाकृत अधकार म वापस भेजना चाहत हैं जिसम वह उपवास स पहले तक थे। (ई) यदि हम स्थिति को उपयुक्त ढग स विकसित होने दें और साथ ही मिस्टर गाधी को तब तक रिहा न करने के सकल्प पर अडे रह जब तक वह आन्दालन का अन्त नही करते तो हम इसके लिए कोई वाह वाही मिलने से रही उल्टे हमारे खिलाफ लोगो को यह प्रचार करनका मौका मिलेगा कि हम शाति नही चाहत और मिस्टर गाधी का नीचा दिखाना चाहत हैं। इसलिए विवेक का यही तकाजा है कि मुलाकातो की अनुमति न देने के लिए इस समय हमारी जसी कुछ आलोचना हा रही है उस होने दें, बजाय इसके कि वार्तालाप के फलस्वरूप जिन सुझावा का आना अनिवाय हा जायगा उनकी ओर कान न देकर और भी अधिक तीव्र आलोचना के शिकार बनें।

४२

२६ ३ ३३

भाई घनश्यामदास

दो-तीन बात अभी लिखता हू बाकी पीछे।

हिन्दी हरिजन म पढने के लायक हम एक ही चीज पाते हैं वह तुमारे लेख। तुमारी भाषा मीठी और तेजस्विनी है। लेकिन इतने ही से मुझे सतोष नही हो

सकता है। जब तक वहा अच्छा प्रबध नहि हुआ है तब तक ज्यादेतर यहीं से लेख भेजे जायेंगे। महादेव और मैं अनुवाद करेंगे और मौलिक भी लिखते रहग। वियोगीजी हम लोगा के हिंदी को दुरस्त कर लेवें। इसके उपरात सघ के तरफ से नोटीस सूचना प्रातीय खबरें १० आन चाहिये—तब तो हिन्दी 'हरिजन की हजारो कापीया बिकनी चाहिय। हरिजन सेवा-सघ का यह मुख्य गझेट बन जाना चाहिये। रामदासजी को और किसी को अनुवाद के लिये यहा से लेख भेजने का मैंने इनकार किया है। एसे 'हरिजन चल ही नहि सकता है। दिल्ली म अनुवादक न मिले या वियोगीजी खुद न कर सके और कोई दूसरा प्रबन्ध न हो सके तो हरिजन सवक बध करना आवश्यक समझता हू।

कलकत्ते की बस्ती के बारे म कुछ ज्यादा काय हाने की आवश्यकता देखता हू।

डेविड-योजना के बारे म सम्हला हू इसका चितन की जाय—मैं अधिक लिखूगा परीक्षक बोड बना लो।

बापु के आशीर्वाद

४३

२८ माच, १६३३

पूज्य बापू

दो एक बातें एसी हैं जिनके बार म मुझे आपके पथ प्रदशन की आवश्यकता है।

जब मैं बनारस म था ता मरे काना म यह बात आई कि कुछ डाम जिन्हाने कुछ समय पहल धम परिवतन किया था अब इस आन्दोलन की बदौलत दुबारा हिन्दू धम ग्रहण करने को उत्सुक हैं। वहा के आयसमाजियो ने तो साथ ही आर्थिक सहायता मागी जिसस उनकी शुद्धि की जा सके। मुझे इसम आपत्ति की कोई बात दिखाई नही पडी इसलिए मैंने उन्हे अपनी जेब म कुछ दन का वचन दे दिया। अब सवाल यह है कि क्या सोसाइटी को ऐसे मामलो मे दिलचस्पी लेनी चाहिए? यदि नही तो क्या नही? जब हम एसे मामला मे रुचि दिखाने स इन्कार करत हैं ता लोगा के लिए यह कहने का हा जाता है कि हम औरा का सतुष्ट रखन क लिए हिन्दू हिता का बलिदान करने का तत्पर हा जाते है। उनकी यह

आलोचना वाजिब है, मुझे उसमे पर्याप्त मात्रा मे तथ्य दिखाई पडा है। मैं शुद्धि की खातिर शुद्धि के पक्ष मे कदापि नही हू चाहे वह शुद्धि मुसलमानो की हो या ईसाइयो की पर यदि कोई हिन्दू धर्म परिवर्तन के बाद दुबारा हिन्दू-परिवार मे आना चाहे, तो उसका उत्साहवर्द्धन न करने का कोई विवेकयुक्त कारण मुझे नही दीख रहा है।

मैंने बेंथल को लिखा था कि वह हिन्दी 'हरिजन' के वास्ते कुछ लिये बगैर कागज दें। आपको शायद पता ही होगा कि बेंथल टीटागढ पेपर मिल के मनेजिंग एजेंट है। बेंथल ने उत्तर दिया कि वह पत्र मे विज्ञापन देने की बात पर विचार अवश्य कर सकते है, पर कागज तोहफे के बतौर देने मे असमर्थ है। मैंने कहा कि हम पत्र मे छाप देंगे कि कागज टीटागढ पेपर मिल से मुफ्त मिला है और यही सूचना विज्ञापन का काम करेगी। पर उनका कहना था कि मात्र इतने से उनका उद्देश्य पूरा नही होगा। मैंने बताया कि हम पत्र मे विज्ञापन नही लेते इसलिए हमारे लिए टीटागढ पेपर मिल का विज्ञापन देना सम्भव नहीं है। अब यह मामला डाइरेक्टरो के बोर्ड के सामने पेश है। अब बताइए कि क्या हम टीटागढ पेपर मिल के विज्ञापन के लिए पत्र मे जगह निकाल सकते हैं ?

हिन्दी 'हरिजन' आपको अब कैसा लगता है ? मेरी अपनी राय तो यह है कि प्रकाशन अब काफी सतोषजनक है। पत्र के आर्थिक दृष्टि से स्वावलबी होने मे अभी देर है। पर मैं समझता हू कि पत्र की माग बराबर बढती जा रही है, और तीन चार महीने बाद वह अपना सारा खर्च खुद निकालने लगगा।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

४४

यरवडा केन्द्रीय कारागार
२८ मार्च, १९३३

प्रिय घनश्यामदास

मैंने तुम्हें परसों २६ तारीख को हिन्दी में जो पत्र लिखा था आशा है, वह तुम्हें मिल गया होगा। मेरे विचार में कलकत्ते की बस्तियों की समस्याओं का खण्डश नहीं बल्कि सामूहिक रूप से हल तलाश करना चाहिए। इसलिए अब की बार जब कलकत्ते जाओ तो वहां के प्रमुख पार्षदों की एक गैररस्मी बैठक बुलाओ। निहित हितों ने चाहे जितनी गहरी जड पकड ली हो उन पर कुठाराघात करके समस्या को अवश्य हल करना होगा। तुमने जो कुछ लिखा है उससे तो मुझे यही लगता है कि बस्तियों की समस्या का सबसे सस्ता हल उनका मूलोच्छेदन है। पाखाना ढोने के अपेक्षाकृत अधिक मानवतापूर्ण ढग का विरोध निष्फल सिद्ध होगा। पाखाना ढोने का बेहतर तरीका अपनाने में शुरू शुरू में खर्च अवश्य अधिक होता है पर अन्त में वह पुराने ढग के मुकाबले में कम खर्चीला साबित होता है। इन सारी कठिनाइयों के पीछे असल कठिनाई यह है कि जो लोग सुधारक होने का दम भरते हैं, वे खुद स्वार्थत्याग करने को तैयार नहीं पाये जाते। तुम्हें इस निष्क्रियता को सक्रियता में बदलना है और सही रास्ते का जल्दी-से जल्दी पता लगाना है।

हिन्दी हरिजन की बाबत मैंने तुम्हें परसों के पत्र में ही लिख दिया था कि उसमें यदि कुछ पठनीय सामग्री मिली तो केवल तुम्हारे लेख—हां पहले लेख का छोडकर। तुम्हारी शैली सुन्दर है उसमें प्रसाद गुण है और वह मुहावरेदार है। विषय की विवेचना करने का तुम्हारा ढग सहज सीधा और बोधगम्य है। हां, मेरे लेखों के अनुवाद दोषपूर्ण रहे हैं पर अब इस कठिनाई का अन्त इस रूप में होगा कि अनुवाद यहीं से तैयार करके भेजे जायेंगे। भाषा का परिमार्जन वहां हो जायेगा। ऐसा करने से खर्च में भी कमी होगी, और पत्र भी उन्नति करेगा।

डेविड योजना को लेकर माथा पच्ची करने की जरूरत नहीं। मैंने तुम्हें बता ही दिया है कि मैंने इस विषय पर क्या लिखा ? पर मैं तुम्हारी कठिनाई समझता हू। यदि आवश्यकता हुई तो हमें केन्द्रीय कोष का सहारा तो लेना ही पडेगा। पर अभी कुछ दिन और ठहरो यदि आधा दर्जन दान दाता भी पूरा चदा चुका दें तो काम बन जायेगा। मैं हताश नहीं हुआ हू केवल अच्छी भाषा में चिट्ठियां

लिखन का समय नही निकाल पाता हू। पर इन्हा दिना म किसी दिन उसके लिए भी समय निकाल लूगा। दो एक नाम मिलते ही उनके साथ तुम्हार नाम की भी घोषणा करने का विचार है। तुमने योजना का उत्साहपूवक हाथ म लिया है, इसलिए तुम्हारे दिये गए वचन को पूरा न करन का सवाल ही नही उठना।

तुम्हारा
बापू

पुनश्च

रामानद सन्यासी के वास्ते तुम्हारे साथ जो बातें हुई थी, वह याद होगा। इस पर से मैंने उनको लिखा था कि उनके चरित्र के लिये मैंने शिकायत सुनी थी। इसका जा उत्तर आया इसके साथ रखता हू। अब इनका खत आया है कि उनको उर्दू 'हरिजन' निकालन का तुमने कहा है।

बापू

४५

३१ माच, १९३३

पूज्य बापू,

आपका २३ तारीख का पत्र मिला। आपका अपन ही हाथ से लिखा २६ तारीख का पत्र भी मिल गया। १५ अप्रल को फेडरेशन की वार्षिक बठक होनेवाली है जो दा तीन दिन चलेगी। उसके बाद अप्रैल के अन्त तक कलकत्ते जाकर आपरशन करा डालूगा। इसका मैंने एक तरह से सकल्प ही कर लिया है।

रही केन्द्रीय बोड को रुपया भेजन की बात सो मै एक और व्यावहारिक सुझाव द सकता हू। पूना म श्री शिवलाल मानीलाल (पित्ती) की एक सूती कपडा मिल है। यदि आप वहा रुपया भेज दें ता वे बम्बई म मेरी फम का भेज देंगे, और मेरी फम दिल्ली मे केन्द्रीय बोड के पास भेज देगी।

यरवडा-पैक्ट को लेकर बगाल म जा वाद विवाद उठ खडा हुआ है, उसके सबध म मैंने अब सिर खपाना बन्द कर दिया है। पर कलकत्ता छाडन स पहल मैंन इस विषय पर सतीश बाबू से बातचीत की थी और यह तय हुआ था कि जब कविवर (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) और आचाय (प्रफुल्लचद्र) राय अपने दौरे स

वापस लौटेंगे ता आवश्यकता होने पर वह इस दिशा म अगला कदम उठायेंगे।

सलेक्शन बोड के सम्बध म मेरा यह कहना है चूकि ठक्कर बापा आपस मिलन जा ही रहे है, उनके साथ आपकी विस्तार से बातचीत हो जायेगी। उसके बाद आपकी इच्छा के अनुरूप हम लोग बोड का गठन कर डालेंगे।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

४६

३१ माच, १९३३

पूज्य बापू

हिदी हरिजन के बारे म आपका सुझाव मैंने पढ लिया है। मेरी अपनी राय है कि पत्र बराबर निखरता जा रहा है। आर्थिक दष्टि से भी उसे स्वावलबी होन म देर नही लगेगी। पत्र का आर्थिक स्थिति फिलहाल कुछ इस प्रकार है

फिलहाल हम १००० प्रतिया बेच रह हैं। यदि २००० प्रतिया की खपत होन लगे तो पत्र स्वावलम्बी हो जायगा। २००० प्रतियो के १२ पष्ठो के प्रति सस्करण पर निम्नलिखित खच बठता है

छपाई	—	४५) रु०
कागज	—	३३) रु०
दफ्तरी का काम	—	५) रु०
डाक तथा रल का खच	—	७८) रु०

इस प्रकार खच मोटे तौर पर ४८०) रु० प्रति मास आयेगा। स्टाफ आदि पर १६०) रु० मासिक खच होता है। कुल मिलाकर २५०० प्रतियो पर हर महीन ६४०) रु० खच होता है। यदि हम सारी २५०० प्रतिया बच पायें—आधी वार्षिक ग्राहको को और शेष एजेंटो के द्वारा—तो औसतन प्रति कापी ३) रु० के हिसाब स प्रति वष ७५००) रु० मिलते है। मैं तो नही समझता कि

२५०० प्रतियां छपाना कठिन होगा। पत्र का पूरे तौर से विज्ञापन नहीं हुआ है। मैंने कुछ मित्रों को पत्र की बिक्री बढ़ाने के लिए लिखा है पर वे इसमें कितने सफल होंगे कह नहीं सकता। हम लोग घूम फिरकर ग्राहक बनाने के लिए एक आदमी को बाहर भेज रहे हैं। आशा है इस प्रकार काफी ग्राहक बन जायेंगे। मैं नहीं जानता कि आप पत्र के स्तर से इतने सन्तुष्ट हैं या नहीं कि उसके लिए एक सार्वजनिक अपील जारी कर सकें। मैंने उसे गुजराती संस्करण से मिला कर देखा तो मुझे वह उसके मुकाबले घटिया नहीं लगा। आप पत्र के छठे अंक अर्थात ३१ मार्चवाले अंक को उठाकर देखें तो पायेंगे कि श्री ठक्कर के दो लेखों श्री कालेलकर का एक लेख जो पृष्ठ ६ पर छपा है मेरी समझ में अच्छा बन पड़ा है। श्री कालेलकरवाला लेख भी बुरा नहीं रहा। वैसे उसे न भी दिया जाता तो कोई हर्ज नहीं था। बस, इन्हें छोड़कर शेष सामग्री आपकी ही है। साप्ताहिक समाचार उतना महत्व नहीं रखते पर हम जितने कुछ मिलें उन्हें अवश्य छापना चाहिए। मेरी सारी शिकायत अनुवाद के बारे में है। हरिजी ने आपके लेखों का शब्दश अनुवाद कर डाला है जो मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने हरिजी से कह दिया है कि अंग्रेजी मुहावरों का तद्वत हिन्दी अनुवाद करने की बजाय उन्हें उपयुक्त हिन्दी मुहावरों से काम लेना चाहिए। आशा है आप भी यही चाहेंगे। कहना पड़ता है कि महादेव भाई के अनुवाद भी उतने ही बुरे रहे। इसके अलावा मैं यह भी नहीं चाहता कि यह भार अनावश्यक रूप से आप अपने सिर पर लें। अनुवाद-कार्य वियोगीजी पर छोड़ दीजिए। देखें कितनी सफलता मिलती है। यदि आप कुछ लेखों का अनुवाद खुद करना चाहें तो अवश्य कीजिए पर अनुवाद शब्दश न होकर उसी विषय पर एक स्वतंत्र लेख के रूप में हो सके तो बेहतर होगा। तब वह पढ़ने में अच्छा लगेगा। उदाहरण के लिए ३१ मार्च के अंक में पृष्ठ ५ पर छपा लेख शब्दश अनुवाद न होकर पत्न में लगभग स्वतंत्र लेख जैसा लगता है और महादेव के कुछ अनुवादों से कहीं अधिक उत्कृष्ट है। इसी प्रकार पृष्ठ ३ पर छपा गुजराती लेख का अनुवाद भी बड़ा सुन्दर रहा। अन्य सामग्री अच्छी नहीं रही। इसलिए मेरा निवेदन है कि या तो अपने मूल लेख भेजिये या उनका स्वतंत्र लेखों जैसा अनुवाद। यदि आप चाहें तो गुजराती या अंग्रेजी लेखों के शब्दश अनुवाद का काम हम पर छोड़ सकते हैं। अनुवाद की त्रुटियों को छोड़कर कहा जा सकता है कि ३१ मार्च वाला अंक लगभग अपेक्षित स्तर का है ऐसी मेरी धारणा है। इस विषय में आपकी राय जानना चाहूंगा कि आप इस मामले में मुझसे सहमत हैं या नहीं। यदि नहीं तो मैं आपकी निश्चित आलोचना की प्रतीक्षा करूंगा।

भविष्य के लिए मेरा सुझाव है और मैंने वियोगीजी से भी कह दिया है

वापस लौटेंगे तो आवश्यकता होने पर वह इस दिशा में अगला कदम उठायेंगे।

सलेक्शन बोर्ड के सम्बन्ध में मेरा यह कहना है चूंकि ठक्कर बापा आपसे मिलने जा ही रहे है, उनके साथ आपकी विस्तार से बातचीत हो जायेगी। उसके बाद आपकी इच्छा के अनुरूप हम लोग बोर्ड का गठन कर डालेंगे।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मा० क० गाधीजी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

४६

३१ मार्च, १९३३

पूज्य बापू

हिन्दी हरिजन के बारे में आपका सुझाव मैंने पढ़ लिया है। मेरी अपनी राय है कि पत्र बराबर निखरता जा रहा है। आर्थिक दृष्टि से भी उसे स्वावलंबी होने में देर नही लगेगी। पत्र की आर्थिक स्थिति फिलहाल कुछ इस प्रकार है

फिलहाल हम १००० प्रतियां बेच रहे है। यदि २००० प्रतियों की खपत होने लगे तो पत्र स्वावलम्बी हो जायगा। २००० प्रतियों के १२ पृष्ठो के प्रति संस्करण पर निम्नलिखित खर्च बैठता है

छपाई	—	४६) रु०
कागज	—	३३) रु०
दफ्तरी का काम	—	५) रु०
डाक तथा रेल का खर्च	—	७८) रु०

इस प्रकार खर्च मोटे तौर पर ४८०) रु० प्रति मास आयेगा। स्टाफ आदि पर १६०) रु० मासिक खर्च होता है। कुल मिलाकर २५०० प्रतियों पर हर महीने ६४०) रु० खर्च होता है। यदि हम सारी २५०० प्रतियां बेच पायें—आधी वार्षिक ग्राहकों को और शेष एजेंटों के द्वारा—तो औसतन प्रति कापी ३) रु० के हिसाब से प्रति वर्ष ७५००) रु० मिलते है। मैं तो नही समझता कि

२५०० प्रतियां छपाना कठिन होगा। पत्र का पूरे तौर से विज्ञापन नहीं हुआ है। मैंने कुछ मित्रों को पत्र की बिक्री बढ़ाने के लिए लिखा है, पर वे इसमें कितने सफल होंगे, यह नहीं कह सकता। हम लोग घूम फिरकर ग्राहक बनाने के लिए एक आदमी को बाहर भेज रहे हैं। आशा है इस प्रकार काफी ग्राहक बन जायेंगे। मैं नहीं जानता कि आप पत्र के स्तर से इतने संतुष्ट हैं या नहीं कि उसके लिए एक सार्वजनिक अपील जारी कर सकें। मैंने उसे गुजराती संस्करण से मिला कर देखा तो मुझे वह उसके मुकाबले घटिया नहीं लगा। आप पत्र के छठे अंक अर्थात ३१ मार्चवाले अंक को उठाकर देखें तो पायेंगे कि श्री ठक्कर के दो लेख, श्री कालेलकर का एक लेख, जो पृष्ठ ६ पर छपा है, मेरी समझ में अच्छा बन पड़ा है। श्री कालेलकरवाला लेख भी बुरा नहीं रहा। वैसे उसे न भी दिया जाता तो कोई हर्ज नहीं था। बस, इन्हें छोड़कर शेष सामग्री आपकी ही है। साप्ताहिक समाचार उतना महत्व नहीं रखते, पर हम जितने कुछ मिलें उन्हें अवश्य छापना चाहिए। मेरी सारी शिकायत अनुवाद के बारे में है। हरिजी ने आपके लेखों का शब्दशः अनुवाद कर डाला है जो मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने हरिजी से कह दिया है कि अंग्रेजी मुहावरों का तद्वत हिन्दी अनुवाद करने की बजाय उन्हें उपयुक्त हिन्दी मुहावरों में काम लेना चाहिए। आशा है आप भी यही चाहेंगे। कहना पड़ता है कि महादेव भाई के अनुवाद भी उतने ही बुरे रहे। इसके अलावा मैं यह भी नहीं चाहता कि यह भार अनावश्यक रूप से आप अपने सिर पर लें। अनुवाद-कार्य वियोगीजी पर छोड़ दीजिए। देखें कितनी सफलता मिलती है। यदि आप कुछ लेखों का अनुवाद खुद करना चाहें तो अवश्य कीजिए पर अनुवाद शब्दशः न होकर उसी विषय पर एक स्वतंत्र लेख के रूप में हो सके तो बेहतर होगा। तब वह पढ़ने में अच्छा लगेगा। उदाहरण के लिए ३१ मार्च के अंक में पृष्ठ ५ पर छपा लेख शब्दशः अनुवाद न होकर पढ़ने में लगभग स्वतंत्र लेख जैसा लगता है और महादेव के कुछ अनुवादों से कहीं अधिक उत्कृष्ट है। इसी प्रकार पृष्ठ ३ पर छपा गुजराती लेख का अनुवाद भी बड़ा सुन्दर रहा। अन्य सामग्री अच्छी नहीं रही। इसलिए मेरा निवेदन है कि या तो अपने मूल लेख भेजिये, या उनका स्वतंत्र लेखों जैसा अनुवाद। यदि आप चाहें तो गुजराती या अंग्रेजी लेखों के शब्दशः अनुवाद का काम हम पर छोड़ सकते हैं। अनुवाद की त्रुटियों को छोड़कर कहा जा सकता है कि ३१ मार्च वाला अंक लगभग अपेक्षित स्तर का है ऐसी मेरी धारणा है। इस विषय में आपकी राय जानना चाहूंगा कि आप इस मामले में मुझसे सहमत हैं या नहीं। यदि नहीं तो मैं आपकी निश्चित आलोचना की प्रतीक्षा करूंगा।

भविष्य के लिए मेरा सुझाव है और मैंने वियोगीजी से भी कह दिया है

कि पत्र १२ पष्ठा का हो और टाइप छोटा रहे। रही पठनीय सामग्री की बात सो आपके सारे लख, मौलिक हो अथवा अनूदित, उसमे रह। एक या दो टिप्पणिया सम्पादक की रह पर वे दो कालम से अधिक न हाने पायें। यदि आपके मौलिक लख मिल सकें तो व सम्पादकीय पष्ठ पर जायें। इसके अतिरिक्त हम साप्ताहिक समाचार भी देने चाहिए। साथ ही यदि अच्छे-अच्छे पौराणिक आख्यान अथवा भक्तमाल आदि की कहानिया मिल सकें—तो हमे उनक लिए भी एक पष्ठ अलग रखना चाहिए। आशा है आपको मरा सुझाव रुचेगा, यदि न रुचे तो कृपा करके अपना सुझाव लिख भेजिए। मैं आशा करता हू कि आपका पत्र के १२ पष्ठ रखने की बात भी अच्छी लगेगी यद्यपि हम पष्ठ घटाकर पत्र ८ पष्ठ का भी कर सकते ह। पर १२ पष्ठ भरन लायक सामग्री का अभाव नही होगा इसलिए हम पृष्ठ सख्या घटानी नही चाहिए। जो वत्त अब तक छपे हैं वे विशेष महत्व क नहीं हैं। मैं इस ओर प्रान्तीय बोर्डों का ध्यान आकृष्ट कर रहा हू।

इस पत्र के साथ पतित बन्धु की एक कटिंग भेजता हू जिससे आपको आभास हो जायेगा कि हम किस प्रकार की कहानिया देना चाहते हैं।

कह नही सकता आप अग्रेजी 'हरिजन की एक प्रति बगाल के गवनर के प्राइवेट सेक्रेटरी को भजना चाहेंगे या नही। गवनर के बारे म मेर विचारा से आप परिचित हैं। भले आदमी हैं और आपको समझन की हार्दिक अभिलापा रखते हैं। मूल्य मैं चुकाऊगा और यदि आप मुझसे सहमत हो तो एक प्रति हर शुक्रवार का उनक प्राइवेट सेक्रेटरी के पास भेजी जा सकती है। प्राइवट सेक्रेटरी क नाम एक पत्र भी भेजा जा सकता है जिसम कहा जा सकता है कि पत्र की प्रति हिज एक्सिलेंसी के लिए भेजी जा रही है।

म कल ग्वालियर के लिए रवाना हो रहा हू कोइ दस-बारह दिन बाद वापस लौटूगा।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मा० क० गाधीजी,
यरवदा केन्द्रीय कारागार
पूना।

४७

१० अप्रल १९३३

पूज्य बापू

आपकी २८ माच की चिट्ठी मिल गई। कलकत्ते के काम के बार म मैं खुद जानता हू कि हम कुछ-न कुछ करना ही पडेगा। कलकत्ते लौटूगा तो इस प्रश्न को अवश्य उठाऊगा। माग म कठिनाइया अवश्य है और सफल होना आसान नही है। तो भी हम भरसक चेष्टा करनी है और मैं मामल को पूरी लगन के साथ हाथ मे लूगा।

आपन अभी तक यह नही बताया कि हम टीटागढ पपर मिल का विज्ञापन लना चाहिए या नही। केवल विज्ञापन देने को तो तयार है पर मुफ्त कागज देने को राजी नही हुए।

कानपुर के लाला कमलापत स ३०००)मिले है। वह चाहते हैं कि यह रुपया छात्र वृत्तिया पर खच किया जाए। मैंने पडित (हृदयनाथ) कुजरू को लिखकर पूछा है कि वह इस रकम को किस रूप म खच करना चाहेंग। यदि वह श्री डेविड की योजना पर खच करना चाहेंगे तो हम ३०००)और मिल जायेंगे। जो भी हो रुपया सयुक्त प्रान्त मे ही खच करना होगा।

उस व्यक्ति के चरित्र पर मरा सदेह अभी वसा ही बना हुआ है। पर वस वह नि सन्देह एक कमठ व्यक्ति है। और भी कई एक ऐसी सस्थाए है जो चुप चाप ठोस काम म लगी हुई हैं। अभी उस दिन मैंने एक अस्पृश्य बालिका विद्यालय के पारितोषिक वितरण उत्सव का सभापतित्व किया था। वहा के कायकर्त्ताओ की कायशीलता स मैं बहुत प्रभावित हुआ। मैंने उन लोगो से अपन समस्त कार्यों की सूची तयार करन को कहा है। साथ ही मैंने उस व्यक्ति से भी अपने काय का विवरण तैयार करने को कहा है। यदि हम सतोष हुआ तो मैं समझता हू केन्द्रीय बोड के लिए ऐसी सस्थाओ की सहायताथ कुछ रुपया निकालना उचित रहेगा।

उदू सस्करण की बाबत मैंने उस व्यक्ति का बता दिया है कि हम कोई आर्थिक भार तो नही उठायेंगे पर वैस उत्साहवद्धन करेंगे। हा, पत्र का अग्रेजी या हिन्दी 'हरिजन' की शली को अपनाना होगा। वह आपके मौलिक लेख चाहता था। मैंन उसे सारी सुविधाए देन का वचन दिया है मुझे उसके चरित्र से निराशा अवश्य हुई है पर आप मेरे इस कथन से सहमत होंगे कि ऐसे व्यक्तियो का चरित्र सन्देहास्पद होने पर भी यदि ऐसा लग कि वे उपयोगी काय मे लगे हुए हैं तो

उनका बहिष्कार करना कठिन नही है। मने उस व्यक्ति स उसके चरित्र के बारे म खुलकर बात नही की, हा एक मित्र के द्वारा उसे सकेत दे दिया कि जिस विधवा का उसके कारण दु ख बेलना पड रहा है उसके साथ उसे विवाह कर लना चाहिए। उसन उस विधवा के साथ अपने सबध की बात का खण्डन किया पर मेरा सदेह बना हुआ है। यह सब केवल आपकी सूचनाथ है।

स्नह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी
यरवडा केद्रीय कारागार
पूना।

४८

११ अप्रल १९३३

पूज्य बापू

आपका ३ ४ अप्रल का पत्र मिला। बगाल के गवनर के प्राइवेट सेक्रेटरी को हरिजन की एक प्रति भेजने की बाबत आपकी दलील को मैंने समझ लिया। यदि मैंने उस ठीक ठीक समझा है तो मैं सस्था के प्रधान की हैसियत स अपनी जान पहचान के किसी भी प्रमुख व्यक्ति को 'हरिजन भेज सकता हू। फलत मरा सुझाव है कि मेर खच पर निम्नलिखित व्यक्तिया को हरिजन' की एक एक प्रति भेजना शुरू कर दिया जाये

१) बगाल के गवनर के प्राइवेट सक्रेटरी।
२) सर एडवड बेंथन कलकत्ता।
३) सर वाल्टर लिटन माफत इकनामिस्ट, लदन।
४) सर हेनरी स्ट्रेकाश इडिया आफिस, लदन।
५) लाड रीडिंग लदन।
६) लाड लोदियन लदन।

कल मैं तीन चार दिन के लिए दिल्ली जा रहा हू। उसके बाद फिर यही लौट आऊगा और पिताजी क नासिक से वापस लौटन तक उनकी आज्ञानुसार यही ठहरा रहूगा। वह मई के पहले सप्ताह म यहा आ जायेंगे और उसक बाद

हरिद्वार के लिए रवाना हो जायेंगे। उन्हें विदा करने के बाद मैं सीधा कलक्ते जाऊंगा और कम-से-कम दो महीने वहीं ठहरूंगा।

मेरा पुत्र और पुत्रवधू दोनों शीघ्र ही पूना जानेवाले हैं। उन दोनों का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। खासकर पुत्रवधू तो बहुत बीमार है। मैंने उन दोनों से प्राकृतिक चिकित्सक श्री मेहता की देखरेख में रहने को कहा है। पुत्रवधू तो चल फिर भी नहीं सकती किन्तु पुत्र को दुर्बलता के अलावा और कोई शिकायत नहीं है। वह यदाकदा आपके दर्शनों के लिए आता रहेगा। आशा है, आप उसे मिलने की अनुमति दे देंगे।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गांधीजी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार,
पूना।

४६

बिड़ला हाउस
अल्बूकर्क रोड
नई दिल्ली, १८ अप्रल, १९३३

पूज्य बापू

आपकी ७/१० तथा १४ अप्रल की चिट्ठियां मिलीं। शुद्धि के विषय पर—आपके दृष्टिकोण को हृदयंगम किया।

विज्ञापन के सम्बन्ध में आपकी दलील को मैं मानता हूं। हां आप लाला कमलापत के ३०००) के दान की घोषणा कर सकते हैं। इधर मैं कानपुर के श्री रामेश्वरप्रसाद बागला से भी ३०००) लेने में सफल हुआ हूं। उन्होंने कोई शर्त नहीं लगाई है पर मैं समझता हूं यह रकम भी संयुक्त प्रान्त में ही खर्च की जायेगी। पत्र में इस दान की घोषणा भी की जा सकती है।

हिन्दी हरिजन के नये ग्राहक बन रहे हैं पर उनकी संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। अंग्रेजी हरिजन में आपकी टिप्पणी से सहायता मिलेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। मुझे इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि पत्र स्वावलंबी हो जायेगा। पर इसके लिए मैंने जितना समय सोचा था उससे अधिक लगेगा।

आपकी चिट्ठी पाने के बाद मैंने उससे स्पष्ट रूप से बात करने का निर्णय कर लिया है। उससे बातचीत करने के बाद आपको फिर लिखूंगा।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गांधीजी
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

५०

२६ अप्रैल १९३३

पूज्य बापू

इस चिट्ठी से आपको पता लग ही जायगा कि मैं यहां ग्वालियर आया हुआ हूं और पिताजी के आगमन की बाट देख रहा हूं। वह अगले महीने की ३ तारीख को यहां पहुंच रहे हैं। उसके बाद मैं उनके साथ दिल्ली जाऊंगा। उन्हें वहां से हरद्वार के लिए रवाना करने के बाद कलकत्ता जाने का विचार है। वहां मैं ७ या ८ मई तक पहुंच जाऊंगा।

आपको लिखने के बाद मैंने उस व्यक्ति से दिल खोलकर बात की। कहना पड़ता है कि इससे मेरे सन्देह का निवारण होने की बजाय उसकी और भी पुष्टि हो गई। वह कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाया, केवल यही कहकर रह गया कि यह सब दलबन्दी की बदौलत है। मैं उसकी यह बात स्वीकार नहीं कर सका। श्री इन्द्र और डा० सुखदेव निष्पक्ष आदमी हैं। वे दलबन्दी के कारण उस पर कीचड़ उछालनेवाले व्यक्ति नहीं लगते। मेरी निगाह में कुछ कागज-पत्र भी आये, जो हद दर्जे के सन्देहास्पद प्रतीत हुए। उस व्यक्ति से अंतिम बार बात करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि मैंने उसे जितना समझा था, उससे वह कहीं अधिक धूर्त है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो इच्छा न रहते हुए पतन के गड्ढे में जा पड़ते हैं, कुछ ऐसे होते हैं जो उसमें जान-बूझकर छलांग लगाते हैं। मुझे यह व्यक्ति इस दूसरी श्रेणी का लगा। इसलिए मैं यह कदापि नहीं कहूंगा कि वह उर्दू 'हरिजन' निकालकर आपके नाम का दुरुपयोग करे। मैंने उसे अपने निर्णय की बात नहीं

बताई है, केवल यही कहा है कि फिर बात करेंगे। आप चाहें तो मैं उसे साफ साफ बता दूं कि उसके बारे में मेरी क्या धारणा है। पर इससे व्यर्थ की कड़वाहट पैदा होगी। असल बात यह है कि वह मुझसे सदाचार का प्रमाण पत्र चाहता है।

हिन्दी 'हरिजन' के बारे में मैं वियोगीजी के उस आशावाद में सहमत नहीं हूं कि वह शीघ्र ही स्वावलंबी हो जायेगा। हां देर-सवेर वह स्वावलंबी होगा अवश्य। रोज नये ग्राहक बन रहे हैं।

हरिजन में मैं लिखना तो चाहता हूं पर मेरी आदत है कि इच्छा न होने पर मैं नहीं लिख पाता। हां, मैं अनुवाद कार्य में अवश्य हाथ बटा रहा हूं। 'हरिजन' के हाल के अंक में एन्ड्रूज के पत्र की बाबत आपके लेख का अनुवाद लगभग मेरा ही है या उसमें मेरा बहुत कुछ हाथ है। पर मैं कलकत्ता पहुंचने के बाद फिर लिखना शुरू करने की चेष्टा करूंगा। सम्भवत मैं पत्र का उपयोग बस्ती सुधार प्रचार-कार्य में करूंगा।

पिताजी ने आपसे भेंट की यह जानकर मन प्रसन्न हुआ। पता नहीं, आप पर उनका कैसा प्रभाव पड़ा। उनकी शिक्षा अधिक नहीं हुई है और अपने विचार व्यक्त करने की उनकी अपनी शैली है। पर उनका मन साफ है और वह आप पर बड़ी श्रद्धा रखते हैं। कट्टर सनातनी होने पर भी वह आपके दृष्टिकोण को सराहते हैं और अपने ढंग से उसका प्रचार करते नहीं अघाते।

जी हां कलकत्ता पहुंचने के तुरत बाद आपरेशन करा डालूंगा। आपको याद ही होगा कि पूना और बम्बई के डाक्टरों ने नासिका का भीतरी भाग निकलवाने की सलाह दी थी, और कलकत्ते के विशेषज्ञ ने कहा था कि इसकी कोई जरूरत नहीं है, केवल नली साफ करनी होगी। अमेरिका में मुझे बताया गया कि दोनों ही काम करने होंगे। इसलिए सबसे पहले तो मुझे नली स्थायी रूप से बनवानी है। यदि उससे राहत नहीं मिली तो दूसरा ऑपरेशन भी करा डालूंगा।

मेरी पुत्रवधू ने डा० महता की चिकित्सा आजमाकर देखी तो पर उसे कुछ दिन और लगाने का सब्र नहीं हुआ। कुल मिलाकर २० दिन चिकित्सा करवाई। अब पुत्र और पुत्रवधू महाबलेश्वर को रवाना हो गये हैं।

महादेव भाई पूछते हैं कि लार्ड रीडिंग और लार्ड लोदियन को भेजे जानेवाले

अंग्रेजी 'हरिजन' का शुल्क क्या मुझे देना होगा। यह मामूली सी बात है, जैसा ठीक समझा जाय किया जाय। यदि पत्र की आर्थिक सहायता के लिए यह जरूरत हो तो शास्त्रीजी से कह दीजिए, वह शुल्क मंगवा लेंगे।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गांधीजी
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

५१

तार

२ मई १९३३

महात्मा मो० क० गांधीजी
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना।

अभी अभी समाचार मिला। मुझे पूरा विश्वास है कि भगवान के आशीर्वाद से आप इस अग्निपरीक्षा से सफल होकर निकलेंगे। आश्वासन देता हूं कि आपके गत सितम्बर के उपवास के बाद सवर्ण आश्चर्यजनक जागृति आई है। उससे आपकी पूरी दिलजमई हो जानी चाहिए। फिर भी मेरी धारणा है कि आपके इस ताजा उपवास से विशुद्ध मंगल होगा पर व्यक्तिगत रूप से मैं व्यग्र हो उठा हूं। कोई विशेष निर्देश देना हो तो दीजिए। कलकत्ता जाने का प्रोग्राम रद्द कर ८ तारीख तक पूना आने का विचार है। ठक्कर बापा यहीं है।

—घनश्यामदास

जियाजीराव काटन मिल्स लि०,
ग्वालियर

५२

तार

३ मई, १९३३

धनश्यामदास बिडला,
ग्वालियर

तुम्हारे तार से हर्षित हुआ। मेरी जोरदार सलाह है कलकत्ता जाकर इलाज कराओ। जरूरी हो तो ठक्कर बापा आज रात को आ सकते हैं।

—बापू

५३

तार

६ मई १९३३

महात्मा मो० क० गांधीजी,
यरवडा केन्द्रीय कारागार,
पूना

आपके निकट रहने को अत्यन्त उत्सुक हूं। पर इस समय और सबकी भांति मुझे भी आपके उपवास में विघ्न डालने से बचना चाहिए जिससे आप अपनी शक्ति संचित रख सकें। इसलिए दूसरों के लिए गलत उदाहरण पेश न कर अपनी यात्रा स्थगित करता हूं। पर मेरी प्रार्थना है कि चिन्ता का कोई अवसर उपस्थित होते ही आप मुझे बुला भेजें या मुझे अभी आने की अनुमति दें। आपका उपवास पूरा होने तक आपरेशन स्थगित रहेगा। मेरा सुझाव है कि उपवास के दौरान दिन रात में २४ घण्टे मौन धारण किये रहें। इससे उपवास की पूर्णता में सहायता मिलेगी। साथ ही इससे आध्यात्मिक वातावरण बनेगा और शक्ति भी संचित रहेगी। यह भी सुझाव है कि मुलाकातें कम से कम हों और प्रतिदिन की अधिकतम संख्या निश्चित कर दी जाय। प्रार्थना है कि पत्र-व्यवहार तुरंत बंद कर दिया जाय। कोई निर्देश हो तो तार भेजिए।

—घनश्यामदास

५४

पर्णकुटी
पूना
११ मई १९३३

श्री घनश्यामदासजी

आज उपवास का चौथा दिन है। बापू बहुत दुर्बल हो गये हैं। सितम्बरवाले उपवास-जैसा मानसिक क्लेश तो दिखलाई नहीं देता, पर आज बा के यहां आने की अभिलाषा के हृदयविदारक तार ने काफी व्यथा पहुंचाई है। बापू ने उन्हें धैर्य से काम लेने और व्यग्र न होने को कहा है। उनके दिमाग पर सभी घटनाओं का प्रभाव अवश्य पडता है पर बस अपेक्षाकृत शान्ति है। कल पेशाब करने में काफी कठिनाई हुई जिससे सारी रात बेचैनी में कटी पर आज सवेरे से राहत मिली है और तब से वह अच्छी तरह सोते हैं। पर आज मूत्र-परीक्षा से पता चला कि पेशाब में शुक्ता प्रचुर मात्रा में मौजूद है। यहां का डाक्टर बहुत चिन्तित हो गया है। इसकी एकमात्र औषध अधिक मात्रा में सोडा बाइकाब है।

कल डा० अन्सारी आनेवाले हैं। उनका आना सचमुच सामयिक होगा। यदि यह बात ध्यान में रखी जाए कि अभी बापू ने उपवास के चार दिन भी पूरे नहीं किये हैं तो मुझे आशावाद का कोई विशेष कारण दिखाई नहीं देता।

आपका
देवदास गांधी

५५

तार

पूना
११ मई, १९३३

धनश्यामदास बिडला,
नई दिल्ली

साधारणतया दशा ठीक है पर आज की मूत्र परीक्षा से चिन्ता है। दूसरे सप्ताह में आना ठीक रहेगा। जीवराज की जेल में अनुपस्थिति खेदजनक है।

—देवदास

५६

१५ मई, १९३३

प्रिय देवदास,

बापू के स्वास्थ्य के बारे में तुम्हारे टाइप किये हुए पत्र मिलते रहे हैं। वास्तव में उनके द्वारा कोई नयी जानकारी नहीं मिलती, क्योंकि 'हिन्दुस्तान टाइम्स' और अन्य पत्रों में खबरें निकलती रहती हैं। मैं अपने आशावाद पर कायम हूं और मुझे पूरा विश्वास है कि बापू इस अग्नि-परीक्षा में से पहले से भी अधिक महान होकर निकलेंगे। मैं जान बूझकर पूना नहीं आ रहा हूं, और आशा करता हूं कि मेरे वहां आने का कोई अवसर उपस्थित नहीं होगा। मुझे दुःख है कि मैं इस वेला में बापू के निकट मौजूद नहीं हूं। यदि बापू से बात करो तो मेरे प्रणाम कहना और उन्हें बताना कि मैं उनके स्वास्थ्य के बारे में तनिक भी चिन्तित नहीं हूं क्योंकि मुझे इस सम्बन्ध में पूरी-पूरी दिलजमई है।

राजाजी से कहना कि मुझे उनका दक्षिण भारत से भेजा पत्र मिल गया था। मैं बापू के स्वास्थ्य के बारे में उनकी चिन्ता को समझता हूं पर ऐसे मामला में हमें ईश्वरेच्छा पर निर्भर रहना चाहिए और जब बापू स्वयं कहते हैं कि उन्होंने

भगवान के आदेश से उपवास किया है तो मनुष्य को उन्हें विचलित करने की चेष्टा क्या करनी चाहिए ? मेरा तो यहीं तक है और मैं तो नहीं समझता कि राजाजी ने बापू को अपना सकल्प भग करने के लिए राजी करने का प्रयत्न करके ठीक काम किया। राजाजी से मेरे प्रणाम कहना और यह भी कहना कि उनके पुत्र की नियुक्ति के बारे में मैंने उन्हें जो पत्र लिखा था उसका उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। मैं उनसे यह जानना चाहता हू कि वह अपने लडके की नियुक्ति तत्काल चाहते हैं या सितम्बर तक ठहर सकते हैं।

तुम्हारा,
घनश्यामदास बिडला

श्री देवदास गाधी
पर्णकुटी
पूना।

५७

नकल

इलाहाबाद
१८ मई, १९३३

मेरे प्यारे मित्र

यद्यपि सरकार ने महात्मा गाधी के वक्तव्य के सबध मे जो विज्ञप्ति प्रकाशित की है उससे यह स्पष्ट हो गया है कि सरकार ने उनके सदाशय सूचक महान सकेत की उपेक्षा करने का सकल्प कर लिया है फिर भी मुझे यह उचित जचता है कि सरकार द्वारा ठीक रवैया अपनाये जाने की दिशा में प्रयत्न किया जाए। काफी गम्भीर विचार करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि यदि इस पत्र के साथ नत्थी मसौदे की तरह का एक सदेश, जिस पर आपके तथा पचास या सौ अन्य गैर काग्रेसियो के हस्ताक्षर हो ब्रिटेन के प्रधान मत्री के पास भेजा जाय तो सयुक्त भारतीय जनमत से प्रभावित होकर सरकार अब भी अपनी नीति में परिवर्तन कर सकती है। यदि वह ऐसा करे तो यह देश के लिए कल्याणकारी सिद्ध होगा। यदि इतने पर भी सरकार अपनी नीति बदलने को तैयार न हो, तो भी ऐसा सदेश भेजने मे कोई क्षति नहीं होगी। यदि मेरा यह विचार आपको

ठीक जचे तो मैं आपसे इस मामले म नेतृत्व करन का अनुरोध करूगा। स्वय मेरे लिए यह सम्भव नही है, क्याकि काग्रेस के साथ मरा अतरग सम्बध ह।

आशा है आपको सदश का मसौदा पसद आयगा। पर आप उसमे जसा परिवतन उचित समझें कर सकते हैं। यदि आपको मसौदा ठीक लग, तो कृपा करके मुझे तार द्वारा सूचित कीजिए तथा लीडर क सम्पादक श्री सी० वाई० चितामणि को भी लिखिए जिससे वह आवश्यक कारवाइ कर सकें। तब वह उन सज्जना के पास मसौदे की नकल भेजेग जिनके नाम हम समुद्री तार म देना चाहते हैं। वे सज्जनव द तार द्वारा आपको या श्री चितामणि को अपनी सहमति की सूचना देंगे। जिन जिनके नाम हम उम समुद्री तार मदेना चाहत हैं उनकी सूची इस पत्र के साथ भेजी जा रही है। जब सहमति-सूचक यथेष्ट नाम आ जायेंगे, तो श्री चितामणि आपको सूचित कर देंगे और तब आप कृपापूवक लदन को समुद्री तार भेज देंगे। इसमें कुछ समय तो अवश्य लगेगा पर वह अनिवाय है।

मैं लदन को प्रतिनिधि मडल भेजन की बात को कायान्वित करने म लगा हुआ था पर तभी महात्मा गाधी ने उपवास की घोषणा कर दी। अब इस मामल पर विचार उनके परामश से किया जायेगा और ऐसा उनके उपवास का अत होने के बाद ही सम्भव है। कुछ दिन बाद मेरा गाधीजी से पूना म मिलने का इरादा है। अपना उत्तर काशी विश्वविद्यालय के पते पर भेजने की कृपा कीजियगा।

विश्वास है आप सानन्द हागे।

भवदीय

एम० एम० मालवीय

पुनश्च

यदि आप मसौद म या नामा की सूची म परिवतन करें, ता उस श्री चितामणि के पास भेजिए। वह आपक द्वारा सशोधित मसौदा प्रकाशित कर देंग और उस आपके द्वारा सशाधित सूची म उल्लिखित सज्जना क पास भेज देंगे।

श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर

५८

कलकत्ता
१६ मई, १६३३

प्रिय दवदास

पडितजी न मर पास एक चिट्ठी कवीन्द्र रवीन्द्र को कलकत्ते मे डाक द्वारा प्रेषित करने के लिए भेजी थी। इस पत्र के साथ उस चिट्ठी की नकल तथा उस समुद्री तार की नकल जो वह रवीन्द्र बाबू से ब्रिटिश प्रधान मन्त्री के पास भिजवाना चाहते हैं, भेज रहा हू। कवीन्द्र को लिखे गये अपने पत्र की नकल भी भेज रहा हू। इससे पण्डितजी तथा मरे विचारो का तुम्हे पूरा आभास मिल जायगा। बापू को अभी इस मामले को लेकर परेशान करना शायद ठीक न रहे। पर उनके उपवास की समाप्ति के बाद यह सारी सामग्री उन्ह पढ़कर सुना देना। मेरी सम्मति म पडितजी गलत कदम उठा रहे हैं इसलिए मैंने कवीन्द्र को चेतावनी देना ठीक समझा। कवीन्द्र क्या कुछ करेंगे, सो तो वही जानें पर मुझे आशा है कि वह मेरी सलाह को ग्रहण करेंगे। हो सकता है मैं ही गलती पर होऊ पर पडितजी ने बापू क सविनय अवज्ञा सबधी वक्तव्य का जो अथ लगाया है वह मरे लगाये गये अथ स भिन्न है। मैं इस ढग की सफाई पेश करने के पक्ष म नहीं हू और न मुझे यह जल्दबाजी ही अच्छी लगी है।

बापू स कह देना कि उनके स्वास्थ्य के सम्बन्ध म मैं पहले से भी अधिक निश्चिन्त हू। इसलिए मैं कलकत्ता पहुचते ही ऑपरेशन करवा डालूगा, और जब बापू चाहेंगे पूना के लिए चल पडने को तयार रहूगा। यदि बापू उपवास की समाप्ति से पहले ही मरी मौजूदगी चाहें तो तार भेजन म सकोच मत करना। मरे लिए कहना अनावश्यक है कि उपवास पूरा होने के बाद उन्ह पूववत शान्ति स्थापना की चेष्टा म लग जाना चाहिए क्योंकि वह खुद परिस्थिति की ओर स सचेत हैं। मुझे विश्वास है कि वह इस तथ्य से भली भाति परिचित हैं कि कठिनाई ब्रिटिश कबिनेट म नहीं प्रत्युत शिमला म है। चर्चिल प्रभृति लाग शिमला की पीठ ठोक रह हैं। बापू के प्रति मत्री की भावना बगाल के गवनर म सबस अधिक देखी। बापू क्या करत हैं, क्या कहते हैं इसम बगाल के गवनर को गहरी दिल चस्पी है (उन्होने अपन एक पत्र म मुझे यह बताया है)। उनका रुख सहानुभूति स भरा हुआ है। कौन-कौन स दरवाजे खटखटान चाहिए यह बापू स्वय जानत हैं औरो म कहीं अधिक जानत हैं। पर मुझे आशा है कि (यदि वैसी नौबत आई

तो) यरवडा वापस जाने से पहले वह शाति स्थापन सबधी प्रयत्नो के दौरान मित्र और विरोधियो के दरवाजे समान रूप से खटखटायेंगे। वह मान पर नही अडेंगे यह मैं भली भाति जानता हू। मैं अपने आशावाद पर कायम हू। सरकार जो चाहे कहती रहे, शाति सब चाहते हैं और चर्चिल प्रभति व्यक्तिया तथा शिमला के बावजूद बापू की राजनीतिमत्ता के द्वारा यह सम्भव भी होगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास बिडला

श्री देवदास गाधी,
पर्णकुटी,
पूना

५६

२२ मई, १६३३

प्रिय देवदास,

कवीन्द्र रवीन्द्र के पास से आया हुआ पत्र साथ भेजता हू। जब ठीक समझो बापू को पढकर सुना देना।

समाचार-पत्रा म जो आह्लादकारी वत्त पढने को मिलत हैं उनसे मन बडा प्रसन्न होता है। अगले बहस्पतिवार को ऑपरेशन कराने का विचार है। ऑपरेशन बहुत ही साधारण कोटि का है इसलिए अगले सोमवार तक ठीक हो जाऊगा, एसी आशा है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास बिडला

दवदास गाधी,
पर्णकुटी,
पूना

६०

जरूरी और गोपनीय

लीडर कार्यालय
इलाहाबाद
२४ मई, १९३३

प्रिय श्री बिडला

इस पत्र के साथ भेजी सामग्री को प्रधान मत्री और भारत मत्री के पास समुद्री तार द्वारा भेजने की याजना है और डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इच्छा व्यक्त की है कि मैं आपसे अनुरोध करू कि हस्ताक्षर करनेवाले सज्जनो म आप अपना नाम भी देने की कृपा करें। आप तार द्वारा सहमति भेजेंगे तो अनुगहीत होऊगा।

भवदीय
सी० वाई० चिन्तामणि

राइट आनरेबल रेम्जे मकडानल्ड,
प्रधान मत्री
लन्दन

महात्मा गाधी तथा काग्रेस के कायवाहक अध्यक्ष द्वारा सविनय अवज्ञा के स्थगित किये जाने के बाद जब हम देश के समस्त वर्गों मे व्याप्त इस तीव्र भावना को व्यक्त करते हैं कि जिन राजनैतिक बन्दियो को मुकदमा चलाए बगर जेलो मे रखा जा रहा है तथा जिन्हे हिंसापूण अपराधो क लिए दण्ड नही मिला है जा अधिकाश म आर्डिनेंसो तथा कानून की विशिष्ट धाराओ के अन्तगत बन्दी बनाय गय हैं उन सबको रिहा कर दिया जाए। नूतन शासन विधान के निर्माण काय म काग्रेस का योगदान असाधारण महत्व का सिद्ध होगा अतएव हमारा निवेदन है कि वसे योगदान के लिए काग्रस का आह्वान किया जाय।

सविनय अवज्ञा के स्थगित होन के बाद जारी की गई सरकारी विज्ञप्ति स उन लागा म निराशा और राष की लहर दौड गई है जा राष्ट्र क सुनियाजित विकास की इच्छा रखते हैं। हम सब सम्राट् की सरकार की राजनीतिमत्ता की दुहाई देकर उससे अनुरोध करते हैं कि वह काग्रेस द्वारा दिये गये सदाशय-सूचक सकेत को तत्परतापूवक ग्रहण करे और इस प्रकार जा नय सुधार विचाराधीन है

उन्हें देश द्वारा स्वीकार्य बनाने के लिए आवश्यक वातावरण के सृजन-कार्य को सम्भव बनाये। सरकार द्वारा असहयोग का रुख अपनाये जाने के दुखद परिणाम का विचार मात्र हमें भयातुर कर रहा है।

६१

कलकत्ता
२५ मई १९३३

प्रिय देवदास

तुम्हारा २१ तारीख का पत्र मिला। मुझे स्वीकार करना पडता है कि उपवासो की शृखलावाली योजना के समाचार ने मुझे व्याकुल कर दिया है। मैं इस बारे में तुमसे सहमत नही हू कि जिस प्रकार अब तक के उपवासो के तुम्हारे विरोध का बापू पर कोई प्रभाव नही पडा उसी प्रकार अब भी नही पडेगा। तुम उनकी सन्तान हो सही पर मैं यह मानने को तैयार नही हू कि तुम्हे बापू के विषय में मुझसे अधिक जानकारी है। उनका मानस धार्मिक भावनाओ से ओत प्रोत है और वह जो कुछ करते हैं अपने और विश्व के कल्याण के हेतु समान रूप से करते हैं। उनके एक बार सकल्प करने की देर है कि अमुक कार्य से मानव जाति का मगल होगा फिर तुम तो क्या कोई भी उन्हें उनके निश्चय से विचलित नही कर सकता। मैं जब तक बापू से खुद बातचीत न कर लू तब तक उपवासो की शृखला की योजना के बारे में कोई राय नही दूगा। पर साधारणतया मैं इतना अवश्य कह सकता हू कि मेरे जैसा एक अदना आदमी उनकी महती योजनाओ के वास्तविक मर्म को कैसे समझ सकता है ? या यह कहो कि मैं उनके महान व्यक्तित्व से इतना चौंधिया गया हू कि अपनी विवेक बुद्धि के सबध में आत्म-विश्वास खो बैठा हू। पर मैं अक्सर इस नतीजे पर पहुचा हू कि जब कभी वह कोई उपहासास्पद सा प्रतीत होनेवाला कार्य करते हैं तो उसके पीछे कुछ-न-कुछ ठोस चीज अवश्य रहती है। जो व्यक्ति भगवान की वाणी सुन सकता है वह किसी सासारिक व्यक्ति की सलाह की ओर कदापि कान नही देगा। इसलिए हमारी सलाह का क्या महत्त्व है ? मैं उनसे बातचीत करने तक कुछ नही कहूगा। इस बीच में यह चाहूगा कि तुम घबराहट को अपने पास तक न फटकने दो। वह

जो कुछ करेंगे और ईश्वर की जो इच्छा होगी उससे मंगल ही होगा।

तुम्हारे चुपचाप रहकर अथवा विरोध करके यह सब सहन करने का प्रश्न ही नही उठता। तुम चाहे जो करो बापू एक बार निश्चय करने के बाद उससे डिगनेवाले नही है। हा हम सब अपने अपने ढग से दलीलें अवश्य पेश करेंगे, और हम सबमे मेरी आवाज सबसे अधिक क्षीण रहेगी पर इसका एक कारण यह हो सकता है कि उनके व्यक्तित्व मे मेरी अपेक्षा तुम कम चौंधियाये हुए हो। इस बीच मैं इस बात से आनन्द का अनुभव कर रहा हू कि उनकी अग्नि परीक्षा से सफलतापूर्वक निकलने की वेला निकट आ पहुची है। इसका फल और भी अधिक कल्याणकारी नही होगा, यह कौन कह सकता है? राजनतिक स्थिति के बारे मे मैं तुम्हे लिख ही चुका हू। (बगाल के) गवनर इस समय यहा नही हैं, यदि होते तो उनसे भेंट करता। सरकार का दिमाग इस समय किस दिशा मे काम कर रहा है, इस बारे मे फिलहाल अधिक जानकारी हासिल करना सम्भव प्रतीत होता।

तुम्हारा,
घनश्यामदास बिडला

श्री देवदास गाधी,
पर्णकुटी, पूना।

६२

कलकत्ता
२६ मई, १९३३

प्रिय देवदास,

इस चिट्ठी के साथ एक पत्र और कुछ कटिंग नत्थी कर रहा हू। इन्हे राजाजी को दिखा देना। कवीन्द्र रवीन्द्र ने (ब्रिटेन के) प्रधान मत्री को भेजे जानेवाले समुद्री तार के मसौदे मे कुछ सशोधन करने के मेरे सुझाव को मान लिया है इसलिए हस्ताक्षर करनेवालो मे अपना नाम भी देने को मैं राजी हो गया हू।

बापू का उपवास पूरा होने मे बस तीन दिन और रह गये हैं। कितने हर्ष का विषय है यह! बापू उपवास समाप्त कर लें तो उन्हें बता देना कि मैंने अपनी नाक का आपरेशन करा लिया है। नाक के भीतरी भाग मे एक स्थायी छिद्र कर दिया गया है और साथ ही नासिका की नली भी चौडी कर दी गई है। डाक्टर

यह निश्चयपूर्वक नही बता सका कि अब नासिका रन्ध्र को ठीक करने की दरकार है या नहीं। वह देखना चाहता है कि जो आपरेशन किया गया है उसका क्या परिणाम होता है। बापू यह सब विस्तार के साथ जानना चाहते थे, इसीलिए इस तमौरे में सिर खपा रहा हू।

बापू जब कभी मेरा आना पसन्द करें, तार दे देना।

तुम्हारा,
घनश्यामदास बिड़ला

श्री देवदास गाधी,
पर्णकुटी,
पूना

६३

कलकत्ता
२९ मई, १९३३

प्रिय देवदास,

अन्त म एक बडी चिन्ता से छुटकारा मिल गया। बापू के स्वास्थ्य के सबध मे लिखना। ऑपरेशन के बाद से दफ्तर नही गया हू क्योंकि कुछ दर्द है, और ज्वर भी हो जाता है। यह सब ऑपरेशन के उपरान्त होनेवाला ही था। ठीक होने म दो एक दिन और लगेंगे। यदि इस बीच बापू को मेरी जरूरत हो तो तार द्वारा सूचना देना, मैं रवाना होने को तयार रहूगा।

यह पत्र मैं बिडला पार्क म बोलकर लिखा रहा हू।

तुम्हारा,
घनश्यामदास बिडला

श्री देवदास गाधी,
पर्णकुटी,
पूना

६४

तार

पूना
२ जून १६३३

घनश्यामदासजी बिडला पाक
बालीगज कलकत्ता

आपरेशन करा लिया, इमस बापू सुखी हुए है। एक सप्ताह आराम करन को कहते है। आयें तो कुछ दिन ठहरन के लिए।

—दवदास

६५

कलकत्ता
६ जून, १६३३

प्रिय देवदाम

तुम्हारा एक और पत्र मिला है। तुम्हार कथन ने मुझे व्यग्र कर दिया है। वे लोग बापू को इतनी जल्दी जेल वापस ले जायेंगे इसकी ता मैं कल्पना तक नही कर सकता। मर ख्याल म तो जब तक बापू खुद उनसे न कहे तब तक व लोग ऐसा नही करेंगे। और जब बापू न दश तथा सरकार दोना को उत्तम सलाह दने का वचन दिया है तो मरी समझ म नही आता कि कोई सकट निकट भविष्य म आनवाला है। बापू जब तक चगे न हा ल कोई सलाह नही देंग। इसलिए मैं तो नही समझता कि उनके तुरत यरवडा वापस जाने की कोई सम्भावना है। जो हो मैं आगामी रविवार को यहा से रवाना होकर सीधा पूना पहुच रहा हू।

मेरा भी धारणा है कि बापू का यरवडा वापस लौटना अनिवाय है। सरकार का दिमाग सही कदम उठान की दिशा म काम नही कर रहा है। पर मेरा सुझाव है कि जहा तक सम्भव हो बापू को वतमान गतिरोध का अत करने मे सरकार की सहायता करने की भरसक चेष्टा करनी चाहिए। ऐसा करने मे वह कुछ खोयेंगे

नहीं, उल्टे यह स्पष्ट करके कि उन्होंने दुबारा शांति स्थापित करने की भरसक चेष्टा की, वह बापू कुछ हासिल करेंगे।

एक बात ऐसी है जिस लेकर बापी गलतफहमी फैली हुई है। मैं बापू का जितना कुछ समझ पाया हूं उसके आधार पर कह सकता हूं कि उनके लिए सविनय अवज्ञा आन्दोलन विशुद्ध राजनैतिक आन्दोलन नहीं है। कुछ परिस्थितियों में कानून की अवज्ञा उनके निकट एक धार्मिक विषय बन जाता है और चूंकि यह उनके धर्म का एक अंग है इसलिए युद्ध हो अथवा शांति, वह आन्दोलन के दार्शनिक पहलू पर अड़े रहेंगे। एक औसत दर्जे के अंग्रेज के मानस में इस दार्शनिक पहलू की बात नहीं उतर पाती है। उसकी दृष्टि में कानून की अवज्ञा एक ग्रालिस अपराध है। मेरी समझ में बापू का दार्शनिक पहलू और सविनय अवज्ञा आन्दोलन में क्या अंतर है इसका स्पष्टीकरण कर देना चाहिए। उनके लिए यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि सविनय अवज्ञा आन्दोलन का अंत तथा शांति स्थापित हो जाने के बावजूद जहां तक उनका सम्बन्ध है, वह उनके निकट एक सजीव तथ्य बना रहेगा। इस दार्शनिक पहलूवाली बात को अलग रखते हुए यदि बापू यरवडा वापस जाने से पहले वाइसराय भारत मंत्री तथा अन्य मित्रों का दरवाजा न खटखटायें, इसका मैं कोई कारण नहीं देख पाता।

पारसनाथजी[1] फिलहाल अपने गांव में हैं। उन्हें बुला भेजने की कोई जरूरत नहीं है। हम दोनों आपस में ही बात कर लेंगे।

तुम्हें शायद मालूम हो गया कि मैं गोविन्द (मालवीय) जी की कम्पनी का चेयरमैन हो गया हूं। वह मेरे पास आये थे, और जब मैंने उनसे यह बात मनवा ली कि भविष्य में वह राजनीति से दूर रहेंगे और अपना सारा समय लगन के साथ काम धंधे में लगायेंगे तब कहीं जाकर मैंने यह पद ग्रहण करना स्वीकार किया।

तुम्हारा,
घनश्यामदास बिड़ला

श्री देवदास गांधी
पर्णकुटी
पूना।

१ मेरे सचिव —घ०

६६

कलकत्ता
६ जून, १६३३

प्रिय देवदास,

मुझे अपने बम्बई के आफिस से पता चला है कि बापू की ओर से हरिजन कोष में १५०८४) (अके पन्द्रह हजार चौरासी रुपये) जमा कराये गये हैं। यह रकम उस कोष के हिसाब मे जमा कर दी गई है।

यह केवल बापू की सूचनार्थ है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास बिड़ला

श्री देवदास गांधी
पर्णकुटी
पूना।

६७

दिल्ली
१२ अगस्त १६३३

पूज्य बापू,

आपके पास से अभी तक कोई खबर नही आई है, पर मुझे आशा है कि यह पत्र आप तक पहुचने मे कोई कठिनाई नहीं होगी।

हम लोग अंग्रेजी 'हरिजन' के लिए सामग्री यहा से भेजते रहे हैं। आपके लेखो का अभाव बहुत खल रहा है, पर किसी न किसी तरह हम काम चला रहे है। हमे एक चमडा विशेषज्ञ मिल गया है, जो चमडे की सफाई और रंगाई पर कुछ न-कुछ लिखता रहेगा, और मुझे आशा है कि ऐसे लेख पाठको के लिए रुचिकर सिद्ध होगे। कुछ दिन तक इसी तरह चला लेंगे पर जब तक आप कुछ नहीं लिखेंगे, पत्र बढ़िया बनने से रहा।

ठक्कर बापा दौरे पर हैं कोई १८ तारीख तक वापस लौटने की बात है।

मैं जब से यहा आया हू, एक चमडे का स्कूल खोलने के प्रयत्न मे लगा हुआ हू। एक मिला जुला छात्रावास भी खोलने का काम हाथ म ले रखा है। उसमे हरिजन लडको के रहने की विशेष रूप से व्यवस्था रहेगी। कोई अच्छी-सी जमीन की तलाश है कुछ ही हफ्तो मे श्रीगणेश कर दिया जायेगा। इस दिशा म कोई सुझाव देना चाहे तो दीजिए। मेरे अनुमान के अनुसार जमीन खरीदने मे ५०००) लगेंगे, तथा छात्रावास चिनवाने में १०००) और। यह रुपया सोसाइटी के कोष मे से लेने का विचार है। हा सदस्या की औपचारिक मजूरी अवश्य हासिल कर ली जायगी। पर मैं यह मान लेता हू कि इस काम को आगे बढाने मे आपकी अनुमति है। बाकी खच एक वष तक अपने पास से दूगा।

लक्ष्मी[1] आन द मे है और जितना सम्भव है सुखी है। मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है। मुझे आशा है कि आप और महादेव भाई बिलकुल आराम से है।

स्नेह भाजन

घनश्यामदास

महात्मा गाधी,
पूना।

१ देवदास गाधी की पत्नी —घ०

६८

सत्याग्रह आश्रम
वर्धा
३० सितम्बर, १९३३

प्रिय घनश्यामदास

जसा कि तुम्हे विदित ही है पिछली १ अगस्त को आश्रमवालो न साबरमती की जमीन और इमारतें त्याग दी। मैंने सरकार को जो पत्र लिखा था उसके आधार पर मैं यह समझे बठा था कि वह परित्यक्त सम्पत्ति को अपने हाथ मे ले लेगी पर उसने ऐसा नहीं किया। ऐसी अवस्था म मेरा यह कत्तव्य हो गया कि निणय करू कि क्या करना ठीक रहेगा। मुझे लगा कि बहुमूल्य इमारतो को तथा उतनी ही मूल्यवान खेती और पेडो को देखभाल की व्यवस्था किये बगर नष्ट होने के लिए छोडना गलत होगा। मैंने मित्रो और सहकर्मियो के साथ सलाह मशवरा किया और अत में यह फसला किया कि आश्रम का सबसे अच्छा

उपयोग यह होगा कि उसे हमेशा के लिए हरिजनो की सेवा के लिए अर्पित कर दू। मैंने यह प्रस्ताव आश्रम के ट्रस्टियो के सम्मुख रखा जो मौजूद नही है। आश्रमवालो को भी यही सुझाव दिया। मुझे यह देखकर बडी प्रसन्नता हुई है कि उन सबने मेरी बात का खुले दिल से समर्थन किया है। आश्रम का परित्याग करने के समय यह आशा की गई थी कि किसी न किसी दिन सरकार के साथ सम्मानपूर्ण समझौते के द्वारा अथवा स्वतन्त्र भारत द्वारा अपने अभीष्ट की सफलता के परिणामस्वरूप ट्रस्टी लोग आश्रम को पुन अपने हाथ मे ले लेंगे। नये प्रस्ताव के अनुसार यह सम्पत्ति ट्रस्टियो के हाथ से बिलकुल निकल गई है। ट्रस्ट के दस्तावेज मे ऐसा करने की व्यवस्था है क्योकि उसका एक उद्देश्य हरिजनो की सेवा भी है। इस प्रकार यह प्रस्ताव आश्रम के विधान तथा ट्रस्ट की शर्तों की भावना और शब्दो के अनुरूप ही हुआ है।

मुझे तथा ट्रस्टियो को यह विचार करना था कि जिस उद्देश्य की मैंने ऊपर चर्चा की है उसकी पूर्ति के निमित्त यह सम्पत्ति किसके सुपुर्द की जाए। हम सब सम्मति से इस निर्णय पर पहुचे कि सम्पत्ति को अखिल भारतीय उपयोग के लिए अखिल भारतीय हरिजन सस्था को सौंपा जाए। ट्रस्ट के उद्देश्य इस प्रकार है

१) आश्रम की भूमि पर पसन्द किये गये हरिजन परिवारो को बनाये जाने वाले नियमो के अनुरूप बसाया जाए।

२) हरिजन बालक-बालिकाओ के आवास के लिए एक छात्रावास खोला जाये जिसमे गैर-हरिजनो को ठहराने की भी व्यवस्था रहे तथा

३) एक दस्तकारी विभाग खोला जाए जिसमे पशुओ की खाल उतारना, उन उतारी हुई खालो को साफ करना और रगना तथा इस प्रकार तैयार किये गये चमडे से जूते चप्पलें और नित्य व्यवहार मे आनेवाली अन्य वस्तुए तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जाए साथ ही मकानो का उपयोग केन्द्रीय बोर्ड या गुजरात प्रातीय सस्था के, या दोनो ही के कार्यालयो के लिए एव उन अन्य सम्बद्ध कार्यों के लिए किया जाए जो समिति को उचित जचें। इस समिति का गठन निम्नलिखित ढग से हो।

ट्रस्टियो की ओर से मेरा सुझाव है अस्पृश्य सेवक मण्डल (नामान्तरित हरिजन सेवक सघ) एक ऐसी विशेष समिति नियुक्त करे, जिसमे पदेन प्रमुख तथा सेक्रेटरी को भी रखा जाए साथ ही अहमदाबाद के तीन नागरिको को भी रखा जाए। इस समिति को अपने सदस्यो की सख्या मे वृद्धि करने ट्रस्ट को अपना लेने तथा उसके उद्देश्यो की पूर्ति करने का अधिकार रहेगा।

जो मित्र आश्रम के साथ अपना सबध बराबर बनाए रहे है अर्थात बुधाभाई और जेठाभाई, वे आश्रम म अवैतनिक प्रबधको की हैसियत से रहने को प्रस्तुत है। उनके अपना निर्वाह करने के निजी साधन है और वे चिरकाल से हरिजनो की सेवा म लगे आ रहे है। आश्रम मे एक और व्यक्ति ऐसा है जिसने अपना जीवन हरिजन-सेवा के लिए अर्पित कर दिया है और जो आश्रम मे रहने को प्रसन्नतापूवक राजी हो जायेगा। वह हरिजन बालक-बालिकाओ के शिक्षण काय म विशेषज्ञ सा बन गया है। अत मैंने वैसी समिति का सुझाव दिया है। उसके लिए ट्रस्ट का प्रबध करना कठिन नही होगा, न यही आवश्यक है कि मैंने काय शीलता के जो जो अग गिनाए है उन सबको एकसाथ और तुरत ही हाथ मे लिया जाए। तुम्हे मालूम ही है कि इस समय भी आश्रम म कुछ हरिजन परिवार रह रहे हैं। आश्रम के सदस्यो का बराबर यही स्वप्न रहा है कि हरिजन परिवारो की एक बस्ती बने, पर कुछ एक परिवारो को बसाने के सिवा अभी तक इस दिशा म विशेष प्रगति नही हुई है। चमडा कमाने के प्रयोग भी किये गये थे। आश्रम के परित्याग की घडी तक चप्पलें बनाई जा रही थी। आश्रम की इमारतो म एक बडा-सा छात्रावास भी है जिसम १०० छात्र आराम से रह सकते हैं। कपडा बुनने के लिए एक काफी बडा शेड है और मैंने जो काम गिनाये है उनकी व्यवस्था अन्य इमारतो म सुगमता से हो सकती है। यह सम्पत्ति १०० एकड भूमि म फली हुई है। इसलिए मैं यह कह सकता हू कि उल्लिखित उद्देश्यो की पूर्ति के लिए स्थान आवश्यकता से भी अधिक बडा है पर आगे चलकर इस कायशीलता म जितनी वृद्धि की आशा ह उसे ध्यान मे रखा जाए, तो स्थान कुछ बहुत बडा भी नही है। आशा है सोसाइटी ट्रस्टियो के प्रस्ताव को स्वीकार करेगी तथा इसम निहित उत्तरदायित्व का भली भाति निर्वाह करगी।

भवदीय

मो॰ क॰ गाधी

श्री घनश्यामदास बिडला
प्रधान हरिजन-सेवक मण्डल
बिडला मिल,
दिल्ली।

६६

५ अक्तूबर, १६३३

पूज्य बापू

आश्रम को मडल को सौंपने के आपके प्रस्ताव को मजूर करने की सूचना मैंने तार द्वारा द दी है। पहले तो मैं इस दुविधा म पड गया कि आश्रम की देखरेख का काम इतनी दूर से कसे निभाया जायेगा पर फिर इस जानकारी न कि आपके कुछ विश्वासी आदमी आश्रम म ही रहगे मेरे सशय का निवारण कर दिया। मुझ आशा है कि आपने हम लोगो म जो आस्था व्यक्त की है हम अपने आपको उसका अधिकारी साबित कर सकेंगे। मैंने केन्द्रीय बोड के सदस्यो की राय लिये बिना ही आपका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया क्योकि मुझे पूरा भरोसा था कि वे मेरे काय का सहष अनुमोदन करेंगे। आपने अपने पत्र के दूसरे परे म जो चार उद्देश्य गिनाये हैं उन्हे मण्डल हमेशा अपने सामन रखेगा।

आपकी देन और हमारी मजूरी के फलस्वरूप कुछ विचारणीय प्रश्न और उठ खडे हुए है। अब तक हमारे पास बक म जमा रकम को छोड किसी प्रकार की सम्पत्ति नही थी हा हम एक हरिजन छात्रावास के लिए दिल्ली म जमीन खरीदन की बात अवश्य सोच रहे थ। पर अब आपकी देन को स्वीकार करने के बाद हमारे पास बहुमूल्य अचल सम्पत्ति हो जायेगी। प्रश्न तत्काल उठता है कि इस सम्पत्ति का स्वामी कौन होगा? क्या हरिजन मण्डल? यदि ऐसी बात है तो व्यावहारिक दष्टि से हरिजन मण्डल से अभिप्राय उन लोगो से होगा जिनकी अनुमति से वह अस्तित्व में हो जबकि इस समय मडल म अनुमति नाम की कोइ वस्तु नही है। फलत हम यह निणय करना होगा कि हम भविष्य के लिए किस प्रकार का विधान बनायें। मैं सस्थाओ के गठन के मामल म जरूरत स ज्यादा प्रजातत्रीय तत्व रखने के पक्ष म नही हू। प्रब ध काय म प्रजातत्रीय तत्वो को प्रश्रय दने का एकमात्र परिणाम यह होता है कि दलब दी को प्रोत्साहन मिलता ह। और राजमर्रा की व्यवस्था म कठिनाइया उपस्थित होती है। पर साथ ही जहा लाखो की सम्पत्तिवाली सस्था के प्रबध का प्रश्न हा वहा आवश्यकता से अधिक एकतत्रीय विधान भी ठीक नही है। शायद इन दोनो प्रकार के दूषणो म बचन का उचित माग यही होगा कि विधान न तो जरूरत से ज्यादा एकतत्रीय हो और न आवश्यकता से अधिक प्रजातत्रीय। पता नही आपको यह सुझाव कसा लगगा कि कोई एक दजन ऐसे व्यक्तियो को छाटा जाय जो आजीवन

मडल की सेवा का व्रत लें। इन्ही को सस्थापक सदस्य माना जाए और क्वल ये ही वोट देने के अधिकारी हो। जो अपक्षाकृत अधिक व्यापक अधिकार अध्यक्ष का मिल हुए है, वे सदस्या का दिय जाए। यदि आपका यह सुभाव रुचिकर लग, तो मेरा दूसरा सुझाव यह है कि सम्पत्ति को रखने के लिए टस्टिया का एक अलग बोड बनाया जाय। उस बोड का यह अधिकार रह कि यदि वह यह देखे कि हरिजन बोड सम्पत्ति का उचित उपयोग नही कर रहा है तो वह सम्पत्ति को उससे वापस ले ले। यह दूसरा सुझाव तभी अपनाना ठीक रहगा, जब हम यह फसला करें कि मडल का प्रजातत्रीय ढाचा ही उपादेय है। आपन पाच व्यक्तिया की समिति के गठन का सुझाव दिया है। इनम स तीन व्यक्ति अहमदाबाद के नागरिक होगे तथा बाकी दो व्यक्ति मडल के अध्यक्ष और मत्री होग। मुझे यह ज्ञान नही है कि इस समिति के जिम्मे ट्रस्टियो के रूप मे आश्रम की सम्पत्ति के प्रबध का काम रहेगा, अथवा वह परामश मात्र देगी। यदि यह समिति ट्रस्टियो के रूप मे काम करेगी, तो इस व्यवस्था म मडल की क्या हैसियत होगी और अहमदाबाद के नागरिका के निर्वाचन म कौन-सी प्रणाली अपनाई जायगी ? और यदि ट्रस्ट बोड प्रजातत्रीय ढाचे का होगा तो उसम मडल के अध्यक्ष और मत्री मण्डल का किस रूप मे प्रतिनिधित्व करेंगे ? अपने वतमान रूप मे विधान के अतगत क्या कठिनाइया उपस्थित होगी तथा हद दर्जे के प्रजातत्रीय विधान के अन्तगत क्या कठिनाइया सामने आयेंगी इसका, मैं समझता हू मैंने यथेष्ट दिग्दशन करा दिया है। मैं चाहता हू कि आप इस प्रश्न पर भली भाति विचार करके मुझे अपना सुझाव दें। यदि हम किसी सम्पत्ति का जिम्मा नही लेना हो तब तो वतमान विधान ही अच्छा खासा है।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधी,
वर्धा

७०

८ १० ३३

भाई घनश्यामदास

गोपी[1] का अच्छी तरह चल रहा है खुश रहती है। मैंने गजानन[2] को खत लिखा है।

बापू के आशीर्वाद

१ श्री रामेश्वरदास बिडला की पुत्रवधू गजानन की पत्नी
२ श्री रामेश्वरदास बिडला का ज्येष्ठ पुत्र

७१

सत्याग्रह-आश्रम
वर्धा
८ अक्तूबर, १९३३

प्रिय घनश्यामदास

तुम्हारा पत्र मिला।

तुमने जो कठिनाइयां बताई है वह तो हैं ही और उसकी सम्भावना को सामने रखकर ही मैंने एक ट्रस्टी बोर्ड बनाने का सुझाव दिया था। मेरा प्रस्ताव है कि कुछ निश्चित शर्तों के साथ सम्पत्ति को इन ट्रस्टियों के जिम्मे स्थायी रूप से कर दिया जाए। उन्हें सम्पत्ति को बेचने तक का अधिकार रहे। संस्था पर चाहे जो बीते तुम और ठक्कर बापा उसके स्थायी सदस्य रहें। इस सुझाव के द्वारा उस प्रश्न का पूरी तरह निबटारा हो जाता है जिसने एक बृहत्तर प्रश्न को जन्म दिया है। उसकी चर्चा मैं समय न रहने के कारण इस पत्र म नहीं करूंगा। इस बीच मैं चाहूंगा कि तुम अखिल भारतीय चरखा संघ के विधान का अध्ययन करो। हमारी भेंट होने तक उसकी चर्चा स्थगित रखी जाय। मैं यहां ७ नवम्बर तक हूं। इसलिए तुम्हारे लिए यहां आना शायद सम्भव रहे भले इस एक प्रश्न पर विचार विमर्श करने के लिए ही सही।

तुमने दिल्ली में छात्रावास खोलने के बारे में अपने विचार का उल्लेख किया है। हमारे पास आश्रम की जमीन और इमारतें है तब दिल्लीवाले प्रस्ताव का

कार्यान्वित करने की क्या जल्दी है ? एक नयी योजना को हाथ मे लेने से पहले साबरमतीवाली योजना को कार्यान्वित होते देखना क्या अधिक उपयुक्त नही होगा ? मेरे विचार मे तो हम साबरमतीवाली योजना को पूर्ण तथा सफल बनाने पर ही पूरा ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। उसीमे हममे से अनेक की सारी शक्ति और सामर्थ्य खप जायगी।

आशा है, तुम स्वस्थ होगे। तुम्हारी नाक का क्या हुआ ? इन दिनो तो दिल्ली का मौसम काफी अच्छा होना चाहिए।

सस्नेह
बापू

श्री घनश्यामदास बिडला,
बिडला हाउस,
अलबूकर्क रोड,
नई दिल्ली।

७२

न० ११४९६
केन्द्रीय जेल,
हिंडालगा जिला बेलगाव
१२-१० ३३

अत्यत प्रिय बहन

लम्बी प्रतीक्षा के बाद आपका अपेक्षित पत्र (आपका दूसरा पत्र) आ ही पहुचा। साथ मे, जीवणजी का भारी भरकम पत्र भी आ गया। हार्दिक धन्यवाद। आप मेरी ही जैसी असहायावस्था मे थी, इसलिए आप समझ सकती हैं कि यह कृतज्ञता की भावना कितनी सच्ची है। मैं आपको ठीक एक महीने बाद लिख रहा हू क्योकि मैंने दूसरा पत्र दुर्गा[1] को लिखा था। उस बेचारी को अब तक मेरा कोई पत्र मिला ही नही। इसलिए मैंने इस पखवाडे लिखे जानेवाले पत्रो मे मे एक पत्र उसे आपको तथा बापू को लिखने का निश्चय कर लिया था। सबसे पहले तो आप बापू से कह दीजिए कि वह मुझे पत्र स्वय लिखे अथवा बोलकर

[1] महादेवभाई की पत्नी

लिखाने का विचार तक न करें। केवल आपका पत्र, और यदि आप कार्य-व्यस्त हो तो चद्रशेखर का पत्र यथेष्ट होगा। बापू का अंतिम पत्र दो शिफ्टो म लिखा गया था। विश्वास करिए मैं इस योग्य नही हू। पुराना वर्ष बीत गया, अब नया वर्ष आ लगा है, इस दरम्यान मैंने अपने कद मे एक इच तक की वृद्धि नही की है। पिछले कुछ महीनो के घटनाक्रम की बात सोचता हू तो कभी-कभी दिल बठने लगता है। आश्रम का त्याग बापू के लिए अब से २६ वर्ष पहले दक्षिण अफ्रिका म बसे-बसाये घर के त्याग से भी अधिक करुणासिक्त साधुता का काय है। पर मेरे लिए तो इस काय म एक ऐसी व्यथापूर्ण पीडा निहित है जो मुझे अपने असह्य भार स कुचल सी रही है। किस प्रकार सो भी बताता हू। बापू के इस काय मे मुझे टाल्स्टाय के त्याग की ध्वनि मिलती है—उन टाल्स्टाय के त्याग की जो यह कदम उठाने को बाध्य हो गये थे क्योकि वह अपने जीवन और अपने आदर्शों से अपने वातावरण को अनुप्राणित करने मे असफल रहे थ। आप मेरी बात को गलत नही समझेंगी गलत समझ भी नही सकती है यह मैं जानता हू। मुझे इसका असीम हर्ष है कि आश्रम चला गया और अब उन हाथो मे पहुच गया, जो उसके मुझसे अधिक अधिकारी हैं। यदि मैं कभी उसका अधिकारी सिद्ध हुआ होऊ पर साथ ही-साथ मेरे मन म यह भाव उठते है कि यदि मैं सच्चा होता यदि बापू की जीवनी मुझम तथा औरो म प्रतिध्वनित हो पाती तो यह त्याग कोई दूसरा रूप धारण करता। मैं अपनी बात स्पष्ट कर सका हू या नही कह नही सकता पर मैं अपनी अनुभूति की बात कह रहा हू। ओफ, काश मैं उस भारतीय ज्वाला को जो मेरे हृदय को विदग्ध किये हुए है शब्दो के माध्यम से आपके सम्मुख उडेल पाता। इस ज्वाला की जन्मधात्री अपने चारो ओर फली हुई निरथकता है क्योकि इसने शोक विह्वलता और दुःख की भावना को उद्दीप्त किया है। पर मैं इस ज्वाला से आपको क्यो झुलसने दू? और फिर दूसरे ही क्षण इस अनुभूति का स्थान भगवान के प्रति कृतज्ञता की अनुभूति ले लेती है कि उसने मुझे और कुछ होने से बचाए रखा है।

विनती सुन लो हे भगवान !
सदा रहू म दास तुम्हारा
वर दो यही कामना मेरी
रहू आह्लादित इसी दशा म
जिसमे रखो हे भगवान !

इस एकाकी जीवन का आनन्द लेनेवाले जीव के हृदय मे प्रतिक्षण एकमात्र

यही प्राथना गूजती रहती है। पर मुझमे इतनी पवित्रता कहा जो भगवान् मेरी प्राथना की ओर ध्यान दें ? जनरल गोडन की भी यही प्राथना थी। वह अतिशय ईश्वर भीरु व्यक्ति थे। अ य सभी बाह्य बाता मे वह बापू से बिलकुल भि न थे। पर एक बात म दोनो मे सादृश्य था। पूण आत्मसमपण की भावना जो उ होने एसे शब्दो मे यक्त की कि वे शब्द अब तक स्मरणीय है। मैं यह सब खुद कुछ नही कर रहा हू। मैं तो एक रुखानी मात्र हू,जो लक्डी तराशती है। बढई इस रुखानी से काम लेता है, और यदि उसकी धार कु द हो जाती है तो वह उसे तेज करता है। यदि वह उसे एक ओर रखकर दूसरी रुखानी से काम लेना शुरू कर देता है तो यह भी एकमात्र उसी की सदिच्छा है। भगवान के लिए कुछ भी अनिवाय नही है। यदि वह चाहे तो एक तिनके स भी उतना ही काम ले सकता है। मैं बापू को भी उनके जीवन के प्रत्येक चरण म अक्षरश यही कहत सुन पाता हू। और, मैं इस नूतन वष म इस प्राथना मे केवल एक परिवतन के साथ प्रवेश कर रहा हू कि जहा भी हो मैं भगवान् के स्थान पर 'बापू' शब्द का यवहार करना चाहूगा। इसका कारण भी स्पष्ट है। मैंन भगवान के दशन तो नही किये हैं पर बापू के थोडे-बहुत दशन अवश्य किये है।

पर बहुत हुआ। अब मैं इस पुनरुज्जीवित आश्रम के लिए अपक्षाकृत अधिक उज्ज्वल भविष्य की प्रतीक्षा मे हू। बापू ने बिडला (जी) को जो चिट्ठी लिखी है, और जो 'टाइम्स' म छपी है उसस पता चलता है कि गर हरिजन लडको को भी लिया जायगा। ऐसे गर-हरिजन परिवारा को क्या नही, जो हरिजनो के साथ अपना भि न अस्तित्व पूरी तरह लोप करन को तयार न हो ? और हरिजन सेवक मडल को टस्केजी' (अमरिका के टस्केजी इस्टीट्यूट से अभिप्राय है जिसकी स्थापना बुकर टी० वाशिगटन ने १८८१ मे सहशिक्षा कालेज के रूप म की थी, इस समय यह एक विशाल शिक्षा के द्र बन गया है।) जैसा रूप क्या नही दना चाहिए ?

बिडलाजी की भजी पुस्तकें पिछले हफ्ते ही मिली। नोटबुक कल आयगी। उसके मिलत ही उसे हाथ लगा दूगा। जेल म रहन स और कुछ हासिल हो या न हो, आदमी सत्र करना अवश्य सीख जाता है। मैं तिलक महाराज की देन मूल मराठी म चाहता था पर बिडलाजी ने यह समझा होगा कि मेरा मराठी का ज्ञान उनके अपने ज्ञान के तुल्य है इसलिए उ होंने पुस्तकें गुजराती मे भेजी हैं। गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित शकराचाय की व्याख्या-सहित पुस्तक अभी तक नही पहुची हैं। क्या आपमे से कोई हनुमानप्रसाद पोद्दार को लिखकर उनसे पुस्तक शीघ्र भेजने का आग्रह करेगा ? मथुरादास ने पूना से बौद्ध धम पर

लिखी जो पुस्तक भेजी है वह गलत पुस्तक भेजी है ? मैं गौड लिखित पुस्तक चाहता था। पर एसी भूलें तो होगी ही। अब आप गौड लिखित पुस्तक भिजवाने का सिर दद मोल मत लीजिए। अब मेरे पास पुस्तकों का इतना ढेर लग गया है कि मैं उनके बोझ से दब जाऊगा।

आपने वहा के पुरुषों (और स्त्रियो) तथा वहा के हालचाल का सजीव चित्रण किया है। आदमी को चिन्ता स मारने के लिए बस एक दिन का काम काफी है। पर बापू का साधु स्वभाव उस अवस्था म निबट लेता होगा। हमेशा स एसा ही होता आ रहा ह और ऐसा ही होता रहेगा क्योंकि उनकी साधुवृत्ति पिछले दिन को अगले दिन से अविच्छिन्न सबध बनाय रखती है। वहा के व्यक्तियो का ऐसा चरित्र चित्रण किया है माना वे सजीव सामने आ खडे हुए हो। मैं यरवडा जेल म था तो नीला (नागिनी) के अपना अपराध कबूलने के पश्चात उसम विक्षिप्तता के लक्षण देखे थे। मैंने बापू को यह बतला दिया था। पर उसके मानसिक उन्माद म उत्कप या कुछ ऐसा विचित्र पुट है कि उसका ढाग विशेष रूप से खतरनाक सिद्ध होता है। यह भी हो सकता है कि उसकी वतमान विक्षिप्तता पहले की कृत्रिम विक्षिप्तता का परिणाम मात्र हो। नीला को वश म रखना मुश्किल हो रहा है, इसलिए उसका इलाज बिलकुल असम्भव है। वह जितनी मूख है उतनी ही स्नेह भाजन भी है। मुझे तो वह बराबर अच्छी ही लगी, यद्यपि उसने मुझे अपशब्द कहने म कोई कोर-कसर नही छोडी थी। पर वह कभी मुझ पर फिदा भी तो थी। अब वह आप पर फिदा है। उसका यह विमोह आपको भले ही अच्छा न लगे पर मुझे उसके पुनर्निर्माण का भान होता है बशर्ते कि उसकी यह भावना कुछ दिन टिकी रहे। क्योकि उसकी यह दुबलता प्रबल अरुचि का रूप भी धारण कर सकती है। सावधान रहिए।

इस सारे व्यापार के फलस्वरूप जमनालालजी को शाति नसीब नही होती होगी और यदि किसी दिन बापू न शाति प्रदान करने के लिए एक न एक दिन यह शिविर तोड दिया तो मुझे आश्चय नही होगा। जीवन बिलकुल विनोद विहीन ही हो एसी बात नहा है जसा कि पत्रो मे छपे समाचार से प्रकट होता है। जापानी भिक्षुओ के आगमन ने आपके लिए कुतूहल की सामग्री पर्याप्त मात्रा म जुटा दी होगी। उन्हें बापू ने जो पत्र लिखा है वह 'गागर म सागर' के समान है और बौद्ध धम पर लिखी ढेर की ढेर पुस्तको द्वारा बनाई गई बातो स वह कही अधिक सामग्री प्रस्तुत करता है।

काका (कालेलकर) आजकल कहा हैं और क्या कर रहे है ? विनोबा के बारे मे आपने कुछ नही लिखा। क्या वह भी वही हैं, या गावो म हैं ? नारणदास

भाई कहा हैं ? आपको हमारे दल के इन सदस्या मे से किसी के पत्र मिलते हैं, या मैं ही एक ऐसा व्यक्ति हू जिसे महीने म एक बार गप शप का रस लेने की सुविधा मिली है ? और हा यह मत भूलिये कि मैं चाहे महीने म एक ही पत्र लिख पाऊ, आप मुझे दो बार पत्र भेज सकती हैं—१२ को और २७ को। ये दो दिन मेरे लिए उत्सव के दिन है जब मैं अपने प्रियजना को पत्र लिख सकता हू और उनके पत्र प्राप्त कर सकता हू। देवदास का कोई पत्र आया ? उनका पत्र प्राप्त करने की मुझे कितनी चाह है—उनके अस्पष्ट लिपि मे लिखे गये पत्र की। पर आशा है अब तक लक्ष्मी ने उन्हे सुस्पष्ट रूप म लिखना सिखा दिया होगा। रामदास कहा है ? आनन्दपूर्वक तो हैं ?

बाबला[1] आपके लिए रुचि की सामग्री सिद्ध हुआ है यह जानकर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ है। यह मत भूलिए कि वह मेरा पुत्र है। उसम जो अच्छाइया हैं वे ईश्वरप्रदत्त है जो बुराइया हैं वे काकाप्रदत्त हैं। इसलिए वह जिस किसी की देखरेख मे हो—पता नही वह इस समय कहा है—उसे बाबला को नही, मुझे निभाना है। पता लगाइये वह कहा है और मुझे बतलाइये। मैं समझता हू उसका बलसाड मे रहना उत्तम रहेगा। मैं अपनी विचारधारा इस निरीह बालक पर कैसे लादू ? ऐसा करना तो निरी हिंसा होगी।

ग्रेस टान से प्राप्त पत्र का एक अश देता हू जिसे पढकर आप तथा बापू खुश होंगे। बापू को उन एडिथ राबर्ट्स की याद आ जायगी जिन्होने कुछ समय पहले आश्रम के निमित्त २५ पौंड भेजे थे और श्रीमती ग्रैस टान को एक चरखा भेजने का अनुरोध किया था। मैंने उन्हे चरखा भिजवा दिया था और एक चिट्ठी भी लिखी थी। वह लिखती हैं कि चरखा ठीक हालत म पहुच गया है। उनकी चिट्ठी गोडालमिंग से आई है। वह कहती हैं 'आपको शायद यह जानकर प्रसन्नता होगी कि यहा हाल ही मे तरुण-तरुणियो का पखवाडे भर का एक अन्तर्राष्ट्रीय शिविर लगा था, जिसम कुछ भारतीय विद्यार्थी भी थे। उनम से एक को मैंने आपका पत्र दिखाया, तो उसका चेहरा दिप उठा। उसने मुझे बताया कि अपने अध्ययन के कठिन भाग को पूरा करने के पश्चात वह नित्य आधा घण्टा कातने म लगायेगा।"

याद आ गई। चरखे के लिए एक अच्छा-सा तकुआ—वैसा ही जैसा बापू काम म लाते हैं—भेजिये। जो तकुआ मेरे पास है वह ठीक काम नहीं दे रहा है और यद्यपि छगनदास की पूनिया देखने म अच्छी हैं पर काम ठीक नहीं

[1] महादेव भाई का पुत्र नारायण

देती। बीच-बीच में काम ठप्प हो जाता है सो उनके कारण उतना नहीं, जितना तकुए के कारण। इसलिए क्या आप एक तकुआ भेज सकेंगी ? और केशू से पूछकर यह भी लिखिए कि चरखे के पहिये के नीचे के कल-पुर्जों को निकालना सम्भव न हो तो उनकी सफाई किस तरह की जाय ? आपको मालूम ही होगा कि मेरे पास वह खास चरखा है जो उन्होंने बापू के लिए तैयार किया था। पहिया का कस निकाला जाता है यह अवश्य बताइए।

पत्र काफी लम्बा हो गया है अब लेखनी को विश्राम दूगा। यदि आपके पास अमला या और कोई उदासी का अनुभव कर रहा हो तो उस—वह स्त्री हो या पुरुष—टाइम्स आफ इडिया में रविवासरीय रूम्री में उद्धत निम्नांकित साहित्य का पारायण करना चाहिए। पत्र का प्रारम्भ गम्भीर विषय को लेकर किया गया था इसका अंत अब कौतुक के रूप में होता है।

समाचार वितरण के उन्नत साधना के बावजूद समाचार पत्रों के लिए गांधीजी की गतिविधि की जानकारी रखना असम्भव-सा साबित हो रहा है। कम-से-कम मुझे इस बारे में संदेह रहता है कि यह शहीद कहां है। आज वह जेल में बताया जाता है अगले दिन उसे जमानत पर रिहा कर दिया जाता है। और, जब मुझे लगता है कि आखिरकार वह स्वतंत्रता का अनुभव कर रहा है,तभी मुझे पढ़ने को मिलता है कि वह फिर जेल चला गया है और तेजी से उपवास करने में लगा हुआ है। और इधर मुझे उसके मरणासन्न होने के समाचार मिलते हैं उधर यह पढ़ने को मिलता है कि वह जेल के बाहर अगूर खा रहा है। यह अंगूर हजम होते न-होते यह पकड़ाई में न आनेवाला व्यक्ति फिर गिरफ्तार कर लिया जाता है। दस और एक की बाजी के साथ यह कहा जा सकता है कि यह बेचारा घुमक्कड़ परोल पर रिहा कर दिया जायगा। पर आज वह स्वतंत्र रहेगा या नहीं, यह मैं निश्चयपूर्वक नहीं बता सकता। यदि प्रातःकालीन पत्रों में से कोई इस महात्मा की कलाबाजी को नियमित रूप से एक विशेष संवाद के तौर दे तो कितना अच्छा हो! शीर्षक रहे दैनिक गांधी'।'

—डब्ल्यू० बर्नेट

इसमें और किसी का मनोरंजन हो या न हो बापू का अवश्य होगा—साथ ही देवदास का भी। यह काटकर देवदास के पास भेज दीजिए, भेजेंगी न ? इस पत्र के साथ भेजी चिट्ठी बाबला के लिए है। आपको तथा और सबको उनके हिस्से में आनेवाला मेरा प्रणाम या स्नेह।

सदैव आपका ही

महादेव

७३

१८ अक्तूबर ३३

भाइ घनश्यामदास,

लिखने की बहुत इच्छा होते हुए भी मैं आज तक लिख न सका। जमनालाल दशनाभिलाषियो से तो खूब बचा लेते है लेकिन खतो से कौन बचा सके ? कभी डेस्क साफ नहि कर पाता हू। क्योकि जल्दी सो जाने का भी कानून लगा दिया है। यह खत तीन बजे उठकर लिख रहा हू। अथ यह नहि कि इसी खत के कारण मैं उठा हू। रात्रि को जहा तक जागने की इजाजत है उसमे भी जतु इतन सताते हैं कुछ काम नही करने देते।

जवाहरलाल के बारे म तुमारा लेख पढा अच्छा है। लिखने म कोई हानि नहीं हुई। एक दूसरा के अभिप्राय को दबाने की कुछ भी जरूरत नहि हो सकती है। जहा सत्य की ही शोधना करनी है वहा अभिप्राय छुपाना दोप बन जाता है। जवाहरलाल को तो लेख भेजा होगा, अथवा भेजो। वह बहुत सीधा पुरुप है, अपनी भूल सुधारता है। मुझे विश्वास है कि अन्त म वह सत्य के पथ पर ही आ जायगा और उसीकी विचार श्रेणी योग्य होगी तो पीछे कहना ही क्या था ? समानता का अथ एकरूप कभी नहि हो सकता। समानता का अथ एक न्याय ही है। अणु और हिमालय मे ईश्वर के सामने कोई फक नही हो सकता है। जसा हिमालय को, ऐसे ही अणु को।

गोपी कल गइ। मैं ज्यादा बात ता नहि कर सका, लेकिन नित्य मेरे पास आकर बठ जाती थी। अत्यत सरल लडकी है। यहा बहुत आन द मे रहती थी। सबस बोलती थी। दीवाली के कारण मुबई चली गई। मुबई की राशनी भी देखना चाहती थी। दीवाली के बाद फिर आ जावे ता अच्छा होगा। वह शीघ्र तयार हो जावेगी इसम मुझे कुछ सदेह नहि है। गजानन को मैंने लिखा था उसका उत्तर उसन दिया है। गोपी स भी खत लिखवाया था। तुम्हारे स्वास्थ्य के बारे म लिखो।

बापु के आशीर्वाद

हरिजन के बारे मे इग्रजी म लिखवाऊगा। आखर म गोपी रही बहुत अच्छा हुआ।

७४

सत्याग्रह-आश्रम
वर्धा
१६ १० ३३

प्रिय बन्धुवर

मुझे यकीन है कि आप महादेव की ताजा चिट्ठी की नकल चाहेंगे। यह रही। इस तरह बिलकुल अकेले रहना खलता अवश्य है। पर वह अपने इस एकाकी जीवन का अच्छे-से-अच्छा उपयोग कर रहे हैं।

बापू अब बड़े सुख म हैं। पहले से कही अधिक स्वस्थ दिखाई पड़ते हैं। उनका वजन १०४ पौंड है रक्तचाप उच्च १५५ और निम्न १०० है। ८ नवम्बर आते-आते वह दौरा करने लायक हो जायेंगे। पर तब भी उन्हें परिश्रम से जितना बचाया जा सके अच्छा है। इसका बदोबस्त करने के लिए आप कुछ पहल करेंगे न ? उसके बाद सारी जिम्मेदारी हमारी।

आज जोरो की वर्षा हो रही है और बडी तेज हवा चल रही है। यह सब अचानक ही हुआ है। पर इसके बाद मैं समझती हू शरद ऋतु का आरम्भ हो जायगा। बापू का दौरा तत्काल आरम्भ नही हो रहा है सो अच्छा ही है।

भारत के बाहर मित्रो को लिखते समय मैं आपके साथ बम्बई म हुई बात याद रखती हू। पर आप समझते ही होगे कि यहा की स्थिति का उल्लेख मैं सरसरे तौर पर ही करती हू।

आपकी बहन,
मीरा

७५

सत्याग्रह-आश्रम
वर्धा
२६ अक्तूबर १९३३

प्रिय घनश्यामदास

तुम्हारी हिन्दी की चिट्ठी का उत्तर अग्रेजी म बोलकर लिखाना पड रहा है।

हरिजन सेवक सघ के विधान के बारे म और अधिक लिखने की जरूरत नही थी। हम अद्ध प्रजातत्रीय सस्था को तुरत जन्म देना है या देर से यह एक ऐसी

बात है जिस पर विचार किया जा सकता है। नियुक्ति के अंतर्गत अधिकार भी आते हैं या नहीं, सो तो मैं नहीं जानता पर मैंने जिस कार्यविधि का सुझाव दिया था वह व्यवहार्य अवश्य है और उसे तुरत व्यावहारिक रूप दिया जा सकता है। वह कार्यविधि यही है कि आश्रम की रजिस्ट्री उन ट्रस्टियों के नाम में करा ली जाय जिनका मैंने उल्लेख किया था। तुम अपनी योजना के बारे में ठक्कर बापा और हरिजी[1] के साथ विचार विनिमय करो तो ठीक रहेगा।

चरखा-संघ के संचालन कार्य में मुझे पूर्ण स्वतंत्रता थी और मैंने जो कार्यविधि तैयार की थी उसके अंतर्गत संघ का सुचारु रूप से चलाना सम्भव हो गया था साथ ही उसके प्रजातंत्रीय विकास की बहुत बड़ी गुंजाइश रखी गई थी। आश्रम को हस्तांतरित करने का निर्णय होने के तुरत बाद मैं तुम्हें लिखना चाहता था कि इस उपलब्धि के बाद दिल्लीवाली महत्त्वाकांक्षापूर्ण योजना को हाथ में लेने का विचार छोड़ दिया जाए। पर छात्रावासवाली योजना सुंदर है। वास्तव में, हमें बस अनेक छात्रावासों की जरूरत होगी और उनमें से अनेक वांछनीय संभावनाओं का जन्म हो सकता है बशर्ते कि उनका प्रबंध ठीक ठीक हो। जब मैं दिल्ली आऊं तो मुझसे जो काम लेना चाहो, ले सकते हो।

बिहारीलाल के बारे में बात यह है कि यदि वह छात्रावासवाली योजना और उससे संबंधित कार्य में सहयोग देने को तैयार हों तो उनकी सेवाओं का उपयोग किया जा सकता है। पर उपदेशक लोग चाहे हरिजन हों चाहे कोई और मैं उनको पैसा देकर उपदेश कराने के सख्त खिलाफ हूं। इस मामले में हमें दृढ़ता से काम लेना होगा।

मेरे दिल्ली में ठहरने की व्यवस्था तुम्हीं कर लेना, वैसे तो मैं लक्ष्मीनारायण (गाडोदिया) के यहां ठहरने की सोच रहा था। मैं पुरानी परिचित जगहों पर ठहरना पसन्द करता हूं हां, नया के दोस्त करने का कोई विशेष कारण आ जाये, तो बात दूसरी है। मेरे स्वास्थ्य की बात का ध्यान में रखा जाय तो परमेश्वरी का स्थान बहुत उपयुक्त रहेगा। पर मैं यह नहीं चाहूंगा कि मुझ तक कोई पहुंच ही न पाये। ऐसा करने से तो दौरे का उद्देश्य ही नष्ट हो जायेगा। मैं कहां ठहरूं इसका फैसला करते समय यह तय करना ठीक होगा कि मुझसे क्या कुछ कराना है। यदि तुम केवल मेरे आराम का ही खयाल रखोगे तो यह गलत निर्णय होगा। इत्मीनान रखो मुझे जहां कहीं भी ठहराया जायेगा, मैं अपने आराम की व्यवस्था खुद कर लूंगा। मेरे कलकत्ते में ठहरने के बारे में तुम्हें डा० बिधान,

1 प हृदयनाथ कजरू

७७

३६, वलिंगटन स्ट्रीट
कलकत्ता

प्रिय महात्माजी

आपके पत्र के दूसर परे के बारे म स्थिति इस प्रकार है। बगाल के सवण हिन्दुआ की धारणा है कि यदि उनसे (मैं समझता हू कि उनम से किसी से भी बम्बई जाने को नही कहा गया था और बगाल स जो प्रतिनिधि मडल गया था उसमे केवल ८ आदमी थे जो सबके-सब दलित-वग के थे) बम्बई जाने को कहा जाता तो वे कान्फ्रेंस के सदस्यो के सामने अपना विचार पेश करते। वह विचार यह प्रतीत होता है कि (ब्रिटेन के) प्रधान मत्री न जो साम्प्रदायिक निणय दिया था उसकी भापा अम्पप्ट अवश्य थी पर उसम दलित वग के लिए पथक निवाचन की व्यवस्था का कही उल्लेख नही था। केवल इतना ही सकेत प्रतीत होता था कि दलित वग के १० प्रतिनिधि सयुक्त निर्वाचन द्वारा चुने जायेंगे। यहा के सवण हिन्दुआ का कहना है कि बगाल म देश के अन्य अचलो जसी 'अस्पश्यता की समस्या नही है इसलिए लगभग १० लाख वास्तविक अस्पश्यो को छाडकर और बाकी लागा के लिए सीटें रिजव रखन की कोई दरकार नही है। अतएव उनका कहना है कि इस वग के लोगो के लिए सीटें रिजव रखने से हिन्दू-समाज म विश्रृखलता उत्पन्न हो जायेगी। उनका दूसरा मुद्दा यह है कि पूना पक्ट के द्वारा एक प्रकार म पथक निवाचन का प्रश्रय दिया गया है जो कि राष्ट्रीयता के विरुद्ध है। उनका यह भी कहना है कि यदि पूना पक्ट को जीवित रखा गया तो उन रिजव सीटा के अलावा जो तथाकथित दलित वग के हिस्से म आयेंगी उस वग के लोग आम निर्वाचन-क्षेत्रा स भी खडे हो सकेंगे और इस प्रकार उनकी सख्या ३० तक पहुच जायेगी। क्योकि व १० या उससे भी अधिक सीटें खुद निर्वाचन-क्षेत्रा स खड होकर लेन म सफल होग। उन्हे आशका है कि नया शासन विधान लागू होने के बाद जो चुनाव लडे जायेंगे उनम उनकी सख्या स्थानीय विधान सभा म घटकर ४० रह जायगी जो न तो सवण हिन्दुआ के लिए हितकर होगा न समूचे बगाल के लिए। सवण हिन्दुओ का कहना है कि यद्यपि उन्होने

बुद्धिमत्ता और योग्यता का ठेका नही ले रखा है तथापि वस्तुस्थिति यह है कि कुछ कारणो से जो सवर्ण हिन्दुओ और दलितो के बूते के बाहर रहे है, दलितो ने शिक्षा आदि के क्षेत्र म उतनी प्रगति नही दिखाइ है जितनी उन्हे दिखानी चाहिए थी। परिणामस्वरूप यदि सवर्ण हिन्दुओ को केवल ४ सीटे मिली (अर्थात सारी सीटो का १/६) तो उससे विधान सभा की कार्यक्षमता घट जायेगी। अभी उस दिन मैं ब्रिटिश इडिया एसोसिएशन हाल मे कई प्रतिष्ठित सदस्यो से मिला था वे सभी तथाकथित दलित-वर्ग के साथ विचार विमर्श करके ऐसा हल तलाश करने को उत्सुक पाये गये जिसके द्वारा, जहा तक बगाल का सबध है पूना पक्ट म कुछ ऐसी रद्दोबदल हो जिससे या तो रिजर्व सीटो की व्यवस्था का बिलकुल अत कर दिया जाय या आपसी समझौते के द्वारा उन्हे दी जानेवाली सीटो की सख्या म कमी कर दी जाय। श्री रसिकलाल विश्वास ने मत्री का एक चिट्ठी लिखी है इस चिट्ठी मे उन्होने सवर्ण हिन्दुओ से मिलकर इन सारे मुद्दो पर विचार विमर्श करने के लिए तत्परता प्रकट की है। ऐसा प्रतीत होता है कि फिलहाल सवर्ण हिन्दुओ का एकमात्र उद्देश्य दलित वर्ग के साथ किसी न किसी प्रकार का समझौता करना है। मैं आपको समय-समय पर घटनाओ से अवगत कराता रहूगा।

डा० आलम लाहौर लौट गये हैं, कोई ६ सप्ताह बाद फिर कलकत्ता आयेंगे। कमला पहले से स्वस्थ है, और नित्य गाडी म बैठकर हवाखोरी के लिए निकलती है।

आशा है, आपका स्वास्थ्य ठीक होगा।

भवदीय
वि० च० राय

महात्मा गाधी
यरवडा केन्द्रीय कारागार,
पूना

७८

तार

महात्मा गाधीजी
यरवडा केन्द्रीय कारागार
पूना

मेरी सम्मति म रगा अय्यर के बिल का मसौदा उद्देश्य सिद्धि के लिए अपर्याप्त है। अतएव केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा मे दूसरे बिल को पेश करने की अनुमति दीजिए। मेरा सुझाव है कि आपके साथ परामर्श करके मसौदे को नये सिर से तयार किया जाय। अपने विचार तार द्वारा भजिए। दिल्ली २६ तारीख को पहुच रहा हू।

—घनश्यामदास

७९

प्रिय रवीन्द्र बाबू

इस पत्र के साथ जो पत्र भेजता हू वह पडितजी (मालवीयजी) ने अपने सुपुत्र के हाथो मेरे पास भेजा था और कहलाया था कि उसे पढने के बाद कलकत्ते से आपके पास डाक से भेज दू। उन्होने यह भी कहलाया था कि यदि मुझे ऐसा लगे कि उसमे कुछ नये सुझाव की गुजाइश है तो उसकी बाबत आपको लिखू।

अब मैंने आपके लिए लिखा गया उनका पत्र पढ लिया है और उस समुद्री तार का मसौदा भी देख लिया है जिसे उन्होने आपसे प्रधान मत्री के पास रवाना करने को कहा है।

मेरी अपनी राय यह है कि तार को जिस रूप मे भेजने का सुझाव है उससे गाधीजी की पोजीशन ठीक ठीक व्यक्त नही होती। मेरी धारणा है कि यह कहना ठीक नही होगा कि महात्मा गाधी के वक्तव्य से हमे ऐसा लगता है कि सविनय अवज्ञा आदोलन फिर से शुरू नही किया जायगा। हमारी धारणा है कि आदोलन

का स्थगित करने की घोषणा केवल इसलिए की गई क्योंकि कार्यवाहक अध्यक्ष का अगला कदम उठाने का अधिकार नही था, इसलिए नही कि महात्मा गाधी का उसे पुनर्जीवित करने का कोई विचार था।' मै गाधीजी को जितना समझता हू उसके आधार पर तथा उनकी अतरात्मा का ज्ञान मेरी अपेक्षा आपको कही अधिक समझ सकने की क्षमता को सम्मुख रखकर यह कहा जा सकता है कि

१) गाधीजी स्वभाव से ही अतिवाद के विरोधी रहे है,
२) वह सदव केवल शाति की ही खोज मे रहत है और
३) सविनय अवज्ञा उनके तूणीर का अतिम बाण है।

अत मुझे इसम तनिक भी सदेह नही है कि उपवास का अन्त होते ही गाधीजी सम्मानपूर्ण शाति को खोज करने मे कुछ उठा नही रखेंगे। पर यदि सम्मानपूर्ण समझौता सम्भव नही हुआ, तो मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हू कि वह आदोलन को पुनर्जीवन प्रदान करने मे पसोपेश नही करेंगे। यह हो सकता है कि वर्तमान परिस्थितियो म वह इस निष्कर्ष पर पहुचे हो कि व्यापक आदोलन व्यावहारिक राजनीति की दृष्टि से उचित नही रहेगा। वास्तव म उन्होने सदव मात्रा पर गुणात्मकता को तरजीह दी है। पर यदि गाधीजी को लगता कि सविनय अवज्ञा आदोलन का हमेशा के लिए अत करना ठीक रहेगा तो उन्होने अपनी रिहाई के तुरत बाद जो वक्तव्य दिया उसम वह स्पष्ट रूप से उसका उल्लेख कर देते। वह कम-से कम कार्यकारिणी को उसे अनिश्चित काल के लिए स्थगित रखने की सलाह अवश्य देते। यह सब करने की बजाय उन्होंने तो यह कहा कि वातावरण जितना गदा है उसे देखते हुए वह सरकार स अनुरोध करेंगे कि उन्हे दुबारा जेल भेज दिया जाय। इसलिए मेरे विचार म आप जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा दिये गये किसी वक्तव्य म यह कहना कि गाधीजी का आदोलन को अनिश्चित काल के लिए स्थगित करने का इरादा है, न तो उचित होगा, न गाधीजी या काग्रेस या स्वय आपका अपने साथ न्याय होगा। फर्ज कीजिए कि सरकार आपके आश्वासन के आधार पर सारे बदियो को रिहा कर दे और फिर वर्तमान राजनैतिक समस्या का कोई सतोषजनक हल नही निकल पाया, तो वैसी अवस्था मे आदोलन को किसी-न किसी रूप म पुन जाग्रत किया जायगा, इसमे मुझे रच मात्र भी सन्देह नही है। ऐसा होने पर क्या आपका यह खयाल नही है कि सरकार द्वारा तार पर हस्ताक्षर करनेवाले सज्जनो को उसे गुमराह करने का दोषी ठहराना अनुचित प्रतीत नही होगा ? शाति स्थापित हो या न हो मेरी समझ म ऐसी कोई बात नही कहनी चाहिए जो वस्तुस्थिति का सम्यक चित्रण न कर सके। वास्तव म उत्तरदायित्वशून्य वक्तव्य देकर व्यवस्थापिका सभा के गैर-सरकारी सदस्यो ने

अनावश्यक रूप से अपने आपको तो लांछित किया ही देश को भी लपट म ले लिया है।

मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि शांति स्थापित करने तथा आन्दोलन को स्थगित करने के लिए आवश्यक सभी उपायों की खोज की जाय। पर एसा वस्तु स्थिति को सम्मुख रखकर ही किया जा सकता है उससे पराङ मुख होकर नहीं। मैं तो यही समझता कि गांधीजी की स्थिति की सफाई देने की चेष्टा करने म वतमान समस्या का हल तलाश करने के काय म सहायता मिलेगी।

गांधीजी का उपवास समाप्त होने म प्राय एक सप्ताह और रह गया है। मैं समझता हू कि तब तक के लिए देश उस अवसर की प्रतीक्षा कर सकता है जब गांधीजी स्वय सारे सूत्र अपने हाथ म ले लेंगे। मैं तो नहीं समझता कि दस दिन और ठहर रहने से कोई बडी भारी क्षति होगी। इसके विपरीत यदि कोई गलत कदम उठाया गया तो उससे गांधीजी को परेशानी होगी ही सरकार को भी भ्रान्ति होगी सो जुदा।

इतने विस्तार क साथ लिखने के लिए क्षमा कीजिएगा। पर मुझे जसा लगा उसे विनम्र भाव स आपके सामने रखना मैंने अपना कत्तव्य समझा।

आपका

घ० दा० बिडला

डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर

दार्जिलिंग

१९३४ के पत्र

१

भाई घनश्यामदास,

मलकानी ने तुमारा पत्र पढाया है। बिहारीलाल को मैंने स्पष्ट लिखा है। मेरे पत्र की प्रतिलिपि भेजता हू, हमारे उसके साथ स्पष्टता से और दढता से काम करना होगा।

पहलेवा ना करने का काय इस दौरे म होना आवश्यक-सा प्रतीत होता है लेकिन जो हो रहा है वह अच्छा ही प्रतीत होता है। लोगा के विचार का परिवतन खूब हुआ है। आचार म बहुत परिवतन नहिं हुआ है, देखें क्या होता है। मुझे तो ईश्वर का हाथ इस काय म देखा जाता है। यह एक रूढ वचन नही है। यह काय कोई एक मनुष्य की शक्ति से हो हि नही सकता है, न हजारो से, लेकिन इस बारे म अधिक लिखा या कहा नही जा सकता है। इसका तात्पय इतना ही है कि ईश्वर पर मेरा विश्वास बढता जाता है। अपनी शक्ति की अल्पता का प्रत्यक्ष अनुभव हो रहा है।

तुम्हारा शरीर अच्छा रहता होगा।

बापु के आशीर्वाद

२४ १ ३४

२

भाइ घनश्यामदास

तुमारा खत मिला है। भूकप और हरिजन प्रश्न का मुकाबला मुझे बहुत प्रिय लगा है। क्योंकि वह सत्य है। बिलकुल गरीबा को कम भुगतना पडा है यह तो स्वयमिद्ध है। लेकिन जिसके पास दो कौडी था वह आज भीखारी बन गये हैं, वह भी इतना ही सत्य है न ? मैं यहा बठा हुआ जितना सभवित है कर रहा हू।

बगाल के दौरे ने मुझे कत्तव्यमूढ बना दिया है। अच्छा है तुम वही हो। आज

डा० विधान को लम्बा खत लिखा है उसे देखो और वही निश्चय करो। मुझे लगता है मेरे स तो एक ही निश्चय हो सकता है—अगर आप लोग न रोकें तो जाना।

बापु क आशीर्वाद

३१ १ ३४

३

वर्धा के पते पर
(म० प्रा०) भारत
जनवरी, १९३४

प्रिय सर सेम्युअल

आपको याद होगा कि जब मैं १९३१ मे दिसम्बर म भारत लौट रहा था तो आपने मेरे पास एक इटालियन पत्रकार को रोम म दी गई मेरी एक तथा कथित मुलाकात की बाबत एक समुद्री तार भिजवाया था और मैंने उस मुलाकात की बात को बिलकुल निराधार बताया था। मेरे उस खण्डन का जो प्रत्युत्तर दिया गया वह मेरी नजर से हाल ही म गुजरा है क्योंकि बम्बई म उतरने के एक सप्ताह के भीतर ही मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और तब से मैं बराबर जेल म ही था।

अन्तिम ब दी-जीवन म मुझे गत अगस्त मास म छोडा गया। तब मुझे मीरा बेन ने बताया कि एक अंग्रेज मित्र—बम्बई के विलसन कालेज के प्रोफेसर मैक्लीन ने सुझाव दिया है कि वस तो यह मामला पुराना पड गया है पर तो भी स्थिति को स्पष्ट करना उपयुक्त रहेगा, क्योंकि रोम के पत्रकार के प्रत्युत्तर का उन दिनो गहरा प्रभाव पडा था और १९३२ म वाइसराय ने मेरे खिलाफ जो कारवाई की थी वह भी सम्भवत उसी प्रभाव के वशीभूत होकर की थी। मुझे प्रोफेसर मक्लीन की बात ठीक जची। मैंने मीराबेन स कहा कि अगाथा हैरिसन को चिट्ठी लिखो और उनसे कहो कि वह इस सबध की सारी प्रेस कटिंग एकत्र करें। उन्होंने काफी परिश्रम करके एसी कटिंगो का सग्रह किया। इनमे से अन्तिम कटिंग सबसे अधिक महत्व की थी, पर वह मुझ पिछले महीने उस समय मिली, जब मैं

अस्पृश्यता निवारण आन्दोलन के सिलसिले मे देश व्यापी दौरे म फसा हुआ था। आपके तत्काल अवलोकनार्थ मैं इन कटिंगो की नकल 'अ', 'आ' और 'इ' अक्षरा से चिह्नित करके भेज रहा हू।

इस बात को ध्यान मे रखना होगा कि ये कटिंग मेरी नजर से पहली बार तब गुजरी, जब वे मुझे अगाथा हैरिसन स प्राप्त हुइ। मैंने य कटिंग एक स अधिक बार पढी और अब मुझे यह कहने म तनिक भी सकोच नही है कि 'अ' और 'इ' चिह्नित कटिंग वास्तव मे जो गुजरा उसका मात्र व्यग्य चित्रण हैं। 'अ' म जो वणन है वह मरे द्वारा उस इटालियन पत्रकार को दिया गया बताया गया है। 'इ' म 'टाइम्स' के सम्वाददाता ने हिचकिचाते हुए यह तो स्वीकार किया कि सम्भव है मरा ही कथन सत्य हो क्योकि सीनोर गयादा ने मुलाकात का औपचारिक अनुरोध नही किया था और न कभी मुलाकात हुई ही पर साथ ही इस पर अडा रहा कि मेरे द्वारा कही गई बातें मुख्यत ठीक हैं। पर 'अ' और 'इ' के विश्लेषण द्वारा सचाई तक पहुचने की चेष्टा करन की अपेक्षा मैं जो कहू उसकी ओर कान देना अधिक उपयुक्त होगा। नीचे लिखी बातें ध्यान देने योग्य है

१) सीनार गयादा द्वारा 'अ' म वर्णित लम्बी या सक्षिप्त मुलाकात मैंने कभी नही दी।

२) मुझसे सीनोर गयादा से किसी भी स्थान पर मुलाकात करन का अनुराध नही किया गया। हा मुझे एक इटालियन मित्र ने एक निजी मकान की एक बठक मे कुछ अन्य इटालियन मित्रा से भेंट कराने की दावत जरूर दी थी। इस भेंट के दौरान मेरा कई मित्रो स परिचय कराया गया पर मुझे उनके नाम याद नही हैं, न मरे लिए उनके नाम उस भेंट क तुरत बाद याद करना ही सम्भव था। यह परिचय महज औपचारिक था।

३) इस भेंट के दौरान बातचीत साधारण ढग की थी, और किसी व्यक्ति विशेष को लक्ष्य करके नही की गई थी। कई मित्रा ने तरह तरह के प्रश्न किय और जसा कि ऐसे अवसरा पर होता है, वार्तालाप सरसरे ढग का था।

४) अतएव सीनोर गयादा अथवा 'टाइम्स' के सम्वाददाता द्वारा मेरे तथा कथित उदगार उद्धत करना, और इस प्रकार उद्धत करना माना वे एक वक्तव्य का अश हा तथा किसी व्यक्ति विशेष को लक्ष्य करके व्यक्त किय गए हों सरासर गलत था।

५) सीनोर गयादा ने जो कुछ लिखा वह उन्होंने सत्यापन के लिए मुझे कभी नही दिखाया।

६) अन्य बाता के साथ-साथ गाल-मेज कार्फ्रेस पर भी बात चली जिसके

दौरान यह चर्चा हुई कि उसके बारे म मैंने क्या धारणा बनाई, तथा भविष्य म मेरा क्या कुछ करने का विचार है। वे बहुत-सी बात, जो मेरे मह से कहलाई गई है, मैंने कदापि नही कही। मेरी सारी आशाए, आशकाए और भावी कायक्रम—सब कुछ वसी ही नपी-तुली भाषा मे व्यक्त किया गया था, जिसका उपयोग मैंने गोलमेज काग्रेस की समाप्ति के अवसर पर किया था। उस अवसर पर मैंने जो भाषण दिया था, *उसम मैंने अपनी शक्ति भर ऐसी भाषा का व्यवहार किया था,* जिसके मम के विषय म सन्देह की गुजाइश नही थी। मैंने इस रोमवाली बातचीत के दौरान जो कुछ कहा, वह काग्रेस की समाप्ति के अवसर पर दिये गए भाषण का रूपान्तर मात्र था। यह मेरी आदत म दाखिल नही है कि सावजनिक रूप से कुछ कहू और आपसी बातचीत म कुछ और अथवा एक मित्र से कुछ कहू और दूसरे से कुछ और। मेरे लिए ऐसा कहना कदापि सम्भव नही था कि भारतीय राष्ट्र और ब्रिटिश सरकार के बीच निश्चित रूप से सम्बन्ध विच्छेद हो गया है, क्योंकि मैन लगभग उसी अवसर पर कई मित्रो से यह कहा था कि मैं सम्बध टटने से रोकने के निमित्त तथा इविन गाधी-समझौते के द्वारा जो शान्तिपूण सम्बध स्थापित हुए थ, उनका अस्तित्व बनाये रखने की दिशा म पूरा प्रयत्न करने का दृढ़प्रतिज्ञ हू। मैं आशावादी हू और मानवो के पारस्परिक सबधो के स्थायी विच्छेद म विश्वास नही रखता।

७) मैंने यह कभी नही कहा कि मैं भारत इग्लड के विरुद्ध दुबारा सघर्ष शुरू करने के लिए लौट रहा हू। उस बातचीत के दौरान मुझसे सम्भावनाओ के विषय म कुछ प्रश्न अवश्य किय गय थे, पर 'अ' म उनका वणन इस प्रकार किया गया है माना मैं उन सम्भावनाओ को मूत रूप देने के लिए ही भारत लौट रहा होऊ।

मैं यह भी कहना चाहूगा कि लोगा के सामने न तो व नोट ही रखे गए थे जो सीनार गयादा द्वारा लिये गए बताए जाते हैं, और न प्रकाशित रिपोट म स्वय सीनार गयादा का वणन ही। अ' तथा इ म केवल टाइम्स' के सम्वाददाता द्वारा ग्रहण किये गए प्रभाव का ही उल्लेख है।

इ' का आप पर क्या प्रभाव पडा मैं नही जानता। यदि मेरे खण्डन से आपका समाधान नही हुआ था, तो मुझे सीनार गयादा के प्रत्युत्तर से भी उसी प्रकार अवगत कराया जाना था। पता नही, आप इस पत्र को किस रूप म ग्रहण करेंगे। यदि आपको मेरी नवनीयती के बारे म कोई सशय हो तो, यथासम्भव मैं उसका निवारण करना चाहूगा।

'इ म जिस सगी का उल्लेख है वह कुमारी स्लेड थी। उक्त वार्ता के बारे म

उनका सस्मरण इस पत्र के साथ नत्थी करता हू।

मैं यह पत्र प्रकाशित नही करा रहा हू, केवल इसकी प्रतिया कुछ मित्रो के पास उनके उपयोग के हेतु भेज रहा हू। पर मैं चाहूगा कि यदि आप कर सकें तो इसे प्रकाशित करा दें या प्रोफेसर सी० एफ० एण्ड्रूज को उनके वुडब्रुक, सेली ओक, बर्मिघम के ठिकाने पर भेज दें जिससे वह इस जिस रूप म चाहे लोगा के सामने रख सकें।

भवदीय,
मो० क० गाधी

सलग्न—अ, आ, इ

सलग्नक अ

एक नया व्यापारिक बहिष्कार
(हमारे निजी सवाददाता द्वारा)

रोम १४ दिसम्बर, १९३४

मिस्टर गाधी ने उन अनेक इटालियन और विदेशी पत्रकारो को कोई बयान देने से इन्कार करने के बाद, जिन्हें उनसे भेंट करने क लिए आमत्रित किया गया था अब जनल द इटालिया के सीनोर गयादा को एक लम्बा वक्तव्य दिया है।

मिस्टर गाधी ने कहा कि गोलमेज कान्फ्रेंस भारतवासियो के लिए एक दीघकालीन न्याया का कारण बनी हुई थी वह भारतीय राष्ट्र और ब्रिटिश सरकार के बीच स्थायी रूप से सम्बन्ध विच्छेद के साथ समाप्त हुई। पर कान्फ्रेंस द्वारा भारतीय राष्ट्र एव उसके नताओ का जीवट तथा इग्लैंड के सही इराद बिलकुल स्पष्ट हो गये हैं। भारत वह इग्लैंड के विरुद्ध सघष पुन और अविलम्ब शुरू करने के लिए लौट रहे हैं। यह सघष सत्याग्रह तथा ब्रिटिश माल के बहिष्कार का रूप धारण करेगा। उनकी धारणा है कि इग्लड को मुद्रा के अवमूल्यन तथा बेकारी की समस्याओ का सामना करना पड रहा है। यह बहिष्कार ब्रिटेन के सकट को उग्रतर कर देगा। इग्लड क माल की भारत म खपत न होने स इग्लड की औद्योगिक कायशीलता को आघात पहुचेगा उसके बेकारों की सख्या म वृद्धि होगी तथा पौण्ड का नये सिरे से अवमूल्यन होगा।

मिस्टर गाधी ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि यूरोप के अधिकाश देशो

न भारत की समस्या म दिलचस्पी नही ली। यह दु ख की बात है, क्याकि स्वतत्र और समृद्ध भारत म अय राष्ट्रा के उत्पादन की भारी खपत होगी, तथा भारतीय स्वतत्रता सभी देशो के साथ व्यापारिक तथा बौद्धिक आदान प्रदान के रूप म फलित होगा।

सलग्नक आ

दिसम्बर, १९३१

मोशियो गाधी ने रोम म अपने अल्पकालीन पडाव के दौरान जनल द इटालिया को जो बयान दिया बताते हैं तथा जिसका सक्षिप्त विवरण १५ दिसम्बर के टाइम्स' मे छपा था उसका उन्होने पूण खण्डन किया है। उक्त वक्तव्य भारत में पुन सविनय अवज्ञा शुरू होने की सम्भावना की दिशा म पूववर्ती वक्तव्या से इतना अधिक आगे बढा दिखाई दिया था कि उनसे यह पता लगाना जरूरी समझा गया कि उन्होने वास्तव म क्या कहा था। तदनुसार उनके पास भू मध्यसागर म इटालियन नौका पिलाना पर एक अधिकृत क्षत्र से निम्नलिखित आशय का समुद्री तार भेजा गया

पत्रो म प्रकाशित समाचारो क अनुसार आपने नौका म सवारहाने के बाद जनल द इटालिया' को एक वक्तव्य दिया, जिसम निम्नलिखित उदगार व्यक्ति किये गए थे

१) गोलमेज कार्फ्रेंस भारतीय राष्ट्र तथा इग्लड के बीच स्थायी रूप से सबध विच्छेद होने की द्योतक है।

२) आप भारत इग्लड के विरुद्ध अविलम्ब सघप आरम्भ करन के लिए लौट रहे हैं।

३) *ब्रिटेन पर आए सक्ट की स्थिति बहिष्कार के द्वारा और अधिक* गम्भीर हो जायेगी।

४) हम लगान नही देंगे, हम इग्लड के लिए किसी भी रूप म कोई काम नही करेग हम अग्रेज अधिकारियो को पूणतया बहिष्कृत कर देंगे उनकी राजनीति और उनकी सस्थाआ से कोई सरोकार नही रखेंगे एव सब भाति के माल का पूरे तौर से बहिष्कार कर देंगे।

यहा आपके कुछ मित्रा की धारणा है कि आपके विचार को गलत ढग स पेश किया गया है। यदि ऐसी वात है तो आपके द्वारा खण्डन आवश्यक ह।

कन मिस्टर गाधी का समुद्री तार द्वारा निम्नलिखित उत्तर प्राप्त हुआ

> जनल द इटालिया' का वक्तय सरासर झूठा है। मैंने रोम म समाचार पत्रा को कोई वक्तव्य नही दिया। मरी अतिम मुलाकात स्विटजरलट स्थित विलेन्यूव म रायटरवाला के साथ थी जिसके दौरान मैंने भारतवासिया का कोइ निणय करने के मामले म जल्द वाजी से काम न लेकर मर वक्तव्य की प्रतीक्षा करने की सलाह दी थी। मैं स्वय जल्दवाजी से काम नही लूगा और यदि दुभाग्यवश सीधी कारवाई करना अनिवाय हुआ ता भी पहले अधिकारिया स काफी अनुनय विनय करूगा। कृपया इस वक्तव्य का अधिक से अधिक प्रचार कीजिए। —'टाइम्स

× × ×

'जनल द इटालिया म छप तथाकथित वक्तय के मिस्टर गाधी द्वारा किय गए खण्डन को सीनोर गयादा ने स्वीकार करन स दढतापूवक इकार कर दिया है। उन्होंने एक सक्षिप्त नाट म कहा है कि उन्होने महात्मा स जो शद कहलाये हैं वे वास्तव म उनकी तथा अय साक्षिया की उपस्थिति मे दज किये गए थे। वस्तुस्थिति को जहा तक मैं समझ पाया हू उसस मुझे यही लगता है कि सम्भव है मिस्टर गाधी की वात ही ठीक हो क्योकि सीनोर गयादा ने मुलाकात का वाकायदा आग्रह नही किया था, इसलिए वसी मुलाकात नही हुई थी।

मुझे जो सूचना मिली है उसके आधार पर मरा कथन यह है कि महात्मा से सीनोर गयादा का परिचय एक निजी निवास स्थान पर कराया गया था और मिस्टर गाधी का यह स्पष्ट वता दिया गया था कि सीनार गयादा वास्तव म कौन है। ज्यो ही मिस्टर गाधी ने अपना वह असाधारण वक्तय आरम्भ किया, जो सीनोर गयादा उनके द्वारा दिया गया वतात हैं सीनोर गयादा न उस वक्तव्य की महत्ता पहचानकर कागज और पेंसिल मागी जिसस वह वक्तय का यथावत दज करन म कोइ गलती न करे। उहे य दोनो चीजें दे दी गइ। इसके वाद सीनार गयादा न मिस्टर गाधी के उद्गार उसी स्थल पर और उसी क्षण दज करना शुरू कर दिया। यह सवकी उपस्थिति म हुआ तथा दाना म से किसी पक्ष की ओर स यह नही कहा गया कि यह वक्तव्य प्रकाशन क लिए नही है।

इसलिए मुझे जो कुछ मालूम हो सका है उससे ऐसा लगता है कि जहा तक उद्गारो के सार का सम्बन्ध है, सीनार गयान्ने ने जिन्हें मैं जानता हू और जिनके बारे म मैं यह कह सकता हू कि वह अंग्रेजी भली भाति समझते हैं, महात्मा के उद्गारो को यथावत् नोट करने म यथेष्ट सतर्कता से काम लिया।

— टाइम्स, २१-१२ १६३१

सलग्नक ६

गाधीजी को उनके साथियो के साथ बम्बई स्थित इटालियन कौसल को जो उस समय रोम म मौजूद था, एक इटालियन काउण्टेस के निवास स्थान पर औपचारिक बैठक के लिए आमंत्रित किया गया था। बैठक काफी देर तक चली जिसके दौरान जलपान भी कराया गया और उसके बाद भी बातचीत चलती रही। आरम्भ म गाधीजी के साथ केवल मैं ही थी, बाद म एक एक करके उनके अन्य सगी-साथी भी आते रहे। मैं इस पूरी बैठक के दौरान गाधीजी के साथ रही—उन १५ २० मिनटो को छोडकर जब बैठक की समाप्ति से कुछ पहले मैं भोजन गृह म फलो की तश्तरी तयार करने और साथ ही खुद भी कुछ खाने के लिए गई थी।

जहा तक मुझे याद पडता है, प्रारम्भ म बातचीत कुछ सामाजिक ढग की ही रही और अनेक प्रसगो को लेकर चली। काउण्टेस लोगो का गाधीजी से परिचय कराने तथा बातचीत का रुख विभिन्न प्रसगो पर मोडने म सलग्न रही। जब वार्तालाप का रग जमने लगा, तो उपस्थित समुदाय म से दो तीन सज्जन प्रश्नो की झडी लगाते दिखाई पडे। ये प्रश्न राजनैतिक और आर्थिक विषयो पर थे, और मुझे याद पडता है कि उनम से एक सज्जन ने कागज पेंसिल तलब की और फिर नोट लेना शुरू किया। कुछ समय बाद हमारी टोली के अन्य सदस्य एक एक करके आने शुरू हुए और तब हम भोजन गृह के पासवाले कक्ष म जो बैठकवाले कमरे से बडा था चले गए। वहा भी बातचीत साधारण कोटि की ही रही, हा, गाधीजी एक व्यक्ति के साथ किंचित अधिक गम्भीर वार्ता म अवश्य सलग्न हुए। इस वार्ता का रुझान किस ओर था, सो मुझे याद नही।

गाधीजी ने जो कुछ कहा उसका मैंने प्रत्यक्ष शब्द सुना—उन १५ २० मिनटो को छोडकर जब मैं भोजन गह म चली गई थी। गाधीजी राजनतिक और आर्थिक प्रश्नो का सामान्य उत्तर दत रहे। उन इटालियन प्रश्नकर्त्ताओ की बात समझाने की चेष्टा मे उन्होन अग्रेजी म जो कुछ कहा पूरी स्पष्टता और यथासम्भव जोर देकर कहा। इसका एक कारण यह भी था कि प्रश्नकर्त्ता एक ही कोटि के प्रश्न करने पर तुले हुए थे। टाइम्स के सम्वाददाता न गाधीजी से जो बातें कहलाई हैं, यदि वह सचमुच वसी बातें कहते तो मैं हक्की-बक्की रह जाती, क्योकि इसका अथ यह होता कि उन्होने अपन आदर्शों और आस्थाओ को तिलाजलि दे दी है और मैं उन्हे अपना पथ प्रदशक और पिता मानना बन्द कर देती।

—मीरा

४

भाई घनश्यामदास,

मिस लेस्टर को मैंने मिदनापुर की बात की और कहा गवरनर स मिले उसने गवरनर को खत लिखा और गवरनर न तार भेजा। अब वह जा रही है। मैंने जो खत उसको दिया है, उसे पढें, मैंन उनसे कहा है तुमस मिले और सब जान लेवे। सब हाल बतलाइये। आवश्यकता समझी जाय तो डा० विधान स और सतीश बाबु से भी मिला दें। शुन्न को वहा स मेर पास चली आवगा। उसका खच क लिये यहा स पस दिये है। टिकिट यही म करवा दी है। उसका खच तुमार से लू ? जमनालाल स ता है ही, क्या उचित है नहि जानता हू ?

पत्र बहुत जल्दी से लिखा है। तुमारे पत्र मिले हैं उसका उत्तर दूगा। समय ही नही मिलता है।

बापु के आशीवाद

१२ २ ३४

५

बोर्ड आफ एज्यूकेशन,
व्हाइट हाल,
लंदन, एस० डब्ल्यू० १
१३ फरवरी, १९३४

प्रिय श्री बिड़ला

आपके सहृदयतापूर्ण पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। आपने ऐसे समय हमें अपने ध्यान में रखा जब जो लोग मेरे पिताजी को जानते थे उनके लिए यह अवसर अटूट सुख की अवधि के बाद, घोर विषादयुक्त हो गया था। पर पिताजी के लिए तो मेरे हृदय में एकमात्र कृतज्ञता की ही भावना है।

भूकम्प से धन-जन की भारी हानि की खबर से बड़ा दुःख हुआ है। वहां यातायात के साधनों में विघ्न पड़ जाने से हम लोग वहां की भारी विपत्ति का आरम्भ में ठीक ठीक अंदाज़ नहीं लगा सके थे।

भूकम्प पीड़ितों के प्रति मेरी हार्दिक सम्वेदना है। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि इस आपात काल में सभी कोई भूकम्प पीड़ितों का दुःख निवारण करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

भवदीय,
हैलिफक्स

श्री घ० दा० बिड़ला,
८, रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता।

६

भाई घनश्यामदास

तुमारा खत मिला है।

मैं देखता हूं गवरनर से कुछ लिखुं या नहीं मिदनापुर की सलामी तो बंध हूई लेकिन अपने दोष का स्वीकार नहिं किया। मिस लेस्टर ने अब वाइसराय से मिलने का समय मागा है। इन सब चीज से आज कुछ परिणाम नहिं मिल सक्ता

है लेकिन समझौत का एक भी मौका हम छोडना नही चाहते है।

विधान राय को मिलने का प्रयत्न पूरा करना चाहिये। भले काग्रेसवादी कुछ भी कहे।

मेरा वहा आने का कम से कम बिहार तक तो मौकुफ कर दिया है। पीछे देखेंगे।

जवाहरलाल स मिलने की काशिश कराग न ?

मिस हैरीसन २ माच को विलायत से छूटेगी उसका आना अच्छा हि है। मैंन इस बार म पहले भी लिखा हि था ना ?

बापु के आशीर्वाद

१६-२-३४

फिर नही पढा गया।

७

जिला मजिस्ट्रेट का दफ्तर
धारवाड
४ माच १६३४

प्रिय श्री ठक्कर

पुलिस ने मुझे सूचित किया है कि आज प्रात काल की सभा के बाद मिस्टर गाधी के कुछ अनुयायियो ने उनकी कार पर लाल सफेद और हरे रग की पताका फहराई।

यह पताका एक राजनैतिक चिह्न है जिसका साधारणतया काग्रेस के साथ सम्बन्ध जोडा जाता है। मिस्टर गाधी न अपने दौरे को बराबर राजनीति स अलग रखा है इसलिए यह पताका सम्भवत उनकी सहमति से नही फहराई गई होगी।

क्या आप कृपा करके इस बात का खयाल रखेंगे कि यह पताका न फहराई जाए ?

भवदीय,
एल० ए० ब्राउन

श्री अ० वि० ठक्कर
मारफत श्री नारायणराव किणीकर

८

मुकाम धारवाड
४ मार्च १९३४

प्रिय मित्र,

श्री अमृतलाल ठक्कर ने मुझे आपका आज ही की तारीख का वह पत्र दिखाया है जिसमे मुझे हुबली से धारवाड उस कार मे ले जाने का उल्लेख है जिसके बॉनेट पर राष्ट्रीय पताका फहरा रही थी। आपका यह अनुमान ठीक है कि ऐसा मेरी सहमति से नही किया गया होगा। वास्तव मे पताका श्री ठक्कर की ही प्रेरणा से फहराई गई थी और केवल धारवाड मे ही फहराई गई थी। वास्तव मे जब श्री ठक्कर ने कार पर राष्ट्रीय पताका न देखी तो उन्होने प्रमुख कार्यकर्त्ताओ से कहा कि यदि ऐसा जान बूझकर किया गया है तो इसका कोई कारण दिखाई नही देता क्योकि जहा तक उन्हे मालूम है राष्ट्रीय पताका फहराना अवैध घोषित नही किया गया है। इस बातचीत की भनक मेरे कानो मे अवश्य पडी, पर मैंने उसमे कोई भाग नही लिया। साथ ही मैंने श्री ठक्कर के कार्य को नापसन्द भी नही किया। मेरा रुख बिलकुल तटस्थता का रहा। मैने न तो पताका फहराने के लिए ही कहा, न मैंने उस कार्य के प्रति नापसन्दगी ही जाहिर की। वास्तव मे कम से कम मध्य प्रान्त के एक स्थान पर तो मुझसे पताका फहराने को कहा गया और मैंने वैसा करने मे कोई सकोच नही किया। गत वर्ष समय से पहले अपनी रिहाई के बाद से मैंने किसी भी राजनैतिक हलचल मे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग नही लिया है और आगामी २ अगस्त तक मैं स्वत ही अपने ऊपर लगाई गई इस पाबन्दी का यथासम्भव पालन करते रहने का विचार रखता हू। पर इसका यह अर्थ कदापि नही है कि मैंने कांग्रेसवादी होना छोड दिया है न यही कि मुझे अपनी असलियत छिपाने की चेष्टा करनी चाहिए। राजनैतिक हलचल से अपने आपको पृथक रखने का मेरा एकमात्र अभिप्राय यही है कि इस अवधि की समाप्ति तक न तो मै स्वय सविनय अवज्ञा करूगा न दूसरो को ही वैसा करने को उकसाऊगा। मेरी धारणा है कि श्री ठक्कर बापा ने कानून की वर्तमान रूप रेखा को जिस रूप मे ग्रहण किया है वह गलत नही है अर्थात् राष्ट्रीय पताका फहराना अपराध नही है। मैं यह भी कहना चाहूगा कि मध्य प्रान्त

और मद्रास प्रसिडेंसी क दौरे म बहुधा मैंने एसी कारो म यात्रा की जिन पर राष्ट्रीय पताका फहरा रही थी।

मैं आज तीसरे पहर तीन बज बलगाव के लिए रवाना हो रहा हू।

आपका
मो० क० गाधी

यह पत्र मिस्टर ब्राउन को सबोधित किया गया था।

९

भाई घनश्यामदास,

सर सेम्युअल से मैंने खत लिखा है उसकी एक प्रतिलिपि इसके साथ रखता हू—और एक धारवाड के मजिस्ट्रेट को जो पत्र लिखा था उसकी, धारवाड का केवल तुमारे जानने के लिए है। सर सेम्युअल के बारे म कुछ काम लेना चाहता हू। स्वार्पा अगर वहा है तो उनसे पूछो क्या उस मिटिंग म हुआ था क्योंकि वह वहा मौजूद था। अगर न था तो भी उसीके जरिये यह मीटिंग हुई थी। जो लोग हाजिर थ उनके नाम ठाम देवें तो भी अच्छा होगा। जो कुछ भी हकीकत मिल सकती है वह इकट्ठा करना चाहता हू। आज तक इस चीज की बातें इग्रेजी म हो रही हैं। और है सबकी सब जाल। अजमेर का आज मरा बनाया गया है।

मुझ मिलने क लिए आना चाहते हैं। हरिजन-काय के लिए थोडी देर के बाद बुलाऊगा। ठक्कर बापा को दिल्ली जाने दिये हैं। उनका यहा काम नहिं था। या तो सब काय म उनके जसा सेवक मदद दे सकता है। विशेष आवश्यकता न थी। विहार क अथवा सर सम्युअल स जो पत्र-व्यवहार शुरू किया है उस बारे म आना है तो स्लि चाह तब आ सकते हैं। बुध से शुक्र तक मोतीहारी तरफ हूगा। शुक्र की शाम को वापिस आऊगा।

मगथा हैरिसन १६ को मुबई पहोचेगी। लेस्टर वाइसराय स मिली है, कल यहा आनी है।

बापु क आशीर्वाद

१२ ३४
पटना।

८

मुकाम धारवाड
४ मार्च १९३४

प्रिय मित्र

श्री अमृतलाल ठक्कर ने मुझे आपका आज ही की तारीख का वह पत्र दिखाया है जिसमे मुझे हुबली से धारवाड उस कार मे ले जाने का उल्लेख है जिसके बॉनिट पर राष्ट्रीय पताका फहरा रही थी। आपका यह अनुमान ठीक है कि ऐसा मेरी सहमति से नही किया गया होगा। वास्तव मे पताका श्री ठक्कर की ही प्रेरणा से फहराई गई थी और केवल धारवाड मे ही फहराई गई थी। वास्तव मे जब श्री ठक्कर ने कार पर राष्ट्रीय पताका न देखी तो उन्होने प्रमुख कार्यकर्त्ताओ से कहा कि यदि ऐसा जान बूझकर किया गया है तो इसका कोई कारण दिखाई नही देता, क्योकि जहा तक उन्हे मालूम है, राष्ट्रीय पताका फहराना अवैध घोषित नहा किया गया है। इस बातचीत की भनक मेरे कानो मे अवश्य पडी, पर मैंने उसमे कोई भाग नही लिया। साथ ही मैंने श्री ठक्कर के काय को नापसन्द भी नही किया। मेरा रुख बिलकुल तटस्थता का रहा। मैंने न तो पताका फहराने के लिए ही कहा, न मैंने वैसे कार्य के प्रति नापसन्दगी ही जाहिर की। वास्तव मे कम से कम मध्य प्रान्त के एक स्थान पर तो मुझसे पताका फहराने को कहा गया, और मैंने वैसा करने मे कोई सकोच नही किया। गत वर्ष समय से पहले अपनी रिहाई के बाद से मैंने किसी भी राजनैतिक हलचल मे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग नही लिया है, और आगामी २ अगस्त तक मैं स्वत ही अपने ऊपर लगाई गई इस पाबन्दी का यथासम्भव पालन करते रहने का विचार रखता हू। पर इसका यह अर्थ कदापि नही है कि मैने काग्रेसवादी होना छोड दिया है न यही कि मुझे अपनी असलियत छिपाने की चेष्टा करनी चाहिए। राजनैतिक हलचल से अपने आपको पृथक रखने का मेरा एकमात्र अभिप्राय यही है कि इस अवधि की समाप्ति तक न तो मै स्वय सविनय अवज्ञा करूगा, न दूसरो को ही वैसा करने को उकसाऊगा। मेरी धारणा है कि श्री ठक्कर बापा ने कानून को वर्तमान रूप रखा को जिस रूप मे ग्रहण किया है वह गलत नहीं है अर्थात राष्ट्रीय पताका फहराना अपराध नही है। मैं यह भी कहना चाहूगा कि मध्य प्रान्त

और मद्रास प्रेसिडेंसी के दौरे में बहुधा मैंने ऐसी कारों में यात्रा की जिन पर राष्ट्रीय पताका फहरा रही थी।

मैं आज तीसरे पहर तीन बजे बेलगांव के लिए रवाना हो रहा हूं।

आपका
मो० क० गांधी

यह पत्र मिस्टर ब्राउन को संबोधित किया गया था।

६

भाई घनश्यामदास,

सर सेम्युअल से मैंने खत लिखा है उसकी एक प्रतिलिपि इसके साथ रखता हूं—और एक धारवाड के मजिस्ट्रेट को जो पत्र लिखा था उसकी, धारवाड का केवल तुम्हारे जानने के लिए है। सर सेम्युअल के बारे में कुछ काम लेना चाहता हूं। स्वार्थ अगर वहां है तो उनसे पूछो क्या उस मिटिंग में हुआ था क्योंकि वह वहां मौजूद था। अगर न था तो भी उसीके जरिये यह मीटिंग हुई थी। जो लोग हाजिर थे उनके नाम-ठाम देवें तो भी अच्छा होगा। जो कुछ भी हकीकत मिल सकती है वह इकट्ठा करना चाहता हूं। आज तक इस चीज की बातें इंग्रेजी में हो रही हैं। और है सबकी सब जाल। अजमेर का आज मरा बनाया गया है।

मुझे मिलने के लिए आना चाहते हैं। हरिजन-कार्य के लिए थोडी देर के बाद बुलाऊंगा। ठक्कर बापा को दिल्ली जाने दिये हैं। उनका वहां काम नहिं था। या तो सब कार्य में उनके जैसा सेवक मदद दे सकता है। विशेष आवश्यकता न थी। बिहार के अथवा सर सेम्युअल से जो पत्र-व्यवहार शुरू किया है उस बारे में आना है तो दिल चाहे तब आ सकते हैं। बुध से शुक्र तक मोतीहारी तरफ हूंगा। शुक्र को शाम को वापिस आऊंगा।

एगथा हैरिसन १६ को मुंबई पहोंचेगा। मिस्टर थोम्पसन से मिली है, कल यहां आती है।

बापू के आशीर्वाद

१-३-३४
पटना।

८

मुकाम धारवाड
४ मार्च, १९३४

प्रिय मित्र

श्री अमृतलाल ठक्कर ने मुझे आपका आज ही की तारीख का वह पत्र दिखाया है जिसमे मुझे हुबली से धारवाड उस कार मे ले जाने का उल्लेख है जिसके बॉनेट पर राष्ट्रीय पताका फहरा रही थी। आपका यह अनुमान ठीक है कि ऐसा मेरी सहमति से नही किया गया होगा। वास्तव मे पताका श्री ठक्कर की ही प्रेरणा से फहराई गई थी और केवल धारवाड मे ही फहराई गई थी। वास्तव मे, जब श्री ठक्कर ने कार पर राष्ट्रीय पताका न देखी तो उन्होने प्रमुख कार्यकर्त्ताओ से कहा कि यदि ऐसा जान बूझकर किया गया है तो इसका कोई कारण दिखाई नही देता, क्योकि जहा तक उन्हे मालूम है राष्ट्रीय पताका फहराना अवध घोषित नही किया गया है। इस बातचीत की भनक मेरे कानो मे अवश्य पडी, पर मैंने उसमे कोई भाग नही लिया। साथ ही मैंने श्री ठक्कर के कार्य को नापसन्द भी नही किया। मेरा रुख बिलकुल तटस्थता का रहा। मैने न तो पताका फहराने के लिए हा कहा न मैंने वसे कार्य के प्रति नापसन्दगी ही जाहिर की। वास्तव मे कम से कम मध्य प्रान्त के एक स्थान पर तो मुझसे पताका फहराने को कहा गया, और मैंने वसा करने मे कोई सकोच नही किया। गत वर्ष समय से पहले अपनी रिहाई के बाद से मैंने किसी भी राजनतिक हलचल मे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग नही लिया है, और आगामी २ अगस्त तक मैं स्वत ही अपने ऊपर लगाई गई इस पाबन्दी का यथासम्भव पालन करते रहने का विचार रखता हू। पर इसका यह अर्थ कदापि नही है कि मैंने कांग्रेसवादी होना छोड दिया है न यही कि मुझे अपनी असलियत छिपाने की चेष्टा करनी चाहिए। राजनतिक हलचल से अपने आपको पथक रखने का मेरा एकमात्र अभिप्राय यही है कि इस अवधि की समाप्ति तक न तो मै स्वय सविनय अवज्ञा करूगा न दूसरा को ही वसा करने का उकसाऊगा। मेरी धारणा है कि श्री ठक्कर बापा ने कानून को वतमान रूप रखा को जिस रूप मे ग्रहण किया है वह गलत नही है अर्थात राष्ट्रीय पताका फहराना अपराध नही है। मैं यह भी कहना चाहूगा कि मध्य प्रान्त

और मद्रास प्रसिडेंसी के दौर म बहुधा मैंने एसी कारा म यात्रा की, जिन पर राष्ट्रीय पताका फहरा रही थी।

मैं आज तीसर पहर तीन बज बलगाव के लिए रवाना हो रहा हू।

आपका,
मो० क० गाधी

यह पत्र मिस्टर ब्राउन को सबोधित किया गया था।

६

भाई घनश्यामदास,

सर सेम्युअल से मैंने खत लिखा है उसकी एक प्रतिलिपि इसके साथ रखता हू—और एक धारवाड के मजिस्ट्रेट को जो पत्र लिखा था उसकी, धारवाड का केवल तुमार जानने के लिए है। सर सेम्युअल के बारे म कुछ काम लेना चाहता हू। स्वार्पा अगर वहा है, ता उनस पूछो क्या उस मिटिंग म हुआ था क्योंकि वह वहा मौजूद था। अगर न था तो भी उसीके जरिय यह मीटिंग हुई थी। जा लोग हाजिर थे उनके नाम ठाम देवें तो भी अच्छा हागा। जो कुछ भी हकीकत मिल सकती है वह इकट्ठा करना चाहता हू। आज तक इस चीज की बातें इग्रेजी म हो रही हैं। और है सबकी सब जाल। अजमेर का आज मरा बनाया गया है।

मुझ मिलन के लिए आना चाहत हैं। हरिजन-काय के लिए थाडी देर क या बुलाऊगा। ठक्कर बापा को दिल्ली जान दिय हैं। उनका यहा काम नहि था। या तो सब काय म उनक जसा सवर मदद दे सकता है। विशेष आवश्यकता न थी। बिहार क अथवा सर सम्युअल स जो पत्र व्यवहार शुरु किया है उस बारे म आना है ता दिन चाह तब आ सकत हैं। बुध स शुक्र तक मातीहारी तरफ हूगा। शुक्र की शाम का वापिस आऊगा।

ग्मथा हैरिजन १६ को मुबइ पहुचेगी। नस्टर वादगराय ग मिली है कन यहां आता है।

बापु क आशीवा

१२ २ ३८
पटना।

१०

२० मार्च १९३४

प्रिय डाक्टर स्वार्पा

हाल ही में मैं अपना मुख्य कार्यालय दिल्ली ले गया हूं इसलिए मुझे कलकत्ता वापस जाने पर ही पता चला कि आपका स्थायी रूप से विदेश विभाग को तबादला हो गया है। फलत आपके भारत आने की सम्भावना नहीं है। मैं तो यही आशा करूंगा कि यह खबर सच्ची नहीं है। अपने भारतवास के दौरान आपने इतने मित्र बनाये थे कि आपकी अनुपस्थिति अवश्य खलेगी। जो भी हो मुझे यह तो भरोसा है ही कि आप केवल चक्कर लगाने के लिए ही एक बार भारत आयेंगे यदि आयें तो मुझे पहले से ही एक पक्ति की सूचना अवश्य भेज दीजिये।

और हां एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय में मुझे आपकी सहायता की जरूरत है। आपको याद होगा कि आपने एक इटालियन काउण्टेस के निवास-स्थान पर गांधीजी से मिलने के लिए एक बैठक का आयोजन किया था। मैं समझता हूं वह महिला आपकी मित्र थी और मुझे यह भी आशा है कि उस बैठक के बाद सीनोर गयादा ने लदन टाइम्स को एक समुद्री तार भेजा था जिसमें उन्होंने यह कहा था कि गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन को दुबारा शुरू करने का फैसला किया है। जब इस समाचार की ओर गांधीजी का ध्यान आकर्षित किया गया तो उन्होंने उसका खण्डन किया और सीनोर गयादा ने उसका प्रत्युत्तर दिया। बात पुरानी पड़ गई है पर इस वाद विवाद की महत्ता ज्यों की त्यों बनी हुई है क्योंकि इसके द्वारा गांधीजी की नेकनीयती और साख पर आंच आती थी। जहां तक मुझे याद पड़ता है वह बैठक आपने बुलाई थी और मुझे यह भी याद पड़ता है कि आपने मुझसे दिल्ली में कहा था कि सीनोर गयादा ने गलतफहमी में पड़कर वह तार प्रकाशनार्थ भेज दिया था। आप उस बैठक के अवसर पर मौजूद थे या नहीं मैं नहीं जानता। पर यदि आप वहां मौजूद न भी रहे हों तो भी क्या आपके लिए उन मित्रों के संस्मरण मुझे बताना सम्भव होगा जो उस अवसर पर वहां उपस्थित थे? सम्भव है आप उन उपस्थित मित्रों के नाम देने तथा उन्होंने गांधीजी के कथन को लेकर जो धारणा बनाई उन्हें लिखकर भेज सकें? स्वयं गांधीजी तथा मीराबेन यह जोर देकर कहते हैं कि या तो यह सब गलतफहमी के कारण हुआ या प्रेस के लिए सामग्री जुटाने के हेतु एक मनगढ़न्त समाचार

बनाया गया। जब गांधीजी रोम के लिए रवाना हुए तो मैं लदन म ही रुक गया था, और मैं यह निश्चयपूर्वक कह सकता हू कि गाधीजी भारत शासन सबधी समस्या पर बातचीत को और आगे बढ़ाने के लिए ही लौट रहे थ और कानून भग करने का विचार उनके दिमाग से कोसा दूर था। इसलिए पत्रा म प्रकाशित समाचार से मुझे भी अचम्भा हुआ। जो हो, यदि आप उपस्थित सज्जनो के नाम और गाधीजी के रुख क सम्बन्ध म उनकी धारणा मुझे लिख भेजेंगे तथा सीनोर गयादा के उक्त समुद्री तार से सबधित और जो कुछ अतिरिक्त वत्त सग्रह कर सकें, तो मैं बडा आभार मानूगा।

भवदीय

घ० दा० बिडला

डा० स्कार्पा
माफन विदेश मत्रालय
रोम (इटली)

११

गाधीजी का वक्तव्य

इस वक्तव्य की प्रेरणा मुझे सत्याग्रह आश्रम के उन निवासियों और उससे सम्बद्ध व्यक्तियों के साथ विचार विमश करने से हुई जो हाल ही म जेल से छूटे थ तथा जिन्ह मैंने राजेन्द्र बाबू क कहने पर बिहार भेजा था। सबसे अधिक मुझे एक ऐसे समादत तथा बहुत दिनो के साथी के सबध म बातचीत स स्फूर्ति मिली जो जेल की मियाद पूरी करने म हिचकिचाता हुआ पाया गया और जिसने उसके सुपुर्द किये कायभार को निभान पर अपने निजी काम को तरजीह दी। यह निश्चय ही सत्याग्रह के नियमो के विरुद्ध था। इसके द्वारा मुझे अपने उक्त साथी की अपूर्णता तो विदित हुई ही, उससे भी अधिक मुझे स्वय अपनी अपूर्णता का भान हुआ। उस मित्र न कहा कि उसकी धारणा थी कि मैं उसकी दुबलता स परिचित हू। वास्तव म मेरी आखें मुदी हुई थी। एक नेता के लिए अधापन अक्षम्य अपराध है मुझे तुरत दिखाई पडा कि फिलहाल सक्रिय सविनय अवज्ञा का अकेला मैं ही एकमात्र प्रतिनिधि हू।

गत जुलाई मास म पूना मे हुई अनौपचारिक बैठक के दौरान, जो एक सप्ताह

तक चली थी, मैंने कहा था कि वसे व्यक्तिगत रूप से सत्याग्रह करने के इच्छुक व्यक्तियो के लिए द्वार खुला हुआ है पर सत्याग्रह के सदेश को जीवित रखने के लिए एक व्यक्ति ही यथेष्ट है। पर अब हृदय टटोलने के पश्चात मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि यदि सत्याग्रह को पूण स्वराज्य प्राप्ति का साधन बनाना है तो वतमान परिस्थिति म केवल एक ही व्यक्ति को सविनय अवज्ञा का उत्तरदायित्व ग्रहण करना चाहिए। वह व्यक्ति स्वय मैं हू।

मुझे लगता है कि जनता न सत्याग्रह के सदेश के मम को पूरे तौर से नही समझा है। इसका कारण यह है कि जनता तक पहुचते पहुचत उसम काफी मिलावट आ गई है। अब मैं यह स्पष्ट रूप से समझ पा रहा हू कि यदि आध्यात्मिक शस्त्रो के प्रयोग की दीक्षा का काय गर-आध्यात्मिक माध्यम के द्वारा सम्पन्न कराया जाये तो वे शस्त्र अपना तेज खो बठते ह। आध्यात्मिक शस्त्र तो अपन ही बूते पर जीवित रहते है। हरिजन काय सम्बन्धी दौरे की जनता म जो प्रतिक्रिया हुई है उसस मेरा अभिप्राय भली भाति स्पष्ट हो जाता है। जनता न जिस प्रकार खुले दिल स तथा स्वेच्छापूवक हरिजन-आन्दोलन का स्वागत किया उसस कायकर्त्तागण दग रह गये। उन्हाने विशाल जनसमूह मे इतना उत्साह इससे पहल नही देखा था।

सत्याग्रह एक विशुद्ध आध्यात्मिक शस्त्र है। उसका प्रयोग पार्थिव दिखाई पडनेवाल लक्ष्या की सिद्धि मे ऐसे स्त्री-पुरुषो द्वारा किया जा सकता है जिन्ह उसके आध्यात्मिक पहलू का ज्ञान नही है बशर्ते कि उनकी पीठ पर एसा सचालक मौजूद रहे जो उसकी आध्यात्मिकता स परिचित हो। चीर फाड के उपकरणा का उपयोग हर किसी के लिए सम्भव नही है। बहुत-स लोग ऐस औजारा का उपयोग करत भी है पर उनका निर्देशन एक शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ अवश्य करता है। मैं अपन आपको निर्माणशील सत्याग्रह विशेषज्ञ मानता हू। एक दफा सजन को जो अपने विषय का विशेषज्ञ है जितनी सतकता बरतने की जरूरत है मुझ उसस कही अधिक सतकता बरतनी होगी, क्योकि अभी मेरा अनुसन्धान काय पूरा नही हो पाया ह। यह सत्याग्रह विज्ञान है ही ऐसा कि उसके विद्यार्थी के लिए केवल अगले कदम तक देख पाना सम्भव है।

आश्रमवासिया के साथ वार्तालाप करने के बाद मैंने अपने भीतर की टाह ली और अब मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि मुझे सारे काग्रेसिया को स्वराज्य प्राप्ति के हेतु सत्याग्रह करना बन्द करने का परामश देना चाहिए, हा किसी प्रसग विशेष पर छेडे गये सत्याग्रह की बात न्यारी है। उन्ह यह काय अकले मुझ पर छोड देना चाहिए। इसका प्रयोग मेरे जीवनकाल म तभी किया जा सकता है, जब

या तो मैं उसका स्वय सचालन करू, या अन्य कोई ऐसा व्यक्ति करे जो अपने आपको मुझसे बढ़कर विशेषज्ञ सिद्ध कर सके और जो जनता की आस्था अर्जित कर सके। मैं यह सम्मति सत्याग्रह के प्रणेता और प्रारम्भकर्त्ता की हैसियत से दे रहा हू। जो लोग अब तक स्वराज्य प्राप्ति के हेतु सविनय अवज्ञा मेरे प्रत्यक्ष परामर्श से अथवा वस निष्कर्ष के द्वारा करते आ रहे थे उन्हें अब कृपा करके सविनय अवज्ञा-सम्बन्धी कार्य कलाप बन्द कर देना चाहिए। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि भारत के स्वातत्र्य-सग्राम के हित म यही सबसे अच्छा मार्ग है।

मानव-जाति के लिए इस शस्त्र के सर्वोत्कृष्ट होने के बारे म मुझे तनिक भी सदेह नही है। सत्याग्रह के बारे म मेरा यह दावा है कि यह शस्त्र हिंसा या युद्ध का पूर्ण विकल्प है। इसका विकास यह सोचकर किया गया है कि इसके द्वारा तथाकथित आतकवादियो तथा उन शासको के दिलो तक पहुचा जा सके जो 'आतकवादियो' का मूलोच्छेदन करने के बहाने समूचे राष्ट्र को पुंसत्वहीन बनाने के इच्छुक हैं। पर अनेक लोगो द्वारा अन्यमनस्क भाव से किया गया सत्याग्रह भले ही शानदार प्रतीत हो वह न तो आतकवादियो के दिलो तक पहुच पाया है न शासको के दिलो तक ही। विशुद्ध सत्याग्रह मे दोनो के दिलो तक पहुचने की क्षमता अवश्य होगी। इस बात की सत्यता की परीक्षा लेने के लिए सत्याग्रह को एक बार म केवल एक व्यक्ति तक ही सीमित रखना चाहिए। अभी तक इसे इस कसौटी पर नही कसा गया है। अब ऐसी परख का समय आ गया है।

मैं पाठक को सचेत कर देना चाहता हू कि वह सत्याग्रह को सविनय अवज्ञा मात्र न समझ बठे। सत्याग्रह का क्षेत्र सविनय अवज्ञा से कही अधिक विस्तीर्ण है। इसकी परिधि म सत्य की निरन्तर खोज करना आता है और ऐसी खोज म लगे हुए व्यक्ति को जो शक्ति प्राप्त होती है वह भी सत्याग्रह का एक अग है। यह खोज शुद्ध अहिंसात्मक साधना के द्वारा ही सम्भव है।

अब इस प्रकार रिहा हुए सत्याग्रहियो का क्या कर्त्तव्य है। यदि वे आह्वान का तत्काल पालन करने को प्रस्तुत रहे, तो उन्हें अपरिग्रह और स्वेच्छा से ग्रहण की गई गरीबी के सौन्दर्य और कला का अध्ययन करना चाहिए। उन्हें राष्ट्र-निर्माण के कार्यों म लग जाना चाहिए उन्हें स्वय कात बुनकर खद्दर के प्रचार कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए उन्हें साम्प्रदायिक एकता की चेष्टा करनी चाहिए, उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रो म एक दूसरे के प्रति आदर्श आचरण करना चाहिए उन्हें स्वय अपने आचार-व्यवहार म अस्पृश्यता का उसके सारे पहलुओ से उन्मूलन करना चाहिए उन्हें मादक द्रव्यो और मादक पेय पदार्थों से परहेज रखना चाहिए तथा जो लोग इसके व्यसनी हो उनके साथ सम्पर्क स्थापित करके

तक चली थी, मैंने कहा था कि बस व्यक्तिगत रूप से सत्याग्रह करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए द्वार खुला हुआ है पर सत्याग्रह के सदश को जीवित रखने के लिए एक व्यक्ति ही यथेष्ट है। पर अब हृदय टटोलने के पश्चात मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि यदि सत्याग्रह को पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति का साधन बनाना है तो वर्तमान परिस्थिति में केवल एक ही व्यक्ति को सविनय अवज्ञा का उत्तरदायित्व ग्रहण करना चाहिए। वह व्यक्ति स्वय मैं हू।

मुझे लगता है कि जनता ने सत्याग्रह के सदश के मर्म को पूरे तौर से नही समझा है। इसका कारण यह है कि जनता तक पहुचते पहुचते उसमें काफी मिलावट आ गई है। अब मैं यह स्पष्ट रूप से समझ पा रहा हू कि यदि आध्यात्मिक शस्त्रों के प्रयोग की दीक्षा का काय गैर-आध्यात्मिक माध्यम के द्वारा सम्पन्न कराया जाय तो वे शस्त्र अपना तेज खो बैठते हैं। आध्यात्मिक शस्त्र तो अपने ही बूते पर जीवित रहते है। हरिजन-कार्य सम्बन्धी दौरे की जनता में जो प्रतिक्रिया हुई है उससे मेरा अभिप्राय भली भाति स्पष्ट हो जाता है। जनता ने जिस प्रकार खुले दिल से तथा स्वेच्छापूर्वक हरिजन-आन्दोलन का स्वागत किया उसमें कार्यकर्तागण दग रह गये। उन्होंने विशाल जनसमूह में इतना उत्साह इससे पहले नही देखा था।

सत्याग्रह एक विशुद्ध आध्यात्मिक शस्त्र है। उसका प्रयोग पार्थिव दिखाई पडनेवाले लक्ष्यों की सिद्धि में ऐसे स्त्री पुरुषो द्वारा किया जा सकता है जिन्हें उसके आध्यात्मिक पहलू का ज्ञान नही है बशर्ते कि उनकी पीठ पर ऐसा सचालक मौजूद रहे जो उसकी आध्यात्मिकता से परिचित हो। चीर फाड के उपकरणो का उपयोग हर किसी के लिए सम्भव नही है। बहुत से लोग ऐसे औजारों का उपयोग करते भी हैं पर उनका निर्देशन एक शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ अवश्य करता है। मैं अपने आपको निर्माणशील सत्याग्रह विशेषज्ञ मानता हू। एक दफा सज्जन को, जो अपने विषय का विशेषज्ञ है जितनी सतर्कता बरतने की जरूरत है मुझे उससे कही अधिक सतर्कता बरतनी होगी क्योंकि अभी मेरा अनुसन्धान काय पूरा नही हो पाया है। यह सत्याग्रह विज्ञान है ही ऐसा कि उसके विद्यार्थी के लिए केवल अगले कदम तक देख पाना सम्भव है।

आश्रमवासियो के साथ वार्तालाप करने के बाद मैंने अपने भीतर की टोह ली और अब मैं इस नतीजे पर पहुचा हू कि मुझे सारे काग्रेसियो को स्वराज्य प्राप्ति के हेतु सत्याग्रह करना बन्द करने का परामर्श देना चाहिए हा, किसी प्रसग विशेष पर छेडे गये सत्याग्रह की बात न्यारी है। उन्हें यह काय अकेले मुझ पर छोड देना चाहिए। इसका प्रयोग मेरे जीवनकाल में तभी किया जा सकता है, जब

या तो मैं उसका स्वय सचालन करू या अन्य कोई ऐसा व्यक्ति कर जो अपने आपको मुझसे बढकर विशेषज्ञ सिद्ध कर सके और जो जनता की आस्था अर्जित कर सके। मैं यह सम्मति सत्याग्रह के प्रणेता और प्रारम्भकर्त्ता की हैसियत से दे रहा हू। जो लोग अब तक स्वराज्य प्राप्ति के हेतु सविनय अवज्ञा मेरे प्रत्यक्ष परामर्श से अथवा बस निष्कप के द्वारा करते आ रहे थे उन्हे अब कृपा करके सविनय अवज्ञा सम्बन्धी कार्य कलाप बन्द कर देना चाहिए। मेरा यह दृढ विश्वास है कि भारत के स्वातत्र्य-सग्राम के हित म यही सबस अच्छा माग है।

मानव-जाति के लिए इस शस्त्र के सर्वोत्कृष्ट होने के बारे म मुझे तनिक भी सदेह नही है। सत्याग्रह के बारे म मेरा यह दावा है कि यह शस्त्र हिंसा या युद्ध का पूर्ण विकल्प है। इसका विकास यह सोचकर किया गया है कि इसके द्वारा तथाकथित आतकवादियो तथा उन शासको के दिलो तक पहुचा जा सके जो आतकवादियो का मूलोच्छेदन करने के बहाने समूचे राष्ट्र को पुसत्वहीन बनाने के इच्छुक हैं। पर अनेक लोगो द्वारा अन्यमनस्क भाव म किया गया सत्याग्रह भले ही शानदार प्रतीत हो वह न तो आतकवादियो के दिलो तक पहुच पाया है न शासको के दिलो तक ही। विशुद्ध सत्याग्रह म दोनो के दिलो तक पहुचने की क्षमता अवश्य होगी। इस बात की सत्यता की परीक्षा लेने के लिए सत्याग्रह को एक बार मे केवल एक व्यक्ति तक ही सीमित रखना चाहिए। अभी तक इसे इस कसौटी पर नही कसा गया है। अब ऐसी परख का समय आ गया है।

मैं पाठक को सचेत कर देना चाहता हू कि वह सत्याग्रह को सविनय अवज्ञा-मात्र न समझ बैठे। सत्याग्रह का क्षेत्र सविनय अवज्ञा स कही अधिक विस्तीर्ण है। इसकी परिधि म सत्य की निरतर खोज करना आता है और ऐसी खोज म लगे हुए व्यक्ति को जो शक्ति प्राप्त होती है वह भी सत्याग्रह का एक अग है। यह खोज शुद्ध अहिंसात्मक साधना के द्वारा ही सम्भव है।

अब इस प्रकार रिहा हुए सत्याग्रहियो का क्या कर्त्तव्य है। यदि वे आह्वान का तत्काल पालन करने को प्रस्तुत रहें, तो उन्हे अपरिग्रह और स्वच्छा स ग्रहण की गई गरीबी के सौन्दय और कला का अध्ययन करना चाहिए। उन्हे राष्ट्र निर्माण के कार्यों म लग जाना चाहिए उन्हे स्वय कात-बुनकर खद्दर के प्रचार-काय को आगे बढाना चाहिए उन्हें साम्प्रदायिक एकता की चेष्टा करनी चाहिए उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रो म एक-दूसरे के प्रति आदश आचरण करना चाहिए, उन्हें स्वय अपने आचार-व्यवहार मे अस्पश्यता का उसके सारे पहलुओ से उन्मूलन करना चाहिए उन्हें मादक द्रव्यो और मादक पेय पदार्थों स परहेज रखना चाहिए तथा जो लोग इसके व्यसनी हो उनके साथ सम्पर्क स्थापित करके

उनकी यह टेव छुडाने की चेष्टा करनी चाहिए उन्हे अपने व्यक्तिगत जीवन मे पवित्रता का आचरण करना चाहिए। कुछ ऐसी भी सेवाए है जिनके द्वारा गरीबी की जिन्दगी बिताई जा सकती है। जिनके लिए गरीबी के स्तर का जीवन बिताना अव्यवहार्य हो उन्ह राष्ट्रीय महत्व के छोटे मोटे अगणित उद्योग धधो म काम करके अपेक्षाकृत अधिक अर्जन करना चाहिए। यह बात पूरी तरह हृदयगम कर लेनी चाहिए कि सत्याग्रह केवल उन्ही के लिए है जो स्वेच्छापूर्वक कानून और व्यवस्था का पालन करना जानते है।

मेरे लिए यह कहना अनावश्यक है कि इस वक्तव्य के द्वारा मैं किसी भी भाति काग्रेस का उसके काम से वचित नही कर रहा हू। यह परामर्श तो केवल उन लोगो के हितार्थ है, जो सत्याग्रह के मामले मे मेरे पथ प्रदर्शन की अपेक्षा करते हैं।

मो० क० गाधी

सहरसा
२ ४ ३४

१२

अगाथा हैरिसन की टिप्पणिया

इस लेख म जिस घटना का वर्णन किया गया है, वह उस समय घटित हुई थी जब गत जून मास के आरम्भ म दक्षिण उडीसा के दौरे के दिनो म मैं मिस्टर गाधी के साथ थी। मैंने तत्काल और उसी स्थल पर 'क्रिश्चियन सेंचुरी' के सम्पादक मिस्टर पाल हचिन्सन को जो मेरे परिचित हैं एक पत्र लिखा जिसके साथ मैंने वह पुर्जा नत्थी कर दिया जिस पर मिस्टर गाधी ने अपनी टिप्पणी लिखी थी। मिस्टर हचिन्सन ने लौटती डाक म उत्तर भेजा कि वे लोग उस पुर्जे का फोटो मेरे लेख के साथ छापने का उपक्रम कर रहे हैं। लेख 'क्रिश्चियन सेंचुरी' के अगस्त के प्रारम्भिक दिनो मे निकलनेवाले अक मे प्रकाशित होगा। तब तक मिस्टर गाधी का उपवास भी आरम्भ हो जायेगा। उक्त पत्र की अमेरिका तथा अन्य देशो म काफी खपत है। पत्र शिकागो से निकलता है।

१) क्रिश्चियन सेंचुरी प्रति सप्ताह किन विभिन्न परिस्थितियो म पढा जाता

है इसकी अटकल एक रोचक विषय है। ऐसी ही एक परिस्थिति का वर्णन निम्न लिखित है

मैं भारत मे पिछले चार महीनो से, 'देखने और सुनने' के उद्देश्य से ठहरी हुई हू। मैं जिस ढग के कार्यों म सलग्न हू उसे ध्यान म रखते हुए दोनो देशो के एक-दूसरे को समझने के लिए यह अत्यन्त वाछनीय चीज है। मैं इस वर्ष मिस्टर गाधी से वार्तालाप करने को विशेषरूप स उत्कठित थी। मेरा यह प्रवास आगामी अगस्त मास के प्रथम सप्ताह मे समाप्त हो जायेगा। इन सप्ताहो म मैंने जो कुछ देखा, उसका यदि पूरा वर्णन करू ता एक पुस्तक तैयार हो जाये। पर एसी पुस्तक कभी नही लिखी जा सकती। मेरी वार्ता की परिधि म अग्रेज और भारतीय नर नारी थे, उच्चपदस्थ सरकारी अधिकारी थे पुरातन विचारधारा का प्रतिनिधित्व करनेवाले व्यक्ति थे तथा तीव्र राष्ट्रीय भावनाओ को व्यक्त करनेवाले नर-नारी तो थे ही। विशेषकर यहा के नारी-समाज का एक अपना स्वतत्र तथा प्रभावशाली अस्तित्व है। मिस्टर गाधी ने महिलाओ के इस आदोलन का बखान 'नारियो की चमत्कारपूर्ण जागति' के रूप म किया है।

जिस समय मिस्टर गाधी न सविनय अवज्ञा आन्दोलन को स्थगित करनेवाला इतिहास प्रसिद्ध वक्तव्य तयार किया था, मैं उनके पास ही थी। बिहार के विध्वस्त अचल के दौरे म मैं उनके साथ रही केन्द्रीय रिलीफ कमेटी के अध्यक्ष बाबू राजेन्द्रप्रसाद भी साथ मे थे। जब राची की बैठक मे काग्रेस न इन अनेक वर्षों के बहिष्कार के बाद कौंसिल प्रवेश के निर्णय पर विचार विमर्श किया तो मैं उस अवसर पर वहा मौजूद थी। जब अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी ने अपन महत्व पूर्ण अधिवेशन म मिस्टर गाधी के वक्तव्य की पुष्टि की और अन्त म यह निर्णय किया कि काग्रेस कौंसिल प्रवेश के निमित्त एक ससदीय समिति का गठन किया जाय, उस समय भी मैं वहा थी।

और आखिर म जब महात्मा ने दक्षिण उडीसा का दौरा किया, तो मैं उनके साथ ही रही।

२) उडीसा के लिए रवाना होने से पहले मैं कलकत्ते की वाई० डब्ल्यू० सी० ए० म ठहरी। मेरी सहृदय सखिया न मेरी रेल यात्रा के दौरान पठनीय सामग्री के बतौर जो साहित्य दिया, उसम 'क्रिश्चियन सन्चुरी' के अक भी थे।

मेरे आने के दूसरे दिन अर्थात् सोमवार को मिस्टर गाधी का मौन दिवस था। बेहद गर्मी थी, हम सब पेडो के नीचे बैठे कुछ-न-कुछ कर रहे थे। महात्मा के आगे पत्रो, तारो और अन्य महत्वपूर्ण कागज पत्रो का ढेर लगा हुआ था। और मैं 'क्रिश्चियन सेन्चुरी' के अको का पारायण करने मे तल्लीन थी।

उनकी यह टेव छुडाने की चेष्टा करना चाहिए, उन्हें अपने व्यक्तिगत जीवन मे पवित्रता का आचरण करना चाहिए। कुछ एसी भी सेवाए हैं जिनके द्वारा गरीबी की जिन्दगी बिताई जा सकती है। जिनके लिए गरीबी के स्तर का जीवन बिताना अव्यवहार्य हो उन्हें राष्ट्रीय महत्व के छोटे मोटे अगणित उद्योग धधो मे काम करके अपक्षाकृत अधिक अर्जन करना चाहिए। यह बात पूरी तरह हृदयगम कर लेनी चाहिए कि सत्याग्रह केवल उन्ही के लिए है जो स्वेच्छापूर्वक कानून और व्यवस्था का पालन करना जानते है।

मेरे लिए यह कहना अनावश्यक है कि इस वक्तव्य के द्वारा मैं किसी भी भाति काग्रेस को उसके काम से वचित नही कर रहा हू। यह परामर्श तो केवल उन लोगो के हितार्थ है जो सत्याग्रह के मामले मे मेरे पथ प्रदर्शन की अपेक्षा करते है।

मो० क० गाधी

सहरसा,
२ ४ ३४

१२

अगाथा हैरिसन की टिप्पणिया

इस लेख मे जिस घटना का वर्णन किया गया है, वह उस समय घटित हुई थी जब गत जून मास के आरम्भ मे दक्षिण उडीसा के दौरे के दिनो मे मैं मिस्टर गाधी के साथ थी। मैंने तत्काल और उसी स्थल पर 'क्रिश्चियन सेंचुरी' के सम्पादक मिस्टर पाल हचिन्सन को जो मेरे परिचित हैं एक पत्र लिखा जिसके साथ मैंने वह पुर्जा नत्थी कर दिया जिस पर मिस्टर गाधी ने अपनी टिप्पणी लिखी थी। मिस्टर हचिन्सन ने लौटती डाक से उत्तर भेजा कि वे लोग उस पुर्जे का फोटो मेरे लेख के साथ छापने का उपक्रम कर रहे है। लेख 'क्रिश्चियन सेंचुरी' के अगस्त के प्रारम्भिक दिनो मे निकलनेवाले अक मे प्रकाशित होगा। तब तक मिस्टर गाधी का उपवास भी आरम्भ हो जायेगा। उक्त पत्र की अमेरिका तथा अन्य देशो मे काफी खपत है। पत्र शिकागो से निकलता है।

१) क्रिश्चियन सेंचुरी प्रति सप्ताह किन विभिन्न परिस्थितियो मे पढा जाता

है, इसकी अटकल एक रोचक विषय है। ऐसी ही एक परिस्थिति का वर्णन निम्न-लिखित है

मैं भारत म पिछले चार महीना से 'देखने और सुनने' के उद्देश्य से ठहरी हुई हू। मैं जिस ढग के कार्यों म सलग्न हू उसे ध्यान म रखते हुए दोनो देशो के एक-दूसरे को समझने के लिए यह अत्यन्त वाछनीय चीज है। मैं इस वप मिस्टर गाधी से वार्तालाप करने को विशेषरूप से उत्कठित थी। मेरा यह प्रवास आगामी अगस्त मास के प्रथम सप्ताह म समाप्त हो जायेगा। इन सप्ताहा म मैंने जो कुछ देखा, उसका यदि पूरा वणन करू तो एक पुस्तक तैयार हो जाये। पर ऐसी पुस्तक कभी नही लिखी जा सकती। मेरी वार्ता की परिधि मे अग्रेज और भारतीय नर नारी थे, उच्चपदस्थ सरकारी अधिकारी थे पुरातन विचारधारा का प्रतिनिधित्व करनेवाले व्यक्ति थे तथा तीव्र राष्ट्रीय भावनाआ को व्यक्त करनेवाले नर-नारी तो थे ही। विशेषकर यहा के नारी-समाज का एक अपना स्वतत्र तथा प्रभावशाली अस्तित्व है। मिस्टर गाधी ने महिलाआ के इस आदोलन का बखान नारियो की चमत्कारपूर्ण जागति के रूप म किया है।

जिस समय मिस्टर गाधी न सविनय अवज्ञा आन्दोलन को स्थगित करनेवाला इतिहास प्रसिद्ध वक्तव्य तयार किया था, मैं उनके पास ही थी। विहार के विध्वस्त अचल के दौर म मैं उनके साथ रही केन्द्रीय रिलीफ कमेटी के अध्यक्ष बाबू राजेन्द्रप्रसाद भी साथ म थे। जब राची की बैठक म काग्रेस ने इन अनेक वर्षों के बहिष्कार के बाद कौंसिल प्रवेश के निणय पर विचार विमश किया तो मैं उस अवसर पर वहा मौजूद थी। जब अखिल भारतीय काग्रेस कमटी ने अपन महत्व पूण अधिवशन म मिस्टर गाधी के वक्तव्य की पुष्टि की और अन्त म यह निणय किया कि काग्रेस कौंसिल प्रवेश के निमित्त एक ससदीय समिति का गठन किया जाय, उस समय भी मैं वहा थी।

और आखिर म जब महात्मा ने दक्षिण उडीसा का दौरा किया, तो मैं उनके साथ ही रही।

२) उडीसा के लिए रवाना होन से पहले मैं कलकत्ते की वाई० डब्ल्यू० सी० ए० म ठहरी। मरी सहृदय सखिया न मेरी रेल यात्रा के दौरान पठनीय सामग्री क बतौर जो साहित्य दिया उसम 'क्रिश्चियन सेन्चुरी' के अक भी थे।

मरे आने के दूसरे दिन अर्थात सोमवार को मिस्टर गाधी का मौन दिवस था। बेहद गर्मी थी हम सब पखों के नीचे बैठे कुछ-न-कुछ कर रहे थे। महात्मा क आग पत्रा, तारो और अन्य महत्वपूण कागज-पत्रो का ढेर लगा हुआ था। और मैं 'क्रिश्चियन सेन्चुरी' के अकों का पारायण करने म तल्लीन थी।

सहसा मेरी दृष्टि १४ माच के अक की एक सुरखी पर जमी— हम नोबल शान्ति पुरस्कार के लिए गाधी को चुनते हैं।" शायद उस लेख को पाठक भूल गये होंगे कि उसके बाद क्या हुआ था। मैं उसे पूरा उद्धत करती हू

नोबल शाति पुरस्कार के लिए गाधी को क्या न चुना जाए ?" वसा करके हम उनके साथ कोई एहसान नही करेंगे और शायद वह उसे लेना भी नही चाहेग। इस सम्मान से वह विशेष रूप से प्रभावित नही हाग और उन्ह जो रुपया मिलेगा, उसे दे डालने के अतिरिक्त और किस काम म लगाए वह यह तक न समझ पायेंगे। ऐसे पुरस्कार के लिए ऐसे ही उत्कृष्ट गुणा की आवश्यक्ता है। नोबल समिति इस पुरस्कार के अधिकारी को खाज निकालन म असमथ रही। यह सातवा अवसर है जब यह पुरस्कार किसी को नही दिया गया। अब तक जो पच्चीस पुरस्कार दिये गए हैं उनम से अधिकाश राष्ट्रपतिया मत्रिया तथा अन्य उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारिया को मिले ह—जसा कि स्टाकहोम, शातिमण्डल आलोचना के रूप मे कहता है और शाति के लिए सचमुच काम करनेवाले व्यक्तिया और शाति और निरस्त्रीकरण काय म सचेष्ट क्रातिवादिया को बहुत कम।' यह दावा किया गया है कि इस पुरस्कार के जन्मदाताओ का उद्देश्य यही था कि यह पुरस्कार उन साहसी स्वप्नद्रष्टा व्यक्तिया को मिले जिनकी विचार धारा अपने युग से कई कदम आगे है पर जो आकस्मिक साहाय्य के अभाव म अपना सदेश दूर तक पहुचाने मे असमथ रहे हैं न कि उन व्यवहारकुशल राज नेताओ को जिन्हाने मानव जाति का रक्तपात रोकने की एक लम्बी यात्रा के बजाय कवल कुछ अस्थायी सधिया करने या क्षणिक बचत के रास्ते ढूढने म ही अपनी ताकत लगाई हो। यह दोना ही प्रकार की सेवाए पुरस्कृत होनी चाहिए पर यदि इन पुरस्कारो के द्वारा इतिहास के प्रवाह को प्रभावित करना है, तो ये जितने आदशवादी महामानवा को उनकी सेवाओ की सराहनास्वरूप दिये जाने चाहिए उतने कूटनीतिज्ञो और राजनीति विशारदा को नही। यदि गाधी का उनके कटु आलोचक जसा अव्यावहारिक और कट्टर व्यक्ति बताते हैं वसा मान भी लिया जाय तो भी इस बात से इन्कार नही किया जा सकता कि वह ससार भर मे अहिंसा के अन्यतम पुजारी है। यदि वे नोबल शान्ति पुरस्कार के लिए सर्वाधिक तकसम्मत अधिकारी नही माने जा सकते तो इन पुरस्कारा को जिन लोकप्रिय उद्देश्यो को सामने रखकर जन्म दिया गया था उनमे सशोधन की जरूरत है।

— क्रिश्चियन सेंचुरी, १४ माच १९४८

मैंने कागज पत्रों से घिरे शान्त भाव से बैठे महात्मा की ओर नजर दौडाई, उन्होंने इस ढेर को निबटाने के लिए जिस दयापूर्ण अवकाश की जरूरत थी उसका वह पूरे सप्ताह उपयोग करेंगे। कुछ गज की दूरी पर ग्रामीण लोग एकत्रित थे, कुछ बैठे थे, कुछ खडे थे। इनमें से अनेक गत रात्रि से यहा डेरा डाले हुए थे। अब ये सब एकटक इस व्यक्ति की ओर देखने में तल्लीन थे, जो इस कठोर ससार में उनके लिए बहुत-कुछ है। यह आदमी सब कुछ त्यागकर उनके पास आया है और उन्हें जिस ढंग का जीवन अपनाने का उपदेश देता है उसे वह स्वय अपने जीवन में उतारता है।

मैं उनके पास वह लेख लेकर पहुची। मैंने लेख के उस पैरे पर निशान लगा दिया था। उन्होंने उसे पढा एक बार नही दो बार फिर एक कागज का टुकडा उठाकर उस पर लिखा क्या तुम किसी ऐसे स्वप्नद्रष्टा को जानती हो जिसने किसी बाहरी सहायता से लोगों का दिल जीता हो ?

बस इतना ही ! हा, उन्होंने मुझे वह पुर्जा 'क्रिश्चियन सेंचुरी' का अक पकडाते समय मेरी ओर कौतुक भरी मुस्कराहट के साथ देखा भर। मैंने जिज्ञासा की कि क्या वह कुछ अधिक कहना चाहेंगे तो उन्होंने नकारात्मक ढंग से सिर हिला दिया।

बाद में उनका मौनव्रत समाप्त होने पर जब हम दूसरे गाव की ओर चल पडे तो मैंने पुन उस सम्पादकीय की चर्चा उठाई और कहा कि मैं यह पुर्जा उस आदमी के पास भेजना चाहती हू जिसे यह लेख उस समय लिखने की सूझी, जब शान्ति के अग्रदूत की सारी चेष्टाए निष्फल प्रतीत हो रही थी।

\+ \+ \+

३) और अब मैं इग्लैड वापस आ गई हू। मुझसे नित्य प्रति पूछा जाता है 'क्या आपने मिस्टर गाधी का प्रभाव क्षीण होते नही पाया ? क्या जवाहरलाल पर निगाह रखना अधिक समयोचित नही है ?"

मेरे मस्तिष्क में इस सप्ताह के सस्मरण आकर इकट्ठे हो गये हैं। उदाहरण के लिए वह भूकम्पग्रस्त अचल, जिसके दौरे में मैं ६ दिन तक बराबर महात्मा की कार में रही। लोग कितने घोर कष्ट के दौर में गुजर रहे थे। धन-जन की कितनी भारी क्षति हुई थी। वह जिन जिन सभाओ में बोले उन सबमें मैं मौजूद थी। मैं समझे बैठी थी कि जन-समुदाय की बाबत मेरी काफी जानकारी है, पर नर-नारियों की इस बढ्ती हुई भीड जमा देखने के लिए एक नयी चीज थी, और वह इन लोगो की विपत्ति में उनके प्रति सवेदना-मात्र व्यक्त करके रह गये हो ऐसी बात नही थी। उनकी चुनौती थी इस दैवी प्रकोप से आपने क्या सबक सीखा ? यह समय

सरकार और काग्रेस, हिन्दू और मुसलमान, या स्पश्य और अस्पश्य म भेद भाव वरतने का नही है। यदि आपको कष्ट निवारक निधियों स पसा लेना है, तो वह आपको कमाकर लेना है, इत्यादि।"

वह स्त्रिया को सबोधित करके कहते (बिहार म अनेक स्त्रिया अब भी पर्दे म रहती हैं), 'क्या इस दैवी प्रकोप न आपको कुछ नही सिखाया? यह सब मूखता (पर्दा) क्या? घूघट के लिए तो केवल एक ही स्थान है और वह है हृदय।

महात्मा हद दर्जे के व्यावहारिक व्यक्ति भी थ। वह इस अचल की सभाओ म चदा इकट्ठा करने से नहीचूके। स्त्रिया ने अपन गहन उतारकर उनको भेंट किय।

माग मे पडनेवाले कुछ मीला को छोडकर हम प्राणिया की सजीव दीवारा को बेधकर गुजरना पडता था। ज्या ही हम किसी गाव के निकट पहुचते नर नारिया के ठट्ट के ठट्ट हमारा माग छेक लेते, और कभी कभी तो भीड इतनी सघन हो जाती थी कि दम घुटने लगता था। सब कोई इस उपास्य व्यक्ति के दशन करने को आतुर थे। बहुधा वह इतन थक जाते कि कार म ही गुडी मुडी होकर सो जाते। तब म कार के फश पर बठ जाती। जब हम किसी गाव के पास पहुचते तो एक ओर से राजेन्द्र बाबू और दूसरी ओर से ड्राइवर खिडकी म से झाककर धीमी आवाज म हिदुस्तानी म कहते सो रहे हैं। य शब्द भीड भर मे प्रति ध्वनित हो जात। पर इतने पर भी लोग कार को चारा ओर स घेरने से न चूकते और कुछ नही तो उनके सोते हुए ही दशन कर लेंगे। ऐसा करते समय व शोर गुल बिलकुल नही करत, ताकि उनकी नीद न टूट जाय। मैं कार के फश पर बठी जन-समुदाय की मुद्रा का अध्ययन करती और अवाक रह जाती ऐसा लगता माना वे साक्षात भगवान के दशन कर रहे हा।

एक और सस्मरण उभर आया—हरिजन काय सबधी दौरे का। इस दौरे म हम रेलवे स्टेशना और शहरा स कासा दूर गावो मे से होकर गुजरते—बहुधा रात को खेतो म ठहरते अथवा किसी आश्रम म आश्रय लेते। हमार साथ नर-नारिया का, बालक वद्धो का झुड चलता। यह सब खेतो मे अपना काम छोडकर हमारे साथ हो लते। बाद म मिस्टर गाधी ने ताकीद कर दी कि ऐसा न किया जाय। वह कहत काम और मवेशिया को छोडकर क्यो आये? खचाखच भरी सावजनिक सभाए हरिजन-बस्तियो का निरीक्षण, स्थानीय समितियो के साथ बातचीत, सनातनी कहे जानेवाले रूढिग्रस्त विपक्षिया के साथ वह जिस ढग से पश आते थ उसका अध्ययन—व दिन नव प्राण सचार करनेवाली घटनाआ स लबालब भर रहते।

मिस्टर गाधी अस्पश्यता के सदव घोर विरोधी रहे हैं पर यह वष उसके

विरुद्ध प्रबल प्रचार-काय के निमित्त अर्पित किया गया है। इस वप के दौरान जितना कुछ हासिल हुआ है, ससार को उसका आभास प्राय नही के बराबर है—क्या विशाल जन-समुदाय को दी गई उनकी चुनौती, जिसे सब मनोयाग के साथ हृदयगम करते क्या स्थानीय समितिया के सहयोग मे काय-कलाप, क्या स्वय महात्मा द्वारा सपादित वह पत्र जिसे 'हरिजन' का नाम दिया गया है और जिसम इस आश्चयजनक वप की उपलब्धिया का इतिहास रहता है। इसका मूल्य एक सेंट मात्र है। लोग इसे पढते क्या नही ?

सही है कि उनका प्रचार-काय अस्पश्यता निवारणाथ है, पर इसमे समस्त ससार के लिए भी सदेश निहित है। वह धार्मिक असहिष्णुता पर कुठाराघात कर रहे हैं उनका यह जिहाद अन्याय और गरीबी के विरुद्ध है। वह इसके द्वारा असमानताओ के पारस्परिक अन्तर को कम करना चाहते हैं। वह ससार भर के समृद्ध और दरिद्र वर्गों के बीच की खाई पाटना चाहते हैं। पर यदि आप सयोग वश मिले किसी व्यक्ति से पूछें कि वह इन सारी बातो के बार मे क्या जानता है तो आपको वह वही बताएगा जो उसके दिमाग मे सबसे पहला खयाल ग्रहण किये हुए ह। उसके दिमाग म हाल ही म हुई अवाछनीय घटनाए घर किये हुए हैं—उदाहरण के लिए नागपुर म उन पर अण्डा की वर्षा उनके दौर भर काले झण्डो का प्रदशन और सबसे ताजी पूना मे बम फेंके जाने की घटना आदि। ये सारी घटनाए घटी हैं और पत्रो मे विशेप सुरखी के साथ प्रकाशित हुई हैं।

मुझे याद पडता है कि इतिहास एक अन्य ऐस व्यक्ति की बात बताता है जिसने इसी प्रकार लोक-सम्मत जीवन प्रणाली के विरुद्ध आवाज उठाई थी और इसके लिए उसे यत्रणाए भोगनी पडी थी।

इनम स कुछ प्रदशन ता मैंने खुद दखे हैं, और महात्मा न उनके प्रति जो रुख अपनाया सो भी दखा है। दक्षिण बिहार म एक अशोभनीय घटना घटी, जिसके दौरान सनातनियो और मिस्टर गाधी के अनुयायिया के सिर फूटे। अहिंसा के इस पुजारी का यह सब अत्यन्त गर्हित लगा। उन्होंने कहा, इससे मेरे मानस की जडें हिल गई हैं।

जब उन्हे पता चला कि तीसरे प्रहर एक और प्रदशन हानेवाला है तो उन्होंने स्थिति का सामना अनूठे ढग स किया। वह सावजनिक सभा-स्थल की दिशा म पदल और अकेले चल पडे। कोई एक मील का फासला था। उनके अनुयायिया ने अनुनय की कि उन्हें भी उनके साथ जान दिया जाय और पीछे से एक कार तयार रखने की अनुमति दी जाय। मिस्टर गाधी अपनी जिद पर अडे रह और अकेले ही चल दिये। साथ मे केवल मिस्टर ठक्कर थे हरिजन सेवक सघ

सरकार और काग्रेस, हिन्दू और मुसलमान, या स्पश्य और अस्पश्य म भेद भाव बरतने का नहीं है। यदि आपको कष्ट निवारक निधियों स पसा लेना है, तो वह आपको कमाकर लेना है इत्यादि।

वह स्त्रिया को सबोधित करके कहते (बिहार मे अनेक स्त्रिया अब भी पर्दे म रहती हैं), *'क्या इस दैवी प्रकोप ने आपको कुछ नही सिखाया ? यह सब मूखता* (पर्दा) क्या ? घूघट के लिए तो केवल एक ही स्थान है और वह है हृदय।

महात्मा हद दर्जे के व्यावहारिक व्यक्ति भी थ। वह इस अचल की सभाआ म चदा इकट्ठा करन से नहीं चूके। स्त्रियो ने अपन गहने उतारकर उनको भेंट किये।

माग म पडनेवाले कुछ मीला को छोडकर हम प्राणिया की सजीव दीवारा को बेधकर गुजरना पडता था। ज्यो ही हम किसी गाव के निकट पहुचते, नर नारियो के ठट्ट के ठट्ट हमारा माग छेक लेते, और कभी-कभी तो भीड इतनी सघन हो जाती थी कि दम घुटने लगता था। सब कोई इस उपास्य व्यक्ति के दशन करने का आतुर थे। बहुधा वह इतने थक जाते कि कार म ही गुडी मुडी होकर सो जाते। तब मैं कार के फश पर बठ जाती। जब हम किसी गाव के पास पहुचते तो एक ओर से राजेन्द्र बाबू और दूसरी ओर स ड्राइवर खिडकी मे स झाककर धीमी आवाज मे हिन्दुस्तानी म कहते सो रहे हैं।' य शब्द भीड भर म प्रति ध्वनित हो जात। पर इतने पर भी लोग कार को चारा ओर स घेरने स न चूकत और कुछ नही तो उनके सोत हुए ही दशन कर लेंगे। ऐसा करते समय वे शोर गुल बिलकुल नही करते ताकि उनकी नीद न टूट जाय। मैं कार के फश पर बठी जन-समुदाय की मुद्रा का अध्ययन करती और अवाक् रह जाती, एसा लगता माना वे साक्षात भगवान के दशन कर रहे हा।

एक और सस्मरण उभर आया—हरिजन-याय सबधी दौरे का। इस दौरे म हम रेलवे स्टेशना और शहरा से कोसा दूर गावा म स होकर गुजरते—बहुधा रात को खेता म ठहरते अथवा किसी आश्रम म आश्रय लते। हमार साथ नर-नारिया का, बालक-वृद्धा का झुड चलता। यह सब खेतों म अपना काम छाडकर हमारे साथ हो लत। बाद म मिस्टर गाधी ने ताकीद कर दी कि एसा न किया जाय। वह कहत काम और मवशिया को छाडकर क्यो आय? खचाखच भरी सावजनिक सभाए हरिजन-बस्तिया का निरीक्षण, स्थानीय समितियों के साथ बातचीत, सनातनी कह जानवाले रूढिग्रस्त विपक्षियो के साथ वह जिस ढग स पश आत थ उसका अध्ययन—व दिन नव प्राण सचार करनेवाली घटनाआ स लबालब भर रहत।

मिस्टर गाधी अस्पश्यता के सदव घोर विरोधी रहे हैं पर यह वप उनके

विरुद्ध प्रबल प्रचार-कार्य के निमित्त अर्पित किया गया है। इस वर्ष के दौरान जितना कुछ हासिल हुआ है, ससार को उसका आभास प्राय नही के बराबर है—क्या विशाल जन-समुदाय को दी गई उनकी चुनौती, जिसे सब मनोयोग के साथ हृदयगम करते, क्या स्थानीय समितिया के सहयोग म काय-कलाप, क्या स्वय महात्मा द्वारा सपादित वह पत्र जिस 'हरिजन' का नाम दिया गया है और जिसमे इस आश्चयजनक वर्ष की उपलब्धिया का इतिहास रहता है। इसका मूल्य एक सेंट मात्र है। लोग इसे पढते क्या नही ?

सही है कि उनका प्रचार-काय अस्पृश्यता निवारणाथ है पर इसम समस्त ससार के लिए भी सदेश निहित है। वह धार्मिक असहिष्णुता पर कुठाराघात कर रहे हैं उनका यह जिहाद अयाय और गरीबी के विरुद्ध है। वह इसके द्वारा असमानताओ के पारस्परिक अतर को कम करना चाहते हैं। वह ससार भर के समृद्ध और दरिद्र वर्गों के बीच की खाई पाटना चाहते है। पर यदि आप सयोग वश मिले किसी व्यक्ति से पूछें कि वह इन सारी बातो के बारे म क्या जानता है तो आपको वह वही बताएगा जो उसके दिमाग मे सबसे पहला खयाल ग्रहण किये हुए है। उसके दिमाग म हाल ही मे हुई अवाछनीय घटनाए घर किये हुए हैं—उदाहरण के लिए नागपुर म उन पर अण्डा की वर्षा उनके दौरे भर काले झण्डो का प्रदशन और सबसे ताजी पूना म बम फेंके जाने की घटना आदि। ये सारी घटनाए घटी है और पत्रो मे विशेष सुरखी के साथ प्रकाशित हुई है।

मुझ याद पडता है कि इतिहास एक अय एम व्यक्ति की बात बताता है जिसने इसी प्रकार लोक-सम्मत जीवन प्रणाली के विरुद्ध आवाज उठाई थी और इसके लिए उसे यत्रणाए भागनी पडी थी।

इनम से कुछ प्रदशन तो मैंने खुद देखे है और महात्मा ने उनके प्रति जो रुख अपनाया, सो भी देखा है। दक्षिण बिहार म एक अशोभनीय घटना घटी जिसके दौरान सनातनियो और मिस्टर गाधी के अनुयायियो के सिर फूटे। अहिंसा के इस पुजारी का यह सब अत्यत गर्हित लगा। उन्होने कहा, "इससे मेरे मानस की जडें हिल गई हैं।'

जब उन्हे पता चला कि तीसरे प्रहर एक और प्रदशन होनेवाला है, तो उन्होने स्थिति का सामना अनूठे ढग से किया। वह सावजनिक सभा स्थल की दिशा मे पदल और अकेले चल पडे। कोई एक मील का फासला था। उनके अनुयायियो ने अनुनय की कि उन्हें भी उनके साथ जाने दिया जाय और पीछे से एक कार तयार रखने की अनुमति दी जाय। मिस्टर गाधी अपनी जिद पर अडे रहे और अकेले ही चल दिये। साथ मे केवल मिस्टर ठक्कर थे, हरिजन सेवक सघ

के सेक्रेटरी की हैसियत से। बहुतो को लगा कि वह जीवित वापस नही लौटेंगे पर मुझे वसी कोई आशका नही थी। यह कृशकाय व्यक्ति नि शस्त्रीकरण-सबधी सारी समस्याओ का हल पश करता प्रतीत हुआ। वह जीवन यापन का ऐसा ढग पश कर रहे थे जिसका यदा कदा ही अनुकरण किया जा सकता है—वह सघष के मध्य निहत्थे पर प्रेम की भावना से अनुप्राणित होकर प्रवेश कर रहे थे।

मिस्टर गाधी का अनेक रूपा मे चित्रण किया गया है। उनका सहज ही मे खाका खीचा जा सकता है। पर उनका एक सु दर चित्र भी है जो कनु देसाई नामक एक भारतीय चित्रकार न प्रस्तुत किया है। चित्र म मिस्टर गाधी को एक अधकारमय लोक मे हाथ मे लाठी लिये प्रवेश करते दिखाया गया है। उनका शरीर आलोक स देदीप्यमान हो रहा है। इस अवसर पर मेरे मस्तिष्क म वह चित्र सजीव हो उठा। मैंने उ हे प्रकाशपुज से परिवेष्टित देखा और मैं समझ गई कि वह सकुशल वापस लौट आयेंगे। ऐसा ही हुआ। कोई अशोभनीय घटना नही घटी, और सभा का काम बढिया ढग से सम्प न हुआ। वह अच्छा खासा धन सग्रह करने म सफल हुए सो जुदा।

जब मैं इग्लड के लिए रवाना हुए जहाज म थी तो एक सक्षिप्त रूप स दिया गया बेतार के तार का यह समाचार आया कि पूना मे महात्मा पर किसी न बम फेंका। मिस्टर गाधी की हरिजन म प्रकाशित हुई टिप्पणी जो अभी मिला है, इस प्रकार है

' मुझे तो बम फेंकनेवाले इस अनात व्यक्ति पर दया आती है। यदि मेरा बस चलता और मैं इस व्यक्ति का जान पाता तो मै निश्चय ही उसकी रिहाई का आग्रह करता, ठीक जिस प्रकार मैने दक्षिण अफ्रिका म किया था जब मुझ पर आक्रमण करने मे लोग सफल हुए थे।

+ + +

४) 'मिस्टर गाधी का प्रभाव क्षीण हो रहा है। जब मैं यह सुनती हू तो मुस्कराने लगती हू। उपयुक्त घटनाओ के अतिरिक्त मुझे राची और पटना की कान्फ्रेंसा की भी याद आती है, जब उनके पूवविचार के बिना न तो कोइ निणय लिया गया और न ही कोई प्रस्ताव पास हुआ। कांग्रेस की ससद सम्ब धी काय शीलता की पष्ठभूमि म महात्मा की अप्रकट शक्ति और सबको एकत्र रखने के लिए आवश्यक प्रभाव छिपा हुआ है। विभि न दलो के लिए वह एक सवसम्मत निर्णायक है।

उनके अनुयायियो मे से कुछ वामपथी है कुछ दक्षिण पथी। व उनके फसला पर भले ही बिदकते रहे, पर उनका नतिक बल इतना बढा चढा और उनका

नियत्रण इतना कठोर है कि मैं यह पूण विश्वास के साथ कह सकती हू कि वह आज भी भारत की सबस बडी शक्ति ह ।

"जवाहरलाल नेहरू पर ही दष्टि जमानी चाहिए ।' यह तथ्य निर्विवाद है। वह मिस्टर गाधी स एक पीढ़ी पीछे हैं चतुर है विलक्षण बुद्धि रखते हैं और भारत के तरुण समाज के प्रिय हैं —इसलिए जवाहरलाल नेहरू पर सचमुच निगाह जमाये रखनी चाहिए। इस सदभ म एक अत्यत महत्व की बात भुला दी जाती है, और वह है इन दोनो का पारस्परिक अविच्छिन्न नाता। जबतक मिस्टर गाधी जीवित हैं, यह नाता टूटने मे रहा दोनो ही ओर से आदान प्रदान का क्रम जारी रहेगा, पर यह दोना कडिया अविच्छिन्न रूप स एकसाथ जुडी हुई हैं।

"हम नोबल शान्ति-पुरस्कार के लिए गाधी को चुनते हैं। 'वाहियात — ससार कह उठेगा, "भारत म यह सारा उत्साह स्वाभाविक जसा है। वहा सब महान धार्मिक नेताओ की उपासना करते आये हैं।'

मैं घटनाओ स भरपूर हाल के कुछ सप्ताहा का स्मरण करती हू और कहती हू, "आप ७५ प्रतिशत व्यक्ति पूजा के लिए अलग रख छोडिए, मुझे मात्र २५ प्रतिशत दे दीजिए और आप देखेंगे कि यह अवशिष्ट ससार के अय किसी नेता के हिस्स म नही आया है क्यांकि इसकी आधारशिला आध्यात्मिक है।

यदि सम्पादक का सुझाव नोबल समिति न गम्भीरतापूवक अपनाया तो इस दमघाटू वातावरण म ताजी हवा का कसा सुदर झोका आ जायगा ! यदि यह वाछित पुरस्कार एक ऐस व्यक्ति को प्रदान किया गया जो अहिंसा का उपदेश मात्र न दकर उस पर स्वय आचरण करता है तो इस वधिर और अधे ससार का कैसा कायाकल्प हो जायगा !

१३

पटना
६ ४ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी

इस पत्र के साथ बापू के सविनय अवना-सम्बधी वक्तव्य के अतिम मसौदे की नकल भेजता हू। उन्होने देवदास को तार दिया है कि उन्हाने उनके पास कल जो मसौदा भेजा था उसे वह आपको भी दिखा लें। मसौदे मे काफी काट छाट हुई है। डा० अन्सारी को पत्र लिखने के बाद बापू को लगा कि इस वक्तव्य म कौंसिल की चर्चा करना अनावश्यक है।

बापू को आपका ताजा तार मिल गया था। उन्होंने उसका सवाद मथुरादास भाई को दे दिया है।

शुभकामनाओ के साथ।

आपका,
चन्द्रशकर

१४

प्रिय डाक्टर अम्बेडकर,

आपके गत २६ माच के पत्र का उत्तर देने म देर हो गई, क्षमा करिएगा। मैं बराबर दौरे मे रहा, इसी कारण इससे पहले उत्तर देना सम्भव नही हुआ था।

यदि आपकी योजना अन्य प्रान्तो को स्वीकार हो तो उसे अपनाने मे मुझे कोई आपत्ति न होगी। पर प्रान्ता के लिए निर्धारित सीटो के प्रश्न को नये सिरे से हाथ म लिये जान की बात उनसे मनवाने का भार उठाने को मैं तयार नही हू।

बगाल को तुष्ट करने की दिशा मे सभी कुछ करता आ रहा हू पर इसम मुझे सफलता नही मिली है। यदि बगाल मे हरिजन आबादी वास्तव मे उतनी ही है जितनी पैक्ट के अवसर पर बताई गई थी, तो उन्हे शिकायत का कोई मौका नही है। यदि उनकी सख्या उस बताई गई सख्या से बहुत कम है जिसके आधार पर सीटा की सख्या निर्धारित की गई थी तो मेरी समय म आपको वास्तविक सख्या के अनुरूप सशोधन करन मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए।

भवदीय
मो० क० गाधी

६ ४ ३४
पटना के पत पर

(नकल)

१५

१२ अप्रल १६३४

प्रिय प्यारेलाल,

मैंने फेडरेशन ऑफ इडियन चेम्बर आफ कामस एण्ड इडस्ट्री के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर जा स्पीच दी थी उसकी दो प्रतिया भेजता हू। एक प्रति बापू का दे देना। कहना यदि समय मिले तो उस देख लें। अपनी समझ से मैंने उसम का अनावश्यक बात नहीं कही है इसलिए शायद वह पूरी स्पीच पढ जाए। जब वह पढ लें तो मैं उनकी टिप्पणी और सम्मति की अपक्षा करूगा। सम्भव है मुझे एक न एक दिन इस विषय को अधिक विस्तार के साथ हाथ म ले लेना पडे इसलिए उनके सुझाव मेरे लिए बडे काम के होंगे। इस विषय मे जनता अब अपक्षाकृत अधिक विवेकपूण रुचि लेन लगी है इसलिए जनमत को ठीक दिशा मे मोडने की बात सोचना अच्छा ही है। इसलिए बापू से कहना कि वह अपन पुस्तकालय म इस पर नजर डालने के लिए समय निकाल सकें तो बडी बात हो—यद्यपि मैं जानता हू कि मैं इस प्रकार उनके कायभार म वद्धि कर रहा हू।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री प्यारलाल
महात्मा गाधी के निजी सचिव,
जोरहाट (आसाम)

१६

१४ अप्रैल, १६३४

पूज्य बापू

आप काग्रेस की कायकारिणी समिति की अनौपचारिक, और बाद म अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की औपचारिक बैठक बुला रहे हैं इसलिए मैंने सोचा मैं स्वराज्य पार्टी के गठन के सम्बन्ध मे अपने विचार आपके सामने रख दू। जहा तक आपकी दोना मुलाकाता का सम्बन्ध है मुझे कुछ नहीं कहना है। कुछ भी

कहिए मेरे विचार आपके विचारो से सदैव मेल खाते हैं इसलिए यह मत समझिए कि मरे अन्दर विवेक-बुद्धि का अभाव है। यदि आप हमेशा ठीक रास्ता ही चुनें, तो मैं क्या कर सकता हू ?

जब जब से डा० अन्सारी, भूलाभाई तथा डा० (विधान) राय ने स्वराज्य *पार्टी के गठन की घोषणा की है, पडित (मालवीयजी) काफी व्यग्र हो गय हैं।* निर्वाचन के अवसर पर कसा रवैया अपनायें वह अभी इसका निणय नही कर पाये हैं। आप जानते ही हैं कि साम्प्रदायिक निणय के प्रति उनका दृष्टिकोण कितना दढ है और हिन्दू महासभाई व्यवस्थापिका सभा म जाने को आतुर है ही। वे पडितजी का अपने उपयोग म ला रह है। यदि परिस्थिति स निवटन म समय रहते चतुराई से काम नही लिया गया, तो ऐसी आशका है कि पडितजी के नेतृत्व म एक और पार्टी अस्तित्व मे आ जाय। साम्प्रदायिक प्रश्न पर पडितजी काग्रेस और हिन्दू सभा के बीच की स्थिति मे है। वह दोना म किसी से भी सहमत नही हैं। वह शातिपूण समझौता तो चाहते हैं पर मुसलमानो को वाजिव तौर पर सतुष्ट करन को तयार नही है। इस समय वह इस बात पर अडे हुए हैं कि कैसे भी साम्प्रदायिक निणय का निकम्मा किया जाये—और यह प्राय असम्भव है। उनका कहना है कि मुसलमानो को व्यवस्थापिका सभा म भले ही ३३ प्रतिशत सीटें और बगाल म ५१ प्रतिशत सीटें द दी जायें पर बाकी सारी सीटें हिन्दुओ को मिलें उनका बटवारा हिन्दुआ और यूरोपीयना मे न हो। उनके तक म सार न हो ऐसी बात नही है पर उनकी काय शली आपको रुचिकर नही होगी। वह मुसलमानो का समथन प्राप्त करने की लालसा रखते है सो वह उन्हे प्राप्त होने स रहा। साथ ही वह वाइसराय और ब्रिटिश कैबिनेट के पास अपने नेतृत्व म डेपुटेशन ले जाना चाहते है। यह प्रयास भी व्यथ सिद्ध होगा। स्वराज्य पार्टी का साम्प्रदायिक मामलो के प्रति कैसा रवया रहेगा सा मैं नही जानता पर यदि स्वराज्य पार्टी अपने सदस्या का साम्प्रदायिक निणय के विरुद्ध अपने-अपने ढग से सघष करने की स्वतत्रता प्रदान कर दे तो पडितजी के विचार बिन्दु का स्वराज्य पार्टी के विचार बिन्दु के साथ ताल मेल बैठाना सम्भव ह। यदि एसा नही किया गया ता राष्ट्रवादी दल म फूट पडने की आशका है। एसी स्थिति कदापि पदा नही होनी चाहिए। पडितजी केवल इतना ही चाहते ह कि नव गठित स्वराज्य पार्टी साम्प्रदायिक निणय क प्रति किसी प्रकार का लगाव न दिखाये।

दूसरा प्रश्न पार्टी क नियत्रण का है। मैं पडितजी से इस बात म सहमत हू कि या ता काग्रस स्वराज्य पार्टी को सालह आने अपने हाथ म रखे अथवा उसमे किसी प्रकार की दिलचस्पी न ले। 'आधा तीतर, आधा बटेर वाली बात

न हो। क्योंकि यदि आसफअली जसे किसी आदमी को पार्टी के सचालन का काम सौंप दिया गया और उस पर अपना कोई नियत्रण न रहन पर भी काग्रेस उसे अपना आशीर्वाद प्रदान करेगी तो काग्रेस कत्तव्य से पराङ मुख सिद्ध होगी। फलस्वरूप, पार्टी दुवल हो जायगी तथा उसके अनुयायियो म भ्रष्टाचार जोर पकडेगा जिसमे स्वय काग्रेस की साख को धक्का लगेगा। मरी ये आशकाए मेरे स्वराज्य पार्टी के अपने निजी अनुभव पर आधारित हैं। और अब हमारे बीच मोतीलालजी नही हैं। पार्टी का शासन सचालन भले ही पार्टी के नेताओ के हाथ म रह उसपर किसी न किसी रूप म काग्रेस का नियत्रण बिलकुल जरूरी है। पर यदि काग्रेस उस पर किसी तरह का नियत्रण रखना न चाहती हो, तो उसका स्वराज्य पार्टी को अपना आशीर्वाद देना निरथक होगा। यह प्रश्न आपके असदिग्ध निणय की हाजत रखता है। मैं स्वराज्य पार्टी पर काग्रेस के नियत्रण क पक्ष म हू।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी
जारहाट (आसाम)

१७

१४ अप्रैल, १९३४

पूज्य बापू

स्वराज्य पार्टी के बनने के बाद प्रेस प्रतिनिधि मेरे पास मुलाकात के लिए आय थे और मैंन सरसरी तौर पर यह कह दिया था कि मेरी राय म पार्टी को साम्प्रदायिक निणय स कोई वास्ता नही रखना चाहिए। इससे मित्रो को परशानी हुई है। उनम पडितजी (मालवीयजी) भी शामिल है। और कलकत्ते की अमृत-बाजार पत्रिका ने मेर विचार वि दु की बडी कडी आलोचना की ह। मुझे लगा कि उसके उत्तर म कुछ कहू सो मैंन जो उत्तर तयार किया है, उसका मसौदा इस पत्र क साथ भेजता हू। पर इधर राजाजी का सुझाव है कि जब आप स्वय इस मामले को अपन हाथ म ले रहे है तो मेर इस वाग्विवाद म पडन की कोइ जरूरत नही है। मैं पत्रिका की कटिंग भी भेजता हू और अपन उत्तर का मसौदा

भी। यदि आप समझें कि मेरा जवाब मे कुछ कहना ठीक रहेगा तब तो बात दूसरी है, अन्यथा आपको इस पत्र का उत्तर देने की आवश्यकता नही है। मेरी तो एक-मात्र आशा यही है कि मेरा दृष्टिकोण आपके विचार से सामान्यत मेल खाता प्रतीत होता है।

स्नेह भाजन,
घनश्यामदास

महात्मा मा० क० गाधीजी
जोरहाट (आसाम)

१८

प्रिय जवाहरलाल,

आज मैं रात के सवा बारह बजे ही उठ बैठा जिससे पत्रो के ढेर को निबटा सकू।

तुम मेरे मन म बराबर रहते हो। आशा है, तुम्हें यह पत्र दिया जायगा। तुम कैसे हो और क्या कर रहे हो इस सम्बन्ध म तुमसे दो शब्द पाने की अभिलाषा है।

तुमने मेरे दोनो निर्णय देख लिये होगे। दोनो एकसाथ ही लिये गए यह केवल सयोग ही था। स्वराज्य पार्टी म नये जीवन का सचार करना ठीक ही हुआ। इसमे सन्देह नही कि काग्रेस म एक ऐसा वर्ग है जो कौंसिल प्रवेश म आस्था रखता है और यदि उसके पास यह प्रोग्राम न रहे तो उसके पास करने के लिए कुछ नही रह जाता। इस वर्ग की इस आकाक्षा की तुष्टि करनी होगी।

दूसरा निर्णय सविनय अवज्ञा को अपने तक सीमित रखने की बाबत है और जहा तक लक्ष्य का सबध है यह निर्णय सबसे अधिक महत्व का है। यह निर्णय अनिवार्य था। एक बार इस निष्कर्ष पर पहुचने के बाद अब मैं देखता हू कि इस निर्णय की सार्थकता के पक्ष म अगणित तर्क पेश किये जा सकते हैं। इस निर्णय का जिस विशिष्ट कारण ने शीघ्रता प्रदान की उसका मैंने उल्लेख कर दिया है पर यह सकल्प शनै शनै बनता आ रहा था। आशा है तुम इससे बेचैन नही हुए होगे। जब यह निर्णय मूर्त रूप ले रहा था तुम बराबर मेरे मन म थे। मुझे लगा कि इस निर्णय से तुम कुछ समय के लिए भले ही स्तब्ध रह जाओ,

अन्त म इसकी साथकता को हृदयगम करोग और उससे प्रसन्न ही होग।

हम सब तुम्हार बार म अकसर बातें करते हैं। हमारी टोली काफी बडी हा चली है। जब मैं इलाहाबाद से होकर गुज़रा तो माताजी तथा परिवार के अन्य सदस्यो के साथ कोई दो घण्टे तक रहा।

सस्नेह,

बापू

गौहाटी,
१४ ४ ३४
(नकल)

१६

प्रिय राजाजी

लिखन को यो बहुत-सी बातें हैं, पर समय एक कठोर पिता के जसा आचरण कर रहा है।

स्वराज्य पार्टीवाले हमारा प्रोग्राम मानन को क्या बाध्य हा, यह मैं नही समझ पा रहा। हम उन्हें अपने प्रोग्राम के बार मे मात्र सुझाव दे सकते हैं। हमारा प्रजातन्त्र ससदीय परिपाटी पर घोषित अन्य प्रजातन्त्रा के ढाचे पर ही ढाला जायगा। एक ससदीय पार्टी का जन्म भी उतना ही अनिवाय है जितना एक खद्दर पार्टी का, या एक मद्यपान विरोधी पार्टी का। काग्रेस म ससदीय कार्यों के सभी समथको की एकसमान विचारधारा हो यह भी सम्भव नही है। यह भी सम्भव है, सम्भव क्या निश्चित है, कि विभिन्न नीतिया पर काग्रेसीजन आपस मे ही लडने-झगडन लगें। हमारा काम तो इतना ही है कि यह बताते रहे कि काग्रेसी ससदीय सदस्यो का कसा आचरण करना चाहिए।

यह चिट्ठी गडबडी के दौरान लिखी गई है।

सप्रेम,

बापू

१४ ४ ३४

२०

प्रिय सतीश बाबू

आपका पत्र प्राप्त हुआ।

आप सामर्थ्य के बाहर अथवा आवश्यकता से अधिक काम कदापि न करें। मेरी यह बुरी आदत है कि मैं कार्यभार वहन करने के लिए तत्पर कंधों पर इतना भार लाद देता हू कि बहुधा वह उनके लिए असह्य हो जाता है। मैं आपसे सत्य की अपेक्षा करता हू और सत्य का तकाजा यही है कि जब मैं आपसे आपकी सामर्थ्य से अधिक की आशा करता दिखाई दू तो आप साफ साफ बतायें।

आपकी यह धारणा गलत है कि सविनय अवज्ञा विषयक मेरा निर्णय आपमे से किसी के विरुद्ध लाछन है। यदि यह लाछन है तो एकमात्र अपने विरुद्ध ही है। पर मुझे अपने आपको दोषी बताने की जरूरत नही है। मै तो आप सबकी तरह ही सत्य की खोज मे लगा हुआ हू—बराबर के दर्जे के लोगो मे प्रमुख भर हू। पहले के कामो के फलस्वरूप हमने कुछ खोया ही नही है। हम तब अवश्य खोते जब रुकने की आवश्यकता प्रतीत होते हुए भी मुझमे रुकने की घोषणा करने के साहस का अभाव रहता। उपवास उचित सिद्ध नही होता। वैसा करने का अर्थ यही होता कि मैं बल का प्रयोग कर रहा हू।

मेयर का निर्वाचन एक लक्षण है। हमे इस अग्नि-परीक्षा को पूरा करना है। कौसिल प्रवेश-सम्बन्धी निर्णय विवेकपूर्ण है। हम काग्रेसियो के एक ससदीय दल का गठन करना है एक ऐसी मशीनरी तयार करनी है जो समय आने पर विधि विधान द्वारा अनुमोदित आचरण कर सके। जब काग्रेसी कौसिलरो की हैसियत से आचरण करेंगे तो स्थिति स्वत ही अपनी स्वाभाविक रूप रेखा निर्धारित कर लेगी। हम भूलो के द्वारा सत्य के मच तक जा पहुचना है।

आपके बगाल के प्रोग्राम पर मेरी निगाह रहेगी।

हेमप्रभा ने चिट्ठी लिखी है। उसे अलग से लिखने की जरूरत नही समझता हू। वह अपना मार्ग स्वय खोज लेगी और मैंने जो कुछ कहा है उसे अपनी बुद्धि की तराजू पर तोलकर खादी-कार्य के सम्बन्ध मे जसा ठीक समझेगी करेगी। कोई शूरतापूर्ण कार्य नहीं करना है। जब मिलेंगे तो इस विषय पर विशेष रूप से चर्चा करेंगे।

अरुण का भी नोट मिला उसे अलग स कुछ नही लिखूगा। उसे अपना शरीर हृष्ट-पुष्ट रखना है।

आप सबको मेरा स्नेह,

बापू

१८ ४ ३४

२१

दादर बम्बई १४
१५ ४ ३४

प्रिय महात्माजी,

आपका ६ तारीख का पत्र प्राप्त हुआ। मैंने जो योजना रखी थी सो अपने लाभ के लिए नही जितना आपके लाभ के लिए रखी थी, क्योकि मेरी धारणा थी कि उसके द्वारा आप बगाल के हिन्दुओ को सतुष्ट कर सकेंगे। इसलिए मैंने उसे निजी और व्यक्तिगत' शब्दा स अकित कर दिया था। पर यदि आप इस योजना के क्षतिपूरक अग को अन्य प्रातो से मनवाने की जिम्मेदारी लेने को तयार न हो तो मैं इस मामले को जहा का तहा छोड देना उचित समझता हू। पर यदि आपको यह आशा हो कि सीटा के पुर्नवितरण की समस्या का हल जनसख्या के प्रश्न को नये सिरे स उठाने म निकल आयेगा, तो मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हू कि आपको भारी विरोध का सामना करना पडेगा। श्री ठक्कर आपको बतायेंगे कि बगाल तथा अन्य प्रान्तो म सीट निर्धारित करते समय हमने उन प्रान्ता मे चल रहे जनसख्या सबधी वाद विवाद को ध्यान म रखा था और पूना-पैक्ट के अवसर पर वाद विवाद के विषय के अनुरूप यथेष्ट रिआयत स काम लिया था। उस दिशा म अब और कुछ नही किया जा सकता, और समस्या के उस अग को हमेशा के लिए तय हुआ समझना चाहिए।

भवदीय,
बी० आर० अम्बेडकर

२२

प्रिय श्रीप्रकाश,

अपन निणय पर पहुचते समय मर ध्यान म कोई विशिष्ट अनुयायी या सह कर्मी नहीं था। मैंने यदि किसी के बारे म फमला किया तो अकेले अपन ही बारे म। इस निणय न मुझे स्वतत्रता प्रदान की है। यदि मैं अपने प्रति ईमानदारी का आचरण करता रहा, तो इस निणय से सभी का मगल होगा। सत्याग्रह एक अनूठा शस्त्र है। *अत आपको आत्म भत्सना से काम नहीं लना चाहिए* पर मैं यह अवश्य चाहूगा कि जब समय आये तो आप तयार पाये जाए।

आपका,
बापू

जोरहाट,
१६ ४-३४

श्री श्रीप्रकाश
बनारस।

२३

प्रिय डाक्टर दत्त

आपके पत्र और तार के लिए अनेक धन्यवाद। मैं तो कवल यही सुझाव द सकता हू कि आप बिशप स कहे कि वह तब तक चन स न बैठें, जब तक खान रिहा न हो जाए या कम से कम जिनका उन पर प्रभाव है उन्ह उनसे मिलने की अबाध अनुमति न मिल जाए।

हा सचमुच मेरे लिए वतमान नित्यता का अग बनकर रह गया है। मैं नित्यता को वतमान पर न्योछावर करने को तैयार नहीं हू। इसी तकसगत प्रेरणा ने मुझे वसा वक्तव्य दने का बाध्य किया। पर मैं यह आशा लगाए बठा हू कि यदि लागो की अहिंसा-पूण साधनो म आस्था बनी रही, तो मेरे इस ताजा

निणय स स्वराज्य पहले से भी अधिक निकट आ जायेगा। हिंसा के माध्यम से जा कुछ प्राप्त होगा, वह मेरे स्वप्नो का स्वराज्य नही होगा।

आप दाना को मेरा स्नेह

भवदीय,
मो० क० गाधी

पटना के पत पर,
१६ ४ ३४

२४

प्रिय सर हरिसिंह गौड

आपके पत्र के लिए धन्यवाद।

स्वराज्य पार्टी के पुनर्गठन के विषय का आपन जिस दृष्टिकाण स देखा है उसकी तो मैंने कल्पना तक नही की थी। मैंने तो इस विषय पर काग्रेस के दृष्टिकोण से ही विचार किया है क्योंकि अब तक वह कौंसिल प्रवश क विरुद्ध थी। आपको उस पार्टी म शामिल होने से रोकनेवाली ऐसी क्या चीज है? क्या आपके राष्ट्र प्रेम का उनके राष्ट्र प्रेम से भिन्न हाना जरूरी है?

बौद्ध धम पर आपकी पुस्तक मैंन बडे चाव स पढी। मुझे उस पढने के बाद ही यह लगा हो कि आपको लिखना जरूरी है यह मुझे याद नही पडता। आपके उपन्यास तक मरी पहुच नही हुई। समाज-सुधार के सम्बन्ध म मरे विचार एक-जस रहे हैं और अब व अस्पश्यता निवारण-सम्बन्धी प्रचार-काय क सक्रिय रूप म प्रकट हुए हैं।

आपका,
मो० क० गाधी

१६ ४ ३४

२५

भाई घनश्यामदास,

पत्रिका पर लिखा हुआ सारा खत पढ गया। मुझको बहुत पसन्द आया। पत्रिका के सम्पादक को खानगी भेजा जाय। उसी वस्तु का प्रगट करना चाहता है तो तुमारे नाम को छोडकर और उसम नीजी बात है उस छोडकर छाप— नहि छापना है तो भले छोड देवे।

तुमारा शरीर अच्छा रहता होगा। मर्यादित व्यायाम होता होगा।

बापु के आशीर्वाद

२० ४ ३४
डिब्रूगढ

२६

२२ अप्रैल १९३४

पूज्य बापू

जिस समय आप मद्रास का दौरा कर रहे थे मैंन ठक्कर बापा के पास नेशनल कॉल' की कुछ कटिंग भेजी थी जिनम मेरे बारे मे अशाभनीय बातें लिखी गई थी। मैंन ठक्कर बापा का आपको यह भी बताने के लिए लिखा था कि किस प्रकार नशनन काल मेरे विरुद्ध अपमानजनक बातें लिखकर मुझे उमके खिलाफ मानहानि का मुकदमा चलाने को भटकाने की बात सोच रहा है। उनम से एक बात नीला नागिनी के सम्बन्ध म थी जिसके द्वारा मर चरित्र पर लोप लगाने की योजना थी। मुझे जब ये धमकियां मिली तो मैंन कहला भेजा कि वह जो चाह लिखता रह मैं कोई कारवाई नही करूगा। उस अवसर पर मैंन आपसे पूछा था कि क्या करना चाहिए पर जब आपकी ओर से कोई उत्तर नही आया तो मैंन समझा कि वे कटिंग आप तक नही पहुची। अब इस मामले ने गम्भीर रूप धारण कर लिया है जसा कि आप साथ भेजी कटिंगो से स्वय ही देखेंगे। यह पत्र पिछले ८ महीनो से एसी ही बातें लिखता आ रहा है। मेरे लिए यह कहना अनावश्यक है कि पत्र ने अब तक जा कुछ लिखा है सब बेबुनियाद है और कुत्सा से प्रेरित

होकर लिखा है। मैंने इस लाछन का खण्डन किया है, जैसा कि इस पत्र के साथ भेजे मेरे वक्तव्य से प्रकट होगा। पर प्रश्न यह है कि क्या करना चाहिए? सम्पादक पर मुकदमा चलाने की मेरी इच्छा नही है क्योकि मेरे विचार म अपनी ख्याति की रक्षा करन का मुकदमा चलाना ही एकमात्र उपाय नही है। शौकत अली ने सदानन्द पर मुकदमा चलाया था, और यद्यपि निर्णय उनके पक्ष म मिला जनता की धारणा वैसी ही बनी रही। वास्तव म जन-साधारण अदालत के फसलो की ओर विशेष ध्यान नही देते। अतएव म इसी दुविधा मे पडा हू कि क्या अपने मान-सम्मान की रक्षा करने का एकमात्र उपाय अदालत का दरवाजा खटखटाना ही है। वसे 'नेशनल काल' के खिलाफ मुकदमे के लिए काफी ठोस सामग्री मौजूद है। राजाजी की तो राय है कि यदि मैं इस पत्र पर मुकदमा नही चलाऊगा तो कर्तव्य च्युत माना जाऊगा। उनके कथन म सार है और जब तक आपका परामर्श न मिले, तब तक के लिए मैंने अपनी कलकत्ते की फर्म को मामला सालिसिटरो के सुपुर्द करने को कह दिया है। सम्भव है सालिसिटरो का पत्र मिलने पर 'नशनल काल' यह उत्तर दे कि यदि मुझे अपनी ख्याति की इतनी चिन्ता है तो मैं उस पर मुकदमा क्यो नही चलाता? वसी अवस्था मे मेरे लिए उसके खिलाफ मामला दायर करना अनिवार्य हो जायगा। आप जानते ही हैं कि वसा करन स मैं अपने लिए कितना सिरदद मोल लूगा कितना समय नष्ट करूगा और कितनी शक्ति का अपव्यय करूगा। अत मुझे दो बातो मे से एक बात चुननी है—या तो जनता की भद्रता पर भरोसा रखू और स्वय अपने ही चरित्र को यथेष्ट समझू अथवा अदालत की शरण लू। यदि मुकदमा चलाना ही मर्यादा की रक्षा करने का एकमात्र उपाय रह जाय तो कोई गरीब आदमी वसी अवस्था मे क्या करगा? मैं आपकी सलाह इसी दिशा म चाहता हू। मैं बम्बई के कुछ मित्रो को भी लिख रहा हू कि वे वस्टन मच फक्टरी से असलियत कहलवाए जिसस मेरी पोजीशन साफ हो। 'नशनल काल' ने जिस फर्म का हवाला दिया है वह यही फर्म है।

एक बात और कहनी है। इस पत्र के डाइरेक्टर डा० अन्सारी बाबू राजेन्द्र प्रसाद और चौधरी खलीकुज्जमा-जसे काग्रेसी मित्र हैं। क्या यह उचित है कि वे इस पत्र को मेरी मान प्रतिष्ठा के साथ ऐसा खिलवाड करन को स्वतन्त्र छोड दें? मैं विनम्र भाव से यह निवेदन करूगा कि मेरा मान सम्मान अब मेरी अपनी चीज नही रह गई है। मैं अपन सावजनिक जीवन म एक से अधिक सस्थाओ के साथ सम्बद्ध रहा हू उनम मैंने प्रतिष्ठापूर्ण पद ग्रहण किये हैं। हरिजन सेवक सघ का अध्यक्ष हू। यदि 'नशनल काल' म दिया गया मेरा चरित्र चित्रण सही हो

ता मैं सावजनिक पदा पर रहन का अधिकारी नही हू। कहना पडता है कि डाइरेक्टरा ने अपन उत्तरदायित्व को नही समझा है। जगा मेरा चित्रण किया गया है यदि वास्तव म मैं वसा नही हू ता मेरे साथ बहुत बडा अयाय हुआ है, और उनक प्रति मेरी शिकायत वाजिब है। मैं जानता हू कि बेचारे राजेंद्र बाबू को पता तक नही है कि पत्र म क्या छप रहा है। पर इसमे मुझे तो सात्वना मिलन स रही। मैं ता यही कहूगा कि या तो ये डाइरेक्टर मेरे खिलाफ कही गई बाता को साबित करें अथवा इस पत्र म कही गई बाता म अपना किसी प्रकार का लगाव न रखने की घोषणा कर दें।

आप यह मत समझिए कि इस आक्रमण न मुझे बेतरह उद्विग्न कर दिया है। मेरा अत करण साफ है इसलिए ऐसे आक्रमण का मुझ पर केवल क्षणिक प्रभाव पडता है—कुल मिलाकर पद्रह मिनट से अधिक नही। पर राजाजी का यह कथन सार्थक है कि ऐसे लाछना को चुनौती अवश्य देनी चाहिए, नही तो लोग-बाग ऐसी बे सिर पैर की बाता पर विश्वास करने लग जायेंगे। यह कहा जा सकता है कि सचाई सिर पर चढकर बोलेगी और मुझे स्वय अपने चरित्र-बल पर तथा जनता की भद्रता पर निभर करके ही सतुष्ट हो जाना चाहिए। पर तस्वीर का दूसरा पहलू भी है।

मैं पारसनाथजी को खास तौर से इसी विषय पर आपसे मशवरा करन भज रहा हू, क्याकि मैं जानता हू कि आजकल आपके पास समय का अभाव है, और यदि मुझे कानून का आश्रय लेना ही है, तो इस मामले म देर करना ठीक नही होगा। आपका समय अपन निजी मामलो म नष्ट करन मे मुझे सुख नही मिलता है। पर बापू आपका यह देखना चाहिए कि यह एक असाधारण परिस्थिति है इसलिए मुझे भरासा है कि अच्छी तरह सोच विचारकर अपनी सम्मति देने म आप कुछ समय नष्ट करने को तयार हो जायेंगे।

मैं यहा एक सप्ताह और ठहरकर दिल्ली वापस चला जाऊगा, उसके बाद आपसे मिलने कलकत्ता रवाना हो जाऊगा।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी

२७

२३ अप्रैल, १६३४

प्रिय लार्ड हैलिफैक्स,

मैं यह पत्र बडे हताश भाव से लिख रहा हू पर प्रवृत्ति इतनी प्रबल थी कि मैं अपने को रोक नही सका।

तीन वर्ष से अधिक हुए, इतिहास मे पहली बार दो महान पुरुषो की भेंट हुई। दोनो अपने-अपने देश की ओर से मिले और दोनो ने भारत और इग्लैड को एक दूसरे के इतना निकट ला दिया जितना वे पहले कभी नही आये थे। आपने पहला कदम उठाकर दोनो देशो के आगे एक उदाहरण रख दिया कि एकमात्र पारस्परिक समझ और बातचीत के द्वारा ही शान्ति और सदभावना का लक्ष्य सिद्ध हो सकता है। उसके बाद का इतिहास बडा दुखद है। पर मुझे मालूम हुआ कि हाल ही मे एक प्रान्तीय गवर्नर ने मेरे एक मित्र से कहा था कि गाधी ने पैक्ट के अन्तर्गत अपनी जिम्मेदारियां सोलह आने पूरी की।

जो हो, वर्तमान अवस्था तो अत्यन्त दुखदायी और असह्य है। अग्रेजो की प्रतिज्ञाओ के प्रति इस समय जितना अविश्वास दिखाई देता है और वातावरण मे जितनी कडवाहट नजर आती है उतनी पहले कभी नही थी। यह सब तो है ही इससे भी बुरी बात यह है कि पारस्परिक समझ और मानवीय सम्पर्क के चिर परिचित मार्ग को हमेशा के लिए त्याग दिया गया है। इस वयोवृद्ध पुरुष को कभी अव्यावहारिक और अरचनात्मक कल्पनावादी बताया जाता है कभी बेईमान, चालाक और कपटी राजनीतिज्ञ। उनके लिए एक साथ दोनो ही होना सम्भव नही है और आप स्वय जानते हैं कि वह वास्तव मे क्या है। उन्हे समझे जाने की कोई इच्छा दिखाई नही देती। मानवीय सम्पर्क मात्र को हौवा समझा जाता है। हाल ही मे गाधीजी ने लार्ड विलिग्टन को एक पत्र लिखा था जिसे मैंने भी देखा था। उसमे उन्होने कहा था 'विश्वास करिए, मैं आपका और इग्लैड का सच्चा मित्र हू।' वास्तव मे उन्होने यथार्थ बात कही थी। बिहार के पुनर्निर्माण के कार्य मे उन्होने मर्यादा पर अडने के बजाय बगैर किसी शर्त के सहयोग प्रदान किया और इस तरह यह प्रमाणित कर दिया कि यद्यपि वह अपने-आपको पक्का असहयोगी बताते है तथापि वह सबसे अच्छे सहयोगी हैं। अब उन्होने सविनय अवज्ञा आन्दोलन भी उठा लिया है और ऐसा करके काग्रेस के वामपथियो को रुष्ट कर दिया है। मुझे इसमे तनिक भी सन्देह नही है कि उन्होने जो कदम उठाया है काग्रेस उसे मान लेगी। काग्रेस और देश मे उनका जितना प्रभाव था और उससे

भी अधिक हो गया है।

पर उसके बाद क्या ? मेरी राय म तो सबसे अधिक आवश्यक वस्तु अपेक्षाकृत अच्छे विधान की नही अपेक्षाकृत अधिक पारस्परिक समझ की है। अविश्वास के वातावरण म तयार किया गया विधान कभी सफल नही हो सकता। इसके विपरीत पारस्परिक समझ स्वय वैधानिक गुत्थिया सुलझाने म सहायक होगी। मैं तो यहा तक कहूगा कि यही एकमात्र ऐसा उपाय है जिसक द्वारा चर्चिलो को भरोसा दिलाया जा सकता है कि भारत पर विश्वास करके वे इग्लैड के हितो को खतर म नही डालेंगे। अतएव इग्लड और भारत के प्रत्येक हितैषी का इस समय एकमात्र यही मिशन हो सकता है कि दोनो देशो के नेता एक दूसरे को समझें। महोदय, इस महान सत्य का पता सबसे पहले आपने लगाया और इस सत्य को हृदयगम करने की आवश्यकता जितनी इस समय है उतनी पहले कभी नही थी। मेरा कहना यही है कि समुद्र के इस ओर जिन लोगो का अब भी इस सत्य मे विश्वास है वे आपकी सक्रिय सहायता की अपेक्षा करते है। इन दुर्दिनो मे आपके प्रशसको की जबान पर एकमात्र प्रश्न यह है लार्ड इर्विन क्या कर रहे हैं ?" आप हमारे मामलो मे इस समय भी जितनी रुचि लेते हैं मैं जानता हू। पर यदि मुझे अनुमति दी जाय तो मैं कहूगा कि आपने पहले भारत की जिस प्रकार उदारतापूर्वक सहायता दी थी वह अब आपसे उससे भी अधिक सहायता की आशा करता है। आपने १६३१ मे एक उदाहरण रखा था पर उससे पूरे तौर से लाभ नही उठाया गया। मेरी अब भी यही धारणा है कि दोनो देशो के लिए यही एकमात्र मार्ग है और मेरी आपसे यही अपील है कि आपने १६३१ मे जिस चीज का श्रीगणेश किया था उसे आगे बढाइए। इस समय जैसा कुछ वातावरण है उसके कारण सफलता दूर भले ही दिखाई देती हो पर केवल इसी कारण स्तुत्य प्रयास का त्याग क्यो किया जाय ?

इस लम्बे पत्र के लिए क्षमा करिए। अपनी सफाई म मैं केवल गाधीजी के प्रति अपनी भक्ति, आपके प्रति अपनी प्रशसा और अपने देश के प्रति अपने प्रेम का हवाला दे सकता हू।

भवदीय
घ० दा० बिडला

राइट आनरेबल लार्ड हैलिफैक्स
जी० सी० एस० आइ०,
जी० सी० आई० जी० पी० सी०

२८

२४ अप्रैल १९३४

तुम्हारी चिट्ठी मिली। मैं अपने रुपये का एक आने म विनिमय करन का तयार नही हू। सत्याग्रह का अवमूल्यन नही हुआ है इसके विपरीत मेर निकट उसकी बाजार दर पहले स भी अधिक हा गई है। इसलिए सच्चे सत्याग्रहियो का सुरक्षित रखा गया है और समय आयेगा जब वे अपनी अच्छी खामी कफियत देंग। इसलिए तुम्ह मेरे निणय पर हर्षित होना चाहिए।

सस्नेह

बापू

सुश्री नर्गिसबेन कप्तेन
कमरा हॉल,
पचगनी (पूना होकर)

२९

राची
३० ४ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू यहा कल सध्या समय पहुचे। हमारी खूब खातिरदारी हा रही है। बिडला हाउस म बापू के अलावा राजें द्र बाबू, मुशी दम्पति मथुरादासजी, ठक्कर बापा कुमारी लेस्टर और कुमारी हैरिसन भी ठहर हुए हैं। आज सध्या समय डा० अन्सारी के साथ राजाजी भी आ पहुच हैं। डा० अन्सारी अब्दुल अजीज के पास ठहरेंगे। भूलाभाई और श्रीमती नायडू किसी होटल म ठहर हैं। बापू को ऊपर की मजिल पर ध्यान का एक हवादार कमरा दिया गया है। आज उनका मौन दिवस है।

बापू बहुत दुबल दिखाइ देत हैं। उन्ह जितनी दौड धप करनी पडती है उसका उनके शरीर पर प्रभाव पडा है। उन्हें देखने स ही जाना जा सकता है कि वह कितनी थकावट महसूस कर रहे हैं। उन्हें रात देर तक जाग रहना पडता है क्योकि

चिट्ठियो के ढेर को निबटाने के लिए उन्ह दिन म तो समय मिलता नही, इसलिए वह कभी-कभी रात मे सवा बारह बजे उठ बठते हैं। जिस किसी ने उन्हें कुछ दिन बाद देखा है वह उनके स्वास्थ्य के बारे म चिन्तित हो उठता है। पर ऐसी अवस्था म क्या किया जाये यह कोई नहा जानता।

इस पत्र के साथ उस पत्र व्यवहार की कुछ नकलें भेजता हू जो बापू ने वतमान राजनतिक स्थिति के बार म किया है।

दक्षिण बिहार म बापू को सनातनी गुण्डा का जिस ढग से सामना करना पडा उसके सम्बन्ध म दी गई एसोसिएटेड प्रेस क प्रतिनिधि के साथ उनकी मुलाकात का ब्योरा देखा ही होगा। उन घटनाओ के तुरत बाद बापू ने जो भाषण दिया था, उसका पूरा विवरण मैंने एसोसिएटेड प्रेस को तार द्वारा भज दिया था। बापू न वह रिपोट खुद तयार की है। साथ ही उनके उस लेख की नकल भी भेजता हू जो उन्होने उन घटनाओ की बाबत हरिजन' के आगामी अक के लिए तयार किया है। मन सोचा इस लेख की नकल आपको कुछ जल्दी भेज दू क्योकि 'हरिजन का अगला अक आप तक सोमवार से पहले तो पहुचेगा नहीं। उन घटनाओ के समाचार स इग्लड के कुछ मित्रो म काफी बेचनी फल गई है। अफवाह है कि पुरी मे तो य सनातनी और भी बडा तूफान खडा करेंगे। यदि इन उपद्रवो को कोई रोक सकता है तो जनता का राय ही रोक सकता है। बापू ने मालवीयजी को लिखकर अनुरोध किया है कि यदि उचित समझें तो इस गुण्डागर्दी को खुल्लम खुल्ला धिक्कारे। ये लोग उन्माद से पागल हो उठे हैं और आज सुबह बापू पर जसीडीह म जो बीती उसे देखकर ता उनके प्राण तक खतरे म पड सकत हैं। समाचार पत्रो द्वारा भी धिक्कारा जाये तो उसका प्रभाव पडेगा। मैं अगले वृहस्पतिवार का बापू का यह लेख एसोसिएटेड प्रस को तार द्वारा भेज रहा हू, जिससे वह शुक्रवार की सुबह तक पत्रो म हरिजन के साथ निकल जाए।

शुभकामनाओ सहित,

आपका
चन्द्रशकर

३०

राची
३०-४ ३८

प्रिय बापूजी अणे,

नरीमान के नाम आपका पत्र पढा।

मैं आपसे इस बात पर सहमत हू कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक ऐसे स्थान पर और ऐसे समय होनी चाहिए जो अव्वल तो उसके सदस्यों के लिए, और यदि ऐसी बैठक म मेरी मौजूदगी जरूरी समझी जाए तो मेरे लिए सुविधा जनक हो।

मैं इस बात से भी सहमत हू कि श्री केलकर, श्री जमनादास तथा अन्य सज्जनो के सहयोग का आह्वान करना उचित होगा।

कोई कायक्रम निश्चित करना सम्भव नही है। समय समय पर जसी स्थिति होगी, उसके अनुरूप कायक्रम भी बनेगा।

मैं इस मामले मे एकदम स्पष्ट हू कि कांग्रेस के लिए सविनय अवज्ञा को बिलकुल त्यागना ठीक नही रहेगा। मैं तो यह चाहूगा कि जब तक सरकार को मेरे द्वारा सीमित सविनय अवज्ञा पर आपत्ति है तब तक कांग्रेस भले ही गैर-कानूनी करार दी जाती रहे।

पर यह तो मेरी अपनी राय है। यदि बहुमत सविनय अवज्ञा के सीमित रखे जाने के खिलाफ हो, तो उसका निश्चित रूप से परित्याग किया जा सकता है।

आपका
मो० क० गाधी

श्री लोकनायक अणे

३३

७ मई, १९३४

प्रिय चद्रशकर भाई

तुम्हारे पत्र और उसके साथ भेजी सामग्री के लिए धन्यवाद। मैंने इस सामग्री का हिन्दुस्तान टाइम्स में पूरा पूरा उपयोग किया है। पडितजी (मालवीयजी) सनातनियों की गुण्डागर्दी को जरूर धिक्कारें पर आप सब लोग बापू के शरीर की रक्षा करने में कोताही न करें। अभी अभी ठक्कर बापा से मालूम हुआ है कि बापू बगाल का दौरा समाप्त करने के बाद अपने आराम का समय राची में बितायेंगे। बहुत बढिया पर यदि बापू को राची से कुछ खास मोह हो गया हो तो बात दूसरी है, अन्यथा मेरा सुझाव है कि वह राची के आसपास किसी गाव में आराम करें। मैं राची से २० या ३० मील की दूरी पर किसी गाव में उनके ठहरने का अच्छा प्रबध कर सकता हू। वह स्थान शाति और स्वास्थ्य दोनो ही दष्टियो से लाभकारी होगा। यदि वह शहर से इतने फासले पर रहना न चाहे, तो राची तो है ही। उनके विश्राम के समय मैं उनके पास रहने का सौभाग्य प्राप्त करने की बाट जोह रहा हू।

मेरे सामने बापू के दो पत्र रखे हैं और पारसनाथ द्वारा लाया गया उनका सदेश भी मिल गया है। सबसे पहले बाबा राघवदास की योजना के बारे मे मैंने उन्हें बता दिया है कि कलकत्ता पहुचकर पैसे का बन्दोबस्त करूगा। मैं समझता हू इस दिशा में कोई कठिनाई नही होगी। मैंने उनसे यह भी कह दिया है कि मेरे कलकत्ता लौटने पर वह वहा मुझसे मिल लें।

नेशनल काल वाले मामले के सबध में बापू की राय मेरी अपनी राय से मेल खाता है इसलिए मैं अभी इस दिशा में कुछ नही कर रहा हू। पारसनाथजी ने मुझे बताया है कि बापू ने राजेन्द्र बाबू से डा० अन्सारी को लिखने का अनुरोध किया है। पर अब मैं इस विषय को लेकर चिन्ता करना छोड दूगा। 'नेशनल काल' ने मेरे खिलाफ जिहाद अभी तक बन्द नही किया है। वह लिखता रहे, मैं तब तक कोई कारवाई नही करूगा, जब तक उसका आचरण बरदाश्त के बाहर न हो जाय पर मुझे भरोसा है कि ऐसी नौबत नही आयेगी।

परसो डा० अन्सारी मिले थे। नयी स्वराज्य पार्टी के लिए धन चाहते थे। मैं बापू की सलाह लिये बगर इस दिशा में कुछ नही करूगा इसलिए मैंने उन्हें कोई निश्चित वचन नही दिया है। पर यह कितनी विचित्र बात है कि वह दुनिया भर

की बातें तो करते रहे, पर नेशनल काल' के विषय म उन्होंने जबान तक न खोली। कितने मजे की बात है!

बापू से मेर प्रणाम कहना।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री चद्रशकर शुक्ल,
माफत महात्मा मो० क० गाधी,
कटक

३४

मीराबेन के १० मई १९३४ के पत्र का साराश

बापू के मन का झुकाव इस दिशा म किस प्रकार बढ़ता गया सो बताना चाहती हू। तीर्थ यात्रा के प्रारम्भ से वह उडीसा के कार्यकर्ताओ से जो कहते आ रहे हैं वह यह है 'यदि इस पैदल तीर्थ यात्रा का मेरे मन के अनुसार विकास होता गया, तो यह मेरे लिए बिलकुल सम्भव हो जायगा कि जल वापस न जाकर लगातार पैदल यात्रा करता रहू, और इस पदल यात्रा का मेरे जीवन के साथ ही अन्त हो। इस पदल यात्रा के दौरान मैं केवल हरिजन-कार्य ही नहीं, बल्कि खादी प्रचार तथा जनता जनार्दन की अन्य सभी प्रकार से सेवा अपेक्षाकृत अधिक सुगमता के साथ कर सकूगा। आध्यात्मिक सन्देश फैलाने का यही आदर्श माग है। मुझसे पहले जो लोग गुजर चुके हैं उन्होंने भी यही किया था। गौतम बुद्ध अपना घोडा पीछे छोडकर पैंदल यात्रा करने निकल पडे थे। शीघ्र यात्रा के निमित्त यातायात के साधनो का उस समय भी अभाव नहीं था पर उन्होंने उनका उपयोग नहीं किया। मेरी तो यही अभिलाषा है कि बराबर चलता रहू— चलता रहू और तभी रुकू जब वर्षा होने लगे। जब तक पानी पडता रहे मैं जहा होऊ वहीं पडाव डाल रहू और उसके रुकने तक वहीं रहू। यदि किसी को राजनैतिक अथवा किसी ऐसे ही क्षेत्र म मेरी सहायता की जरूरत हो जहा कहीं मैं होऊ वहां वह आ सकता है।'

इस प्रकार अन्त म बापू अपने असली रूप म प्रकट हो ही रहे हैं। पर यदि

हम उन्हें सचमुच बधन मुक्त करना है, तो हम अपनी भूमिका भी अदा करनी है। तब हम देखेंगे कि इस तीथ यात्रा न हमारी सारी समस्याए हल कर दी है।

ठीक इसी क्षण जबकि मैं यह लिख रही हू, बापू कायकर्त्ताओ से बात कर रहे हैं। वह कह रहे हैं

मेरी मियाद ३१ जुलाई का पूरी हो रही है पर मैं भगवान स प्राथना कर रहा हू और *यह आशा लगाये हुए हू कि काई ऐसी बात बन जाय,* जिससे मेरी पद-यात्रा चलती रहे।

बापू किसी महती प्रेरणा स अनुप्राणित दिखाई दे रहे हैं और इस असाधारण तीथ यात्रा की व्यापक सम्भावनाओ म मरी पूरी आस्था है। शत यही है कि उसका अबाध विकास होने दिया जाय।

३५

४६/बी बोस पाडा लेन,
कलकत्ता
११ मई १९३४

प्रिय श्री बिडला

आपके ५ और ७ तारीख के पत्र मिल। आपने जो निजी सूचना दी, उसके लिए मैं आपका आभारी हू। आपन जो बातें बताई है उनकी थोडी-बहुत जानकारी मुझे पहले स ही थी। मुझे इसम तनिक भी सदेह नही है कि जिस काम की हम सबका चिन्ता है उसके हित-साधन म आपने अपनी समझ के अनुसार भरसक प्रयत्न किया। आपन इस क्षेत्र मे तथा राष्ट्रीय महत्व के अन्य अनेक क्षेत्रो म जो परोक्ष रूप स अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान किया उसकी ओर से मैं उदासीन रहा होऊ ऐसी बात कदापि नही है। साम्प्रदायिक एवार्ड को लेकर आपके और मेरे जो विचार हैं व यथावत हैं। मुझे आपके पत्र को प्रकाशित करन म बडी प्रसन्नता होती पर अपने दृष्टिकोण से की गई टिप्पणी के साथ यदि आप मुझे वसा करने की स्वतन्त्रता प्रदान करें तो मैं अब भी उम छापन का तयार हू। आप समाचार पत्रो म वाद विवाद उठान के पक्ष म क्या नही हैं यह मरी समय

म नही जाता। आपके दृष्टिकोण की नेकनीयती के बार मे किसी का सदेह करन की काई गुजाइश नही है।

विश्वास है आप बिलकुल स्वस्थ होग।

भवदीय,
मृणालकाति बास

३६

मणिभुवन
बम्बई के पते पर
११-८ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी,

मैं आपके पहले पत्र का नही देख पाया, क्याकि उस समय मैं बापू क निकट नहा था। और बापू ने उत्तर दन क बाद पत्र को फाड फेंका। बापू के उत्तर की नक्ल मुझे भेज दी गई थी, और मैं आपको दुबारा लिखने की बात साच ही रहा था कि समाचार मिला कि आप बापू से उडीसा म मिल लिये हैं। यह पत्र तो मैं केवल पटना म तैयार की गई समाजवादी याजना पर बापू की आलोचना की एक प्रति आपके पास भेजने के निमित्त लिख रहा हू। बम्बई के मसानी ने यह चाही थी। आलोचना के साथ बापू ने जो पत्र भेजा है उसमे वह कहत हैं अखिल भारतीय काग्रेस समाजवादी परिषद के प्रथम अधिवेशन मे पारित प्रस्तावो पर मेरे लिए कुछ कहन को नही रहता, यदि उनम बताई गई काय योजना विवेक-सगत प्रतीत होती। मुझे वह वैसी किन कारणा से नही लगी, उनका मैंने उल्लेख किया है। प्रस्ताव कागजी घाडा मात्र है। उसम शब्दो का अपव्यय छोड और कुछ नही है।' मरा समय म बापू का विस्तृत वक्तव्य दना चाहिए था जिसम वह बतात कि इस समय भारत म समाजवाद के जा अथ लगाय जा रह हैं उनक बार म उनके अपन क्या विचार हैं। एक जस शब्दा का प्रयाग भ्रामक सिद्ध हा सकता है। बापू और तथाकथित समाजवादी, दोनो एक ही प्रकार के अनक शब्द व्यवहार म लात हैं पर उनका अभिप्राय भिन्न हाता है।

बापू के शेष बचे दौर म मैं उनके साथ रहन की आशा करता हू। महादेव भाई कहते हैं कि वह १८ जुलाई तक अवश्य छोड दिय जायेंगे।

सद्भावनाओं क साथ

आपका
चद्रशकर

३७

८८, ईटन स्क्वेयर, एस० डब्ल्यू० १
११ मई, १९३४

प्रिय श्री बिड़ला,

आपका पत्र कुछ दिन पहले मिला था। अब आपको लिखने तथा उस पत्र के लिए धन्यवाद देने की इच्छा है। आप निश्चिन्त रहिए। परिस्थितियों के जटिल होने के बावजूद मैं सभी पक्षो के, सभी समस्याओ के सभी पहलुओ पर, एक-दूसरे को समझने के लिए आवश्यक तथा भारत की तुष्टि और शान्ति के लिए आवश्यक चेष्टा करते रहने मे कोताही नही करूगा, और मैंने यह आस्था कभी नही गवाई है कि इस उद्देश्य सिद्धि मे जो लोग प्रयत्नशील है,वे अपने महान काय म सफल मनोरथ होंगे। विश्वास रखिए, मेरे द्वारा जो कुछ सम्भव है किया जायेगा। मुझे यह बराबर लगा है कि वतमान अवस्था म सभी पक्षो द्वारा धय का परिचय दिय जाने की आवश्यकता है, जिससे वतमान कठिनाइयो के अधकार को चीरकर अधिक उज्ज्वल आशाओ के दशन करते रहने की तत्परता शिथिल न हो।

आपका,
हैलिफक्स

३८

१३ मई, १९३४

प्रिय मृणाल बाबू

आपके पत्र क लिए धन्यवाद। मेरी समझ म मामला पुराना पड गया है, इसलिए मेरे पत्र को प्रकाशित करना अनावश्यक सा लगने लगा है।

मैं निकट भविष्य म कलकत्ता आऊगा, तब आपसे मिलकर प्रसन्नता होगी। महत्वपूण विषयो पर हमारे लिए भिन्न भिन्न विचार रखना बिलकुल सम्भव है। सम्भव है कि साम्प्रदायिक अवार्ड के सबध मे यह धारणा बनाने मे मैं ही गलती पर होऊ कि सभी पक्षो की सहमति के बिना उसम सशोधन नही हो सकता। जो

भी हो, आपके साथ इस विषय पर विचार विमर्श करने का अवसर तो मिलेगा, और जब कलकत्ता लौटूंगा, तो वैसे अवसर से लाभ उठाने में मुझे प्रसन्नता होगी।

आपका,
घ० दा० बिडला

श्री मृणालकान्ति बोस,
४६-बी, बोस पाडा लेन,
कलकत्ता।

३६

१३ मई १६३४

पूज्य बापू

आपको पत्र भेजने के तुरत बाद मुझे आपका कलकत्ते से रिडाइरेक्ट किया हुआ पत्र मिला। आपकी यह धारणा रही होगी कि मैं यहा से चल पडा हू। पर आप कलकत्ता पहली जून तक पहुचेंगे इसलिए मैं वहा आपके आगमन से एक सप्ताह पहले पहुचने का विचार कर रहा हू।

मैंने आपके पदल दौरे पर जान-बूझकर टिप्पणी नही की। मुझे यह विचार रुचा नही था इसलिए मैं चुप्पी साधे रहा। मैं आपके इस कथन से बिलकुल सहमत हू कि चन्दा इकट्ठा करने की अपेक्षा लोगो का हृदय परिवतन कही अधिक महत्वपूर्ण है।

अब मेरे भाषण की बाबत। आपकी यह अलोचना बिलकुल वाजिब है कि मैंने कोई योजना नही बताई, पर मेरा दिमाग किस दिशा में काम कर रहा है इसका सकेत मैंने अपने भाषण में अवश्य दे दिया था। मैंने कोई योजना जान बूझकर नही बताई। सबसे पहली बात तो यह है कि मेरा भाषण मुख्यत सरकार के लिए था या उन लोगो के लिए था, जो इस विषय पर विचार करना चाहते हैं। मेरे पास अपनी कोई योजना न हो, ऐसी बात नही है पर मैंने सोचा कि जब मेरे ही विचार प्रयोग की अवस्था में हैं तो दूसरो के लिए सिद्धान्त-रूप में कुछ पेश करना उचित नही है। इसलिए कोई योजना पेश करने के बजाय मैंने उसे कोई एक सौ गांवों में अपने ही पैसे से कार्यान्वित करने का फैसला किया है। यह

योजना केवल मेरे ही प्रान्त के निमित्त है। अन्य प्रान्तों के लिए योजना भिन्न होगी। उदाहरण के लिए, कई स्थानों पर मुर्गियां पाली जा सकती हैं। पिलानी में मैं एक छोटा सा उद्योग विद्यालय चला रहा हूं। उसमें ऊन की कताई और बुनाई बढ़ई का काम चमड़ा कमाना और रंगना जूते बनाना कपड़े रंगना और छापना तथा कालीन बुनना सिखाया जाता है। मैंने सूती खादी का ज्ञान बूझकर छोड़ दिया है। आशा है आपको याद होगा कि मैंने आपको दिल्ली में यह बता दिया था। मेरा प्रान्त सूती खादी के लिए उपयुक्त स्थान नहीं है आपने भी यह बात मानी थी।

अब मैं इस क्षेत्र का विस्तार करना चाहता हूं। यह योजना सरकार की सहायता के बगैर कार्यान्वित हो सकती है। राज्य अन्य अनेक काम कर सकता है और मेरे लिए अनेक उपयोगी सुझाव देना सम्भव है। पर मैंने कुछ कहना उचित नहीं समझा क्योंकि मेरी बात के गलत अर्थ निकाले जाते। कर व्यवस्था के बारे में कुछ कहा जा सकता था। निष्क्रिय पूंजी पर कर, खपत पर कर, आबकारी संबंधी कर उत्तराधिकार कर आदि अनेक प्रकार के सुझाव पेश करना सम्भव था। पर वैसे सुझावों के द्वारा मैं सरकार को एक नये अस्त्र से लैस कर देता, फिर भी मेरा उद्देश्य सिद्ध नहीं होता। इसके अलावा, मैं फेडरेशन में अपने साथियों को सशंकित कर देता। इसलिए मुझे यही श्रेयस्कर जान पड़ा कि कर व्यवस्था के बारे में जबान न खोलूं और छोटे पैमाने पर अपना कार्य जारी रखूं। आपको जहां यह प्रतीत हो कि मैं गलती कर रहा हूं तो मेरा पथ प्रदर्शन करने से मत चूकिए।

मैं इस मामले में आपसे सहमत हूं कि भारत में योजना निर्माण कार्य भारतीय परिस्थितियों को निगाह में रखकर ही करना चाहिए पाश्चात्य प्रणाली को आंख मूंदकर नकल करना ठीक नहीं है। जब मैं योजनाओं की उपादेयता की दलील पेश कर रहा था, तो उस समय मेरे ध्यान में रूस की पंचवर्षीय योजना या वैसी ही कोई चीज बिलकुल नहीं थी। वास्तव में अन्य देशों में जो अतिशय केन्द्रीकरण हो रहा है उसमें मुझे बड़ा खतरा दिखाई देता है। पर फिर भी बहुत सी ऐसी अच्छी बातें हैं जो सरकार ही कर सकती है हम तो केवल उनकी दलीलें ही पेश कर सकते हैं। कर व्यवस्था व्यापारिक समझौते चुंगी, भूमि संबंधी कानून आदि ऐसे अनेक क्षेत्र हैं, जिनमें केवल सरकार ही सहायता दे सकती है। पर इन सारी बातों की चर्चा भेंट होने पर करूंगा। रही चरखे की बात सो उसमें मेरी उतनी आस्था नहीं है जितनी आपकी है, यह मैं स्वीकार करता हूं। उसकी प्रभावोत्पादकता के बारे में मुझे संदेह नहीं है पर जब कठिनाइयों को

और ध्यान देता हू, तो घबरा जाता हू। तिस पर भी आप जानते ही है कि मैं महावीरप्रसादजी के कामो म दिलचस्पी लेता आ रहा हू और उनकी रुपय पैसे स मदद भी करता हू। पर आपको मेरी आर्थिक सहायता उतनी नही रुचेगी जितना मेरा सक्रिय सहयोग। पर चूकि मैं अपने अन्दर उस उत्साह का अभाव पाता हू, जो सफलता के इच्छुक किसी व्यक्ति म होना जरूरी ह, मुझे इस काम को हाथ मे लेन म हिचकिचाहट होती है।

स्नेह भाजन
घनश्यामदास

महात्मा मो० क० गाधीजी
पटना

४०

१३ मई १९३४

प्रिय घनश्यामदास

यदि मेरी लिखावट पढ़न म कठिनाई होती हो, तो मैं अंग्रेजी म लिखने को तैयार था। आज मुझे बलात बोलकर अंग्रेजी म लिखाना पड रहा है कुछ इसलिए नही कि समय का अभाव है बल्कि इसलिए कि बेहद गर्मी है और मच्छर मक्खिया इतना परेशान कर रही हैं कि खुद लिखने की बजाय बोलकर लिखाना ही अधिक सरल है।

मैं यह जानने को उतावला हो रहा हू कि तुम्हे मेरी पटन-यात्रा कैसी लगी? यदि अच्छी लगी हो तो मैं चाहूगा कि तुम इसम भरपूर सहयोग दो। यदि तुम कलकत्ते म हो तो यह समझकर कि थैली मुझे भेंट करनी है धन-सग्रह म लग जाओ। यह थैली मेरे पास पटना भेजी जा सकती है। मैंने डा० विधान से कह दिया है कि जून के मध्य म दो काम हाथ म लेकर आऊगा। पहला काम तो यह होगा कि जो लोग पूना पैक्ट के बारे म बातचीत करना चाहते हो उनसे मिलू, और दूसरा काम धन-सग्रह का है ही। पर मुझे यह करना अच्छा नहीं लग रहा है। इसके विपरीत, यदि इस विषय पर बातचीत करने को कोई आने को तैयार न हो तो मेरा इस निमित्त कलकत्ते जाना ही व्यर्थ है। इस मामले को अगस्त म हाथ म लिया जा सकता है मैं चाहे जहा भी होऊ। कोई जल्दी नही है। रही धन-सग्रह की बात,

सो मुझे इतना भरामा है ही कि जितना कुछ जाना होगा, मरी पद-यात्रा के दौरान भी आ जायगा। ज्या ज्या दिन बीतत जात है पद-यात्रा की उपादयता पर मरी आस्था दृढतर होती जाती है। मैंने इस विषय पर सतीश बाबू के साथ विस्तार से बातचीत की ह। वह तुम्ह अपना निजी अनुभव बतायेंगे। खुद मैं जो अनुभव प्राप्त कर रहा हू वह अन्य किसी उद्देश्य सिद्धि म हासिल करना नही चाहूगा।

चद्रशकर के नाम तुम्हारा पत्र पढा। परिस्थिति म परिवतन होने के साथ साथ मेरे विश्राम लने के विचार म भी परिवतन हुआ है। महज दैनिक पद-यात्रा से विश्राम लेन की आवश्यकता नही रही है। इसलिए अब हमारी भेंट पद-यात्रा के दौरान ही किसी स्थल पर हो जायगी। तुम्हे मिलन के लिए पटना बुला भेजना अनुपयोगी होगा। क्योकि २० तारीख को या १६ की सध्या को ही, पटना से निवृत्ति मिल जायेगी। और तब मैं कटक या उड़ीसा के किसी अन्य स्थान के लिए चल पडूगा जिसस पद-यात्रा का सिलसिला फिर स शुरू कर दू। यह क्रम जून के मध्य तक जारी रहेगा। तब तक यहा वर्षा भी आरम्भ हो जायेगी। तुम मेरे साथ एक या दो दिन यात्रा मे बिता सकते हो अथवा किसी मगलवार को मेरे पास ठहर सकत हो, क्याकि सोमवार को पदल चलना बन्द रहेगा और मगलवार को भी केवल सायकाल से यात्रा आरम्भ होगी। मगलवार को तीसरे पहर ५॥ बज स यात्रा आरम्भ करने का विचार है।

डा० अन्सारी और राजेन्द्र बाबू ने 'नशनल कॉल' की बाबत क्या कारवाई की है सो मैं लिख ही चुका हू। मैं चाहूगा कि तुम जितनी कटिग भेज सको भेजो।

साहनी (नशनल कॉल के सम्पादक) की चिट्ठी को देखत हुए मुझे तो यह नही लगता कि उस जो निर्देश दिया जायेगा उसका पालन करन म वह हिचकिचा येगा। हमारे लिए इतना ही यथेष्ट है।

बापू के आशीर्वाद

४१

भाइ घनश्यामदास,

यह खत पुरी स करीब दस मईल दूर चदनपुर देहात ह वहा म लिख रहा हू। पद-यात्रा की बात तुमको तो जचती जायगी ऐसा मुझे विश्वास है। मरा दिल तो इस ओर कब से था, लेकिन ऐसी तीव्र भावना नहिं थी जसी अब हो गई। उसम

बक्सर, देवघर का काफी हिस्सा है ऐसा प्रतीत होता है। देवघर की घटना म पचानन तकरत्न-जसा विद्वान भी था उसम सदेह नही है। ऐसे अधकार को रेल गाडी मे बैठकर कसे मिटा सकें ? रूपय इक्टठे करने की तो वात भी मेरे मन से हट गई। यह काम ही पसे का काम है भाव परिवतन ता इस याता से अधिकहोन का सभव पाता हू। अव यदि दूसरे प्रात के साथीआ को समजा सकू तो मैं याता उत्कल म ही करना पसद करूगा। पटना जाना भी नापसद लगता है।

नशनल काल के बारे म मेरा अभिप्राय ठीक लगा होगा। सहानी न लवा खत राजेंद्र बाबु पर भेजा है। उसम लिखता है जसे वह अथवा मैं कहुगा एसा वह अवश्य करेगा—राजेन्द्र बाबु का खत मिला होगा। अनसारी भी विलकुल अनुकूल थे।

तुमारा प्रास्पेक्टि प्लान पढ चुका हू। कल्पना अच्छी है। लेकिन तुमारी और चीजें मुझे आवश्यक जची है ऐसे यह नहिं, इसमे प्लेन की आवश्यक्ता के बार म काफी मसाला है। प्लान नहिं है। प्लान ऐसी बननी चाहिये, जिसका सरकार और लाग आज से अमल कर सकें, कोइ उसका अमल भले न कर। ऐसी रचना तुमारी बुद्धि से अतीन नहिं है। सोचकर ऐसा कुछ बन सके तो किया जाय। मेरा विश्वास है कि इस रचना मे चरखा मध्य बिंदु है। यदि यह नहिं है तो उसका विवेकपूवक छेदन करना चाहिय इसको अधर नहिं रखना चाहिये। सरकार अथात स्टेट की सहाय मिले ता करोडा रुपये एक क्षण मे बच जाते हैं। सब प्लेन कुछ पश्चिम के ढाचे म हि पडनी चाहिय ऐसा तो नहिं है। मैं इस बारे मे काफी ख्याल रखता हु यह तो तुमका मालूम है। ये ख्याल मजबूत हुए हैं देखो। चर्खे के अभाव स लोग आलसी बन रहे हैं। पशु शास्त्र के अज्ञान के कारण पशु हमको खा रहे हैं। चर्खा और पशु के शास्त्र का अभ्यास और अमल से और छोटे खेतो का प्रश्न को हल करने स हिंदुस्तान ऐसा आबाद हो सकता है जसा दूसरा कोई मुलक आज तक नहिं हुआ है। कभी मिलेंगे तब बातें करेंगे।

बापु के आशीर्वाद

२० ५ ४
साखीगोपाल

स्वास्थ्य अच्छा होगा। मरे अक्षर पढने मे तक्लीफ पडे तो मैं अग्रेजी म लिखु अर्थात टाइप करवाउ ?

४२

भाई घनश्यामदास,

तुमारा प्लान पढ गया हू। छ सफा पर ग्यारह गया है भूल से छूट गया है न ? योजना कुछ मेघी-सी (महगी सी) लगती है लेकिन मुझे जो बाधा आती है वह तो यह है कि उसम प्रतिवष का परिणाम नहि बताया गया है। रशिया की योजना की विशेषता तो यह है न कि उसम प्रति वष का परिणाम बताया गया है आर अत म उसकी स्वावलबिता कागद पर तो सिद्ध की गई है। ऐसा कोई प्रयत्न इस योजना म नहि पाता हू।

तुम्हारी तबीयत ठीक होगी। मुझ तो यात्रा बहुत अच्छी लगती है। शरीर म थकान होन क कारण देहातो म मैं घूम नहि सकता हु इतना दु ख रहता हे सही।

बापु के आशीर्वाद

कलकत्ते की थली यहा किसी मुकाम पर मिलनी चाहिये। यात्रा म दूसरे प्राता का अनुसधान नहि पाता हू।

२६ मई ३४

४३

कलकत्ता

६ जून १६३४

प्रिय सर तेज,

मैं उडीसा से अभी-अभी लौटा हू। वहा मैं कुछ दिना के लिए बापू क साथ था। उनके साथ वतमान राजनतिक अवस्था की चर्चा के दौरान मैंने सयोगवश उनसे कहा था कि मैं कुछ लोगा के इस कथन से सहमत नही हू कि श्वेत पत्र म बताई गई योजना स तो माण्टेग्यू चेम्सफोड सुधार ही अच्छे थ, और यह कि सशोधन के बाद भी श्वत पत्र निकम्मा रहेगा। उन्ह मेरे कथन पर आश्चय हुआ और उन्होने मेरी यह बात नही मानी कि जो लोग श्वत पत्र को नामजूर करने की बात कहते है वे वास्तव म सौदबाजी से काम ले रहे हैं। उन्होने मुझस कहा ह

कि एक नोट तैयार करा, जिसमे दोना शासन विधाना की तुलना करते हुए श्वेत-पत्रवाली योजना की खूबिया पर प्रकाश डाला जाय। मैंने वसा करने की हामी भरी, पर साथ ही यह भी कह दिया कि वैसा करने के लिए जितनी योग्यता की आवश्यकता है वह मुझम नही है। मैंने उनस पूछा कि क्या मैं इस दिशा मे आपसे सहायता का याचना कर सकता हू। उन्हे मेरी यह बात भायी। आप कितन काय व्यस्त है यह मैं जानता हू, पर श्वेत पत्र के बारे म जितनी जानकारी आपको है उतनी अन्य किसी को नही। वास्तव म इससे सम्बद्ध सब कुछ बता देना आपके लिए बायें हाथ का खल है। पाच फुलस्केप पष्ठ लिखान म आपको विशेप श्रम नही पडेगा। इसम दोना प्रकार के शासन विधाना की विशेपताओ का उल्लेख रहे और यह भी बताया जाय कि दोना म श्वेत पत्रवाला विधान माण्टेग्यू चेम्सफोड वाले विधान म किन अशो म निश्चित रूप स श्रेष्ठ है। वह नोट आप चाहें तो सीधे गाधीजी के पास भेज दें या यदि मेरे पास भेजें तो मैं उनके पास पहुचा दूगा। आपका समय ले रहा हू आशा है आप इसका खयाल न करेंगे। यदि भारत भर म इस विषय का कोई आपसे बढकर विशेपज्ञ होता तो मैं आपको कष्ट नही देता।

भवदीय
घनश्यामदास बिडला

सर तेजबहादुर सप्रू
इलाहाबाद।

४४

कलकत्ता
६ जून, १६३४

प्रिय मीराबेन

इडियन जल मनुअल यहा अप्राप्य है।

इस पत्र के साथ लाड हलिफक्स या लाड इर्विन (जिस नाम स मैं उन्हे पुकारना पसद करता हू) के पत्र की नकल भेजता हू। मेरी समझ म उत्तर बुरा नही रहा। इसम कही गई बातें मेरे अपन विचार से मल खाती हैं इसलिए मैं तो

इस पत्र को अच्छा ही समझूगा। मेरी राय म हमे धय को हाथ से नही जाने देना चाहिए, और अपने काम म लगे रहना चाहिए। मैं उनके पत्र का माकूल उत्तर भेज दूगा। कृपा करके उनके पत्र की नकल सुश्री हैरिसन को दिखा दीजिए।

मैंने सर पुरुषोत्तमदास को लिखा है कि वह सुश्री हैरिसन का परिचय इम्पीरियल बक ऑफ इडिया के गवनर सर आस्बन स्मिथ से करा दें। आप कृपा करके इसका जिक्र सुश्री हैरिसन से कर दीजिए। लाड इर्विन को मैंने जो पत्र लिखा था, उसकी नकल मरी फाइल म दिल्ली म रखी है इसलिए उसकी नकल आपको फिलहाल भेजने म असमथ हू। पर आप उनके उत्तर की नकल बापू का दिखा दीजिए और बताइए वह क्या कहते हैं।

भवदीय,
घनश्यामदास

मीराबन
माफत आश्रम
वर्धा (मध्य प्रान्त)

४५

वर्धा
६ ६ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी,

बापु का उपवास आदश शांति से ही रहा ह। वातावरण सपूण अनुकूल है आराम और निद्रा काफी ले रहे है, आज तीसर दिन होते हुए भी कोई Complications (उलझन) नही है। दाक्तरो का भी पूण सतोष है और मैंने विधान को और जीवराज को खास करके तक्लीफ नही दिया।

आपका विनीत,
महादेव

४६

कलकत्ता
६ जून १९३४

प्रिय राजाजी

इस पत्र के साथ मर तेजबहादुर को लिखे अपने पत्र की नक़ल भेजता हू। अपनी सादगी और विनयशीलता के बावजूद आप सर तजबहादुर सप्रू की टक्कर के विधान विशारद हैं यह मेरा विश्वास बराबर रहा है। मुझे बापू ने यह अनुरोध करने का अधिकार दिया है कि आप उनके लिए एक नोट तयार करें इसलिए आपसे काम लेने के निमित्त आपको खुश करना जरूरी नही है।

आशा है आप देवदास लक्ष्मी तथा शिशु—सब राजी-खुशी होगे।

घनश्यामदास बिडला

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
मार्फत हिन्दुस्तान टाइम्स
दिल्ली।

४७

कलकत्ता
११ जून १९३४

प्रिय लार्ड हलिफक्स

पिछले महीने की ११ तारीख के अपने पत्र म आपने जो कुछ कहा है उसम मुझे सताप हुआ है। कृपया मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिए। धय कितना मूल्यवान गुण है यह मैं बखूबी जानता हू और गाधीजी तो इस गुण से ओतप्रोत हैं जसा कि आप हम सबस अधिक जानत हैं। पर यदि आपको लग कि यहा पर हमार कुछ करने से अवस्था म सुधार हो सकता है तो आप हमारा पथ प्रदर्शन करिए कि हम क्या कुछ करना है क्योकि मैं जानता हू कि उसस बापू बहुत प्रभावित होंगे।

इस पत्र को अच्छा ही समझूगा। मेरी राय मे हमे धैय को हाथ से नही जाने देना चाहिए और अपने काम म लगे रहना चाहिए। मैं उनके पत्र का माकूल उत्तर भेज दूगा। कृपा करके उनके पत्र की नकल सुश्री हैरिसन को दिखा दीजिए।

मैंने सर पुरुषोत्तमदास को लिखा है कि वह सुश्री हैरिसन का परिचय इम्पीरियल बक आफ इडिया के गवनर सर ऑस्बन स्मिथ स करा दें। आप कृपा करके इसका जिक्र सुश्री हैरिसन स कर दीजिए। लाड इर्विन को मैंने जो पत्र लिखा था, उसकी नकल मेरी फाइल म दिल्ली म रखी है इसलिए उसकी नकल आपको फिलहाल भेजने म असमथ हू। पर आप उनके उत्तर की नकल बापू को दिखा दीजिए और बताइए वह क्या कहते हैं।

भवदीय
घनश्यामदास

मीराबेन
माफत आश्रम,
वर्धा (मध्य प्रात)

४५

वर्धा
६ ६ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी

बापु का उपवास आदश शाति से ही रहा है। वातावरण सपूण अनुकूल है *आराम और निद्रा काफी ले रहे है आज तीसरे दिन होत हुए भी* कोई Complications (उलझन) नही है। डाक्तरा को भी पूण सतोष है और मैंने विधान को और जीवराज को खास करके तक्लीफ नही दिया।

आपका विनीत,
महादेव

४६

कलकत्ता
६ जून १६३४

प्रिय राजाजी,

इस पत्र के साथ सर तेजबहादुर को लिखे अपने पत्र की नकल भेजता हूं। अपनी सादगी और विनयशीलता के बावजूद आप सर तेजबहादुर सप्रू की टक्कर के विधान विशारद हैं यह मेरा विश्वास बराबर रहा है। मुझे बापू ने यह अनुरोध करने का अधिकार दिया है कि आप उनके लिए एक नोट तयार करें इसलिए आपसे काम लेने के निमित्त आपको खुश करना जरूरी नहीं है।

आशा है, आप देवदास, लक्ष्मी तथा शिशु—सब राजी खुशी होंगे।

घनश्यामदास बिड़ला

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी,
मार्फत हिंदुस्तान टाइम्स
दिल्ली।

४७

कलकत्ता
११ जून १६३४

प्रिय लार्ड हैलिफक्स

पिछले महीने की ११ तारीख के अपने पत्र में आपने जो कुछ कहा है उससे मुझे संतोष हुआ है। कृपया मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिए। धैर्य कितना मूल्यवान गुण है यह मैं बखूबी जानता हूं और गांधीजी तो इस गुण से ओतप्रोत हैं जैसा कि आप हम सबसे अधिक जानते हैं। पर यदि आपको लगे कि यहां पर हमारे कुछ करने से अवस्था में सुधार हो सकता है तो आप हमारा पथ प्रदर्शन करिए कि हम क्या कुछ करना है क्योंकि मैं जानता हूं कि उसमें बापू बहुत प्रभावित होंगे।

सुश्री हैरिसन शीघ्र ही इग्लड लौटेंगी। वह अपन साथ यहा के सबध म महत्वपूण सस्मरण और सूचनाए ले जायेंगी, जिनसे आपको पता चलेगा कि गाधीजी किस प्रकार अहर्निश शान्ति स्थापना-काय म लग हैं। वह आपको उनके हरिजन काय सम्बन्धी दौरे के बारे म भी बतायेंगी क्योकि जब वह रल माग से मीलो दूर पडनेवाले गावा म पदल दौरा कर रह थे तो वह काफी समय तक उनके साथ रही थी।

आपका
घनश्यामदास बिडला

राइट आनरेबल लाड हलिफक्स,
पी० सी०, जी० एम० एस० आई०,
जी० एम० आई० ई०
८८, इटन स्क्वेयर,
लदन एस० डब्ल्यू० १

४८

१६ एलबट रोड,
इलाहाबाद
२२ जून, १६३४

प्रिय श्री बिडला

आपका ६ तारीख का पत्र रिडाइरक्ट होकर शिमला पहुचा जहा मैं ८ तारीख से १८ तारीख तक अपने पेशे के सिलसिले म था। उस पत्र स मालूम हुआ कि महात्मा गाधी की सहमति स आप मुझसे एक ऐसा स्मरण पत्र लिखवाना चाहते हैं जिसम यह दिखाया जाय कि श्वेत पत्र माण्टेग्यू चेम्सफोड योजना से श्रेष्ठतर है।

मैं अपन स्मरण पत्र मे श्वेत पत्र' क बार म अपने विचार व्यक्त कर चुका हू और यदि शिमला मे मेर लिए सम्भव होता तो मुझे महात्मा गाधी के निजी उपयोग के लिए एक सक्षिप्त-सा स्मरण पत्र तयार करने म कोई आपत्ति नही होती। दुभाग्यवश वसा करना मेरे लिए सम्भव नही था। मैं नही समझता कि जब काग्रेस इस सबध मे एक निश्चित रुख अपना चुकी है तो वसा कोई स्मरण

पत्र तयार करने से कोई लाभ होगा। मेरे लिए अपने आपको इस भुलावे में डालना सम्भव नहीं है कि मेरे द्वारा जो कुछ कहा जायगा उससे कांग्रेस के दृष्टिकोण में रत्ती भर भी अन्तर पड़ेगा। मेरा बराबर यही विचार रहा है कि श्वेत पत्र हमारी आकांक्षाओं की तुष्टि नहीं कर पाया है और कुछ मामलों में वह गम्भीर आलोचना की चीज है। पर मेरी यह राय कभी नहीं रही कि उसे कुछ समाचार पत्रों और कतिपय राजनेताओं ने जितना बुरा बताया है वह वास्तव में उतना बुरा है तथा उसके द्वारा हमारी स्थिति और भी खराब हो जायगी। वास्तव में मेरी यही धारणा रही है कि अनेक त्रुटियों के बावजूद वह कई दिशाओं में हमारी स्थिति को पहले से अधिक मजबूत करेगा। और, यदि हमने बाल की खाल न निकाली और समूचे सामाजिक ढांचे को बदल डालने का दम न भरा, मानो सब कुछ नये सिरे से आरम्भ करने में हम समर्थ हैं तो बाकी जो कुछ हासिल करने को रह गया है उसे अपेक्षाकृत अधिक सुगमता के साथ हासिल कर सकेंगे। अब तक जो कुछ हुआ है उसे ध्यान में रखते हुए मुझे यही मुनासिब लगता है कि मैं कुछ न लिखूं और फिलहाल चुप्पी साधे रहूं।

सद्भावनाओं के साथ।

आपका
तेजबहादुर सप्रू

श्री घ० दा० बिड़ला
कलकत्ता।

४६

२८ जून १९३४

प्रिय सर तेज,

आपके पत्र के लिए आभारी हूं। आपने श्वेत पत्र के पक्ष में जो कुछ कहा है उसमें मैं सहमत हूं पर आपने मेरे पहले पत्र के आशय को गलत समझा। मेरा इरादा सार्वजनिक उपयोग के लिए आपसे कुछ लिखवाने का नहीं था। अपना विचार बिंदु अपने स्मरण पत्र में आप पहले ही व्यक्त कर चुके हैं। मैं तो केवल महात्मा गांधी के निजी उपयोग के लिए ही आपसे एक नोट लिखवाना चाहता था। उन्होंने मुझसे वैसा एक नोट तैयार करने को कहा था, पर आप मेरी परिमित

सीमाओ से परिचित है। यह एक ऐसा विषय है जिस पर मैं अपने आपको पारगत होने का दावा नही कर सकता। इसीलिए मैंने आपसे एक नोट तैयार करने को कहा था।

मैं तो नही समझता कि महात्मा गाधी ने इस मामले मे कोई धारणा निश्चित कर रखी है। मेरी राय मे काग्रेस कायकारिणी के प्रस्ताव से यह ध्वनि नही निकलती कि श्वेत पत्र माण्टेग्यू चेम्सफोड योजना से भी गया बीता है। काग्रेस के लिए इस आधार पर उसे ठुकराना भले ही सभव हो कि वह उसकी मागो की आशिक पूर्ति भी नही कर सकता, पर इसका यह अर्थ नही है कि यदि उसे इस प्रकार सशोधित कर दिया जाय कि वह हमारे अन्तिम लक्ष्य की सीढी जसा सिद्ध हो तो भी वह उसे नामजूर करती रहेगी।

सदभावनाओ के साथ।

आपका
घनश्यामदास बिडला

सर तेजबहादुर सप्रू
इलाहाबाद।

५०

तार

९ जुलाई, १९३४

ठक्कर बापा
मार्फत महात्मा गाधी
कराची

बापू के स्वास्थ्य के बारे मे घोर चिता। आप प्रोग्राम मे काट छाट न करके भारी उत्तरदायित्व मोल ले रहे हैं। मेरा जोरदार सुझाव है कि १५ अगस्त के आसपास तक किसी शान्त स्थान पर विश्राम सप्ताह कायक्रम बनायें तथा लाहौर कानपुर बनारस और उसी अनुपात मे कलकत्ते के दौरे को एक सप्ताह के लिए स्थगित कर दें। बापू का स्वास्थ्य पूणतया भग होने तक यह न टालिए।

—घनश्यामदास

५१

तार

करांची
९ जुलाई, १९३४

घनश्यामदास,
नयी दिल्ली

चिंता अकारण है। पूरी सावधानी बरत रहा हूं। ५ या ६ अगस्त के आस पास एक सप्ताह का उपवास आरम्भ करूंगा। वर्धा पहुंचने पर तारीख बताऊंगा। लालनाथ पर आक्रमण से इसकी घोषणा अत्यावश्यक समझता हूं। सहमति का तार दो।

—बापू

५२

श्री चंद्रशंकर का बयान—बापू के उपवास पर

बापू के एक सप्ताह के आसन्न उपवास के समाचार से मित्रगण स्तंभित रह जायेंगे। महादेव भाई की भाषा में यह 'भूकम्प का धक्का' प्रमाणित होगा। अजमेर की जिस सभा में यह घटना घटी थी जिसमें सनातनी स्वामी लालनाथ के सिर पर हल्की-सी चोट आई थी, उसीमें बापू ने यह घोषणा कर दी थी कि घटना के बारे में तहकीकात करने के बाद वह प्रायश्चित्तस्वरूप एक सप्ताह का उपवास करेंगे। तहकीकात करने के बाद वह जिस नतीजे पर पहुंचे, उसकी सूचना उन्होंने समाचार पत्रों को दे दी। उनके भाषण का संक्षिप्त ब्योरा पत्रों में निकलने के तुरत बाद श्री नटराजन ने बापू को तार भेजा "प्रायश्चित्त की आवश्यकता नहीं है, भर्त्सना पर्याप्त है। प्रार्थना है, उपवास मत करिए।" श्री घनश्यामदास ने अपने तार में कहा 'लालनाथ पर आक्रमण की खबर से बड़ी चिन्ता हुई। आशा है आप विचार विमर्श का अवसर दिये बिना उपवास का संकल्प नहीं करेंगे।" यह ८ तारीख की बात है। अगला दिन बापू का मौन दिवस था। जो उन्होंने

समुद्र तट पर एक भव्य भवन म व्यतीत किया। उन्होंने कोई न कोई निणय ले लिया है। श्री बिडला को उन्होंने जो तार भेजा उसम उन्होंने कहा ' वर्धा पहुचने क बाद ५ या ६ अगस्त से लोकनाथ पर किये गये आक्रमण को लेकर एक सप्ताह का उपवास करने का विचार है। इसे आवश्यक समझता हू। घोषणा अभी से कर देनी चाहिए। सहमति का तार भेजो।' इसके उत्तर म देवदास का यह तार आधी रात को पहुचा श्रद्धापूण सहमति पर पूरे विचार के बाद चार दिन की अवधि का विनम्र सुझाव है। और आज सुबह बिडलाजी का यह तार आया मेरी राय मे इतना लम्बा उपवास अनावश्यक है। इससे देश भर म व्यथ की व्याकुलता फलेगी जो स्वय लालनाथ भी कभी न चाहेगे यह तार लालनाथ को दिखाने का अनुरोध है। आशा है आप उपवास की अवधि कम करने को राजी हो जायेंगे। यह कदम कुछ कठोर है पर अंतिम निणय तो आप ही करेंगे।' बापू ने अपना वक्तव्य सवेरे ८ और ९ बजे के बीच तैयार किया और जयरामदास ठक्कर बापा तथा बाबा साहब को दिखाये जाने के बाद वह समाचार-पत्रों को दे दिया गया। कल रात मैंने बापू से निवेदन किया कि "क्या वह उपवास की अवधि कम करने के सुझाव पर विचार करेंगे ? उत्तर मिला ७ दिन की अवधि कम से कम है। यह प्रायश्चित्त है और सो भी सावजनिक उपवास। ऐसे मामलों म दिन नहीं गिने जाते। आज उन्होंने मीराबेन को लिखा इस घटना के कारण प्रायश्चित्त अनिवाय हो गया है क्योंकि इसके द्वारा वचन भग हुआ है। सुरक्षा के वचन भग से गुरुतर कोई अपराध नहीं है। यदि सामथ्य होती तो और भी लम्बा उपवास करता। तुम्हें व्याकुल नहीं होना चाहिए। अविचल भाव से अपने काम मे लगी रहो।" श्री नटराजन को उन्होंने यह तार भेजा हम सब एक महत्काय म लगे हैं, अजमेर की घटना की उपेक्षा करना कत्तव्यच्युत होने के समान होगा।' श्री बिडला को यह तार गया ७ दिन से कम का उपवास स्थिति के अनुरूप नहीं होगा।' आज सध्या समय श्री मथुरादास का यह तार आया ' प्रायश्चित्त सबधी निणय स्थगित कीजिए। लाहौर चिट्ठी भेजी है। इसका बापू ने यह उत्तर भेजा 'निणय हो गया अनिवाय वक्तव्य पढिए। एक और ममस्पर्शी तार महादेव भाई का था, जिसम उन्होंने कहा प्रणाम अधिक से अधिक १४ तारीख तक लाहौर म उपस्थित होने की आशा है दया करें भूकम्प के ताजा धक्के मत दीजिए।' पर तब तक फसला हो चुका था। वक्तव्य सम्भवत आज के सध्याकालीन पत्रों म निकल चुका होगा। ठक्कर बापा के नाम स्वामी आनद तथा महादेव भाई ने अपील जारी की है जिसका देश विदेश म असख्य नर नारी अनुमोदन करेंगे "मानवता के नाम पर आपसे अनुरोध है कि आप दनिक दौरे के कायक्रम म काट

छाट करिए, जिससे बापू आसन्न उपवास को झेलने योग्य बल संचित रख सकें। देश आपसे इस दुःखद सम्भावना से बचने के लिए आवश्यक दृढ़ कदम उठाने की अपील करता है और मुझे आशा है कि यह अपील व्यर्थ न जायेगी। वास्तव में ठक्कर बापा बापू के स्वास्थ्य को लेकर काफी चिन्तित हो गये हैं और कार्यक्रम को कम-से-कम कसीला रखने की चेष्टा कर रहे हैं। उन्होंने दौरे से बाकी बचे सभी प्रान्तों के आयोजकों को तत्सम्बन्धी आवश्यक निर्देश जारी कर दिया है।

चन्द्रशंकर

कराची,
१० जुलाई, १९३४

५३

तार

१० ७ ३४

घनश्यामदास
'सेवक'
दिल्ली।

लाहौर के मित्रों ने मेरे उद्देश्य से संबंधित निजी पत्र अतिरंजित वक्तव्य के साथ छापे हैं। चिन्ता मत करिए। बापूजी से शेष दौरा रद्द करने को कहा, पर उन्होंने इन्कार कर दिया। उनकी सम्मति में कलकत्ता जाना बहुत जरूरी है। पत्र लिख रहा हूं।

—ठक्कर

कराची

५४

२ क्रान्वान कोट,
एलबट ब्रिज रो
१४ जुलाई, १६३४

प्रिय महात्माजी,

यह सप्ताह यह समाचार लाया है कि अपना दौरा समाप्त करने के बाद आप एक सप्ताह का उपवास करेंगे। इस सबध म कुछ कहने को नही है, क्योकि आपन सकल्प कर लिया है। आपक मित्रगण तो केवल इतना ही कर सकत है कि इन दिना शुभकामनाओ के द्वारा आपको बल प्रदान करें।

मैंने भारत म अपनी आखा से देखा है कि आप पत्रा के ढेर को निबटाने की चेष्टा तो करते है पर उसम कमी नही हो पाती। इसलिए मैं यही सोच रही हू कि आपको यहा के समाचारा स परेशान करू या न करू। आपको बताने योग्य पर्याप्त सामग्री है और फिर पैदल यात्रा के उस शात वातावरण मे आपके पास बैठकर वह सब बताना कितना सुहावना लगता। मेरा पिछल सप्ताह का पत्र अब तक आपके पास पहुच ही गया होगा। उसमे आपको पता लगा होगा कि मुझ पर क्या बीती—मैं बहुत थक गयी थी—मीरा के आगमन को लेकर। अब वह यहा एक सप्ताह रह ली हैं तो चीजो की शक्ल बन रही है। कल वह नगर मे आई थी, और हम दोना न मिलकर दौरे की चर्चा करन म समय बिताया। उ होन जो भार उठाया है उसम उन्हें काफी पसीना बहाना पडेगा। मैंने उनस कहा कि आप भी तब एक दिन का विश्राम लेत है। हम लाग किसी न किसी को उनका हाथ बटाने के लिए पकडने की चेष्टा करेंगे—क्योकि चिट्ठिया तो भुगतानी ही हैं और जो कुछ है सो जुदा। मैंने उनसे कहा है कि मेरी राय मे उन्हे भूकम्प पीडितो के कष्ट निवारणार्थ तथा हरिजन-काय के निमित्त धन सग्रह म लग जाना चाहिए। मुझे विश्वास है कि पसा भले ही अधिक एकत्र न हो, लाग देंगे हँसी खुशी से।

मेरा अपना सप्ताह सभाओ और मुलाकाता की खिचडी-सा रहा। मैं भारत मत्री से मिली सर फ्रेडरिक साइक्स स मिली सर स्टेफड क्रिप्स और मेजर एटली स भी मिली। लाड हैलिफक्स से आज पुन मिलनेवाली हू। अगले हफ्ते लाड सकी और सर स्टेनल जक्सन स मिलूगी। मैं ये नाम इसलिए नही छाटती

कि वे मीरा की 'बडे खटमलो' की परिभाषा म आते है बल्कि इसलिए कि ये अलग-अलग ढग से हमारे काम आ सकते हैं। समय थोडा रह गया है। एक हफ्ते बाद लोग-बाग छुट्टिया मनाने को रवाना होना शुरू कर देंगे। इसलिए खूब डट कर काम करने की जरूरत है, जिससे इन लोगो को लगने लगे कि मामला इतना जरूरी है कि उसमे देर की गुजाइश नही है। चर्चिल ने जो करने की कोशिश की है उसकी तरफ लोगो का ध्यान केन्द्रित हो गया है—अनेक दिमागो म इस मामले ने प्रमुख स्थान ले लिया है। हम मुलाकातो के जरिये समाचार पत्रो के द्वारा, तथा सभाए करके सबके सामने वस्तुस्थिति को यथावत रखने की चेष्टा म लगे हुए हैं। डा० असारी ठीक समय पर आ पहुचे हैं—यह प्रसन्नता की बात है। उनका आगमन हमारे कार्यकलाप का पूरक जैसा है। जो कुछ वह कर सकते ह वह किसी और के लिए शक्य नही है। जिस मुलाकात के लिए हमने बातचीत चला रखी थी उसकी व्यवस्था हो गयी है और मुझे उससे बहुत कुछ आशा है। जमीन तयार कर दी गयी है, बाकी काम डा० असारी करेंगे।

मैं भारत हो आई इसके लिए जितना धन्यवाद दू थोडा है। इन महीनो म मैंने और जो कुछ अनुभव प्राप्त किया उसने मुझे भारत के विषय म साधिकार बोलने योग्य आत्म विश्वास प्रदान किया। आपने जिस समय अपना वह वक्तव्य लिखा तो मैं वही मौजूद थी, मैं तब भी वही थी जब सरकार ने अपनी विज्ञप्ति जारी की फलत जो वातावरण बना उसका ज्यो का त्यो वणन करना मेरे लिए सम्भव है। मैं जिस किसी से मिलती हू यही कहती हू कि काग्रेस पर से प्रतिबध उठाना ही पर्याप्त नही है कुछ अधिक करने की आवश्यकता है और सो भी तुरत ही—अर्थात अहिंसक राजनैतिक बदियो को अविलम्ब रिहा कर देना चाहिए—इनमे वे तीन भी शामिल हैं। और मैं बराबर अपने इस कथन का जोरदार शब्दो म प्रतिपादन करती हू कि 'इस आदमी का मानस शान्ति की ओर झुका हुआ है। और मैं ऐसे ऐसे दृष्टात पेश करती हू जिनका आपको आभास तक नही है पर जो मैंने हृदयगम कर रखे है।

मैं देखती हू कि भारत मत्री ने भी आपकी नीयत का लोहा मान रखा है और आपने उनके विषय मे मुझ जो कुछ बताया था वह भी मैंने उनसे कहा। मैं उनके पास कोई आध घण्टे रही, और उसम प्रत्येक क्षण का सदुपयोग किया गया। उनसे मेरी यह पहली भेंट थी और यह लाड विलिंग्डन के स्वागत समारोह से कुछ ही पहले हुई थी। क्या कुछ और अधिक कहने की जरूरत है ? मैं उनसे अकेले म मिली थी और इस समय लदन भर मे उनके जैसा कार्य-व्यस्त आदमी शायद ही हो। "इस समय आपके निकट जो कोई बना रहता है उससे कह दीजिए

कि मैं जो पत्र हवाई डाक द्वारा भेजूं वह आप तक अवश्य पहुंचा दिया जाए—बशर्ते कि आप न अग्नि परीक्षा के दौरान आप चिट्ठी पत्री देखने में समर्थ हों। और हां कृपा करके सी० एफ० ए० (श्री एण्ड्रूज) को अफ्रिका से आने से मत रोकिए।"

आपकी भगिनी,
अगाथा हैरिसन

१ यह पत्र अधूरा है अवशिष्ट अंश उपलब्ध नहीं है।

५५

तार

१४ जुलाई, १९३४

महात्मा गांधी
लाहौर

अत्यंत विनयपूर्वक प्रार्थना करता हूं कि आप डाक्टरों की सलाह के विरुद्ध अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ मत कीजिए।

—घनश्यामदास

५६

तार

लाहौर
१४ जुलाई, १९३४

घनश्यामदास बिड़ला
नयी दिल्ली

डाक्टरों की सलाह पर चल रहा हूं।

—बापू

इस फामूले से कायकर्त्ताओ म बेचनी फैल गयी। फलत जब गाधीजी ने हरिजन काय के सिलसिले म दौरा किया तो कुछ स्वदेशी कायकर्त्ताओ और गाधीजी के बीच बम्बइ मे विचार विमश हुआ। निम्नलिखित सामग्री उसी विचार विमश का परिणाम है।

—चद्रशकर]

गाधीजी की परिभाषा

यह स्पष्ट कर दिया जाता है कि मेरा फामूला स्वदेशी लीग के पथ प्रदशन के लिए है। स्वदेशी का सम्पूण क्षेत्र इसकी परिधि मे नही आता। यह तो लीग के लिए अपना काय कलाप लघु उद्योग धधो विशेषकर कुटीर उद्योगो तक सीमित रखने की दिशा म सुझाव मात्र है। लीग के कायकलाप म सुसगठित और दीघकाय उद्योग शामिल नही है। इस सुझाव का उद्देश्य इन उद्योगो द्वारा देश को दिये गये तथा भविष्य म दिये जानवाले लाभ को घटाकर दिखाना कदापि नही है। पर स्वदेशी लीग के लिए इन उद्योगो के स्वनियुक्त विज्ञापन एजेट जसा आचरण करना, जसा कि वह कर रही है जरूरी नही है। इन विशालकाय उद्योगो के पास अपने प्रचुर साधन है और य अपनी देखभाल स्वय करन म पूणतया सक्षम हैं। स्वदेशी की भावना यथष्ट मात्रा म जाग्रत हो चुकी ह और स्वदेशी लीग जसी सस्थाओ द्वारा किसी प्रकार के प्रयत्न के बिना भी इस भावना से इन उद्योगो को पर्याप्त सहायता मिल रही है। अपनी उपयोगिता सिद्ध करन के लिए इन सस्थाओ को अपने परो पर खडे होने के प्रयत्न म रत लघु उद्योगो पर ही ध्यान केद्रित रखना चाहिए। विशालकाय और सुसगठित उद्योगो द्वारा प्रस्तुत वस्तुओ का विज्ञापन करन का एकमात्र परिणाम उनकी कीमतो मे वद्धि करना होगा। यह उन वस्तुओ का उपयोग करनेवालो के साथ अयाय होगा। एक परोपकारी सस्था के लिए सफल उद्योग धधो की सहायता के लिए आगे बढ़ना शक्ति का अपव्यय-मात्र ह। हम इस भ्राति का शिकार नही होना चाहिए कि य उद्योग जो फल फूल रहे ह सो हमारे प्रयत्नो की बदौलत। एसा करना एक सस्ती-सी आत्म तुष्टि का लक्षण होगा वस्तुस्थिति म कोई आधार नही ह। मुझे १९२१ म फजलभाई के साथ हुई एक बातचीत की याद आती ह जब मैं स्वदशी आदोलन का श्रीगणेश करन ही वाला था। उन्होने जो टिप्पणी की थी वह मार्के की थी। उन्होने कहा "आप काग्रेसी लोग मुल्क की तो क्या खिदमत करेंगे उल्टे हमारे माल का ढिंढोरा पीटकर उसकी कीमतें चढा देंगे।' उनकी टिप्पणी तकसगत थी पर जब मैंने उन्हें बताया कि मेरा इरादा हाथ की कती, हाथ की बुनी खादी को

पुलिस ब दोबस्त से बापू का वेदना हुई जिसकी वह अपनी वक्तृता के दौरान चर्चा करन स अपन आप को नही राक सक।

सदभावनाआ के साथ।

आपका,
च द्रशकर

५६

स्वदेशी की परिभाषा

[पिछने कुछ महीना म स्वदेशी से सबधित कई कायकर्त्ता गाधीजी के पास स्वदेशी की सम्पूण परिभाषा जानने के हेतु आए हैं। गाधीजी ने जैसी सम्यक परिभाषा तैयार करन की चेष्टा की तथा दक्षिण म दौरे के दिना म वहा के काय कर्त्ताआ के साथ विचार विमश किया ता उ ह पता चला कि वसी परिभाषा प्राय असम्भव है स्वदेशी स्वय अपनी ही परिभाषा है। स्वदेशी एक ऐसी प्रवत्ति है जिसका उत्तरोत्तर विकास हो रहा है और जिसम स्वत ही परिवतन होता रहता है। उसकी परिभाषा की चेष्टा विफल होगी और उसस स्वदशी क प्रति लोगा के झुकाव का आघात पहुचगा। फलत गाधीजी ने अखिल भारतीय स्वदेशी लीग तथा वसी ही अ य सस्थाआ क पथ प्रदशन क लिए निम्नलिखित फामूला सुझाया

अखिल भारतीय स्वदेशी लीग के कायक्षेत्र क निमित्त स्वदेशी की विभावना म व सारी वस्तुए आ जाती हैं जिनका निमाण भारत म ही एसे छोटे उद्योग धधा क द्वारा हाता है जि हें अपना अस्तित्व बनाय रखने के हेतु सावजनिक शिक्षण की जरूरत हो तथा जा मूल्य निर्धारित करने एव उनम काम करनेवाले श्रमिका के वेतन तथा उनके कल्याणकारी काय के मामने म अखिल भारतीय स्वदेशी लीग का पथ प्रदशन स्वीकार करन को तत्पर हा। इसलिए स्वदशी म व वस्तुए नही गिनी जायेंगा जिनका उत्पादन बडे बडे तथा सुसगठित उद्योग सस्थाना द्वारा हाता हा, और जि हें अखिल भारतीय स्वदेशी लीग की सहायता की आवश्यकता नही है तथा जि ह सरकारी सहायता उपलब्ध है अथवा हो सकती ह।

इस फार्मूले से कार्यकर्त्ताओ म बेचनी फैल गयी। फलत जब गाधीजी ने हरिजन काय के सिलसिले म दौरा किया तो कुछ स्वदशी कायकर्त्ताओ और गाधीजी के बीच बम्बई मे विचार विमश हुआ। निम्नलिखित सामग्री उसी विचार विमश का परिणाम है।

—चद्रशकर]

गाधीजी की परिभाषा

यह स्पष्ट कर दिया जाता है कि मरा फामूला स्वदेशी लीग के पथ प्रदशन के लिए है। स्वदेशी का सम्पूण क्षेत्र इसकी परिधि म नही आता। यह तो लीग के लिए अपना काय कलाप लघु उद्योग धधो विशेषकर कुटीर उद्योगो तक सीमित रखने की दिशा म सुझाव मात्र ह। लीग के कायकलाप म सुसगठित और दीघकाय उद्योग शामिल नहीं हैं। इस सुझाव का उद्देश्य इन उद्योगो द्वारा दश को दिये गये तथा भविष्य म दिये जानेवाले लाभ को घटाकर दिखाना कदापि नहीं है। पर स्वदशी लीग के लिए इन उद्योगो के स्वनियुक्त विज्ञापन एजेंट जसा आचरण करना जसा कि वह कर रही है जरूरी नही है। इन विशालकाय उद्योगो के पास अपन प्रचुर साधन हैं और ये अपनी देखभाल स्वय करन म पूणतया सक्षम हैं। स्वदेशी की भावना यथेष्ट मात्रा म जाग्रत हो चुकी ह और स्वदशी लीग जसी सस्थाओ द्वारा किसी प्रकार के प्रयत्न के बिना भी इस भावना से इन उद्योगो को पर्याप्त सहायता मिल रही है। अपनी उपयोगिता सिद्ध करन के लिए इन सस्थाओ को अपन परो पर खडे होने के प्रयत्न म रत लघु उद्योगो पर ही ध्यान केंद्रित रखना चाहिए। विशालकाय और सुसगठित उद्योगो द्वारा प्रस्तुत वस्तुओ का विज्ञापन करन का एकमात्र परिणाम उनकी कीमतो मे वद्धि करना होगा। यह उन वस्तुओ का उपयोग करनेवालो के साथ अन्याय होगा। एक परोपकारी सस्था के लिए सफल उद्योग धधो की सहायता के लिए आगे बढना शक्ति का अपव्यय-मात्र है। हम इस भ्राति का शिकार नही होना चाहिए कि ये उद्योग, जो फल फूल रहे हैं सो हमार प्रयत्नो की बदौलत। एसा करना एक सस्ती सी आत्म तुष्टि का लक्षण होगा, वस्तुस्थिति म कोई आधार नहीं है। मुझे १६२१ म फजलभाई के साथ हुई एक बातचीत की याद आती है जब मैं स्वदेशी आन्दोलन का श्रीगणेश करने ही वाला था। उन्होने जो टिप्पणी की थी वह मार्के की थी। उन्होंने कहा "आप काग्रेसी लोग मुल्क की तो क्या खिदमत करेंगे उल्टे हमारे माल का ढिंढोरा पीटकर उसकी कीमतें चढा देगे।' उनकी टिप्पणी तकसगत थी, पर जब मैंने उन्हे बताया कि मेरा इरादा हाथ की कती, हाथ की बुनी खादी को

पुलिस ब दोबस्त स बापू को वेदना हुई जिसकी वह अपनी वक्तृता के दौरान चचा करन स अपन आप को नही रोक सके।

सदभावनाओ के साथ।

आपका,
च द्रशकर

५६

स्वदेशी की परिभाषा

[पिछल कुछ महीना म स्वदशी स सबधित कद कायकर्ता गाधीजी के पास स्वदशी की सम्पूण परिभाषा जानन के हेतु आए है। गाधीजी ने जसी सम्यक परिभाषा तयार करने की चष्टा की तथा दक्षिण म दौरे क दिना म वहा के काय कर्त्ताओ के साथ विचार विमश किया ता उ ह पता चला कि वसी परिभाषा प्राय असम्भव है स्वदेशी स्वय अपनी ही परिभाषा ह। स्वदशी एक ऐसी प्रवत्ति है जिसका उत्तरोत्तर विकास हो रहा है और जिसमे स्वत ही परिवतन होता रहता ह। उसकी परिभाषा की चेष्टा विफल होगी और उसस स्वदशी के प्रति लोगा के चुकाव का आघात पहुचगा। फनत गाधीजी ने अखिल भारतीय स्वदेशी लीग तथा वैसी ही अ य सस्थाआ क पथ प्रदशन क लिए निम्नलिखित फामूला सुझाया

अखिल भारतीय स्वदशी लीग के कायक्षेत्र क निमित्त स्वदेशी की विभावना म व सारी वस्तुए आ जाती हैं जिनका निमाण भारत म ही ऐसे छोटे उद्योग घधो के द्वारा होना है जि हें अपना अस्तित्व बनाय रखने के हेतु सावजनिक शिक्षण की जरूरत हो तथा जा मूल्य निर्धारित करने एव उनम काम करनवाले श्रमिका के वेतन तथा उनके कल्याणकारी काय के मामल म अखिन भारतीय स्वदशी लीग का पथ प्रदशन स्वीकार करन का तत्पर हा। इसलिए स्वदशी म व वस्तुए नही गिनी जायेंगी जिनका उत्पादन बडे-बडे तथा सुसगठित उद्योग सस्थाना द्वारा हाना हा और जि हें अखिल भारतीय स्वदशी लीग की सहायता की आवश्यकता नहा है तथा जि ह सरकारी सहायता उपलब्ध है अथवा हा सकती है।'

इनमे से किसी भी धंधे मे लगकर अपनी आजीविका के अति सीमित साधनो मे वृद्धि करें।

इस प्रकार आप यह देखेंगे कि मैंने कार्यशीलता मे परिवर्तन करने का जो सुझाव दिया है, उससे दीर्घकाय उद्योगो के हितो को कोई क्षति नही पहुचती। मुझे तो आपसे इतना ही कहना है कि आप राष्ट्रीय सेवक लोग अपनी कार्यशीलता को लघु उद्योगो तक ही सीमित रखें, और बडे उद्योगो को अपनी चिंता स्वय करने को स्वतन्त्र छोड दें, जैसा कि वे इस समय भी कर रहे है।

मेरी धारणा है कि लघु उद्योग दीर्घकाय उद्योगो का स्थान न लेकर उनके सहायक सिद्ध होगे। मैं तो मिल मालिको से भी यही अपेक्षा करता हू कि वे इस क्षेत्र मे हाथ बटायेंगे, क्योकि यह काम मानव जाति की सेवा का क्षेत्र है। मैं मिल मालिको का भी उतना ही हितैषी हू और यदि मैं यह दावा करू कि जब कभी उन्हें मेरी सहायता की आवश्यकता हुई मैंने उसमे कोई कोताही नही की तो वे स्वय उसकी पुष्टि करेंगे।

६०

बिडला हाउस,
अल्बुकर्क रोड
नई दिल्ली
२४ जुलाई १९,४

प्रिय चन्द्रशंकर भाई

मैंने गाधीजी की स्वदेशी की परिभाषा बडे ध्यान से पढी। मैंने उनके विचार उडीसा मे सुने थे, और वे मुझे बडे अच्छे लगे थे। पर मैं इस परिभाषा के सम्बन्ध मे एक बात कहना चाहूगा। बापू संगठित उद्योगो द्वारा प्रस्तुत चीजो को आयात की गई चीजो के स्तर पर रखने के पक्ष मे नही हैं पर इस परिभाषा मे यह बात अच्छी तरह स्पष्ट नही की गई है। किन्तु यह बात स्पष्ट की जायगी, तो उसमे दूसरे प्रकार की भ्रान्ति उत्पन्न हो सकती है। अतएव उन्होने जो कुछ कह रखा है उसका खण्डन किये बिना क्या उनके लिए यह स्पष्ट करना संभव नही है कि

बनावा देने का है क्योंकि उससे लाखों भूखों का पेट भरेगा और एक मुद्दा कारीगरी में जान पड़ेगी तो वह निरत्तर रह गये।

पर एकमात्र खद्दर का उद्योग ही अपने पावों पर लड़खड़ा रहा हो, ऐसी बात नहीं है इसलिए मैं चाहूंगा कि आप लोग उन सभी लघु कुटीर, और असंगठित उद्योगों पर अपना ध्यान केंद्रित करें जिन्हें इस समय जन साधारण की सहायता की जरूरत है। यदि उनके निमित्त कुछ नहीं किया गया, तो वे नष्ट हो जायेंगे। इनमें से कुछ को तो सुगठित उद्योग अब भी अपनी सस्ती चीजों को बाजार में लाकर पीछे ढकेल रहे हैं। वास्तव में इन्हीं को सहायता की जरूरत है।

चीनी के उद्योग को ही लीजिए। वृहदकाय उद्योगों में सूती कपड़ा मिल उद्योग के बाद चीनी मिल उद्योग का नम्बर आता है। उसे हमारी सहायता की बिलकुल जरूरत नहीं है। एक के बाद दूसरी ऐसी फैक्टरियों की संख्या तेजी के साथ बढ़ रही है। लोकप्रिय संस्थाओं ने इस उद्योग के विकास में कोई योगदान नहीं किया। इसके लिए तो यह उद्योग केवल अपने अनुकूल कानून का ही ऋणी है। और इस समय यह स्थिति है कि यह उद्योग इतना समृद्ध हो गया है और इतनी तेजी के साथ फल रहा है कि गुड़-उत्पादन का धंधा बीते हुए युग की सी बात हो चली है। यदि पोषक तत्वों को ध्यान में रखा जाय तो गुड़ मिल की चीनी की अपेक्षा श्रेष्ठतर है। इस क्षण यह बहुमूल्य कुटीर उद्योग ही आप लोगों की सहायता की दुहाई दे रहा है। यह क्षेत्र काफी विस्तीर्ण है और इसमें खोज और ठोस सहायता की काफी गुंजाइश है। हमें इस उद्योग को जीवित रखने के साधनों और मार्गों का पता लगाना होगा। मेरे कहने का जो अभिप्राय है, उसका यह एक उदाहरण मात्र है।

मुझे इस बारे में तनिक भी सन्देह नहीं है कि हम लघु उद्योगों की सहायता करेंगे, तो उससे राष्ट्रीय समृद्धि में वृद्धि होगी। मुझे इस बारे में भी कोई संशय नहीं है कि वास्तविक स्वदेशी इन कुटीर उद्योगों के प्रोत्साहन और पुनर्जीवन में ही निहित है। केवल इन्हीं के द्वारा लाखों मूक प्राणियों का भरण पोषण हो सकता है। इसके द्वारा लोगों की सृजनात्मक क्षमता और नयी नयी चीजें खोज निकालने की प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहन मिल सकता है। देश में लाखों नौजवान बेकार पड़े हैं। इनके द्वारा उन्हें काम धंधा मिलेगा। इस समय जिस शक्ति-सामर्थ्य का क्षय हो रहा है उसका सदुपयोग होगा। जो लोग अपेक्षाकृत अधिक पैसा कमा रहे हैं, मैं यह कदापि नहीं चाहूंगा कि वे अपनी वर्तमान कार्यशीलता को छोड़कर लघु उद्योगों में जा लगें। जिस प्रकार मैंने चरखा चलाने को प्रोत्साहन दिया था उसी प्रकार मैं इस दिशा में भी यही चाहूंगा कि जो लोग दरिद्र हैं या खाली बैठे हैं वे

पयक विभाग ही खोल दिया जाय। वह इस फार्मूले के व्यावहारिक सिद्ध होने के बारे म वडे आशान्वित हैं और उन्ह विश्वास है कि यह लाभदायक प्रमाणित होगा।

सद्भावनाओ के साथ,

आपका,
चद्रशकर

६२

वर्धा ७ अगस्त १९३४

प्रिय सरदार साहब

समय की बचत करने के लिए मुझे यह पत्र अग्रेजी म लिखना पड रहा है।

राजाजी कल ग्राडट्रक एक्सप्रेस स वर्धा होते हुए गुजरे थे। महादेव ठक्कर वापा और मैं उनस स्टेशन पर मिले। उनके साथ पापा और शकर भी थे—सब तीसरे दर्जे के डिब्बे मे थ। बापू ने उनके पास एक सदेश भेजा था जिसम उन्होंने कहा था कि उनके भीतर काग्रेस छोडने और अपने आदर्शों का पालन बाहर रह कर करने की इच्छा बलवती हो रही है। उनके सदेश म था कि "भ्रष्टाचार और असत्य मेरे लिए असह्य हो उठे है।" राजाजी ने इस नयी स्थिति के तक को समझा तो, पर उन्हें वह पसद नही आया। फलत उन्होंने उत्तर म बापू स अनुरोध किया कि जल्दबाजी ठीक नही है। उनकी सतकता अनावश्यक थी क्योंकि बापू का तुरत ही कुछ करने का विचार नही है। जब उन्हें राजाजी के कथन स अवगत किया गया तो उन्होंने कहा, 'मैं तो केवल मित्रो को ऐसी सभावना का सामना करने को तयार कर रहा हू।' आज प्रात उन्होंने मीरा को जो चिट्ठी लिखी, उसम भी यही कहा। आज प्रात काल की प्राथना के बाद उन्होंने अगाथा को जो पत्र लिखा उसम सीमा प्रात तथा अब्दुल गफ्फार खा के बारे म अपना रुख स्पष्ट करते हुए कहा 'अधिकारी वग सीमा प्रात के लालकुर्ती स्वयसेवको और उनके नेता पर हिंसा का आरोप लगाते हैं। वे इस आरोप से बिलकुल इन्कार करते हैं। सम्भवत दोनो ही ईमानदारी से काम ले रहे हैं। मुझे सीमा प्रात जाने और वहां के लोगो म रहने का अवसर मिलना चाहिए जिससे मैं वास्तविकता

वह यह नही चाहत कि विदेशा से आयात की गई वस्तुआ के साथ वसा ही सलूक किया जाए जसा भारत के सगठित उद्योगो द्वारा प्रस्तुत चीजा के साथ किया जाता है ?

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री चद्रशकर शुक्ल,
माफत महात्मा गाधी
कानपुर।

६१

कानपुर
२६ ७ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २४ तारीख का पत्र मिला। मैंने वह बापू को दिखाया। उन्हें यह जानकर बडा हप हुआ कि आप उनके विचारो स सहमत हैं। उन्होने ठण्डी सास ली और कहा कि यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि स्वदेशी कायकर्त्ता इस सीधी सादी और समझदारी की बात का हृदयगम नही कर पाये। बापू ने वह फामूला तयार करते समय इस बात का ध्यान रखा था कि उसम इस निर्देश का समावेश रहे कि विदेशा से मगाई गई चीजो को भारतीय सगठित उद्योगो द्वारा तयार की गई चीजा क स्तर पर न रखा जाय। उन्होने यह स्पष्ट रूप स कह दिया कि लघु उद्योग दीघकाय उद्योगा के पूरक है उनका स्थान ग्रहण करनेवाल नही। अस्तु बापू कहत है कि वह इस विषय पर हरिजन के लिए जो लेख तयार करने जा रह ह उसम इस बात को बिलकुल स्पष्ट कर देंगे। आपन देखा ही होगा कि स्वदेशी पर तयार किया गया नोट समाचार पत्रो को द दिया गया है। बापू इस मामल को पूर मनोयोग के साथ हाथ मे ले रहे हैं। शायद वह कायकारिणी समिति के फामूले का प्रतिपादन करने को कह और सम्भव है इसके लिए एक

का पता लगा सकू। यदि वे सचमुच हिंसा के दोषी पाये जायेंगे तो मैं उनसे अपना नाता तोड़ लूगा पर यदि मैंने उन्हें निर्दोष पाया तो उनके ऊपर जो लाछन लगाया गया है मैं उन्हें उस लाछन से मुक्त कराने की कोशिश करूगा। मैं बगाल इसलिए जाना चाहता हू कि आतकवादियों से हिंसा का मार्ग त्याग देने को कहू। वहा मैं वस्तुस्थिति का पता लगाने और उसके अनुरूप आचरण करने के निमित्त जाना चाहता हू। बगाल जाना सीमा प्रात की यात्रा की अपेक्षा अधिक महत्व का विषय है। अब्दुल गफ्फार खा और जवाहरलाल की नजरबदी से चिड़चिडाहट अवश्य होती है पर मैं उसे युद्ध की चुनौती के रूप में नहीं लेता।" इस समय उनकी जो मनःस्थिति है उसका यह सक्षिप्त विश्लेषण है।

आज सुबह प्रार्थना के बाद उन्होंने आश्रमवासियों में अपने उपवास के सबध में कुछ गिने चुने शब्द कहे। बुटोववाली घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने कई अन्य बातों के साथ-साथ इस सम्भावना का भी सकेत दिया कि यदि एक सप्ताह इस विषय पर आत्मचिंतन करने के बाद वह इस नतीजे पर पहुचे कि अभी हम वर्धा आश्रम और खास तौर से कन्या-आश्रम जसी सस्थाए चलाने के योग्य नहीं हैं तो वह सयोजकों से आश्रम बद करने को कहेंगे। बापू ने इस विषय की चर्चा जमनालालजी तथा विनोबा से पहले ही कर दी थी।

आज प्रात काल साढे पाच बजे उन्होंने अगले सप्ताह भर के लिए अपना अतिम भोजन किया—दूध और अनार का रस। छह बजने में कुछ मिनट रहते रहते भोजन समाप्त हो गया। अब ईश्वर ने चाहा तो बापू अपने उपवास का अत १४ तारीख को प्रात काल छह बजे करेंगे।

आज सुबह तीन डाक्टरों ने उनकी परीक्षा की। ये तीन डाक्टर हैं—नागपुर के डाक्टर खरे यहा के सिविल सर्जन डा० शाहने तथा डा० शर्लेकर। जबतक यह चिट्ठी आप तक पहुचेगी उनकी रिपोर्ट पत्रों में प्रकाशित हो चुकी होगी। उन्होंने बापू को अधिक शारीरिक शक्ति प्राप्त करने तक उपवास स्थगित करने को राजी करने की चेष्टा की। आप समझ ही सकते हैं कि इसका परिणाम वही हुआ जो होना था—नम्रतापूर्ण पर अविलम्ब इन्कार। डाक्टर लोग नित्य आते रहेंगे और उनकी परीक्षा करने के अतिरिक्त और जो कुछ आवश्यक होगा, करेंगे। उनके मूत्र की परीक्षा के सब साधन यहीं उपलब्ध हैं इसलिए इस दिशा में चिंता का कोई कारण नहीं है। जानकीदेवी, ठक्कर बापा और काका कालेलकर उनके 'जेलर' नियुक्त किये गए हैं। वे बारी बारी से पहरा देंगे। प्रभावती ओम और वसुमती अमतुस्सलाम, बालकृष्ण-दास और मैं शुश्रूषा का काम करेंगे। हमने शुश्रूषा की जो व्यवस्था की थी उसे बापू ने खुद जाचा और बा तो

सबके ऊपर देखभाल के लिए रहेंगी ही।

बापू वर्धा म जिस कमर मे ठहरते हैं उसका बारजा उनके रहने के लिए चुना गया है। उसके पूर्व और पश्चिम की ओर खपरल के सायबान बना दिय गए है जिससे आधी-पानी से बचाव हो सके। पश्चिम की ओर के सायबान को कुछ और बडा कर दिया गया है जिसस वह स्नानगृह का काम दे सके। भौतिक सुविधाओ की दृष्टि स यह स्थान उपवास के लिए बहुत ही उपयुक्त है। स्वय बापू इसकी सफलतापूर्ण समाप्ति के बारे म पूरी तरह आशान्वित हैं। इस समय वह बिलकुल निर्द्वन्द्व और चिन्तारहित हैं इसलिए हम मगल की ही आशा करते हैं।

आज प्रात काल अणे भी आ पहुचे। उनका आना उन्हें बापू द्वारा बनारस म दिय गए एक विशेष निमत्रण के फलस्वरूप था। वह बापू को कुछ ऐस श्लोक सुनायेंगे जिनकी रचना उन्होंने जेल मे की थी और जिन्हें उनस सुनने की बापू ने इच्छा प्रकट की थी। बापू न उपवास काल म रामायण सुनने की भी अभिलाषा व्यक्त की है। पाठ विनोबा करेंगे।

आज उपवास का पहला दिन है, इसलिए आज का कार्यक्रम यथापूर्व रहा। कल से उनका उपवासकालीन प्रोग्राम चलेगा।

आपका

चद्रशकर

६३

गोपनीय

सत्याग्रह-आश्रम

वर्धा

८ अगस्त, १९३४

प्रिय घनश्यामदासजी

प्यारेलाल आपकी ले रहे हैं जिसके वह अधिकारी हैं। और मैं आज की डाक एक सक्षिप्त-से सूचना पत्र क बगर जान नही दना चाहता। सदैव की भाति इस बार भी बापू ने आशकाओ को झुठला दिया है और प्रति घण्टे वह अधिकाधिक शक्ति सग्रह कर रहे हैं। कल थोडा थोडा करके कई बार सोये और

दिन डूबने के समय उन्हें खासी बधी हुई टट्टी आई। बनारस म स्वास्थ्य बिगडने के बाद पहली बार। इसके बाद उन्हें बडी अच्छी गहरी नीद आई, जिसके कारण प्रात कालीन प्राथना के समय वह बिलकुल तरोताजा थ। सध्याकालीन प्राथना के समय उन्होंने बारजे पर ले जाय जान की हठ की पर मैंने उन्हें समझा-बुझा कर राजी कर लिया कि वह बिछौना न छोडें। उनकी चारपाई दरवाजे म सटाकर रख दी गई जिससे लोग प्राथना के आरम्भ और अत म उनके दशन कर सकें।

उपवास ठीक समय पर ही आया। मैं तो कहूगा कि उन्ह उसकी बेहद जरूरत थी, भले ही मेरे कथन का गलत अथ लगाया जाय। वह इधर बहुत दिनो से अपनी मनोव्यथा को दबा रह थे। इस उपवास क द्वारा उसका इतना सुविधा जनक और स्वस्थ निकास हो गया, सो अच्छा ही हुआ। कांग्रेस म व्याप्त भ्रष्टाचार तथा सब दिशाओ म नियत्रण म शिथिलता से उन्ह घोर वेदना हो रही थी और हम सब को शुक्र मनाना चाहिए कि उन्होंने अपेक्षाकृत अधिक कठोर प्रायश्चित्त की नही ठानी। अपवित्रता के क्षीण-से क्षीण लक्षण मात्र से उनकी आत्मा कितनी सतप्त हो उठती है उसका एक उदाहरण दना प्रासगिक होगा। क्रानिकल के प्रथम पष्ठ पर सर रमणभाई की कन्या विनोदिनी के भौंड विवाह का वत्त छपा है। वह सुशिक्षित तरुणी है और काफी होनहार है पर इस विवाह म फस गइ। 'कितनी बेहूदगी की बात है'—उनके मुह से निकल पडा और जब डा० लोग उनकी परीक्षा करने आय तो वह बिलकुल खामोश रहे। पर सारे दिन यही चीज उन्ह व्याकुल किय रही और अत म रात को उन्होंने कह ही डाला वह अपने आपको और अपन माता पिता को इस हद तक कस भुला बठी? कितना दु खद विषय है। उस बेचारी स्त्री के मन पर क्या बीतगी, जो अपन आपको अमरिका म शिक्षित नारी का सग करने को इस प्रकार विवश हुई है! और कसी बढगी पसद है! मैं तो इसम अच्छाइ की कोई भी बात नही देख पाता। हम सब किस दिशा म भटके जा रहे है? हमारे तरुण समाज ने पश्चिम स यही शिक्षा ग्रहण की है कि अपन आवग का अनुसरण करो।' मैंने एगिल्स की पुस्तक अभी समाप्त की है (उन्होंने यह पुस्तक ७ तारीख की सध्या को समाप्त की थी और कोल की पुस्तक को हाथ लगाया था।) वे लोग उत्पादन के साधन जन साधारण के सुपुर्द करने के हामी है। पर जन साधारण के सुपुर्द किस तरह? क्या वह इसके लिए तयार है? उन्हे शिक्षित और सगठित करने के लिए कितन समय की जरूरत है? क्या उन्ह शिक्षा की जरूरत नहीं है? समानता, समानता के चीत्कार ने हमारी बुद्धि हर ली है। समानता है कहा?

क्या ज्ञान और अज्ञान में कोई अन्तर नहीं है ? प्रलयकाल तक अन्तर कायम रहेगा और यदि लोग अज्ञान के अन्धकार में पड़े रहे तो शक्ति और शस्त्रास्त्र से लैस होने पर वे अपना विनाश स्वयं कर डालेंगे। क्योंकि उन्हें न शक्ति का उपयोग आता है, न शस्त्रास्त्र का। रूस का कायाकल्प अभी पूरा नहीं हुआ है। वहां की वर्तमान सत्ता विशुद्ध पाशविक बल पर टिकी हुई है। चारों ओर भयंकर प्रतिक्रिया दिखाई दे रही है। हमारा तरुण समाज यह नहीं देखता कि जनसाधारण की सहायता करने की धुन में हम उसे और भी अधिक दुखी बना देंगे और पहले से कहीं अधिक दुख के गढ्ढे में उतार देंगे। सारी समस्याओं का एकमात्र हल वर्णाश्रम धर्म के पालन में निहित था। पर हमने उसका विकास नहीं किया हमने उसका विकास रोक दिया। परिणामतः अब वह हमारे लिए असह्य भार बन कर रह गया है। कोई अन्य ऐसी संस्था कहां है जिसके द्वारा विभिन्न प्रकार की रुचियों की तुष्टि और विभिन्न प्रकार की बौद्धिक और शारीरिक दोनों का वांछनीय उपयोग करने की व्यवस्था हो।'

बापू इसी प्रकार बोलते रहते पर मैंने उन्हें रोक दिया। उन्होंने असंतोषपूर्वक कहा, 'पर मैं चुप कैसे रह सकता हूं ?" मैं बोला "आपको डाक्टरों के साथ न्याय करना चाहिए।' बापू ने तड़ाक से उत्तर दिया, डाक्टरों को क्या मालूम ? मुझे विश्राम और नींद की जरूरत है वही मेरे भोजन हैं। मैं पहले से अधिक शक्ति महसूस कर रहा हूं। यदि इस उपवास का अंत होते-होते पहले से अधिक तरो-ताजा और तरुण हो जाऊं, तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा। मैं जब उड़ीसा में रहा मेरा स्वास्थ्य अव्वल दर्जे का रहा, पर बाद के कार्यक्रमों ने दौरे की खूबी को नष्ट कर दिया। फिर तो दौरा मशीन की तरह चलने लगा और उससे मुझे ऐसी पीड़ा होने लगी, जिसका अंत ही दिखाई नहीं देता था। तुम्हें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि मुझे पिछले नौ महीने से बाकी चले आ रहे विश्राम और नींद को पूरा करना है। तुम खुद देख लोगे कि यह उपवास वरदानस्वरूप सिद्ध होगा।

क्या कुछ और अधिक कहने के लिए बाकी रह जाता है ?

आपका

महादेव

६४

गोपनीय

वर्धा १० अगस्त, १९३४

बापू की अवस्था बराबर संतोषप्रद चल रही है। चिंता की केवल एक बात रह जाती है—मूत्र में पर्याप्त मात्रा में एसीटोन। पर उपवास के चौथे दिन उसकी मौजूदगी अस्वाभाविक नहीं है। साधारणतया उनकी दशा अच्छी-खासी है। वह बीच बीच में देर तक सोते रहे और जब डाक्टर लोग तीसरे पहर साढ़े तीन बजे उन्हें देखने आये तो वह सो रहे थे। उन्होंने उन्हें जगाया नहीं। जब साढ़े छह बजे वह खुद ही जागे तो डाक्टरों को नमस्कार करने के लिए शय्या पर उठकर बैठ गये। ओठों पर मुस्कुराहट थी। डाक्टरों ने पूछा, "आप उनींदे हो रहे हैं क्या?" बापू ने उत्तर दिया 'बिलकुल नहीं। पिछली नींद पूरी करनी है, सो आराम के साथ सो रहा हूं।' उनके मूत्र की तत्काल परीक्षा की गई और उसमें काफी ऐसीटोन मिला, पर उन्होंने आश्वासन दिया कि चौथे दिन ऐसा होना अस्वाभाविक नहीं है। 'मैं अपनी शक्ति असाधारणतया अच्छी तरह बनाये हुए हूं।' उनके शक्ति के संचित भंडार ने डाक्टरों को चकित कर दिया। ऐसीटोन की मौजूदगी ने रक्तचाप को अभी तक प्रभावित नहीं किया है। रक्तचाप १५५/९५ है। नाड़ी ६८ तापमान ९७, और वजन ९७ पौंड अर्थात उपवास के चौथे दिन ५ पौंड का ह्रास। यह क्षति कुछ अधिक नहीं है। उनका कण्ठ-स्वर स्वाभाविक है। वह शय्या पर कोई सहारा या सहायता लिये बगैर ही उठकर बैठ जाते हैं। पर अब डाक्टरों ने सलाह दी है कि शरीर से कोई काम न लें। बापू ने उनकी सलाह मान ली है। आज उन्होंने अधिक नहीं पढ़ा पर समाचार-पत्रों पर नजर डालने की हठ की। उन्होंने बिनोदिनी द्वारा दी गई प्रेस मुलाकात पर नजर दौड़ाई और बोले 'यह तो विवाह से अधिक जघन्य कार्य हुआ। जो चाहता है उसे लिखे।" डाक्टरों के विदा होते ही वह फिर सो गये।

ऐसीटोन की मौजूदगी ने मुझे कुछ क्षणों के लिए चिंता में डाल दिया, पर उनकी शारीरिक दशा इतनी संतोषप्रद प्रतीत हुई कि मैंने बाहर की सहायता लेना जरूरी नहीं समझा। यदि बापू को पता चलता कि मैं ऐसी मूर्खता कर बैठा हूं तो खुद उन्हें बड़ा सदमा पहुंचता। पर मैंने सिविलराजन डाक्टर शाहने से इस बारे में बातचीत की और कहा कि ज्यों ही उन्हें ऐसा लगे कि चिंता का कारण

उपस्थित हो गया है, मुझे स्पष्ट रूप से बता दें। वह तो चिंतित दिखाई नहीं देता। हम भी बेफिक्र हैं। तीन ही दिन तो रह गये हैं। फिर तो चैन ही चैन है।

आपका,
महादेव

६५

वर्धा
११ अगस्त, १९३४

मेरा गत संध्या का बुलेटिन डाक द्वारा नहीं जा सका, इसका मुझे दुःख है। बारिश जोर की पड रही थी, जिससे सारा बन्दोबस्त गडबड हो गया। आज के बुलेटिन के साथ कल का बुलेटिन भी भेज रहा हूं।

जैसा कि मैं अपने पिछले पत्र में बता चुका हूं, ऐसीटोन ने हममें से कुछ को सचमुच व्यग्र कर दिया था, और कई एक ने तो डा० विधान अथवा डा० जीवराज को तार द्वारा बुला भेजने का सुझाव दिया। पर मुझे जरा भी चिंता नहीं हुई, क्योंकि बापू के पिछले उपवासों के दौरान उनकी शारीरिक अवस्था कैसी रही थी इसका मुझे ज्ञान है। आज तीसरे पहर तीन बजे बापू की अवस्था बहुत अच्छी है। कल कुल मिलाकर कोई १४ घण्टे सोये होंगे, आज भी खूब सोये। मेरी दृढ धारणा है कि पिछले पांच महीनों के दो महीनों में बापू जिस मानसिक व्याकुलता को संचित करते आ रहे थे, उससे निवृत्त होने तथा पिछले नौ महीने से बाकी चली आ रही नींद पूरी करने के लिए जो कुछ भी उपक्रम किये जाते उनमें उपवास सबसे कम कष्टदायक सिद्ध होगा। जब मैंने बापू को बताया कि कुछ मित्र ऐसीटोन की मौजूदगी से इतने व्यग्र हो उठे हैं कि बाहर की सहायता लेने का दबाव डाल रहे हैं तो वह हंसकर बोले "कितनी मूर्खता है!" आज उपवास का पांचवा दिन है और उनकी शारीरिक अवस्था बिलकुल संतोषप्रद है। यद्यपि स्थानीय अस्पताल में मूत्र के परिमाण सम्बन्धी विश्लेषण के साधनों का अभाव है और उसमें एसीटोन के ठीक ठीक परिमाण का पता लगाना संभव नहीं है, तथापि उनके रक्तचाप की एकरूपता से हमारा समाधान हुआ कि ऐसीटोन भी परिमाण में इतना अधिक नहीं होगा कि उसे लेकर चिंता की जाए।

ऐसीटोन की मात्रा को कम से कम रखने की पूरी चेष्टा की जा रही है। उन्होंने पिछले दो दिना से एनीमा म जो ४० से ५० ग्रेन तक सोडा दिया जाता है उसके अतिरिक्त उन्होंने ७५ ग्रेन सोडा और लिया है। मुझे यह कहते प्रसन्नता होती है कि उन्हें उबकाई बिलकुल नही आती और वह जो पानी पीते हैं उसमे सोडे की मात्रा बढ़ाने म उन्हें कोई कठिनाई नही होती। आज उन्होंने ३० औंस पानी लिया जिसम इतने ही ग्रेन साडा था।

नाडी और हृदय की गति पूणतया सतोषप्रद है और मुझे इसमे तनिक भी सदेह नही है कि वह यह उपवास पूरा करके पहले से अधिक स्फूर्ति और नयी शक्ति के साथ शय्या छोडेंगे।

आपका,
महादेव

६६

वर्धा,
१४ अगस्त, १६३४

प्रिय घनश्यामदासजी

ज्यो ज्यो उपवास की समाप्ति की वेला निकट आती गई, बापू की बेचनी बढती गई। यह अप्रत्याशित था क्योंकि कल की मूत्र परीक्षा म पहले की अपेक्षा ऐसीटोन कम पाया गया था। सोडा अधिक मात्रा मे लिया गया पर उबकाइया आती ही रही जिनके कारण बापू को रात भर नीद नही आई। आज सुबह उनकी आवाज लगभग नही निकलती थी। सबने ईश्वर को धन्यवाद दिया कि यह अग्नि परीक्षा समाप्त हो गई। रक्तचाप मे असाधारण वृद्धि का एक कारण उस अवसर की उत्तेजना रही होगी यद्यपि पूरी शाति बरतने की भरसक चेष्टा की गई थी। इस बार "वैष्णवजन तो तेने कहिये" का गान नही हुआ, क्योंकि इस अवसर पर बापू बालकृष्ण के कण्ठ से श्लोक सुनना चाहते थे, और बालकृष्ण इन श्लोको के गायन मे अपना पूरा हृदय उडेलकर रख देते हैं। विनोबा ने सत तुकाराम के स्तुति और प्रार्थना के ऐसे मिश्रित अभग सुनाये जिनम तुकाराम ने अपने जीवन का लक्ष्य सफल होते देख सन्यासी-सुलभ हर्षातिरेक व्यक्त

किया है। डा० दत्त ईसाई मित्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। अमतुस्सलाम ने कुरान की कुछ आयतें पढ़ीं। बापू की अभिलाषा पूरी करने के लिए लोकनायक अणे ने स्वरचित श्लोकों का पाठ किया। श्रीमती जानकीदेवी को बापू को मधु और गर्म जल का प्याला देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसे पीकर बापू में ताजगी आई। सौभाग्य से उन्होंने बोलने की चेष्टा नहीं की अन्यथा स्वास्थ्य बिगड़ने का भय था। पर प्रथम कलेवा करने के एक घण्टे के भीतर कई तार लिखा डाले। आध आध घण्टे बाद वह नीबू का रस और नारंगी का रस लेते रहे। तीसरे पहर उन्होंने कुछ अंगूर लिये। उन्होंने कोई दो घण्टे गहरी नींद ली। काई दो बजे तक उनमें इतना बल आ गया कि जवाहरलाल को एक पत्र बोलकर लिखाया। पर उन्हें शनैः शनैः यह सब करना है, और हम पूरे नियंत्रण से काम ले रहे हैं उपवास के दिनों में जो जो व्यक्ति शुश्रूषा का काम करने के लिए चुने गये थे, वे अगले चार दिनों तक यथापूर्व काम करते रहेंगे। डाक्टर भी रोज परीक्षा करते रहेंगे।

आपका,
महादेव

६७

तार

वर्धा
१४ अगस्त १९३४

घनश्यामदास बिड़ला,
बिड़ला मिल्स,
दिल्ली

६८

१६ अगस्त, १९३४

प्रिय महादेव भाई,

साथ भेजी नकल बापू को दिखानी है। स्पष्टीकरण की जरूरत नही है, पत्र अपने आपमे ही स्पष्ट है। मुझे यकीन है कि बोर्ड के अधिकांश सदस्य मेरा समर्थन करना चाहेंगे। कह नही सकता, मेरे लिए पण्डितजी (मालवीयजी) के विरोध मे खडा होना उचित होगा या नही। पर इस मामले मे मैं बापू की राय जानना चाहूंगा। मुझे लगभग पूरा यकीन है कि पण्डितजी मेरा त्यागपत्र मजूर नही करेंगे। इसके विपरीत सम्भव है वह अपना ही त्यागपत्र भेज दें। मेरा क्या कर्त्तव्य है? कृपा करके बापू से पूछो और मुझे लिखो।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेव भाई देसाई
मार्फत महात्मा गांधी,
वर्धा (मध्य प्रान्त)

६९

वर्धा
१८-८-१९३४

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका १६ तारीख का पत्र मिला। बापू ने आपका पडितजी को लिखा पत्र पढा। बापूजी बोले भाषा अटपटी सी तो है, पर है आवश्यक। आपके यह कहने का, 'कह नही सकता मेरे लिए पडितजी के विरोध मे खडा होना उचित होगा या नही' क्या अभिप्राय है सो समझ मे नही आया। आप तो उनके विरोध मे खडे ही हैं। इस्तीफा पडितजी को नही बोर्ड को मजूर करना है और यदि उसके अधिकांश सदस्य आपका साथ देना चाहेंगे, तो आपकी यह आशका कि

पडितजी स्वय अपना इस्तीफा भेज दें, मूत रूप धारण कर लेगी। बापू का कहना है कि वैसी अवस्था म या तो आपको या बोड को पडितजी से इस्तीफा वापस लेने का अनुरोध करना चाहिए और यह दलील पेश करनी चाहिए कि कोई विशिष्ट नीति जो उन्ह ग्राह्य न हो बोड के बहुमत को लेकर बरती जा रही है। यह कोई एसा विषय नही है, जिस अतरात्मा का प्रश्न बनाकर तूल दिया जाय। पर यदि पडितजी हठ पकडें, तो बोड को उनका इस्तीफा मजूर कर लेना चाहिए।

बापू तेजी से पुन शक्ति प्राप्त कर रहे हैं। रक्तचाप सामान्य है, हृदय अधिक मजबूत है और नब्ज उपवास स पहले या उसक दौरान की अपक्षा कम तजी स चलती है। उनका कम-से कम एक महीने तक वर्धा छाडन का विचार नही है।

मैं बम्बई से आज ही लौटा हू। वहा जमनालालजी के आपरेशन के सिलसिले म जानकीबन के साथ गया था। उन्होंने आपरशन को असाधारण सतोषप्रद रूप से सहन किया। ऑपरेशन हो गया, अच्छा हुआ। अब वह उस व्याधि से छूट जायेंगे, जिसके कारण एक बार उनके प्राण सकट म पड गये थे।

आशा है, आप कुशलपूवक होंगे।

आपका,
महादेव

७०

१६ सितम्बर, १६३४

प्रिय महादव भाई,

पुरुषोत्तमदास (सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास) कल शिमला से वापस आए हैं। वहा उन्होने वाइसराय से भेंट की। मुझे मालूम हुआ है कि वाइसराय ने सरसर तौर पर पुरुषोत्तमदास से पूछा कि क्या उनका यह खयाल है कि बापू सचमुच काग्रेस छोड रहे हैं। पुरुषोत्तमदास ने उत्तर दिया, 'छोड भी सकते हैं। इस पर वाइसराय न कहा उनके काग्रेस से निकलते ही मैं उन्ह बुला भेजूगा।" पुरुषोत्तमदास बोले, 'जब काग्रेस उनके पीछे थी, तब तो आपने उनसे भेंट की नही, अब काग्रेस के समथन के अभाव म उनसे मिलने से क्या लाभ होगा ? वाइसराय ने प्रत्युत्तर दिया पर मैं उनस मिलना चाहता हू, उनके अनुयायियो स नहीं।' इस पर पुरुषोत्तमदास बोले, पर आप उनसे काग्रेस के नेता के रूप म न सही व्यक्तिगत रूप से तो मिल ही सकते थे।" वाइसराय ने यह कहकर इस प्रसग को समाप्त किया कि "मिस्टर गाधी पर उनक अनुयायियो का बेहद

प्रभाव है और वे लोग ठीक ढग के आदमी नहीं हैं।" आशा है बापू को यह वार्तालाप कुछ रोचक लगेगा।

वक्तव्य बहुत बढिया रहा। मेरी अपनी धारणा है कि बापू काग्रेस में अधिक दिन तक नहीं टिक पायेंगे। बापू ने जो धमकी दी है कि यदि उनके सशोधन न अपनाये गये तो वह काग्रेस का परित्याग कर देंगे उसे ध्यान में रखकर अपना मत देने के अवसर पर कार्यकारिणी के सदस्य निष्पक्षता से काम लेंगे। पर मेरा अपना विश्वास है कि यह तो एक आत्मप्रवचनावाली बात होगी। सदस्यगण सोचेंगे कुछ और तथा मत देंगे कुछ दूसरी ही तरह का। अन्तिम निर्णय तो बापू ही करेंगे।

मैं ग्वालियर जा रहा हूं। शायद कल ही रवाना हो जाऊ।

आशा है, तुम सकुशल होगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मार्फत महात्मा गाधी
वर्धा।

७१

वर्धा
२२-९ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका १९ तारीख का पत्र मिल गया था। जब मैंने वह बापू को पढकर सुनाया तो उन्होंने उसे तुरत फाड फेंकने को कहा कि कहानी फैल न जाए। मैंने पूछा कि इस बारे में आपका क्या विचार है ? बापू बोले 'हो सकता है कि वे (अर्थात वाइसराय) मुझसे वैसा ही कराने के लिए—अर्थात अपने अनुयायियो से पीछा छुडाने के लिए व्याजस्तुति कर रहे हो और उनका यह अभिप्राय रहा हो कि वे अब मुझसे खुशी-खुशी मिल सकते हैं। पर उन्हें यह पता नहीं है कि अपने अनुयायियो से पीछा छुडाना तो दूर, मैं उनसे अपना सम्पर्क तोडने की कल्पना

तो नहीं कर सकता। पर यदि उनकी ओर से इस ढंग की कोई बात कही गई, तो मैं उसकी याद जानता हूं।' इसके बाद वह यह उठे कि यह भी सम्भव है, उक्त मित्र (अर्थात सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास) ने गम्भीरता से काम न लिया हो इसलिए इस सारे किस्से को बाद महत्त्व न देना ही उचित है। पर यदि यह वार्ता गम्भीरता के वातावरण में ही हुई हो तो इस प्रकार वाइसराय ने आग कर अपनी ओर से नया उदाहरण पेश किया है। आपने वह लैटिन कहावत सुनी होगी 'यूनानियों के तोहफे भी भयावह हैं।' मैंने बापू को उसकी याद दिलाई तो वह खिल खिलाकर हँस पड़े।

अपने ऑपरेशन के बारे में आपकी चुप्पी का यही अर्थ हो सकता है कि आप उसे टालने में एक बार फिर सफल हुए हैं। क्या? बापू जानना चाहते हैं कि आपने ऑपरेशन कराये बगैर बम्बई छोड़ा क्या?

बापू की यह धारणा नहीं है कि अगला मत निर्णय निष्पक्ष होगा। वास्तव में यह बात अच्छी तरह समझकर ही उन्होंने कांग्रेस से निकलने का निर्णय लिया था। हममें से कुछ को यह बिलकुल अच्छा नहीं लगा कि यह व्यथा डेढ़ महीने तक जारी रहेगी पर अब मैं देख रहा हूं कि जो कुछ हुआ है अच्छे के लिए ही हुआ है। इन टिप्पणियों और आलोचनाओं से—जो पर्दे के पीछे और खुल्लम-खुल्ला हो रही हैं जन साधारण को आज को असंदिग्ध रूप से पता लग जायेगा और आप खातिर जमा रखिये कि अगली कांग्रेस में निर्णय बापू के ही पक्ष में हुआ तो भी वह धोखे में नहीं आयेंगे।

लन्दन के पत्रों ने जैसी चुप्पी साध रखी है मैं उसे देखकर चकित रह गया हूं। अब तक जो प्रखर आलोचना हुई है वह दो विपरीत दिशाओं से आई है। एक विरोधी शिविर से अर्थात बम्बई के टाइम्स आफ इन्डिया से और दूसरी मित्र पक्ष की ओर से यानी नेशनल काल से। आपकी असम्य मित्रों से भेंट मुलाकात होती रहती होगी। आप बापू को उनके दृष्टिकोण से अवगत करा सकें तो बड़ी बात हो। वयोवृद्ध एस० पी० शिवस्वामी अय्यर कहते हैं 'बापू का यह कार्य मरणासन्न व्यक्ति की अंतिम चीत्कार है।' उदार दल की ओर से जो सम्मतियां व्यक्त हुई हैं यह सम्मति उनकी चरम सीमा है।

आपने उन मारवाड़ी नाच-कन्याओं के बारे में अपना अभिमत प्रकट नहीं किया। अपने रात दिन के बोझ भर तथा शोर गुल में किसी दिन पीछा छुड़ाकर कुछ समय के लिए आपके पास रहकर शान्ति और मनोरंजन के वातावरण का आनन्द ले सकूं तो कितना अच्छा हो!

सप्रेम,
महादेव

७२

२४ सितम्बर १९३४

प्रिय महादेव भाइ,

तुम्हारी लम्बी चिट्ठी मिली—पढन म बडा आनन्द आया।

सबस पहले मेर आपरेशन के बारे म। तुमन यह कैसे समझ लिया कि मैंने आपरेशन कराना टाल दिया है। मैंन जमनालालजी को वचन दे दिया है कि १५ अक्तूबर के बाद मैं अपन आपको उनके हवाले कर दूगा, वह चाहे जहा हा। अधिक सम्भावना यह है कि वह कलकत्ते का चुनें क्याकि न जान क्यो मुझे बबई विशेप अच्छा नही लगा है। मेर लिए दिल्ली सबस उपयुक्त स्थान रहगा, क्योकि वहा शाति है। पर सब कुछ जमनालालजी पर निभर है। पर नाक के आपरेशन के अतिरिक्त मुझे तुरत ही एक अन्य प्रकार का आपरेशन कराना है बवासीर का आपरेशन। पिछले ६ महीने से खून बह रहा है और अब आपरेशन करा डालना जरूरी लगने लगा है। बहुत सम्भव है कि मस्से कट जायेंगे तो हाजमा भी सुधर जाय। मैंन बम्बई म डाक्टरा को दिखाया था और अब १५ अक्तूबर के बाद यह आपरेशन दिल्ली म करा डालन की सोच रहा हू।

तुमन मुझसे कहा है कि मैं बापू के वक्तव्य के बारे म लोगा की आलोचनाए इकट्ठी करके तुम्हे उनस अवगत कराऊ। सच्ची बात तो यह है कि मुझे अभी तक एक भी ऐसा आदमी नहीं मिला है जो वक्तव्य के पीछे निहित बापू की हार्दिक भावना को समझन म समर्थ हुआ हो। लालूभाइ बोले बडा सुन्दर वक्तव्य है, और वह तुम्हे इस बाबत चिट्ठी भी लिखनवाले है। पर मैं यह नही मान सकता कि वह उसकी विशेपता का हृदयगम कर पाये हैं। पुरुपोत्तमदास के हिस्से में कल्पना शक्ति कुछ अधिक नही आइ है इसलिए वक्तव्य म निहित मम को समझ पाना उनके बूते के बाहर है। उन्हाने तो केवल इतना ही कहा क्या गाधीजी का दो वष पहले इस भष्टाचार की जानकारी नहीं थी ? यदि थी तो यह निणय लेने म उन्होंन इतनी देर क्यो की ? पर ऐसे आदमी के साथ कौन माथापच्ची करे जिसम दाशनिक पहलू की गहराई म पठने की क्षमता का नितान्त अभाव हो ? पर मोटे तौर से यह कहा जा सकता है कि जिन लोगा को बापू का काग्रेस त्यागना अच्छा लग रहा है और जिन्हें बुरा लग रहा है सब अपने अपने उद्देश्या से प्रेरणा ग्रहण कर रहे हैं। उदार दलवाला को यह अच्छा इसलिए लग रहा है कि इमस काग्रेस की प्रतिष्ठा को ठेस पहुचेगी। समाजवादियो को भी बापू का काग्रेस

छाटना रुचिकर लग रहा है क्योंकि तब उनके लिए मैदान साफ हो जायेगा। पार्लमेंटरी बोर्ड को यह नापसन्द है क्योंकि उससे उसकी क्षति होगी। पर इन चार दृष्टिकोणों के बावजूद जनसाधारण की यह धारणा-सी बन गई है कि बापू को समझना असम्भवप्राय है। मेरी अपनी यह धारणा है कि सबको यह लगन लगा है कि बापू इतने महान् हैं कि उन्हें ठीक ठीक समझा ही नहीं जा सकता। ठीक जिस प्रकार हम सूर्य और चन्द्रमा के दर्शन करते हैं और लाभान्वित होते हैं पर यह नहीं जानते कि वे वास्तव में हैं क्या उसी तरह संसार बापू से लाभान्वित तो होता है, पर वह क्या हैं यह समझना उसकी सामर्थ्य के बाहर है। यदि संसार सूर्य और चन्द्रमा की कार्यशीलता के बारे में माथापच्ची करना अनावश्यक समझता है, और उनके द्वारा प्रदत्त प्रकाश से ही संतुष्ट रहता है तो वह बापू के व्यक्तित्व के जो सूर्य और चन्द्रमा की भांति ही उसके लिए बोधगम्य नहीं है पर जिसके द्वारा वह उतना ही लाभान्वित हो रहा है दार्शनिक पहलू को लेकर क्यों चिंतित हो? जन-साधारण सूर्य और चन्द्रमा की देवताओं के रूप में उपासना करता है। वह बापू की उपासना भी एक संत के रूप में करता है पर बुद्धिवादी लोग (मैं तो नहीं समझता कि उनमें लेशमात्र भी बुद्धि है) न तो सूर्य और चन्द्रमा की दैविक कार्यशीलता में आस्था रखते हैं न बापू के संत सुलभ आचरण में। मुझे तो ऐसा लगता है कि वह उत्तरोत्तर संसारी जीवों की पहुंच के परे जा रहे हैं। सम्भवत यही कारण है कि उनके वक्तव्य पर अब तक जो मित्रतापूर्ण एवं शत्रुतापूर्ण टीका टिप्पणियां हुई हैं उनमें उसकी गहराई में पैठने की क्षमता का अभाव दिखाई दिया है।

मैंने देवदास के द्वारा तुम्हारे पास संदेसा भेजा था कि मुझे इस बात का दुःख है कि मैं तुम्हें मारवाड़ी भाषा में लिखी पुस्तक पढ़कर नहीं सुना सका। पर मुझे उसकी भाषा का इतना चाव है कि मैंने मन ही मन संकल्प कर लिया है कि एक न एक दिन तुम्हें वह पढ़कर अवश्य सुनाऊंगा और मुझे यकीन है कि तुम्हें भी वह उतनी ही अच्छी लगेगी।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
मार्फत महात्मा गांधी
वर्धा (मध्य प्रान्त)

७३

फोल्सहिल,
डाकखाना फ्रैंकलिन,
पूव ग्रिक्वालड
२५ सितम्बर, १६३४

महात्मा गाधी,
आश्रम वर्धा
(मध्य प्रान्त) भारत

महोदय

श्री रह्या जो स ने आपके अनुरोध पर भारत मे भेडो से सबधित आपकी कठिनाइया की बाबत जो पत्र लिखा था वह मिल गया है। पत्र २ सितम्बर को लिखा गया था और यहा १५ सितम्बर को पहुचा। मैंने लिखन म देर की, इसका कारण यह था कि मैं चाहता था कि डबन स्थित मेरे मित्र श्री डयूला डाट्रीज इस विषय पर कुवर से मिलकर इस बार म बातचीत करें। उनका उत्तर नही आया है, सम्भव है वह कही बाहर हा।

हम लोग इस विषय पर सोच विचार कर रहे हैं और हम चाहगे कि आप निम्नलिखित मुद्दा पर प्रकाश डालें

१ यदि दूध की जरूरत हो तो यह सलाह होगी कि आपकी देशी बकरिया का सकरण दूधवाले बकरा से कराया जाए। उससे दूध के अभाव की पूर्ति हो जायेगी। यहा हमने दूध के लिए भेडा के उपयाग की बात कभी नही सुनी क्योकि भडें अपने ममना के तायक ही दूध दे पाती हैं।

२ यदि माम की जरूरत हा तो हम कहग कि आप अपनी देशी भेडा का सकरण एंग वन्यिा किस्म के अफ्रिकाडर दुम्ब स, जिस यहा रोण्ड रिब अफ्रिका न्डर कहा जाता है करायें। आपको अपन उद्देश्य म सफलता मिलेगी।

३ यदि बढिया किस्म की ऊन की दरकार हा ता यह प्रश्न उठता है कि क्या एक अच्छा दुम्बा आपके दश की जलवायु म रह सकता है या नही क्योकि इस किस्म की भडें खुश्क आबोहवा पसन्द करती हैं और देर तक टिकनेवाले गम और बरसाती मौसम म बीमार हो जाती हैं।

४ हम यह भी जानना चाहगे कि क्या भारत म कृषि विभाग जैसा कोई

विभाग है। यदि हो तो आप उस अपना अभीष्ट बताइए और देखिए वह विभाग क्या राय देता है। आपका अभीष्ट यही है कि अपने देश की नस्ल सुधरे।

यदि आप यह जरूरी समझें कि हम यहा से किसी को भेजें जो वहा की स्थिति का अध्ययन करे तो मैं समझता हू, हम ऐसे किसी विश्वासी आदमी को भेज सकते हैं। मैं समझता हू, उसे मार्ग-व्यय तथा थोडे-बहुत वेतन की जरूरत होगी।

इवन से समाचार मिलते ही तथा सम्भव है कुवर के विचार प्राप्त होते ही मैं आपको सूचित करूगा।

मैं हू महोदय,

आपका
आर० ए० रिचर्डसन

७४

वर्धा
२९ ९-३४

प्रिय घनश्यामदासजी,

बापू के वक्तव्य पर आपका सुन्दर पत्र मिला। यह देखकर मुझे आनद हुआ कि बापू के लिए मैं जिस उपमा का बहुधा प्रयोग किया करता था ठीक वही उपमा आपने दी है। मैं एक और उपमा दूगा—वह आकाश मे इतनी ऊची उडान भरते हैं पर उनके पाव सदा पृथ्वी पर टिके रहते हैं यही कारण है कि हम उनके साथ मानवीय सम्पर्क बनाये रखने मे समर्थ होते है परसाथ ही हमे इसका भान रहता है कि हम उनकी जैसी उडान नही भर सकते।

पर अब काम-काज की बात। दिनकर पण्ड्या[1] काम शुरू करने को तैयार है। कृपया बापू को बताइए कि क्या काम है आप उन्हें कितना देंगे आदि। बापू का कहना है कि फिलहाल वह जितना मागें देना मजूर कर लिया जाय औरबाद मे देखा जाय कि वह कैसा काम करते हैं। यदि वह कसौटी पर ठीक न उतरें तो हमे उन्हें विदा करने मे कोई सकोच नही होना चाहिए। आपका उत्तर मिलते ही मैं दिनकर को बता दूगा।

अगाथा का ४३ पौंड का बिल भुगतान को पडा है। उसका पत्र इस समय

[1] दिनकर को पिलानी के डेयरी फार्म के लिए नियुक्त किया गया था।

मेरे पास नहा है। ज्यो ही वह पत्र खोजने म सफल हुआ, उसकी दी हुई तफ्सील आपके पास भेज दूगा। पर मुझे जहा तक याद पडता है, वह केवल रेल भाड म खच हुई रकम है। क्या आप इस रकम का चेक सीधे उसके पास भेजने की कृपा करेंगे ?

यह जानकर प्रसन्नता हुइ कि आप आपरेशन कराने जा रहे हैं। बापू को लगने लगा था कि आप टाल मटोल कर रहे हैं।

सप्रेम,
महादेव

७५

४ अक्तूबर १९३४

प्रिय महादव भाई

मैं कुछ दिनो के लिए पिलानी गया था और अपने साथ ठक्कर बापा को भी ल गया था। हम लाग परसा ही लौटे और आकर दखा कि पण्डितजी (मालवीय जी) मेरी बाट जोह रहे है। बातचीत काफी देर तक चली पर पण्डितजी को ममझ पाना आसान काम नही है। वह काग्रेस के साथ सुलह करने के मामले म उत्सुकता तो काफी दिखाते है पर उनके पास कोई निजी सुझाव नही है। बापू तथा नाकनायक अणे के बीच जो सिद्धान्त निश्चित हुआ है वह उन्ह पसन्द है। पर जब मैंने कहा कि किसी निर्णायक की सहायता के बिना उम्मीदवारो के गुण दोषा के बारे म अन्तिम निणय पर पहुचना सम्भव नही होगा तो उन्होने गोल मटोल उत्तर दिया। उन्ह अब भी आशा है कि कोइ न कोई समझौता अवश्य हो जायेगा। आसफअली के बारे म अपनी विरोधी भावना पर उन्होंने निश्चित उत्तर नही दिया। जब मने उनस पूछा कि वह ऐसे उम्मीदवारो का समथन क्या करत है, जिनके साथ उनका कोई सामजस्य नही है तो वह कोई कारण नही बता पाये। उन्हान स्वीकार किया कि वह अधिक-से अधिक एक दजन उम्मीदवारो के लिए सफलता प्राप्त कर सकेंगे। उनका चेहरा पीला पड गया है और वह थके माद स दिखाइ पडत हैं। मुझे यह सोचकर बडा दुख हुआ कि वह व्यथ ही इतना कठोर परिश्रम कर रहे है।

मैं अपने बवासीर का आपरेशन कराना चाहता था पर डा० जोशी इसके अधिक पक्ष में नहीं हैं। मैंने उनसे कहा कि डा० विधान १५ तारीख के आस पास दिल्ली से होकर गुजरेंगे उनसे बात कर लें और तब अन्तिम निर्णय करें। उन्होंने यह स्वीकार किया। रही नाक के आपरेशन की बात सो मैं जमनालालजी का इन्तजार कर रहा हूं। उन्होंने लिखा है कि उन्हें इस महीने के अंत तक फुरसत नहीं मिलेगी।

बापू ने ठक्कर बापा को यह सुझाव लिख भेजा है कि मैं के रुपया गबन करने की बाबत डा० विधान को लिखूं। हमारे अन्य अनेक नेताओं की तरह डा० विधान भी हद दर्जे के लापरवाह आदमी हैं। देवीप्रसादजी (खेतान) भी इस दोष से बरी नहीं किये जा सकते। पर शायद मैं भी वैसी ही गलती कर बैठता, क्योंकि यह गबन साधारण कोटि का गबन नहीं है। इस पत्र के साथ नत्थी नोट से देखोगे कि किस प्रकार अनेक जिला समितियों के नाम उधार खाते में रुपया नामे लिखता रहा और जब किसी पर विश्वास किया जाता है तो हिसाब किताब के मामले में उसकी ईमानदारी पर शक करने की गुंजाइश नहीं रहती। क्या बापू का खयाल है कि डा० विधान या देवीप्रसादजी अपनी जेब से रुपया देंगे क्योंकि एक अध्यक्ष है और दूसरा सेक्रेटरी? मैं ऐसा नहीं मानता कि रुपया अदा करने की नैतिक जिम्मेदारी उन पर आती है। [illegible] लापरवाही बरती बल्कि इस मामले में वे निर्ममता की हद तक पहुंचे हैं। पर मैं यह नहीं कह सकता कि किसी अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय और नामधारी अध्यक्ष के तत्वावधान में ऐसा गबन न हो पाता। इस घटना ने हमें चौकन्ना कर दिया है और अब हम रुपये पैसे के मामले में बड़ी सावधानी बरत रहे हैं पर अब भी इसकी कोई गारंटी नहीं कि हम भविष्य में धोखा नहीं खायेंगे।

बापू ने यह कुछ नहीं लिखा कि उन्हें दिनकरराव पण्ड्या [illegible] समाचार मिला या नहीं। यह भी लिखना मत भूलना कि [illegible] के बाद बापू का क्या प्रोग्राम है। तुम जानते हो कि उन्हें हरिजन सेवक संघ के प्रांतीय [illegible] की जांच पड़ताल करनी है इसलिए मैं जानना चाहूंगा कि [illegible] में उनके कहां होने की सम्भावना है। मेरा पूरे नवम्बर [illegible] में [illegible] सम्भव लगता है क्योंकि नाक के ऑपरेशन के बाद मैं यह स्थान [illegible] जाऊंगा। बापू को उनके इस वचन की भी याद दिला देना कि उद्योगशाला के [illegible] के बाद वह दिल्ली में ठहरेंगे। जमीन ले ली गई है हम वहां [illegible] करने से

पहले बापू क लिए एक कुटिया तयार कर देंगे। यदि वह सर्दिया के दो महीन दिल्ली म बिताने को राजी हो जायें, ता फिर क्या कहना !

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेव भाई
मार्फत महात्मा गाधी
वर्धा (मध्य प्रात)

पुनश्च

यह पत्र लिख चुकन के बाद तुम्हारा पत्र मिला। दिनकरराव पण्डया तुरत काम पर आ सकते हैं। जमीन हरिजन-सवक सघ के नाम कर दा गई है। उनक वेतन की बाबत मेरी धारणा थी कि बापू तय करेंगे, इसलिए मुझ इस बार मे कुछ नही कहना है। मैं जगाया का ४३ पौण्ड भेज रहा हू।

७६

४ १० ३८

प्रिय गाधीजी

जसाकि आपक वर्धा स लिखे ३० सितम्बर के पत्र स प्रकट है आपन तथा साबरमती आश्रम के टस्टिया न वहा की जमीन और भवन हरिजन सवा काय के निमित्त अपण करन की तत्परता व्यक्त करके बडी उदारता दिखाई है इसके लिए आप तथा आश्रम क ट्रस्टीगण आश्रम की भूमि और सारे भवन अस्पृश्य सवक मण्डल को सौंपन का तयार हैं। मुझे यह उदारतापूण प्रस्ताव स्वीकारने मे तनिक भी सकोच नहा ह और मुझ आशा है कि मण्डल अपने आपका उस विश्वास का पात्र सिद्ध करगा जा आपन उस प्रदान किया है। मैं केन्द्रीय वोड क सदस्या की सहमति प्राप्त होने तक न रवकर तुरत यह प्रस्ताव स्वीकार करता हू और मुझे पूरी आशा है कि व मेर काय का समथन करेंगे।

आपन अपन पत्र के दूसरे पर म जो चार सवा काय गिनाय हैं उन्हे मण्डल बराबर अपन ध्यान मे रखेगा। मुझे यह भी आशा है कि मण्डल इन चारो सवा कार्यों का हाथ म लेन म अधिक समय नही लगायेगा। श्री बुधाभाई, श्री जेठाभाई

तथा उन तीसरे सज्जन की (जिनका नाम शायद भगवानजी गांधी है) सेवाओं से लाभ उठाया जायगा, और मुझे पूरा भरोसा है कि ये तीनों सज्जन उपयोगी सहायक सिद्ध होंगे।

आपने अपने पत्र के तीसरे पैरे में सुझाव दिया है कि मण्डल पांच सदस्यों की एक समिति बना ले जिसे इस संख्या में वृद्धि करने का अधिकार रहे और जो ट्रस्ट को अपने हाथ में ले ले तथा जो निर्दिष्ट उद्देश्यों को पूरा करे। आपका सुझाव है कि मेरे तथा मण्डल के जनरल सेक्रेटरी के अलावा अहमदाबाद के तीन नागरिक उक्त समिति में लिये जायें। ये तीन सज्जन निःसंदेह आपकी सलाह से ही चुने जायेंगे। क्या मुझे यह कहने की अनुमति है कि प्रबंधकारिणी समिति के गठन का पूरा काम मण्डल पर ही छोड़ दिया जाये, क्योंकि ट्रस्ट का काम निभाने की सारी जिम्मेदारी मण्डल पर रहेगी? यदि वे तीन अहमदाबादी नागरिक इस मण्डल के केन्द्रीय बोर्ड के सदस्य हुए अथवा नामजद किये गए और साथ ही उन्हें ट्रस्ट की प्रबंधकारिणी समिति का सदस्य भी नियुक्त किया गया, तो उस समिति के सारे सदस्य मण्डल के सदस्य ही होंगे, न कि कुछ मण्डल के सदस्य तथा कुछ बाहर के लोग। पर यह एक मामूली-सा विषय है, जिस पर यदि आवश्यक लगा तो व्यक्तिगत बातचीत द्वारा निर्णय लिया जा सकता है।

इस सम्पत्ति को तथा उस पर खड़ी खेती और वृक्षों को हाथ में लेने में मण्डल को निस्संदेह कुछ समय लगेगा। इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि वहां जो लोग इस समय काम चला रहे हैं, उन्हें वह यथावत चलाते रहने को कह दिया जाय।

मैं आपकी उदारता के लिए एक बार फिर धन्यवाद देता हूं।

भवदीय,
घनश्यामदास बिड़ला
अध्यक्ष

महात्मा गांधी
वर्धा

७७

वर्धा
६ १० ३४

प्रिय घनश्यामदासजी

के बारे में आपका पत्र मिल गया था। काश मैं आपको इस विषय पर हुआ पत्र व्यवहार दिखा पाता। बापू ने बाबू को अत्यंत मर्मस्पर्शी पत्र लिखे हैं। बड़े दुःख की बात है पर मुकदमा चलाना ठीक नहीं रहेगा। यह स्पष्ट ही है कि या तो देवीप्रसादजी तथा मित्रों को मिलकर यह रकम पूरी कर देनी चाहिए या यदि यह सम्भव न हो तो सारी रकम बट्टे खाते में डाल देनी चाहिए। यह व्याधि बंगाल तक ही सीमित नहीं है। मेरे विचार में इसका दोष हम थोड़ा बहुत उस मनोवृत्ति को भी देना चाहिए जिसको हम पिछले दस पन्द्रह वर्षों में पोषण करते आ रहे हैं। आदमी अपना पेशा छोड़ बैठता है उसके तथाकथित त्याग की सराहना की जाती है उसका नाम होता है और वह अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप आचरण करने की कोशिश करता है पर इस दौरान उसकी आर्थिक अवस्था खराब हो जाती है और वह अपने-आपको तथा औरों को धोखा देने लग जाता है। यह आदमी अपने पेशे से सौ रुपये मासिक से अधिक नहीं कमाता होगा। पर हम यह बात भूल जाते हैं और यह आदमी अपने पेशे से कमाई करने के बजाय दरिद्रता का जीवन बिताते हुए देश सेवा का ढोंग रचना जारी रखता है। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या बाबू ने कभी अपने बड़े परिवार के भरण पोषण के लायक पैसा कमाया या नहीं ? उसने ऐसा नहीं किया और तभी राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू हो गया और उसे अपने आपको इस भ्रम में डालने का मौका मिला कि वह बराबर इतनी कमाई करता रहा था। अब उसे नसीहत मिली है तो कुली का काम करके गुजारा करने की धमकी देता है।

मालवीयजी के बारे में आपने जो कहा है अक्षरशः सत्य है। सारा मामला अति घिनौना हो गया है। बोये पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। मुझे तो यही अचरज है कि पण्डितजी यह सब सहन कैसे कर रहे हैं !

बापू ने निकर पण्ड्या को तुरंत काम शुरू करने को कह दिया है। वह वर्धा होते हुए दिल्ली जायेंगे।

क्या बापू ने दिल्ली में दो महीने रहने का वचन दिया था ? सब कुछ इस पर

निर्भर करता है कि कांग्रेस में क्या होता है। हम सबको तो इतना ही मालूम है कि उन्हें यहां पहली नवम्बर तक वापस लौटने की उम्मीद है। खान-बंधुओं को यहां आना चाहिए था, पर वे बंगाल के दौरे पर रवाना हो गये हैं। उनके दौरे के समाप्त होने के लक्षण दिखाई नहीं देते और कहा नहीं जा सकता कि वे यहां कब तक आयेंगे।

वल्लभभाई और जमनालालजी यहां कल पहुंच रहे हैं और डा० अन्सारी परसों।

सप्रेम
महादेव

७८

१३ अक्तूबर, १९३४

प्रिय महादेव भाई,

के बारे में भगीरथ (कानोडिया) से बात हुई थी। वह यहां आये हुए हैं। उनका भी यही विचार है कि रकम उन सबको ही पूरी करनी चाहिए, पर उनके विचार से अन्य लोग सहमत दिखाई नहीं देते। उन्होंने कहीं-न-कहीं से रुपये का बन्दोबस्त करने का वचन दिया है। मुझे तो लगता है कि उसका कुछ भार मेरे ऊपर भी आयेगा।

दिनकर पण्ड्या की बाबत तुमने जो लिखा था, जाना।

हां, बापू ने वचन-सा ही दिया था, यदि मेरे अनुरोध को स्वीकृति का वचन के रूप में ग्रहण किया जाय तो। मैंने सुझाव दिया था कि हमारे [illegible] करने के बाद वह कुछ दिन यहीं रहें। उनका यहां टिकना उद्योगशाला के लिए आशीर्वादवत् होगा। वह राजी हो गये थे और बोले थे कि वह दिल्ली में ठहरा करेंगे तो नगर का वातावरण भी सुधरेगा। उन्हें याद दिला देना। जो कटिंग भेज रहा हूं, बापू को यह दिलचस्प लगेगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
वर्धा।

७६

भाइ घनश्यामदास,

भाई दीनकर राव पडया आज दिल्ली जाते है। दिल चाहे सो काम दे दीजिय। उनके तनख्वा के बार म मुझे लगता है कि प्रतिमास रु० २०० दिए जाय। उसका कारण तो उन्होने ही बता दिया है।

घाटे के बारे मे खत आ गया है लखक ने कुछ प्रश्न पूछे हैं। उनक उत्तर देकर मैं पत्र भेज दूगा। दीनकर राव से उनके अमरिका के अनुभव पूछ लीजिये।

बापु के आशीवाद

१७ १० ३४

८०

भाइ घनश्यामदास

दीनकर पडया पहुच गय होग। जयप्रकाश के साथ मेरी बात हो गई है। आज तक वह थोडा बहुत कज कर रहा है। प्रभावती का खच यहीं से निकलेगा। जयप्रकाश का ३२५) माहवार रखा है। इस बखत तो रु० २५० का चेक भेजा जाय। उसम से २००) तो जयप्रकाश को भेज दूगा, ५०) प्रभावती के लिए रखुगा। क्योंकि आज तक का खर्चा तो यहा से नहिं लिया है। दरम्यान म वह पटना एक बार गई थी इसलिय रु० ५० उसके खच के मागा है।

बापु के आशीर्वाद

१७ १० ३४

मेरा दूसरा निवदन कसे लगा ?

८१

कलकत्ता
१० नवम्बर १९३४

प्रिय महादेव भाइ

म यहा कल ही पहुचा ह। मैन डाक्टर से बात की है। वह अगल मामवार को मरी परीक्षा करेगा और शायद आगामी बुधवार को आपरेशन कर डालगा। यह बापू को बता देना। उनस यह भी कह दना कि जिस घडी उन्ह लगे कि उनकी नयी सस्था के लिए मैं किसी न किसी रूप म काम आ सकता हू ता उनके आदेश भर की दर है। जब मैंने पत्रा म कुछ कराड पतिया के २० लाख के अनुदान की बात पढी ता मैंन समझा कि सम्भव है इसका सम्बन्ध जमनालालजी के सुझाय ट्रस्ट से हो, पर अब देखता हू कि यह अखबारी गप्प के सिवा और कुछ नही है ता भी रुपये का लेकर कोइ कठिनाई आयेगी ऐसा मैं नही मानता। बापू ठीक ही कहत हैं कि मुख्य कठिनाई सही ढग का आदमी पान की है।

डोर को लिखे बापू के पत्र की बात कम बाहर आ गई ? क्या तुम्हारा यह खयाल नही है कि इस तरह किसी बात का बाहर आ जाना असम्भव हा जाय भविष्य म एसी सतकता बरतना अधिक जरूरी है ? ऐसी असावधानी के दुष्परिणाम तुम जानते ही हा। मुझे आशा है इस सबध मे तुम सतक हुए हाग।

पता नही बापू ने यह लक्ष्य किया या नही कि भारतीय बाजार को लेकर लकाशायर चिन्तित हो उठा है। मोदी लीस समझौता हुए साल भर हो गया पर उसके बार म कोइ कदम नही उठाया गया। पर लकाशायर अब मोदी-लीस समझौत स सन्तुष्ट नही है। इस समय लकाशायर का जापानी माल पर २५ प्रतिशत तरजीह दी जाती है, पर इतन पर भी भारतीय माल को लकाशायर के माल पर २५ प्रतिशत सरक्षण प्राप्त ह। मोदी लीस समझौते के द्वारा वतमान चुगी म ५ प्रतिशत की छूट दी गई है पर २० प्रतिशत चुगी भी लकाशायर को सहन नहा है। इसलिए मैं ता नही समझता कि मोदी-लीस समझौता लकाशायर की कुछ विशेष सहायता कर पायगा और लकाशायर को उसकी उपादेयता के विषय म सदेह होने लगा है। वह और अधिक रिआयत चाहता है, पर यह नही समझ पाता कि चुगी कितनी ही रखी जाय वह भारतीय मिला का मुकाबला नही कर पायगा। वतमान २५ प्रतिशत चुगी के हटाय जाने स भारतीय मिला की अवस्था डावाडोल हो सकती है—पर मरी धारणा है कि तिस पर भी भारतीय मिलें अपनी व्यवस्था म आवश्यक रद्दोबदल करके जिसम काय क्षमता को बढाना

तथा वतन-स्तर म कमी करना शामिल है वे लकाशायर स मोर्चा लन म समथ होगी। चुगी म कमी करन म भारत के मजदूरा का कष्ट अवश्य बढेगा, पर उसस लकाशायर का कोई सहायता नही मिलगी। जो माल भारत म तयार न हो सके, उसे बाहर स मगाकर यहा तभी खपाया जा सकता है जब कोई राजनतिक समझौता अस्तित्व म आये। जब बापू लकाशायर गय थे तो उन्होंने इसका आश्वासन दिया था पर उधर म कोई अनुकूल उत्तर नही आया। मुझे लन्दन स समाचार मिले हैं कि लकाशायर के निहित स्वाथ किसी-न किसी प्रकार का व्यावसायिक समझौता करने को उत्सुक हैं (पर राजनतिक समझौते के लिए नही)। वे सरकार स इस सबध म बातचीत कर रहे है। अपने स्वाथ के हित म व भारतीय शासन पद्धति म किसी भी प्रकार की प्रगति की सम्भावना मात्र से शकित हो जाते है और उनकी शक्ति को कम करके आकना ठीक नही होगा। मर विचार म अब समय आ गया है जब हमारा ससदीय दल इस पहलू पर गम्भीरता के साथ विचार कर और यह निणय कर कि किसी-न किसी प्रकार का समझौता हमारी लक्ष्य सिद्धि म सहायक होगा। मेरी अपनी राय है कि ऐसा कोई समझौता जिससे न तो भारतीय हितो पर आच आन पाये तथा जो लकाशायर क लिए भी लाभदायक हो सम्भव है पर समान आदान प्रदान के इस विषय म लकाशायर का राजनतिक समथन एक आवश्यक शत है। लकाशायर के लिए मोदी लीस समझौता निकम्मा सिद्ध हुआ है। पर एक गाधी लीस समझौता बडा मूल्यवान सिद्ध हो सकता है। क्या इस स्थिति की ओर बापू का ध्यान देना ठीक नही रहेगा जिससे लकाशायर की चिन्ता का दोनो क लाभ के निमित्त उपयोग करना सम्भव हो? मैंने तो फेडरेशन से अनुरोध किया है कि इस समय लका शायर व भारत सरकार के बीच पर्दे क पीछे तथा भारतीय व्यापारी मण्डल और भारतीय राजनेताओ की उपेक्षा करके जो बातचीत चलाई जा रही है वह उसका विरोध करे। पर विरोध करने के साथ साथ हम परिस्थितियो की ओर से आखें न मूदकर उनसे उचित ढग स निबटना चाहिए। यदि हम ऐसा करेंगे तो लकाशायर भी हमारे समथन म खडा हो सकता है। इसके लिए वतमान समय उपयुक्त है या नही तथा बापू की भी यही धारणा है या नही सो म नही जानता।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
मार्फत महात्मा गाधी,
वर्धा

८२

कलकत्ता १२ नवम्बर १९३४

पूज्य बापू

आपकी हिंदी की चिट्ठी अभी-अभी मिली। उसका मैं अलग से उत्तर दे रहा हूं।

मेरा खयाल है कि मैं आपको यह लिख चुका हूं कि मैं कलकत्ता नाक का आपरेशन कराने जा रहा हूं। इसलिए आपका यह कथन कुछ समय में नहीं आया कि मुझे अंतिम निश्चय कर लेना चाहिए।

यहां आने पर कार्यकारिणी से बंगाल को बाहर रखने के खिलाफ बड़ी कड़ी टीका टिप्पणी सुनने में आई है। मेरे विचार में यह टीका टिप्पणी बेजा नहीं है। पर अब जब कि आप कांग्रेस से नाता तोड़ चुके हैं मेरा इस विषय में आपको लिखना कहां तक ठीक है यह मैं नहीं जानता। यदि आपको लगे कि यह एक ऐसा विषय है जिसकी बात राजेन्द्र बाबू के साथ उठाना उचित है तो मेरा सुझाव है कि आप बंगाल को स्थान दिलाने की अवश्य चेष्टा कीजिए।

अलग डाक से एक पुस्तक भेज रहा हूं। नाम है ए रिकवरी प्लान फार बंगाल। इसके लेखक हैं श्री सतीशचन्द्र मित्र, बी० एस सी० (लंदन) एम० एल० सी०। इस पत्र के साथ उनका आपके नाम लिखा पत्र नत्थी कर रहा हूं। सतीश बाबू सर विनोद मित्र के सुपुत्र तथा सर प्रभास मित्र के भतीजे हैं। फिलहाल वह बंगाल सरकार में उद्योग विभाग के डिप्टी डाइरेक्टर हैं। मैं इनसे परिचित हूं। आपको शायद मालूम होगा कि ये काफी धनवान हैं वास्तव में इन्होंने यह नौकरी बंगाल की खुशहाली के निमित्त सेवा कार्य करने के उद्देश्य से प्रेरित होकर की है। कुछ समय पहले मैंने इन्हें ५०००) दिये थे, क्योंकि मैं उनकी लगनशीलता से प्रभावित हुआ था। मैं इनकी यह पुस्तक पढ़ रहा हूं। मुझे यकीन है कि आपको यह रोचक लगेगी। यदि आप उन्हें उनकी कृति के बारे में दो एक पंक्तियां लिख भेजेंगे तो इससे उनका उत्साह वर्द्धन होगा।

पालिश किये चावल और गुड़ की बाबत आपकी टिप्पणी देखी। मैं पालिश किये चावल के बारे में और पूछताछ करूंगा, पर यहां कलकत्ता आने पर मुझे पता लगा है कि वैसा चावल बहुत कम मिलें तैयार करती हैं। मिलों द्वारा तैयार चावल भी पालिश किये चावल-जैसा ही बुरा है या नहीं इसका मुझे पता लगाना है। आपने ऊखल वाले चावल के पक्ष में मेरे कथन को ठीक-ठीक समझ लिया

है। कुटीर उद्योग क्षेत्र म जो कुछ भी किया जाय, उससे पैस की बचत ही होगी। मैं चाहता हू कि आप गुड की अच्छाई का माप दण्ड भी आर्थिक ही रखें। गुड के बारे म मेरी तो यही जानकारी है कि पोषक तत्व न गुड मे रहते है, न चीनी म। अतएव आपके प्रोग्राम मे विटामिन वाली बात को अलग रखना ही अच्छा होगा। चीनी की अपेक्षा गुड अच्छा अवश्य है पर आपको यह भी मालूम होना चाहिए कि बरसात के दिनो म गुड का स्टाक नही रखा जा सकता। इसक अलावा इसका चालान करन मे भी कठिनाइया है। वह अस्वच्छ तो है ही। मैंन दो साल पहल आपके सामन यरवडा म सुझाव रखा था कि हमे चीनी के कुटीर उद्योग को बढावा देना चाहिए। अब पिछले मार्च मास स सरकार ने चीनी मिलो पर आबकारी कर लगा दिया है। शुगर मिल्स एसोसिएशन ने माग की है कि खाडसारी चीनी अर्थात चीनी के कुटीर उद्योग पर ही आबकारी कर लगाया जाय। मैंन इसका विरोध किया और खाडसारी चीनी इस कर स बच गई। म तो अब भी यही कहूगा कि आपका चीनी पर नही कुटीर उद्योग द्वारा तयार की गई चीनी पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। म यह मानता हू कि फिलहाल कुटीर चीनी प्रस्तुत करन के लिए कम स-कम १० ०००) चाहिए पर और भी छोटे पमाने पर चीनी तयार की जा सकती है। मेरी तो यही धारणा है।

आपके हिन्दी पत्र के अतिम वाक्य का मम ग्रहण करन म मैं असमथ सा रहा। आप कहते हैं कि आप उतमानजई के बारे म लिखन का इरादा कर रहे हैं। मैं समझता हू यह सीमा प्रान्त के एक कबील का नाम है। आप क्या लिखन का इरादा कर रह ह और किस—सो मैं नही जानता।

स्नह भाजन,

घनश्यामदास

महात्मा गाधी
वर्धा

८३

वर्धा
१४ ११ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके १० तारीख के लम्बे पत्र क लिए धन्यवाद। पता नही, यह पत्र आपको दिया जायेगा या नही क्योकि आज के दिन आपरेशन होना है और दो दिन म

भीतर ही आपको चिट्ठी पत्री पत्न की अनुमति शायद न मिले। पर मुझे आशा है कि सब काय कुशलतापूर्वक हो जायगा, कोई विघ्न बाधा उपस्थित नहा होगी। बेचारे जमनालालजी को और एक महीने या उससे भी अधिक समय के लिए बम्बई म रुकना पडेगा, क्योंकि उनका कान अभी ठीक नहीं हुआ है और अभी वह डाक्टरो की देख भाल म ही रहेंगे।

तथाकथित रोमवाली मुलाकात से सम्बद्ध हार के साथ हुए पत्र-व्यवहार को आपने शायद गलत समझा है। वह पत्र व्यवहार होरेस अलेक्जेण्डर ने बापू के परामश से ही पत्रो म प्रकाशनाथ दिया था और उसका उद्देश्य जितना अंग्रेज तथा यूरोपीय जनता को वस्तुस्थिति म अवगत कराना था उतना भारतीय जनता का नही। उसम न कोइ गोपनीय बात थी न उसके बाहर प्रकट होने का ही सवाल उठता है। आपकी सम्भावित गाधी लीग समझौते की सारी बात मैंने बडी रुचि के साथ पढी। यही एक चीज व्यावहारिक सिद्ध हो सकती है और एकमात्र इसी आधार पर दोनो पक्षो म मेल मिलाप हो सकता है। पर यह तभी सम्भव है जब पहल उस ओर से हो। क्या वे लोग अभी एसी मन स्थिति म है कि हमारे साथ समझौता करने को तयार हो जाय? जब वे इसके लिए विवश हो जायें तो शेष सब कुछ उसी सहज भाव से हो जायेगा जिस सहज भाव से रात्रि के बाद दिन का उदय होता है। इस समय जो स्थिति है उसे देखते हुए तो कहना पडता है कि यदि लकाशायरवाले कहे, तो भी उनका अनुरोध सुना अनसुना कर दिया जायेगा। मैं तो नहीं समझता कि हमारे ससदीय दल का अभी कोइ महत्व है। जब वह असली मानी म अस्तित्व मे आयगा और सामथ्य प्राप्त करेगा तभी उसका ऐसे मामलो को हाथ लगाना साथक होगा। अभी तो यह सूत न कपास जुलाहे से लट्ठम-लट्ठा वाली कहावत जसी बात है।

इस विषय पर मैंने अभी बापू से बातचीत नहीं की है पर मैंने आपका पत्र उनके सामने अवश्य रख दिया था। मैं तो अपनी ही राय दे रहा हूँ उसका कुछ मूल्य है या नहीं, इसका निणय आपके ऊपर छोडता हूँ। बापू इस मामले म अवश्य हाथ बटायेंगे पर तभी जब वह इसके लिए समय उपयुक्त समझेंगे। जब हमने इंग्लैंड म यार्कशायर की सीमा पर के प्राम का दौरा किया था तो सुझाव सामने आया था। तब बापू ने कहा था कि पहले इस विषय की चर्चा (ब्रिटिश) कबिनेट से करो। उन्होंने वसी चर्चा की होगी, पर असफल रहे होंगे।

षण्मुखम की पराजय एक एसी महत्वपूण घटना थी कि बापू भी खुश हुए

बिना न रह सके। राष्ट्रेग ने अपना अस्तित्व अच्छी तरह प्रमाणित कर दिया। सत्यमूर्ति और वेंकटाचलम की विजय का गहरा नैतिक प्रभाव पड़ेगा।

आपका,
महादेव

८४

वर्धा
१४ नवम्बर १९३४

प्रिय घनश्यामदास,

मेरा खयाल था कि मैंने दक्षिण अफ्रिका से आया खत तुम्हारे पास भेज दिया है। जब देखता हू कि वह भेजने से रह गया था। कल रात अपनी फाइल का बोझ हल्का कर रहा था तो उस पत्र पर निगाह पड गई।

तुमने महादेव को जो चिट्ठी लिखी है उसमे देखता हू कि तुम चाहते हो कि मैं दिल्ली की नयी जमीन पर ठहरू। मुझे याद पडता है कि मैंने तुमसे कह दिया था कि मैं वहा अवश्य ठहरना चाहूगा बशर्ते कि तुम मेरे लिए वैसा प्रबंध कर चुके होगे। साथ ही, यह भी शर्त थी कि मैं उस समय वैसा करने की फुरसत पाऊ। ठक्कर बापा से मालूम हुआ कि अभी वैसा प्रबंध होना बाकी है और तुम्हारी अनुपस्थिति मे मेरा दिल्ली मे रहना निरर्थक सिद्ध होगा। अगले महीने मुझे क्या करना होगा, मैं मे खुद नही जानता।

आवश्यक हो तो मुझे तार भेज देना।

बापू के आशीर्वाद

श्री घनश्यामदास बिडला
नयी दिल्ली

८५

वर्धा
१४ नवम्बर १६३४

प्रिय मित्र,

आपके गत २५ सितम्बर के पत्र के लिए धन्यवाद। इसके पहले कि मैं आपसे यहा किसीको भेजने को कहू मैं यह चाहूगा कि जसा कि आपने अपने पत्र म कहा है आप मुझे एक और पत्र भेजें। यहा हमारा एक कृषि विभाग है और उस विभाग के द्वारा उन्नति की सम्भावनाओं की खोज की जा रही है। हमारा लक्ष्य यही है कि पहले से अधिक बढिया मास तथा उसके बाद बढिया और अधिक मात्रा म दूध मिल सके।

भवदीय,
मो० क० गाधी

श्री आर० ए० रिचडसन
फोल्सट्रिल
डाकखाना फ्रैंकलिन
पूव ग्रिक्वालैंड

८६

वधा
१५ नवम्बर, १६३४

प्रिय मित्र

हिज एक्सिलेंसी ने सम्भवत मेरा वह सावजनिक वक्तव्य देखा होगा जो मैंने सीमा प्रात जाने के अपने इरादे के बारे म दिया था। मैं वहा था कि अन्य कार्यों से अवकाश मिलते ही मेरा जल्दी म जल्दी वहा जाने का विचार है। मैं दिसम्बर के मध्य तक पुरुषा पा जाऊगा। मेरे वहा जाने की इच्छा का उद्देश्य यही है कि सीमा प्रात की जनता के बारे म जानकारी हासिल करू और दसू

कि खान साहब अब्दुल गफ्फार खा ने अपने अनुयायियो को अहिंसा का व्रत लेने की जो शिक्षा दी है, उससे वे कहा तक प्रभावित हुए है। मेरा यह भी इरादा है कि वहा के लोगो मे ग्रामोद्योग के विश्राम-काय के प्रति रुचि उत्पन्न की जाय। मेरे लिए यह कहना अनावश्यक है कि सरहदी सूबे की जनता मे सरकार के प्रति सविनय या अन्य किसी प्रकार की अवज्ञा की भावना उत्पन्न करने का मेरा बिलकुल इरादा नही है।

मैं जानता हू कि मेरे सीमा प्रात प्रवेश के मार्ग मे कोई कानूनी रुकावट नही है। मैं ऐसा कोई काम नही करना चाहता जिसे लेकर सरकार के साथ सघर्ष हो। मैं भरसक प्रयत्न करूगा कि जहा तक सम्भव हो सरकार के साथ सघर्ष न हो।

कृपा करके इस विषय मे हिज एक्सिलेंसी से उनकी इच्छा मालूम करके मुझे सूचना दीजिए।

भवदीय,
मो० क० गाधी

वाइसराय के प्राइवेट सेक्रेटरी
नयी दिल्ली

(नकल)

८७

वर्धा
१८ नवम्बर, १९३४

प्रिय मित्र[1]

भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के तत्वाधान मे अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ बनाया जा रहा है। वह जिन विभिन्न विषयो पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा उनके सदर्भ मे उन उन विषयो के विशेषज्ञो के परामर्श की आवश्यकता होगी। उन्हे अथवा सघ के सदस्यो को एक स्थान पर एकत्र होने का कष्ट देने का इरादा नही है उन्हे तो जिन विषयो पर उनके विशेष ज्ञान के अनुरूप सलाह मागी जाए

1 विविध विशेषज्ञों के नाम सबोधित पत्र

उन पर अपनी सलाह मात्र देनी है। इन विषयो मे रासायनिक विश्लेषण पोषक तत्व, स्वच्छता ग्रामोद्योग द्वारा तयार चीजो का वितरण ग्रामोद्योगो म उन्नति करने के उपाय सहकारिता ग्रामो म नष्ट हो रही खाद जसी सामग्री देहातो के पारस्परिक यातायात वयस्क तथा अन्य व्यक्तियो का शिक्षण बच्चो की देख भाल आदि ऐसे अनेक विषय हैं जिनका यहा उल्लेख करना सम्भव नही।

क्या आप अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ के एसे परामशदाताओ की सूची म अपना नाम दिय जाने की अनुमति प्रदान करन की कृपा करेंगे ? मेरा आपसे यह अनुरोध इस विश्वास से प्रेरित है कि आप सघ के उद्देश्यो तथा उसकी कायविधि म सहमत हैं।

भवदीय
मो० क० गाधी

८८

कलकत्ता
१७ नवम्बर १९३४

प्रिय महादेव भाई

ऑपरेशन बुधवार को नही हुआ क्योकि मैं डा० विधान के लौटन का इतजार कर रहा हू। वह यहा कल आयेंगे। नासिका विशेषज्ञ डा० जूडाह का कहना है कि नाक और गला दोनो म ही दोष है पर वह यह नही कह सकते कि दोष का मूल स्रोत गले म है या नाक म। उन्होने बताया कि गले की खराबी का नाक की खराबी से सम्बन्ध होना सम्भव है इसलिए नाक के आपरेशन स गले की खराबी भी दूर हो सकती है। पर यदि दोष गले म आरम्भ हुआ है तो पहले टान्सिल निकलवाकर यह देखना ठीक रहेगा कि उसका नाक पर क्या प्रभाव पडता है। इसलिए मैंने डा० विधान की वापसी तक रुकना ठीक समझा। वही अन्तिम निणय करेंगे कि पहले किसका ऑपरेशन होना चाहिए—नाक का या गले का।

मुझे बापू का वह पत्र मिल गया है जिसके द्वारा ग्रामोद्योग सघ के परामश दाताओ की सूची म मुझसे अपना नाम देने को राजी होने का अनुरोध किया है।

उन्हें इसके लिए मुझसे पूछना आवश्यक नहीं था। बापू का एक और पत्र आया है जिसमें उन्होंने अफ्रिका से आया मूल पत्र भेजा है। मैंने उस पत्र को तथा बापू के उत्तर को पढ़ लिया है। बापू से यह भी कहने की कृपा करना कि मेरा इरादा यहां से २० दिसम्बर के आसपास रवाना होने का है इसलिए वह दिल्ली में ठहरने के बारे में आखिरी फैसला कर ले तो मैं उनके लिए एक अस्थायी कुटिया का बन्दोबस्त कर सकता हूं। वहां उनके कुछ हफ्ते रहने से आश्रमवासियों को बड़ी प्रेरणा मिलेगी। अतएव उनका जो निर्णय हो उससे मुझे सूचित कर देना।

होर के साथ पत्र-व्यवहार की बाबत तुमने जो लिखा वह देखा।

कांग्रेस की यशस्वी विजय हुई। ठक्कर बापा लिखते हैं कि वालचन्द के नाम मेरे पत्र का दुरुपयोग हुआ। बापू को बता देना कि दुरुपयोग का प्रश्न ही नहीं उठता। मैंने वह पत्र जान-बूझकर लिखा था और मैं उसके प्रकाशन का इच्छुक था। मुझे लगा कि वालचन्द हमारे काम आयेंगे इसलिए मैंने उनका समर्थन किया और मेरी कामना है कि वह चुने जायें। खुद मैं तो कांग्रेसी हूं नहीं, इसलिए यदि मुझे लगे कि अमुक व्यक्ति किसी कांग्रेसी उम्मीदवार की अपेक्षा राष्ट्रीय हित के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा तो उसे अपना समर्थन प्रदान करने में मैं कोई बुराई नहीं देखता। अब निर्वाचन समाप्त हो चुका है और कांग्रेस की विजय हुई है। देखना है कि अगला कदम क्या होगा। अब मेरी भी यही धारणा है कि बहुत कुछ किया जा सकता है। बापू ने सविनय अवज्ञा आंदोलन उठा लिया है। अब यदि बुद्धिमानी से काम लिया जाय और बापू शान्ति स्थापना के लिए आवश्यक अन्य उपायों से काम लें तो कुछ ठोस परिणाम निकल सकता है। भविष्य के बारे में मैं निराशावादी नहीं हूं।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेव भाई
मार्फत महात्मा गांधी,
वर्धा।

भाई घनश्यामदास

तुम्हारा खत मिला।

मैं कसे कहू मुझे क्या चाहिय ? जब सौ दो सौ हजार दो हजार की वात रहती है तव तो माग लेता हू। यह ग्राम उद्योग का बहुत बडा काम लेकर मैंने निजी हाजत बढा दी है इसलिये मै तो यह कह सकता हू—दूसरा जो आवश्यक दल हो उसे बाद कर बाकी जा रहे सो मुझे दे दिया जाय।

ग्राम उद्योग का वोड बनन मे कुछ मुसीबत पदा हो रही है। मैं वोड बहुत छोटा कम-से कम तीन का, ज्यादा-से ज्यादा दस का। ऐसे ही आदमी चाहता हू जो उद्देश मे पूण विश्वास रखते है, जो करीब करीब अपना पूण समय देवे। यह काम थोडी तकलीफ दे रहा है। इसम कुछ ख्याल रखते हो ?

राजकुमारी अमृतकुवर को पहचानते हो ?

उतमनजाई खान साहब की देहात है, वहा जाकर बठने का इरादा कब से रहा है। गुरुवार के रोज दिल्ली खत भेज दिया है। जाने का कारण बताया है और पूछा है क्या कुछ हर्ज है मेरे सरहदी सूबे म जाने म ? देखें क्या उत्तर आता है।

आपरेशन का समय क्या निश्चित हुआ ?

बापु के आशीर्वाद

१६ ११ ३४

६०

कलकत्ता
२२ नवम्बर १६३४

प्रिय महादेव भाई

आज बापू की एक चिटठी मिला। यह उसी के उत्तर मे है।

सबसे पहल अपने ऑपरेशन की बात। डा० विधान यहां आ गये हैं। उन्होंने फसला किया है कि सबसे पहले मेरे टांसिल निकलवा दिये जायें। उनके विचार

म मेरी नाक की हालत उतनी बुरी नही है। सभव है कि उसमे टान्सिल के कारण दाप उत्प न हुआ हो। अब टान्सिल अगले रविवारको निकाले जायेंगे। आपरशन के बाद तार भेज दूगा।

कल ही सतीशचन्द्र मित्र आये थे। वह रह थे कि यदि बापू पहली दिसम्बर स पहल पहले उनकी पुस्तक क बार म एक पक्ति लिख भेजें तो बडी बात हो। उन्ह सम्मतिया इकट्ठी करन की बडी चाह है। इनका सग्रह करन के बाद वह पुस्तक को सरकार के सामन रखेंगे और सरकारी समथन मागेंगे। मैंने तो आशिक रूप से उसे पढा है और मेरी समझ म वह अच्छी बन पडी है और उसका समथन होना चाहिए।

बापू न बोड के गठन के बारे म कठिनाइया का जिक्र किया है और मेरी राय पूछी है। बात यह है कि मुझे अभी तक यह पता नही है कि बापू इस नयी सस्था का किस ढग से सचालन करना चाहते हैं। मेरी अपनी राय तो यह है कि पहल किसी एक काम को हाथ म लिया जाए और जब उस क्षत्र म सफलता हो तभी कायक्षेत्र का विस्तार किया जाए। उदाहरण के लिए मैं चाहूगा कि कुछ प्रान्ता म केन्द्र खोले जाए और इन चुने केन्द्रो को स्वावलबी बनाने पर ही सारा ध्यान दिया जाए। उदाहरण के लिए दस-दस बीस-बीस गावो के इन चुने हुए क्षेत्रो को सब प्रकार से स्वावलबी और आदशरूप सिद्ध करने की ओर ही सारे प्रयत्न केंद्रित किये जाए। जब इसमे सफलता मिल जाएगी तो नय केन्द्र स्थापित करने के काय मे ये केन्द्र नमून जसे साबित होगे। यदि वैसी कोई बात हो तो मेरी राय म केन्द्रीय बोड की आवश्यकता नही रह जाती। पर यदि यह विचार हो कि समूची योजना को पूर दश क समक्ष रखा जाए सघ के जिम्मे किसी विशेष अचल को स्वावलबी बनाने का काम न रहे तो जान बूझे कायकर्त्ताओ और अथशास्त्र विशारदो की देखरेख म प्रत्यक जिले का सर्वेक्षण कराना अच्छा होगा। वसी अवस्था म भी केन्द्रीय बोड की इससे अधिक कायशीलता की जरूरत नही होगी कि वह प्रातीय बोर्डो स प्राप्त रिपोर्टो का सकलन मात्र करे। इस प्रकार मेरी सम्मति म इस काय क प्रथम चरण मे केन्द्रीय बोड सवथा निरथक सिद्ध होगा। अपना हरिजन बोड भी उतना ही निरथक सिद्ध हुआ है जितने व्यापारी सस्थाना के डाइरेक्टरो के बोड।

बापू को एस तप हुए कायकर्त्ताओ की जरूरत है जो पुनरुत्थान के निमित्त खोले गये केन्द्रो क सचालन का काम अपने हाथ म ले लें। पर यदि बापू एस कायकर्त्ताओ को पारिश्रमिक देने को तयार हो तो उनका मिलना कठिन नही होना चाहिए। भारत सरकार का सारा गठन सर्विस पद्धति के आधार पर टिका

हुआ है, और यदि बापू इस ग्रामोद्योग सघ को एक व्यापारी सस्थान के रूप म चलाने को तत्पर हो तो उन्हे उसके कार्यकर्त्ताओ को उनकी योग्यता के अनुरूप पैसा देने चाहिए यद्यपि यह मानी हुई बात है कि उन्हे ऐसे कार्यकर्त्ता वैसी योग्यता रखते हुए भी अपक्षाकृत सस्ते मिल जायेंगे। हम अपने ७ लाख गावो की समस्या का हल केवल उसी ढग से कर सकते है जो हम अपनी सरकार बनने के बाद अपनायेंगे और हमारे पास उसके निमित्त पैसा खर्च करने के साधन होंगे। इससे यह मत समझो कि मैं बोर्ड की उपयोगिता को कम आक रहा हू वास्तव म मैं इसका ठीक ठीक मूल्य आक रहा हू। मेरी सम्मति म बापू को डिक्टेटर जैसा आचरण करना चाहिए। उनके नीचे एक सेक्रेटरी रहे उसके बाद विभिन्न केन्द्रो के मुखिया लोग। मेरी समझ मे फिलहाल इतना ही काफी होगा। पर यदि मैं यह जान पाऊ कि बापू किस प्रकार की कार्य पद्धति अपनाना चाहते हैं तो मेरे लिए इस प्रसग के बारे मे और अधिक लिखना सम्भव होगा। अभी तो मैने यह मान रखा है कि सस्था का सचालन विशुद्ध काम काजी ढग से होगा।

मुझे हरिजन सेवक सघ की बाबत भी कुछ कहना है। ठक्कर बापा वहा है ही, उन्होंने बापू को हमारे बजटो के प्रति मेरे विचार से अवगत करा ही दिया होगा। मैंने उनसे साफ-साफ कह दिया है कि मैं इन बजटो से सतुष्ट नही हू। यदि उनकी जाच पडताल करना असम्भवप्राय है, और यदि इस काम के लिए निरीक्षक तथा आय-व्यय परीक्षक नियुक्त किये जायेंगे तो इस पर जितना खर्च आयेगा वह अपने बूते से बाहर हो जायेगा। अतएव प्रान्तीय बोर्डों को पैसा उनके प्रधानो और सेक्रेटरियो की साख के आधार पर ही दिया जा सकता है। पर साख का कितना मूल्य है सो तुम्हे विदित ही है। बगाल म हम पर जो बीती, तुमने देखा ही है। साफ-साफ कह दू। यदि मैं सघ का सचालन काम-काजी ढग से कर पाऊ तो जैसी कुछ व्यवस्था है उसके अतर्गत प्रान्तीय बोर्डों को एक भी पैसा न दू। व्यवसाय के क्षेत्र म हम लोग भरोसे से अवश्य काम लेते हैं पर एक हद तक ही। हरिजन-सेवक सघ म अपने प्रान्तीय बोर्डों पर जितना भरोसा हम किये बैठे हैं उतना हम एक व्यावसायिक सस्थान म कदापि नही करेंगे। पर इस समस्या का हल केवल अपने कार्यों की सीमाओ म रद्दोबदल के द्वारा ही सम्भव है। यदि हम जिला बोर्डों को भग कर दें और इस समय जिन मदो पर पैसा फेंक रहे हैं उनमे कमी कर दें तो प्रबध-कार्य अधिक सहज हो जायेगा। उदाहरण के लिए यदि हम अपना कार्य-क्षेत्र छात्रवृत्तियो, छात्रावासो कूओ व दातव्य औषधालयो तक ही सीमित रखें तो सचालन तथा प्रचार-कार्य पर खर्च करने की बिलकुल जरूरत नही रहेगी। तब हमारे लिए छात्रो की सूची पर निगाह डालना तथा

खादे गय कूआ का शुमार करना भर रह जायेगा, और उनके निमित्त पेश किय गय जिल पास कर दिये जायेंगे। यही बात अन्य प्रकार की कायपद्धति पर भी लागू हाती है। पर इस समय ता इस सारे काम न अत्यत जटिल रूप धारण कर लिया है। इसलिए मैं यह सब बापू को क्वल यह बताने क लिए लिख रहा हू कि काम धधा कैसे चलाया जाता है। यह क्वल प्रातीय बोर्डों के अधिकारिया की साख का प्रश्न है। उनम से अधिकाश ईमानदार हैं, पर धोखा भी हो सकता है और उनकी गलतियो का परिणाम हम ही भुगतना होगा। बापू मुझ पर भरोसा करते हैं, इसीलिए मने अपनी कठिनाइया का बखान किया है। इस सदभ म वह क्या कहते है सो मैं जानना चाहूगा।

मैंने राजकुमारी अमृतकौर का नाम अवश्य सुना है, उनसे परिचित नही हू।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

९१

डी० ओ० सख्या १०७३९—जी० एम०

वाइसराय भवन
नइ दिल्ला
२५ नवम्बर १९३४

प्रिय श्री गाधी

सीमा प्रात जाने के आपके इरादे की बाबत मुझे आपको हिज एक्सिलेंसी की इच्छा बताने का आदेश मिला है। हिज एक्सिलेंसी को यह देखकर प्रसन्नता हुई है कि आपने इस बार मे उनस परामश किया और उनका ध्यान आपके इस आश्वासन की ओर भी गया है कि वहा पर आपका ऐसा कोई काम करने का इरादा नही है जिसे लेकर सरकार के साथ सघष हो। उन्होने इस प्रश्न पर सीमा प्रात के गवनर तथा अपनी कौंसिल स मशवरा किया और उन्ह इस बात का खेद

है कि इस बात पर व एकमत हैं कि इस समय आपका सीमा प्रात म जाना वाछनीय नहीं है। उन्हें विश्वास है कि आप उनकी इच्छा के अनुरूप आचरण करेंगे।

भवदीय
ई० सी० मेविल

श्री मो० क० गाधी

(नकल)

६२

वर्धा
२८ ११ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २२ तारीख का पत्र मिल गया था। उसके बाद तार भी मिला था। अब हम आपके कुशल मगल के ब्योरे की बाट जोह रहे हैं।

तो, वह पत्र आ गया है—नम्रतापूण नकारात्मक उत्तर। आज एक उतना ही नम्रतापूण पर दढतासूचक उत्तर भेजा जा रहा है जिसमे इस निणय का कारण पूछा गया है और यह भी पूछा गया है कि सीमा प्रात मे जान के लिए वतमान समय उपयुक्त नही है, इस कथन का क्या आशय है।

एसी परिस्थिति म दिल्ली की यात्रा कुछ सदिग्ध-सी अवश्य बन गई है पर बापू जानना चाहते हैं कि आप वहा ठीक-ठीक कब तक पहुचेंगे। यह सवाद समाचार पत्रो द्वारा प्रकट हो गया, बापू इसे दुर्भाग्यपूर्ण समझते हैं।

बापू ने श्री मित्र को पत्र अवश्य भेजा था, पर वह पुस्तक पढन लायक समय पान के बाद ही उस पर कुछ अधिक लिख सकेंगे। एक अपेक्षाकृत अधिक सुगम माग यह होगा कि मैं स्वय वह पुस्तक पढ डालू और बापू को बता दू कि उसम क्या सामग्री है।

आपने अखिल भारतीय ग्रामोद्योग सघ के बारे म जो कुछ कहा है उसे बापू ने समझा है और सराहा है पर उनका विश्वास है कि नीति निर्धारित करन तथा उसकी समस्याओ का हल तलाशन क लिए एक केन्द्रीय बोर्ड नितान्त

आवश्यक है। अभी सघ के विधान का मसौदा तयार नही हुआ है, होने पर आप उसे पढेंगे तो आपके लिए उसके सम्बन्ध म कुछ कहना अधिक आसान होगा।

हरिजन-सेवक सघ के बजटा की बाबत जो कुछ लिखा है उससे बापू लगभग सहमत हैं, पर यह एक एसा विषय है जिसकी अन्यमनस्क भाव से और पत्र व्यवहार द्वारा चर्चा यथष्ट नही है। जब आप उनसे दिल्ली म मिलेंगे तो वह इस विषय की चर्चा खुशी के साथ करेंगे।

आपकी किस्त की बाबत बापू का लिख ही चुका हू।

मुझे आशा है कि आपरेशन लाभकारी सिद्ध हो रहा होगा और अब नाक का आपरेशन करान की जरूरत नही रही होगी।

सप्रेम,
महादेव

६३

वर्धा
२८ नवम्बर १९३४

प्रिय श्री मविल

आपके तुरन्त दिये गए उत्तर के लिए धन्यवाद।

पर मैं यह कहे बिना नही रह सकता कि मेरे सीमा प्रान्त जाने के सबध म लिये गए निश्चय स मुझे व्यथा हुई है और जब मैं अपने आपको एक बडी अटपटी स्थिति मे पाता हू। इस दृष्टि से इस निश्चय को दुर्भाग्यपूर्ण समझना चाहिए।

आपके पत्र मे एकमात्र आशा की किरण यही दीखती है कि मेरी यात्रा को 'इस समय' अवाछनीय कहा गया है। क्या आप कृपा करके इसका खलासा करेंगे ?

और यदि मेरी जिज्ञासा अनुचित न लगे, तो क्या आप कृपा करके यह भी बतायेंगे कि मेरा वहा जाना अवाछनीय क्यो है ?

हिज एक्सिलेंसी की इच्छाओ का पालन मैं अवश्य करना चाहता हू पर आप क्षमा करें यदि मैं उसे फिर दुहराऊ जो मैं अपने १५ तारीख के पत्र म कह चुका

हू अथात 'जहा तक सम्भव होगा।' आपके उत्तर म इस बात को ध्यान मे लिया गया प्रतीत नहीं होता।

भवदीय
मा० क० गाधी

श्री ई० सी० मविल,
हिज एक्सिलेंसी वाइसराय के सेक्रेटरी,
नई दिल्ली।

(नकल)

६४

कलकत्ता
३० नवम्बर, १९३४

पूज्य बापू,

यह पत्र मैं विस्तर म पडा हुआ लिख रहा हू। यह आपरेशन के बाद की विश्रामअवस्था है। पूरी तरह स्वस्थ होनेम कुछ देरलगेगी क्योकि उदर-सम्बन्धी व्याधि बनी हुई है। कुछ अच्छा हाते ही दूध और फला पर रहना शुरू कर दूगा। दुर्भाग्यवश टान्सिल के ऑपरशन के परिणामस्वरूप जब तक गले और नाक म नजला बना रहेगा मैं आसानी से दूध और फल हजम नही कर सकूगा। इसलिए मैं अभी उबली हुई सब्जियो के रस पर चल रहा हू। आज एक औंस से भी कुछ कम चावल की पपडी और कुछ एक खजूरें ली।

लगता है कि कम-से-कम तीन हफ्त तक यात्रा करन लायक नही हो पाऊगा। इसका अथ यह हुआ कि मैं दिसम्बर के तीसरे हफ्ते की समाप्ति तक दिल्ली पहुच सकूगा और यदि आप दिल्ली म ठहर सकें तो यह मेरे लिए एक बडे सौभाग्य का विषय होगा क्योकि तब मैं आपके साथ शान्तिपूवक कुछ समय व्यतीत कर सकूगा। कम-से-कम मेरी यही कामना है।

महादेव भाई न उस पत्र-व्यवहार का जिक्र किया है कि यह मामला पत्रो म प्रकाशित हो चुका है। य सब बात बाहर कसे आ जाती है? आप जानत हैं कि मेरी बराबर यह शिकायत रही है। सभवत आप पुन इस नजरअन्दाज कर

जायें। पर मेरी प्राथना है कि एमे मामला म आप अपन दफ्तर को अधिक चौकन्ना रहन को कह दें। आपके लिए अपनी कोइ गोपनीय सामग्री न हो पर औरो की भेद की बातें भी तो आप तक पहुचती हैं और सरकार को यह लगा कि आपकी निजी फाइलो म स खबर बाहर चली जाती है तो उस अच्छा नही लगगा।

महादव भाई न श्री मित्र की पुस्तक की बाबत जो लिखा, सो देखा। उन्होंने यह भी लिखा है कि आपने मुझे एक पत्र और भी लिखा है। वह पत्र मेरे पास अभी तक नही पहुचा है।

महादव भाई न आशा व्यक्त की है कि मेरे टान्सिल निकलवान स नाक की व्याधि मे भी सुधार हुआ होगा और अब नाक का आपरेशन करान की जरूरत नही पडेगी। यह मैं कह नही सकता। मैंने आपरेशन डाक्टरो की सलाह पर और विशेषकर डा० विधान के निणय के अनुसार करा तो लिया है पर सफलता के बारे म मेरा पूरा समाधान नही हुआ है। टान्सिल अच्छी अवस्था म नही थे और इसम कोई स देह नही कि उनका मेरे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड रहा था। डाक्टरो ने मुझे ४० मिनट तक क्लारोफाम से बेहोश रखा। मेरे लिए यह पहला अवसर था जब मैंन इस तरह का अनुभव किया हो। म रामनाम लेकर सोया था और जब होश मे आया तो मुझे ऐसा लगा कि मानो मृत्यु के सूक्ष्म दशन से गुजरा होऊ।

स्नेहभाजन,
घनश्यामदास

महात्मा गाधी,
वर्धा।

६५

वर्धा
२ १२ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी

ऑपरेशन भी एक अग्नि परीक्षा जसा है है न? बापू को बडी चिन्ता है। कृपया किसी को कम-स कम हर दूसरे दिन लिखते रहने की ताकीद कर दीजिए।

मुझे लगता है कि आपने मेरे पत्र को गलत समझा या गलत सुना। या मैं ही वह पत्र लिखते समय अर्ध निद्रा में रहा होऊंगा। यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि कम-से-कम दो जगह भ्रम हुआ है। पहली बात तो आपके निमंत्रण पर बापू के दिल्ली में कुछ दिन ठहरने की बाबत थी जो बापू को अच्छी नहीं लगी। वह खबर कम-से-कम यहां से तो नहीं फूटी। गनीमत यही है कि इस पत्र-व्यवहार की बाबत समाचार पत्रों में अभी तक एक पंक्ति भी नहीं निकली है। पर मैं मानता हूं कि कभी-कभी बापू अनजाने ही सीमा का उल्लंघन कर जाते हैं जैसा कि उन्होंने उस दिन गांधी सेवा संघ की बैठक के दौरान किया था। वह कोई दजन भर मित्रों के साथ निजी बातचीत कर रहे थे मानो एक दर्जन मित्रों के साथ कोई बात निजी रहना सम्भव हो! पर जो हो गया सो हो गया। अब इस मामले को लेकर व्यग्र होना अनावश्यक है। जब सारी बातें खुल्लमखुल्ला हो रही हैं तो हम डरने की क्या जरूरत है? बेसिर पैर की बातों या अफवाहों से हमारी काफी क्षति हो सकती है और हमें इस दिशा में अवश्य सतर्क रहना चाहिए।

दूसरी गलतफहमी श्री मित्र की पुस्तक के संबंध में हुई। मैंने लिखा था कि उन्होंने बापू को उनके पत्र के लिए धन्यवाद दिया था, पर वह कुछ अधिक की आशा करते थे और यह तभी हो सकता है जब बापू उनकी पुस्तक पढ़ने के लिए समय निकाल सकें।

मैंने देवदास को खान बन्धुओं पर लिखी पुस्तक की पाण्डुलिपि भेज दी है। वह पुस्तक का मुद्रण और प्रकाशन कराने को आतुर है। समय मिलने पर पढ़िए और बताइए कैसी लगी?

पर आपका सबसे पहला काम अपना स्वास्थ्य ठीक करना है। यह विश्वास करने को जी नहीं करता कि आप ४० मिनट तक क्लोरोफार्म में रहे। मेरा लड़का तो मुश्किल से कुछ ही मिनट बेहोश रहा होगा और ऑपरेशन तो कुछ ही क्षणों में हो गया। हां आपरेशन के बाद पूरे तौर से होश में आने में उसे अवश्य कोई आधा घण्टा लगा। शायद आपका मतलब ऑपरेशन से पहले और उसके बाद—सारे समय से रहा होगा। मेरे लड़के को ऑपरेशन के बाद किसी तरह की असुविधा नहीं हुई। दूसरे ही दिन वह गर्व के साथ कहने लगा कि आपरेशन क्या था मानो किसी मक्खी ने काट लिया हो। पर ज्यादा उम्र में टांसिल का ऑपरेशन अपेक्षाकृत अधिक कष्टदायक होता होगा।

सप्रेम
महादेव

९६

भाई घनश्यामदास

तुमारे तार वल्लभभाई पर और मेरे पर मिले है। यह छोटा-सा आपरेशन भी दु ख दे रहा है। डा० विधान का पत्र भी आया है। उनके पत्र मे लिखा है, अच्छा हो रहा है। तुमार तारो से ऐसा प्रतीत नहा होता है। और तार की प्रतीक्षा करता हू।

वाइसराय को मिलने के लिये लिखना इस समय उचित नही जचता है। मैने दुबारा लिखा तो है। इस वखत नही का मतलब पूछा है और इनकार करने का कारण भी पूछा है। *अब देखें क्या होता है। जो होगा ठीक ही होगा।*

यदि तुमको अच्छा हो जाय, और दिल्ली जा सकोगे तो मैं तारीख २० के आसपास वहा जाने की चेष्टा करुगा। तयारी कर रहा हू।

बापू के आशीर्वाद

२-१२ ३४

९७

डी० ओ० सख्या १०९३९—जी० एम०

वाइसराय भवन,
नई दिल्ली
२ दिसम्बर, १९३४

प्रिय श्री गाधी

आपके २८ नवम्बर के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद।

उत्तर मे हिज एक्सिलेंसी ने मुझे यह कहने का आदेश दिया है कि इस समय का अर्थ यह है कि उनका निश्चय तब तक यही रहेगा जब तक उन्हें यह सतोष न हो जाय कि परिस्थितिया ऐसी हैं कि वहा जाना आपत्तिजनक नही है। हिज एक्सिलेंसी ने जो निश्चय किया था गत वर्षों की घटनाओ तथा वर्तमान अवस्था को पूरी तरह से ध्यान मे रखकर किया था।

भवदीय,
ई० सी० मविल

श्री मो० क० गाधी
वर्धा।

(नकल)

९८

वर्धा
५.१२.३४

प्रिय घनश्यामदासजी,

इस चिट्ठी के साथ सारा पत्र-व्यवहार नत्थी कर रहा हूं। किसी मूर्ख ने यहां से अहमदाबाद के अपने किसी जोड़ीदार को इस विषय पर लिख मारा था बस एसोसिएटेड प्रेस ने समाचार प्रसारित कर दिया। पर बात रही मजेदार—जिस ढंग से खबर दी गई है रोचक है।

कल जो पत्र आया है, उससे तो यही लगता है कि द्वार मजबूती से बन्द कर लिया गया है। पर बापू को जल्दी नहीं है चार्ली (श्री एण्ड्रूज) ७ तारीख को पहुंच रहे हैं। यदि १६ को दिल्ली जाने लायक शक्ति आपमें आ गई हो तो वह भी १६ की सन्ध्या तक वहां पहुंचेंगे। पर यदि ऐसा नहीं हुआ तो आगे क्या होनेवाला है वह अदृष्ट के गर्भ में है। पर उन्हें एक बात का यकीन सा है। उनके तैयार होने भर की देर है और जेल का दरवाजा खुला मिलेगा।

मुझे पूरी आशा है आप स्वास्थ्य-लाभ कर रहे होंगे।

आपका
महादेव

९९

भाई घनश्यामदास

मैं देखता हूं हर हालत में २० तारीख के पहले दिल्ली पहुंचने की कोशिश कर रहे हो। यदि यह सब प्रयत्न मेरे खातिर है तो ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। शरीर को हानि पहुंचाकर आने का प्रयत्न न किया जाय। मेरे आने के बारे में एक दूसरा प्रश्न भी पैदा होता है। वाइसराय के साथ जो पत्र-व्यवहार हुआ है और जिसका सच्चा झूठ उल्लेख अखबारों में आ चुका है उससे मेरा तुम्हारे निकट में रहना आपत्तिदायक तो नहीं होगा? तीसरी बात यह है कि तुम्हारे दिल्ली

पहाचते ही धदा का काम कुछ ज्यादा रहेगा न ? यदि चाहते है कि मुझे दिल्ली जाना ही है तो भी मैं चार पाच दिन के बाद आ सकता हू। जहा तक मुझे अब तक भान है मैं ता यहा से १६ तारीख को निकल सकता हू और २० को वहा पहाच सकता हू। बाकी ता सब महादेव लिख रहा है।

बापु के आशीर्वाद

वर्धा
१२ १२ ३४

१००

कलकत्ता
१२ दिसम्बर १९३४

प्रिय महादेव भाई

मैं यहा से १५ को रवाना होनेवाला था। विचार था कि १६ को बनारस पहुचूगा और २ दिन अपनी माजी के पास ठहरकर १८ को दिल्ली के लिए चल दूगा और वहा १९ को पहुच जाऊगा। पर इधर दो-तीन दिन से गले की तकलीफ बढ गई है। गले के विशेषज्ञ तथा डा० विधान को दिखाया तो पता चला कि गद गुबार के या अ य किसी इनफेक्शन के कारण कुछ खराबी आ गई है। पिछले ४ ५ दिन स नियमित रूप से आफिस जा रहा हू पर इन दोना ने कहा यह बद होना चाहिए। अतएव यह चिट्ठी मैं बिडला पार्क स लिख रहा हू। कल रात डाक्टरो ने जख्म साफ किया और अब उसकी हालत पहले से अच्छी है कोई चिता की बात नही है। मेरा खयाल है कि मैं जल्दी ही सफर करन लायक हा जाऊगा। पर दोना डाक्टरा की यह पक्की राय है कि जब तक जख्म बिलकुल न भर जाय, मैं यहा से न जाऊ। उनका कहना ह कि ३० दिसम्बर से पहले दिल्ली जाने याग्य हा जाऊगा पर व जखम के पूरी तरह भरने स पहल मेरे यहा से जाने के बिलकुल खिलाफ है। इसमे कम स कम एक सप्ताह और लगेगा। इसलिए मैंने तुम्हे तार भेजा है। १९ को दिल्ली नही पहुच पाया इसके लिए लज्जित हू। बस शरीर से अच्छा खासा हू पर गले की तकलीफ तो है ही। या साधारण सी रह गई है। पर डाक्टर लाग मेरे यात्रा करन के विरुद्ध हैं। दिल्ली पहुचन म इस विलम्ब का परिणाम केवल

मेरे ही लिए निराशाजनक नहीं होगा। २६ तारीख को फेडरेशन की बैठक ज्वाइण्ट सलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट पर विचार करने के लिए होगी। उसमें मेरी उपस्थिति अत्यावश्यक थी, पर मैं उसमें भाग नहीं ले पाऊंगा। पर मुझे सबसे अधिक दुःख इस बात का है कि मेरे प्रोग्राम में हुए इस परिवर्तन के कारण बापू को व्यर्थ की असुविधा होगी। वैसे मैं डाक्टरों की सलाह न मानकर निश्चित समय पर ही चल पड़ता पर मैं जानता हूं कि बापू को यह अच्छा नहीं लगता इसलिए डाक्टरों के कहने पर चल रहा हूं। जब तुम लिखो कि बापू दिल्ली कब तक पहुंच रहे हैं।

सीमा प्रांत की बाबत बापू का आजवाला वक्तव्य लाजवाब था। इसका बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ेगा, इसमें शक नहीं। असली बात यह है कि यह बखेड़ा उनके और दिल्ली के आपसी मन मुटाव के कारण उठ खड़ा हुआ है। जो भी हो इस वक्तव्य का प्रभाव अच्छा ही होगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेव भाई देसाई,
वर्धा।

१०१

कलकत्ता
१८ दिसम्बर १६३८

प्रिय महादेव भाई,

कल आर्थर मूर से मेरे निवास-स्थान पर देर तक बातचीत हुई—कोई ढाई घण्टे तक। उनके साथ मुगरिज था। यह नया आदमी आया है। बातचीत का विषय आरम्भ से अंत तक केवल एक था—बापू। संयोगवश उन्होंने रिपोर्ट के बारे में मेरी राय जाननी चाही। मैंने कहा कि मेरी सम्मति में सारे उपद्रव की जड़ वर्तमान वातावरण है रिपोर्ट में कही गई बातें नहीं। मैंने पारस्परिक सम्पर्क के अभाव की कड़ी आलोचना की। वह सहमत हुए पर बोले कि सरकारी अमले में सबकी यह धारणा है कि मिस्टर गांधी के साथ सम्पर्क स्थापित किया जायगा तो

अटकलबाजी का बाजार गम होगा। मैंन उनसे जा कुछ कहा वह वाइसराय को बतायेंगे। उन्होने कहा कि ब्रिटिश जनता का मिस्टर गाधी के प्रति सौहार्द बढ रहा है। उन्होने वाइसराय से हुई कल की बातचीत का हवाला दते हुए बताया कि वाइसराय यह जानना चाहते है कि सीमा प्रात की बाबत मिस्टर गाधी के साथ हुए उनके पत्र व्यवहार को प्रकाशित करन का क्या उद्देश्य था ? इसके उत्तर मे मूर न कहा कि मिस्टर गाधी की नीयत नक है उनका उद्देश्य सीमा प्रात म सविनय अवज्ञा का शिक्षण देना कदापि नही है वह तो केवल वहा की स्थिति का अध्ययन करना और थाडा-बहुत ग्राम सुधार सम्बन्धी काय करना चाहत है। वाइसराय मूर के कथन से सहमत होते प्रतीत हुए, पर बोले कि एसे लोगो की धारणा को भी ध्यान मे रखना है जो समझत हैं कि मिस्टर गाधी को समझ पाना कठिन है वह गहरे पानी मे हैं। बहुत स लोगा की धारणा है कि वे सीमा प्रात म इसलिए प्रवेश करना चाहते है कि इस प्रकार उन्हे सरकार के विरुद्ध दुबारा आन्दोलन करने का अवसर मिलेगा। मूर ने यह बात अपनी ओर से जोडी कि वाइसराय को लिखे गए अपन दूसर पत्र म मिस्टर गाधी को अवना की धमकी नही देनी चाहिए थी। जहा तक मैं समझ रहा हू उससे तो यही लगता है कि काफी गलतफहमी पदा हा गई है जो दूर तो अवश्य होगी पर उसम समय लगेगा। यह भी खबर है कि सीमा प्रात के गवनर कनिंघम को जो बापू को जानता है यह आशका है कि उनके वहा जाने स उत्तेजना पैदा होगी जिससे सरकार को परेशानी हो सकती हे। मूर ने बताया कि बगाल का गवनर बापू से मिलने को बडा उत्सुक था पर किसी न किसी कारण से मुलाकात नही हो सकी। मूर ने पूछा कि क्या बापू कलकत्ता दुबारा आ रहे है? इस जिज्ञासा का अथ यही हा सकता है कि यदि वह आयें ता वह मुलाकात कराने की चष्टा करेंग। मैने उत्तर म कहा कि बापू का बगाल म कोई काम नही ह। यदि सरकार उनस भट करना चाहे तब तो बात दूसरी ह अ यथा वह इस ओर नही आ रहे है। मैंने बताया कि बापू दिल्ली जा रहे हैं और कुछ दिन वहीं ठहरेंग।

मुझे लगता है कि बापू के सीमा प्रात जान पर जो प्रतिबध लगाया गया है उसका एक कारण उनके प्रति सदह की भावना है और दूसरा कारण यह आशका है कि उनके वहा जान स सरकार की परेशानी बढेगी। मेरी समझ मे इस सन्देह का निवारण अत्यावश्यक है। साथ ही मुझे विश्वास है कि यह सदेह टिकनेवाला नही ह। मुझे यह भी मालूम हुआ है कि विलिंग्डन के मन म बापू क प्रति विरोध की अपक्षा सदह की भावना अधिक है। इन लोगा के लिए सत्याग्रह की खूबिया को हृदयगम करना कठिन है। मूर ने कहा कि बापू का उपवास तो सत्याग्रह था

पर उनके अन्य सारे काय 'सत्याग्रह' की अपेक्षा हिंसा से अधिक मेल खाते थे। इसमे शक नही कि वह अतिशयोक्ति से काम ले रहे थे, पर यह नही कहा जा सकता कि जन-साधारण ने जो आचरण किया वह 'सत्याग्रह' से कोसो दूर था।

मैं किसी-न किसी तरह इस नतीजे पर पहुचा हू कि एण्ड्रूज और उनके जैसे व्यक्ति इन लोगो को विशेष प्रिय नही हैं। उनकी बुद्धिमत्ता के बारे मे इन लोगो की धारणा शून्य जसी है। दुर्भाग्य से इनके मन म उनके प्रति विरोध की इतनी गहरी भावना है जिसे मैंने पहली बार देखा।

कल मुझे अकस्मात यह लगा कि बापू दिल्ली जाने का कष्ट केवल मेरी खातिर उठा रहे है। इसमे मुझे मानसिक वेदना हुई और परेशानी भी। इतनी भयकर सर्दी मे बापू मेरी खातिर दिल्ली जाने का कष्ट क्या उठायें? क्या मुझमे वर्धा जाने लायक सामर्थ्य नही है? मैं उनके पास कुछ दिन शान्ति के साथ बिताने को लालायित हू। बस, वर्धा जाने लायक शक्ति भर की आवश्यकता है। मैंने बापू को दिल्ली जाने को इसलिए राजी किया था कि मेरी धारणा थी कि उनकी मौजूदगी से हरिजन-सेवक सघ मे नये प्राणो का सचार होगा। साथ ही मैं उनकी उपस्थिति से खुद भी लाभान्वित होना चाहता था। पर यदि उन्हें लगे कि फिल हाल केवल हरिजन सेवक सघ की खातिर उनका दिल्ली की यात्रा का कष्ट अनावश्यक है तो मेरी ओर से हाथ जोडकर उनसे विनती करना कि बजाय इसके कि वह दिल्ली जाने का कष्ट उठायें मैं वर्धा आना ज्यादा पसद करूगा। मेरी समझ मे यह बात तब आई जब मैंने मलकानी को लिखे उनके विचार पढे।

मेरा घाव भर रहा है, एक सप्ताह के भीतर बिलकुल चगा हो जाऊगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
मार्फत महात्मा गाधी
वर्धा।

१०२

कलकत्ता
१६ दिसम्बर, १६३४

प्रिय सर सम्युअल होर

मं यह पत्र ज्वाइण्ट मलेक्ट कमटी की रिपोट को बडे ध्यान से पन्ने के बान ही लिख रहा हू। कामन्स सभा म आपने जो बढिया स्पीच नी उस भी मैंने उतने ही मनोयोग स पढा।

यह पत्र लिखने म मैं कुछ झिझक रहा हू। यह स्वाभाविक ही है क्योकि मैं जानता हू कि मेरे विचार आपके विचारो से मेल नही खाते। पर एक तो मैं आपका आदर करता हू और दूसरे आपके दृष्टिकोण और आपके प्रयत्नो को उन क्षत्रा म जहा उन्हे गलत समझा जाता है, मत्रीपूण प्रकाश म प्रस्तुत करते नही थकता हू। यनि ये दोना कारण आपके सामने अपने हृदय की बात रखने का मुझे अधिकार प्रदान करने के लिए पर्याप्त समझे जाय तो मैं वसा करने की प्रेरणा का पालन करना चाहता हू।

मुझे रिपोट के सबध म कुछ नही कहना है। आपने पार्लमिंट मे ठीक ही कहा कि इससे भारत म इने गिने व्यक्ति ही सन्तुष्ट हुए है। दूसरी ओर मेरे कानो में आपके व शब्द गूज रहे हैं जो आपने मेरी भेंट के दौरान कहे थे। आपने उस अवसर पर कहा था कि भारत मत्री चाहे जितना प्रगतिवादी हो उसके लिए वतमान पार्लमिंट के रहते हुए एक सीमित दूरी तक ही जाना सम्भव है। मैं अच्छी तरह समझता हू कि वतमान पार्लमिंट जसी कुछ है उसके रहते हुए ज्वाइण्ट पालामेंटरी कमेटी की सिफारिशो के पर जाना सम्भव नही ह। पर मैं तो स्थिति को एक बिलकुल ही भिन्न पहलू से देख रहा हू।

रिपोट म जिस योजना की सिफारिश की गई है उसकी तुलना मैं व्यावसायिक सस्थाओ म दिये गए मुख्तारे-आम के अधिकारो से करता हू। हम लोग अपने व्यावसायिक सस्थानो म मुख्तारे आम तथा मुख्तारे खास के अधिकार अपने मैनेजरो और मातहतो को सौपते हैं। यदि उनपर स हमारा विश्वास उठ जाय तो हम उन अधिकारो को वापस ले सकते है और उन व्यक्तियो को बरखास्त कर सकते हैं। पर मेरे अपने सस्थान म तथा अ य अनेक सस्थानो म वैसी स्थिति शायद ही कभी उत्पन्न होती होगी। यह व्यवस्था सुचारु रूप स चलती आ रही है क्योकि मालिक मनेजर पर विश्वास करता है और मैनेजर भी उसी अनुपात म मालिक पर भरोसा

करता है। इस प्रकार दोनों एक ही लक्ष्य तक पहुचने में लगे रहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि पारस्परिक विश्वास और एकसमान लक्ष्य मुख्तारनामे की शर्तों की अपेक्षा अधिक महत्व रखते हैं। मैं मानता हू कि हमारे राजनैतिक क्षेत्र में दोनों पक्षों का एकमात्र लक्ष्य उत्तरदायित्वपूर्ण सरकार की उपलब्धि है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जिस पारस्परिक विश्वास, सौहार्द सहानुभूति तथा एक दूसरे को समझने की इच्छा की आवश्यकता है—चाहे वह लक्ष्य मामूली से सुधारों तक ही सीमित हो अथवा महत्वाकांक्षा का हो—क्या इस समय वह भारत में दिखाई पड़ता है ? मैं किसी पक्ष को दोष नहीं देता। मेरा तो कहना यही है कि चूंकि शासन-कार्य सरकार के हाथों में है इसलिए उसे ही इस स्थिति के निर्माण के लिए प्रयत्न करना चाहिए। इस समय योजना में संशोधन की नहीं उसे सोलह आने रद्द करने की जो बात जोर पकड़ रही है उसके पीछे योजना की त्रुटियां नहीं हाल में घटित घटनाओं के पीछे निहित मनोवृत्ति उत्तरदायी है।

इर्विन गांधी पैक्ट ने माना था कि

१) केन्द्र को उत्तरदायित्व प्रदान किया जायेगा।

२) संघीय शासन-व्यवस्था अमल में आयेगी, तथा

३) संरक्षण और विशेषाधिकार भारत के हित में होंगे।

यह स्पष्ट है कि उक्त पैक्ट पर हस्ताक्षर करनेवालों ने यह बात मान ली थी कि अंतिम लक्ष्य चाहे जो हो, संरक्षण और विशेषाधिकार हस्तांतरण के दौरान अनिवार्य है। जो लोग स्वतन्त्रता की बात कहते थे—और अलग-अलग व्यक्तियों ने इस शब्द की अलग-अलग व्याख्या की थी—उन्होंने भी विशेषाधिकारों को स्वतन्त्रता के अंतिम लक्ष्य की सिद्धि में बाधक नहीं माना था। कारण तो यह है कि इर्विन गांधी पैक्ट के दौरान पारस्परिक सम्पर्क था ही नहीं, जिसका आज भी पूर्ण अभाव है। आपने साझेदारी की भावना पर जोर दिया है, पर जब किसी प्रकार के भी पारस्परिक सम्पर्क का नितान्त अभाव हो तो उस भावना को साकार कैसे किया जा सकता है ? और यह तो मानना ही होगा कि एक-दूसरे को समझने की अभिलाषा और एक दूसरे पर भरोसा रखने की प्रवृत्ति का जन्म एकमात्र पारस्परिक सम्पर्क के द्वारा ही सम्भव है। मेरा यह विनम्र निवेदन है कि प्रगति की रूपरेखा की अपेक्षा उसे अमल में लाने के तरीके पर ही सब कुछ निर्भर करता है। माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में अमल में लाये गए थे। आशा है गलती की पुनरावृत्ति नहीं होगी।

आपके निकट मेरी कितनी साख है सो मैं स्वयं नहीं जानता, पर मेरी तो एकमात्र यही अभिलाषा है कि दोनों देशों के बीच सद्भाव और मैत्री का नाता

नये सिरे से अस्तित्व में आये। मैं इसी दिशा में विनम्र प्रयत्न कर रहा हूं।

सद्आकांक्षाओं के साथ

मैं हूं

आपका ही,
घनश्यामदास बिड़ला

राइट आनरेबल सर सेम्युअल होर बार्ट
भारत मंत्री, ह्वाइट हॉल
लंदन।

२०३

वर्धा
१६-१२-३४

प्रिय घनश्यामदासजी,

मूर के साथ हुई मुलाकात के रोचक वर्णन से भरा आपका पत्र मिला। आप जो कुछ कहते हैं सब सही है। पर प्रश्न यह है कि इस सन्देह का निवारण कैसे हो? एण्ड्रूज जैसे मध्यस्थों के वूते की यह बात नहीं है। उनके बारे में उच्च पदस्थ व्यक्तियों ने हल्के दर्जे की हीन धारणा बना रखी है। यह तो उन्हीं लोगों के लिए सम्भव है, जो बापू तथा दूसरे पक्ष से समान रूप से परिचित हैं तथा जिन पर वह भरोसा करते हैं। दुर्भाग्यवश इस कोटि में आनेवाले व्यक्तियों में से अधिकांश में दृढ़ साहस का नितान्त अभाव है। उन पर दबदबा रखना या उन्हें दुतकारना सहज है।

बापू केवल आपकी खातिर दिल्ली जाना चाहते थे ऐसी कोई बात नहीं है। उन्होंने मलकानी को जो पत्र लिखा था उसमें संबंधित वाक्य का केवल यही आशय था कि उनकी दिल्ली यात्रा की तारीख का निर्णय आप पर निर्भर है। उनकी दिल्ली यात्रा आप पर केवल इसी हद तक निर्भर करती थी कि यदि आप वहां न गये तो उनका जाना व्यर्थ-सा होगा क्योंकि आपकी अनुपस्थिति में वह संघ की बैठक में कुछ नहीं कर सकेंगे। आपके बगैर हरिजन सेवक संघ की बैठक बुलाने की उपादेयता के बारे में उन्हें काफी संशय है। अतः यदि आप २० सितंबर

तब वहा न पहुच सकें ता बैठक का स्थगित करना ही ठीक हागा। आशा है मैं अपना अभिप्राय स्पष्ट कर सका हू। यदि डाक्टरा न आपक ३० तारीख तक दिल्ली पहुचन का विराध नही किया, तो बैठक होगी और बापू भी तब तक वहा पहुच जायेंगे। अब आप तार भजिए कि क्या तय रहा। २२ तक तार आ गया तो अच्छा रहेगा।

एण्ड्रूज गृह-सचिव और गृह सदस्य म मिलन दिल्ली गय थ। वह उन दाना स अथवा दोना म स किसी से भेंट करन म समथ हुए या नही सा ता नही मालूम, पर उन्होने अपनी स्वभाव सिद्ध भ्रामक शली मे यह तार भेजा, लम्बी मुलाकात हुई। यहा आया, अच्छा हुआ। विस्तार से लिख रहा हू। अपनी यात्रा का प्रोग्राम तार द्वारा भेजिए।" और इसके बाद यह तार आया कि वह कल पहुच रहे हैं। मुझ आशका है कि वह पहले की नाइ इस बार भी कुछ ठोस काम करने म असफल रहे हैं। पर दखें, क्या हाता है। मैं आपका सूचित कर दूगा।

अगाथा के पास हर हफ्ते बडल-के बन्ल कटिग भेजे जाते हैं पर एक वह ह जा यहा की वस्तुस्थिति की ओर मे आखें मूदकर लिखती है आपकी ओर से मल मिलाप-सूचक सकेत की जरूरत है। आपके लिए यह सम्भव है। आदमी के सतोष की भी सीमा होती है। बापू ने मल मिलाप की चेष्टा म लगे व्यक्तिया स जा रचनात्मक सस्त की दलील पश कर रहे ह ज्वाइण्ट कमटी की रिपाट की चचा करत हुए कहा था 'रिपोट स्वतत्रता का खुल्लमखुल्ला हनन है। मेर सब्र का प्याला लबालब भर गया है। यहा लोग नतिकता की दुहाई देत नही अघात और उधर दूसरी ओर कान पर जू तक नही रेंगती। बापू न गफ्फार स कहकर भद्रतापूण वक्तव्य दिलवाया। दूसर पक्ष न उसे इस कान स सुना दूसर से निकाल दिया—या सरदार की भाषा म वह सूअर के सामन मोती बखेरन जसा सिद्ध हुआ। उन्हें दा वष का कठोर कारावास दिया गया है और सिंध म घनश्यामदास जस शात कायकर्त्ता पर भी वही जुम लगाया गया है। इस प्रकार इस समय दफा १२४ए का बोलबाला है।

सप्रम,

महादव

१०४

कांग्रेस भवन,
माउण्ट रोड, मद्रास
१७ दिसम्बर १६३४

प्रिय घनश्यामदासजी

मुझे यह आशका नहीं थी कि आप स्वास्थ्य-लाभ के लिए इतने समय तक चारपाई पकडे रहेंगे। अब कैसे हैं ? आशा है आपरेशन के घाव भर गये होंगे। पूरी तरह स्वस्थ होने तक आप नये सिर से बीमार पडने की जोखिम न उठाकर पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करने की ओर ध्यान दे रहे है सो अच्छा ही है।

मैं लक्ष्मी और बच्चे के साथ दिल्ली से अभी लौटा हू। देवदासजी वही हैं पर अभी बम्बई गये हुए हैं। शायद हिन्दुस्तान टाइम्स के लिए रुपया इकट्ठा करने।

आपका,
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

श्री घ० दा० बिडला

१०५

कलकत्ता
१८ दिसम्बर, १६३४

प्रिय महादेव भाइ,

मैं जिस दिन यहा से रवाना होऊगा तार भेज दूगा। शायद २२ तारीख को चल पडू। रास्ते मे बनारस उतर पडूगा और कुछ दिन माजी के पास रहकर २८ तारीख तक दिल्ली पहुच जाऊगा। यदि आवश्यक हुआ तो बनारस मे कम ठहरूगा और २६ तारीख तक दिल्ली पहुच जाऊगा। कोई अनपेक्षित घटना घटे तो बात अलग है।

मूर के साथ बातचीत करने के बाद मैं गवर्नर से मिला और उनके साथ भी

इसी प्रसग पर बात की। वह मुझस सहमत थे पर उन्होंने अपनी बवसी व्यक्त करते हुए मुझस पूछा, 'आप वाइसराय स बात क्यो नही करत ?' मैंने उत्तर म कहा मैं उनके लिए अछूत बन गया हू।'' पर आप गत वष ता उनस मिले थे न?' मैंने कहा 'नहीं। मैंने यह भी कहा कि यदि वाइसराय मुझे खुलकर बोलन देंगे तो उनसे अवश्य मिलना चाहूगा पर यदि वह यह समझे बठे रहग कि मैं जबरदस्ती टाग अडा रहा हू और अपना उल्लू सीधा करना चाहता हू तो मैं वहा नही जाऊगा। गवनर बोले यदि वाइसराय को लगा कि आप गाधी क एलची बनकर आये हैं, तो उन्ह आपसे बात करने मे सकोच होगा।' मैंने उत्तर दिया "मैं किसी का एलची नही हू और जहा तक मुझे मालूम है गाधीजी ने मुझे अपना एलची नियुक्त नहीं किया है। गवनर बोल कि उन्ह मेरी नकनीयती म विश्वास है। उन्होंने बताया कि वह वाइसराय से बात करेंगे और यदि उन्ह लगा कि उनसे भेंट करने से कोई लाभ होगा तो वह मुझे लिखेंगे। उन्होंने पूछा कि क्या मैं अभी कलकत्ते म ही रहूगा। मैंने कहा हा। मुझे मालूम हुआ है कि मेरे बाद 'हिन्दू' के किन्ही शर्मा न भी इनसे इसी विषय की चर्चा की थी और गवनर न उनसे कहा था कि वह मेरी बाबत वाइसराय से बात करेंगे। मुझे यह भी मालूम हुआ है कि इसके बाद श्री शर्मा ने लेडी विलिंग्डन से भी भेंट की। अब वे सी० पी० (सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर) के साथ मशवरा करनेवाले हैं।

इसके बाद क्या कुछ होगा सो तो कहना मुश्किल है पर फिलहाल जो कुछ हो रहा है, काफी रोचक है। मैं समझता हू एड्रूज क उनसे मिलने म कोई फायदा नहीं है। हो सकता है कि इससे सारा गुड गोबर हो जाय।

मैं इन लोगों के साथ सम्बन्ध और घनिष्ठ करना चाहता हू तब मेरे लिए बापू का प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी ढग स करना सम्भव होगा। पर इसके लिए फिलहाल कोई सहज अवसर दिखाई नहीं दे रहा है। यदि मैं व्यवस्था पिका सभा म होता तो दूसरी बात होती। इस समय तो मैं अपने ही ढग स काम कर रहा हू। मैंने घटनाओं को अपना घटनाक्रम स्वत ही स्थिर करने को स्वतन्त्र छोड दिया है।

पूरे एक सप्ताह तक सोच विचार करने के बाद मैंने कल सम्युअल हार को भी इसी शली मे लिखने का निश्चय किया। मैं खूब समझता हू कि वतमान परिस्थिति म सरकार के लिए बापू के साथ शासन विधान के बारे म बात चलाना असम्भव है। फलत मैं समस्या के इस पहलू पर आग्रह नहीं कर रहा हू। मैं जिस बात पर अडा हुआ हू वह यही है कि व लोग बापू को समझें और उनके साथ सम्पक स्थापित करें। मेरे विचार में उनके इतना भर करने की देर है और बाकी

सारा काम स्वत ही होता रहेगा। बापू और सरकार के बीच सबसे अच्छे मध्यस्थ' स्वय बापू है।

ज्वाइट सलेक्ट कमेटी की रिपोट म तो कुछ भी नही है। उसकी सिफारिशें क्या है एक मालिक द्वारा एक भृत्य को दिया गया मुखतारनामा मात्र है जिसे कभी भी रद्द किया जा सकता है। पर यदि बापू और सरकार क बीच एक-दूसर को समझने की इच्छा रहे तो इन सिफारिशो के द्वारा भी 'स्वराज्य को नजदीक लाया जा सकता है और आगे चलकर बेहतर शासन विधान की नीव डाली जा सकती है। यही कारण है कि मैं बापू के चिरपरिचित शब्दो म हृदय परिवतन की अपेक्षा शासन विधान को अधिक महत्व देता हू।

मुझे विश्वस्त सूत्र स मालूम हुआ है कि वाइसराय भवन म यह धारणा व्याप्त है कि बापू गावो के इस सारे सगठन काय के बहाने वहा के लोकमत का सगठित करना चाहते ह जिससे सविनय अवज्ञा आन्दोलन नये सिरे से आरम्भ किया जा सके।

मुझे यह जानकर कि बापू दिल्ली केवल मेरी खातिर नही जा रहे है एक बडी चिन्ता स छुटकारा मिला नही ता मुझे बडी बेचैनी होती। अब मैं उनक पास कुछ दिन शान्ति के साथ व्यतीत करन का आन द लेने की बाट जोह रहा हू। पर क्या लोग-बाग उनका पीछा छोडेंगे ?

इस पत्र को बापू को दिखाने के बाद फाड फेंकने की कृपा करे।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ देसाई
मार्फत महात्मा गाधी
वर्धा

१०६

भाई जुगलकिशोरजी

साथ का पत्र पढ़ें। जो जमीन सतीश बाबु चाहते हैं वह यदि आपके काम की नही है और उसकी कीमत बहुत नही है तो सतीश बाबु को दें और रुपया २५००

वापस ले लें। यदि जमीन कीमती है तो कुछ बात नही है।

'हरिजन' और हरिजन सेवक पढते होगे।

बापु के आशीर्वाद

वर्धा
१८ १२ ३४

१०७

कलकत्ता
२० दिसम्बर १९३४

प्रिय राजाजी,

आपके पत्र के लिए धन्यवाद।

मैंने बहुत अथवा थोडे समय के लिए चारपाई कभी नहो पकडी थी। मैं ४ दिन तक बिस्तर पर अवश्य रहा पर तब भी मैं घर मे घूमने फिरने के लिए स्वतत्र था। घरवालो ने मुझे आफिस जाने या कलकत्ता छोडने से रोक रखा था क्योकि डाक्टरो को इन्फेक्शन की आशका थी।

मुझे आपके दिल्ली जाने का समाचार मिल गया था। ज्वाइन्ट सलेक्ट कमेटी की बाबत आपकी प्रेस मुलाकात भी मेरे देखने मे आई थी और मैं यह देखकर अवाक रह गया कि आप रिपोर्ट को वतमान शासन विधान से भी गई-बीती समझते हैं। मेरी तो यही धारणा थी कि हम दोनो इस बात पर एकमत हैं कि अपनी सारी त्रुटियो के बावजूद रिपोर्ट वतमान शासन विधान से निकृष्ट कदापि नहीं है। हो सकता है कि आपकी मुलाकात का वत्तान्त भ्रामक रूप मे छपा हो। मेरी अपनी राय तो यही है कि जो चीज आवश्यक और साथ ही सम्भव है वह शासन सबधी परिवर्तन नहीं वतमान वातावरण-सम्बन्धी परिवर्तन है। यदि वातावरण दोनो ओर से सदभावपूर्ण हो और ब्रिटेन का रुख सेवापूर्ण हो, तो सतोषदायक न होते हुए भी शासन विधान को अमल मे लाया जा सकता है। इसके विपरीत यदि वातावरण मे सुधार नहीं हुआ तो इससे अधिक अच्छा शासन विधान भी ठप होकर रह जायगा। इसलिए मैं प्रगति की तेजी की अपेक्षा वातावरण को अधिक महत्व देता हू।

अगाथा का कहना है कि आपको लन्दन जाना चाहिए। मैं भी आशा करता हू और मेरी यह धारणा बन गई है कि यदि एक मध्यस्थ की जरूरत हो तो श्री एड्रूज की अपेक्षा जो सारे सदुद्देश्यो के बावजूद और इतनी दौड धूप करने पर कुछ हासिल नही कर पाते आपका और वल्लभभाई का लदन जाना श्रेयस्कर होगा। इस समय वह मेरे ही पास हैं और कल वाइसराय से भेंट करने जा रहे हैं। वास्तव मे वाइसराय से मुलाकात करने के लिए भूलाभाई सबसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति हैं। अब तो उनकी वैधानिक हैसियत भी है इसलिए उनकी भेंट का कुछ मूल्य होगा।

मुझे आशा है कि लक्ष्मी और बच्चा दोनो मजे मे होगे। देवदास तो तुषार कान्ति घोष बनते जा रहे है जो दिन मे 'पत्रिका' के लिए पसीना बहाते हैं और रात को उसका स्वप्न देखते हैं।

भवदीय
घनश्यामदास

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य
कांग्रेस भवन
माउण्ट रोड
मद्रास

१०८

कलकत्ता
२१ दिसम्बर, १६३४

प्रिय महादेव भाई,

एण्ड्रूज ने आज सर हेनरी क्रेग तथा वाइसराय से भेंट की और वहा से वे बडे प्रसन्न होकर लौटे। ऐसी भेंट मुलाकातो का नतीजा प्रत्यक्ष रूप से तो देखना सम्भव नही है पर गलतफहमी दूर करने के प्रयत्न मे वह थोडे-बहुत सफल अवश्य हुए हैं। मैं गत शनिवार को गवनर से मिला था और उन्होने उसी दिन वाइसराय से बात करने का वचन दिया था। मूर ने भी अवश्य बात की होगी। कल मैं सर सी० पी० (रामस्वामी अय्यर) से मिला था और वह कल शाम वाइसराय

के साथ विस्तारपूर्वक बात करनेवाले थे। सबके बाद एंड्रूज की बारी थी। उन्होंने वाइसराय को काफी खुश पाया। वह उन लोगों से कोई वचन लेकर तो नहीं आये हैं, पर अब उनकी पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करने की तैयारी रहेगी। एंड्रूज की धारणा है कि वे लोग इसके लिए अपेक्षाकृत अधिक उत्सुक हैं। यह मानने को जी नहीं करता, पर मेरे विचार में इस दिशा में उठाया गया प्रत्येक कदम हमारे लिए सहायक सिद्ध होगा।

हां, मैं तुम्हें यह तो बताना भूल ही गया कि गवर्नर ने मुझसे कहा था कि वे लोग व्यवस्थापिका सभा में कांग्रेस के साथ सम्पर्क साधेंगे। पर मैंने उनसे कह दिया कि विपक्षी दल के नेता से भेंट करने से कोई लाभ नहीं होगा क्योंकि वे तो दूसरे के निर्देश पर चलने के आदी हैं। मैंने कहा कि सबसे अच्छा तरीका तो यही है कि प्रमुख व्यक्ति के साथ पारस्परिक सम्पर्क स्थापित किया जाय। वह सहमत हुए। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि बापू के बारे में सचमुच गलतफहमी है जिसे मेरी राय में दूर करना ही चाहिए। हो सकता है कि बापू के दिल्ली में ठहरने से इस दिशा में कुछ प्रगति हो। मेरी राय में भूलाभाई काफी ठोस काम कर सकते हैं। वह विपक्षी दल के नेता हैं इसलिए मध्यस्थ बनने का उन्हें औरों से कहीं अधिक अधिकार है। पर बाकी बातें मिलने पर होंगी।

आज सर सी० पी० (रामस्वामी अय्यर) से मिलूंगा और पता लगाऊंगा कि वाइसराय के साथ उनकी क्या बातें हुईं। मैं डा० विधान का उल्लेख करना भूल गया था। वास्तव में उन्हीं के द्वारा सी० पी० ने वाइसराय से मिलने का निश्चय किया था।

मेरी अपनी राय तो यह है कि बापू और सरकार के बीच जो गलतफहमी चली आ रही है उसे दूर करने की हमने पूरे दिल से चेष्टा नहीं की। एक बात के बारे में मुझे अपनी धारणा बदलनी होगी। मैं बराबर यही कहता आ रहा था कि स्वयं वाइसराय बापू के साथ पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करने से बिदक रहे हैं। मेरे साथ अपनी बातचीत के दौरान गवर्नर ने इस मामले का स्पष्टीकरण किया। उनके शब्द ये हैं 'निःसंदेह यहां की और इंग्लैंड की सरकार की यह निर्धारित नीति है कि मिस्टर गांधी का भारतव्यापी व्यक्तित्व है इसलिए जब तक वह सविनय अवज्ञा आन्दोलन न उठायें उनके साथ भेंट न की जाय।' बापू ने सदैव यही कहा कि इसकी जड़ में हीर है। मेरी राय वाइसराय के बारे में यही थी। पर मुझे सरकार के एक भूतपूर्व सदस्य की जबानी मालूम हुआ कि दोष वाइसराय का नहीं उनकी केबिनेट का है और हीर केवल भारतीय केबिनेट की हां-में-हां मिलाता रहा है।

फेडरेशन द्वारा पारित प्रस्ताव का मसौदा अधिकाश म मैंने ही तयार किया था, और यद्यपि मैं दिल्ली जाने म असमथ रहा मुझे स्वभावत इस बात का सतोष है कि मैंने जिस रूप मे उसे तैयार किया था, उसी रूप म वह पारित हुआ।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई दसाई
माफत महात्मा गाधी,
वर्धा

१०६

वर्धा
२३ १२ ३४

प्रिय घनश्यामदासजी,

यह चिट्ठी केवल यह सूचना दन के लिए है कि दिल्ली जानेवाला दल काफी वडा हागा वह वफ की गेंद की तरह बराबर अपन आकार म वद्धि कर रहा है। आज कम स-कम बारह प्राणी गिन पाया हू (जिनमे ५ महिलाए है) और बापू न मुझे आपको पहल से ही सूचित करन का आदेश दिया है जिसस यदि आपको यह दल बहुत वडा लग तो आप नि सकोच तार भेज दें। वसा अवस्था म कुछ सदस्या को छाट दिया जायगा।

आपका विस्तत पत्र मिल गया। हम आशा करनी चाहिए कि मुलाकात का कुछ परिणाम निकलेगा। मैं भूलाभाई के प्रभाव का वढा चढाकर आकन का तयार नही हू पर देखें क्या हाता है। सीमा प्रात-सम्बन्धी पत्र व्यवहार पर व्यवस्थापिका सभा म प्रस्ताव क्या न पश किया जाय ? मुझे इन मामला की जानकारी नहीं है इसलिए यह नही कह सकता कि वसा प्रस्ताव पेश किया जा सकता है अथवा नहा। मैं ता सकेत मात्र द रहा हू। व्यवस्थापिका सभा वाइसराय से प्रतिबध उठाने की माग क्यो न कर ?

आशा है अब आप बिलकुल चग हो गये हांगे।

सप्रेम
महादेव

आश्रम,
वर्धा
२६ दिसम्बर १९३४

प्रिय घनश्यामदासजी,

साथ म जो लेख भेजता हू वह स्वामी आनन्द न 'हरिजन' के लिए लिखा था। इसमे विहार और सयुक्त प्रान्त के गन्ने की फसल तयार करनेवालो की दुरवस्था का वणन है, जिसका उन्होने बिहार भ्रमण क दौरान अध्ययन किया था। लेख म जो वत्त दिये गये है, उनकी प्रामाणिकता के बारे म सदेह नही है पर बापू इसे प्रकाशित करन स पहले इसम कही गई बातो की एम स्वतत्र साक्षियो स पुष्टि करा लेना चाहत है, जिन्होने विभिन्न अचलो की अवस्था को स्वय देखा हो। क्या आप कृपा करके बापू को अपन अनुभव की बात तथा स्वामी आनन्द के लेख के विषय म अपनी सम्मति लिख भेजेंगे ?

आपका
महादेव

१११

भाई घनश्यामदास,

तुम्हारे दो खत मेरे सामन पडे है। चावल क बारे म मैंन तो प्रत्यक्ष देखा के यहा पोलिश्ड चावल होते हैं। एक चावलवाले न ही बताया कि लोग पोलिश्ड ज्यादा पसद करते हैं तो भी कलकत्ते म तलाश करके मुझे लिखो। तुमने लिखा है आर्थिक दष्टि म ऊखल मूसल के ही पक्ष मे मत दिया जा सकता है। यह कैसे ? इतना दीन किसी ग्रामवासी के घर मे पैसे रह जायेंगे ? इसस अधिक है तो मुझे बताइये।

शक्कर और गुड के बार म भी दोनो दष्टि से देख लो और मुझे लिखो। इस नयी सस्था म कितनी दिलचस्पी लोगे, कुछ सहाय देने का इरादा किया है ? इस दष्टि मे अपने जीवन मे यथा शक्ति परिवतन कराग ? रामेश्वरदास ने इस विषय मे जो निश्चय किया है सो तो मालूम होगा ही।

तुम्हार आपरेशन का क्या हुआ। कुछ एक निश्चय कर लिया जाय।

बापु क आशीर्वाद

मैं इस मास तक तो यही हू। उतमानजेई के बारे मे अब लिखने का इरादा कर रहा हू।

११२

भाई घनश्यामदास,

तुमारे सब खत मिले हैं। 'अमृत बाजार पत्रिका' का उत्तर क्या देवें ? उसमे जो लेख आत हैं सो मसाले स भरे हुए रहते हैं। जो जानत हैं ऐसा हमेशा लिखते हैं, ऐसा भी नहिं है। मित्रो को समझान के लिये लिखना है तो उनको दूसरी तरह समझाया जाय।

एवाड की वात बहुत मुश्केल है। यदि मैंन जो रास्ता बताया है, उसका स्वीकार मुसलमान करें ता कुछ हो सकता है न भी करें तो वह रास्ता बिलकुल सीधा है। मुझे डर है कि वह माग भी स्वराजवादीओ को अच्छा नहिं जचेगा। हिंदु मुस्लीम सिख ऐक्य काज सिद्ध होने के लिय मैं कोई वायुमण्डल नही पाता हू।

धारासभा प्रवश का मैंन स्वतन्त्रतया देखा है। मुझे लगता है कि काग्रेस मे हमशा धारासभा प्रवेश का दल रहेगा ही उसी दल के हाथ म काग्रेस की वागडोर होनी चाहिय। और वही दल को काग्रेस क नाम की आवश्यकता रहती है मैंने यह वात हमशा क लिय मान ली है। वही लाग काई वार वहिष्कार भी करना होगा तो करें।

धारासभा प्रवश म मुसीबत काफी है। इसका हमला तो होता रहेगा। गलतीया होती रहेंगी दुरस्ती होगी नहिं होगी एस चलता रहेगा।

कलकत्ता से राची मुझको तो ज्यादा अच्छा लगता है। राची मे लागा के लिये सुभीता न रहे यह दूसरी बात है। राची म शान्ति मिलेगी। कलकत्ते म असभवित है। मैंने राजेन्द्र बाबु पर छोड दिया है।

तुमारा फेडरशन का व्याख्यान पढुगा और पढन के बाद अभिप्राय भेजुगा।

राची म मीटिंग होवे तो और आना शक्य है ता आ जाना अच्छा हो सकता है। निश्चयपूवक नहिं कह सकता हु।

बापु के आशीर्वाद

बाबा राघवदास न यह दिया है। हिंदी शिक्षका को तैयार करने की आवश्यकता ता है। देखने म योजना मुझे अच्छी लगती है और इतन खच म हिंदी प्रचार सेवक तैयार हो सके ता अच्छा ही है।

बापु

डिब्रूगढ

११३

माफत देवदास और लक्ष्मी

प्यारे बापू,

आपका पत्र अभी-अभी मिला। यदि उस ध्वस्त जिले म "हमारा आना आपक लिए भारस्वरूप न लगे ता हमे बिहार आकर आपस भेंट करके बडा आनन्द होगा। यदि आपको ठीक लगे तो हम शनिवार को रवाना होकर सोमवार को पटना पहुच जायें क्योकि डोरोथी ने आगरा नही देखा था और मैं उसे वह आनद प्रदान करना चाहती हू वह भी इसके लिए आतुर है। हमन शनिवार की रात आगर म बिताई।

देवदास आपकी ही भाति अपन अतिथिया को हर प्रकार की सुख सुविधाए देने के इच्छुक है। उन्ह हमारा प्रोग्राम पसन्द आया है। वह अब यह देख रहे हैं कि कौन सी रेलगाडी ठीक रहगी जिससे आपको सूचित किया जा सके कि सोमवार को हम पटना किस समय पहुचेंग।

हम यहा बिडला मिल म बड आराम से हैं। हम नीचे के तल्ले पर कमरे दिय गय है और हम बरामद म सोते हैं। शाहजन्ना की पुत्रियो के बगीचे म चहल कदमी करना कपडे धुलवाना और रफू करवाना तथा कुछ कपडा म काट छाट करके उन्ह सीना यह बडा अच्छा लगता है। देवदास के हाथ एक सिलाई की मशीन लग गई है, एक बिजली की इस्तरी भी मिल गई है। मुरब्बा भी है। घर ही म तयार की गई खान की भाति भाति की चीजें मौजूद हैं—ऐसी चीजें, जिनकी हमन स्वप्न मे भी कल्पना नही की थी। देवदास ने तो दलिया तक हम लाकर दिया।

आज वह हम दो चित्र प्रदशनिया म ल जा रहे हैं।

अब काम-काज की बात। बचारा विलिंग्डन। उसका नन्हा-सा मानस ह, हा, देखन म अवश्य अच्छा लगता है—लगता है न ? मैंने जितना सोचा था, वह उसस कही अधिक मिलनसारी के साथ पश आया। अत मेरे मन में जो कुछ था वह सब कहना मेरे लिए सम्भव हो गया। अत म मैंने उसस स्पष्ट शब्दो म अपील की। वह सब कुछ सुनता रहा पर उसका मानस कठोर बन गया है है न यही बात ? बार-बार कहता रहा मैं तो भौतिकवादी हू। पर मैं जितने की आशका कर रही थी, उसका दिमाग उतना बन्द नही लगा। वह जब तक यह समझे रहगा कि आपकी नीयत साफ नहा है तब तक वह जसा आचरण कर रहा है वसा ही

करता रहेगा। क्या आपकी क्या धारणा है ? मैंने थोडा-बहुत ठोस काम भी किया। कहा, लार्ड विलिंग्डन आप मिस्टर गाधी को जितनी बार चाहे भ्रा त और असगत कह पर उनकी नेकनीयती के बारे म सन्देह करने की रत्ती भर भी गुजाइश नही है।

मैंने यह बात शान्त भाव से पर निश्चयात्मक ढग स कही। पर जब वह इतने पर भी यही रट लगाता रहा कि वह मेरे कथन स सहमत नही है, तो मैंने उसे याद दिलाई कि मैं आपसे भली भाति परिचित हू आप मेरी बहन के और मेरे पुराने मित्र हैं आपके साथ मैं विभिन्न अवसरो पर विभिन्न क्षणो म तथा विभिन्न मन स्थितियो म रह चुकी हू पर मैंने आपको सदव नीयत का साफ पाया यह मैं प्राणो की बाजी लगाकर कह सकती हू।

उसका कहना है कि आपने उसे बहुत परेशान किया है उसके साथ सम्बन्ध रखने के मामले म आपने गलतिया की हैं और अब भी कर रहे हैं—चाहे मन्दिर प्रवेश का प्रसग हो या साधारण रग ढग का। उसने बताया कि यदि आप उसके साथ सहयोग करें तो इससे उसकी परेशानी बढेगी अवश्य पर तो भी वह आपका वसा करना पस द करेगा। वह चाहता है कि भारत का शासन काय पूणतया भारतवासियो के हाथो मे हो। बोला मैंने इसके लिए अपना जीवन उत्सग कर रखा है।

बातचीत आधा घण्टा चली, और मेरी धारणा है कि वह उपयोगी रही। कम स-कम उस चेतावनी तो मिल गई उसे अपने आपको एक अलग रोशनी म देखने का अवसर तो मिला। मैने उमस कहा कि अमेरिका जापान चीन की जनता की, असल मे सारे ससार के लोगो की आखें उस पर जमी हुई हैं व मुझसे बार बार यही पूछते हैं कि भारत मे शान्ति कब स्थापित होगी—एसी शान्ति, जो वास्तविक हो तथा जिसके दौरान भारत के सर्वोत्कृष्ट तत्वो का ब्रिटेन के सर्वोत्कृष्ट तत्वो के साथ सहयोग करना सम्भव हो ?

उसे आपके खिलाफ एक शिकायत है—वह शिकायत यही है कि आप उसे अब तक परशान करते आ रहे थे। उसकी धारणा है कि आप आत्म प्रवचना के शिकार है जबकि वास्तव म यह कमजोरी खुद उसकी है। जब वह यह दुबलता दूसरो म देखता है तो खीझ उठता है।

उसने कहा कि आपके आन्दोलन को अहिंसात्मक बताना अनगल प्रलाप-मात्र है इस आन्दोलन म बराबर हिंसा का विस्फोट होता आ रहा है। बोला, १९३२ मे जब आप आये तो वह आपसे भेंट करना चाहता था पर आपके तार ने यह काय असम्भव कर दिया। उसने कहा कि आपके सविनय अवज्ञा का परित्याग

११३

मार्फत देवदास और लक्ष्मी

प्यारे बापू

आपका पत्र अभी अभी मिला। यदि उस ध्वस्त जिले म ' हमारा आना आपक लिए भारस्वरूप न लगे" ता हम बिहार आकर आपसे भेंट करके बडा आनद होगा। यदि आपको ठीक लग तो हम शनिवार को रवाना होकर सोमवार को पटना पहुच जायें क्योकि डोरोथी न आगरा नही देखा था और मैं उसे वह आनद प्रदान करना चाहती हू वह भी इसके लिए आतुर है। हमन शनिवार की रात आगर म बिताई।

देवदास आपकी ही भाति अपन अतिथियो को हर प्रकार की सुख-सुविधाए देने के इच्छुक हैं। उन्ह हमारा प्रोग्राम पसन्द आया है। वह अब यह देख रहे है कि कौन सी रेलगाडी ठीक रहेगी जिससे आपको सूचित किया जा सके कि सोमवार को हम पटना किस समय पहुचेंगे।

हम यहा बिडला मिल मे बड आराम से हैं। हमे नीचे के तल्ले पर कमरे दिये गये है और हम बरामदे मे सोते हैं। शाहजहा की पुत्रियो के बगीचे मे चहल कदमी करना कपडे धुलवाना और रफू करवाना तथा कुछ कपडा म काट छाट करके उन्ह सीना यह बडा अच्छा लगता है। देवदास क हाथ एक सिलाई की मशीन लग गई है एक बिजली की इस्तरी भी मिल गई है। मुरब्बा भी है। घर ही मे तयार की गई खाने की भाति भाति की चीजें मौजूद हैं—ऐसी चीजें, जिनकी हमन स्वप्न म भी कल्पना नही की थी। देवदास ने तो दलिया तक हम लाकर दिया।

आज वह हमे दो चित्र प्रदर्शनियो म ले जा रहे है।

अब काम-काज की बात। बचारा विलिग्डन। उसका नन्हा-सा मानस है, हा, देखन म अवश्य अच्छा लगता है—लगता है न ? मैंन जितना सोचा था, वह उससे कही अधिक मिलनसारी के साथ पेश आया। अत मेरे मन म जो कुछ था वह सब कहना मरे लिए सम्भव हो गया। अत म मैंने उससे स्पष्ट शब्दो मे अपील की। वह सब कुछ सुनता रहा पर उसका मानस कठोर बन गया है है न यही बात ? बार-बार कहता रहा मैं तो भौतिकवादी हू। पर मैं जितन की आशका कर रही थी, उसका दिमाग उतना बन्द नही लगा। वह जब तक यह समझे रहेगा कि आपकी नीयत साफ नही है तब तक वह जसा आचरण कर रहा है वसा ही

करता रहेगा। क्या आपकी क्या धारणा है ? मैंने थोड़ा-बहुत ठोस काम भी किया। कहा, 'लार्ड विलिंग्डन, आप मिस्टर गांधी को जितनी बार चाहें भ्रान्त और असंगत कह पर उनकी नेकनीयती के बारे में सन्देह करने की रत्ती भर भी गुंजाइश नहीं है।

मैंने यह बात शान्त भाव से पर निश्चयात्मक ढंग से कही। पर जब वह इतने पर भी यही रट लगाता रहा कि वह मेरे कथन से सहमत नहीं है, तो मैंने उसे याद दिलाई कि मैं आपसे भली भांति परिचित हूं आप मेरी बहन के और मेरे पुराने मित्र हैं आपके साथ मैं विभिन्न अवसरों पर विभिन्न क्षणों में तथा विभिन्न मन:स्थितियों में रह चुकी हूं पर मैंने आपको सदैव नीयत का साफ पाया यह मैं प्राणों की बाजी लगाकर कह सकती हूं।

उसका कहना है कि आपने उसे बहुत परेशान किया है उसके साथ सम्बन्ध रखने के मामले में आपने गलतियां की हैं और अब भी कर रहे हैं—चाहे मन्दिर-प्रवेश का प्रसंग हो या साधारण रंग ढंग का। उसने बताया कि यदि आप उसके साथ सहयोग करें तो इससे उसकी परेशानी बढ़ेगी अवश्य, पर तो भी वह आपका वैसा करना पसन्द करेगा। वह चाहता है कि भारत का शासन कार्य पूर्णतया भारतवासियों के हाथों में हो। बोला मैंने इसके लिए अपना जीवन उत्सर्ग कर रखा है।

बातचीत आधा घण्टा चली और मेरी धारणा है कि वह उपयोगी रही। कम-से-कम उसे चेतावनी तो मिल गई उसे अपने आपको एक अलग रोशनी में देखने का अवसर तो मिला। मैंने उससे कहा कि अमेरिका, जापान, चीन की जनता की असल में सारे संसार के लोगों की आंखें उस पर जमी हुई हैं वे मुझसे बार-बार यही पूछते हैं कि भारत में शांति कब स्थापित होगी—ऐसी शान्ति, जो वास्तविक हो तथा जिसके दौरान भारत के सर्वोत्कृष्ट तत्वों का ब्रिटेन के सर्वोत्कृष्ट तत्वों के साथ सहयोग करना सम्भव हो ?

उसे आपके खिलाफ एक शिकायत है—वह शिकायत यही है कि आप उसे अब तक परेशान करते आ रहे थे। उसकी धारणा है कि आप आत्म प्रवंचना के शिकार हैं जबकि वास्तव में यह कमजोरी खुद उसकी है। जब वह यह दुर्बलता दूसरों में देखता है तो खीझ उठता है।

उसने कहा कि आपके आन्दोलन को अहिंसात्मक बताना अनर्गल प्रलाप-मात्र है इस आन्दोलन में बराबर हिंसा का विस्फोट होता आ रहा है। बोला १९३२ में जब आप आये तो वह आपसे भेंट करना चाहता था पर आपके तार ने यह कार्य असम्भव कर दिया। उसने कहा कि आपके सविनय अवज्ञा का परित्याग

करने की देर है, वह तुरत आपस भेंट करेगा। डा० अन्सारी की यह बात याद करके मैंने कहा कि शाति स्थापना स पहले काई नता अपना सबस बढिया अस्त्र कस डाल सकता ह। इसके उत्तर म उसने कहा कि 'वह न कोई घोषणा चाहता है न प्रतिना, न वैसी ही काई चीज, केवल इतना ही पर्याप्त होगा कि काय कारिणी अथवा कतिपय नेता मिलकर आन्दोलन स्थगित करन का निणय करें। मैंने कहा कि मैं केवल अपना ही विचार पश कर सकती हू कि नीति की गहराइया के विषय म मेरी जानकारी नही के बराबर है, कि जब मैं आपसे अतिम बार मिली थी उस समय आपका पता नही था कि मैं उसस मिलनवाली हू पर मरी अपनी धारणा यह है कि यदि आप सविनय अवना का अन्त करने को तयार हो भी जाए तो भी वसा नही कर सकते क्योकि तरुण समाज उसका यह अथ लगायेगा कि उसके साथ अन्याय किया जा रहा है। यह तरुण समाज तेज मिजाज के युवक युवतियो स भरा पडा है और यदि उसे ऐसा लगा तो सम्भव है कि वह रक्तपातपूण क्राति का माग अपनाए।

उसने कहा कि उसे ऐसी आशका नही है।

उसने कहा कि ज० ने० (जवाहरलाल नेहरू) का आपके ऊपर बडा प्रभाव है। मैंने कहा निसदेह यही बात है पर साथ ही आपका प्रभाव भी ज० ने० पर कम नही है। मैंने कहा कि ज० ने० जल्दी ही उत्तेजित हो जानेवाले व्यक्ति है यदि आपका उन पर बराबर नियन्त्रण नही रहता तो तरुण-समाज के कहने म आकर पता नही वह क्या कर बठत। फलत ज० ने० न अहिंसा का विवेकपूण माग अपनाना सीखा है।

पर मेरे इस कथन का उस पर कोई प्रभाव नही पडा।

तब मैंन अपना अतिम बाण छोडा कहा, माना कि मिस्टर गाधी ने बिलकुल गलत रास्ता अपनाया है और आपके लिए परेशानिया पदा की है पर हम तो इसाई हैं हम क्षमाशीलता की महत्ता म अटूट आस्था रखनी चाहिए। ईस्टर सन्निकट है उन दिना आप एक नयी पहल क्या नही करत और यह समझकर कि भगवान हमारे बीच शाति चाहता है, मिस्टर गाधी को क्यो नही बुला भेजते ?'

उसने मेरी बात हृदयगम तो की पर साथ ही यह कहकर कनी काटी कि वह भौतिकवादी है। उसने कहा कि सारा दोष शिक्षा पद्धति का है। जब से मकाले न इस पद्धति का जन्म दिया है तब से यहा जो कुछ उपद्रव होता आ रहा है, उसका दोष मुख्यत उसीके मत्थ मढना चाहिए। इस पद्धति के अनुरूप आचरण करन का परिणाम यह हुआ है कि बजाय इसके कि जन-कल्याण का प्रयत्न निचले स्तर से

ऊपर की ओर ले जाया जाना उसने शिखर को बोझिल बना दिया है जिससे शिखर के स्तर पर शिक्षा प्राप्त करनेवाले अनेक युवक बेकार हो गये हैं। उसके कथन का यही साराश है।

उसका यह भी कहना था कि सनातनियों और मन्दिर प्रवेश का समथन करने वालो के बीच भी काफी यमला है। उसने प्रश्न किया कि मन्दिर प्रवेश के लिए चेष्टा करने तथा उसके निमित्त बिल सामने लाने के बजाय जिसके फलस्वरूप एसा लगता है माना बरों के छत्ते को छेड दिया गया हो आपको अस्पश्यता निवारण के उत्तम काय पर ही ध्यान केन्द्रित रखना चाहिए था।

मैं हस पडी बोली बिलकुल यही तक शली स्वदश म सामाजिक कार्यों के प्रति अपनाइ जाती है। वहा लाग कहते हैं कुमारीजी आप इस्ट एण्ड म खूब अच्छा काम कर रही हैं। पर आप अपनी शक्ति सामथ्य का उपयोग स्वास्थ्य और शिक्षा क क्षेत्र तक ही सीमित क्यो नही रखती वेस्ट मिन्स्टर आ-आकर नये कानून पास करवाने के लिए सदस्यो म प्रचार काय म समय क्यो नष्ट करती है?'

लाड विलिंग्डन ने कहा कि दोनो परिस्थितियों में कोई सामजस्य नहीं है, यदि सनातनियो को न छेडा जाता तो व उतना थमेला खडा न करते पर अब वे अधिक क्षति पहुचायेंगे।

मैंने उत्तर दिया यार एक्सिलेंसी क्षमा कीजिए, हम ऐसा लगने लग कि हमारे गिरजा म कुछ ऐसे दूपण आ घुस हैं जो ईसा मसीह की शिक्षाओ को दुबल बना रहे हैं और उनके लिए घातक सिद्ध हो रहे हैं वसी अवस्था म क्या हम भी विरोध की चिन्ता न कर उन दूपणो के निवारण-काय म अपनी पूरी शक्ति नहीं लगा देंगे?'

उसने वही बात दुहराई, दोनो अवस्थाए भिन्न हैं। पर समूची मुलाकात के दौरान वह वातालाप म रुचि लेता दिखाई दिया। सम्भव है एसा वह कूटनीति की भावना स प्ररित होकर कर रहा हो। पर मैं समझती हू उसे मरी स्पष्टवादिता पसन्द आई शायद उस यह अच्छा लगा कि किसी ने तो उसे मुहतोड जवाब दिया। शायद वह इस शान शौकत और तडक भडक स ऊब जाय पर उसकी अधागिनी इसीम अपना गौरव समझती है।

मैं समझती हू, सर जान एण्डसन ने वाइसराय को उनके साथ मरी साडे तीन घण्ट की मुलाकात का ब्योरा भेज दिया था। आपको मालूम ही है कि मैंने

उनसे ऐसा करने का अनुरोध किया था। लार्ड विलिंग्डन का पहला प्रश्न इसी बाबत था।

बस, बहुत लिख चुकी।[1]

आपकी भगिनी,
म्युरियल लेस्टर

१ नकल बापू के निर्देश के अनुसार भेजी जा रही है।

११४

तार

महात्मा गांधी
कराची

इतने लम्बे उपवास की आवश्यकता नहीं समझता। उससे देश को अनावश्यक धक्का लगेगा। आशा है लालनाथ भी यह नहीं चाहेंगे। अनुरोध है यह तार लालनाथ को दिखाया जाए। आशा है, आप उपवास की अवधि पर सहमत हो जायेंगे। यह कदम कठोर लगता है। अंतिम निर्णय जैसा उचित समझें।

—घनश्यामदास

११५

मन्त्रियों का वेतन

एक सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री ने बड़े ही प्रभावपूर्ण ढंग से कहा : 'मुझे आशा है कि समाचार पत्रों में प्रकाशित इस रिपोर्ट से आपको आनन्द नहीं हुआ होगा कि कांग्रेसी मन्त्री ५००) मासिक वेतन लेंगे तथा निवासस्थान और दौरे के निमित्त ३००) अतिरिक्त भत्ता लेंगे। इतना ही पर्याप्त नहीं कि यह वेतन मान पहले की अपेक्षा कम है। वास्तव में इस विषय पर इस ढंग से विचार करना ही गलत है। इस विषय पर ठीक ढंग से विचार करने का यही मानदण्ड होना चाहिए कि वेतन

तथा भत्ता का यह स्तर ससार के इस सबसे दरिद्र देश की औसत आमदनी के किस अनुपात म है। काग्रेस के एक मत्री और एक सरकारी मत्री म क्या अ तर है? विद्यापीठ अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी तथा अन्य सस्थाओ के लिए आपने अधिकतम ७५) मासिक निश्चित किया है। विद्यापीठ का अध्यापक जिसे ७५) मासिक मिलता है, सरकारी मत्री होते ही ५००) मासिक क्यो पाने लगे? और उसके मत्री बनने की सभावना तो है ही। फर्ग्यूसन कालेज की बात लीजिए। वहा भी अध्यापको को ७५) से अधिक नही मिलता था। फिर एक मत्री और उसके सेक्रेटरी म किसी प्रकार का भेद क्या होना चाहिए? ये सब अपनी नियुक्ति स्वय ही करते है। क्या उन्हे किसी प्रकार का भेद भाव बरतने का अधिकार है? मैं स्वीकार करता हू कि यह सारा मेरी समझ के बाहर है। मुझे तो यही आशा है कि यह रिपोर्ट निराधार है और छहो काग्रेसी प्रान्तो के मत्री अपने आचरण द्वारा यह सिद्ध करेगे कि वे उन लाखो दरिद्रनारायणो के सच्चे प्रतिनिधि है, जिनके नाम पर तथा जिनकी सेवा के लिए वे पद ग्रहण कर रहे है। और उन्हें मोटरो की सवारी क्या करनी चाहिए? वे अपने काम पर पदल जा सकते है या ट्रामो या बसो म यात्रा कर सकते है। मैं जापान हो आया हू। वहा का वेतन स्तर रिपोर्ट म बताए गये यहा के स्तर से काफी नीचा है। फिर जापान एक स्वतन्त्र देश है और हमारे देश की अपेक्षा कही अधिक समृद्ध है। यदि हम मन्त्रियो के पदो को अपने लिए सुख चैन का साधन बनायेंगे, तो वैसा करके हम शासन विधान को शुरू से ही तोडने मे लग जायेंगे। आपने हरिजन म इस विषय की चर्चा छेडी है तो क्या यह मुनासिब नही होगा कि आप इस बारे म अपनी सम्मति भी व्यक्त करें और इस बुराई को बढने म रोकें बशर्ते कि रिपोर्ट सच्ची हो?

जो बातचीत हुई थी उसका साराश यही याद पडता है। वक्ता ने इन शब्दो म अपने हृदय की वेदना व्यक्त की था। उनकी वेदना मेरी भी वेदना थी। उनकी तरह मुझे भी यही आशा है कि रिपोर्ट म जो पूर्वानुमान किया गया है वह बेबुनियाद है। यह याद रखना चाहिए कि काग्रेस के प्रस्ताव म ५००) उच्चतम वेतन निर्धारित किया है। जहा तक मुझे मालूम है, इसम सभी-कुछ आ जाता है। उच्चतम वेतन की अनिवार्य आवश्यकता को सिद्ध करना होगा।

मो० क० गाधी

११६

कांग्रेसी मंत्रिमंडल

अब जबकि कार्यकारिणी तथा अन्य कांग्रेसी जनों ने पद ग्रहण करने के मामले में मेरी सम्मति से प्रभावित होना स्वीकार कर लिया है तब शायद मेरा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि सर्व-साधारण को बता दूं कि पद ग्रहण करने के विषय में मेरे क्या विचार हैं तथा कांग्रेस के निर्वाचन घोषणा पत्र को सामने रखकर क्या कुछ करना सम्भव है। हरिजन के संचालन कार्य में मैंने स्वतः अपने ऊपर जो प्रतिबंध लगा रखे हैं उन्हें शिथिल करने की सफाई पेश करने की कोई जरूरत नहीं है। कारण स्पष्ट है। भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति की दिशा में भारत-सरकार का ऐक्ट पूर्णतया असंतोषजनक है यह सभी जानते हैं। पर उस इस अर्थ में ग्रहण करना सम्भव है कि सीमित और निर्बल होते हुए भी यह कानून तलवार के स्थान पर बहुमत का राज्य स्थापित करने की दिशा में एक प्रयत्न है। तीन करोड़ स्त्री पुरुष मतदाताओं के निर्वाचन क्षेत्र बनाने तथा उनके हाथों में सौंपे गये व्यापक अधिकार को अन्य किसी नाम से नहीं पुकारा जा सकता। इस कानून के पीछे यह आशा निहित है कि हमारे ऊपर जो चीज लादी गई है, वह हमें प्रिय लगने लगेगी, अर्थात् अन्ततोगत्वा हम अपने शोषण को वरदान के रूप में ग्रहण करने लगेंगे। यदि इन तीन करोड़ मतदाताओं के प्रतिनिधियों में आत्मविश्वास रहा और यदि उन्होंने सौंपे गये अधिकारों का (जिसमें पद ग्रहण करना भी शामिल है) बुद्धि विवेक के साथ उपयोग किया तो इस कानून के रचयिताओं के इरादे को नाकाम करना सम्भव है, और यह आसानी से किया जा सकता है। हम इस कानून पर कानून की ही परिधि में रहते हुए ऐसे ढंग से अमल करें जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी और ऐसे ढंग से अमल करने से बचें जिसकी उन्हें हमसे अपेक्षा थी। इस प्रकार मंत्रिमंडल शिक्षा को आबकारी कर से प्राप्त हुए धन के ऊपर निर्भर रहने की बजाय उसे स्वावलंबी बनाकर तुरंत मद्यपान निषेध को अमल में ला सकता है। यह सुझाव चौंका देनेवाला मालूम देगा, पर है यह पूर्णतया सम्भव और यह विवेकयुक्त तो है ही। जेलों को सुधार गृह और कारखाना में बदल दिया जाय। यह खर्चीले और दण्ड देने के स्थान न रहकर स्वावलंबी शिक्षण संस्थाएं बन जायें। इर्विन गांधी-समझौते का अब नमकवाला अंश ही जीवित बचा है। उसके अन्तर्गत नमक गरीबों के लिए निःशुल्क मिलना चाहिए था, पर यह

नही हो रहा है। अब इस कम-स-कम काग्रेस द्वारा सचालित प्रा ता म नि शुल्क कर देना चाहिए। जितना कपडा खरीदा जाय वह खादी हो। अब आपका ध्यान नगरा पर नहा ग्रामा पर केन्द्रित होना चाहिए। यह सब जा कई उदाहरण दिय गय हैं आरम्भिक उदाहरण हैं। यह सब कानून के भीतर किय जा सकते हैं। पर अभी तक इनम मे किसी का भी हाथ मे नही लिया गया है।

अब मन्त्रिया के व्यक्तिगत आचरण की बाबत। काग्रसी मत्री किस ढग का आचरण करेंगे ? उनका अध्यक्ष अर्थात काग्रेस का अध्यक्ष तीसर दर्जे म यात्रा करता है। क्या वे पहल दर्जे म सफर करेंगे ? काग्रस-अध्यक्ष मोटी खादी क कुरत बडी और धाती से ही सतुष्ट रहता है क्या मत्री लोग पाश्चात्य ढग की वेश भूषा अपनायेंगे तथा पाश्चात्य स्तर का खच करेंग ? पिछल १७ वर्षों से काग्रस जन हद दर्जे की सादगी बरतन आ रहे हैं। राष्ट्र अपन मन्त्रिया स यह आशा करेगा कि वे अपने प्राता के शासन-काय म वही सादगी लायें। यह सादगी लज्जा का विषय नही है, गव का विषय है। हम लाग ससार भर म सबस अधिक दरिद्र हैं। हमम स लाखा, करोडो का आधे पट रहना पडता है। एसे राष्ट्र के प्रतिनिधि अपन मतदाताआ के जीवन स्तर स बाहर जान का दु साहस नही कर सकते। अग्रेज लागा न यहा विजेताआ की हैसियत स ऐसी जीवन पद्धति चलाई थी जिसका असहाय विजितो की जीवन पद्धति से कुछ लेना-देना नही था। यदि मत्री लोग केवल इतना ही करें कि गवनरो तथा सुरक्षित सरकारी अमले की नकल करने म बचे रह, ता इतने ही स यह प्रमाणित हा जायगा कि काग्रेस की मनोवत्ति और शासका की मनोवृत्ति म कितना महान अ तर है। हमारे और उनके बीच किसी प्रकार की साझेदारी की कल्पना उतनी ही असम्भव है जितनी एक भीमकाय और एक बौन के बीच साझेदारी की कल्पना।

कही काग्रेसी जन यह न समझ बठें कि उ होने सादगी का ठेका ले लिया ह या यह न सोचने लगें कि उ हान १९२० म पतलून और कुर्सी का परित्याग कर गलती की। मैं खलीफा अबूबकर और खलीफा उमर के उदाहरण पश करना प्रासगिक समझता हू। राम और कृष्ण प्रागतिहासिक थे, इसलिए उनके नाम गिनाना शायद ठीक न जचे। पर हम इतिहास बताता है कि प्रताप और शिवाजी कितनी सादगी से रहते थे। शक्ति रहत हुए उ हाने क्सा आचरण किया इस बार म मतभेद सभव है। पर पगम्बर साहब क बार मे तो दो रायें हो ही नही सकती। यही बात खलीफा अबूबकर और खलीफा उमर पर लागू होती है। ससार भर की निधि उनके कदम चूमती थी पर वे जिस ढग का कठोर जीवन व्यतीत करत थे उसकी सानी सारी दुनिया क इतिहास म ढूढे न मिलेगी। खलीफा

११६

काग्रेसी मन्त्रिमडल

अब जबकि कार्यकारिणी तथा अन्य काग्रेसी जनो ने पद ग्रहण करने के मामले मे मेरी सम्मति से प्रभावित होना स्वीकार कर लिया है, तब शायद मेरा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि सर्व-साधारण को बता दू कि पद ग्रहण करने के विषय मे मेरे क्या विचार हैं तथा काग्रेस के निर्वाचन घोषणा पत्र को सामने रखकर क्या कुछ करना सम्भव है। हरिजन के सचालन कार्य मे मैने स्वत अपने ऊपर जो प्रतिबध लगा रखे है उन्हे शिथिल करने की सफाई पेश करने की कोई जरूरत नही है। कारण स्पष्ट है। भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति की दिशा मे भारत-सरकार का ऐक्ट पूर्णतया असतोषजनक है यह सभी जानते है। पर उसे इस अर्थ मे ग्रहण करना सम्भव है कि सीमित और निर्बल होते हुए भी यह कानून तलवार के स्थान पर बहुमत का राज्य स्थापित करने की दिशा मे एक प्रयत्न है। तीन करोड स्त्री पुरुष मतदाताओ के निर्वाचन क्षेत्र बनाने तथा उनके हाथो मे सौंपे गये व्यापक अधिकार को अन्य किसी नाम से नही पुकारा जा सकता। इस कानून के पीछे यह आशा निहित है कि हमारे ऊपर जो चीज़ लादी गई है वह हम प्रिय लगने लगेगी, अर्थात अन्ततोगत्वा हम अपने शोषण को वरदान के रूप मे ग्रहण करने लगेंगे। यदि इन तीन करोड मतदाताओ के प्रतिनिधियो मे आत्मविश्वास रहा और यदि उन्होंने सौंपे गये अधिकारो का (जिसमे पद ग्रहण करना भी शामिल है) बुद्धि विवेक के साथ उपयोग किया तो इस कानून के रचयिताओ के इरादे का नाकाम करना सम्भव है और यह आसानी से किया जा सकता है। हम इस कानून पर कानून की ही परिधि मे रहते हुए ऐसे ढग से अमल करें जिसकी उन्होने कल्पना भी नही की थी और ऐसे ढग से अमल करने से बचे जिसकी उन्हे हमसे अपेक्षा थी। इस प्रकार मन्त्रिमडल शिक्षा को आबकारी कर से प्राप्त हुए धन के ऊपर निर्भर रहने की बजाय उसे स्वावलबी बनाकर तुरत मद्यपान निषेध को अमल मे ला सकता है। यह सुझाव चौंका देनेवाला मालूम देगा पर है यह पूर्णतया सम्भव, और यह विवेकयुक्त तो है ही। जेलो को सुधार गृहो और कारखानो मे बदल दिया जाय। यह खर्चीले और दण्ड देने के स्थान न रहकर स्वावलबी शिक्षण सस्थाए बन जायें। इर्विन गाधी-समझौते का अब नमकवाला अश ही जीवित बचा है। उसके अन्तर्गत नमक गरीबो के लिए नि शुल्क मिलना चाहिए था, पर यह

नहा हो रहा है। अब इस कम-से-कम कांग्रेस द्वारा सचालित प्रान्तो म निःशुल्क कर देना चाहिए। जितना कपडा खरीदा जाय वह खादी हो। अब आपका ध्यान नगरा पर नहा ग्रामो पर केन्द्रित होना चाहिए। यह सब जो कई उदाहरण दिये गये हैं आकस्मिक उदाहरण हैं। यह सब कानून के भीतर किय जा सकते हैं। पर अभी तक इनम स किसी को भी हाथ म नही लिया गया है।

अब मन्त्रियो क व्यक्तिगत आचरण की बाबत। कांग्रेसी मत्री किस ढग का आचरण करेंगे? उनका अध्यक्ष अर्थात कांग्रेस का अध्यक्ष तीसर दर्जे म यात्रा करता है। क्या वे पहले दर्जे मे सफर करेंगे? कांग्रेस-अध्यक्ष मोटी खादी क कुरते बडी और धोती से ही सतुष्ट रहता है, क्या मत्री लोग पाश्चात्य ढग की वेश भूषा अपनायेंगे तथा पाश्चात्य स्तर का खच करेंगे? पिछल १७ वर्षों स कांग्रेस जन हद दर्जे की सादगी बरतत आ रहे हैं। राष्ट्र अपन मत्रियो स यह आशा करेगा कि वे अपने प्रान्तो के शासन काय म वही सादगी लायें। यह सादगी लज्जा का विषय नही है, गव का विषय है। हम लोग ससार भर म सबस अधिक दरिद्र हैं। हमम स लाखो करोडो को आधे पेट रहना पडता है। एस राष्ट्र के प्रतिनिधि अपन मतदाताओ के जीवन स्तर स बाहर जान का दुसाहस नही कर सकत। अग्रेज लोगो न यहा विजताओ की हसियत से ऐसी जीवन पद्धति चलाई था, जिसका असहाय विजितो की जीवन पद्धति से कुछ लना-देना नही था। यदि मत्री लोग कवल इतना ही करें कि गवनरो तथा सुरक्षित सरकारी अमल की नकल करने से बचे रह तो इतने ही स यह प्रमाणित हो जायेगा कि कांग्रेस की मनोवृत्ति और शासको की मनोवृत्ति म कितना महान अन्तर है। हमारे और उनक बीच किसी प्रकार की साझेदारी की कल्पना उतनी ही असम्भव है जितनी एक भीमकाय और एक बौने के बीच साझेदारी की कल्पना।

कहा कांग्रेसी जन यह न समझ बठें कि उन्होने सादगी का ठेका ल लिया है या यह न सोचने लगें कि उन्होंने १९२० म पतलून और कुर्सी का परित्याग कर गलती की। मैं खलीफा अबूबक्र और खलीफा उमर के उदाहरण पश करना प्रासगिक समझता हू। राम और कृष्ण प्रागैतिहासिक थे, इसलिए उनके नाम गिनाना शायद ठीक न जचे। पर हमें इतिहास बताता है कि प्रताप और शिवाजी कितनी सादगी मे रहते थे। शक्ति रहत हुए उन्होने कसा आचरण किया, इस बार म मतभेद सभव है। पर पगम्बर साहब के बारे म तो दो रायें हो ही नही सकती। यही बात खलीफा अबूबक्र और खलीफा उमर पर लागू होती है। ससार भर की निधि उनके कदम चूमती थी पर वे जिस ढग का कठोर जीवन व्यतीत करते थे, उसकी सानी सारी दुनिया के इतिहास म ढूढे न मिलेगी। खलीफा

उमर जब फिलस्तीन पहुचे, जिसे उनके मातहतो ने हाल ही म जीता था, ता वह उन्हे उस दूरस्थ इलाके म माटे कपडे और मोटे आटे का व्यवहार न करते देख पागल मे हो गये थे। यदि काग्रेसी मत्रियो ने उसी सादगी और मितव्ययिता को अपनाये रखा जा उन्हे १९२० से विरासत म मिली है तो उनके पास पसे की कमी नही रहेगी, जिस व निर्धनो का कष्ट दूर करने मे लगा सकेंगे और इस प्रकार सरकारी अमले की जीवन शैली मे भी क्राति उत्पन्न कर सकेंगे। मेरे लिए यह कहना अनावश्यक है कि सादगी का अर्थ फटेहाल रहना कदापि नही है। सादगी म एक ऐसा सौन्दर्य एक ऐसी मर्यादा निहित है जो स्पष्ट ही देखी जा सकती है। स्वच्छ साफ और सभ्रान्त दिखाई देने के लिए रुपये की जरूरत नही है। बहुधा तडक भडक कुरुचि का पर्याय साबित होती है। यह आडम्बरहीन जीवन इस बात को दरसाने का सबूत बने कि वर्तमान एकट जनता की आकाक्षा का पूरा करने म असमर्थ है और जिसे समाप्त करने का हमने सकल्प ले रखा है।

अग्रेजो के समाचार पत्र भारत को हिन्दू और मुस्लिम राष्ट्र के रूप म बाटने की अनवरत कोशिश कर रहे हैं। काग्रेस बहुल प्रान्तो को हिन्दू बताया गया है और बाकी को मुस्लिम। बात सरासर झूठी है। पर इसकी उन्हे क्या चिन्ता? मेरी एकान्त अभिलाषा है कि छहो प्रान्तो के मत्रिमडल अपने अपने प्रान्त को इस ढग से चलायेंगे कि इस दिशा म किसी भी प्रकार के सशय की गुजाइश न रहे। वे अपने आचरण द्वारा अपने मुसलमान सहयोगियो का पूर्ण समाधान कर देंगे कि वे हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई पारसी आदि म कोई भेद नही करते। न वे सवर्ण और अवर्ण हिन्दुओ के पचडे मे ही पडेंगे। व जो कुछ भी करेंगे वह इस बात का प्रतीक होगा कि उनके निकट सभी एक ही मा की सन्तान है न कोई ऊचा है, न कोई नीचा। प्रमुख समस्याए सबके लिए एकसमान हैं। अब तक जो कुछ देखने मे आया है उसके आधार पर कहा जा सकता है कि अग्रेजी ढग की व्यवस्था हमारी व्यवस्था से भिन्न है—उनकी व्यवस्था मे स्त्रियो और पुरुषो के लक्ष्य अलग अलग हैं जबकि हम दोनो को एक ही मानव परिवार के सदस्य मानते है। अब वे दोनो कधे से कधा मिलाकर काम करेंगे। ऐसा पहले कभी नही हुआ था।

मैंने इस कानून को मानवीय दृष्टिकोण से देखा है और अपने निष्कर्ष के आधार पर मेरा यह कहना है कि जब दोनो पक्ष एकसाथ मिलकर बठेंगे दोनो के अलग अलग इतिहास दोनो की अलग अलग परम्पराए अलग पृष्ठ भूमि लक्ष्य आदि होते हुए भी जब ये दोनो पक्ष एक दूसरे को अपने दृष्टिकोण की

साथकना का कायल करन का प्रयत्न करग। सस्थान निर्जीव और निष्प्राण हो सकत हैं पर उनका सचालन करनवाला के पास तथा उनस काम लनवाला क पास हृदय ह। यदि अग्रेज लाग या अग्रेजियत क रग म रग भारतवासी भारतीय दष्टिकाण को, जा वस्तुत काग्रेसी दष्टिकोण ह हृदयगम कर सकें ता काग्रेस की आधी लडाई जीती जिताई ह, और पूण स्वराज्य बिना एक बूद रक्त बहाय प्राप्त हा सकता है। म इसी का अहिसक माग कहता हू। 'यह माग मूखतापूण हो सकता ह अव्यावहारिक हो सकता ह, पर काग्रेस-जनो के लिए अय भारत वासियो के लिए तथा अग्रेजो के लिए भी इस माग की जानकारी हासिल करना वाछनीय हैं। पदग्रहण करने का यह अथ कदापि नही ह कि हम ऐक्ट को किसी भी तरह चलायें। काग्रेस के पूण स्वराज्य के लक्ष्य की दिशा म यह एक गभीरता से उठाया गया कदम-मात्र ह। एक ओर यह रक्तपात बचाने का गभीर प्रयत्न ह दूसरी ओर सामूहिक अवना का टालन का प्रयत्न ह जिसका व्यापक सहारा अब तक नही लिया गया ह। भगवान इस प्रयत्न का सफल करें।

११७

महाशय

म आपक पत्र का एक अदना सा प्रशसक हू इसलिए स्वराज्य पार्टी के गठन से सम्बद्ध मेरी प्रेस मुलाकात को लेकर आपने जा आलोचना की उसे मैंन यथो चित आदर भाव के साथ पढा। मैं अपनी सीमाओ को जानता हू और अपने क्षेत्र स बाहर बहुत कम जाता हू। मैं न ता कोई राजनीतिज्ञ हू और न मुझे स्वराज्य पार्टी क जन्म अथवा गठन म काइ विशेष दिलचस्पी ही है इसलिए यदि मैं इस विषय पर कुछ न कहता तो शायद अधिक विवक का परिचय देता। यदि प्रेस रिपाटर मुझ तक न पहुचता और कम प्रश्न न करता जिनके उत्तरो का लकर आपक जम प्रतिष्ठित पत्र न मेरी धज्जिया उडाई हैं तो मैं बच गया होता। फिर भी सम्पादक महोदय मैं इतना अवश्य कहूगा कि अपनी मुलाकात क साम्प्रदायिक निणय स सम्बद्ध जिस अश को आपने शरारत से भरा और 'तकशून्य' बताया है उसम व्यक्त किया गया विचार निश्चयात्मक ढग से हजारा बार दुहराया जाता रहा है और तिस पर भी उस पर किसी को कोई गम्भीर आपत्ति नहा हुई।

मुझे यह देखकर मनोव्यथा हुई कि मेरे उक्त विचार के सार्वजनिक प्रकाशन के तुरत बाद मेरे कई मित्रो ने जिन्हें मेरी ख्याति की चिंता रहती है मुझे आडे हाथो लिया—इसलिए नही कि मेरे विचार अमुक प्रकार के हैं बल्कि इसलिए कि मैंने उन्हे खुल्लम खुल्ला व्यक्त करने का दुस्साहस किया। आपकी आपत्ति उनके सार्वजनिक प्रकाशन पर नही उनके अपने गुण दोष पर है इसलिए मैं उसकी सराहना करता हू।

पर मैं यह तो स्पष्ट कर ही दू कि मैंने साम्प्रदायिक निर्णय को जिसे वास्तव म साम्प्रदायिक निश्चय कहना चाहिए कभी पसन्द नही किया। इसके बावजूद वह जैसा कुछ है उसे वैसा ही रहने देना ठीक होगा क्योकि उसका मुझे कोई व्याव हारिक विकल्प दिखाई नही पडता। जब दो जातियां नेकनीयती अथवा बदनीयती के साथ सारे प्रयत्नो के बावजूद सर्वसम्मत आपसी समझौते के द्वारा किसी निर्णय पर पहुचने म असमर्थ रही तो इसके सिवा और क्या चारा रह जाता है कि एक तीसरे पक्ष को जो सशक्त है और अपने निश्चय को लादने म समर्थ हे हस्तक्षेप करने का न्योता दिया जाय? महोदय आपको मालूम नही है कि समय समय पर इस गुत्थी को सुलझाने की देश क सभी बडे-बडे आदमी कोशिश करके हार गय। म यह स्वीकार करता हू कि पर्दे के पीछे काम कर रहे गर्हित तत्वो न सम्मानपूर्ण समझौता असम्भव बना दिया था पर यदि हम ऐसे तत्वो क प्रभाव म आ सकते हैं तो हमारा शिकायत करना बेजा है। द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेंस मे मैं भी था और बहुतेरे यह जानकर हक्के-बक्के रह जायगे कि मुनासिब सम झौते की राह म यदि प्रतिक्रियावादी मुसलमान रोडे अटका रहे थे तो ऐसे प्रति क्रियावादी धर्मान्ध हिन्दुओ का भी अभाव नही था जिन्होने गाधीजी के सम्मान पूर्ण समझौते के सारे प्रयत्नो पर पानी फेर दिया था। मुझे उनके नाम गिनाने की जरूरत नही। हिन्दू सभाई नेतागण प्रथम गोलमेज कान्फ्रेंस के समय से ही (ब्रिटेन के) प्रधान मत्री के पच फैसले के पक्ष म इतना जोर लगा रहे थे कि जब गाधी समिति म किसी ने यह सकेत दिया कि गाधीजी और आगा खा को पच फैसला करना चाहिए तो सबसे प्रबल विरोध स्वय हिन्दू सभाई नेताओ की ओर से हुआ था। गोलमेज कान्फ्रेंस के अन्तिम चरण म अवस्था इतनी असह्य हो गई कि सबकी यह राय हुई—जिससे कुछ को घोर मानसिक वेदना भी हुई—कि सर कार से अपना निर्णय देने को कहा जाय। इस प्रकार सरकार का निर्णय अच्छा बुरा जैसा भी हो—अनिवार्य हो गया। महोदय मेरी समझ म नही आता कि मेरे इस कथन में कि साम्प्रदायिक निश्चय को जैसा है वैसा ही रहने दिया जाय शरारत या तर्क शून्यता' की कौन-सी बात है? मैं यह नही कहता की आपसी

एकता के लिए हिन्दुओं और मुसलमानों के संयुक्त प्रयत्नों के द्वारा साम्प्रदायिक निर्णय की पुनरावृत्ति असम्भव है। वस्तुतः पंडित मालवीयजी—वयोवृद्ध महापुरुष जो आपसी समझौते के लिए सदैव सचेष्ट रहने में कभी नहीं थकते—साम्प्रदायिक निर्णय का स्थान लेने योग्य अपेक्षाकृत अधिक संतोषप्रद समझौते की तलाश में रहते ही हैं। इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। यदि पंडितजी की अपेक्षा अधिक आशावादी और सक्रिय आदमी आगे बढ़कर उनका स्थान ले सकें तो अच्छा ही है। उन्हें भी प्रयत्न करना चाहिए और हम सबको मिलकर भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए कि उनके प्रयत्न सफल हों। पर यदि हम आपस में समझौता करने में असफल रहते हुए भी जो कुछ हमारे सामने प्रस्तुत है उसे अस्वीकार करते रहें तथा हिन्दू राज और मुस्लिम राज का हौवा दिखाकर साम्प्रदायिक ज्वालाओं में ईंधन झोंकते रहें तो मेरी समझ में नहीं आता कि वैसा करने से हम देश की किस प्रकार सेवा करेंगे। महोदय यह बड़े ही दुःख का विषय है।

आप बंगाल और पंजाब में 'मुस्लिम राज' की बात कहते हैं। शायद मुसलमान इसका मुँहतोड़ उत्तर यह कहकर देंगे कि उन्हें मध्य प्रांत, संयुक्त प्रांत, बिहार, मद्रास, बम्बई आदि में हिन्दू राज स्थापित होने की आशंका है। पर सम्पादक महोदय, क्या आप सचमुच इन प्रांतों में हिन्दू राज के हौवे में विश्वास रखते हैं? यदि नहीं, तो आप बंगाल और पंजाब में मुस्लिम राज की बात क्या कहते हैं? जब वोट साम्प्रदायिक आधार पर दिये जा सकते हैं तो मस्जिदों के आगे बाजे तथा मंदिरों के पीछे अजान की बात उठाने से बढ़कर मूर्खता की बात और क्या हो सकती है? और कुछ वर्ष बाद यह सब भी गायब हो जायगा। पर दैनिक जीवनचर्या के क्षेत्र में हिन्दुओं के हित मुसलमानों के हितों से अथवा मुसलमानों के हित हिन्दुओं के हितों से टकरायेंगे इसकी तो मैं स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकता। इस समय भी वोट साम्प्रदायिक आधार पर नहीं डाले जाते हैं। सर अब्दुर्रहीम-जैसा मुसलमान ओटावा पैक्ट का विरोध करता है और कई अच्छे खासे हिन्दू उसका अनुसरण करते हैं जबकि एक और मुसलमान हाजी अब्दुल्लाहारून उसका समर्थन करता है और उसका समर्थन भाई परमानन्द जैसे एक महान हिन्दू के द्वारा होता है। अभी कुछ दिन पहले कलकत्ता कार्पोरेशन के मेयर के चुनाव में एक मुसलमान विजयी हुआ क्योंकि उसे हिन्दुओं के वोट मिले थे, जबकि यदि मैं वोटर होता तो श्री नलिनी सरकार को वोट देता।

सन् १९३५ में २४ फरवरी से लगाकर २१ दिसम्बर तक जो वोट पड़े उनकी तालिका नीचे दी जा रही है जो रोचक सिद्ध होगी

सन १९३३ मे

जिन वोट-निणयो मे सरकार ने भाग लिया

तारीख	विषय	सरकार के पक्ष मे	सरकार के विपक्ष मे	सरकार के विरुद्ध मुसलमान वोट
२४ २ १९३३	रलवे बजट-सम्ब धी प्रस्ताव	४८	१८	५
६ ३ १९३३	जायकर कटौती विपयक प्रस्ताव	४१	३३	८
७ ३ १९३३	सनिक व्यय सबधी कटौती प्रस्ताव	३७	३८	१२
८ ३ १९३३		४४	३९	१२
१६ ३ १९३३	आर्थिक बिल सशोधन	४९	३१	५
२२ ३ १९३३	डाक तार सबधी प्रस्ताव	४६	३६	९
२४ ३ १९३३	शारदा ऐक्ट बिल सशोधन वितरण प्रस्ताव	४९	४४	१९
२५ ३ १९३३	आर्थिक बिल	५१	३८	१३
"	,	५६	४१	१०
,	, ,	४३	४८	१४
२७ ३ १९३३	आर्थिक बिन (आयकर)	५७	४७	१४
"	,	३३	५९	१६

९ १२ १९३३	अधिक शाखाए	८६	३९	१०
”	लन्दन शाखा	४५	८६	१३
११ १२ १९३३	दो भारतीय गवनर	५३	२८	६
१३ १२ १९३३	बकिंग का अनुभव	६२	३१	६
”	का आपरेटिव सोसाइटिया	८२	८०	९
१४ १२ १९३३	आदमी पीछे एक वोट	५५	२८	६
”	विधान सभाआ पर प्रतिबध	८७	३५	८
१५ १२ १९३३	सावजनिक सस्थाओ की निधि का लगाना	५८	१३	३
१९ १२ १९३३	मुद्र विनिमय की दर	६३	४५	८
”	” ”	५७	८७	११
२१ १२ १९३३	२५ वष की सीमा सबधी दफा	४५	१६	४
			१२०२	३३०

सरकार के विपक्ष में विभिन्न अवसरों पर १२०२ वोट पड़े जिनमें से मुसलमान वोट ३३० थे। ऊपर की तालिका से स्पष्ट हो गया कि सरकार के विपक्ष में जितने वोट पड़े उनमें २७½ प्रतिशत मुसलमान वोट थे। कुल मिलाकर ६२ निर्वाचित गैर मुस्लिम सीटें हैं और ३० मुस्लिम सीटें हैं। इस प्रकार सारे निर्वाचित भारतीय सदस्यों में से मुसलमानों के हिस्से में ३२½ सीटें आती हैं जबकि २७½ प्रतिशत वोट सरकार के विपक्ष में पड़े। इन आंकड़ों को देखकर यह नहीं कहा जा सकता है कि यह रिकार्ड बुरा रहा और यह उस अवस्था में है जब व्यवस्थापिका सभाओं में राष्ट्रवादी मुसलमानों का अभाव है। साम्प्रदायिक निर्णय के द्वारा वर्तमान अवस्था में भी कोई परिवर्तन होगा तथा हिन्दू हिन्दुओं के साथ और मुसलमान मुसलमानों के साथ जो मिलने का भयावह चमत्कार दिखाने में किस प्रकार समर्थ होंगे और इस प्रकार साम्प्रदायिक राज को जन्म देंगे—यह मेरी समझ में नहीं आता। अभी तक तो ऐसा हुआ नहीं है। यह तो विवेकयुक्त देशभक्ति तथा निहित स्वार्थों का प्रश्न है—जो कहीं मुसलमानों पर लागू होता है तो कहीं हिन्दुओं पर।

महोदय आप कहते हैं कि श्वेत पत्र का आधार साम्प्रदायिक निर्णय है। आपके प्रति आदर प्रकट करते हुए मैं इस पर अपनी असहमति व्यक्त करता हूं। श्वेत-पत्र साम्प्रदायिक निर्णय पर आधारित नहीं है। यह अंग्रेजों की इस मूर्खतापूर्ण आशंका पर आधारित है कि यदि तथाकथित संरक्षणों की व्यवस्था नहीं रखी गई, तो उनके निहित हितों पर आक्रमण आयगा। यह संरक्षण परले सिरे का मूर्खतापूर्ण कदम है और इनसे न अंग्रेजों के हितों की रक्षा होगी और न भारतीय हितों की। श्वेत पत्र में इस तथ्य की अवहेलना की गई है कि इंग्लैंड के लिए सबसे बढ़िया संरक्षण एक संतुष्ट भारत है। अपने वर्तमान रूप में श्वेत-पत्र न तो इंग्लैंड की वास्तविक सहायता कर पायगा न भारत की। इसके द्वारा सुसंचालित शासनकार्य असम्भव हो जायगा। इसके द्वारा जन साधारण पर पहले से भी अधिक आर्थिक भार लाद दिया जायगा। इसके द्वारा सरकारी ढांचा और भी अधिक खर्चीला हो जायगा। इन सारी बातों का एकमात्र परिणाम यह होगा कि असंतोष बढ़ेगा और कटुता भी बढ़ेगी जो देश के सभी हितैषी कभी भी नहीं चाहेंगे। अतएव श्वेत पत्र का विरोध कुछ इसलिए नहीं किया जा रहा है कि उसमें मुसलमानों या हिन्दुओं को कुछ सीटें देने में रियायत से काम लिया गया है बल्कि इसलिए कि इसकी आधार शिला ही गलत है और किसी भी पक्ष के लिए वह स्वीकार्य नहीं है। वर्तमान साम्प्रदायिक निर्णय के साथ भी एक अधिक अच्छा शासन विधान तैयार किया जा सकता है। अकेले इसी तथ्य से

इस सुझाव का निराकरण हो जाता है कि श्वेत पत्र साम्प्रदायिक निर्णय पर आधारित है।

अन्त में मैं एक बात और कहना चाहूँगा और ऐसा मैं बड़ी झिझक और सकोच के साथ कह रहा हूँ। आपने मेरे ऊपर आरोप लगाया है कि मैं बगाल के हितो की ओर से आँखें मूँदे हुए हूँ क्योकि मैं बगाली नही हूँ। मैं आपकी सूचना के लिए यह बताना चाहता हूँ कि जयपुर में—जहा से मेरा निकास है पिछली तीन पीढियो से हमारे प्रतिष्ठित बगाली प्रधान मत्री रहते आये हैं और यह बात हम लोगो के मानस मे उतरी ही नही कि बगाली प्रधान मत्री राजस्थानियो के हितो की देख भाल करने मे असमर्थ रहेगा क्योकि वह बगाली हैं, राजस्थानी नहीं। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि आपने मुझे यह याद दिलाकर कि मैं बगाली नही हूँ मुझे मर्मान्तक व्यथा पहुचाई है।

११८

तार

मो० क० गाधी
अहमदाबाद

भगवान ने हरिजन-कार्य को बल दिया है, आपके यश मे चार चाद लगाये हैं, आतकवाद का यत्नवाद किया है भगवान् का धन्यवाद। घटना में मगल ही देखता हूँ।

—घनश्यामदास

११९

साम्प्रदायिक निर्णय की मुख्य मुख्य बातें

१) यूरोपियनो के अतिरिक्त मुसलमानो, सिखो, ऐंग्लो इडियनो तथा भारतीय ईसाइयो के लिए पृथक-पृथक निर्वाचनो की व्यवस्था।

२) हिन्दू साधारण निर्वाचन क्षेत्रो से खडे होगे। सीमा प्रात में भी जहा वे मुट्ठी भर हैं उन्हे न पृथक् निर्वाचन क्षेत्र दिये गये है, न पृथक सीटें दी गई हैं। यह उनके राष्ट्र प्रेम का पुरस्कार है।

३) दलित वग को हिन्दुआ से पूणतया पथक नहीं किया गया है। बगाल और पजाब म दलित वग के लिए सीटें रिजव नही रखी गई हैं। पर बगाल मे इस प्रश्न पर पुनर्विचार होगा। 'दलित' निर्वाचन-क्षेत्र मे कोई गैरदलित वग का होने पर भी खडा हो मक्ता है। इस व्यवस्था का २० वष बाद अथवा दलित-वग की महमति से इससे भी पहले अन्त हो जायेगा।

४) वाणिज्य-व्यापार के क्षेत्र के लिए जो ५४ सीटें निर्धारित की गई हैं, उनमे स ३६ सीटें यूरोपियनो को मिलेंगी। इसका यह अथ हुआ कि देश म भारतीय व्यापारी-समाज की अपक्षा यूरोपियनो के अधिक हित निहित है।

५) बगाल म सख्या म बहुत थोडे होने के बावजूद यूरोपियना को कुल सीटा का १० प्रतिशत मिलेगा।

६) केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा के बारे म चुप्पी साधी गई है, जिसका कुछ भी अथ लगाया जा सकता है।

७) *किसी भी जाति के बारे म इस व्यवस्था की उसकी रजामदी स पुनरावत्ति* सम्भव है। इसका अथ यह हुआ कि मुसलमानो की रजामदी से पृथक निवाचनो का अन्त हो सकता है। ऐमा १० वप पहल भी सम्भव है।

८) समूचे निणय की पुनरावत्ति सभी जातियो, हिन्दुआ मुसलमानो सिखा यूरोपियना, ऐंग्लो इडियनो और ईसाइया आदि की सव-सम्मति द्वारा सम्भव है। यह व्यथ की कामना मात्र है, क्योंकि यदि भारतवासी राजी हो भी जायें, तो भी बगाल म यूरोपियनो को जो विशेषाधिकार मिले हैं उनमे कमी करने को व कदापि तयार नही होगे।

९) नौकरिया मत्रिमण्डल के गठन आदि के बारे म अभी कुछ नही कहा गया है।

१०) ब्रिटिश प्रधान मत्री ने योजना का विश्लेषण करते समय भारतीयो का प्रबोधित किया था कि 'बार-बार कहने पर भी वे लोग ऐसी कोई योजना तैयार करने म असमथ रहे जा सबको सन्तुष्ट कर पाती। अन्ततोगत्वा केवल भारतवासी ही इस प्रश्न का निपटारा कर सकते हैं। यह अनगल प्रलाप-मात्र है, क्योंकि उन्हें अच्छी तरह ज्ञात है कि सारे प्रमुख नता जेलो म हैं। पिछले दो वर्षों म भारतीय नताओ को महत्वपूण मामलो पर सम झौता करने के लिए आवश्यक शान्ति तथा नहीं हुई जबकि लदन म कान्फ्रेंस ऐसे तत्वो से ठसाठस भरी हुई थी जो राष्ट्रीय हितो के लिए नहीं वर्गीय हितो के लिए कोलाहल करने म दत्तचित्त थ इसलिए किसी प्रकार का समझौता एक असम्भव कल्पना-मात्र सिद्ध हुआ था।

इस समय अवस्था यह है कि व्यावहारिक रूप मे हिंदू अधिकाश प्रातो म बहुसख्यक हैं, बगाल, पजाब सिंध और सीमा प्रात मे मुसलमानो का बहुमत है। जहा जहा कोई जाति बहुसख्यक है वहा वहा उस प्रात के शासन काय पर अपना नियत्रण रखने का उसे अधिकार है इसलिए मुसलमानो के बगाल और पजाब मे अपनी सख्या के अनुरूप सुविधाओ का उपभोग करने के मामले म किसी का कोई शिकायत नही हो सकती। पर प्रश्न यह है कि उन सुविधाओ का उप भोग समस्त जाति करेगी या कुछ इने गिने सम्प्रदायवादी नेतागण। किसी बहु सख्यक जाति के लिए अल्प सख्यक जातियो के सहयोग के बगैर शासन-काय चलाना असम्भव है। जातियो का सीमित क्षेत्रो तक सीमित रख छोडा गया है, जिसके परिणामस्वरूप सारी जातियो का सामूहिक रूप स जन कल्याण के हिताथ काम करना असम्भव-सा हो गया है। सभी प्रातो म बहुसख्यक जातियो की शक्ति और समय निरथक सौदेबाजी म नष्ट होगा। मुझे इसम तनिक भी सदह नही है कि फिलहाल कुछ सम्प्रदायवादी नेता जो व चाहते थे वह उन्हे मिला है इस पर वे भले ही पुलकित हो लें पर वह समय भी आयेगा जब जनता देखेगी कि यह व्यवस्था उसके हित मे नही है। इस निणय की नीव पर किसी भी प्रकार के स्वराज्य की दीवार नही उठाई जा सकती। इसलिए राष्ट्र प्रेमियो का चाहे व हिंदू हो अथवा मुसलमान इस निणय पर चिंतित होना अनिवाय है। इन सबको यही लगेगा कि इस प्रकार स्वराज्य प्राप्ति के ध्येय को गहरा धक्का लगा है।

इस समय अवस्था यह है कि व्यावहारिक रूप में हिंदू अधिकांश प्रान्तों में बहुसख्यक हैं, बगाल पजाब, सिंध और सीमा प्रान्त में मुसलमानों का बहुमत है। जहा जहा कोई जाति बहुसख्यक है वहा-वहा उस प्रान्त के शासन-कार्य पर अपना नियत्रण रखने का उसे अधिकार है इसलिए मुसलमानों के बगाल और पजाब में अपनी सख्या के अनुरूप सुविधाओं का उपभोग करने के मामले में किसी को कोई शिकायत नहीं हो सकती। पर प्रश्न यह है कि उन सुविधाओं का उप भोग समस्त जाति करेगी या कुछ इने गिने सम्प्रदायवादी नेतागण। किसी बहु सख्यक जाति के लिए अल्प सख्यक जातियों के सहयोग के बगैर शासन-कार्य चलाना असम्भव है। जातियों को सीमित क्षेत्रों तक सीमित रख छोड़ा गया है, जिसके परिणामस्वरूप सारी जातियों का सामूहिक रूप से जन कल्याण के हितार्थ काम करना असम्भव-सा हो गया है। सभी प्रान्तों में बहुसख्यक जातियों की शक्ति और समय निरर्थक सौदेबाजी में नष्ट होगा। मुझे इसमें तनिक भी सदेह नहीं है कि फिलहाल कुछ सम्प्रदायवादी नेता जो वे चाहते थे वह उन्हें मिला है इस पर वे भले ही पुलकित हो लें पर वह समय भी आयगा, जब जनता देखेगी कि यह व्यवस्था उसके हित में नहीं है। इस निर्णय की नींव पर किसी भी प्रकार के स्वराज्य की दीवार नहीं उठाई जा सकती। इसलिए राष्ट्र प्रेमियों को चाहे वे हिंदू हो अथवा मुसलमान, इस निर्णय पर चिंतित होना अनिवार्य है। इन सबको यही लगेगा कि इस प्रकार स्वराज्य प्राप्ति के ध्येय को गहरा धक्का लगा है।

साम्प्रदायिक निर्णय

		मद्रास	बम्बई	बंगाल	संयुक्त प्रांत	पंजाब	बिहार-उड़ीसा	मध्य प्रान्त	आसाम	सीमा प्रांत
मजदूर	—	६	८	८	३	३	४	२	४	२
असाम्प्रदायिक	—	१५३	१०८	८०	१४४	४४	११४	८८	५७	९
भूमि पति	—	६	३	५	६	—	५	३	—	—
विश्वविद्यालय	—	१	१	२	१	१	१	१	—	—
मुसलमान	—	२९	६३	११९	६६	८८	४२	१४	३४	३६
सिख	—	—	—	—	—	३३	—	—	—	३
ईसाई	—	९	३	२	२	२	२	—	१	—
ऐंग्लो इण्डियन	—	२	२	४	१	२	१	१	—	—
यूरोपियन	—	[illegible]	४	११	२	१	२	१	१	—
वाणिज्य-व्यापार	भारतीय	२	३	५	१	१	२	१	३	—
	यूरोपियन	४	५	१४	२	—	२	१	८	—
		२१५	२००	२५०	२२८	१७५	१७५	११२	१०८	५०